बाइबबिल की सभी कहानियाँ

जॉन वॉल्श द्वारा तैयार की और बताई गई

BibleTelling.org
BTStories.com
info@BTStories.com

माता-पिता और शिक्षकों को चेतावनी: यह आइकन एक ऐसी कहानी को इंगित करता है जिसमें ऐसी सामग्री है जो आपको छोटे बच्चों के लिए आपत्तिजनक लग सकती है। हम आपको बच्चों केको पढ़ने से पहले कहानी को व्यक्तिगत रूप से पढ़ने की सलाह देते हैं।

© कॉपीराइट 2018, जॉन वॉल्श द्वारा, 10 मई 2018 by, संस्करण 3.11
इन कहानियों का उपयोग करने की अनुमति व्यक्तियों और सेववाकाई को गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए दी गई है। लेखक की अनुमति के बिना, इस पुस्तक की कोई भी सामग्री किसी भी व्यावसायिक प्रचार, विज्ञापन, या किसी उत्पाद या सेवा की बिक्री के लिए पुन: प्रस्तुत नहीं की जा सकती है। सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

हमारा लक्ष्य:
बाइबबिल की सभी कहानियों का उपयोग करके शिष्यत्व के लिए परमेश्वर की कहानी को साझा करना।

हमारी वेबसाइटें:
BibleTelling.org - सभी बाइबबिल समाचार, घटनाओं और सेवाओं (इस्राएल में सेमिनार, प्रशिक्षण, और बाइबबिल की सभी कहानियों का मुफ्त डाउनलोड)
BTStories.com - बाइबल की सभी कहानियों के लिए ऑडियो, वीडियो, पाठ, समय रेखा, नक्शे और अंतर्दृष्टि का मुफ्त ऑनलाइन उपयोग
ChristianStorytelling.com - वार्षिक सम्मेलन की आधिकारिक वेबसाइट
LanguageOlympics.org - 30 भाषाओं की कहानियों का उपयोग करके साक्षरता और ई एस एल प्रशिक्षण

हमारा मीडिया:
YouTube वीडियो श्रृंखला:
http://bit.ly/2rLOZFY - कहानी कहने की कला
Amazon Books / E-books:
http://amzn.to/2j7LER2- लेखक पृष्ठ

"दिन की कहानी" सदस्यता
दिन की कहानी के वीडियो, ऑडियो और कथा के लिंक के साथ हर सप्ताह एक ई-मेल प्राप्त करें।
अपने सदस्यता अनुरोध को info@BibleTelling.com पर ई-मेल करें।
फेसबुक
"BibleTelling" खोजें

मोबाइल एप्लिकेशन:
ऐप्पल, एंड्रॉइड और विंडोज ऐप स्टोर में "BTStories" खोजें
संपर्क करें
किसी भी सवाल के साथ हमें info@BibleTelling.com पर ई-मेल करें। हमारे फेसबुक पेज पर टिप्पणी या सवाल पोस्ट करें।
एक नोट भेजें या हमसे मिले:
BibleTelling
2905 Gill Street
Bloomington, IL 61704

परिचय

बाइबल और बाइबल की सभी कहानियों में आपका स्वागत है। पचहत्तर प्रतिशत बाइबल कहानियों के रूप में लिखी गई है, जिससे पढ़ने और समझने में आसानी होती है। इसलिए अधिकांश लोगों को बाइबल को समझने में मुश्किल क्यों आती है?

इसीलिएखैर, यह आसान होगा यदि आप आजआग से एक कुर्सी पर बैठे हो और कोई इन कहानियों को आपको सुना रहा हो; या संभवतः एक गर्मियों की एक गर्म शाम में आराम से छाया के नीचें बैठे हों और एक गिलास से ठंडे शरबत की चुस्की लेते हुए सुनें।

यह पुस्तक इसी तरह लिखी गई है। यह इस में पढ़ने या सुनने में आसानी के लिए एक 'बताने वाले प्रारूप' का उपयोग किया गया है। यह सभी कहानियों को समय के अनुसार क्रम में रखा गयारखी गईं है, यह दोहराव को समाप्त करता है।

यह सब आम रोजमर्रा की भाषा में किया गया है। कुछ भी नहीं छोड़ा गया है क्योंकि वह अपमानजनक है। बाइबल की सभी बातो "गंदगी" को शामिल किया गया है। यदि आप इन सभी कहानियों को पढ़ते हैं, तो आप पूरी कहानी को समझेंगे, जैसा कि मूल लेखकों द्वारा हमें दी गई हैं।

जब आप खुद से पूछेंगे तो एक बात सामने आ सकती है, "क्या यह वाकई में बाइबल में है? मुझे वह याद नहीं है।" हमने आपके लिए इसे स्वयं जांचना आसान बना दिया है क्योंकि हर कहानी में पवित्रशास्त्र का संदर्भ है। इससे आपको पूरी तरह से नए तरीके से बाइबल को पढ़ने में मदद मिलेगी।

इसलिए शुरुआत से शुरू करें और एक समय में एक कहानी पढ़ें। इस तरह आप परमेश्वर की पूरी कहानी को समझ पाएंगे।

विषय - सूची

शुरुआत

1 पृथ्वी की रचना
2 आदम और हव्वा
3 मानव जाति का गिरना
4 कैन और हाबिल
5 बाढ़
6 बाढ़ के बाद विश्व

अब्राहम

7 अब्राहम की बुलाहट
8 मल्कीसेदेक और अब्राहम
9 परमेश्वर जो मुझे देखता है
10 इसहाक: अब्राहम के लिएका वादा
11 परमेश्वर के साथ सौदेबाजी
12 सदोम और अमोरा
13 दो बेटियाँ
14 वह मेरी बहन है
15 परमेश्वर सुनते हैं
16 अब्राहम का परीक्षण
17 सारा की मौत

इसहाक

18 रिबका
19 पहिलौठे का अधिकार बेचना
20 वह मेरी बहन है-2
21 कुआँ खोदनेवाला

याकूब

22 चुराई हुई आशीष
23 याकूब की दो पत्नियाँ
24 धब्बेदार, चित्तीदार और लकीरदार
25 लाबानलाबन को छोड़ना
26 दो तम्बू
27 दीना

यूसुफ

28 गुलामी में बेच दियाबेचा जाना
29 यहूदा
30 यूसुफ का सत्ता में आना
31 यूसुफ केका परिवार का पुनर्मिलन
32 मिस्र में इस्राएल(याकूब)

मूसा

33 मूसा का जन्म
34 एक पत्नी ढूँढना
35 मूसा की बुलाहट
36 सिप्पोरा
37 ईंटों के बदले भूसा
38 फिरौन की पर विपत्तियाँ
39 फसह
40 लाल समुन्द्र
41 यह क्या है?
42 यहोवा, मेरा झंडा
43 व्यवस्था
44 सोने का बछड़ा
45 पवित्रस्थान
46 अपवित्र आग
47 लालसा की कब्र
48 उसके चेहरे पर थूकना
49 बारह जासूस
50 कोरह का विद्रोह
51 चट्टान से बात करो
52 बिलाम का की गधी
53 बिलाम की भविष्यवाणी
54 मूसा की मृत्यु

यहोशू

55 राहाब
56 यरदन पार करना
57 यरीहो
58 आकान
59 सूरज का स्थिर खड़ा होना गया
60 यहोशू की विदाई

अय्यूब

61 अय्यूब के तीन दोस्त

न्यायियों

62 ओत्नीएल और एहूद
63 दबोरा और बाराक
64 गिदोन का ऊन
65 तीन सौ आदमी

66 वृक्षों का राजा
67 यिप्तह की प्रतिज्ञाएँ
68 शिमशोन का जन्म
69 बलवान और मीठा
70 लोमड़ियों और एक जबड़े की हड्डी
71 शिमशोन और दलीला
72 मूसा का पोता
73 युद्ध के लिए भूमिका
74 बिन्यामीन के लिए दुल्हन
75 रूत और नाओमी
76 रूत और बोअआज़
77 शमूएल कीका बुलाहट
78 परमेश्वर काके सन्दूक पर कब्जा किया जाना गया
79 परमेश्वर केका सन्दूक का लौटाया जाना
80 एबेनेज़र

शाऊल

81 शाऊल बना राजा
82 एक आंख के लिए शांति
83 परीक्षा में असफल
84 योनातन की विजय
85 शाऊल का आज्ञा नहीं माननना

दाऊद

86 दाऊद का अभिषेक
87 गोलियत
88 दाऊद को पत्नी मिलनाती है
89 दाऊद की रक्षा करना
90 तीन तीर
91 शाऊल से भागना
92 शाऊल के कपड़े का कोना
93 अबीगैल
94 परमेश्वर के अभिषिक्तअभिषित को बचनाबचाना
95 सामान के पास रहना
96 एन्दोर की भूतसिद्धि करने वाली
97 शाऊल और योनातातन की मृत्यु
98 योजोआब और अब्नेर
99 दाऊद को राजा बनाया गजानाया
100 दाऊद के पराक्रमी पुरुष
101 परमेश्वर के सन्दूक को आगे बढ़ाना
102 एक साम्राज्य का निर्माण
103 अम्मोनियों
104 बतशेबा
105 नातान की कहानी
106 तामार
107 अबशालोम की वापसी
108 अबशालोम का विद्रोह
108B राजा की ओर भागना
109 अबशालोम की हार
110 दाऊद का राज्य बहाल
111 अबीगैल एकआबेल की बुद्धिमान स्त्री
112 नैतिक सफाई
113 लोगों की संख्या
114 सत्ता का बदलना
115 दाऊद और योआब की मौत

सुलैमान

116 सुलैमान की बुद्धि
117 मंदिर का निर्माण
118 शीबा की रानी

शुरुआती राजा

119 साम्राज्य विभाजित
120 यारोबाम का पाप
121 बुजुर्ग भविष्यवक्ता
122 रहूबियाम और यारोबाम
123 अबिय्याह और आसा

ऐलिय्याह

124 एलिय्याह और विधवा
125 कर्म्मेल पर्वत पर एलिय्याह
126 होरेब पर्वत पर एलिय्याह
127 घायल भविष्यवक्ता

128 नाबोत की दाख की बारी
129 यहोशापात और अहाब
130 यहोशापात की जीत
131 पचास50 का कप्तान
132 बवंडर में एलिय्याह

एलीशा

133 पानी की खाई
134 तेल, खिचड़ी, रोटी, और कुल्हाड़ी
135 शुनेमिन स्त्री
136 नामान
137 गेहजी
138 अंधे सैनिक
139 चार कोढ़ी
140 एलीशा रोया
141 येहू
142 ईज़ेबेल
143 अतल्याह
144 योआश
145 एलीशा की मौत

बाद के राजा

146 योना और मछली
147 योना और बेल
148 झाड़ीझडी और देवदार
149 उज्जियाह
150 आहाज
151 गोमेर
152 इस्राएल का देश से निकलला जाना
153 हिजकिय्याह
154 अश्शूर का राजा
155 पंद्रह साल
156 दुष्ट राजा काजिसने पश्चाताप किया
157 एक पुस्तक का मिलनाली है
158 योशिय्याह के सुधार
159 टूटे हुए बर्तन
160 किताब को जलाना
161 अंजीर की दो टोकरियां
162 यरूशलेम की घेराबंदी
163 मिट्टी का कुआँ
164 मिस्र जाना

दानिय्येल

165 सूखी हड्डियों की घाटी
166 दानिय्येल का निर्णय
167 नबूकदनेस्सर का सपना
168 आग की भट्टी
169 एक जंगली जानवर बनना
170 दीवार पर लिखावट
171 शेरों की मांद

एज्रा और नहेमायाह

172 मंदिर का पुनर्निर्माण
173 एज्रा
174 दीवारों का पुनर्निर्माण

एस्तेर

175 एस्तेर का रानी बनना बन जाती है
176 एस्तेर द्वाराने अपने लोगों को बचाया जाना

यीशु - प्रारंभिक वर्ष

177 जिब्राईल की घोषणाएँ
178 यीशु का जन्म
179 राजा के लिए उपहार
180 बारह साल का

यीशु - प्रारंभिक सेवाकाई

181 बपतिस्मा और परीक्षा
182 पानी सेको दाखरस
183 नया जन्म
184 कुएँ पर महिला

यीशु - गलील की सेवकाई

185 नासरत में अस्वीकृत
186 लोगों के पकड़नेवाले
187 पहाड़ी उपदेश

188 पापों को क्षमा करना
189 बारहों को बुलाना
190 एक रोमी और एक अंतिम संस्कार
191 क्षमा मिलना और आभारी
192 चार मिट्टियां
193 कहानियों के साथ समझाना
194 दो तूफानों को शांत करना
195 बारह वर्ष
196 बेतहसदा का कुंड
197 यूहन्ना का सिर काटा जाना
198 भोजन की भरपुरी और पानी पर चलना
199 रोटी का जीवन
200 4,000 लोगों को खिलाना
201 यीशु का रूपांतरण
202 मंदिर का कर का भुगतान करना
203 सात के सत्तर बार

यीशु - दक्षिण की ओर जाना

204 व्यभिचार में पकड़ी गई
205 जन्म से अंधा व्यक्ति जो अंधा पैदा हुआ था
206 कोढ़ी, न्यायी, और घमंड
206B अमीर युवा शासक
207 नेक सामरी
208 एक बड़ा भोज
209 खोई भेड़, सिक्का, और बेटा
210 धनी आदमी और लाज़र
211 लाज़र का जी उठाना
212 महान, अमीर और गरीब

यीशु - अंतिम सप्ताह

213 विजयी प्रवेश
214 सेववाकोई का अंतिम सप्ताह
215 अंतिम भोज
216 गतसमनीने
217 यहूदियों से सामने पेशी
218 रोमियों के सामने पेशी
219 क्रूस पर चढ़ाना, और दफ़नाया जाना

यीशु - पुनरुत्थान केका बाद

220 पुनरुत्थान
221 इम्माऊस की सड़क
222 दो शिष्यों के विश्वास को जीतना
223 प्रभु भोज और उठाया जाना

पतरस - यरूशलेम

224 पवित्र आत्मा का आना
225 एक लंगड़े व्यक्ति की चंगाई
226 हनन्याह और सफीरा
227 प्रेरित और सेवक
228 स्तिफनुस, पहला मसीही शहीद

पतरस - यहूदिया और सामरिया

229 फिलेप्पुस की सेववाकाई
230 शाऊल का परिवर्तन
231 दोरकास की चंगाई
232 कुरनेलियुस
233 अन्ताकिया के मसीही
234 जेल से निकलना

पौलुस - पहली मिशनरी यात्रा

235 पहली मिशनरी यात्रा
236 आराधना से पथत्थराव तक
237 यहूदी कानून बनाए रखना
238 सेवा करने की स्वतंत्रता - गलातियों

पौलुस - द्वितीय मिशनरी यात्रा

239 जेल में आराधनागाना
240 दंगे और हँसी
241 परीक्षा और सताव - 1 थिस्सलुनीकियों
242 प्रभु का दिन - 2 थिस्सलुनीकियों
243 कुरिन्थुस में भीड़

पौलुस - तीसरी मिशनरी यात्रा

244 इफिसुस में दंगा
245 कलीसिया के झगड़े - 1 कुरिन्थियों (क)

246 आत्मिक वरदान - 1 कुरिन्थियों (ख)
247 प्रेम की चिंताएँ - 2 कुरिन्थियों (क)
248 देने की खुशी - 2 कुरिन्थियों (ख)
249 मसीह के बिना जीवन - रोमियों (क)
250 मसीह के साथ जीवन - रोमियों (ख)
251 यरुशलेम जाना
252 यरूशलेम में दंगा

पौलुस - रोम जाना

253 मारने की साजिश
254 फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा
255 समुद्र में तूफान
256 जहाज़ का नष्ट होना और रोम
257 उनेसिमुस - फिलेमोन

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

258 यूहन्ना के दर्शन
259 नयानए स्वर्ग और पृथ्वी
260 नया यरूशलेम

कहानियों की समीक्षा

समीक्षा – 10

2 आदम और हव्वा
3 मानव जाति का गिरना
16 अब्राहम का परीक्षण
43 व्यवस्था
178 यीशु का जन्म
219 क्रूस पर चढ़ाना, और दफ़नाया जाना
220 पुनरुत्थान
224 पवित्र आत्मा का आना
230 शाऊल का परिवर्तन

समीक्षा – 20

1 पृथ्वी की रचना
2 आदम और हव्वा
3 मानव जाति का गिरना
7 अब्राहम की बुलाहट
16 अब्राहम का परीक्षण
39 फसह
43 व्यवस्था
56 यरदन पार करना
86 दाऊद का अभिषेक
159 टूटे हुए बर्तन
167 नबूकदनेस्सर का सपना
178 यीशु का जन्म
194 दो तूफानों को शांत करना
215 अंतिम भोज
218 रोमियों के सामने पेशी
219 क्रूस पर चढ़ाना, और दफ़नाया जाना
220 पुनरुत्थान
224 पवित्र आत्मा का आना
230 शाऊल का परिवर्तन
239 जेल में गाना

समीक्षा – 30

1 पृथ्वी की रचना
2 आदम और हव्वा
3 मानव जाति का गिरना
7 अब्राहम की बुलाहट
16 अब्राहम का परीक्षण
28 गुलामी में बेचाबेच दिया
30 यूसुफ का सत्ता में आना
31 यूसुफ केका परिवार का पुनर्मिलन
38 फिरौन की विपत्तियाँ
39 फसह
43 व्यवस्था
56 यरदन पार करना
86 दाऊद का अभिषेक
102 एक साम्राज्य का निर्माण
113 लोगों की संख्या
130 यहोशापात की जीत
159 टूटे हुए बर्तन
167 नबूकदनेस्सर का सपना
170 दीवार पर लिखावट
172 मंदिर का पुनर्निर्माण
178 यीशु का जन्म
211 लाज़र का जी उठाना
215 अंतिम भोज
218 रोमियों के सामने पेशी
220 पुनरुत्थान
224 पवित्र आत्मा का आना
232 कुरनेलियुस
239 जेल में आराधनागाना

समीक्षा – 40

1 पृथ्वी की रचना
2 आदम और हव्वा
3 मानव जाति का गिरना
5 बाढ़
7 अब्राहम की बुलाहट
10 इसहाक: अब्राहम के लिएका वादा
16 अब्राहम का परीक्षण
28 गुलामी में बेचाबेच दिया
30 यूसुफ का सत्ता में आना
31 यूसुफ केका परिवार का पुनर्मिलन
38 फिरौन की विपत्तियाँ
39 फसह
43 व्यवस्था
56 यरदन पार करना
86 दाऊद का अभिषेक
87 गोलियत
92 शाऊल के कपड़े का कोना
102 एक साम्राज्य का निर्माण
113 लोगों की संख्या
125 कर्म्मेल पर्वत पर एलिय्याह
130 यहोशापात की जीत
155 पंद्रह साल
159 टूटे हुए बर्तन
167 नबूकदनेस्सर का सपना
172 मंदिर का पुनर्निर्माण
178 यीशु का जन्म
184 कुएँ पर महिला
194 दो तूफानों को शांत करना
198 भोजन और चलना
211 लाज़र का जी उठाना
215 अंतिम भोज
218 रोमियों के सामने पेशी
219 क्रूस पर चढ़ाना, और दफ़नाया जाना
220 पुनरुत्थान
221 इम्माऊस की सड़क
223 प्रभु भोज और उठाया जाना
224 पवित्र आत्मा का आना
230 शाऊल का परिवर्तन
232 कुरनेलियुस
239 जेल में आराधनागाना

1 पृथ्वी की रचना

उत्पत्ति 1

आदि में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। पृथ्वी बेजान, खाली और अंधेरी थी। परमेश्वर का आत्मा विशाल ख़ालीपन पर मंडराता था। उसने कहा, "उजियाला हो," और अचानक पूरी पृथ्वी पर प्रकाश चमक उठा ! परमेश्वर ने प्रकाश को देखा, और देखा कि वह अच्छा था।

फिर उसने प्रकाश को अंधेरे से अलग कर दिया। उसने प्रकाश को "दिन" और अंधेरे को "रात" कहा। इस प्रकार , दिन और रात के साथ, पहला दिन पूरा हुआ ।

दूसरे दिन, परमेश्वर ने पानी को देखा और कहा, "विभाजित हो!"

तुरंत, पानी अलग होने लगा। कुछ ऊपर चला गया और बाकी नीचे रह गया। परमेश्वर ने ऊपर के जल को और नीचे के जल को भी देखा। फिर उसने उस स्थान को देखा जो दोनों के बीच में था और कहा, "मैं तुम्हें आकाश कहूंगा।"

तीसरे दिन, परमेश्वर ने आकाश के नीचे पानी पर ध्यान केंद्रित किया। उसने कहा, "समुद्र, नदियों और झीलों के रूप में एक साथ इकट्ठा हो जाओ। सूखी भूमि प्रकट हों।" अचानक, भूमि पानी से ऊपर उठ गई। नदियाँ भूमि से बहने लगीं, पहाड़ियों को अलग करती और घाटियाँ बनाने लगीं। झीलें और समुद्र हर जगह फैल गए । परमेश्वर ने सूखी भूमि और समुद्र को देखा और देखा कि यह अच्छा था।

तब उसने भूमि से कहा, "वनस्पति उगाओ! जहाँ घास, सब्जियाँ, जड़ी-बूटियाँ और पेड़ हों। उन सभी में बीज हों, ताकि जीवन चलता रहे।" तुरंत,पूरी पृथ्वी पर तुरंत पौधे उगने लगे। घास, फूल और सब्जियाँ लहलहाने लगीं। कई तरह के पेड़ थे। कुछ लंबे , जबकि अन्य छोटे औरजमीन के करीब । कुछ पेड़ अलग-अलग तरह के फल देते थे। वनस्पति निरंतर बढ़ती रही , और सभी पौधों में बीज थे ताकि जीवन चलता रहे। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था।

चौथे दिन, परमेश्वर ने आकाश की ओर देखा और कहा, "प्रकाश हो - दिन पर शासन करने के लिए एक बड़ा प्रकाश, और रात के लिए एक छोटा प्रकाश ठहराया। ताकि वे दिन और रात को अलग-अलग करेंगे, और वे मौसम, दिन और वर्षों के लिए संकेत होंगे।"

तुरंत, सूरज आकाश में आ गया, जिससे पृथ्वी को प्रकाश और गर्मी मिली। चाँद और सितारों ने रात को चमक से भर दिया। परमेश्वर ने सूर्य, चंद्रमा और सितारों को देखा और देखा कि यह अच्छा था।

पाँचवें दिन, परमेश्वर ने आकाश और उसके नीचे के जल को देखा। उन्होंने कहा, "जीवन हों! आकाश में पक्षी और पानी में मछली और समुद्री जीव हों।"

तुरंत ही समुद्री जीव समुद्र, झीलों और नदियों में तैरने लगे। कुछ बड़े और कुछ बहुत छोटे थे। सभी मछलियाँ विभिन्न रूप, आकार और रंगों की थीं। आसमान में पक्षी दिखाई देने लगे। कुछ ने हवा में ऊंची उड़ान भरी, जबकि अन्य जमीन के करीब रहे। उनके आकार, रंग और ध्वनियाँ अलग-अलग थीं।

परमेश्वर ने समुद्री जीवों, मछलियों और पक्षियों को देखा और देखा कि यह अच्छा था। उसने उन्हें आशीष दीं और कहा कि वे समुद्र और आसमान में फूले फले और भर जाएं।"

छठे दिन, परमेश्वर ने पृथ्वी से कहा, "जीवित प्राणी हों। जहाँ जंगली जानवर और पालतू जानवर हों।" तुरंत, जानवर जमीन से उठे और पृथ्वी पर चलने लगे । कुछ विशाल थे, और कुछ बहुत छोटे थे। परमेश्वर ने उन्हें देखा और देखा कि यह अच्छा था।

तब परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्यों को बनाएंगे। हम उन्हें बनाएंगे ताकि वे भी हमारी तरह बन सकें। ताकि वे समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और भूमि के जानवरों पर अधिकार रखें।"

तब परमेश्वर ने एक पुरुष और एक महिला को बनाया और उसने उन्हें आशीष दीं और कहा कि वे बढ़ें-फलें और पृथ्वी को भर दें। उसने उनसे कहा कि उसने जो कुछ भी बनाया , उस पर अधिकार रखें। फिर उसने उन्हें फल, अनाज, सब्जियाँ और हरे पौधे खाने के लिए दिए।

तब परमेश्वर ने अपने बनाई हुई सभी चीज़ों को देखा, और देखा कि यह सब बहुत अच्छा था!

परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया। इसलिए उसने इस दिन को आशीष दीं और इसे विशेष बनाया।

इस तरह परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया...और समय के पहले सप्ताह में जीवन बनाया।

आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा क्योंकि वह सभी मनुष्यों की माँ कहलायी गयी।

2 आदम और हव्वा

उत्पत्ति 2

पृथ्वी की कल्पना करें जब वह नई थी - पौधों के उगने से पहले। उन दिनों , परमेश्वर ने पृथ्वी पर पानी बरसने की अनुमति नहीं दी थी, लेकिन प्रत्येक दिन भूमि से जल की धुंध उठकर उसे सींचती थी ।

इसी समय , परमेश्वर ने कुछ मिट्टी ली और पहले आदमी को आकार दिया। उसने उसकी नथुनियों में अपनी साँस डाली और आदम ज़िंदा हो गया।

परमेश्वर ने अदन नामक स्थान पर एक बाग लगाया। जिसमें हर तरह के पेड़ थे, और एक नदी थी जो बगीचे से बहती थी।

बगीचे के बीच में दो विशेष पेड़ थे। एक को जीवन का वृक्ष और दूसरे को अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष कहा जाता था।

परमेश्वर ने आदम से कहा कि वह बगीचे की देखभाल करे। उसने उसे यह भी कहा, "तुम हर पेड़ का फल खा सकते हो, लेकिन अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना । यदि तुम उससे खाओगे , तो तुम अवश्य मर जाओंगे!"

परमेश्वर ने कहा, "यह अच्छा नहीं है कि आदमी अकेला हो। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा, जो उसके लिए सही होगा। " फिर परमेश्वर सभी जानवरों को आदम के पास लाया और कहा कि वे उन्हें नाम दें। इसलिए आदम ने सभी जानवरों का नाम रखा, और वही उनका नाम कहलाया ।

जब वह उन्हें नाम दे रहा था, उसने देखा कि सभी जानवर जोड़े, नर और मादा में आए थे। लेकिन, उसने देखा कि उसके लिए कोई साथी नहीं था।

इसलिए, परमेश्वर ने आदम को एक गहरी नींद में डाल दिया, और वह गहरी और लंबी नींद सोया। तब परमेश्वर ने आदम के शरीर से उसकी एक पसली निकालकर उस स्थान को बंद कर दिया। उसी पसली से परमेश्वर ने एक स्त्री बनाई।

जब आदम जागा, तो परमेश्वर ने स्त्री को उसके पास लाया। आदम ने कहा, "यह मेरी हड्डियों की हड्डी और मेरे शरीर का मांस है। इसे 'स्त्री कहा जाएगा, क्योंकि उसे पुरुष में से निकाला गया है ।'' यही कारण है कि एक आदमी अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ जुड़ता है, और वे एक तन बन जाते हैं ।

3 मानव जाति का गिरना

उत्पत्ति 3

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया और उन्हें वह सब दिया जिसकी उन्हें अदन के बगीचे में ज़रूरत थी। जानवरों की तरह, उन्हें कपड़ों की कोई ज़रूरत नहीं थी, फिर भी वे शर्मिंदा नहीं थे।

साँप सभी जानवरों में सबसे चतुर था। एक दिन उसने हव्वा से पूछा, "क्या यह सच है कि परमेश्वर ने तुम्हें बगीचे के सभी पेड़ों से फल खाने से रोका है?"

हव्वा ने उत्तर दिया, "ओह, हम सभी पेड़ों से खा सकते हैं, बस एक पेड़ को छोड़कर,जो बीच में है। परमेश्वर ने कहा कि हम उस फल को न खाएँ और न ही उसे छुएँ। उसने कहा है कि यदि हम ऐसा करेंगे, तो हम मर जाएँगे।"

साँप हँसा और बोला,"यह सच नहीं है! तुम नहीं मरोगे। परमेश्वर ने तुमको ऐसा इसलिए बताया क्योंकि वह जानता है कि यदि तुम उस फल को खाते हो, तो तुम उसके जैसे हो जाओगे - अच्छे और बुरे को जानने वाले।"

हव्वा ने फल को देखा। वह सुंदर था और स्वादिष्ट लग रहा था। उसने सोचा, "अगर मैं इस फल को खा लूँ, तो यह मुझे समझदार बना देगा।" इसलिए उसने फल तोड़ा और खा लिया। उसने फिर आदम को भी दिया और उसने उसे भी खा लिया। अचानक, उन्हें एहसास हुआ कि वे बिना कपड़ो के हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते जोड़कर अपने लिए कपड़े बनाए।

जैसे ही शाम हुई, उन्होंने परमेश्वर को बगीचे में टहलते हुए सुना। अचानक, उन्हें पहली बार परमेश्वर से डर लगा , इसलिए वे पेड़ों के बीच छिप गए।

परमेश्वर ने पुकारा,"आदम, तुम कहाँ हो?"

आदम जानता था कि उसे जवाब देना होगा। उसने कहा, "परमेश्वर, मैंने आपको बगीचे में चलते हुए सुना, और मैं डर गया क्योंकि मैं बिना कपड़ो के था। इसलिए, मैं छिप गया।"

परमेश्वर ने पूछा, "तुम्हें किसने बताया कि तुम बिना कपड़ो के थे? क्या तुमने उस पेड़ से खाया, जिसमें से मैंने तुम्हें खाना खाने के लिए मना किया था?" आदम ने उत्तर दिया, "आपने मुझे जो स्त्री दी है, उसने यह किया है। उसने मुझे फल दिया, और ... हाँ, मैंने उसे खा लिया।"

परमेश्वर ने हव्वा की ओर देखा और कहा, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

हव्वा ने उत्तर दिया, सांप! ने मुझे यह खाने के लिए उकसाया!"

परमेश्वर ने साँप की ओर देखा और कहा, "क्योंकि तूने ऐसा किया , इसलिए तू सभी जानवरों में सबसे अधिक शापित होगा। अब से, तू अपने पेट के बल रेंगेगा। तेरे और स्त्री के बीच दुश्मनी होगी, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच लड़ाई होगी। वह तेरे सिर को कुचल देगा, जबकि तू केवल उसकी एड़ी को डसेगा। परमेश्वर ने हव्वा से कहा, "जब तू बच्चों को जन्म देगी, तो तुझे बहुत दर्द होगा, और बच्चे पैदा करना दर्द से जुड़ा होगा।

तू अपने पति को नियंत्रित करना चाहेंगी, लेकिन अब से पुरुष तुझ पर प्रभुता करेगा ।"

परमेश्वर ने आदम से कहा, "मैंने तुमसे बहुत स्पष्ट रूप से कहा था, कि तुम उस पेड़ से नहीं खाओगे। लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी, इसलिए अब धरती शापित है। अब से, तुम अपने भोजन के लिए काम करोगें, और धरती तेरे लिए काँटे और झाड़ियाँ उगाएगी । जब तक तू मिट्टी में नहीं लौटेगा, जिससे तुझे बनाया गया था, तुम अपने जीवन में कड़ी मेहनत करोगें।"

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनाए। फिर उसने उन्हें बगीचे से बाहर भेज दिया, जहाँ उन्होंने भोजन के लिए मिट्टी में काम किया।

परमेश्वर ने कहा, " मनुष्य अब बुराई के साथ-साथ अच्छे को भी जानते हैं। वे जीवन के पेड़ को पाने की कोशिश करेंगे ताकि वे हमेशा के लिए जीवित रह सकें।" इसलिए, परमेश्वर ने बगीचे के बाहर एक स्वर्गीय रक्षक को रखा। उस दिन से, मनुष्यजीवन के पेड़ से अलग हो गया।

4 कैन और हाबिल

उत्पत्ति 4

आदम और हव्वा ने एक बेटे को जन्म दिया और उसका नाम कैन रखा। कुछ समय बाद उनके एक और बेटा हुआ, और उसका नाम हाबिल रखा।

हाबिल एक चरवाहा बन गया जबकि कैन किसान बन गया।

एक दिन, जब परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाने का समय था, तो कैन ने एक मेमने के बजाय फल और सब्जियां लाने का फैसला किया। हाबिल भी एक भेंट लाया, लेकिन यह उसके झुंड में से सबसे अच्छा भेड़ का बच्चा अर्पित किया। हाबिल की भेंट से परमेश्वर प्रसन्न हुआ, लेकिन परमेश्वर कैन की भेंट से खुश नहीं थे।

कैन क्रोधित हो गया जब उसने देखा कि परमेश्वर ने उसके भेंट को स्वीकार नहीं किया है। परमेश्वर ने कहा, "कैन, तुम क्रोधित क्यों हो? यदि तुम केवल वही करते हैं जो सही है, तो तुम्हें स्वीकार किया जाएगा और तुम प्रसन्न रहोगे। लेकिन यदि तुम सही कार्य नहीं करते , तो पाप तुम्हारा इंतजार कर रहा है और तुम्हारे द्वार पर खड़ा हुआ है, यह तुझे घात करने और तुम्हारा स्वामी बनने के लिए तैयार है। लेकिन, तुमको इसे नियंत्रित करने की आवश्यकता है!"

कुछ दिनों बाद, कैन और हाबिल एक खेत में बात कर रहे थे। अचानक, कैन ने पलट कर उसके भाई पर हमला किया और उसे मार डाला।

उस शाम, परमेश्वर ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई कहाँ है?"

"मुझे नहीं पता! क्या मैं उसे हर समय देखता हूँ? "

परमेश्वर ने कहा, "ओह कैन, तुमने क्या किया है? सुनो! तुम्हारे भाई का खून मिट्टी से मुझे बुला रहा है। तुम इस भूमि से प्यार करते थे, लेकिन अब से यह शापित है क्योंकि इसमें तुम्हारे भाई का खून है।अब से तुम भूमि में काम करोगें, लेकिन यह अब तुमको उत्तम फल नहीं देगी । तुम एक बेचैन भटकने वाले बन जाओगे। "

कैन नीचे गिर पड़ा और रोने लगा। "हे परमेश्वर, आपकी सजा बहुत ज्यादा है! आप मुझे मेरी भूमि और आपकी उपस्थिति से दूर कर रहे हैं! मैं लक्ष्यहीन हो जाऊंगा और बाकी सब से अलग हो जाऊँगा। आखिरकार, कोई मुझे मार डालेगा।"

तब परमेश्वर ने कैन पर एक निशान लगाया और कहा, "जो कोई कैन को मारेगा, वह सात गुना दंड पाएगा!"

उसके बाद, कैन प्रभु की उपस्थिति से दूर चला गया।

5 बाढ़

उत्पत्ति 6-9:17

परमेश्वर को न मानने और पाप में चले जाने के बाद, लोग बहुत दुष्ट हो गए। उनके सभी विचार और कार्य बुरे थे। परमेश्वर जानता था कि उसे अपने बनाए लोगों को नष्ट करना होगा।

फिर भी, नूह नाम का एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ चलता था। प्रभु ने उससे कहा, "मैं पूरी पृथ्वी को बाढ़ से नष्ट करने जा रहा हूं क्योंकि लोग दुष्ट हो गए हैं। लेकिन मैं तुम्हारे साथ पृथ्वी पर जीवन को सुरक्षित करने के लिए एक समझौता कर रहा हूँ । एक बड़ी नाव बनाओऔर मैं तुझे सटीक नाप दूंगा, जिसे तुम्हें उपयोग करना है । इसे बनाने के बाद, एक बाढ़ पृथ्वी पर सभी लोगों और जानवरों का विनाश कर देगी । लेकिन तुम और तुम्हारा परिवार बचाया जाएगा, साथ ही तेरे साथ जाने वाले जानवरो भी बचेंगे ।"

परमेश्वर ने नूह को नाव बानाने के निर्देश दिए, और नूह ने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने कहा। उसने और उसके तीन बेटों ने मिलकर नाव बनाई। जब यह तैयार हो गई, तब परमेश्वर ने कहा, "नूह, अपने परिवार के साथ नाव में जा। सात दिनों के बाद, पृथ्वी पर पानी बरसेगा और प्रत्येक व्यक्ति और जानवरों को नष्ट कर दिया जाएगा, केवल वे ही बचेंगे जो इस नाव के भीतर होंगे ।"

इसलिए नूह और उसकी पत्नी, उसके बेटे और उनकी पत्नियाँ नाव में चले गए। एक बार जब वे अंदर गए, तो नर और मादा पशु और पक्षी जोड़ो में आने लगे। इसमें सात जोड़े स्वच्छ जानवर, सात जोड़े पक्षी और अन्य सभी जानवरों के केवल एक-एक जोड़े थे । जब हर तरह के जानवर और पक्षी अंदर आ गए, तो परमेश्वर ने दरवाजा बंद कर दिया।

सातवें दिन, आकाश के ऊपर जो पानी था वह पृथ्वी पर गिरने लगा। इसी समय, धरती की सतह भी फट गई, जिससे जमीन के नीचे से पानी के फव्वारे निकलने लगे। पानी पहाड़ियों से नीचे बहा और घाटियों को भर दिया। आखिरकार पूरी पृथ्वी जलमग्न हो गई । सभी लोग और जानवर नष्ट हो गए।

उसी पानी ने नूह की नाव को उठाकर सुरक्षित रखा । नाव में रहने वाले लोग, पशु और पक्षी सुरक्षित थे जबकि पूरी पृथ्वी नष्ट हो रही थी। पानी की यह बाढ़ चालीस दिनों तक चली और पूरी दुनिया को ढ़क लिया। और फिर ... यह थम गई।

बारिश रुकने के बाद, नूह का जहाज 110 दिनों तक पानी पर तैरता रहा। पृथ्वी को सुखाने के लिए हवाएँ चलने लगी।

अंत में, जहाज अरारात नामक एक पहाड़ पर टिक गया। नूह ने चार महीनों तक इंतजार किया, और फिर यह देखने के लिए खिड़की खोली कि पृथ्वी कैसी है।

उसने एक कौआ बाहर भेजा, लेकिन वह वापस नहीं आया। इसके बाद उसने एक कबूतरी को भेजा, जो चारों ओर उड़ी लेकिन उसे घोंसला बनाने के लिए जगह नहीं मिली इसलिए वह वापस लौट आई।

सात दिनों के बाद, नूह ने फिर से कबूतर कबूतरी को भेजा। वह उस रात अपनी चोंच में जैतून का पत्ता लेकर वापस आई। नूह को तब पता चला कि पौधे एक बार फिर उगने लगे हैं। उसने सात और दिन इंतजार किया और कबूतरी को फिर से बाहर भेज दिया। इस बार, वह वापस नहीं आई।

एक महीने बाद, नूह ने जहाज की कुंडी को हटाया और देखा कि पृथ्वी सूख गई थी। तब परमेश्वर ने कहा, " तुम्हारा परिवार और सभी जानवर जहाज से बाहर आ सकते हैं।"

जब वे जहाज से बाहर आए, तो नूह ने एक वेदी बनाई ताकि वह परमेश्वर की आराधना कर सकें। परमेश्वर ने उसके बलिदान को स्वीकार किया और कहा, "मैं फिर कभी बाढ़ से पृथ्वी को नष्ट नहीं करूँगा। हमेशा रोपाई और कटाई, गर्मी और सर्दी, दिन और रात बने रहेंगे।

"अब से, जानवर तुमसे डरेंगे, फिर भी तुम उनके लिए जिम्मेदार रहोगे।

"तुम अब जानवरों और पौधों को खा सकते हों। लेकिन तुम लोगों को नहीं मारोगे, क्योंकि वे परमेश्वर की छवि में बने हैं।

"तुम को फलना-फूलना और एक बार फिर से पृथ्वी को भरना है।"

फिर परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार से कहा, "बादलों में मेघधनुष को देखो। जब मैं इसे देखता हूँ और जब तुम इसे देखते हो , तो हमें यह वादा याद रहेगा कि फिर कभी बाढ़ पूरी पृथ्वी को नष्ट नहीं करेगी। यह मेरा तुमसे किया हुआ वादा है।"

6 बाढ़ के बाद विश्व

उत्पत्ति 9:20 -11:26

बाढ़ के बाद, नूह ने एक दाख की बारी लगाई। इसके बड़े होने पर उसने अपनी फसल में से कुछ शराब बनाई और पी ली और नशे में डूब गया । वह अपने डेरे पर गया और बिना कपड़ों के फर्श पर सो गया।

उसके सबसे छोटे बेटे ने अपने पिता को वहां उस अवस्था में पड़ा देखा, और जाकर अपने भाइयों को बताया कि क्या देखा है। उनके भाइयों ने उनके बीच एक कपड़ा लपेटा और अपने पिता के ऊपर उसे डाल दिया ताकि वे उसकी नग्नता न देखें ।

जब नूह जागा, तो उसे पता चला कि क्या हुआ था। इसलिए उसने अपने सबसे छोटे बेटे के परिवार को एक शाप दिया और बाकी दो के परिवारों को आशीष दीं।

तीनों बेटों के बड़े -बड़े परिवार थे, जिनमें कई बच्चे और नाती-पोतें थें। इन सभी लोगों में एक व्यक्ति था जिसका नाम निम्रोद था। वह पहले तानाशाह बना । उसे शिकार कौशल के लिए जाना जाता था, और उसका राज्य बाबेल कहलाया।

बाबेल के लोगों ने महसूस किया कि अगर वे साथ रहे तो वे अधिक शक्तिशाली होंगे ।

उन्होंने महसूस किया कि दुनिया भर में फैल जाना अच्छा नहीं है जैसा कि परमेश्वर ने कहा था। इसलिए उन्होंने एक मीनार बनाने का निर्णय लिया , जो आकाश तक ऊँची हो कि हर कोई उसे देख सके। उन्हें लगा कि इससे वह एकजुट रह सकें।

परमेश्वर ने मीनार को देखा और कहा, "लोग मेरी आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हैं। यदि वे एक साथ रहेंगे, तो उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा। इसलिए, मैं उनकी भाषाएँ अलग-अलग कर दूँगा ।"

अचानक लोगों ने अलग-अलग भाषाओं में बोलना शुरू कर दिया। वे भ्रमित थे क्योंकि वे एक दूसरे को समझ नहीं सकते थे। उन्हें पता नहीं था कि उनके साथ क्या हो रहा है। तुरंत, मीनार का काम बंद हो गया। उन्होंने अपनी भाषाओं के अनुसार समूह बनाए और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में बसने के लिए चले गए। इस मीनार को भ्रम का मीनार, या बाबेल के मीनार के रूप में जाना जाता है।

नूह का सबसे बड़ा बेटा शेम था। उसके वंशजों में से एक पेलेग नाम का व्यक्ति था। उसके नाम का अर्थ "विभाजन" है, क्योंकि उसके जन्म के समय, पृथ्वी विभाजित हो गई थी। उसी वंश में आगे चलकर अब्राहम जन्मा ।

7 अब्राहम की बुलाहट

उत्पत्ति 12

तेरह नाम का एक आदमी था जो ऊर नामक जगह पर रहता था। उसके तीन बेटे थे, और उनमें से एक अब्राम था। अब्राम की शादी उसकी सौतेली बहन सारै से हुई थी, लेकिन उनकी कोई संतान नहीं थी।

तेरह ने अब्राम, सारै और उसके पोते लूत (जो अनाथ था) को ले लिया और उत्तर में हारान नामक स्थान पर चले गए। वे तब तक वहीं रहे जब तक कि तेरह की मृत्यु नहीं हो गई।

जब अब्राम पचहत्तर साल का था, तब यहोवा ने कहा, "अब्राम, मैं चाहता हूं कि तू अपने परिवार और देश छोड़ दे, और एक जगह जा जिसे मैंने तेरे लिए चुना है। मैं तुझे एक राष्ट्र बनाता हूँ और तेरा नाम महान होगा। मैं तुझे आशीष दूँगा, और मैं उन सभी को भी आशीष दूँगा जो तुझे आशीष देंगे। और जो तुझे शाप देगा, मैं उसे शाप दूँगा। तेरी वजह से पृथ्वी के सभी परिवार धन्य होंगे।"

इसलिए अब्राम अपनी पत्नी सारै और अपने भतीजे लूत को ले गया और हारान को छोड़ दिया। जब वे कनान नामक स्थान पर आए, तो परमेश्वर ने कहा, "मैं तुझे और तेरे बच्चों को यह भूमि दे रहा हूँ।" अब्राम परमेश्वर पर विश्वास करता था, भले ही उसके कोई बच्चे नहीं थे। वह जानता था कि परमेश्वर अपना वादा निभाएगा। इसलिए उसने वहाँ एक वेदी बनाई और यहोवा की आराधना की।

कुछ समय बाद, उस जगह पर भीषण अकाल पड़ा। इसलिए अब्राम ने अपना सब कुछ ले लिया और वह मिस्र चला गया। उसने सारै से कहा, "मिस्र के लोग तुझे एक सुंदर महिला के रूप में देखेंगे। वे तुझे पाने के लिए मुझे मार डालेंगे। इसलिए उन्हें बताना कि तू मेरी बहन है।

अब्राम सही था। मिस्रियों ने देखा कि सारै सुंदर थी। जब फिरौन को पता चला कि उसकी शादी नहीं हुई है, तो वह उसे अपने घर ले गया।

उसने अब्राम के साथ अच्छा व्यवहार किया, यह सोचकर कि वह उसका भाई था। अब्राम मिस्र में अमीर हो गया। उनकी संपत्ति में भेड़, मवेशी, गधे, ऊंट और नौकर शामिल थे।

लेकिन परमेश्वर फिरौन से नाराज़ था क्योंकि उसके घर में सारै थी। फिरौन के परिवार पर भयानक विपत्तियाँ आईं , और हर कोई गंभीर रूप से बीमार हो गया। अंत में, फिरौन ने अब्राम से कहा, "तूने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? तूने कहा कि वह तेरी बहन है। अब मुझे पता चला कि वह तेरी पत्नी है! उसे ले जा और यहाँ से चले जा! "

इसलिए अब्राम सारै और लूत को लेकर कनान वापस चला गया। वे बेथेल नामक स्थान के पास बस गए। जहाँ उन्होंने परमेश्वर की आराधना की।

8 मल्कीसेदेक और अब्राहम

उत्पत्ति 13 - 15

अब्राम और लूत दोनों अमीर थे। जल्द ही उनके चरवाहों ने चराई के अधिकारों पर बहस शुरू कर दी। अब्राम ने कहा, "हमें लड़ना नहीं चाहिए। आखिरकार, हम एक परिवार हैं। यहाँ काफी जमीन है। तुम अपनी पसंद की दिशा में जाओ, और मैं दूसरी ओर चला जाऊंगा।"

लूत पहले से ही जानता था कि उसे किस दिशा में जाना है। यरदन घाटी में बहुत पानी था, और इसने उसे मिस्र की याद दिला दी। वह अक्सर खुद से कहता, "यह परमेश्वर के बगीचे की तरह है।" इसलिए उसने पूरी यरदन घाटी को चुना। उसने सदोम के पास अपना तम्बू खड़ा किया, भले ही वहाँ के लोग बेहद दुष्ट थे।

तब यहोवा ने अब्राम से कहा, “उत्तर और दक्षिण की ओर देख। पूर्व और पश्चिम की ओर देख। मैं यह सब तुझे और तेरे वंशजों को दे रहा हूँ। उठ जा! इस भूमि पर चल। यह तेरी है।"

कुछ समय बाद, चार शहर के राज्यों के दुश्मनों ने सदोम के आसपास के पाँच शहरों के साथ युद्ध किया। दुश्मनों ने लड़ाई जीत ली और लूत सहित उनकी सारी संपत्ति, भोजन, और कई लोगों को ले लिया। जब अब्राम ने इस बारे में सुना, तो उसने अपने 318 प्रशिक्षित सेवकों को लिया और दुश्मनों का पीछा किया। उसने रात के दौरान उन पर हमला किया और उन्हें पूरी तरह से हरा दिया। वह लूत, सभी लोगों और अपनी संपत्ति को वापस सदोम ले आया।

जब वह वहाँ पहुँचा, तो अब्राम मल्कीसेदेक से मिला। मल्कीसेदेक सालेम का राजा था, लेकिन वह परमप्रधान परमेश्वर का एक याजक भी था। उसने कहा, “अब्राम परमपिता परमेश्वर द्वारा धन्य है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया। परमप्रधान परमेश्वर की स्तुति करो, क्योंकि उसने तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं पर विजय दिलाई है।”

अब्राम ने मल्कीसेदेक को हर चीज का दसवां हिस्सा दिया।

सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, "मुझे मेरे लोग लौटा दो, और तुम सारी संपत्ति अपने पास रख लो।" अब्राम ने कहा, "नहीं, मैं इसमें से कुछ भी नहीं लूंगा। मैं यह सब आपको वापस दे रहा हूँ, सिवाय उस भोजन के जो अभियान के दौरान मेरे सेवकों ने खाया। मैं नहींचाहता हूँ कि आप कहें कि, 'मैंने अब्राम को अमीर बनाया।'"

तब अब्राम और उसके सेवक घर गए। इसके तुरंत बाद, प्रभु उसके पास एक दर्शन में आया और कहा, “तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा पुरस्कार मैं हूं।” अब्राम ने जवाब दिया, "हे प्रभु, अब भी मेरा कोई बेटा नहीं है; लेकिन मेरे पास एक नौकर है जो मेरे लिए एक बेटे की तरह है। उसे मुझसे किए गए वादों को विरासत में दें।”

परमेश्वर ने कहा "नहीं! तेरा एक बेटा होगा, और वह तेरा उत्तराधिकारी होगा। अब्राम, आकाश के सितारों को देख, तेरे वंशज उन सितारों की तरह अनगिनत होंगे।” अब्राम को यह असंभव लग रहा था, फिर भी वह इस पर विश्वास कर रहा था, और प्रभु इससे प्रसन्न हुए!

9 परमेश्वर जो मुझे देखता है

उत्पत्ति16

अब्राम के दस साल तक कनान में रहने के बाद, सारै को इस बात की चिंता हो गई थी कि उसे अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ है, जैसा कि प्रभु ने वादा किया था। उसने अपने पति से कहा, “मेरे पास इस समस्या का हल है। मेरी दासी हाजिरा के साथ बिस्तर में जाओ। जब वह बच्चा जन्म देगी, तो उसे मैं अपनी संतान मान लूंगी।"

अब्राम सहमत हो गया और जैसा सारै ने कहा था वैसा ही किया। लेकिन जैसे ही हाजिरा गर्भवती हुई, उसने ऐसा व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसे वह सारै से बेहतर थी। इससे सारै नाराज़ हो गई। उसने अब्राम से कहा, " मेरी सभी समस्याओं के लिए आप ही ज़िम्मेदार हैं! आप ने मेरी दासी को गर्भवती किया , और अब वह सोचती है कि वह मुझसे बेहतर है।

अब्राम ने कहा, "वह तेरी दासी है। तू उसके साथ जो चाहें करें।”

इसलिए सारै ने हाजिरा पर कठोर व्यवहार करना शुरू कर दिया और उसे हर तरह से अपमानित किया। अंत में, वह दासी भाग गई। वह पानी के झरने के पास आई और उसके बगल में बेहोश होकर गिर गई।

प्रभु के दूत ने उससे कहा, "हाजिरा, तू कहाँ जा रही है?"

"हे प्रभु, मैं अपनी मालकिन सारै से भाग रही हूँ।” दूत ने कहा, "नहीं, तुझको ऐसा नहीं करना चाहिए। परमेश्वर ने तेरा दर्द भरा रोना सुना है। वापस जा और सारै के अधीन रह, भले ही वह तुझे पीटे। तेरा एक बेटा होगा, और तू उसे इश्माएल कहना। वह एक योद्धा होगा, और वह सभी के खिलाफ रहेगा। मैं तेरे वंशजों को इतना बढ़ाऊंगा कि तू उन्हें गिन नहीं पाएंगी।” हाजिरा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, “मैंने उसपरमेश्वर को देखा है जो मुझे देखता है। इसलिए उसने झरने का नाम "बेर-लहई-रोई" रखा, जिसका अर्थ है "जीवित परमेश्वर का कुआँ जो मुझे देखता है।" फिर वह वापस चली गई और खुद को सारै के अधीन कर दिया। जब हाजिरा ने अपने बेटे को जन्म दिया, तब अब्राम की उम्र अस्सी साल थी। उसने बच्चे का नाम इश्माएल रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर सुनता है।"

10 इसहाक: अब्राहम के लिए वादा

उत्पत्ति 17 - 18:15

जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का था, तब प्रभु ने उससे कहा, “तुम बहुत से राष्ट्रों के पिता होगा और तुम्हारे वंशजों में से राजा उत्पन्न होंगे! इसलिए मैं तेरा नाम अब्राम से बदल कर अब्राहम रख रहा हूं, जिसका

अर्थ है कई देशों का पिता'। मैं तेरे साथ रहूंगा और मैं तुझे और तेरे वंशजों को यह जमीन दूंगा। इन वादों के संकेत के रूप में, तुझको तेरे साथ रहने वाले हर पुरुष का खतना करना होगा।

तब यहोवा ने उससे कहा, "अब से, तेरी पत्नी सारा कहलाएगी। मैं उसे आशीष दूंगा, और वह तुझे एक पुत्र देगी।" अब्राहम ने हँसते हुए कहा, "जो आदमी सौ साल का है और जो औरत नब्बे साल की है उन्हें बच्चा पैदा करना कितना संभव है? शायद इश्माएल को वह सब विरासत में मिला हो, जो आपने मुझसे वादा किया था।"

परमेश्वर ने कहा, "नहीं, सारा का एक बेटा होगा और तुम उसका नाम इसहाक रखना। मैं अपने वादे उसे, और उसके वंशजों को दूंगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और उसके कारण पूरी पृथ्वी आशीष पाएगी।

लेकिन मैं इश्माएल को भी आशीष दूंगा। मैं उसे एक महान राष्ट्र भी बनाऊंगा। उसमें से बारह गोत्र आएंगे।

कुछ समय बाद, अब्राहम अपने डेरे के दरवाज़ें पर बैठा था। अचानक उसने पास खड़े तीन लोगों को देखा, और महसूस किया कि उनमें से एक परमेश्वर था। वह उनके पास गया और कहा, "श्रीमान, कृपया, इस पेड़ के नीचे बैठिए। मैं आपको पानी दूंगा ताकि आप अपने पैर धो सकें। तब आप आराम कर सकते हैं, जब तक मैं भोजन तैयार करता हूँ।

उन्होंने कहा, "ठीक है, हम कुछ समय के लिए रुकेंगे।"

अब्राहम अंदर भागकर गया और सारा को अपने मेहमानों के लिए रोटी बनाने को कहा। फिर उसने मैदान में जाकर एक बछड़े को चुना और अपने नौकरों को दिया ताकि वह उसे पकाए । भोजन तैयार होने के बाद, अब्राहम ने इसे अपने मेहमानों को परोसा और फिर खड़े होकर उन्हें खाना खाते हुए देखा।

जैसा कि उन्होंने खाया, प्रभु ने अब्राहम से कहा, "तुम्हारी पत्नी कहाँ है?"

अब्राहम ने उत्तर दिया, "वह तम्बू में है।"

प्रभु ने कहा, "मैं अगले वर्ष इसी समय लौटूँगा, उस समय सारा के यहाँ एक पुत्र होगा।" सारा तम्बू के अंदर से यह सुन रही थी। वह नब्बे साल की थी, इसलिए वह हँसी जब उसने सुना कि वह एक बेटे को जन्म देने जा रही है। उसने कहा, "यह असंभव है। मैं एक बच्चे को जन्म देने के लिए बहुत बूढ़ी हूं।"

प्रभु ने अब्राहम से पूछा, "सारा क्यों हँसी? क्या प्रभु के लिए कुछ भी कठिन है? मैं वापस आऊंगा, और उसने एक बच्चे को जन्म दिया होगा!"

जब सारा ने यह सुना, तो वह भाग निकली और बोली, "प्रभु, मैं हँसी नहीं!"

"आह, लेकिन तुम हँसी!"

कुछ समय बाद, जल्द ही सारा ने पाया कि वह गर्भवती थी।

11 परमेश्वर के साथ सौदेबाजी

उत्पत्ति 18: 16-33

अब्राहम के तीन मेहमान थे। उनमें से एक परमेश्वर था। उसने उन्हें एक पेड़ की छाँव में भोजन परोसा। बाद में वे उठे और सदोम की ओर चलने

लगे। इब्राहीम अब्राहम थोड़ी दूर तक उनके साथ चला।

अचानक, प्रभु रुक गए और अन्य दो से कहा, "मैं अब्राहम को बताने जा रहा हूँ कि मैं क्या करने वाला हूँ । आखिरकार, वह एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा। पृथ्वी पर सभी देश उसके द्वारा धन्य होंगे। मुझे पता है कि वह अपने बच्चों को परमेश्वर का सम्मान करना और सही मार्ग पर चलना सिखाएगा।"

अब्राहम की ओर मुड़ते हुए, प्रभु ने कहा, "सदोम और अमोरा के पाप बहुत बढ़ गए हैं। मैं उनके पीड़ितों का रोना लगातार सुनता हूं। मैं खुद इसे देखने के लिए शहर जा रहा हूँ। अगर मुझे लगता है कि यह सच है, तो मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा।

जब अब्राहम और प्रभु बात कर रहे थे, तो बाकी दो लोग उन्हें छोड़कर सदोम की ओर चल दिए। अब्राहम ने कहा, "क्या यह सच है कि आप वास्तव में दुष्टों के साथ धर्मी लोगों को भी नष्ट कर दोगे? यदि शहर में पचास धर्मी लोग हैं तो क्या आप उसे नष्ट करेंगे। क्या आप वास्तव में उस स्थान को नष्ट कर देंगे, यह जानते हुए कि आप उन धर्मी लोगों को दुष्टों के साथ मार रहे हैं? मेरा मानना है कि आप ऐसा नहीं करेंगे। पृथ्वी का न्यायी हमेशा निष्पक्ष होता हैं।"

प्रभु ने कहा, "अगर सदोम में पचास धर्मी लोग हैं, तो मैं उनकी खातिर शहर को नष्ट नहीं करूंगा। अब्राहम ने कहा, "मुझे अब एहसास हुआ कि मुझे आपसे इस तरह से बात नहीं करनी चाहिए थी। मैं सड़क पर धूल की तरह हूँ। लेकिन मान लीजिए कि शहर में सिर्फ पैंतालीस लोग हैं जिन्हें आप खोज रहे हैं। क्या आप पूरे शहर को सिर्फ इसलिए नष्ट कर देंगे क्योंकि वहाँ पाँच धर्मी कम हैं?"

प्रभु ने कहा, "अगर मुझे पैंतालीस धर्मी लोग मिल जाते हैं तो मैं इस शहर को नष्ट नहीं करूंगा।"

क्या हम उस चालीस धर्मी लोगों को बना सकते हैं?"

"अगर मुझे चालीस धर्मी लोग मिल जाते हैं तो मैं उस जगह को नष्ट नहीं कर सकता।''

अब्राहम ने फिर कहा ,"परमेश्वर, फिर से बोलने के लिए मुझसे नाराज़ मत होना। अगर आपको केवल तीस धर्मी लोग मिले तो आप क्या करेंगे?"

''अगर मुझे तीस धर्मी लोग मिल जाते हैं तो मैं उस जगह को नष्ट नहीं कर सकता।''

"परमेश्वर, मैं इस बारे में आपसे बात करने के लिए पहले से ही इतना साहसी हो चुका हूँ, क्या हम बीस धर्मी लोगों को बना सकते हैं?"

''अगर मुझे वहां बीस लोग मिलते हैं तो मैं उस जगह को नष्ट नहीं करूंगा।''

"परमेश्वर, कृपया मुझसे नाराज़ न हों। मैं वादा करता हूँ कि आखिरी बार मैं आपसे इस बारे में बात करूंगा। अगर आपको वहां केवल दस धर्मी लोग मिले तो आप क्या करेंगे?"

"अगर मुझे दस धर्मी लोग मिल जाते हैं तो मैं उस जगह को नष्ट नहीं करूंगा।''

इसके साथ ही, बातचीत खत्म हो गई। यहोवा वहाँ से चला गया, और अब्राहम अपने तम्बू में लौट आया।

12 सदोम और अमोरा

उत्पत्ति 19: 1-29

शाम को दो स्वर्गदूतों ने सदोम में प्रवेश किया। उन्होंने लूत को शहर के द्वार पर बैठा पाया। जैसे ही

उसने उन्हें देखा, वह गया और उनके सामने झुक गया। उसने कहा, "मैं आपका विनम्र सेवक हूँ। कृपया मेरे घर आइए ताकि मैं आपकी सेवा कर सकूँ। मैं आपके पैर धोऊँगा और आपको रात बिताने के लिए जगह दूंगा। फिर मैं आपको जल्दी जगा दूंगा ताकि आप अपनी यात्रा जारी रख सकें।"

उन्होंने कहा, "नहीं, हम यहां सिर्फ शहर में रात बिताएंगे।"

"ओह, नहीं, मेरे प्रभु! अभी मेरे साथ चलो। कृप्या मेरा पीछें आओं।"

वह उन्हें अपने घर ले गया और उनके परिवार ने उनके लिए भोजन तैयार किया। जब वे सोने के लिए तैयारी कर रहे थे, एक भीड़ बाहर इकट्ठा हो गई। इसमें शहर के सभी युवा और बूढ़े दोनों थे। उन्होंने घर को घेर लिया और चिल्लाते हुए कहा, "लूत, उन लोगों को हमें दे, जो तुम्हारे घर में हैं। उन्हें बाहर भेजो, ताकि हम उनके साथ संभोग कर सकें।"

लूत ने बाहर कदम रखा और अपने पीछे का दरवाजा बंद कर दिया और कहा, "कृपया, मेरे भाइयों, यह दुष्टता मत करो। मेरे घर में ये आदमी मेहमान हैं। इन पुरुषों की जगह मेरी दोनों बेटियों को ले लो, वे कुँवारी हैं। तुम उनके साथ जो करना चाहते हो , करों, लेकिन इन पुरुषों को मत छुओ।

भीड़ को गुस्सा आ गया। "रास्ते से हट जाओ! तुम्हे कया लगता है कि तुम कौन हो, जो हम पर हुक्म चला रहे हो?"

उन्होंने उसे एक तरफ धकेल दिया और दरवाजा तोड़ना शुरू कर दिया। स्वर्गदूतों ने दरवाजा खोला, लूत को पकड़ लिया, उसे अंदर खींच लिया और दरवाजा बंद कर दिया। उन्होंने तब बाहर के सभी लोगों को अंधा कर दिया। भीड़ ने अपना रास्ता खोजने का प्रयास किया।

स्वर्गदूतों ने लूत से कहा, "हम इस शहर को नष्ट करने के लिए यहाँ हैं! इसके पीड़ितों की आवाज़ परमेश्वर के कानों में पड़ी है। जल्दी करो! अपने सभी परिजनों को ले जाओ, जो शहर में रह रहे हैं - बेटे, बेटियां, दामाद - जो कोई भी तुम्हारा है। उन्हें ले आओ और इस शहर को छोड़ दो।

लूत अपने होनेवाले दामादों के घर पहुंचाऔर उनसे कहा, "उठो! मेरे साथ आओ! हमें शहर से बाहर निकलना होगा! यहोवा इसे नष्ट करने वाला है।" लेकिन उन्होंने उसे नजरअंदाज कर दिया क्योंकि उन्हें लगा कि वह मजाक कर रहा है।

सुबह सूरज निकलते ही लूत ने शहर नहीं छोड़ा। स्वर्गदूत ने उससे कहा, "जल्दी करो! तुम और तुम्हारा परिवार यहां से निकल जाओ, नहीं तो तुम भी इस नगर के साथ नष्ट हो जाओगे!"

फिर भी, उन्होंने शहर छोड़ने के लिए समय लगाया। उसके साथ, प्रभु ने उन पर दया की। स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और बेटियों को पकड़ लिया और उन्हें शहर से बाहर ले गए। स्वर्गदूतों ने कहा, "अपनी जान बचाने के लिए भागो! पीछे मुड़कर न देखें! जब तक तुम पहाड़ों में नहीं पहुँच जाते, तब तक कहीं मत रुकना!"

लूत ने कहा, "हे परमेश्वर, आप मेरे प्रति दयालु हैं। लेकिन मैं पहाड़ तक नहीं पहुँच सकता। कृपया, पास में एक छोटा शहर है। मुझे वहां जाने दो।"

स्वर्गदूत ने कहा, "वहाँ जाओ, लेकिन जल्दी करो! जब तक तुम सुरक्षित नहीं होते , मैं कुछ नहीं कर सकता।" यहोवा अब्राहम के कारण लूत पर दया कर रहा था। दुर्भाग्य से, लूत की पत्नी ने शहर की ओर देखा, जब वे भाग रहे थे, इसलिए वह नमक का खम्बा बन गई।

सूरज पूरी तरह से ऊपर था जब लूत छोटे शहर में पहुंच गया। जैसे ही वह अंदर पहुंचा, प्रभु ने स्वर्ग से आग भेज दी और उस छोटे से शहर को छोड़कर, सदोम और अमोरा और घाटी के अन्य सभी शहरों को नष्ट कर दिया।

अब्राहम उस स्थान पर गया जहाँ परमेश्वर ने उसके साथ बात की थी। उसने सदोम की दिशा में देखा, लेकिन उसने देखा कि आसमान में धुआं उठ रहा था।

13 दो बेटियाँ

उत्पत्ति 19: 18-38

सदोम के विनाश के बाद, लूत और उसकी दो बेटियाँ उस छोटे शहर को छोड़कर चले गए जहाँ वे रहते थे, क्योंकि लूत को वहाँ के हालात से डर था। वे पहाड़ों पर चले गए और एक गुफा में रहने लगे।

एक दिन, बड़ी बेटी ने अपनी बहन से कहा, "हमारे पिता बूढ़े हैं, और हमें पति पाने और बच्चे पैदा करने की कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए, भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारे पिता के वंश को चलाना हमारे ऊपर है। मेरे पास एक योजना है। चलो पिता को तब तक शराब के नशे में चूर करते है जब तक कि उन्हें पता ना हो कि वह क्या कर रहे हैं, हम उसके साथ संबंध बनाएंगे ।"

बहन सहमत हो गई, इसलिए उस रात उन्होंने अपने पिता को शराब पिलाई। सबसे बड़ी बेटी उसके साथ लेट गई। उसे कुछ भी पता नहीं था कि क्या हुआ था।

अगले दिन, बड़ी बेटी ने अपनी बहन से कहा, "आज रात तुम्हारी बारी है। याद रखना, हम ऐसा अपने पिता के वंश को बचाने के लिए कर रहे हैं।" इसलिए उन्होंने अपने पिता को शराब पिलाई और छोटी बेटी उनके साथ लेट गई। फिर से, लूत को कुछ भी नहीं पता था कि क्या हुआ था। दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुईं। सबसे बड़ी बहन ने एक बेटे को जन्म दिया, जो मोआबियों का पिता बन गया। छोटी बहन ने एक बेटे को जन्म दिया, जो अम्मोनियों का पिता बन गया।

14 वह मेरी बहन है

उत्पत्ति 20

अब्राहम ने एक ऐसे क्षेत्र की यात्रा की जहाँ अबीमेलेक राजा का शासन था। उन्होंने वहाँ के लोगों से कहा, "सारा मेरी बहन है।" इसलिए अबीमेलेक ने लोगों को सारा को पाने और उसे अपने घर लाने के

लिए भेजा। एक बार जब वह वहाँ पहुँची, तो प्रभु ने राजा को उसके साथ संबंध बनाने से रोका।

प्रभु ने एक सपने में अबीमेलेक के पास आया और कहा, " तू मरने वाला है क्योंकि जिस महिला को तुमने घर में लाया है वह शादीशुदा है।"

राजा ने कहा, "प्रभु, मैं निर्दोष हूँ !" उस व्यक्ति ने मुझे बताया कि वह उसकी बहन है , और स्त्री ने भी वही कहा। प्रभु, आपको विश्वास होना चाहिए कि मैंने स्पष्ट विवेक के साथ ऐसा किया। इसके अलावा मैंने उसे छुआ तक नहीं।

प्रभु ने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम सच कह रहे हो। मैंने तुम्हें उससे दूर रखा। अब, मेरी बात सुन— वह आदमी एक नबी है। उसकी पत्नी को उसके पास वापस ले जा और उसे प्रार्थना करने के लिए कह। यदि वह करता है, तो तू जीवित रहेगा लेकिन सावधान रहना, यदि तू ऐसा नहीं करेगा , तो तू और तेरा पूरा परिवार मर जाएगा।"

सुबह-सुबह, अबीमेलेक ने अपने सभी सेवकों को बुलाया। जब उसने उन्हें बताया कि परमेश्वर ने क्या कहा है, तो सभी पर डर छा गया। अचानक घर की महिलाओं को एहसास हुआ कि वे बच्चे पैदा करने में असमर्थ हैं।

अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलवाया और कहा," तूने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? मैंने तेरे साथ ऐसा क्या किया जिसके कारण तू मुझसे इस तरह से पेश आया? मेरा पूरा राज्य कुसूरवार महसूस कर रहा है। तू क्या सोच रहा था?" तूने हमें इस बड़े पाप में डालने की कोशिश की! तूने ऐसा क्यों किया?"

अब्राहम ने कहा, "मेरी पत्नी और मेरे पिता एक ही हैं। तो वह वास्तव में मेरी बहन है बस हमारी माताएं अलग हैं। जब हम आपकी भूमि पर आए, तो मुझे नहीं पता था कि परमेश्वर का डर यहाँ था। मुझे यकीन था कि मुझे मार दिया जाएगा ताकि आप मेरी पत्नी को पा सकें। इसलिए वह लोगों से यह कहकर अपनी वफादारी दिखाने को तैयार हो गई कि मैं उसका भाई हूं।"

अबीमेलेक ने सारा को वापस अब्राहम के पास भेज दिया, साथ में भेड़, मवेशी, दास और एक हजार चाँदी के टुकड़े। उसने कहा, "तू स्वतंत्र रूप से मेरे राज्य में कहीं भी जा सकता हैं। जहां चाहो वहां बस जाओ। कोई तुझे परेशान नहीं करेगा।"

अब्राहम ने तब राजा के लिए प्रार्थना की। इसलिए प्रभु ने अबीमेलेक को चंगा किया और सभी महिलाओं को एक बार फिर से बच्चे पैदा करने में सक्षम बनाया।

15 परमेश्वर सुनते हैं

उत्पत्ति 21

जब अब्राहम सौ साल का था, सारा ने एक बेटे को जन्म दिया। उन्होंने उसे इसहाक कहा, जिसका अर्थ है "हँसी," क्योंकि सारा ने कहा; "परमेश्वर ने मेरे दिल में हँसी डाली है। और मेरे बच्चे को जन्म देने के बारे में सुनने वाले सभी मेरे साथ हँसेंगे। क्या किसने सोचा होगा कि मैं एक बच्चे को जन्म द दूँगी?"

जब इश्माएल जवान था, तब सारा ने उसे इसहाक का मज़ाक उड़ाते देखा था। वह गुस्से में थी और उसने अब्राहम से कहा, "उस औरत को, साथ ही उसके बेटे को भी भेज दो। मैं उन्हें इसहाक से संबंधित कुछ भी विरासत में नहीं देना चाहती हूँ।"

अब्राहम ऐसा नहीं करना चाहता था क्योंकि वह इश्माएल से प्यार करता था। लेकिन परमेश्वर ने उससे कहा, "वही कर जो सारा चाहती है। तुझ से मेरे वादे इसहाक के माध्यम से पूरा किए जाएंगे। और इश्माएल और उसकी माँ के बारे में चिंतित न हों। क्योंकि वह तेरा बेटा है, इसलिए मैं उसे भी राष्ट्र बनाऊँगा।"

इसलिए, अगली सुबह, अब्राहम ने हाजिरा को रोटी और पानी दिया और उसे और उसके बेटे को भेज दिया। वे जंगल में चले गए, जहाँ वे तब तक रहे जब तक उनका पानी खत्म नहीं हो गया। जल्द ही हाजिरा ने जीने की सारी उम्मीद खो दी। वह अपने बेटे को मरते हुए नहीं देख सकती थी, इसलिए उसने उसे एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया और थोड़ी दूर चली गई। वह फिर जमीन पर गिर गई और रो पड़ी।

इश्माएल ने पुकारा और परमेश्वर ने उसकी आवाज़ सुनी। प्रभु के दूत ने हाजिरा से कहा, "डर मत, परमेश्वर ने तेरे बेटे की आवाज़ सुनी है। उठ और उसके पास जा। उसे तेरी मदद चाहिए। उसका ध्यान रख क्योंकि वह एक महान राष्ट्र का पिता होगा।"

तब, परमेश्वर ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पास में पानी का एक कुँआ देखा। वह दौड़ी और अपने बरतन को पानी से भरकर अपने बेटे के पास ले गई।

जब इश्माएल बड़ा हुआ और परमेश्वर उसके साथ था। वह एक ऐसा व्यक्ति बन गया जो तीरंदाजी में बहुत अच्छा था और जंगल में बस गया था। सही समय पर, हाजिरा मिस्र चली गई और उसके लिए एक पत्नी लाई।

राजा अबीमेलेक अब्राहम के पास आया और उसने कहा, "हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि परमेश्वर तुम्हारे हर काम में तुम्हारे साथ है। तो आओ एक समझौता करें कि तुम्हारे लोगों और मेरे लोगों के बीच शांति हो।"

अब्राहम ने कहा, "मैं सहमत हूं, लेकिन एक समस्या है जिसके बारे में हमें बात करने की ज़रूरत है। आपके लोगों ने मेरे एक कुएं पर कब्ज़ा कर लिया है। "

राजा ने कहा, "मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। इससे पहले तूने मुझे क्यों नहीं बताया? मैं इसका ध्यान रखूंगा।"

इसलिए उन्होंने एक समझौता किया और अब्राहम ने अबीमेलेक को मवेशी और भेड़ देकर इसकी पुष्टि की।

लेकिन उसने सात भेड़ के बच्चों को अलग रखा। अबीमेलेक ने इसका कारण पूछा। अब्राहम ने कहा, "आपको इन सात भेड़ के बच्चों को स्वीकार करना होगा, ताकि यह प्रमाण हो कि यह कुआं मेरा है।"राजा ने सात भेड़ के बच्चों को स्वीकार कर लिया, और अब्राहम ने उस जगह का नाम बेर्शेबा रखा, जिसका अर्थ है, "शपथ का कुआं।" उन्होंने वहां एक इमली का पेड़ लगाया और अनन्तकाल परमेश्वर की आराधना की

16 अब्राहम का परीक्षण

उत्पत्ति 22

जब इसहाक जवान था, परमेश्वर अब्राहम के पास आए और कहा, "अब्राहम, इसहाक को ले लो, जिस पुत्र को तुम बहुत प्यार करते हो, और उस जगह जाओ, जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।" वहाँ, तुम्हें उसे एक होमबलि के रूप में बलिदान करना होगा।

इसलिए अगली सुबह, अब्राहम जल्दी उठ गया और बलि के लिए लकड़ी काट ली और गधे पर लादा , दो नौकर लिए, और यात्रा शुरू की।

तीन दिन बाद, अब्राहम ने उस स्थान को देखा, जिसे परमेश्वर ने चुना था। उसने अपने नौकरों से

कहा, “गधे के साथ यहीं रहो। इसहाक और मैं जाकर यहोवा की उपासना करेंगे। हम बलिदान के बाद वापस आएँगे।"

उसने इसहाक को लकड़ी उठाने के लिए कहा। अब्राहम ने कोयला और चाकू ले लिया। इसहाक ने चारों ओर देखा और पूछा: "पिता, हमारे पास लकड़ी और आग है, लेकिन बलिदान के लिए भेड़ कहाँ है?" अब्राहम ने अपने बेटे की तरफ देखा और कहा, “परमेश्वर खुद बलिदान के लिए एक भेड़ प्रदान करेगा।”

जब वे उस स्थान पर पहुँचे, जो परमेश्वर ने चुना था, अब्राहम ने एक वेदी बनाई और उसके ऊपर लकड़ी को व्यवस्थित किया। इसके बाद, उसने अपने बेटे को बांध दिया और उसे लकड़ी के ऊपर रख दिया। उसने अपने बेटे को मारने के लिए चाकू निकाल लिया।

तभी प्रभु के दूत ने उसे स्वर्ग से कहा, “अब्राहम, अब्राहम! अपने बेटे को मत मार! उसे कुछ मत कर! क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू परमेश्वर से डरता है, क्योंकि तू मुझे अपना पुत्र देने के लिए तैयार था!”

अब्राहम ने किनारे की ओर देखा, और देखा कि एक भेड़ उसके सींगों से झाड़ी में फंसी है। उसने भेड़ को लिया और अपने बेटे के बदले उसे बलिदान कर दिया। अब्राहम ने उस जगह का नाम "प्रभु आप ही उपाय करेंगे" रखा।

आगे चलकर, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “क्योंकि तुमने मेरी बात मानी है, मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को आशीष दूँगा। मैं तुम्हारे वंशजों को सितारों के रूप में अनगिनत बनाऊंगा। उन्हें समुद्र की रेत की तरह गिनना कठिन होगा। उसके ऊपर, मैं उन्हें उनके दुश्मनों के शहरों में भी प्रमुख बनाऊंगा! और उनकी वजह से पूरी पृथ्वी धन्य होगी।”

तब अब्राहम वापस चला गया जहाँ नौकर इंतज़ार कर रहे थे और वह सब साथ में घर चले गए।

17 सारा की मौत

उत्पत्ति 23

जब सारा 127 साल की थीं, तब सारा का निधन हो गया। उस समय उनका डेरा हेब्रोन के पास था, इसलिए अब्राहम हित्तियों के पास गया और कहा, “हम दोनों इस देश में एक साथ रहते हैं। कृपया मुझे एक ऐसी जगह खरीदने दें जहाँ मैं अपने मृतकों को दफन कर सकूँ।”

उन्होंने कहा, "तू परमेश्वर का चुना हुआ हैं, और हम तुझको एक शक्तिशाली राजकुमार मानते हैं। हमारी सबसे अच्छी कब्र ले लो और उनमें अपने मृतकों को दफनाओ और कोई भी तुझको इसका उपयोग करने से नहीं रोकेगा। ”

अब्राहम उठकर उनके सामने झुका और कहा, “आप सभी में से एक जन एक विशेष गुफा का मालिक है। उससे बात करें और उसे मुझे पूरी कीमत पर बेचने के लिए राजी करें।”

वह आदमी उनके बीच बैठा था। वह तुरंत खड़ा हुआ और आगे बढ़ा। उसने कहा, "मैं वह आदमी हूं, और मैं आपको बता सकता हूं कि आप बिना पैसे दिए अपने मृतकों को दफनाने के लिए स्वतंत्र हैं।"

अब्राहम ने उसे उत्तर दिया, "कृपया मुझे इस गुफा को पूरी कीमत पर खरीदने दें।" उस आदमी ने कहा, "यह गुफा 400 किलों चांदी की है, लेकिन तुम्हारे और मेरे बीच क्या है? अपने मृत को गुफा में स्वतंत्र रूप से दफनाओ। ”

लेकिन अब्राहम ने 400 शेकेल चांदी सबके सामने उस आदमी को दे दिया। इसलिए अब्राहम ने सारा को हेब्रोन की गुफा में दफनाया, और अब्राहम उसी दिन से उस ज़मीन का अधिकारी बन गया।

18 रिबका

उत्पत्ति 24

जब सारा की मृत्यु हो गई, तो अब्राहम को एहसास हुआ कि उसे अपने बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी खोजने की ज़रूरत है। उसने अपने नौकर से कहा, “मैं तुम्हें अपनी मातृभूमि वापस भेज रहा हूँ ताकि तुम मेरे बेटे के लिए एक पत्नी ला सको। मुझसे वादा कर कि तू यहाँ के लोगों में से महिला नहीं चुनेगा। सुनिश्चित कर कि वह मेरे रिश्तेदारों में से हो।"

नौकर चिंतित था, "क्या होगा अगर मुझे महिला नहीं मिलें, और वह अपना घर छोड़कर यहाँ आने को तैयार ना हों? शायद मुझे इसहाक को उससे शादी करने के लिए ले जाना हो।"

अब्राहम ने कहा,"बिलकुल नहीं! तू इसहाक को उस देश में वापस नहीं ले जाएगा! सुन, प्रभु अपने दूत को तेरे आगे भेजेगा। वह रास्ता तैयार करेगा। लेकिन अगर वह महिला आपके साथ वापस आने को तैयार नहीं है, तो तू इस कार्य से मुक्त हो जाएगा।"

एक लंबी यात्रा के बाद, नौकर उस शहर में पहुँचा जहाँ अब्राहम के रिश्तेदार रहते थे। वह शहर के बाहरी इलाके में एक कुएं पर रुक गया और प्रार्थना की, "हे प्रभु, मुझे इसहाक के लिए सही महिला ढूंढने में मदद करें।"

अचानक उसे एक विचार आया। "प्रभु, मैं एक महिला से पानी पिलाने के लिए कहूंगाजिससे मुझे पता चल जाएगा कि वह सही लड़की है, अगर वह मुझे पीने के लिए पानी देती है, और फिर सभी दस ऊंटों को पानी देती है!"

जल्द ही रिबका नाम की एक युवती कुएँ के पास आई। वह सुंदर थी ... और गुणवान थी... और उसकी शादी नहीं हुई थी।

उसने अपना घड़ा भर लिया और चलने लगी। नौकर आगे बढ़ा और पानी पिलाने के लिए कहा। उसने उसे दिया, और फिर अपने सभी ऊंटों के लिए पानी मांगा। जब वह ऐसा कर रही थी, तो नौकर ने परमेश्वर से पूछा कि वह यह जानने के लिए उसकी मदद करे कि अगर वह इसहाक के लिए सही लड़की थी।

रिबका के पानी पिलाने के बाद, नौकर ने उसे कई गहने दिए और पूछा, "तुम्हारा परिवार कहां है, और क्या तुम्हारे पिता के घर में मेरे रात बिताने के लिए जगह है?"

उसने नौकर को उसके पिता और दादा के नाम बताए, और दास को पता था कि वे अब्राहम के रिश्तेदार हैं। रिबका ने कहा कि उनके लिए रात बिताने के लिए बहुत जगह थी।

फिर उसने दास को छोड़ा, और वह अपने परिवार को इस बात के बारे में बताने के लिए घर चली गई। उसका भाई लाबान था, और जब उसने बहुमूल्य गहने देखे, तो वह जल्दी से कुएँ तक गया, यह देखने के लिए कि उसे ये चीजें किसने दी हैं। उसने नौकर से पूछा, "आओ, हमने तुम्हारे और तुम्हारे नौकरों के साथ-साथ तुम्हारे ऊँटों के लिए भी जगह तैयार की है!"

एक बार जब वे घर पहुंचे, तो नौकर को उनके साथ भोजन करने और खाने के लिए आमंत्रित किया गया। लेकिन उन्होंने कहा, "इससे पहले कि हम यह खाना खाएं, मुझे अपनी कहानी आपको बतानी होगी।"

उसने उन्हें बताया कि अब्राहम ने उसे काम सौंपा था। इसके बाद उसने कहा, "मैंने प्रार्थना की और परमेश्वर से कहा कि इसहाक के लिए मुझे सही महिला दिखाएं। एक संकेत के रूप में, मैंने कहां कि वह जो मुझे पानी पिलाने के लिए तैयार हो और सभी ऊंटों के लिए पानी भी निकालें तब मैं समझ जाऊंगा कि ये वही महिला है। रिबका ने ठीक वैसा ही किया। मेरा मानना है कि यह वह महिला है जिसे परमेश्वर ने इसहाक की पत्नी के रूप में चुना है।"

लाबान और उसके पिता यह कहानी सुनकर चकित रह गए। वे उससे सहमत हुए और तुरंत आशीष दी। अगली सुबह उन्होंने रिबका से पूछा कि क्या वह अब्राहम के नौकर के साथ जाने और इसहाक से शादी करने के लिए तैयार है। उसने कहा कि वह जाने को तैयार है।

इसलिए, उन्होंने रिबका को आशीष दिया और उसे नौकर के साथ भेज दिया। इसहाक मैदान में था जब उसने दूर से देखा, वह इसकी ओर चलने लगा। रिबका ने उसे अपने रास्ते आते देखा। उसने नौकर से पूछा, "वह आदमी कौन है?"

"ओह, यह मेरे गुरु, इसहाक है।" तब रिबका ने खुद को घूंघट से ढांक लिया।

तब नौकर ने इसहाक को पूरी कहानी बताई।

इसहाक ने रिबका को अपनी पत्नी के रूप में लिया, और उससे बहुत प्रेम किया।

19 पहिलौठे का अधिकार बेचना

उत्पत्ति 25

सारा के मरने के बाद, अब्राहम ने कतुरा नाम की एक महिला से शादी की। उन दोनो के छह बेटे थे। सालों बाद, जब अब्राहम जानता था कि वह मरने वाला है, तो उसने कतुरा और उसके बेटों को उपहार दिए और उन्हें पूर्व की भूमि में भेज दिया। फिर उसने इसहाक को अपना सब कुछ दे दिया।

जब वह 175 साल का था तब अब्राहम की मृत्यु हो गई। इसहाक और इश्माएल ने उसे उसी गुफा में दफनाया जहां सारा दफनाया गई थी।

शादी के बीस साल बाद, इसहाक ने अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना की क्योंकि वह बच्चे पैदा करने में असमर्थ थी। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया, और रिबका जुड़वां लड़कों के साथ गर्भवती हो गई।

अपनी गर्भावस्था के अंत के करीब, उसे लगा जैसे उसके गर्भ के अंदर लड़ाई हो रही है। वह बहुत दर्द में थी कि उसने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मेरे साथ क्या हो रहा है?"

प्रभु ने कहा, "तुम्हारे अंदर दो राष्ट्र हैं। तुम्हारे गर्भ से दो लोग समूह निकलेंगे। उनमें से एक दूसरे की तुलना में अधिक मजबूत होगा, और बड़ा छोटे की सेवा करेगा।"

जन्म के समय, बड़ा बच्चा लाल था और बालों से ढंका था। उन्होंने उसका नाम एसाव रखा, जिसका अर्थ है "बालों वाला।"

उसके भाई का जन्म एसाव की एड़ी पकड़े हुए हुआ था। उन्होंने उसका नाम याकूब रखा, जिसका अर्थ है, "एड़ी।" इसहाक साठ साल का था जब लड़के पैदा हुए थे।

जब वह बड़ा हुआ और एक आदमी बन गया, तो एसाव वनवासी व्यक्ति के रूप में कुशल हो गया, जिसमें शिकार करना भी शामिल था। याकूब शांत था, और घर में रहना पसंद करता था। रिबका याकूब से प्यार करती थी, लेकिन इसहाक मांस का स्वाद पसंद करता था, इसलिए वह एसाव का पक्ष लेता था।

एक दिन, एसाव एक यात्रा से थका हुआ घर आया। उसने याकूब को बर्तन में दाल पकाते हुए पाया। उसने कहा, "मैं थका हुआ और भूखा हूं।" मुझे उस मसूर की दाल में से थोड़ी दे दें।"

याकूब ने कहा, "चल सौदा करते हैं - मेरी दाल के लिए अपने पहिलौठे का अधिकार दे दें।"

"ठीक है, सौदा पक्का! भूख से मर जाने पर मेरा पहिलौठे का अधिकार किसी भी लाभ का नहीं होगा। अब मुझे दाल दे दें, मुझे पूरा बर्तन चाहिए।

याकूब ने कहा, "नहीं, तुझे पहले शपथ लेनी होगी कि तू मुझे अपना पहिलौठे का अधिकार दे रहा है।

एसाव ने कहा "मैं शपथ खाता हूँ। पहिलौठे का अधिकार तेरा है।"

तब, याकूब ने अपने भाई को पूरा भोजन दिया- रोटी, दाल और पानी। एसाव ने खाया और दिल से खाया और फिर उठकर चला गया।

तब से, यह एसाव के बारे में कहा गया, "उसने अपना पहिलौठे का अधिकार बेच दिया।" इसके अलावा, लोगों ने उसे "एदोम" कहा, जिसका अर्थ है "लाल।" यह उस मसूर की दाल के मूल्य के कारण था।

20 वह मेरी बहन है-2

उत्पत्ति 26: 1-11

जहाँ इसहाक रहता था, वहां पर एक बड़ा अकाल पड़ा, इसलिए उसे एहसास हुआ कि उसे दूसरे इलाके में जाने की जरूरत है। प्रभु ने उसे दर्शन दिया और कहा, "मिस्र मत जा। इस जगह पर रह, हालांकि तू यहां विदेशी हैं। मैं तुझको आशीष दूंगा, और तुझको वे सभी वादे दूंगा जो मैंने तेरे पिता अब्राहम से किए थे। तेरे वंशज अनगिनत सितारों के जितने होंगे। मैं उन्हें यह सारी भूमि दूंगा, और उनके द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीष दी जाएगी।"

इसहाक मिस्र नहीं गया, बल्कि पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के देश में बस गया। जब वहाँ के पुरुषों ने देखा कि रिबका एक खूबसूरत महिला थी, तो उन्होंने इसहाक से उसके बारे में पूछा। वह तुरंत अपने जीवन के लिए चिंतित हो गया, यह सोचकर कि वे उसकी वजह से उसे मार देंगे। तो उसने कहा, "वह मेरी बहन है।"

जब इसहाक कुछ समय वहाँ रह लिया, तो राजा ने अपने खिड़की के बाहर देखा, और उसने देखा कि इसहाक रिबका को गले लगा रहा है और उसे चुंबन कर रहा है। राजा ने उसे बुलाया और कहा, “यह स्त्री तेरी पत्नी है! तूने सभी को यह क्यों बताया कि वह तेरी बहन है?”

इसहाक ने समझाया कि वह उसकी वजह से मारे जाने से डरता था। राजा ने कहा, “तूने हम सभी को खतरे में डाल दिया है। कुछ पुरुष आसानी से उसके साथ संभोग कर सकते थे। तब हम सभी को इसकी वजह से नुकसान उठाना पड़ता।”

इसलिए अबीमेलेक ने अपने सभी लोगों को चेतावनी दी, "यदि कोई इसहाक या उसकी पत्नी को परेशान करता है, तो वह व्यक्ति मारा जाएगा।"

21 कुआँ खोदनेवाला

उत्पत्ति 26: 12-33

जब इसहाक पलिश्तियों के बीच रहता था, वह एक किसान था। प्रभु ने उसकी फसल को इतना आशीष दिया कि वह बहुत अधिक धनी हो गया। आखिरकार, उसका धन इतना बढ़ गया कि पलिश्तियों को जलन होने लगी। अबीमेलेक ने इसहाक को उनका देश छोड़ने के लिए कहा। उन्होंने कहा, तू बहुत शक्तिशाली हो गया हैं। हमें लगता है कि तू हमारे लिए खतरा हैं।”

इसहाक दूसरी घाटी में चला गया, और उसके नौकरों ने अब्राहम के कुछ कुओं को खोद दिया। उन्होंने कुछ नए भी खोदे। अचानक उन्हें कीमती झरने का पानी मिला। उस जगह के चरवाहों ने कहा, "यह पानी हमारा है।" इसलिए इसहाक के सेवकों ने अन्य कुओं को खोदा, और फिर से पानी पाया। फिर, चरवाहों ने कहा, "यह हमारा पानी है।"

वे दूसरे इलाके में गए और कुछ और कुएँ खोदे। इस बार, किसी ने भी उस पानी के बारे में बहस नहीं की जो उन्हें मिला। इसहाक ने कहा, “आखिरकार! प्रभु ने हमारे लिए जगह बनाई है। हम अब इस जगह पर समृद्ध हो सकते हैं। उन्होंने उस जगह को, "भरपूर जगह" कहा।

अबीमेलेक और पलिश्तियों की एक समिति इसहाक के पास गई। जब उसने उन्हें देखा तो उसने कहा, “तुमने मुझे गुस्से में भेज दिया। तो तुम अब मेरे पास क्यों आए हो?”

अबीमेलेक ने कहा, "यह हमारे लिए स्पष्ट है कि प्रभु इस समय तुम्हारे साथ हैं, हम तुम्हारे साथ एक संधि करना चाहते हैं। जब तूम हमारे बीच रहते थे तब हमने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया। हां, हमने तुझको भेज दिया, लेकिन यह शांति से था। अब हम दोनों को सहमत होना होगा कि तू हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करेगा और तू हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा।"

इसलिए इसहाक ने एक भोज किया, और उन सभी ने एक साथ खाए और पिया। अगली सुबह उन्होंने एक दूसरे को शपथ दिलाई कि वे एक दूसरे के साथ शांति से रहेंगे।

अबीमेलेक और उनके समिति के चले जाने के बाद, नौकर आए और इसहाक को अपने नए कुएं के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "हमने पानी पाया है।" इसलिए उसने उस स्थान का नाम बेर्शेबा रखा, जिसका अर्थ है “शपथ का कुआं।"

22 चुराई हुई आशीष

उत्पत्ति 27

इसहाक की उम्र ढलने के बाद, उसकी आँखे धुंधली पड़ गयी और उसने सोचा कि वह जल्द ही मरने वाला है। इसलिए उसने एसाव को आशीष देने का फैसला किया। उसने कहा, "मांस लाने के लिए शिकार पर जा और मुझे जो पसंद है उसे वैसे तैयार करें। खाने के बाद, मैं तुझको आशीष दूंगा।”

रिबका ने इसे सुना और याकूब को बताया। उसने कहा, “जाओ बकरी के दो बच्चे ले आओ। मैं उन्हें

तुम्हारे पिता के लिए भोजन के रूप में तैयार करूंगी, और उसे वैसे बनाऊंगी जो उन्हें प्रसन्न करेगा। तू अपने पिता की सेवा कर और आशीष प्राप्त कर।"

याकूब ने कहा, "एसाव एक बालों वाला आदमी है, और मेरी त्वचा चिकनी त्वचा है। अगर मेरे पिता मुझे छूते हैं, तो उन्हें पता चलेगा कि मैं उन्हें धोखा देने की कोशिश कर रहा हूं। वह मुझे आशीष के बदले शाप देगें!"

रिबका ने कहा, "तेरा शाप मुझ पर हो! जा और जैसा मैंने कहा वैसा कर।

इसलिए याकूब ने जाकर बकरियों के दो बच्चे पकड़ लाया और उन्हें अपनी माँ को दे दिया। उसने उसे एसाव के शिकार के कपड़े दिए। भोजन तैयार करने के बाद, उसने बकरी के बच्चों के साथ याकूब की बाहों और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से को ढँक दिया।

याकूब अपने पिता के डेरे पर खाना ले गया। उसने कहा, "पिता।"

इसहाक ने अपनी अंधी आँखें उसकी ओर कर दीं। "हाँ, बेटा, तुम कौन हो?" "मैं एसाव हूं। कृपया, बैठकर खाईए ताकि आप मुझे आशीष दे सकें।"

इसहाक ने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि तू इतनी जल्दी वापस आ गया! "तेरा परमेश्वर तेरे साथ था और तुझे सफलता मिली।"

इसहाक ने कहा, "मेरे करीब आ ताकि मैं यह सुनिश्चित कर सकूं कि तू वास्तव में एसाव है।" याकूब ने कदम बढ़ाया और इसहाक ने पहुँच कर उसकी बाँह को छुआ। यह एसाव के हाथ की तरह बालों वाली थी। तब इसहाक याकूब की गर्दन के पीछे तक पहुँचा। एक बार फिर उसने पाया कि यह बालों वाला था।

उसने कहा, "बेटा, मैं उलझन में हूं। तेरी आवाज़ याकूब की तरह लग रही है, फिर भी तेरी त्वचा एसाव की तरह महसूस होती है। क्या तू सच में एसाव है "

याकूब ने कहा,"हाँ, पिता, मैं एसाव हूं।"

"ठीक है .... कृपया, मेरा लिए भोजन परोस।"

याकूब ने अपने पिता को भोजन परोसा। यह ठीक उसी तरह से लग रहा था जैसे एसाव बनाता था।

फिर भी इसहाक आश्वस्त नहीं था। उसने अपने बेटे से कहा कि वह उसे एक चुंबन दे। जब याकूब अपने पिता को चूमने के लिए झुका, इसहाक ने अपने बेटे कि पहने हुए कपड़ो की खुशबू सूंध ली। उसमें खेतों की खुशबू थी। उसने कहा,

"मेरे बेटे की खुशबू खेत की खुशबू की तरह है - परमेश्वर ने आशीष दी है!
परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज,
और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे!
राज्य राज्य के लोग तेरे आधीन हों, और देश देश के लोग तुझे दण्डवत करें।
तू अपने भाइयों का स्वामी हो, और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत करें।
जो तुझे शाप दें सो आप ही स्रापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें सो आशीष पाएं।"

याकूब के तम्बू से निकलने के तुरंत बाद, एसाव उस मांस के साथ आया, जिसे उसने बनाया था। "पिता, मैंने आपके लिए भोजन तैयार किया है, बैठकर खाएं, तब आप मुझे आशीष दे सकते हैं।"

इसहाक ने देखा। "तुम कौन हो?" "मैं एसाव, आपका बड़ा बेटा हूँ! कृपया, बैठे।"

इसहाक कांपने लगा। "फिर मेरे लिए मांस का भोजन कौन लाया? मैंने उसे आशीष दे दी। और ... वास्तव में, आशीष उसकी है।"

एसाव हैरान रह गया। वह चिल्लाया, "मुझे भी आशीष दो, मेरे पिता!"

"आह, तुम्हारे भाई ने मुझे धोखा दिया और तुम्हारी आशीषें ले लीं। मैंने उसे तेरा स्वामी बना दिया है। उसके सभी रिश्तेदार उसकी सेवा करेंगे। मैंने उसे सब कुछ दिया है - हमारा अनाज और नई दाखरस। मैं तुझे और क्या दे सकता हूं?"

जब एसाव ने अपने पिता के डेरे से निकला, तो उसने कहा, "मेरे पिता के मरने के बाद, मैं याकूब को मारूंगा!"

रिबका ने यह सुना, और याकूब को बताने के लिए दौड़ी।

रिबका ने याकूब से कहा "तुझे चले जाना चाहिए। मेरे भाई के घर जा! एसाव के गुस्से पर काबू पाने के बाद मैं तुझे वापस बुलावा लूंगी। जल्दी जा। मैं एक ही दिन तुम दोनों को खोना नहीं चाहती हूँ!"

उसके बाद उसे याकूब की यात्रा के लिए इसहाक की अनुमति मिली। इसहाक ने सहमति व्यक्त की कि याकूब को रिबका के देश में जाए और एक पत्नी की तलाश करे।

23 याकूब की दो पत्नियाँ

उत्पत्ति 28 - 29:30

याकूब ने अपनी माँ के देश की ओर यात्रा शुरू की। उसके पिता ने कहा था, "तू एक कनानी महिला से शादी नहीं करना। अपनी माँ के परिवार में वापस जा और वहाँ एक पत्नी खोज। परमेश्वर तुझे वह आशीष दे जो उसने अब्राहम को दी थी!"

पूरे दिन याकूब ने यात्रा की। उस रात वह एक तकिये के रूप में एक चट्टान का उपयोग करते हुए जमीन पर सो गया। रात में उसने सपना देखा कि एक सीढ़ी है जो स्वर्ग तक है। स्वर्गदूत ऊपर जा रहे थे

और नीचे आ रहे थे! उसने प्रभु को यह कहते हुए सीढ़ी के ऊपर खड़ा देखा, “मैं अब्राहम के परमेश्वर और तेरे पिता इसहाक का परमेश्वर हूं। मैं तुझे और तेरे वंशजों को यह जमीन दे रहा हूं। उनकी वजह से सारी पृथ्वी धन्य होगी! मैं तेरे साथ हूं और मैं तेरे ऊपर नजर रखूंगा। मैं तुझे इस भूमि पर वापस लाऊंगा।”

अचानक याकूब जाग गया और डर गया। उसने कहा, "ओह, ... परमेश्वर यहाँ है और मुझे यह पता नहीं था! यह परमेश्वर का घर और स्वर्ग का द्वार है!” उसने उस पत्थर को लिया जिससे उसने तकिया बनाया था, और इसका उपयोग वेदी बनाने के लिए किया। उसने उस पर तेल डाला और उस जगह को बेतेल कहा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर का घर।" उसने कहा, "यदि परमेश्वर ने मेरी रक्षा की, और मेरे लिए सब कुछ प्रदान करता है, और मुझे इस भूमि पर वापस लाता है,, तो वह मेरा परमेश्वर होगा, और मैं उसे हर चीज़ का दसवां हिस्सा दूंगा जो वह मुझे देगा ।"

याकूब ने अपनी माँ के भाई के घर यात्रा की। उसके मामा लाबान ने उसका खुशी से स्वागत किया।

अब लाबान की दो बेटियाँ थीं। सबसे बड़ा लिआ: थी, और छोटी राहेल थी - जो सुंदर थी।

एक महीने के अंत में, लाबान ने याकूब से कहा, “मेरे लिए काम कर और मैं तुझे मजदूरी दूंगा। तेरी कीमत क्या है?”

याकूब ने कहा, "मैं आपकी छोटी बेटी राहेल के लिए सात साल तक काम करूंगा।"

लाबान ने सहमति व्यक्त की और कहा, "ठीक, सौदा हुआ!"

इसलिए याकूब ने लाबान के लिए सात साल काम किया, और यह राहेल के लिए उसके महान प्रेम के कारण, कुछ दिनों के जितना लगा।

उस समय के अंत में, लाबान ने लोगों को एक शादी की दावत में आमंत्रित किया। उपयुक्त समय पर, वह अपनी बेटी को ले आया और उसे याकूब को दे दिया। सुबह याकूब को पता चला कि उसके मामा ने उसे बड़ी बेटी लिआ दी है।

वह नाराज़ था! वह लाबान के पास गया और कहा, “तूने मुझे धोखा क्यों दिया? तुझे पता है कि मैं राहेल से प्यार करता हूँ! मैंने तुझे उसके लिए सात साल सेवा दी है।”

लाबान ने कहा, "हमारे देश में, छोटी बेटी को तब तक शादी करने की अनुमति नहीं दी जाती है जब तक कि बड़ी की शादी नहीं हो जाए। लेकिन, हम ऐसा कर सकते हैं की लिआ: का सप्ताह तो पूरा कर, और फिर मैं तुझे राहेल दूंगा और वह तेरी पत्नी हो सकती है। तुझे इसकी लागत के रूप में और सात साल काम करना होगा। ”

इसलिए याकूब राजी हो गया और सात दिनों के बाद उसने राहेल से भी शादी कर ली।

24 धब्बेदार, चित्तीदार और लकीरदार

उत्पत्ति 29:31 - 31: 3

याकूब ने अपने दो पत्नियों को पाने के लिए अपने मामा लाबान के लिए कुल चौदह साल काम किया। यह स्पष्ट था कि वह राहेल को लिआ से अधिक प्यार करता था।

यहोवा ने देखा कि लिआ अप्रिय थी, इसलिए उसने राहेल को बच्चे पैदा करने से रोक दिया। लिआ: के चार पुत्र होने के बाद, राहेल इतनी ईर्ष्यालु हो गई कि वह याकूब पर चिल्लाई, "मुझे एक बेटा दे वरना मैं मर जाऊंगी!"

उसने कहा, "मैं परमेश्वर नहीं हूं। मैंने तुझे बांझ नहीं बनाया।

तब राहेल ने उसे अपनी दासी दी। उसने कहा, "मेरी दासी के साथ सो। वह मेरे लिए बच्चे पैदा कर सकती है।" याकूब सहमत हो गया और जल्द ही दासी को बच्चे होने लगे।

अचानक लिआ: बच्चें पैदा करने में असमर्थ हो गई। इसलिए उसने याकूब को उसकी दासी दी। जल्द ही, तीन महिलाओं के साथ, याकूब के दस बेटे और एक बेटी थी। उस समय परमेश्वर ने राहेल को पुत्र को जन्म देने की अनुमति दी थी। उसने उसे यूसुफ नाम दिया। वह ग्यारहवा पुत्र था।

इस समय, याकूब लाबान के पास गया और कहा, "मैं अपने घर लौटना चाहता हूं। मुझे अपनी पत्नियों और बच्चों को लेने और जाने की आजादी दे।"

लाबान ने कहा, "ओह याकूब, मुझ पर दया कर और मत जा। मुझे पता है कि प्रभु ने तेरी वजह से मुझे आशीष दी है। तू जो चाहें, मैं तुझे दूंगा।

याकूब ने कहा, "तुझे मुझे कुछ भी नहीं देना है। इसके बजाय, मुझे झुंड का एक हिस्सा रखकर अपनी संपत्ति बनाने की अनुमति दें।"

"मैं तेरे झुंडों की देखरेख करूंगा, लेकिन मैं उन सभी बकरियों और भेड़ों को पालता हूं, जो धब्बेदार, चित्तीदार और लकीरदार पैदा हुई हैं। बाकी आप रख लीजिए। इस तरह, आप जान जाएंगे कि क्या मैं आपसे चोरी कर रहा हूं। मेरे झुंडों की जाँच करें और देखें कि क्या उन सभी पर सही निशान हैं।"

लाबान इन शर्तों से सहमत था, लेकिन झुंड से बाहर निकले सभी धब्बेदार, चित्तीदार, या लकीरदार को तुरंत अलग कर दिया। इसलिए जब याकूब ने लाबान के साथ यह नया समझौता शुरू किया, तो उसके पास कुछ भी नहीं था।

याकूब के पास एक तरीका था जिससे वह मेमने धब्बेदार, चित्तीदार, या लकीरदार पैदा होते थे। इस प्रक्रिया का उपयोग करते हुए, उसने यह सुनिश्चित किया कि झुंड के सभी सबसे अच्छे मेमने उसके पास आए, और झुंड के सभी कमजोर मेमने लाबान के पास। निराशा में, लाभ पाने के लिए लाबान ने दस बार अपना समझौता बदला। फिर भी, याकूब बहुत अमीर हो गया।

एक दिन, उसने अपने सालों के बीच बातचीत को सुना। उन्होंने कहा, "याकूब ने हमारे पिता से जो कुछ भी लिया है, उसे अपना धन बनाया है।" उसने यह भी देखा कि लाबान का रवैया उनके प्रति बदल गया था।

यहोवा ने याकूब से कहा, "उस भूमि पर वापस जाओ, जो मैंने तेरे पूर्वजों को दी थी, और मैं तेरे साथ रहूंगा।"

25 लाबान को छोड़ना

उत्पत्ति 31: 4 - 55

याकूब अपनी दो पत्नियों के साथ एक निजी बातचीत करना चाहते था , इसलिए वे मैदान में मिले। उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हारे पिता के लिए कड़ी मेहनत की, भले ही उन्होंने हमारे सौदे को दस बार बदल दिया। प्रभु ने मेरी रक्षा की और हर बार जब लाबान ने हमारे समझौते को बदल दिया, तो परमेश्वर ने मेमनों के जन्म के तरीके को बदल दिया। अब तुम्हारे पिता मुझसे नाराज़ हैं। इसलिए परमेश्वर के दूत ने मुझे अपने पिता के देश लौटने के लिए कहा है।"

दोनों महिलाएं उससे सहमत थीं। उन्होंने कहा, "परमेश्वर ने तुम्हें जो करने को कहा है वह करो। हमारे पिता ने हमें आपको बेच दिया और फिर पैसे खर्च कर दिए। आपने उससे कुछ भी प्राप्त नहीं किया है जो पहले से ही हमारा और हमारे बच्चों के लिए नहीं है।"

इसलिए लाबान को बताए बिना, याकूब ने वह सब लिया, और कनान की ओर अपने झुंडों को ले जाने लगा। उनके जाने से पहले, राहेल ने अपने पिता की पारिवारिक मूर्ति चुरा ली।

तीन दिन बाद, लाबान ने सुना कि याकूब निकल गया है। उसने तुरंत पुरुषों का एक समूह लिया और याकूब का पीछा किया। उसे पकड़ने में सात दिन लगे। एक रात पहले, परमेश्वर लाबान को दिखाई दिए और कहा, " सावधान रह! याकूब को कुछ भी मत करना, अच्छा या बुरा।"

अगले दिन, लाबान याकूब से मिला और कहा "तूने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? तू रात में एक चोर की तरह निकल गया, और मेरी बेटियों और पोते को ऐसे ले गया जैसे वे कैदी हों। अगर तूने मुझे बताया होता, मैंने तेरे लिए एक बड़ी दावत का आयोजन किया होता, और फिर खुशी-खुशी विदा किया होता।"

"अब तूने मुझे बदनाम कर दिया है, और यदि मैं चाहता, तो मैं तुझे यहीं नष्ट कर सकता था। लेकिन कल रात, तेरे पिता के परमेश्वर ने मुझे तुझे कुछ नहीं करने के लिए कहा था।

"मुझे लगता है कि मैं समझ सकता हूं कि तू अपने घर को याद कर रहा है, और आपने घर जाना चाहता है। लेकिन तूने मेरी पारिवारिक मूर्ति क्यों चुराई?"

याकूब ने कहा, "मैंने तेरी मूर्ति नहीं चुराई। तू आप जाके देखले। हमारे तम्बू खोज,यदि तू उसे पा लेता हैं, तो मैं उस व्यक्ति को मार दूंगा जिसने इसे लिया था।" वह नहीं जानता था कि राहेल ने इसे लिया था।

लाबान ने याकूब, लिआ: और दो नौकरानियों के तम्बुओं में खोजा। तब वह राहेल के डेरे में गया। वह अपनी ऊंट की काठी पर बैठी थी, जहाँ उसने मूर्ति रखी थी। उसने कहा, "पिताजी, कृपया मुझे खड़े न होने के लिए क्षमा करें। मैं अपनी मासिक धर्म से हूं। " लाबान ने उसके पूरे तम्बू में देखा और उसकी मूर्ति नहीं मिली।

इस पर, याकूब नाराज हो गया। उसने कहा, तूने मेरा यहाँ तक पीछा किया जैसे मैं एक अपराधी था। तूने वह सब कुछ खोज लिया है जो मेरे पास है। क्या तुझको ऐसा कुछ मिला है जो तेरा है? उसे बाहर लाओ और अपने आदमियों के सामने रखो।

"नहीं, तुझे कुछ भी नहीं मिला! मैंने तेरे लिए बीस साल काम किया। मैंने दिन में अत्यधिक गर्मी और रात में ठंड को सहन किया। मैंने काफी नींद के बिना काम किया, ताकि तू समृद्ध हो सकें। मैंने इन कष्टों को सहन किया, और तूने फिर भी यह सब किया है।

"तब तूने मुझे हर उस चीज़ का सारा नुकसान सहन करवाया जो गलत हो गई थी। अगर कोई भेड़ चुरा ले जाए तो मुझसे उसका भुगतान करवाया। अगर किसी जानवर ने एक मेमने को मार दिया, तो वह मेरा मेमना था।"

"तुने दस बार हमारे समझौते को बदल दिया। मैं यहाँ एक पैसे के बिना खड़ा होता अगर परमेश्वर ने चीजों को सही नहीं बनाया होता। अब वह मुझसे तेरी रक्षा कर रहा है।"

लाबान ने कहा, "तेरे पास जो कुछ भी है वह मेरे पास है। वो मेरी बेटियाँ हैं! वो मेरे पोते हैं! वो मेरे झुंड हैं! लेकिन अब मैं क्या कर सकता हूं? आ एक दृढ़ समझौता करें जिसे बदला नहीं जा सकें। यहां हर कोई इसका साक्षी बनेगा।"

इसलिए सभी लोगों ने पत्थर लिए और उनसे एक टीला बनाया। याकूब और लाबान सहमत थे कि दोनों में से कोई भी टीले के दूसरी ओर नहीं जाएगा। लाबान ने कहा, "ये चट्टानें हमारे बीच एक समझौता है। तू मेरी बेटियों के साथ गलत व्यवहार नहीं करेगा और किसी अन्य पत्नियों को नहीं लाऐगा।"

तब याकूब ने परमेश्वर के सामने बलिदान दिया और उसके बाद सभी लोग भोजन करने बैठे। अगली सुबह, लाबान अपनी बेटियों और नाती-पोतों को चूमा, और उन्हें आशीर्वाद दिया। वह फिर अपने घर लौट आया।

26 दो तम्बू

उत्पत्ति 32 - 33

याकूब और उसका परिवार अपनी मातृभूमि वापस जा रहे थे। अचानक परमेश्वर का दूत उनसे मिलाऔर वह जान गया कि वह अकेला नहीं है, इसलिए उसने उस स्थान का नाम "दो शिविर" रखा।

वहाँ से उसने अपने भाई एसाव के लिए संदेश भेजा, "मैं अपनी सारी संपत्ति के साथ घर आ रहा हूँ, और मुझे आशा है कि तू मुझे स्वीकार करेगा।"

दूत वापस आया और कहा, "तेरा भाई चार सौ लोगों के साथ आ रहा है।" याकूब के दिल में डर बैठ

गया। उसने तुरंत सब कुछ दो खेमों में बाँट दिया, कहा, "अगर एसाव एक शिविर पर हमला करता है, तो दूसरा बच सकता है।"

उसने प्रार्थना की, "ओह, अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर, तूने मुझे मेरे देश वापस आने के लिए कहा था। तूने कहा कि मैं यहां समृद्ध होऊंगा। तूने मुझ पर जो उपकार किया है, मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मैंने केवल अपने चलने की छड़ी के साथ इस भूमि को छोड़ दिया। अब मैं दो खेमे का हूं।

“कृपया मुझे मेरे भाई से बचा। तूने कहा कि मेरे वंशज समुद्र की रेत के जितने अनगिनत होंगे।"

फिर उसने अपने भाई के लिए उपहार तैयार किए, जिसमें बकरी, भेड़, ऊंट, गाय और गधे शामिल थे। उसने उन्हें तीन समूहों में विभाजित किया और उन्हें आगे भेजा। उसने अपने सेवकों से कहा, "जब एसाव पहले समूह तक पहुँचे, तो उससे कहना, तेरे दास याकूब ने तेरे लिए ये भेजा है। देख, तु उसे वहाँ देख सकता है।" उसने दूसरे समूह और तीसरे समूह को वही बातें कहने के लिए कहा। वह उम्मीद कर रहा था कि इन चीजों से एसाव को क्षमा करने में और अधिक मदद मिलेगी।

इसके बाद उसने अपने भाई के आने की प्रतीक्षा में रात बिताई। क्यूंकि वह सो नहीं सकता था, इसलिए वह खुद से ही चला गया।

उसे अचानक एक आदमी दिखाई दिया और उसे पकड़ लिया। याकूब वापस लड़ा, और उन दोनों ने पूरी रात कुश्ती की। भोर के समय अजनबी ने देखा कि याकूब इस लड़ाई को जीतने के लिए दृढ़ था। तो उस आदमी ने उसकी जांघ की नस को छूआ और उसकी जांघ की नस चढ़ गई ।

उसने कहा, "मुझे जाना है। यह दिन का समय है।” याकूब ने कहा, "जब तक आप मुझे आशीष नहीं देंगे मैं आपको जाने नहीं दूगां।"

उस आदमी ने कहा, "तेरा नाम क्या है?" "मैं याकूब हूँ" उस आदमी ने कहा, " नहीं, अब तुम्हारा नाम यह नहीं है।"

तुझको इस्राएल कहा जाएगा, जिसका अर्थ है ‘परमेश्वर के साथ कुश्ती करनेवाला ।’ तू परमेश्वर से लड़ा हैं, और इसके बारे में बताने के लिए अभी भी जीवित है।”

याकूब ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

उस आदमी ने कहा, "मैं तुम्हें अपना नाम नहीं बताऊंगा।" फिर, उसने याकूब को आशीष दी।

याकूब ने उस जगह को "परमेश्वर का चेहरा" कहा। उसने कहा, "मैंने परमेश्वर का चेहरा देखा है और मैं अभी भी जीवित हूं।"

याकूब वापस अपने शिविर में चला गया। दूर से वह एसाव और उसके चार सौ आदमियों को आते हुए देख रहा था। उसने अपने प्रत्येक परिवार को अलग-अलग समूहों में रखा, और फिर वह बाहर चला गया। उसने सात बार झुककर अपने भाई की ओर देखा।

एसाव उसके पास गया और उसे गले लगा लिया। दोनों रोये। तब एसाव ने याकूब के पीछे खड़े लोगों को इशारा किया। "तेरे साथ ये लोग कौन हैं?"

एसाव ने याकूब के परिवार से मुलाकात करने के बाद कहा, "तूने उन सभी जानवरों को रास्ते में क्यों रखा?"

"ओह, मैंने उन्हें तुझसे क्षमा प्राप्त करने की उम्मीद में दिया था।"

एसाव ने कहा, “नहीं, नहीं। मेरे पास पर्याप्त है। तू उन्हें रख।”

लेकिन याकूब ने ज़ोर दिया। “कृपया, मेरा उपहार स्वीकार कर। मुझे बहुत ख़ुशी होगी।” तो एसाव सहमत हो गया।

तब एसाव और उसके लोग उसी दिन घर गए। याकूब एक ऐसे इलाके में गया, जो शकेम नाम के शहर के पास था। वहाँ उसने एक वेदी बनवाई और उसे “परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर” कहा।

27 दीना

उत्पत्ति 34 - 35

याकूब के ग्यारह बेटे थे लेकिन केवल एक बेटी थी। उसका नाम दीना था। एक दिन, वह उस इलाके की कुछ युवतियों के साथ रहने के लिए बाहर गई। जब वह वहां थी, शकेम नामक एक राजकुमार ने उसे देखा और उसके साथ बलात्कार किया।

उसने ऐसा करने के बाद, उसने उसके लिए स्नेह महसूस किया और उससे कोमलता से बात की। उसने अपने पिता से कहा, "मैं इस लड़की से प्यार करता हूं और मैं चाहता हूं कि तुम उसके पिता के साथ बात करो ताकि वह मेरी पत्नी बन सके।"

याकूब ने अपनी बेटी के बलात्कार के बारे में सुना, जबकि उसके बेटे मवेशियों को चरा रहे थे। लौटने से पहले, शकेम का पिता आया और याकूब से शादी की संभावनाओं के बारे में बात की।

इन सबके बारे में सुनकर दीना के भाई आगबबूला हो गए। उन्होंने महसूस किया कि यह इस्राएल के पूरे परिवार के लिए एक अपमान था।

युवक के पिता ने कहा, "कृपया उस भलाई के बारे में सोचो जो इससे आ सकती हैं। मेरा बेटा आपकी बेटी से प्यार करता है। उनकी शादी करवा दे। फिर हम आपको अपनी बेटियों को शादी करने के लिए देंगे, और हम एक हो जाएंगे।"

शेकेम ने कहा, "आप जो भी कहेंगे, मैं वह करूंगा यदि आप दीना का विवाह मुझसे होने की अनुमति देंगे।"

याकूब के बेटों ने बदला लेने की योजना के बारे में सोचा। उन्होंने कहा, "हम आपको हमारे परिवार की लड़कियां नहीं दे सकते क्योंकि आपके पुरुषों का खतना नहीं हुआ है। यह हमारे लिए अपमान की बात होगी। एकमात्र तरीका जिससे हम आपकी शर्तों से सहमत हो सकते हैं वह यह है कि आपके शहर के प्रत्येक पुरुष का खतना किया जाए। यदि आप इसके लिए सहमत हैं, तो हम आपको दीना देंगे और आपकी बेटियों को हमारी पत्नियों के रूप में लेंगे। लेकिन अगर आप ऐसा करने से इनकार करते हैं, तो हम दीना को ले जाएंगे।"

शकेम और उनके पिता इन शर्तों से खुश थे। वे वापस शहर गए और सभी लोगों से मिले। उन्होंने समझौते के बारे में बताया और फिर कहा, "यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। उनके पास बहुत सारी संपत्ति है। समय आने पर यह सब हमारा हो जाएगा। बस हमें खतना करना होगा।"

सभी लोग सहमत हुए और तुरंत खतना कर दिया गया। तीन दिन बाद, वे अभी भी बहुत दर्द में थे। दीना के दो भाई शिमोन और लेवी शहर में गए और लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। व्यवस्थित रूप से, उन सभी को तलवारों से मार डाला। उन्होंने शकेम और उसके पिता को भी मार डाला और दीना को उनके घर से ले गए।

बाद में, अन्य भाइयों ने जाकर शहर को लूट लिया। उन्होंने हर घर और सभी खेतों को लूट लिया। वे महिलाओं और बच्चों, उनकी संपत्ति और सभी पशुओं को ले गए।

इस बारे में पता चलने पर याकूब हैरान रह गया । उसने शिमोन और लेवी से कहा, "तुमने इस पूरे देश को हमारे खिलाफ कर दिया। एक बार जब इस की खबर जाएगी, तो आसपास के सभी शहर बल के साथ हमारे खिलाफ आएंगे और हमें पूरी तरह से तबाह कर देंगे।"

उन्होंने कहा, "हमारे पास क्या विकल्प था? वे हमारी बहन को वेश्या नहीं मान सकते।"

परमेश्वर ने याकूब से कहा, "जल्दी कर! बेतेल जा। उस स्थान पर एक वेदी बना जहाँ मैं तुझको दिखाई दिया था, जब तू एसाव से भाग रहा था।"

तब याकूब ने अपने परिवार और उसके साथ के सभी लोगों को निर्देश दिए। उन्होंने कहा, "अपने दिलों को शुद्ध करो और अपनी सभी मूर्तियों को छोड़ दो। हम बेतेल जा रहे हैं, और मैं परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाने जा रहा हूँ। मैं हमेशा जहाँ भी गया, उसने मेरी मदद की।"

इसलिए लोगों ने उसे अपने सभी झूठे देवताओं और उनके कान की बालियां दी। याकूब ने उन्हें शेकेम शहर के पास एक झाऊ के नीचे छिपा दिया।

वे तब बेतेल गए, जहाँ याकूब ने एक वेदी बनाई। परमेश्वर ने उनके आस-पास के शहरों पर अपना डर भेजा, इसलिए वे याकूब और उसके बेटों पर हमला करने से डरते थे। परमेश्वर ने उसके साथ मुलाकात की और उसे अब्राहम के सभी वादे दिए।

बाद में वे बेतेल छोड़कर दक्षिण चले गए। रास्ते में, राहेल अपने बेटे बिन्यामीन को जन्म देने के दौरान मर गई। उसे बैतलहम के पास दफनाया गया था।

28 गुलामी में बेचा जाना

उत्पत्ति 37 और 39

याकूब के बारह बेटे थे, लेकिन उसका पसंदीदा यूसुफ था। उसे अपना प्यार दिखाने के लिए, याकूब ने यूसुफ को कई रंगों से बना एक विशेष कपड़ा दिया। इससे बाकी बेटों को जलन हुई।

यूसुफ ने अपने असामान्य सपनों के बारे में अपने भाइयों को बताकर हालात को और खराब कर दिया।

“एक सपने में, हम अनाज के गट्ठे बांध रहे थे। मेरा गट्ठा अचानक सीधा खड़ा हो गया, और आपके गट्ठे उसके सामने झुक गए!" इससे उसके भाई नाराज़ हो गए। वे कल्पना नहीं कर सकते कि यूसुफ उन पर शासन कर रहा है।

"एक और सपने में, सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मुझे नमन कर रहे थे!" उसके पिता ने भी उनसे इस पर सवाल किया। "क्या तेरी माँ और मैं, साथ ही तेरे भाई भी तुझको नमन करेंगे?" फिर भी, याकूब ने इसे ध्यान में रखा।

कुछ समय बाद, दस बड़े भाई दूर के खेत में चरने के लिए झुंड ले गए। याकूब ने यूसुफ को यह देखने के लिए भेजने का फैसला किया कि वे क्या कर रहे थे।

जब भाइयों ने उसे आते देखा, तो उन्होंने कहा, "वो देखो सपने देखने वाला आ गया।" आओं उसे मार दें और उसे एक गहरे गड्ढे में फेंक दें। फिर हम देखेंगे कि उसके सपनों का क्या होता है!”

रूबेन सबसे बड़ा भाई था और उसने कहा, "उसे मत मारो! बस उसे एक गड्ढे में फेंक दो।” उसकी योजना लड़के को बाद में बचाने और उसे उसके पिता के पास वापस ले जाने की थी। इसलिए भाई सहमत हो गए, और यूसुफ को एक गड्ढे में फेंक दिया।

रूबेन एक कार्य पूरा करने के लिए चला गया, जबकि अन्य भाइयों ने भोजन किया। जब वे भोजन कर रहे थे, व्यापारियों का एक समूह मिस्र को जा रहा था।

अचानक यहूदा नाम के एक भाई को एक विचार आया। “हम यूसुफ को क्यों मारे? आखिरकार, वह हमारा भाई है। इसके बजाय, उसे बेच देते है! इसलिए उन्होंने उसे व्यापारियों को बेच दिया।

रूबेन बाद में वापस आया और यह देखकर हैरान रह गया कि लड़का वहा से चला गया था। भाइयों ने उसे बताया कि उन्होंने क्या किया था।

सब ने मिलकर अपने पिता को बताने के लिए एक कहानी सोची। उन्होंने एक बकरी को मारा और यूसुफ के कपड़े को खून में डुबो दिया। जब वे घर गए, तो उन्होंने अपने पिता को कपड़े दिखाए।

याकूब ने उसे पकड़कर और चिल्लाया, "यूसुफ जंगली जानवरों द्वारा मारा गया है!" उसने अपने कपड़े फाड़े और अपने बेटे के लिए रोने लगा। दूसरों ने उसे दिलासा देने की कोशिश की, लेकिन उसने अपने दिल की गहराई से यूसुफ के लिए विलाप किया। उसने कहा, "मैं अपने पूरे जीवन भर उसकी मृत्यु का शोक मनाता रहूंगा।"

जब यूसुफ मिस्र पहुंचा, तो उसे पोतीपर नाम के एक आदमी को बेच दिया गया। यूसुफ ने अपने जीवन को एक दास के अनुकूल किया और परमेश्वर ने उसे प्रत्येक चीज़ में समृद्ध किया। उसने अपनी क्षमताओं में वृद्धि की और अपने मालिक का सम्मान प्राप्त किया।

आखिरकार, पोतीपर ने यूसुफ को पूरे परिवार के प्रभारी के रूप में रखा, जिसमें धन का प्रबंध करना भी शामिल था।

पोतीपर को यह भी पता नहीं था कि उसके सामने जो भोजन रखा गया था, उसे छोड़कर उसके पास क्या था।

एक दिन, पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को उसके साथ बिस्तर पर जाने के लिए कहा। उसने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि यह उसके मालिक के लिए और परमेश्वर के लिए एक पाप होगा। लेकिन वह एक दृढ़ निश्चय वाली महिला थी, और नहीं स्वीकार किया। उसने हर मौके पर उसका पीछा किया, लेकिन यूसुफ ने हमेशा उसे मना कर दिया।

एक दिन, उसने एक मौका देखा जब उसका पति घर पर नहीं था। उसने यूसुफ के घर में आने तक इंतजार किया और फिर उसे पकड़ लिया। यूसुफ ने अपने आपको छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन उसने यूसुफ का कपड़ा पकड़ लिया और उसे नहीं छोड़ा। अंत में यूसुफ ने उसके हाथों में अपने कपड़े का हिसा छोड़ दिया और भाग गया।

इससे वह उग्र हो गई, इसलिए उसने बदला लेने की ठान ली। वह चिल्लाई और घर के नौकर दौड़कर आए। उसने उन्हें बताया कि यूसुफ उसके कमरे में आया था और उसे बिस्तर पर खींचने की कोशिश की। उसने कहा, "जब मैं चिल्लाई तो वह भाग गया।" वह जो कुछ कह रही थी, उसके सबूत के रूप में उसके पास यूसुफ का कपड़ा था।

जब उसका पति घर आया, तो उसने उसे वही कहानी सुनाई। वह गुस्सा हुआ और उसने यूसुफ को जेल में डाल दिया।

29 यहूदा

उत्पत्ति 38

यहूदा, याकूब का चौथा पुत्र था। एक समय ऐसा आया जब उसने अपने भाइयों को अपने हाल पर छोड़ दिया। उसने एक कनानी महिला से शादी की, जिसने तीन बेटों को जन्म दिया। जब समय सही था, तब यहूदा ने अपने सबसे बड़े बेटे के लिए एक पत्नी ढूंढ़ी। उसका नाम तामार था।

दुर्भाग्य से, सबसे बड़ा बेटा दुष्ट था, और प्रभु ने उसे मार दिया। यहूदा ने अपने दूसरे बेटे को तामार के साथ संबंध बनाने के लिए कहा था ताकि उसके बड़े भाई का उत्तराधिकारी हो सके, और परिवार का नाम चलता रहें।

दूसरा बेटा तामार के साथ सोया, लेकिन अपने भाई के लिए बच्चा पैदा करने के विचार उसे पसंद नहीं था। इसलिए संभोग के दौरान आखिरी समय पर वह पीछे हट गया।

इसलिए वह गर्भवती नहीं हो सकीक्योंकि वो नहीं चाहता था कि उसके भाई के नाम से वंश चले!इससे परमेश्वर क्रोधित हो गए और उसने दूसरे पुत्र को मार डाला।

तब यहूदा ने तामार से कहा, “वापस जा और अपने पिता के घर में एक विधवा के रूप में रह। बड़े होने पर मैं तुझको अपना सबसे छोटा बेटा दूंगा।” तो उसने जैसा बताया गया था किया।

कई साल बीत गए और फिर भी यहूदा ने तामार को अपने सबसे छोटे बेटे को नहीं दिया। उन्हें चिंता थी कि उनका अंतिम पुत्र उनके भाइयों की तरह मर जाएगा। फिर भी, वह देख सकती थी कि सबसे छोटा अब शादी करने के लिए काफी बड़ा हो गया था।

उसी समय, यहूदा की पत्नी की मृत्यु हो गई। बाद में, वह और उसका दोस्त भेड़ों को चराने के लिए एक जगह गए। किसी ने यह बात तामार को बताई।

उसने तुरंत अपने कपड़े बदले, इसलिए वह विधवा की तरह नहीं दिखती थी। उसने फिर अपना चेहरा घूंघट से ढक लिया।

वह चली गई और सड़क के किनारे बैठ गई, जहां उसका ससुर उस दिन यात्रा करनेवाला था। उसने उसे देखा और यह मान लिया कि वह एक वेश्या है क्योंकि उसने अपने चेहरे पर घूंघट डाला था। वह नहीं जानता था कि वह उसकी बहू थी।

उसने उससे कहा, "मुझे तेरे साथ सोने दो।"

उसने कहा, "तुम मुझे क्या दोगे?"

उसने कहा, "जब मैं अपने झुंड के पास जाऊंगा, तो मैं तुझे एक बकरी का बच्चा भेजूंगा।"

उसने कहा, "मैं तेरे साथ संबंध बनाऊंगी, लेकिन तुझे मेरे पास कुछ छोड़ना होगा, ताकि मुझे यकीन हो कि तू मुझे बकरी का बच्चा भेजेंगा।"

"तू क्या चाहती है?"

उसने कहा, "मुझे आपकी चलने की छड़ी और अंगूठी दे जो तू अपनी गले में पहिने रखता है।"

उसने उसे वह चीजें दीं, और फिर उसके साथ संभोग किया, और वह गर्भवती हो गई।

उसके बाद, वह घर गई, अपना घूंघट हटा दिया, और एक बार फिर से अपने विधवा के कपड़े पहन लिए।

एक बार जब यहूदा अपने झुंड के पास पहुँचा, तो उसने एक दोस्त से कहा कि वह बकरी के बच्चे को वेश्या के पास ले जाए। उसने कहा, "जो चीजें मैंने उसके पास छोड़ी हैं, उन्हें लेता आ।"

जब दोस्त वहां पहुंचा, तो वह उसने उसे वहां नहीं पाया। उसने उस क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोगों से पूछा, "वो वेश्या कहाँ है जो इस सड़क पर बैठती है?"

उन्होंने कहा, "इस सड़क से कभी कोई वेश्या नहीं बैठती है।"

दोस्त वापस चला गया और यहूदा को यह सब बताया। उसने कहा,मैंने अपने हिस्से को पूरा करने की कोशिश की, पर वो मुझे नहीं मिली ।"

तीन महीने बाद, किसी ने यहूदा से कहा, "तेरी बहू ने एक वेश्या की तरह काम किया और अब वह गर्भवती है।"

यहूदा गुस्से में था। वह चिल्लाया, “उसे यहाँ ले आओ! हम उसे जला देंगे।”

जब वे उसे ले जा रहे थे, उसने अपने ससुर को एक संदेश भेजा। इसने कहा, “मैं उस आदमी की पहचान कर सकती हूं जिसने मुझे गर्भवती कर दिया। ये चीजें उसी की हैं। क्या आप उसे पहचानते हैं?”

जैसे ही उसने अपनी अंगूठी और छड़ी को देखा, उसे पता चल गया कि क्या हुआ था। उसने कहा, "वह मुझसे बेहतर इंसान हैं।" मैंने उसे अपना सबसे छोटा बेटा देने का वादा किया था, लेकिन ऐसा नहीं किया।” वह फिर कभी उसके साथ बिस्तर पर नहीं गई।

उसने जुड़वां लड़कों को जन्म दिया। जब वे पैदा हो रहे थे, एक बच्चे ने अपना हाथ बाहर निकाला। दाई ने उसकी कलाई पर एक लाल धागा बांध दिया, और कहा, "यह पहला बच्चा है।"

अचानक, हाथ वापस चला गया और दूसरे बच्चे का जन्म हुआ। इसलिए उन्होंने उस बच्चे का नाम पेरेस रखा, जिसका अर्थ है, "बाहर निकल आना।" फिर उसके भाई का जन्म हुआ। उसकी कलाई पर चमकीले लाल धागे के कारण, उन्होंने उसका नाम जेरह रखा, जिसका अर्थ है "उज्ज्वल।"

30 यूसुफ का सत्ता में आना

उत्पत्ति 40 - 41

यूसुफ के लिए जेल में जीवन कठिन था, लेकिन परमेश्वर उसके साथ था और उसे आशीष दी। उसका जेलर उसका सम्मान करने लगा और उसे एक सहायक के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। आखिरकार यूसुफ पूरे जेल का प्रभारी बन गया।

एक दिन, फिरौन ने अपने भोजन के मुख्य खिलाने वाले और मुख्य पिलाने वाले को जेल में डाल दिया। जब वे वहां थे, उन दोनों ने सपने देखे। यूसुफ ने उन्हें सपनों के बारे में बताने के लिए कहा।

पिलाने वाले ने कहा, "मैंने एक बेल पर तीन शाखाएं देखीं। वे खिल गए और फिर उसमें अंगूर लगे। मैंने अंगूर को फिरौन के प्याले में निचोड़ दिया और उसे परोसा।"

"आह", यूसुफ ने कहा, "तीन शाखाएं तीन दिन हैं। तीन दिनों में, फिरौन तुझको जेल से निकाल देगा और तुझको तेरी पुरानी नौकरी वापस दे देगा। कृपया, मुझे याद रख, और फिरौन से मुझे इस जेल से मुक्त करने के लिए कहना क्यूंकि मैंने यहां रहने लायक कुछ नहीं किया।"

यह सुनने के बाद, खिलाने वाला यूसुफ को अपना सपना बताने के लिए उत्सुक था। "मेरे सिर पर फिरौन की रोटी की तीन टोकरियाँ थीं। पक्षी उस टोकरी में से सारी रोटी खा गए।"

"ओह," यूसुफ ने कहा, "तीन टोकरियाँ भी तीन दिन हैं। तीन दिनों में, फिरौन तुझे जेल से निकाल देगा और तेरा सिर काट देगा। वह तेरे शरीर को एक पेड़ पर लटका देगा और पक्षी तेरे मांस को खाएंगे।"

सब वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था! फिरौन ने पिलाने वाले को उसकी पिछली

नौकरी पर बहाल किया, और खिलाने वाले को एक पेड़ पर लटका दिया। दुर्भाग्य से

पिलाने वाला जल्द ही यूसुफ के बारे में भूल गया।

दो साल बाद, फिरौन ने दो सपने देखे। वह पहला सपना देखकर उठा, लेकिन फिर सो गया।

फिर उसने दूसरा सपना देखा, लेकिन इस बार वह इतना परेशान था कि वह सो नहीं पाया।

उसने अपने सलाहकारो को बुलाया और उन्हें अपने दो सपने बताए। वे उनका अर्थ का पता नहीं लगा सके। अचानक प्रमुख पिलाने वाले ने यूसुफ को याद किया। उसने फिरौन को जेल के उस व्यक्ति के बारे में बताया जिसने उसके सपने और खिलाने वाले के सपने की व्याख्या की थी।

फिरौन ने यूसुफ को तुरंत लाने के लिए पहरेदार को भेजा। उन्होंने उसे पकड़ा, उसे साफ किया और फिरौन के सामने ले आए। उसने यूसुफ को उसके सपनों के बारे में बताया।

फ़िरौन ने कहा , "पहले में, मैंने देखा कि सात मोटी गायें नदी से निकली और उसके किनारे चरती हैं।

अचानक सात पतली गाय ने नदी से बाहर आकर मोटी गायों को खा लिया। और फिर भी, वे पहले की तरह ही पतली थी।"

"मेरे दूसरे सपने में मैंने देखा कि एक डंठल पर अनाज के सात ढेर लगे हुए थे। उसके बगल में एक डंठल पर अचानक सात सूखी बालें उग आई। अनाज के पतली बालें स्वस्थ वालियों को निगल गई। फिर भी, वे पहले की तरह पतली और सूखी थी।"

यूसुफ ने कहा, "परमेश्वर तुझको बता रहा है कि वह क्या करने वाला है।" सात अच्छी गायें और सात अच्छी बालें सात साल की बहुतायत हैं। उसके बाद, अकाल के सात साल आएंगे। यह इतना गंभीर होगा कि तुम अच्छे वर्षों को भूल जाओगे।"

"इसलिए, देश का प्रभारी बनाने के लिए एक बुद्धिमान व्यक्ति खोजें। उसे अच्छे वर्षों के दौरान भोजन के संग्रह को व्यवस्थित करने दें ताकि भोजन बुरे वर्षों के लिए संग्रहित हो सकें। यदि तू ऐसा नहीं करता हैं, तो देश अकाल से बर्बाद हो जाएगा।"

फिरौन ने अपने अधिकारियों से कहा, "क्या हम इस काम के लिए यूसुफ से बेहतर किसी को खोजने में सक्षम हैं? उसके भीतर परमेश्वर का आत्मा है।"

उन्होंने यूसुफ की ओर देखा, फ़िरौन ने कहा ,"लोग तेरी आज्ञा के अधीन जमा रहेंगे। मेरे बाद, तू मिस्र का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होगा।"

अगले सात वर्षों के दौरान, यूसुफ ने पूरे देश में यात्रा की, भोजन एकत्र किया और जमा किया।

फिर, जैसे परमेश्वर ने उसे दिखाया, सात साल का अकाल शुरू हो गया। इस अकाल ने आसपास के सभी देशों को भी प्रभावित किया।

जब मिस्र के लोगों को अकाल लगने लगा, तब यूसुफ ने गोदामों को खोला और उन्हें अनाज बेचा। जल्द ही मिस्र के आसपास के सभी देश आए और यूसुफ से अनाज खरीदा।

31 यूसुफ के परिवार का पुनर्मिलन

उत्पत्ति 42 - 46

याकूब ने सुना कि मिस्र में अनाज है, इसलिए उसने अपने दस बड़े बेटों को खाना खरीदने के लिए भेजा। उसने बिन्यामीन को नहीं भेजा क्योंकि वह उसे खोने से डरता था।

जब वे मिस्र पहुँचे, तो वे देश के राजपाल के सामने गए। उन्हें नहीं पता था कि यह यूसुफ था। उसने उन्हें पहचान लिया, लेकिन उन्हें नहीं जानने का नाटक किया। वह देखना चाहता था कि क्या वे बदल गए हैं।

यूसुफ ने पूछा, "तुम रहने वाले कहा के हो ?" जब उन्होंने उत्तर दिया, तो वह उन पर भड़क गया। "तुम जासूसी कर रहे हों!"

भाई हैरान थे, "नहीं, हम ईमानदार लोग हैं - हम सब एक कनानी के बेटे हैं। हमारा एक भाई घर पर है, और दूसरा .... वो चला गया।"

यूसुफ ने कहा, "मेरे लिए साबित करो। मैं तुम में से एक को यहाँ रखूँगा बाकी घर जाओ और अपने छोटे भाई को वापस लाओ। तब मुझे पता चलेगा कि क्या तुम सच कह रहे हो?"

उसने शिमोन को रोक लिया, और दूसरों को अनाज की बोरियों के साथ घर भेजा। उनके जाने बिना, उसने कुछ पैसे उनकी अनाज की बोरियों में डाल दिए।

उन्होंने याकूब को बताया कि क्या हुआ था। उन्होंने कहा, "हमें शिमोन को जेल से बाहर निकालने के लिए बिन्यामीन को मिस्र वापस ले जाने की ज़रूरत है।"

तब उन्हें अनाज की बोरियों में पैसा मिला। वे डर गए, और याकूब ने कहा, "तुम बिन्यामीन को मुझसे दूर नहीं ले जा सकते हो! यूसुफ चला गया है, और अब शिमोन चला गया है।

मेरे पास केवल बिन्यामीन है! अगर मैं उसे खो देता हूं, तो मैं दुख से मर जाऊंगा!"

समय के साथ वे जो अनाज मिस्र लाए थे, वह समाप्त हो गया।

याकूब ने अपने बेटों को मिस्र वापस जाने और अधिक भोजन खरीदने के लिए कहा। यहूदा ने उन्हें याद दिलाया कि वे तब तक वापस नहीं जा सकते जब तक वे बिन्यामीन को अपने साथ नहीं ले जाते है। उसने कहा, "उसे मेरे साथ भेजो। मैं उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करता हूं। हमें भोजन चाहिए!"

अंत में याकूब सहमत हो गया और भाई बिन्यामीन के साथ मिस्र लौट आए। उन्होंने दोगुना पैसा लिया ताकि वे अपनी बोरियों में मिले पैसे वापस कर सकें।

जब यूसुफ ने उन्हें देखा, तो उसने अपने नौकर से कहा कि उन्हें दोपहर के भोजन के लिए अपने घर ले जाओ।

भाइयों ने जो पैसा पाया था उसे वापस करने की कोशिश की, लेकिन नौकरों ने कहा कि उन्हें कोई भुगतान नहीं करना है।

अगली सुबह, भाइयों को अनाज से भरे बोरे के साथ वापस कनान भेजा गया।

यूसुफ ने बिन्यामीन के बोरे में एक चांदी का प्याला रखवाया था। जब लोग थोड़े दूर चले गए थे, तो यूसुफ के नौकरों ने उन्हें पकड़ा और कहा, "तुम में से एक ने हमारे चांदी का प्याला चुराया है!"

भाई चौंक गए! "हमने ऐसा नहीं किया है। यदि आप पाते हैं कि हम में से किसी एक के पास वो है, वह व्यक्ति मारा जाएगा और हम बाकी लोग आपके स्वामी के दास बन जाएंगे।"

प्रत्येक भाई ने अपनी बोरी खोली, और उन्हें बिन्यामीन के बोरे प्याला मिला। भाई भयभीत थे। वे पहरेदारों के साथ शहर लौट आए, और यूसुफ के सामने गिर पड़े। यूसुफ ने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया है?"

यहूदा ने जवाब दिया, "हम अपनी निर्दोषता कैसे साबित कर सकते हैं? अब हम सब आपके दास होंगे।"

यूसुफ ने कहा, "नहीं! केवल दोषी ही मेरा गुलाम होगा। बाकी तुम सब अपने पिता के घर जा सकते हों।"

यहूदा ने कहा, "मैंने अपने पिता से वादा किया था कि मैं बिन्यामीन की सुरक्षा का आश्वासन देता हूँ। इसलिए मुझे उसके बदले अपना गुलाम बना ले। यदि लड़का वापस पिता के पास नहीं जाता है तो मैं अपने पिता का दुःख नहीं देख पाऊंगा।"

जब यूसुफ ने यह सुना, तो वह रोने लगा। उसने अपने भाइयों से कहा। "मैं यूसुफ हूँ!"

पुरुष घबरा गए और उसका जवाब देने में सक्षम नहीं थे। उसने कहा, "आओ! करीब आओ और देखो! मैं तुम्हारा भाई हूं, जिसे तुमने गुलामी में बेचा था! परमेश्वर ने मुझे तुम्हारी जान बचाने के लिए यहां भेजा है। अभी भी पाँच साल के अकाल बाकी हैं, और परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए यहाँ लाया है!"

32 मिस्र में इस्राएल(याकूब)

उत्पत्ति 45:17 - 50:21

फिरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने भाइयों से कहो कि वे कनान वापस जाएँ और अपने पिता को लाएं। उन्हें उसे यहाँ वापस लाना चाहिए और उनके

परिवारों को भी। उन्हें मिस्र से गाड़ियाँ ले जाने दो ताकि उनकी पत्नियाँ और बच्चे आराम से यात्रा कर सकें। उनके सामान की चिंता मत करो, क्योंकि मैं उन्हें मिस्र का सर्वश्रेष्ठ दूंगा।

जब वह लोग कनान वापस आए, तो याकूब स्तब्ध रह गया जब उन्होंने उन्हें बताया कि यह सब कुछ हुआ है! पहले तो उसने यह नहीं माना कि यूसुफ वास्तव में जीवित था। लेकिन आखिरकार, यूसुफ के बारे में कहानियों को सुनकर वह रोमांचित हो गया।

इसलिए याकूब के पूरे कबीले ने मिस्र की यात्रा शुरू की। रास्ते में, वह रुक गया और यहोवा को बलिदान दिया। उस रात परमेश्वर ने उन्हें एक दर्शन दिया। उसने कहा, "मैं तेरा पिता परमेश्वर हूँ। मिस्र जाने से डरो नहीं। मैं तेरे साथ चलूंगा और तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। समय आने पर मैं उन्हें इस भूमि में वापस लाऊंगा।"

अंत में याकूब, बच्चे और उनके बच्चे मिस्र पहुंचे। फिरौन ने यूसुफ की वजह से उनकी ज़रूरत की हर चीज़ मुहैया करावाई। उन्हें उनके परिवारों और झुंडों के लिए सबसे अच्छी भूमि दी गई थी।

याकूब सत्रह और साल तक जीवित रहा। जब वह मरने वाला था, तो उसने यूसुफ को अपने पास बुलाया। "तेरे दो बेटे अब मेरे हैं। मनश्शे और एप्रैम मेरे पुत्र हैं, जैसे रूबेन और शिमोन मेरे पुत्र हैं। उनके पास मेरी विरासत का हिस्सा होगा और उन्हें इस्राएल के बेटों के रूप में गिना जाएगा।"

यूसुफ ने आशीष प्राप्त करने के लिए दोनों बेटों को अपने पिता के पास लाया। उन्होंने मनश्शे को याकूब के दाहिने हाथ की ओर रखा क्योंकि वह सबसे बड़ा था। लेकिन याकूब ने अपना दाहिना हाथ एप्रैम पर रख दिया।

यूसुफ ने अपने पिता के हाथ को सही करने की कोशिश की, "पिता, मनश्शे सबसे बड़ा हैं और उसे आपके दाहिने हाथ की आशीष प्राप्त करना चाहिए।"

याकूब ने कहा, "बेटा, मुझे पता है कि मैं क्या कर रहा हूं।

हां, मनश्शे एक महान जनजाति का पिता होगा, लेकिन एप्रैम के वंशज बहुत होंगे।"

याकूब ने तब अपने सभी बेटों को बुलाया और हर एक को आशीष दी। उसने कहा कि यहूदा राजा का गोत्र होगा, और यह वादा उसके वंशजों के माध्यम से पूरा होगा।

याकूब अपने बेटों के साथ थोड़ी देर रहा और फिर उनकी मृत्यु हो गई। एक बड़ी भीड़ उसके परिवार और कई मिस्रियों सहित, कैनान में उसके शव को वापस ले गई।

उसे अब्राहम और सारा, इसहाक और रिबका और उसकी पत्नी लिआ की ही गुफा में दफनाया गया था।

याकूब की मृत्यु के बाद, यूसुफ के भाई भयभीत हो गए। उन्होंने कहा, "यूसुफ हमारे पिता की वजह से ही हम पर दया कर रहा है। अब वह याद करेगा कि हमने कैसे उसके साथ दुर्व्यवहार किया था। समय आ गया है कि वह हमारे साथ भी वैसा ही करे।"

उन्होंने यूसुफ को एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया था, "आपके पिता ने हमें हमारे द्वारा किए गए महान पाप के लिए हमें क्षमा मांगने के लिए कहा। इसलिए, कृपया हमें क्षमा कर।"

यह संदेश सुनते ही यूसुफ टूट गया और रोने लगा। तब उसके भाइयों ने उसके सामने आकर प्रणाम किया और कहा, "हम तेरे दास हैं।"

यूसुफ ने कहा, "मुझसे मत डरो। मैं परमेश्वर के स्थान पर कार्य नहीं कर सकता। यह सच है कि तुम मुझे चोट पहुँचाना चाहते थे, लेकिन परमेश्वर पूरे समय नियंत्रण में था। उसने हमारे पूरे कबीले की जान बचाने के लिए यह योजना बनाई।

मेरी बात सुनो और डरो मत। मैं तुम और तुम्हारे बच्चों का ख्याल रखूंगा।"

यूसुफ ने अपने भाइयों को दिलासा देने की बात कही। उन्होंने उन्हें अपने प्यार और देखभाल के लिए आश्वस्त किया।

33 मूसा का जन्म

निर्गमन 1 - 2:10

याकूब के वंशजो को इब्री या इस्राएली कहा जाता था। कई वर्षों के दौरान मिस्र में उनकी संख्या बहुत बढ़ गई।

जब तक नया फिरौन सत्ता में नहीं आया तब तक उनके साथ अच्छा व्यवहार किया गया। उसने यूसुफ

या उनके द्वारा किए गई किसी कार्य को याद नहीं किया। इस नए फिरौन को लगा कि उसे इब्रियों के विषय में कुछ करने की ज़रूरत है, क्योंकि उनकी आबादी बढ़ रही थी, और वे शक्तिशाली बन रहे थे।

उसकी पहली योजना लोगों को गुलाम बनाने और उन्हें ईंट बनाने और शहरों का निर्माण करने के लिए मजबूर करना था। फिर भी, इस्राएलियों की संख्या बढ़ती गई। इसलिए मिस्रियों ने अपने काम का बोझ बढ़ाया और उन्हें मारा। इसके बावजूद, इब्री आबादी बढ़ती रही। फिरौन ने सोचा कि इन्हें इसे कैसे रोका जाए। उन्होंने दाइयों को बताया, "जब तुम एक इस्राएली महिला को बच्चा पैदा करने में मदद करती हों, तो पैदा होते ही सभी बच्चों को मार डालों। केवल बच्चियों को जीने देना।"

दाइयों ने फिरौन की बात नहीं मानी। इसके बजाय, वे परमेश्वर से डरती थी और लड़कों के साथ-साथ लड़कियों को भी जीवित रहने देती थी । उन्होंने फिरौन से कहा, "इब्री महिलाएं मिस्र की महिलाओं की तुलना में अधिक बलवान हैं।

इससे पहले कि हम उन तक पहुँचे, वे अपने बच्चों पैदा कर लेती है। परमेश्वर ने इन दाइयों को आशीष दी क्योंकि उन्होंने बच्चों को मारने से इनकार कर दिया।

इस्राएल की आबादी लगातार बढ़ती गई, इसलिए फिरौन ने राष्ट्र के लिए एक नया कानून जारी किया। "हर इब्री बच्चा नील नदी में फेंक दिया जाए।"

उत्पीड़न के इस समय के दौरान, ईब्री परिवारों में से एक लड़का पैदा हुआ था। उसकी मां ने उसे तीन महीने तक छुपाया, लेकिन हर सप्ताह यह और मुश्किल होता गया।

अंत में, उसे एहसास हुआ कि उसे कुछ अलग करने की जरूरत है। इसलिए उसने एक टोकरी बनाई, बच्चे को उसके अंदर रखा, और इसे नील नदी में रख दिया। लड़के की बहन मरियम थी। वह देखने के लिए पास में छिप गई कि उसके भाई का क्या होगा।

जल्द ही फिरौन की बेटी नहाने के लिए नदी में आई। उसने टोकरी को नरकट के बीच तैरते देखा और उसे लाने के लिए अपने नौकरों को भेजा।

जब उसने टोकरी खोली, तो बच्चा रोने लगा और उसे उसके लिए खेद हुआ। उसने कहा, "यह इब्री बच्चों में से एक है।"

मरियम अपने छिपने की जगह से बाहर आई और बोली, "क्या आप चाहती हैं कि मैं एक ऐसी इब्रानी माँ ढूंढूं जो इस बच्चे को पाल सके?"

"हाँ। मैं वह पसंद करुँगी। जाओ एक दूध पिलाने वाली माँ ले आओ।"

तब लड़की ने जाकर अपनी माँ को लाया - बच्चे की माँ। फिरौन की बेटी ने उससे कहा, "मेरे लिए इस बच्चे का पालन-पोषण करो और मैं तुम्हें भुगतान करूँगी।"

जब लड़का बड़ा हो गया, तो उसकी माँ उसे फिरौन की बेटी के पास ले आई और लड़का उसका बेटा बन गया। उसने उसे मूसा कहा (जिसका अर्थ है "बाहर निकाला गया")क्यूंकि, "मैंने उसे पानी से बाहर निकाला।"

34 एक पत्नी ढूँढना

निर्गमन 2:11-22

फिरौन की बेटी ने मूसा की परवरिश इस तरह की जैसे वह उसका अपना बेटा था। जब वह बड़ा हो गया, तो वह अपने लोगों के पास गया और देखा कि

कैसे दासों के रूप में उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है।

अचानक, उसने एक मिस्री को उसके लोगों की पिटाई करते देखा। मूसा ने चारों ओर देखा कि क्या कोई देख रहा है। फिर उसने मिस्री पर हमला किया और उसे मार डाला। उसने जल्दी से शव को रेत में छिपा दिया।

अगले दिन, वह फिर से बाहर गया, लेकिन इस बार उसने दो इब्रियों को लड़ते हुए देखा। उसने उन्हें रोका और कहा, "तुम्हारी सभी समस्याओं के बावजूद, तुम एक-दूसरे से क्यों लड़ रहे हो?"

वे पीछे हुए और चिल्लाकर बोले, "तुझको हमारा नेता किसने बनाया? तू हमारा न्याय करने वाला नहीं हैं! क्या तू हमें मारने की योजना बना रहा हैं जैसे तूने कल एक मिस्री को मार दिया था?"

मूसा हैरान रह गया! उसे अब महसूस हुआ कि उसका अपराध गुप्त नहीं था। जल्द ही फिरौन को इसके बारे में पता चला और उसने मूसा को मारने के लिए लोगों को भेजा। इसलिए वह मुश्किल से अपनी जान बचाकर मिस्र से भाग गया।

वह मिद्यान नामक स्थान पर जंगल में पहुंच गया। एक बार जब वह वहाँ पहुचां, तो वह एक कुएँ के पास बैठ गया। जल्द ही सात महिलाएं अपनी भेड़ों के लिए पानी निकालने के लिए कुएं पर आईं। वे मिद्यान के पुजारी, यित्रो की बेटियाँ थीं।

अचानक, कुछ चरवाहे आए और महिलाओं का पीछा करने लगे। मूसा ने उनका बचाव किया। लड़ाई के बाद, उन्होंने उन महिलाओं को उनकी भेड़ों के लिए पानी निकालने में मदद की।

जब वे घर वापस आए, तो यित्रो को आश्चर्य हुआ कि उनकी बेटियाँ इतनी जल्दी वापस आ गईं।

उन्होंने कहा, "एक मिस्री ने हमें चरवाहों से बचाया, और उसने झुंड के लिए पानी निकालने में भी मदद की।"

"तो वह कहाँ है? क्या! क्या तुमने उसे कुएँ पर छोड़ दिया? जाओ उसे ले आओ और उसे हमारे साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करो। "

मूसा यित्रो और उसके परिवार के साथ रहा, और आखिरकार उसने उसकी एक बेटी, सिप्पोरा से शादी कर ली। साथ में, उनके दो बेटे हए।

35 मूसा की बुलाहट

निर्गमन 3 - 4:18

मूसा ने सिप्पोरा से शादी करने के बाद, वह अपने ससुर, यित्रो के लिए एक चरवाहा बन गया। चालीस साल बाद, जब मूसा 80 साल का था, तो अपना झुंड एक विशेष पहाड़ के पास ले गया।

अचानक, कुछ दूरी पर, उसने देखा कि एक झाड़ी में आग लगी थी, लेकिन वो भस्म नहीं हो रही थी।

वह करीब गया ताकि वह उसे बेहतर तरीके से देख सके। जब वह पास आया, तो परमेश्वर ने उसे झाड़ी के अंदर से बुलाया, "मूसा, मूसा।"

वह पीछे हट गया, "हाँ मैं यहाँ हूँ।" "करीब मत आ। अपने जूते उतार। जिस जमीन पर तू खड़ा हैं वह पवित्र है।"

जैसे ही मूसा ने अपनी चप्पलें उतारीं, प्रभु ने कहा, "मैं तेरे पितरों का परमेश्वर हूं - अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।" मूसा ने अपना चेहरा ढंक लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

परमेश्वर ने कहा , "मेरे लोग मिस्र देश में पीड़ित हैं।

यह समय उन्हें गुलामी से बाहर निकालने का है। मैंने तुझे उन्हें कनान देश में वापस लाने के लिए चुना है। इसलिए, मिस्र वापस जा और फिरौन से बात कर।

"हे परमेश्वर, मैं नहीं! मैं इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाने के लिए सही व्यक्ति नहीं हूँ। मैं फिरौन से बात नहीं कर पाऊंगा ।

परमेश्वर मूसा के साथ धैर्यवान था।परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरे साथ रहूँगा। जब तू इस पर्वत के बारे में सोचता हैं, तो तुझको याद होगा कि मैंने तुझको भेजा था। मिस्र जा और मेरे लोगों को यहां आराधना करने के लिए वापस ला।"

मूसा ने कहा, "लेकिन अगर मैं लोगों के सामने जाऊं और कहूं, तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; वे कहेंगे, कौन परमेश्वर? उसका नाम क्या है? मैं उन्हें क्या बताऊं?"

परमेश्वर ने कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ! उन्हें बताना कि मैं जो हूँ ने तुझको उनके पास भेजा है। मैं अब्राहम का परमेश्वर हूं। मैं इसहाक का परमेश्वर हूं। मैं याकूब का परमेश्वर हूँ।

"लोग तेरी बात सुनेंगे, लेकिन फिरौन नहीं सुनेगा। इसलिए मैं उस पर एक प्रहार करूंगा।

तो वह आखिरकार मेरे लोगों को जाने देगा।

मूसा फिर भी हिचकिचाया। तो परमेश्वर ने उससे कहा, "तेरे हाथ में क्या है?"

"ओह ... यह एक चरवाहे की लाठी है।"

"इसे जमीन पर फेंक दे।"

उसने उसे जमीन पर फेंक दिया और वह एक जहरीला सांप बन गया! मूसा डर के मारे पीछे की ओर उछला। तब परमेश्वर ने कहा, "अपना हाथ बढ़ा और सांप को पूंछ से उठा।" मूसा ने पूंछ पकड़ ली, और तुरंत सांप एक बार फिर से चरवाहे की लाठी बन गया।

परमेश्वर ने कहा, "अपनी कमीज के अंदर अपना हाथ डाल।"

मूसा ने वैसे ही किया, और जब उसने इसे निकाला तो कुष्ठ रोग से भरा था। "अपना हाथ वापस अपनी कमीज के अंदर डाल।" उसने वैसे ही, और जब उसने उसे बाहर निकाला, तो उसका हाथ साफ हो गया।

परमेश्वर ने कहा, "लोगों को ये संकेत दिखा और वे तुझ पर विश्वास करेंगे।"

"ओह, परमेश्वर, मैं कभी भी अच्छी तरह से बात नहीं कर पाता हूँ। मैं बहुत अच्छा नहीं बोलता हूँ।"

"मूसा, किसने तुम्हारा मुंह बनाया? मैं वह हूं जो किसी व्यक्ति को बहरा, मूक, अंधा या देखने में सक्षम बनाता है! जा, और जैसा मैं कहूं वैसा कर। मैं तेरी बात करने में मदद करूंगा, और तुझको जो कहना है, मैं सिखाऊंगा। "

मूसा ने सिर झुका लिया। "परमेश्वर, मैं जाना नहीं चाहता, कृपया किसी और को भेज।"

इससे परमेश्वर क्रोधित हो गया। "तेरा भाई हारून तुझसे मिलने आ रहा है। वह धाराप्रवाह बोलता है। उसे लेकर मिस्र जा!"

इसलिए मूसा यित्रो के पास गया और मिस्र लौटने की अनुमति मांगी।

36 सिप्पोरा

निर्गमन 4: 18-31 और 18: 2

मूसा ने अपने ससुर, यित्रो से कहा, "मैं यह देखने के लिए मिस्र वापस जाना चाहता हूं कि क्या मेरा परिवार अभी भी जीवित है।"

यित्रो सहमत हो गया और यात्रा के लिए अपना आशीर्वाद दिया। यहोवा ने मूसा से कहा, "मिस्र वापस

जा। जो लोग तुझे मारने की कोशिश कर रहे थे वे अब मर चुके हैं।”

इसलिए मूसा ने यात्रा की तैयारी की। फिर वह अपनी पत्नी और बेटों को ले गया, और साथ में वे मिद्यान से निकला। उसने सुनिश्चित किया कि उसके पास परमेश्वर की लाठी थी।

उसी समय, परमेश्वर ने हारून से कहा, "जा और जंगल में मूसा से मिल।" इसलिए वह मिस्र से चला और मिद्यान की ओर चला गया।

जैसे ही मूसा ने यात्रा की, प्रभु ने उसे निर्देश दिया कि जब वह मिस्र वापस पहुँचे तो उसे क्या करना हैं । परमेश्वर ने कहा, "जो भी चमत्कार मैंने तुम्हें दिए हैं, उन सभी को कर, लेकिन आश्चर्य मत करना। फिरौन तेरी बात नहीं मानेगा! मैंने उसका दिल कठोर किया है, इसलिए वह लोगों को स्वेच्छा से जाने नहीं देगा।

उसने कहा, “उसके लिए मेरा संदेश यह है, 'इस्राएल मेरा पहला बेटा है। तू मेरे बेटे को जाने और मेरी पूजा करने से मना कर रहा है। इसलिए, मैं तेरे पहलौठे बेटे को मार डालूंगा।'

शाम को, मूसा और उसके परिवार ने रात के लिए एक शिविर बनाया। अचानक यहोवा ने मूसा पर हमला किया क्योंकि उसके बेटों का खतना नहीं हुआ था।

झट से सिप्पोरा उछल पड़ी और चाकू पकड़ ली। उसने अपने बेटों का खतना किया और खाल को अपने पति के चरणों पर फेंक दिया। तब यहोवा ने मूसा को छोड़ दिया।

सिप्पोरा ने खून को देखा और मूसा पर चिल्लाई, "तू खून बहाने वाला मेरा पति है!"

अगले दिन, मूसा ने हारून को अपनी ओर आते देखा। दोनों भाई एक-दूसरे से गले मिले। मूसा ने हारून को वह सब कुछ बताया जो प्रभु ने उसे बताया था। उसने उसे उन संकेतों के बारे में बताया जो परमेश्वर ने उसे दिए थे, और उसे क्या करना था। वे साथ में वापस गए और इस्राएल के बुजुर्गों को इकट्ठा किया।

हारून लोगों के सामने खड़ा हुआ और उन्हें बताया कि यहोवा ने मूसा से क्या कहा था। उसने उन्हें परमेश्वर की ओर से संकेत दिए।

उन्होंने जो कुछ भी सुना और देखा उससे लोग चकित रह गए। उन्होनें मूसा और हारून पर विश्वास किया, और झुककर परमेश्वर की आराधना की।

मूसा ने महसूस किया कि अपने परिवार को मिद्यान में वापस भेजना अच्छा है। वहाँ वे उसके ससुर यित्रो की सुरक्षा में रह सकते हैं।

37 ईंटों के बदले भूसा

निर्गमन 5 - 7:13

मूसा और हारून ने फिरौन के पास जाकर कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यह कहता हैं, 'मेरे लोगों को तीन दिनों के लिए जंगल में जाने दे, ताकि वे मेरी आराधना कर सकें।''

फिरौन चौंक गया और उसने कहा, "इब्रानियों का परमेश्वर अपने बारे में क्या सोचता है - वह मुझे कैसे बता सकता है कि क्या करना है? मैं उसे नहीं जानता, और मैं निश्चित रूप से अपने दासों को जंगल में नहीं जाने दूंगा।"

उसने तब मूसा और हारून पर ध्यान केंद्रित किया। "आराधना के बारे में तुम्हारी सभी बातें मेरे दासों को उनके काम करने से रोक रही है। यह सब बात बंद करो और काम पर वापस जाओ!"

फिर उसने अपने दास चालकों को बुलाया और कहा, "मेरे दास आलसी हैं! क्या मेरे दासो के पास इतना समय है कि वे जंगल में जाने और परमेश्वर की आराधना करने की बात कर रहे हैं।

"ठीक है, मैं इसे ठीक करूँगा। अब से, उन्हें ईंटों के लिए भूसा देना बंद करो। उन्हें जाने दो और भूसा लाने दो। फिर भी, वे पहले जितनी ही ईंटें बनाएगे। यह उन्हें सिखाएगा कि उन्हें यहां वहां खड़े नहीं होना है, और इन मूर्खों की बात नहीं मानना है!"

दास चालकों ने जाकर इस्राएलियों को बताया कि फिरौन ने क्या कहा। "हम तुमको और अधिक भूसा नहीं देंगे। तुमको इसे स्वयं लाना होगा। फिर भी तुमको पहले जितनी ही ईंटों का उत्पादन करना होगा।"

इसलिए लोग तुरंत पूरे मिस्र में भूसा इकट्ठा करने चले गए। इस कारण, वे ईंट बनाने के लिए अपने कोटा को पूरा करने में सक्षम नहीं रहे। इसलिए दास चालको ने मुखिया को पीटा। उन्होंने कहा, "तुम अपना काम नहीं कर रहे हो। तुम पर्याप्त ईंट नहीं बना रहे हो।"

मुखिया फिरौन के पास गया। "तू अपने दासों के साथ इस तरह क्यों व्यवहार कर रहा है? यदि हमारे पास भूसा नहीं है, तो हम पहले जितनी ईंटें नहीं बना सकते हैं।"

फिरौन उन पर चिल्लाया। "तुम आलसी हो - आलसी, मैं कहता हूँ! तुमको अपने यहा वहा खड़े होने और कहने का समय मिल गया है, कि हम परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं ।' तो अब यह काम करने का समय है। जाओ अपने लिए भूसा ले आओ, और मैं चाहता हूं कि ईंटों की मात्रा पहले जितनी रहें।"

मूसा मुखिया की प्रतीक्षा कर रहा था, जब वे फिरौन के पास से आए। उसने उससे कहा, "तूने फिरौन के सामने हमें बुरा बना दिया है। तूने उसके हाथ में मानो तलवार दी, और वह हमें मार डालेगा।"

मूसा ने यहोवा के पास जाकर कहा, "तूने मुझे यहाँ क्यों भेजा? तूने लोगों को नहीं बचाया है। तूने केवल उन्हें अधिक परेशान किया है।"

प्रभु ने कहा, "हे मूसा, अब यह देख कि मैं फिरौन के साथ क्या करने जा रहा हूँ। जब मैं यह कर लूं, तो वह इन लोगों को दूर ले जाने के लिए विनती करेगा।

"जाओ लोगों को बताओ कि मैं परमेश्वर हूँ। मैंने उनका कराहाना सुना है, और मैं उन्हें अब्राहम, इसहाक और याकूब से वादा किए गए ज़मीन पर वापस ले जाऊंगा।"

मूसा लोगों के पास गया और उन्हें यह संदेश दिया, लेकिन उन्होंने उसे सुनने से इनकार कर दिया। वे पराजित और निराशाजनक थे।

तब यहोवा ने मूसा को फिरौन के पास जाने और फिर से बात करने के लिए कहा। "उससे कहो कि मेरे लोगों को इस भूमि से जाने दें।"

मूसा ने कहा, "मैं इस में अच्छा नहीं हूँ। यदि इस्राएल के लोग मेरी बात नहीं मानते, तो फिरौन मेरी क्यों सुनेगा?"

प्रभु ने कहा, "मूसा, मैंने तुझे फिरौन के लिए एक देवता की तरह बनाया है, और हारून तेरे नबी। जा और मैं तुझे बोलने के लिए शब्द दूंगा।"

इसलिए मूसा और उसका भाई हारून फिरौन के सामने खड़े हो गए और उससे कहा कि वह इस्राएल के लोगों को रेगिस्तान में जाने और आराधना करने की अनुमति दे। फिरौन ने एक निशानी माँगी, इसलिए हारून ने अपने लाठी को जमीन पर फेंक दिया और वह साँप बन गई। दरबार के जादूगरों ने अपनी लाठी जमीन पर फेंक दी और वे भी साँप बन गए। अचानक हारून के साँप ने अन्य सभी साँपों को खा लिया! फिर भी, फिरौन उनकी बात नहीं सुन रहा था।

38 फिरौन पर विपत्तियाँ

निर्गमन 7 - 9

यहोवा ने मूसा और हारून को सुबह फिरौन के पास जाने के लिए कहा, जब वह नील नदी के पास चल रहा था। मूसा ने कहा, "क्योंकि तुम हमारे लोगों को मुक्त करने से इनकार कर रह हो, मिस्र का पानी

खून में बदल जाएगा। मछली मर जाएगी और पानी पीने लायक नहीं रहेगा।" हारून ने फिर अपनी लाठी को पानी पर मारा और वह खून में बदल गया।

दरबार के जादूगरों ने भी पानी को खून में बदल दिया। इसलिए, फिरौन ने मूसा और हारून को अनदेखा किया। जल्द ही पूरे देश का पानी खून में बदल गया और यह पीने लायक नहीं रहा। पानी को खोजने के लिए लोगों को कुएँ खोदने पड़े।

सात दिनों के बाद, मूसा ने फिरौन से कहा, "तुम्हारी जिद के कारण मेंढक तुम्हारी भूमि को संक्रमित करेंगे।"

इसलिए हारून ने अपनी लाठी को बाहर निकाला, और मेंढक नदियों और झीलों से बाहर आने लगे।

जादूगरों ने कुछ मेंढकों भी दिखा दिया। जल्द ही हर जगह मेंढक थे। वे शहर की हर गली में गए। वे लोगों के घरों में और उनके भोजन में - यहाँ तक कि उनके बिस्तरों में भी!

फिरौन ने मूसा से कहा, "मैंने अपना विचार बदल दिया है। तुम लोग जंगल में जा सकते हैं और अपने परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। उसे मेंढकों से छुटकारा देने के लिए कहें। "

मूसा ने पूछा, " तुम कब चाहते ह कि मेंढक से छुटकारा दें?" फिरौन ने कहा, "कल।"

अगले दिन मेंढक मर गए, और लोगों ने उन्हें बड़े ढेर में इकट्ठा कर लिया। जल्द ही उनसे बदबू आना शुरू हो गई! फिरौन ने अपना विचार बदल दिया और लोगों को जाने से मना कर दिया।

इसके बाद, हारून ने अपनी लाठी से जमीन पर मारा और धूल जूँ में बदल गई। जल्द ही, मिस्र भर में सभी लोगों को और जानवरों को जूँ हो गई। फिरौन के जादूगर ऐसा करने में असमर्थ थे।

उन्होंने फिरौन से कहा, "यह भगवान की उंगली है!"

फिर भी लोगों को जाने नहीं देंगे। इसके बाद, परमेश्वर ने भूमि पर मक्खियों के झुंड भेजे। लेकिन मिस्र के उस हिस्से में मक्खियाँ नहीं थीं जहाँ पर इब्री रहते थे।

फिरौन लोगों को जाने देने के लिए तैयार हो गया। मूसा ने कहा कि मक्खियाँ अगले दिन चली जाएंगी, लेकिन उसने कहा, "ध्यान रखना। फिर अपना विचार मत बदलना!" हालाँकि, उसने ठीक वैसे ही किया।

एक बार जब मक्खियाँ चली गईं, तो फिरौन ने लोगों को जाने से इनकार कर दिया।

परमेश्वर ने पशुधन पर एक विपत्ति भेजी, लेकिन फिर से इस्राइल के पशुधन को कुछ नहीं हुआ ।

फिरौन और ज़िद्दी हो गया और उसने इब्रानियों को जाने से मना कर दिया।

मूसा ने मुट्ठी भर राख ले ली और हवा में फेंक दी। यह धूल बन गया जो मिस्र के सभी लोगों और जानवरों में फोड़े पैदा कर दिए। जादूगर अपने फोड़ों के कारण फिरौन के सामने खड़े नहीं हो सकें!

फिरौन गुस्से में था, और उसने मूसा की बात सुनने से इनकार कर दिया। परमेश्वर ने मूसा से कहा था कि फिरौन इस तरह काम करेगा।

मूसा परमेश्वर से एक विशेष संदेश लेकर फिरौन के पास गया। उसने कहा, " अब तक मैंने तेरे खिलाफ अपना हाथ रोका था।" अब, मेरी विपत्तियां तेरे और तेरे लोगों की ओर निर्देशित की जाएंगी। जब मैं ऐसा कर लूंगा, तो पृथ्वी पर सभी देश जान जाएंगे कि मैं परमेश्वर हूं!

"कल मैं एक ओलावृष्टि भेजूँगा जैसे तूने पहले कभी नहीं देखा है! सभी लोग और जानवर जो आश्रयों में रह रहें होंगे, वे मर जाएंगे!"

अगले दिन, आग के साथ भयानक ओले आए और खेतों में लगी फसलों को बर्बाद कर दिया। फिर भी, ओलें उस देश में नहीं गिरे जहाँ इस्राएली रहते थें।

मिस्र के कुछ लोगों ने मूसा के बताए अनुसार किया। उन्होंने अपने जानवरों और दासों को आश्रय स्थलों के नीचे रखा। अन्य लोग और उनके पशुधन और दास तूफान में नहीं मरे।

फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। "मुझे पता है कि मैंने पाप किया है। मैं गलत हूं और परमेश्वर सही है। कृपया प्रार्थना करो और उसे इस तूफान को रोकने के लिए कहो। मैं तुम लोगों को जाने दूंगा।"

मूसा ने कहा, "यहां से निकलते ही यह तूफान रुक जाएगा।" वह जाने लगा, फिर फिरौन की ओर मुड़ा। "मुझे पता है कि तू परमेश्वर से नहीं डरता है।"

और यह सच था। जैसे ही फिरौन ने देखा कि तूफ़ान और ओलें रुक गए है, वह हठपूर्वक परमेश्वर और इस्राएल के लोगों के खिलाफ हो गया।

39 फसह

निर्गमन 10 - 13

मूसा ने फिरौन के पास जाकर कहा, "यदि तू इस्राएलियों को जाने नहीं देता, तो परमेश्वर टिड्डियों को भेजेगा, जैसे तुमने पहले कभी नहीं देखा। वे भूमि

को ढ़ाक लेंगी और वह सब कुछ खाएंगी जो ओलों से नष्ट नहीं किया था।"

फिरौन के अधिकारियों ने उनसे विनती की, "कृपया उन्हें जाने दें। मिस्र पहले ही नष्ट हो चुका है! " इसलिए फिरौन ने मूसा से कहा, "लोग जाकर आराधना कर सकते हैं।"

मूसा ने कहा, "जब हम निकलेंगे, हम सभी को अपने साथ ले जाएंगे - पुरुष और महिलाएं, बच्चे और बूढ़े। हम अपने जानवरों को भी अपने साथ ले जाएंगे।"

फिरौन क्रोधित हो गया, "बिल्कुल नहीं!" उसने तब उन्हें अपने दरबार से बाहर निकाल दिया था।

अगले दिन मूसा ने अपनी लाठी बढ़ाई और टिड्डियां आ गईं। टिड्डियों के ऐसे झुंड ने मिस्र पर कभी आक्रमण नहीं किया था। उन्होंने जमीन पर हर हरी चीज को खाया। वे हर जगह थे और घरों के अंदर भी आक्रमण किया था।

फिरौन ने जल्दी से मूसा को बुलाया। उन्होंने कहा, "मुझे अपने पाप के लिए खेद है। कृपया परमेश्वर से टिड्डियों को दूर करने के लिए कह।" मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की, और एक हवा टिड्डियों को लाल सागर में ले गई। एक भी टिड्डि नहीं रही। जब टिड्डियां चली गईं, तो फिरौन फिर से परमेश्वर और इस्राएलियों के खिलाफ हो गया।

तब परमेश्वर ने मूसा से आकाश की ओर हाथ बढ़ाने के लिए कहा। जब उसने ऐसा किया, तो मिस्र की भूमि पर अंधेरा छा गया। यह इतना अंधेरा था, कि लोग इसे महसूस कर सकते थे, और वे कुछ भी नहीं देख सकते थे। यह तीन दिनों तक चलता है। फिर भी, इस्राएलियों के घरों में रोशनी थी।

फिरौन ने मूसा को अपने पास बुलाया और कहा, "मैं तेरे लोगों को रेगिस्तान में आराधना करने की अनुमति दूंगा, लेकिन अपने भेड़ों और मवेशियों के झुंड को छोड़ के जाना।"

मूसा ने मना कर दिया। "नहीं! हम जानवरों सहित जाएंगे और सभी को और सब कुछ ले जाएंगे।"

फिरौन एक बार फिर क्रोधित हो गया। "मैं लोगों को जाने नहीं दे रहा हूँ अब यहाँ से चले जा और कभी वापस मत आना! मेरे शब्दों को याद रखना। अगर मैंने कभी तेरा चेहरा फिर से देखा, तो तू मारा जाएगा!"

प्रभु ने मूसा से कहा, "मैं मिस्रियों पर एक और विपत्ति लाऊंगा, और फिर फिरौन लोगों को जाने देगा। वह जिद करेगा कि तुम जाओ!

"मेरे लोगों को ये निर्देश दे। प्रत्येक परिवार को एक वर्षीय नर भेड़ के बच्चे का चयन करना है जिसमें कोई दोष नहीं है। उन्हें इसे मारना है और उसका खून दरवाज़े के ऊपर और चौखट पर लगाना है।

लोगों को अपने घरों के अंदर रहना है। वे अपने घरों के बाहर सुरक्षित नहीं रहेंगे।

"मेमने के मांस को भूनें और इसे कमर बान्ध के, पांव में जूती पहिन कर, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना। यदि एक परिवार के लिए यह खाना बहुत अधिक है, तो दूसरे परिवार को आमंत्रित करें।

"आधी रात को मैं मिस्र की सारी भूमि पर जाऊंगा, और हर परिवार के पहिलौठे को मार डालूंगा - फिरौन के घर से लेके सबसे नीचे के दास तक। लेकिन जब मैं तुम्हारे घरों पर खून देखूंगा, तो मैं वहां से चले जाऊंगा और तुम्हारे पहिलौठे को नहीं मारूंगा।"

इस्राएलियों ने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिया था।

उस रात, यहोवा मिस्र देश में गया और हर घर के पहिलौठे को मार डाला।

यहां तक कि उसने गाय और बैलों के पहिलौठे को भी मार डाला।

रात में जोर-जोर से रोना और चीखना हुआ, क्योंकि कोई भी घरवाला परमेश्वर से नहीं बचा था। यहोवा इस्राएलियों के घरों के ऊपर से गुज़रा जब उन्होंने दरवाजे पर खून देखा तो वह बच गये।

फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया और उन पर चिल्लाया, "जाओ! जाओ! अपने लोगों को ले जाओ, अपने भेड़ और गाय और बैल लो और जाओ।

सभी मिस्रवासी चाहते थे कि लोग जाएं क्योंकि उन्हें डर था कि वे सब मारे जाएंगे! उन्होंने उन्हें सोने और चांदी से बनी चीजें दीं। इसलिए लोग रात में ही वहां से चले गए।

उस दिन से, इस्राएलियों को हर साल यहोवा के फसह का त्योहार मनाने था। उस रात परमेश्वर ने उनके लिए जो किया था, उसको स्मरण करना था।

40 लाल समुन्द्र

निर्गमन 13:17 - 15:21

परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र आग के एक खम्भे से बाहर निकाला। आग का खंभा दिन के समय, बादल का एक खंभा बन गया। परमेश्वर ने उन्हें सीधे

मार्ग से कनान नहीं ले गया, लेकिन वह उन्हें लाल सागर की ओर जंगल में ले गया।

उसने मूसा से कहा कि लोग समुद्र के बगल में एक निश्चित स्थान पर डेरा डाले। उन्होंने कहा, "मैं एक बार फिरौन को जिद्दी बना दूंगा, और वह आपका पीछा करेगा। उसके बाद मिस्रवासियों को पता चल जाएगा कि मैं परमेश्वर हूं।"

फिरौन ने देखा कि इब्री लाल समुद्र की ओर चले गए थे, और अंदर और बाहर से गिरे हुए थे। उसने अपने सेवकों से कहा, "हमने अपने दासों को जाने क्यों दिया? उन्हें यहां होना चाहिए, हमारी सेवा करनी चाहिए।" इसलिए उसने अपनी सेना ले ली और उनका पीछा किया।

इस्राएल के लोगों ने यह देखा और मूसा पर चिल्लाया। "तू हमें यहाँ मरने के लिए क्यों लाया है?

अगर हम अभी भी मिस्रियों की सेवा कर रहे थे, तो वे हमें जीने देंगे। लेकिन अब, तेरी वजह से, हम मरने वाले हैं।

मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत! देखो कि परमेश्वर क्या करने वाला है। वह तम्हारी लड़ाई लड़ेगा, तम्हारी देखभाल करेगा। मिस्रियों को देखो! आज के बाद तुम उन्हें फिर कभी नहीं देखोगे।"

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "अपने चरवाहे की लाठी को हवा में उठा, और समुद्र के ऊपर अपना हाथ बढ़ा।

इस्राएल के लोग दूसरी तरफ जाएंगे - सूखी जमीन पर होकर।"

तब बादल का खंभा जो इस्राएलियों के पीछे चला गया - उनके और मिस्रियों के बीच में। यह बाकी के दिन और रात तक वहाँ रहा।

मूसा ने अपना हाथ समुद्र की ओर बढ़ाया।

और जब ऐसा उसने किया, तो परमेश्वर ने पानी को पीछे धकेलने के लिए एक तेज हवा चलाई, जिससे उन्होंने दाईं ओर और बाईं ओर एक दीवार बनाई। और फिर हवा उस दिन और रात तक जमीन के सूखने तक दोनों दीवारों के बीच के रास्ते पर चलती रही।

उस रात, परमेश्वर ने पानी की दीवारों के बीच के रास्ते का उपयोग करके मूसा और इस्राएलियों को दूसरी तरफ जाने के लिए कहा। रात भर लोग समुद्र के पार चले।

एक बार जब वे सभी पार हो गए, परमेश्वर ने उसी रास्ते का उपयोग करते हुए मिस्रियों को उनका पीछा करने की अनुमति दी। जब वे समुद्र के बीच में थे, परमेश्वर ने उन्हें पूरी तरह से भ्रमित कर दिया, और उनके रथों के पहिये टूटने लगे।

अचानक, मिस्र की सेना ने उनकी स्थिति की गंभीरता को देखा। वे चिल्लाए, "भागो! यहोवा इस्राएलियों के लिए लड़ रहा है!" उन्होंने मुड़कर सुरक्षा के लिए दौड़ने की कोशिश की।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "अपना हाथ पानी की ओर कर।" मूसा ने अपना हाथ समुद्र की ओर किया, जब सूरज उगने वाला था।

अचानक, पानी की दीवारें एक साथ आईं, और उन्होंने पूरी मिस्र की सेना को डुबो दिया। उनमें से एक भी नहीं बचा!

इस्राएलियों ने समुद्र के दूसरी ओर से परमेश्वर की सामर्थ को देखा। और उस सुबह जैसे ही सूरज उगा, उन्होंने देखा कि किनारे पर शव पड़े थे। तब लोगों ने परमेश्वर की आराधना की। उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ को देखा और उस पर विश्वास किया, और उन्होंने उसके दास मूसा पर विश्वास किया।

41 यह क्या है?

निर्गमन 15:22 - 16:36

इस्राएल के लोग सूखी जमीन पर लाल सागर के पार चले गए। तब परमेश्वर ने मिस्र की सेना को मार डाला जब उन्होंने पार करने की कोशिश की। वहाँ से, मूसा लोगों को जंगल में, सीनै पर्वत की ओर ले जाया।

उन्होंने बिना पानी पाए तीन दिन तक यात्रा की। वे अंत में एक कुंड में आए, लेकिन यह पीने के योग्य नहीं था। लोगों ने शिकायत की और कहा, "हम क्या पीएंगे?"

यहोवा ने मूसा से कहा, "उस छोटे पेड़ को काटकर पानी में फेंक दे।" मूसा ने पेड़ को पानी में फेंक दिया, और तुरंत पानी पीने योग्य बन गया।

यहोवा ने कहा, "यदि तुम मेरी आज्ञा मानते हो और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हो, तो मिस्रियों की तरह बीमार नहीं होंगे, मैं परमेश्वर हूँ जो तुमको चंगा करता है।

वहाँ से, इस्राएलियों ने जाकर उस स्थान पर डेरा डाला, जहाँ बारह झरने थे। वे वहाँ एक महीने से थोड़ा अधिक रहे, और फिर छोड़ कर सीनै पर्वत की ओर चले गए।

यात्रा के दौरान, उन्होंने शिकायत करना शुरू कर दिया, “हमें मिस्र में ही मर जाना चाहिए था। हां, हम गुलाम थे, लेकिन कम से कम हमारे पास खाने के लिए बहुत कुछ था। हर रात हमारे पास मांस का एक बर्तन होता था और हम उससे रोटी खाते थे। यहाँ हमारे पास कुछ भी नहीं है।”

यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं लोगों के लिए स्वर्ग से रोटी बरसाने जा रहा हूँ। लेकिन मैं इसका उपयोग यह देखने के लिए करूंगा कि क्या वे मेरे निर्देशों का पालन करेंगे।”

मूसा ने लोगों से कहा, "तुम मेरे और हारून के खिलाफ शिकायत नहीं कर रहे हो। तुम प्रभु के खिलाफ शिकायत कर रहे हो फिर भी, उसने तुम्हारी सुनी है। आज रात तुम्हारे पास मांस होगा, और सुबह तुम्हारे पास रोटी होगी।”

उस शाम, शिविर में बटेरों का झुंड आया। इससे लोगों को खाने के लिए मांस मिला। सुबह उन्होंने देखा कि जमीन ओस से ढकी हुई थी। जब वह सूख गई तो जमीन पर कुछ ऐसा दिखा जो पाले जैसा लग रहा था। लोगों ने जाकर देखा। उन्होंने कहा, "यह क्या है?" उन्होंने इसे चखा और यह शहद के छिलके जैसा था।

मूसा ने कहा, “प्रभु हर हफ्ते में छह दिन स्वर्ग से यह रोटी प्रदान करेगा। पहले पांच दिन, तुम केवल एक दिन के लिए पर्याप्त इसे इकट्ठा कर सकते हो। छठे दिन, तुम दो दिनों के लिए पर्याप्त इकट्ठा कर सकते हो। इस तरह, तुम्हारे पास सब्त के दिन भोजन होगा। यह सब्त के दिन प्रकट नहीं होगा।

कुछ लोगों ने प्रभु के आज्ञा का उल्लंघन किया और एक दिन के लिए पर्याप्त से अधिक एकत्र किए। अगली सुबह उस से बदबू आने लगी और उसमें कीड़े पड़ गए। यह तब नहीं हुआ जब वे छठे दिन अधिक एकत्रित करते थे। सब्त के दिन खाना ठीक था। कुछ लोग सब्त के दिन रोटी जुटाने के लिए निकले, लेकिन पाया कि वहाँ कोई रोटीनहीं थी।

लोगों ने रोटी को मन्ना कहा, जिसका अर्थ है, "यह क्या है?" परमेश्वर ने पूरे चालीस वर्षों तक उन्हें जंगल में मन्ना प्रदान किया।

42 यहोवा, मेरा झंडा

निर्गमन 17 - 18

जब इस्राएल के लोग सिनै पर्वत की ओर बढ़ते रहे, तो उन्होंने ऐसी जगह पर डेरा डाला जहाँ पानी नहीं था। उन्होंने एक बार फिर मूसा से शिकायत की, “तुम हमें यहाँ मरने के लिए क्यों लाए हो? कम से

कम मिस्र में हमारे पास पानी था। क्या वास्तव में परमेश्वर हमारे साथ है? ”

मूसा ने यहोवा से कहा, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ! मैं उन्हें यहां लाया हूं, और अब वे मुझे पत्थर मारने वाले हैं।"

यहोवा ने मूसा से कहा, “अपनी लाठी ला और लोगों के सामने खड़े हो। कुछ बुजुर्गों को अपने साथ खड़े होने दें। मैं चट्टान के सामने खड़ा रहूँगा। चट्टान को मार और पानी निकल जाएगा ताकि लोग पी सकें।”

मूसा ने प्रभु की आज्ञा मानकर चट्टान पर मारा। पानी निकल आया। यह लोगों और पशुओं के लिए पर्याप्त था।

जब वे उसी स्थान पर थे, तो अमालेक के लोगों ने उन पर हमला किया। मूसा ने यहोशू को युद्ध के लिए आदमियों को संगठित करने के लिए कहा। मूसा तब पहाड़ी के किनारे खड़ा था और उसके हाथ हवा में थे। जब तक उसके हाथ हवा में थे, तब तक यहोशू विजयी हो रहा था। लेकिन जब उसके हाथ नीचे आए, तो अमालेक के लोग जीतने लगे।

मूसा के हाथ थक गए, इसलिए वह एक तरफ हारून और दूसरी तरफ हूर एक पत्थर पर बैठ गया। उन्होंने उसके हाथों को पकड़ा रहा, ताकि वह उन्हें हवा में ऊँचा रख सके। तीनों लोग सूर्यास्त तक वहीं रहे। यहोशू अमालेक पर विजयी रहा। फिर मूसा ने वहां एक स्मारक बनाया और उसे "यहोवा, मेरा झंडा" कहा।

यित्रो मूसा का ससुर था। उसने अपनी बेटी और उसके दो बेटों पर नज़र रखी थी जबकि मूसा मिस्र में था। एक बार जब इस्राएलियों ने सिनै पर्वत पर डेरा डाला, तो वे उन्हें वापस ले आए।

मूसा अपने परिवार का अभिवादन करने निकला। उसने यित्रो को इस बारे में बताया कि प्रभु ने इस्राएलियों के लिए क्या किया है - परमेश्वर का हाथ कैसे फिरौन और मिस्रियों के खिलाफ था। उन्होंने अपनी कुछ कठिनाइयों के बारे में बताया, और प्रभु ने उन्हें कैसे पहुँचाया। यित्रो ने तब लोगों को परमेश्वर के बलिदान में नेतृत्व किया।

अगले दिन, मूसा लोगों के लिए एक न्यायियों के रूप में अपना काम करने के लिए बैठ गया। यित्रो ने देखा कि लोग हर विवाद के साथ मूसा के पास आए थे, वे बड़ी और छोटी थी। यह तय करना मूसा का काम था कि प्रत्येक मामले में कौन सही था। यह सारा दिन चला। जब वह न्याय कर रहा था, तब मूसा लोगों को परमेश्वर के नियम भी सिखा रहा था।

उस शाम यित्रो ने कहा, " तुम जो कर रहे हो वह अच्छा नहीं है। तुम लोगों के रूप में खुद को थका रहे हो । तुझे यह महसूस करने की आवश्यकता है कि यह एक आदमी को संभालने के लिए बहुत बड़ा काम है। यह कुछ सलाह है, और मुझे विश्वास है कि यह तेरे लिए परमेश्वर की इच्छा है।

"यह तेरा काम है कि तू लोगों को प्रभु और उसकी आज्ञाओं के बारे में सिखाएँ।" तुझको परमेश्वर के प्रति उनकी आवश्यकताओं को भी ले जाना होगा। ऐसा करने के लिए तुझको खुद को स्वतंत्र रखना होगा।

“इसलिए, कुछ अच्छे लोगों का चयन करें जो परमेश्वर से डरते हैं। सुनिश्चित कर कि वे रिशवत ना लेते हो। यदि वे करते हैं, तो लोग उन पर भरोसा नहीं करेंगे। उन्हें एक-दूसरे के ऊपर विभिन्न स्तरों पर रखें। उनका काम लोगों का न्याय करना होना चाहिए।

“उन्हें हर रोज समस्याओं पर काम करना होगा, और कठिन संघर्षों को हल करने के लिए तेरे सामने लाना होगा।। लोग इससे खुश होंगे, लेकिन मुख्य रूप से यह तुझको परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए मुक्त करेगा।”

मूसा ने यह सलाह सुनी, और उसका पालन किया। उसने योग्य पुरुषों को चुना, और उन्हें जिम्मेदारी के विभिन्न स्तरों पर रखा। इन लोगों ने अपने नए काम के लिए खुद को समर्पित कर दिया। फिर भी, सभी कठिन मामलों को मूसा के सामने लाया गया।

यह सब हो जाने के बाद, मूसा ने अपने ससुर को अलविदा कहा, और यित्रो घर चला गया।

43 व्यवस्था

निर्गमन 19 - 20 और 24

मिस्र से निकलने के तीन महीने बाद इस्राएली सिनै पर्वत पर आए। उन्होंने पहाड़ के तल पर शिविर स्थापित किया, और मूसा परमेश्वर से बात करने के

लिए पहाड़ पर गया। प्रभु ने कहा, "लोगों को बताओ, यदि तुम मेरी बात मानते हो और मेरी आज्ञाएँ मानते हो, तो तुम मेरे लिये क़ीमती धन के समान होगे। तुम सभी राष्ट्रों में मेरे पवित्र लोग होगे। ''

जब मूसा ने लोगों को यह बताया, तो वे सभी सहमत हुए और कहा, "हम वह सब कुछ करेंगे जो परमेश्वर कहते हैं!"

इसलिए मूसा पहाड़ पर चढ़ गया और उसने परमेश्वर से कहा कि लोग उसकी शर्तों पर सहमत हों। तब यहोवा ने कहा, "मैं चाहता हूं कि वे मुझे तुझसे बात करते हुए सुनें, ताकि वे हमेशा तुझ पर भरोसा रखें। उन्हें अपने दिल को साफ़ करने और अपने कपड़े धोने में तीन दिन बिताने को कहें। फिर मैं पहाड़ पर उतरूंगा और उनसे बात करूंगा।"

तो लोगों ने जैसा कहा गया था वैसा ही किया। उन्होंने अपने कपड़े धोए और खुद को प्रभु को समर्पित किया। तीसरे दिन अचानक, पहाड़ आग से जल उठा। जमीन हिल गई, और एक बादल ने पूरे पहाड़ को ढंक लिया। गड़गड़ाहट हुई और बिजली गिरी, और लोगों ने किसी चीज की आवाज़ सुनी जो तुरही की तरह लग रही थी, और यह बढ़ती रही।

तब परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें एक शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर लाया है!

तुम किसी अन्य देवता की आराधना मत करना।

तुम किसी भी तरह की मूर्तियां मत बनाना।

तुम मेरा नाम पवित्र मानना और इसका दुरुपयोग मत करना।

तुम सातवें दिन काम मत करना, बल्कि इसे पवित्र रखना।

अपने माता-पिता का सम्मान करना और तुम पृथ्वी पर लंबे समय तक रहोगे।

तुम हत्या मत करना।

तुम व्यभिचार मत करना।

तुम चोरी मत करना।

तुम दूसरों से झूठ मत बोलना, ना ही दूसरों के बारे में झूठ बोलना।

तुम किसी ऐसी चीज़ की इच्छा मत करना जो किसी और की हो।"

लोग पुकार उठे, "परमेश्वर से कह कि हमसे बात करना बंद करे। हम मर जाएंगे अगर वह बात करता रहा तो! उसे तुझसे बात करने दें, और फिर तू हमें बताना कि उसने क्या कहा। हम तेरी बात मानेंगे।"

मूसा ने कहा, "डरो मत। परमेश्वर चाहता है कि तुम उसके प्रति अचंभे से खड़े हों, ताकि पाप तुम से दूर रहे ।" तब मूसा परमेश्वर के साथ बात करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।

परमेश्वर ने मूसा को विस्तृत निर्देश दिए कि लोगों को अपना जीवन कैसे जीना चाहिए और उन्हें एक दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। परमेश्वर ने उसे बताया कि पापों की क्षमा के लिए बलिदान कैसे चढ़ाएं । परमेश्वर ने यह भी निर्देश दिया कि कैसे परमेश्वर के संदूक का निर्माण किया जाए, ताकि परमेश्वर अपने लोगों के बीच रह सकें। अंत में, परमेश्वर ने मूसा को पत्थर की दो पटिया दी जिस पर परमेश्वर की उंगली से लिखी व्यवस्था थी।

44 सोने का बछड़ा

निर्गमन 32

मूसा चालीस दिन और चालीस रातों तक परमेश्वर के साथ रहा। लोग बेचैन हो गए, और वे हारून के पास गए और कहा, "हम नहीं जानते कि मूसा के साथ

क्या हुआ है। हमें एक ऐसा ईश्वर बना जिसे हम देख सकें, एक ईश्वर जो हमारे साथ होगा।"

इसलिए उन्होंने हारून को अपने सोने के झुमके दिए, और उसने उन्हें पिघला दिया। फिर उसे सोने के बछड़े के आकार में बनाया। लोग इससे खुश हुए और कहा, "यह वह ईश्वर है जो हमें मिस्र से निकाल लाया है!" उन्होंने इसके लिए बलिदान किए, और उन्होंने एक दावत की। बाद में, उन्होंने उत्सव मनाया।

पहाड़ पर, परमेश्वर ने मूसा से कहा, जिन लोगों को तू मिस्र से बाहर लाया है, उनके पास जा। उन्होंने खुद को भ्रष्ट कर लिया है, और जो मैंने उन्हें करने के लिए कहा था, उससे दूर हो गए है। उन्होंने एक मूर्ति बनाई है, और बलिदान के साथ उसके समाने झुके हैं। हट जा और मुझ रोक मत। मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा और तुम्हारे वंशजों को एक महान राष्ट्र में बदल दूंगा।"

मूसा ने परमेश्वर से निवेदन किया, "तूने जिन को मिस्र से निकाल कर लाया है, उन लोगों से बहुत नाराज़ मत हो। यदि तू उन्हें नष्ट कर देता हैं, तो मिस्र के लोग हँसेंगे और कहेंगे कि तू उन्हें मारने के लिए यहाँ लाया हैं।अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ किये गये अपने वादे को याद रख। तूने कहा कि उनके वंशजों को देश, विरासत में मिलेगा , और वे आसमान के सितारों की तरह अनगिनत बन जाएंगे।" इसलिए यहोवा ने मूसा की बात सुनी और लोगों को नष्ट नहीं किया।

मूसा तब पत्थर की दो पटिया लेकर गया जो परमेश्वर ने उसे दी थी। मूसा बछड़े और नाच को देखकर क्रोधित हो गया। उसने दो पटिया नीचे फेंक दीं और उन्हें जमीन पर गिरा दिया। उसने आग में सोने के बछड़े को जला दिया, उसे चूर चूर कर दिया, उसे पानी में डाला, और इस्राएलियों को उसे पिलाया।

तब मूसा ने हारून से कहा, "तुमने यह सुनहरा बछड़ा क्यों बनाया? देख कि इसने कैसे उन्हें गहरे पाप में डाल दिया।"

हारून ने कहा, "कृपया मुझसे नाराज़ मत हो। तू जानता है कि ये लोग कितने दुष्ट हैं। उन्होंने कहा 'हमारे लिए एक ईश्वर बना।' मैंने उनसे कहा कि मुझे अपना सोना दो। मैंने उसे आग में फेंक दिया और ... यह बछड़ा बाहर आ गया!"

मूसा तब शिविर के द्वार पर खड़ा था।

उसने देखा कि कैसे लोग अभी भी अनियंत्रित थे।

वह चिल्लाया, "जो लोग प्रभु की तरफ हैं, वे मेरे साथ खड़े हो जाए!" लेवी के बेटों ने खुद को बाकी लोगों से अलग कर लिया, और वे मूसा के साथ खड़े हो गए। यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी कि वे अपनी तलवारें थामें और उन लोगों से लड़ें जिन्होंने मूसा के साथ खड़े होने से इनकार कर दिया था। उस दिन तीन हजार आदमी मारे गए।

बाद में, मूसा ने लोगों को एक साथ बुलाया और कहा, "तुमने बहुत बड़ा पाप किया है। मैं यहोवा के सामने जाऊँगा, और शायद मैं तुम्हारे लिए प्रायश्चित कर सकूँ। तब वह वापस पर्वत पर चला गया।

45 पवित्रस्थान

निर्गमन 33-40

क्योंकि इस्राएल के लोगों ने सोने के बछड़े की पूजा की थी, मूसा ने पहाड़ पर चढ़कर प्रभु से उन्हें

क्षमा करने का अनुरोध किया। उसने कहा, हे प्रभु, तेरे लोगों ने तेरे खिलाफ पाप किया है। यदि तू उनके पापों को माफ कर देता हैं..." वह बोल नहीं पाया, लेकिन अंत में कहा, "यदि तू उन्हें माफ नहीं कर सकता, तो मेरा नाम अपनी जीवन की पुस्तक से हटा दें।"

प्रभु ने कहा, "मैं तेरा नाम अपनी पुस्तक से नहीं हटा रहा हूँ, लेकिन मैं उन लोगों के नाम हटा दूंगा जिन्होंने मेरे खिलाफ पाप किया।" तब परमेश्वर ने लोगों में विपत्ति भेजी और कई लोग मारे गए।

उसके बाद, यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने लोगों को उस भूमि की ओर ले जाओ, जो मैंने उनसे वादा किया था। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा, लेकिन मैं तुम्हारे मार्गदर्शन करने के लिए अपना दूत भेजूंगा। अगर मैं इन जिद्दी लोगों के बीच एक पल के लिए भी रहा, तो मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा।"

मूसा ने नीचे जाकर लोगों को बताया कि परमेश्वर उनके बीच नहीं रहेंगे। लोग फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने दुख जताया कि उनके पाप के करण उन्हें कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी ।

मूसा शिविर के बाहर गया और एक पवित्रस्थान की स्थापना की ताकि वह प्रभु के साथ बात कर सके। जब लोग देख रहे थे, परमेश्वर का बादल नीचे आ गया और तंबू के सामने खड़ा हो गया। वहाँ, मूसा और परमेश्वर ने बातचीत की।

मूसा ने कहा, "यदि मैं तेरा मित्र हूं, और यदि तू मुझसे प्रसन्न है, तो हमारे बीच रह। हम चाहते हैं कि तू हमारा नेतृत्व करे। अगर तू मना करेंगा तो हम यहीं रहेंगे। हमें जाने मत दे। तेरे बिना, हम किसी और से अलग नहीं हैं!"

प्रभु ने उत्तर दिया, "तू मेरा मित्र हैं, और मैं तुझसे प्रसन्न हूं। इसलिए, जैसा तूने कहा है वैसा ही करूँगा।

तब यहोवा ने मूसा से कहा कि दो और पत्थरों को काटकर पहाड़ पर ले आ। प्रभु ने कहा, "यह तेरा और तेरे लोगों के लिए प्रतिबद्धता है। मैं कनान से लोगों को बड़े चमत्कारों के साथ लाऊंगा, लेकिन तुमको मेरी आज्ञाओं का पालन करना होगा।"

मूसा पहाड़ पर रहा और परमेश्वर के सभी कानूनों और आदेशों को लिखा।

उन्होंने पत्थर की दो पटिया पर दस आज्ञाएँ भी लिखीं। वह चालीस दिनों और चालीस रातों के लिए वहाँ रहा , और उसने रोटी नहीं खाई ना ही पानी पिया।

बाद में, वह परमेश्वर के आदेशों के साथ लोगों के पास वापस चला गया। उसने महसूस नहीं किया कि उसका चेहरा उस समय के कारण चमक रहा था जो उसने प्रभु के साथ बिताया था। इससे इस्राएलियों को डर लगा, इसलिए मूसा ने जब लोगों से बात की तो उसने अपना मुँह ढक दिया ।

उसने उन सभी आदेशों को बताया जो प्रभु ने उसे दिए थे।

उसने कहा, "परमेश्वर के निवास स्थान, पवित्रस्थान के निर्माण का समय है। इसलिए, जो लोग यहोवा को भेंट देने के लिए तैयार हैं, उन्हें सोना, चाँदी, काँसा, विशेष सूत, बढ़िया सनी, पशु की खाल, लकड़ी, तेल, मसाले, पत्थर और रत्न लाना होगा। हमें कुशल कारीगर चाहिए, जो होगा खुद को पवित्रस्थान के निर्माण के लिए समर्पित करें, बाहरी तम्बू उसे घेर ले, और उसके अंदर का सामान भी ।"

अगले दिन, लोगों ने उन चीजों को लाना शुरू कर दिया, जिनकी पवित्रस्थान बनाने के लिए जरूरत थी। कुशल कारीगर काम करने आए। हर दिन लोग अपने उपहार तब तक लाए जब तक कि मूसा ने नहीं कहा की, "उपहार लाना बंद करो, जरूरत से अधिक हो गया है!"

परमेश्वर ने मूसा को जैसा बताया था, ठीक उसी तरह लोग पवित्रस्थान बनाने में सावधान थे। मिस्र छोड़ने के ठीक दो साल बाद यह पूरा हो गया था - ठीक दो साल। मूसा ने काम का निरीक्षण किया और पाया कि जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, वैसा ही उन्होंने किया, इसलिए उसने उन्हें आशीष दी।

फिर एक बादल आया और पवित्रस्थान के ऊपर मंडराने लगा। जब लोग देख रहे थे, प्रभु की महिमा ने पवित्रस्थान को भर दिया। इसलिए उस दिन से, उनकी सभी यात्राओं में, प्रभु उनके साथ थे।

46 अपवित्र आग

लैव्यव्यवस्था 10: 1-7 और गिनती 9 - 11: 3

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को सटीक निर्देश दिया

कि वे उसकी आराधना कैसे करें। मूसा के भाई हारून को महायाजक चुना गया, और उसके बेटों को उसके साथ सेवा करनी थी।

जब हारून मर जाएगा, तो उसके बेटे उसकी जगह महायाजक बनेंगे। मण्डली इन पुरुषों कीनियुक्ति के लिए पवित्रस्थान में एकत्रित हुई। मूसा ने उनका तेल से अभिषेक किया और यहोवा के लिए बलिदान दिया।

उसने हारून और उसके बेटों से कहा कि उनकी नियुक्ति सात दिनों तक चलेगी, और जब तक सात दिन खत्म नहीं हो जाएंगे, तब तक वे पवित्रस्थान नहीं छोड़ेंगे।

हारून के सबसे बड़े दो बेटे नादाब और अबीहू थे। नियुक्ति के इस समय के दौरान, उन्होंने प्रभु के सामने धूप जलाने का फैसला किया। लेकिन उन्होंने अपने धूपदान में एक आम आग से कोयला डाल दिया था।

जैसे ही वे प्रभु की उपस्थिति में आए, आग भड़क उठी और दोनों पुरुषों को मार डाला।

सभी लोग चौंक गए, लेकिन कुछ कहा नहीं जा सका। मूसा ने कुछ लोगों के साथ उन शवों को शिविर से निकलवा दिया। उन्होंने हारून और उसके अन्य बेटों से कहा कि उन्हें नियुक्ति प्रक्रिया को जारी रखना होगा क्योंकि वे पहले ही परमेश्वर के तेल से अभिषेक किए जा चुके हैं।

इसका मतलब यह था कि वे ठीक से शोक नहीं मना सकते थे। इसलिए बाकी इस्राएल ने दो आदमियों की मौत पर शोक जताया, जबकि उनके पिता और भाई पवित्रस्थान में रहे।

मिस्र छोड़ने की दूसरी वर्षगांठ पर, इस्राएल के लोगों ने फसह का त्योहार मनाया। वे अभी भी सिनै पर्वत पर थे।

एक बादल दिन के दौरान पवित्रस्थान पर मंडराता था, और रात में आग की तरह दिखता था। परमेश्वर ने उन्हें बताया था कि जब तक बादल वहाँ मंडराते रहें, वे जहाँ थे वहीं रुके। लेकिन जब बादल उठे, तो मतलब उन्हें अपनी यात्रा जारी रखने का समय आ गया है।

एक महीने बाद, फसह मनाने के बाद, उनके लिए कनान देश की ओर बढ़ने का समय आ गया था। जब लोग देख रहे थे, बादल उठा और वे परमेश्वर के पहाड़ से उतरने लगे। उन्होंने उस स्थान की ओर कूच किया जहाँ वे कनान देश में प्रवेश करने वाले थे।

थोड़े समय के बाद, लोगों ने अपनी कठिनाइयों के बारे में खुलकर शिकायत करना शुरू कर दिया। इससे प्रभु क्रोधित हो गए और उन्होंने उनके बीच, विशेष रूप से शिविर के किनारों के चारों ओर एक आग भेजी और बहुत लोग मारे गये। इसलिए बाकी लोग मदद के लिए मूसा की तरफ दौड़े। उसने उनके लिए प्रार्थना की और आग बंद हो गई। उन्होंने उस जगह का नाम "जलन" रखा।

47 - लालसा की कब्र

गिनती 11: 4-35

जैसे ही इस्राएल के लोग कनान की ओर कूच करने लगे, वो भोजन के विषय में शिकायत करने लगे। उन्होंने कहा, "हमारे पास खाने के लिए केवल मन्ना है। हम मांस और मछली और सब्जियों को याद करते हैं जो हमारे पास मिस्र में थी।" बड़बड़ाना हर परिवार में फैल गया, जब तक मूसा को हर तम्बू से बड़बड़ाना नहीं सुनाई दिया।

हताशा में, मूसा ने प्रार्थना की, "परमेश्वर, मैंने इस दिल के दर्द के लायक क्या किया है? आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया है? मैंने इन लोगों को जन्म नहीं दिया, तो मैंउनका पालन पोषण क्यों करूं? मैं इसे अब और सहन नहीं कर सकता! अगर आप मेरे लिए यही चाहते हो, तो मुझे अभी मार दो।"

यहोवा ने मूसा से कहा, "लोगों में से सत्तर नेता चुन और उन्हें मेरे पास लाऔर मैं उस आत्मा का हिस्सा उनको दूंगा जो तुझ पर है। वे लोगों का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे।"

उसने यह भी कहा, "लोगों से कह कि वे खुद को तैयार करें। कल उनके पास खाने के लिए मांस होगा। वे लालसा रखते हैं कि मिस्र के लिए तरस रहे हैं, इसलिए वे तब तक मांस खाएंगे जब तक कि वे पूरी तरह उससे परेशान ना हों।"

मूसा ने जाकर लोगों को यह बताया और फिर उसने सत्तर अगुओं को प्रभु के सामने आने के लिए कहा। जब वे पहुंचे, तो केवल 68 आदमी थे। उनमें से दो अभी भी शिविर में वापस आ गए थे।

प्रभु ने आत्मा को लिया जो मूसा पर थी, और उसे सत्तर आदमियों पर डाल दिया - उन सभी पर। तुरंत, लोगों ने भविष्यवाणी करना शुरू कर दिया, यहां तक कि उन दोनों पर भी जो शिविर में थे।

यहोशू ने मूसा से कहा, "उन दो लोगों को भविष्यद्वाणी करने से रोकें!"

मूसा ने कहा, "ओह, यहोशू, मेरे लिए ईर्ष्या मत कर। मैं चाहता हूं कि परमेश्वर का आत्मा उसके सभी लोगों पर आ जाए।"

अगले दिन, प्रभु ने एक हवा भेजी जिसने समुद्र से बटेर उड़ाई। वे जमीन से लगभग तीन फीट ऊपर तक गिरि, और सभी दिशाओं में एक क्षेत्र मे इकट्ठा हुआजहां तक एक आदमी एक दिन में चल सकता था।

लोगों ने बाहर जाकर उन्हें इकट्ठा किया । उन्होंने पूरे दिन और रात काम किया। वह व्यक्ति, जिसने सबसे कम मात्रा में बटेर इकट्ठा की, उसने भी पूरे तैंतीस बुशल इकट्ठा किए। हर परिवार अपने लिए बड़ी मात्रा में मांस इकट्ठा करने में सक्षम हुआ ।

फिर भी, परमेश्वर उनसे नाराज़ था क्योंकि वे मिस्र के लिए तरस रहे थे और उन्हें परमेश्वर की देखभाल पर भरोसा नहीं था। इसलिए, जैसा कि लोग मांस खा रहे थे - जबकि यह अभी भी उनके दांतों के बीच था - परमेश्वर ने उनके बीच विपत्ती भेजी। तो लोगों ने उसे "लालसा की कब्र" कहा।

48 उसके चेहरे पर थूकना

गिनती 12

मिरियम , मूसा और हारून की बहन थी। एक दिन, उसमें और मूसा की पत्नी में असहमति हो गई । इस वजह से, और हारून ने मूसा की आलोचना करना शुरू कर दिया, उसकी पत्नी एक अरबी महिला थी - एक कुशी!

उन्होंने कहा, "परमेश्वर केवल मूसा से बात नहीं करता है। वह हमारे माध्यम से भी बोलता है।"

प्रभु ने यह शिकायत सुनी और जाना कि मूसा एक शांत और विनम्र व्यक्ति था। अचानक परमेश्वर ने कहा, "मूसा, हारून, मिरियम - बैठक के तम्बू में आओ!"

जब वे वहाँ पहुंचे, परमेश्वर का बादल नीचे आया और उनके सामने एक स्तंभ की तरह खड़ा हो गया। उन्होंने कहा, "हारून और मिरियम, आगे आ।"

एक बार जब वे आगे आए, तो प्रभु ने कहा, "जब मैं तुमसे या शिविर के भीतर के किसी भविष्यद्वक्ता से बात करूं, तो मैं सपने और दर्शन में बोलूंगा। लेकिन मैं इस तरह से मूसा से बात नहीं करता हूं। वह और मैं परिवार के सदस्यों के रूप में एक साथ आते हैं और खुलकर बात करते हैं। हम एक-दूसरे को देखते हैं और सरल भाषा में बात करते हैं। तुम मेरे दासमूसा के खिलाफ बात करने की हिम्मत कैसे करते हो!"

उस के साथ, परमेश्वर ने फिर गुस्से में उन्हें छोड़ दिया और चला गया। हारून ने मिरियम को देखा और देखा कि उसकी त्वचा कोढ़ रोग से सफेद हो गई थी। उसने मूसा को पुकारा, "मेरे स्वामी कृपया, हमारी मूर्खतापूर्ण बात के लिए हमें दंडित ना कर। कृपया अपनी बहन को एक ऐसे बच्चे की तरह न दें जो मृत पैदा हुआ है - जिसका मांस सड़ रहा है।"

मूसा ने रोते हुए परमेश्वर से कहा, "मेरे परमेश्वर! कृपया मेरी बहन को चंगा कर।"

परमेश्वर ने कहा, "मैं उसे चंगा करूंगा। फिर भी, यदि उसके पिता उसके चेहरे पर थूकते हैं, तो वह सात दिनों तक अपमान में रहेगी। इसलिए उसे सात दिनों के लिए शिविर से बाहर रहना होगा।

इसलिए मिरियम को शिविर के बाहर ले जाया गया और वह सात दिनों तक वहां रही। इस्राएल के लोग उस स्थान पर रहे, जब तक कि मिरियम को शिविर में वापस जाने की अनुमति नहीं दी गई। फिर वे उस स्थान पर चले गए जहाँ उन्हें कनान देश में प्रवेश करना था।

49 बारह जासूस

गिनती 13 - 14

जब इस्राएली कनान की सीमा पर पहुँचे, तो परमेश्वर ने मूसा से कहा, "बारह लोगों को उस देश की जासूसी करने के लिए भेज।" इसलिए मूसा ने इस्राएल के प्रत्येक गोत्र के एक व्यक्ति को चुना। उसने उनसे कहा की देश में जाएँ और कनान के लोगों और उनके शहरों के बारे में जानकारी लाएँ। उसने उन्हें उस देश में उगने वाले कुछ फलों को वापस लाने के लिए भी कहा।

लोग चालीस दिनों तक कनान में रहे।

जब वे वापस आए, तो उनमें से दो लोग अपने बीच एक खंभे पर अंगूर का एक गुच्छा लाए थे।

जब पुरुषों ने वर्णन किया, तो दस लोगों ने कहा, “यह सच है, भूमि महान है और दूध और शहद वहां बहते हैं। लेकिन, लोग बड़े और शक्तिशाली हैं और ऊंची दीवारों वाले शहरों में रहते हैं।”

बाकि दो लोग कालेब और यहोशू थे।

उन्होंने एक अलग वर्णन किया । उन्होंने कहा, "हमें जाना चाहिए और इस देश को लेना चाहिए। हम कर सकते है!"

अन्य दस चिल्लाए, "नहीं, हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते! वे हमसे ज्यादा बलवान हैं। हम उनके सामने टिड्डे की तरह दिखते थे!”

इस बात को सुनकर इस्राएली डर गए। वे मूसा के खिलाफ हो गए और कहा, “क्या परमेश्वर हमें मारने के लिए यहाँ लाया था? हम मिस्र में मर सकते थे! इस देश के लोग हमें मार डालेंगे और हमारी पत्नियाँ और बच्चे को अपने दास बना लेंगे। हम एक नए नेता का चयन करेंगे जो हमें मिस्र वापस ले जाए।"

यहोशू और कालेब लोगों के सामने भागे और अपने कपड़े फाड़े। वे पुकार उठे, “यह भूमि बहुत अच्छी है, और प्रभु हमें इसे देने वाले हैं! उसके खिलाफ विद्रोह न करें क्योंकि तुम डरते हो। प्रभु हमारे साथ है। हम इन लोगों को खत्म कर देंगे!"

इस्राएल के लोगों ने यहोशू और कालेब पर हमला किया, लेकिन अचानक प्रभु की महिमा पवित्रस्थान में दिखाई दी। परमेश्वर ने मूसा से कहा, “ये लोग कब तक मुझ पर विश्वास करने से इंकार करेंगे? उन्होंने मिस्र में मेरे द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा। उन्होंने कई चमत्कार देखे जो मैंने उनके बीच किए। फिर भी वे अभी भी मेरी परीक्षा लेते हैं।

“इसलिए ये लोग उस देश को नहीं देखेंगे जो मैंने दे उन्हें देने का वादा किया था। मैं उन्हें जंगल में वापस भेज रहा हूं, और जब तक वे मर नहीं जाते वे चालीस साल तक वहां रहेंगे। बीस साल या उससे अधिक उम्र का हर कोई उस देश को नहीं देख सकता, सिवाय मेरे दास कालेब और यहोशु के।

वे कनान में चले जाएंगे क्योंकि उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के मेरा पीछा किया। क्यूंकि ये लोग अपने बच्चों के बारे में चिंतित थे, इसलिए मैं उनके बच्चों को कनान देश में ले जाऊंगा और उन्हें दे दूंगा।"

मूसा ने इस्राएलियों को बताया कि यहोवा ने क्या कहा था, और वे फूट-फूट कर रोए। ग़लत जानकारी वापस लाने वाले दस आदमियों पर अचानक एक विपत्ती आ गई और वे मर गए। अगली सुबह लोगों ने कहा, "हमें अब एहसास हुआ कि हम पाप कर रहे हैं। हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उस देश में जाएंगे।"

मूसा ने कहा, “नहीं! यहोवा तुम्हें जंगल में वापस भेज रहा है। उसकी आज्ञा का उलंघन दोबारा न करना। यदि तुम देश में जाते हो, तो तुम पराजित हों जाओगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे साथ नहीं जा रहा है।”

फिर भी, वे परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कनान में चले गए। और जैसे मूसा ने कहा था, वे युद्ध में हार गए थे। कई लोग मारे गए और बाकी लोग अपमान के साथ वापस आए।

इसलिए इस्राएल के लोग जंगल में वापस चले गए जहाँ वे अगले चालीस वर्षों तक रहे। सभी बालिग जो मिस्र से बाहर आए थे, उनकी मृत्यु हो जाएगी। फिर भी, प्रभु उनके साथ था और उनकी जरूरतों को पूरा किया। उनके कपड़े और जूते पुराने नहीं हुए, और प्रभु ने उनको दैनिक भोजन प्रदान किया।

50 कोरह का विद्रोह

गिनती 16 - 17

जैसे ही इस्राएली लोग जंगल में वापसगए, चार लोगों ने सीधे मूसा और हारून से बातें करना तय किया। नेता कोरह थे, जो लेवी गोत्र से थे। उन्होंने दो सौ पचास प्रमुख पुरुषों का एक समूह बनाया और मूसा के पास गए। उन्होंने कहा, "तूने अपने अधिकार को बहुत आगे बढ़ाया है। हम एक पवित्र राष्ट्र हैं। प्रभु हम सबके साथ है। तेरी अनुमति से चीजें हमेशा नहीं होंगी।"

मूसा ने कोरह से कहा, "मुझे पता है कि यह क्या है। यहोवा की सेवा करने के लिए लेवियों को चुना गया है। अब तुम याजक का पद भी चाहते हो। परमेश्वर ने हारून के परिवार को चुना है, इसलिए तुम परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हो। कल, हम सब प्रभु के सामने खड़े होंगे, हम अग्नि और धूप से भरे धूपदानी पकड़े रहेंगे। प्रभु उसे चुनेगा जिसे वह चाहता है कि उसके लोगों का नेतृत्व करें।"

उन में से दो ने कहा, "हम नहीं आ रहे हैं!

तू हमें मरने के लिए जंगल में वापस लाया है। अब, एक राजा की तरह, तू हमें बताना चहता हैं कि क्या करना है। तो, हम वहाँ नहीं होंगे!"

इससे मूसा नाराज हो गया। उसने प्रभु से कहा, "मैंने कभी इन लोगों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया। मैंने उनसे कुछ नहीं लिया। फिर भी, वे मुझसे नफरत करते हैं।"

अगले दिन, मूसा, हारून, और सभी दो सौ पचास लोग यहोवा के सामने खड़े हो गए, उनके धूपदानी आग और धूप से भरी थी। पूरी मण्डली वहाँ देखने के लिए थी।

प्रभु की महिमा प्रकट हुई, और प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, "रास्ते से हटो। मैं पूरी मण्डली को नष्ट करने जा रहा हूँ।

मूसा ने गिड़गिड़ा कर कहा, "हे प्रभु, कुछ लोगों ने जो किया है उसके लिए सभी को दंडित मत करो ।"

प्रभु ने कहा, "उन लोगों से कहो, जो इस बैठक में आने से इनकार कर चुके, और उन पुरुषों के तंबू से दूर चले गए।" इसलिए हर कोई उन तंबुओं से दूर चले गए। दोनों पुरुष बाहर आए और अपनी पत्नी, बच्चों, और शिशुओं के साथ, और अपने तंबू के दरवाजे के पास खड़े हो गए। कोरह जाकर उनके साथ खड़ा हो गया।

मूसा ने मंडली से बात की। "अगर ये लोग बूढ़े हो जाते हैं और एक प्राकृतिक मौत मरते हैं, तो तुमको पता चल जाएगा कि प्रभु ने मुझे ये काम करने के लिए नहीं भेजा। लेकिन अगर उनके साथ कुछ असामान्य होता है, तो तुम जान पाओगे कि वे परमेश्वर के खिलाफ बोल रहे थे।"

अचानक, पृथ्वी खुल गई, और वे लोग और उनके परिवार उसमें गिर गए। उनके चारों ओर जमीन बंद हो गई, जैसे पृथ्वी उन्हें निगल गई। लोग चिल्लाए और यह सोचते हुए भाग गए कि शायद वे भी निगल लिए जाएंगे । तब आग ने आकर उन सभी दो सौ पचास लोगों को मार डाला जो धूप के साथ धूपदानी पकड़े हुए थे।

प्रभु ने मूसा से कहा, "पुरुषों की राख के बीच से सभी दो सौ पचास धूपदानी ले। उनमें से पतली प्लेटें बनाएं और वेदी को लगाने के लिए इसका इस्तेमाल करें। यह लोगों को याद दिलाएगा कि याजक का पद केवल हारून और उसके वंशजों के लिए है।"

इन सबके बाद भी, लोग अगले दिन भी याजक के बारे में बात कर रहे थे। मरने वाले लोगों के बारे में बात करने के लिए मूसा और हारून के आसपास भीड़ जमा हो गई। उन्होंने कहा, "आपने परमेश्वर के लोगों को मार डाला।"

मूसा ने मुड़कर देखा कि भीड़ के खिलाफ परमेश्वर का गुस्सा गर्म था। उसने हारून से कहा, "जल्दी जा, और एक धूपदानी ला और उसे धूप से भर दे । लोगों के बीच भाग और उनके पापों का प्रायश्चित कर। परमेश्वर का गुस्सा बढ़ रहा है, और वह उनके बीच विपत्ती भेज रहा है। जब हारून ने ऐसा किया, तो उसने देखा कि विपत्ती शुरू हो गई थी। उन्होंने लोगों के लिए, मृतकों और जीवित लोगों के बीच खड़े होकर प्रायश्चित किया। विपत्ती रूक गई, लेकिन उस दिन 14,700 लोगों की मृत्यु हो गई।

याजक के मुद्दे को हल करने के लिए, प्रभु ने मूसा से कहा, "क्या प्रत्येक गोत्र एक छड़ी लेकर आ सकते है। लेवी की चलने वाली छड़ी पर हारून का नाम रखेंऔर उन्हें पवित्रस्थान में रखना। मैं उनमें से एक को अंकुरित करूंगा। इससे लोग तुम्हारे बारे में शिकायत करना बंद कर देंगे!"

मूसा ने प्रभु के निर्देशों का पालन किया। अगले दिन, न केवल हारून की चलने की छड़ी अंकुरित हुई, इसमें कलियों, फूल और बादाम भी लगें! लोगों ने इसे देखा और आश्चर्यचकित रह गए। उस दिन से, वे पवित्रस्थान के पास भी नहीं जाना चाहते थे, इस डर से की कही वे मर ना जाएं। और सुरक्षित रखने के लिए हारून की छड़ी को पवित्रस्थान में रख दिया गया था।

51 चट्टान से बात

गिनती 20 - 21

इस्राएली लोग एक ऐसी जगह पहुंच गए जहाँ पानी नहीं था। लोग मूसा के पास गए और कहा, "काश हम अपने भाइयों के साथ परमेश्वर के हाथों के नीचे मारे जाते। तू हमें कई वादों के साथ यहां लाया हैं, लेकिन हमें कोई खेत, अंजीर के पेड़ या अंगूर के बाग नहीं दिखते। उसके ऊपर, हमारे या हमारे पशुधन के लिए पानी नहीं है।

यहोवा ने मूसा से कहा, “लोगों को एक साथ इकट्ठा कर और अपने लाठी के साथ उनके सामने खड़े हो जा। चट्टान से बोल, और यह तुम्हें पानी देगी। लोगों और उनके पशुओं के लिए पानी काफी होगा।”

इसलिए मूसा सभी लोगों के सामने खड़ा हो गया। उसने कहा, “तुम विद्रोही हों। क्या मुझे तम्हारे लिए इस चट्टान से पानी उपलब्ध कराना चाहिए?” फिर उसने चट्टान को अपने लाठी से दो बार मारा। उसमें से पानी निकला और सभी के पास पीने के लिए पर्याप्त पानी था।

लेकिन यहोवा मूसा और हारून से खुश नहीं था। उसने कहा, “तुम्हें मेरी शक्ति पर भरोसा नहीं था। इन लोगों ने देखा कि तुम मेरी आज्ञा का अनादर कर रहे हो। इसलिए, तुम इन लोगों को उस भूमि में नहीं ले जाओगे, जो मैंने उनसे वादा किया था।"

इस्राएल के लोग आगे बढ़े और वे एदोम की सीमा पर आ गए। मूसा ने उनके राजा को संदेश भेजकर उनके देश से गुज़रने की अनुमति मांगी। उसने राजा को आश्वासन दिया कि वे उन्हें किसी तरह परेशान नहीं करेंगे, और उन्होंने जो भी पानी पिया है, उसका भुगतान करेंगे।

राजा ने उन्हें देश से गुजरने से मना कर दिया। उसने अपनी सेना को भी अपनी सीमा में भेज दिया और इस्राइलियों को उनके देश में घुसने पर युद्ध करने की धमकी दी। इसलिए मूसा वहां से चला गया।

उसके कुछ समय बाद, यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून मरने वाला है। इसलिए महायाजक के वस्त्र उतारो और उन्हें उनके बेटे एलीआज़र पर डाल दो।"

मूसा ने ऐसा किया, और हारून जल्द ही मर गया। इस्राएल के लोगों ने तीस दिनों के लिए उसकी मृत्यु का शोक मनाया।

जैसे ही इस्राएलियों ने एदोम के करीब जाना शुरू किया, लोग फिर से शिकायत करने लगे। उन्होंने कहा, "हम मिस्र में ऐसा कर सकते थे। हमारे पास पानी नहीं है, और हम इस भयानक भोजन से नफरत करते हैं!"

इसलिए प्रभु ने विषैले सांपों को शिविर में भेजा। सांपों ने लोगों को काटा, और कई लोग मर गए। वे मूसा के पास गए और कहा, "हमें तेरे और प्रभु के खिलाफ नहीं बोलना चाहिए था। कृपया प्रभु से बात कर और उसे इन सांपों को हटाने के लिए कह।” इसलिए मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना की।

यहोवा ने मूसा से कहा, “एक पीतल का साँप बना और उसे एक खंभे पर लटका दे। अगर वे पीतल के सांप को देखे लेते हैं तो लोग उनके ज़हर से बच जाएंगे।”

इस्राएल के लोग यात्रा करते हुए अमोरियों की सीमा पर आए। उन्होंने राजा को संदेश भेजकर पूछा कि क्या वे उनके देश में से यात्रा कर सकते हैं। उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि वे कुछ नहीं लेंगे और कोई नुकसान नहीं करेंगे।

एमोरियों के राजा ने मना कर दिया। इसके बजाय, उसने अपनी सेना ले ली और इस्राएल पर हमला किया। इस्राएल के लोगों ने उनका मुकाबला किया और उन्हें पूरी तरह से हरा दिया। उन्होंने उनके शहरों पर अधिकार कर लिया और उनमें रहने लगे। उन्होंने अम्मोनियों की सीमा तक सारी भूमि पर नियंत्रित अधिकार कर लिया।

52 बिलाम की गधी

गिनती 22: 1-35

यरीहो से यरदन नदी के बगल में मोआब की घाटी में इस्राएलियों ने डेरा डाला।

मोआब का राजा बालाक नाम का एक व्यक्ति था। वह अपनी घाटी में लोगों का महान समूह देखकर घबरा गया था। उसने सुना था कि उन्होंने अन्य राजाओं के साथ क्या किया है। उसने मिद्यानियों से कहा, "ये लोग हमसे कहीं ज्यादा ताकतवर हैं। मुझे डर है कि वे हमें पूरी तरह से नष्ट न कर दें।"

एक साथ, दोनों राष्ट्रों ने पीशोन नदी के बगल में पूर्व में रहने वाले एक भविष्यवक्ता, बिलाम से बात करने का फैसला किया। उन्होंने संदेश के साथ उपहार भेजे, "जल्दी आ। मिस्र से लोगों का एक बड़ा समूह निकला है, और वे अब हमारी घाटी में हैं। वे हमसे ज्यादा बलवान हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि तू उन्हें श्राप दें ताकि हम उन्हें हरा सकें और उन्हें वापस भेज सकें। हम जानते हैं कि तू एक भविष्यवक्ता है, और जिसे तू शाप देता है, वे शापित हैं, और जिसे तू आशीष देता है वह धन्य है।"

बिलाम ने कहा, "रात में यहां रहो। सुबह मैं आपको बताऊंगा कि परमेश्वर ने मुझे क्या करने के लिए कहा है।"

रात में, परमेश्वर ने बिलाम से कहा, "तेरे साथ ये लोग कौन हैं?" "वे मोआब के राजा के पास आए हैं। वह कहते हैं कि मिस्र से बाहर आए लोगों का एक बड़ा समूह है, और वह चाहता है कि मैं जाऊं और उन्हें श्राप दूं।"

प्रभु ने कहा, "नहीं, तू उनके साथ नहीं जाएगा।" तू उन लोगों को शाप नहीं देंगा, क्योंकि वे धन्य हैं।"

अगली सुबह, "अपने राजा के पास वापस जाओ और उसे बताओ, प्रभु ने मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं दिया।

उन लोगों ने वापस जाकर बालाक को यह संदेश दिया। राजा ने तब अधिक महत्वपूर्ण लोगों को भेजा। उनके माध्यम से उन्होंने कहा, "कुछ भी तुझे मेरे पास आने से ना रोके।" यदि तू इन लोगों को श्राप देता हैं, तो मैं तुझे एक अमीर आदमी बना दूंगा।"

बिलाम ने कहा, "यदि राजा ने मेरे घर को सोने से भर दिया, तौभी मैं केवल वही कह सकता हूं जो प्रभु मुझे कहने के लिए कहता है। फिर भी, रात में यही रहोंऔर मैं देखूंगा कि क्या प्रभु कुछ अलग कहता हैं।"

उस रात, प्रभु ने बिलाम से कहा, "ये लोग तुम्हारे पास दूसरी बार आए हैं, तू उनके साथ जा सकता है। लेकिन सावधान रहना। केवल वही कहना जो मैं तुमसे कहता हूं।" इसलिए अगली सुबह, बिलाम ने अपना गधी तैयारकी, अपने दो नौकरों को लिया, और मोआब की यात्रा पर चल दिया।

जब वे यात्रा कर रहे थे, प्रभु का दूत हाथ में तलवार लेकर उनके मार्ग में खड़ा था। गधी ने ऊपर देखा और दूत को देखा, इसलिए वह मुड़ गई और एक खेत में चली गई। बिलाम ने उसे तब तक पीटा जब तक वह वापस रास्ते पर नहीं आई। दूत रास्ते से नीचे गया और एक ऐसी जगह पर खड़ा हो गया, जहाँ दोनों तरफ एक दीवार थी। गधी ने दूत को अपनी तलवार के साथ तैयार देखा। वह दीवार के बहुत करीब चली गई और बिलाम का पैर फंस गया। उसने उसे फिर से पीटा।

दूत रास्ते पर चला गया, लेकिन इस बार वह ऐसी जगह खड़ा था, जहाँ दोनों तरफ कोई जगह नहीं थी। गधे ने ऊपर देखा और दूत को देखा, इसलिए वह बिलाम के नीचे लेट गई।

बिलाम को बहुत गुस्सा आया। उसने एक छड़ी ली और अपनी गधी को पीटना शुरू कर दिया। तभी परमेश्वर ने गधी को बात करने की अनुमति दी। उसने कहा, "तूने मुझे तीन बार क्यों पीटा है?"

बिलाम उस पर चिल्लाया। "क्योंकि तूने मुझे मूर्ख समझा है। अगर यह छड़ी के बजाय तलवार होती, तो मैं तुझको यहाँ पर ही मार देता।"

गधी ने कहा, "जब से तू पैदा हुआ है, क्या मैंने कभी तेरी सेवा नहीं की? क्या मैंने पहले कभी ऐसा किया है?"

बिलाम ने कहा, "नहीं, तूने कभी ऐसा नहीं किया है।"

अचानक, उसकी आँखें खुलीं और उसने देखा कि प्रभु का दूत अपनी तलवार के साथ रास्ते में खड़ा है। बिलाम उसके सामने झुक गया।

दूत ने कहा, "तूने अपने गधी को तीन बार पीटा है। फिर भी, अगर यह नहीं होती, तो मैं तुझे मार देता और उसे जीवित रहने देता।"

बिलाम ने कहा, "यदि आप नहीं चाहते कि मैं मोआब में जाऊं, तो मैं घूम कर घर चला जाऊंगा।"

दूत ने कहा, "नहीं, तू जा सकता है। लेकिन सावधान रहना। केवल वे शब्द बोलना जो मैं तुझको चाहता हूं तू कहे।" और इसलिए, बिलाम मोआब चला गया।

53 बिलाम की भविष्यवाणी

गिनती 22:36 - 25:18 और 31: 7-16

जब बिलाम मोआब पहुंचा तो राजा बालाक ने कहा, "तुम्हें इतनी देर क्यों लगी? मैंने कहा था कि मैं तुझे एक अमीर आदमी बनाऊंगा। क्या तुझे मुझ पर विश्वास नहीं था?

बिलाम ने कहा, "मैं अब आ गया हूं, लेकिन तुझे कुछ जान लेना चाहिए। मैं केवल वही कह सकता हूं जो परमेश्वर मुझे कहने के लिए कहता है।"

इसलिए बालाक बिलाम को एक ऊँची चट्टान पर ले गया, जहाँ से इस्राएलियों का पूरा शिविर को देखा जा सकता था। बिलाम ने राजा से प्रभु के लिए वेदियों का निर्माण करवाया, और उन्होंने उसके लिए बलिदान दिया। बिलाम ने राजा से कहा कि वह वहाँ रहे, जबकि वह पहाड़ पर यह जानने के लिए गया था कि प्रभु उसे क्या कहना चाहता है। परमेश्वर ने उसे एक संदेश दिया। फिर वह उस स्थान पर वापस चला गया जहाँ राजा बालाक और मोआब के बुजुर्ग इंतजार कर रहे थे।

बिलाम ने लोगों को देखा और कहा, "राजा बालाक ने मुझे बुलाया था। उसने कहा, 'आ और याकूब को शाप दे। आ और इस्राएल की निंदा कर। लेकिन मैं उन लोगों को कैसे श्राप दे सकता हूं जिन्हें परमेश्वर शाप नहीं देते।' मैं उन लोगों की निंदा कैसे कर सकता हूं जिनकी परमेश्वर निंदा नहीं करता हैं? मैं इन चट्टानों पर खड़ा हूं और इन लोगों को देखता हूं। उनके जैसा कोई दूसरा राष्ट्र नहीं है। ओह, काश मेरे पास मरने का ऐसा सौभाग्य होता, जैसे इन धर्मी लोगों के पास है।"

राजा बालाक चौंक गया। "मैं तुझे इन लोगों को शाप देने के लिए यहाँ लाया था - उन्हें आशीष देने के लिए नहीं!"

बिलाम ने कहा, "मैंने स्पष्ट रूप से कहा था। मैं केवल वही कह सकता हूं जो परमेश्वर मुझे कहने के लिए कहते हैं।"

बालाक ने कहा, "मेरे साथ एक अलग जगह पर आ। वहां से केवल कुछ लोग ही दिखेंगे। शायद तू उन्हें शाप देने में सक्षम हों।"

वे दूसरे स्थान पर गए, और फिर उन्होंने वेदी बनाई और प्रभु को बलिदान चढ़ाया।

बिलाम ने राजा से कहा, "जब मैं परमेश्वर से बात करता हूं, तू यही रह।" प्रभु बिलाम से मिला और कहने के लिए शब्द दिए। उसने कहा, "ओह, राजा बालाक, ध्यान से सुन कि मैं क्या कहने वाला हूं।" परमेश्वर लोगों की तरह नहीं है, वह अपना विचार नहीं बदलता है। उसने मुझे लोगों को आशीष देने के लिए कहा क्योंकि प्रभु उनके बीच रहता है। वह उनका राजा है, और वे इसके बारे में खुश हैं। वह उन्हें एक शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर लाया। इसलिए उनके लिए कोई शाप नहीं है। उन्हें उन महान चीजों के लिए जाना जाएगा जो परमेश्वर ने उनके लिए की हैं।"

राजा ने कहा, "यदि तू उन्हें श्राप नहीं दे सकता है, तो कम से कम उन्हें आशीष देना बंद कर।" फिर से राजा बिलाम को एक ऐसी जगह ले गया जहाँ वह लोगों को देख सकता था। उसने कहा, "एक बार और कोशिश कर और देख कि क्या इन लोगों के लिए कोई शाप है।

बिलाम ने एक बार फिर वेदी बनवाई और उन्होंने प्रभु को बलिदान चढ़ाया। लेकिन वह पहाड़ पर नहीं गया। जब उसने घाटी की ओर देखा, परमेश्वर की आत्मा उस पर आ गई। "ओह, इस्राएल के तंबू सुंदर हैं। वे एक बगीचे की तरह हैं जो परमेश्वर द्वारा लगाया गया हैं। जो भी इन लोगों को आशीष देगा वह धन्य हो जाएगा। जो कोई भी इन लोगों को शाप देगा वह शापित हो जाएगा।"

बालाक बहुत नाराज़ हो गया। "मैं तुझे इन लोगों को शाप देने के लिए यहाँ लाया था। अब घर जा! प्रभु तुझको जो धन देने वाला था, उसे रोक लिया है।"

बिलाम ने कहा, "मेरे पास एक और संदेश है। कोई आ रहा है, मैं नहीं देख सकता कि यह कौन है वह एक स्वर्गीय तारे की तरह है। वह इस्राएल का राजा होगा। सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

तब बिलाम चला गया, और राजा बालाक अपने स्थान पर वापस चला गया। बाद में, बिलाम बालाक राजा के पास गया और कहा, "मैं इन लोगों को शाप नहीं दे सकता, लेकिन आप प्रभु से इन्हें शाप दिला सकते हो। और उसने उसे एक योजना दी।

उसके कुछ समय बाद, मोआब की स्त्रियाँ इस्राएल के शिविर में गईं। उन्होंने पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाए, और फिर उन्हें अपनी मूर्तियों के लिए एक उत्सव में आमंत्रित किया। पुरुष चले गए, और जल्द ही वे मूर्तियों की पूजा कर रहे थे।

परमेश्वर बहुत नाराज़ हो गया! उसने विपत्ती भेजीं और 24,000 लोग मारे गए। एक इस्राइली ने एक मिद्यानी स्त्री को अपने परिवार के तंबू में लाया।

वे मूसा और इस्राएल के प्राचीनों के ठीक पीछे चले गए। महायाजक का पुत्र एक भाला लेकर तम्बू में गया। उसने दोनों को भाले से मारा, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

तब परमेश्वर ने विपत्ती को रोक दिया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी सेना ले। जा, मोआबियों और मिद्यानियों को मार डाल क्योंकि उन्होंने ठीक नहीं किया है।" इस्राएलियों की सेना ने बाहर जाकर दोनों देशों को हराया। मृतकों में बिलाम का शरीर था क्योंकि उन्होंने बालाक को सलाह दी थी।

54 मूसा की मृत्यु

गिनती 27: 12-23 और व्यवस्थाविवरण 30 - 34

यहोवा ने मूसा से कहा, “इस पर्वत पर चढ़ जा। वहाँ से मैं तुझको वह भूमि दिखाऊँगा जो मैं इस्राएलियों को दे रहा हूँ। चट्टान को मारने के पाप के कारण तुम उनके साथ नहीं जा सकते हो। लेकिन मैं तुझे वह देश देखने दूंगा, और उसके बाद तू मर जाएगा।

मूसा ने कहा, "परमेश्वर, इन लोगों का नेतृत्व करने के लिए एक आदमी का चयन कर - कोई ऐसा जो उनके सामने खड़ा हो सकता है और ऐसे निर्णय ले सकता है जो उनके लिए अच्छे होंगे। यदि तू ऐसा नहीं करता है, तो वे चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह हों जाएंगे।"

परमेश्वर ने कहा, “यहोशू के पास ज्ञान का आत्मा है। उसे एलीआज़र याजक के सामने खड़ा कर, जब पूरी मण्डली देख रही हो। सुनिश्चित कर कि हर कोई सुन सकता है कि तू उसे देश का नेतृत्व करने का अधिकार दे रहा हैं। लोगों से कह कि वह उसकी बात मानें, जैसे उन्होंने तेरी बात मानी है। यहोशू से कहो कि उसे एलीआज़ार से सलाह लेनी चाहिए।”

इसलिए मूसा ने प्रभु की आज्ञा के अनुसार किया। वह यहोशू को ले गया और उसे एलीआज़ार और सभी लोगों के सामने खड़ा कर दिया। तब मूसा ने यहोशू पर हाथ रखा और उसे राष्ट्र का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया।

फिर उसने लोगों से कहा, “मेरे पास तुम्हारे लिए एक आज्ञा है। आज्ञा मानना अच्छी तरह से तुम्हारी क्षमता के भीतर है। यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हारे पास जीवन और समृद्धि होगी। इसका पालन नहीं करने से दिल का दर्द और मौत हो जाएगी।

“आज्ञा केवल यही है। अपने परमेश्वर से प्यार करो, और जो वह कहता है वह करो। यदि तुम ऐसा करते हो, तो वह तुम्हें आशीष देगा, जब तुम उस देश में जाते हो। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो परमेश्वर वह सब कुछ तुमसे ले लेगा जिससे तुम प्यार करते हो।”

“जो मैं कह रहा हूँ, मैं स्वर्ग और पृथ्वी को उस बात का साक्षी बना रहा हूँ। मैं तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु, आशीष और शाप रखता हूं। जीवन को चुनो। अपने परमेश्वर से प्यार करो। उसका पालन करो और उसके प्रति वफादार रहो, क्योंकि वह तुम्हारा जीवन है।”

तब मूसा ने यहोशू से कहा, “दृढ़ और साहसी बन। प्रभु तेरे साथ रहेगा और तेरे आगे जाएगा। डरो या निराश मत हो।"

यह कहने के बाद, मूसा पहाड़ पर चढ़ गया, जो कि यरीहो के उस पार था। वहाँ, परमेश्वर ने उसे इस्राएल की भूमि दिखाई। वह यह सब देख पा रहा था, उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक। प्रभु ने कहा, “यह वह भूमि है जिसे मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब को देने का वादा किया था। मैंने तुझको इसे देखने की अनुमति दी है, लेकिन तू इसे पार नहीं कर सकता है।

फिर मूसा, प्रभु के सेवक की मृत्यु हो गई, और उसे मोआब की भूमि में दफन कर दिया। जब वह मरा तब वह 120 साल का था। फिर भी उसकी दृष्टि अभी भी अच्छी थी, और वह शारीरिक रूप से स्वस्थ था।

मूसा की मृत्यु के तीस दिन बाद तक लोग रोते रहे। इस्राएल में मूसा की तरह दूसरा भविष्यवक्ता कभी नहीं रहा। फिर भी, परमेश्वर ने लोगों से वादा किया कि किसी दिन, एक महान भविष्यवक्ता आएगा, जो मूसा जैसा होगा।

55 राहाब

यहोशू 1 - 3: 6

यहोवा ने यहोशू से कहा, "मूसा मेरा दास मर गया है। अब तू लोगों को उस देश में ले जाएगा जिसका मैंने उनसे वादा किया था। मैं तेरे साथ वैसे ही रहूंगा जैसे मैं मूसा के साथ था।

"तो, मजबूत बन और साहस से भरपुर हो। मैंने मूसा को जो निर्देश दिए, उनका पालन कर । किसी भी तरह से उनसे दूर न हों। यदि तू उन निर्देशों का पालन करता है, तो तू जो कुछ भी कर ता हैं, उसमें मैं तेरे साथ रहूंगा।"

तब यहोशू ने कनान में अपने अभियान के लिए लोगों को संगठित करना शुरू कर दिया। उसने देश में जासूसी करने के लिए नदी के पार दो लोगों को भेजकर शुरुआत की। उन्होंने यरीहो शहर में प्रवेश किया और राहाब नामक वैश्या के घर पर रुके।

यरीहो के राजा को पता चला कि वे शहर में हैं, इसलिए उन्होंने राहाब को एक संदेश भेजा। "उन लोगों को बाहर ले आ जो तेरे घर में रह रहे हैं। वे इस्राएल के जासूस हैं।"

पुरुष उसकी छत पर थे, जहाँ उसने उन्हें सन के पुलिंदो के नीचे छिपा दिया था। उसने राजा से कहा, "हां, वे यहां आए थे, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वे कहां से आए थे। अंधेरे से ठीक पहले, वे शहर के फाटकों के बंद होने से पहले चले गए। उन्होंने मुझे नहीं बताया कि वे किस रास्ते जा रहे थे, लेकिन अगर आप जल्दी करते हैं तो आप उन्हें पकड़ सकते हैं।" इसलिए राजा ने अपने आदमियों को उनका पीछा करने के लिए भेजा।

राहाब ने जासूसों से कहा, "यहाँ हर कोई तुमसे डरता है क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर ने तुम्हें यह जमीन दी है! हमने सुना है कि जब तुम मिस्र से बाहर निकले थे तो प्रभु ने लाल सागर कैसे दो भाग किया था। तुम्हारा परमेश्वर ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वी का परमेश्वर है। उसने तुम्हारे लिए बड़े काम किए हैं।

"मैंने तुम्हारी रक्षा की है! अब अपने परमेश्वर की शपथ खाओ कि तुम मेरे परिवार पर दया करोगे। हमारे जीवन को बख्श दो!"

तब जासूसों ने कहा, "जब प्रभु हमें यह शहर दे देगा, तो हम तुझे छोड़ देंगे, लेकिन अगर तू राजा को हमारे बारे में नहीं बताएं तो। इस लाल रंग की रस्सी को अपनी खिड़की पर बांध ले। यदि सब तेरे घर के अंदर हैं तो तेरे परिवार के सदस्य सुरक्षित रहेंगे। यदि कोई घर के बाहर होता है, तो हम उसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

राहाब का घर शहर की दीवार पर था, इसलिए उसने अपनी खिड़की से एक रस्सी निकाली और पुरुषों को भागने में मदद की। वे पहाड़ियों में छिप गए जब तक कि यरीहो के पुरुषों ने उन्हें ढूंढना बंद नहीं कर दिया।

जब सब सुरक्षित था, तो वे नदी के पार वापस चले गए। उन्होंने यहोशू को वह सब कुछ बताया जो हुआ था। उन्होंने कहा, "यह सच है!" परमेश्वर ने हमें वह देश दिया हैऔर लोग हमसे डरते हैं।"

इसलिए यहोशू लोगों को यरदन नदी की ओर ले गया, जहाँ वे तीन दिन रहे। तीसरे दिन, इस्राएल के अगुओं ने पूरे शिविर में जाकर लोगों से कहा, "कल सुबह शिविर छोड़ दो। फिर याजकों को देखता रहना। वे परमेश्वर के सन्दूक को उठाने जा रहे हैं और यरदन नदी की ओर बढ़ रहे हैं। उनके पीछा करना, क्योंकि तुम उस तरह पहले नहीं गए हो।

"कल, परमेश्वर तुम्हारे लिए अद्भुत काम करेगा। तुमको पता चल जाएगा कि परमेश्वर तुम्हारे साथ रहता है और उसके पास तुम्हारे सामने से तुम्हारे दुश्मनों को बाहर निकालने की योजना है।"

यहोशू ने उनसे कहा कि वे बारह आदमियों का चयन करें, जो प्रत्येक गोत्र में से एक, और उन्हें उसके पास भेजे। फिर उसनेयाजकों को बताया कि उन्हें अगले दिन क्या करना है।

56 यरदन पार करना

यहोशू 3 - 5:12

सुबह, परमेश्वर ने यहोशू से कहा, "आज, मैं तुझे लोगों की नज़रों में ऊंचा उठाऊंगा - ताकि वे जान सकें कि मैं तेरे साथ वैसा ही हूँ जैसा मैं मूसा के साथ था।"

यहोशू ने याजकों से कहा, "परमेश्वर के सन्दूक को ले लो, और यरदन नदी के पास जाओ।" याजकों ने परमेश्वर के सन्दूक को नदी तक पहुँचाया, जिसमें बाढ़ आने वाली थी। जब वे नदी के किनारे पर आए, तो वे तब तक चलते रहे, जब तक कि पानी ने उनके पैरों को ढक नहीं दिया ।

अचानक नदी रुक गई! पानी की एक दीवार दस मील ऊपर की ओर बन गई। इसका बाकी हिस्सा समुद्र में बह गया। यह देखकर याजक नदी के बीच में चले गए और सूखी जमीन पर खड़े हो गए। फिर लोग नदी पार करने लगे।

तब यहोशू ने उन बारह आदमियों से कहा, जिन्हें इस्राएलियों ने चुना था, “तुम में से हर एक जो बड़ा पत्थर उठाए है, जहाँ याजक खड़े होते हैं। इसे अपने कंधों पर रखो और इसे नदी के दूसरी तरफ ले जाओ।” तब यहोशू ने और बारह पत्थर लिए और नदी के बीच में एक स्मारक बनाया, जहाँ याजक खड़े थे।

लोगों ने यहोशू को देखा, और वह उनकी आँखों में उठ गया। वे जानते थे कि परमेश्वर उसके साथ वैसा ही था जैसा वह मूसा के साथ था।

जब वे सभी नदी पार कर चुके थे, तब यहोशू ने याजकों से कहा, "नदी के किनारे से आगे बढ़ो।" जैसे ही याजक नदी के तट पर थे, पानी नदी के किनारे पर आ गया और अपनी बाढ़ की स्थिति में लौट आया, जैसा कि पहले था।

यहोशू लोगों को गिलगाल नामक स्थान पर ले गया, जहाँ उन्होंने शिविर लगाया। फिर उसने उन से बारह पत्थरों के से एक स्मारक बनवाया।

उन्होंने कहा, "भविष्य में, बच्चे इस स्मारक को देखेंगे और पूछेंगे, 'ये पत्थर यहाँ क्यों हैं?" उनके माता-पिता उन्हें इस दिन के बारे में बताएंगे, जब परमेश्वर ने यरदन नदी को रोक दिया ताकि उनके लोग सूखी जमीन पर पार हो सकें। पृथ्वी के सभी देशों को पता चल जाएगा कि परमेश्वर, सारे पृथ्वी के परमेश्वर, का हाथ शक्तिशाली है।”

कनान के लोगों ने सुना कि किस तरह परमेश्वर ने यरदन नदी को रोका ताकि इस्राएल के लोग सूखी ज़मीन पर पार हो सकें। पूरे देश के शहरों में परमेश्वर का भय फैल गया।

यहोशू ने इस्राएल के सभी लोगों को बताया कि उनका खतना किया जाना था। यह पूरे 40 वर्षों के लिए नहीं किया गया था, क्योंकि लोग जंगल में थे।

इसके तुरंत बाद, लोगों ने फसह का त्योहार मनाया। अगले दिन, मन्ना दिखाई देना बंद हुआ और कभी वापस नहीं आया। उस दिन से, लोगों को कनान देश से खाना खाना था।

57 यरीहो

यहोशू 5: 13-6: 27

जब लोग गिलगाल में थे, तब यहोशू ने यरीहो की तरफ देखा और एक आदमी को पास में हाथ में तलवार लिए खड़ा देखा। यहोशू उसके पास गया और पूछा, "क्या आप हमारे साथ हैं, या हमारे दुश्मनों के?"

उस व्यक्ति ने कहा, "मैं प्रभु की सेना का कप्तान हूं। मैं अभी पहुँचा हूं।"

यहोशू ने गिरकर उपासना की। कप्तान ने कहा, "अपने जूते उतार क्योंकि तू पवित्र भूमि पर है।"

यहोवा ने यहोशू से कहा, "मैंने तुम्हें यरीहो, उसके राजा और उसकी सेना को दे दिया है।" उसने तब सटीक आदेश दिए कि कैसे यरीहो को जीतना है।

दिन आने पर, यहोशू ने लोगों को व्यवस्थित किया। सेना का एक हिस्सा नेतृत्व करने के लिए आगे रखा गया था। उनके पीछे, उसने सात याजकों को रखा जो सींग वाली तुरहियों को बजाने के लिए थे। परमेश्वर का सन्दूक उनके पीछे था। बाकी सेना परमेश्वर के सन्दूक के पीछे थी। यहोशू ने लोगों से कहा, "तुम शहर का चक्कर करते हुए एक शब्द भी मत कहना।"

जैसा कि उन्होंने शहर के चक्कर लगाए, याजकों ने तुरही फूंकी, लेकिन लोग चुप थे।

एक बार जब वे शहर की परिक्रमा कर चुके, तो वे अपने शिविर में लौट आए और रात बिताई।

दूसरे दिन और तीसरे दिन भी उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने छह दिनों तक शहर के चक्कर लगाए।

सातवें दिन सुबह यहोशू ने लोगों से कहा कि वे भी यही प्रक्रिया करें, लेकिन इस दिन उन्हें सात बार शहर के चक्कर लगाने थे।

उन्होंने कहा, “हम सात बार शहर के चक्कर लगाएगें, मैं तुम्हें चिल्लाने के लिए कहूंगा। तब यहोवा तुम्हें नगर देगा। राहाब और उसके परिवार को छोड़कर शहर के सभी लोग और जानवर मर जाएंगे।

सोना, चांदी और पीतल और लोहे से बनी चीजों को छोड़कर, सब कुछ जलाना। इन्हें प्रभु के लिए अलग रखना है। सावधान रहना! अपने साथ कुछ भी मत रखना जो प्रभु के लिए अलग है, अन्यथा, तुम अपने लिए विनाश सुनिश्चित करोगे ।"

उस दिन लोगों ने शहर के चारों ओर चुपचाप सात बार चक्कर लगाए जबकि याजकों ने तुरही फूंकी। सातवें चक्कर के बाद, सब कोई रुक गए।

अचानक याजकों ने तुरही बजाई और यहोशू चिल्लाया, "चिल्लाओ!"

लोग चिल्लाए और शहर की दीवारें उनके सामने गिर गईं। इस्राएल की सेना सीधे शहर में गई और उसे नष्ट कर दिया। जिन दो जासूसों की राहाब ने रक्षा की, वे तुरंत उसके घर गए। वे उसे और उसके परिवार को ज़िंदा शहर से बाहर ले आए। शहर के बाकी सभी लोग मारे गए और सोने, चांदी और पीतल और लोहे से बनी चीजों को छोड़कर सब कुछ जल गया।

तब यहोशू ने यरीहो शहर पर एक शाप घोषित किया। उसने कहा, “कोई भी आदमी जो इस शहर का पुनर्निर्माण करता है, वह अपने प्रथम पुत्र और सबसे छोटे बेटे दोनों को खो देगा।" यहोवा यहोशू के साथ था और उसकी ख्याति पूरे देश में फैल गई।

राहाब और उसके परिवार को इस्राएल के शिविर के बाहर एक सुरक्षित जगह पर रख दिया गया। आखिरकार उसने यहूदा की जाति से एक इस्राएली से शादी कर ली। कुछ समय बाद, उनका एक बेटा हुआ जिसका नाम बोअज़ रखा गया ।

58 आकान

यहोशू 7 - 8

यरीहो को जीतने से पहले, यहोशू ने लोगों से साफ कहा था, "सावधान! अपने साथ कुछ भी ना रखना जो प्रभु के लिए अलग रखा गया है, वरनातुम सब नष्ट हो जाओगे ।"

उस दिन यरीहो में गए सैनिकों में से एक आकान नाम का व्यक्ति था। वहाँ उसने चांदी के सिक्कों का एक थैला, सोने की एक पट्टी और बाबुल का एक सुंदर कोट देखा। वह उन्हें ले गया और उन्हें अपने डेरे के अंदर छिपा दिया। इससे परमेश्वर नाराज़ हो गया।

यरीहो में जीत के बाद, यहोशू ने खोज करनेवालों को ऐ नामक शहर के बारे में जासूसी करने के लिए भेजा। वे वापस आए और कहा, "ऐ में बहुत कम लोग हैं। हमें अपनी पूरी सेना वहां भेजने की आवश्यकता नहीं है, केवल दो या तीन हजार लोग काफी होंगे।

इसलिए यहोशू ने ऐ को जीतने के लिए 3,000 लोगों को भेजा। उनके आश्चर्य के लिए, शहर के लोगों ने लड़ाई जीत ली!

उन्होंने छत्तीस इस्राएलियों को मार डाला और बाकी लोगों का पीछा किया। इस पराजय से लोग भयभीत थे।

यहोशू ने अपने कपड़े फाड़े। वह और प्राचीन परमेश्वर के सन्दूक के सामने जमीन पर गिर गए । उसने अपने सिर पर धूल डाली और पूरे दिन वहीं रहा।

यहोशू ने कहा, हे परमेश्वर! तू हमें नदी के पार क्यों लाया? कनानी लोग इस हार के बारे में सुनेंगे। वे हमें घेर लेंगे और हमें पृथ्वी पर नष्ट कर देंगे। फिर तेरे महान नाम का क्या होगा?"

यहोवा ने कहा, "ज़मीन से उठकर खड़े हो! आज इस्राएल हार गया क्योंकि उनके डेरे में पाप है। उन्होंने मेरी आज्ञा नहीं मानी और उन चीजों को अपने साथ ले गए जिन्हें अलग करने की आवश्यकता थी। जब तक तुम्हारे पास वो चीजें हैं, तुम हर लड़ाई हार जाओगे क्योंकि मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहूंगा।"

अगली सुबह, यहोशू ने अपने सामने सारे इस्राएल को खड़ा कर दिया। प्रत्येक जाति उसके सामने से गुजरी। यहोवा ने यहूदा के गोत्र को चुना। यहूदा के सभी वंश उसके सामने से गुजरे। प्रभु ने उनमें से एक का चयन किया। उस कुल के सभी परिवार उसके सामने से गुजर गए। प्रभु ने उनमें से एक का चयन किया। उस परिवार से, आकान को चुना गया था।

यहोशू ने उससे कहा, "बेटा, तुमने क्या किया है? मुझसे कुछ मत छिपाओ।"

आकान ने टूट कर कहा, "यह सच है। मैंने प्रभु के खिलाफ पाप किया। मैंने चांदी के सिक्कों का एक थैला, सोने की एक पट्टी और बाबुल का एक सुंदर कोट रख लिया है। मैं उन्हें रखना चाहता था, इसलिए मैं उन्हें ले गया और अपने डेरे में छिपा दिया।"

यहोशू ने आकान के डेरे पर लोगों को भेजा कि वे सब सामान लें आए। उसने फिर उन्हें यहोवा और इस्राएल के सामने फैलाया।

लोगों ने तब सब कुछ इकट्ठा कर लिया जो आकान का था; उसके बेटे और बेटियाँ, उसका पशुधन, उसका तम्बू और यरीहो से ली गई चीजें। उन्होंने उन पर पत्थर मारे, जब तक कि वे मर नहीं गए, और फिर उनके शरीर को जला दिया।

प्रभु अब अपने लोगों से नाराज नहीं थे।

इसलिए उसने यहोशू से कहा, "अपनी पूरी सेना ले और ऐ पर हमला कर। मैंने उन्हें तुझको दिया है। एक बार जब तुम उन पर जीत पा लो, तो लोग जो कुछ भी वहां पाते हैं, रख सकते हैं।"

यहोशू ने रात में पुरुषों के एक समूह को बाहर भेजा। उन्होंने कहा, "शहर के पीछे जाओ और छिप जाओ।" उसने उन्हें सटीक निर्देश दिए कि क्या करना है।

अगली सुबह, उसने ऐ से लड़ने के लिए एक टुकड़ी भेजी।

शहर के लोगों ने उन्हें आते देखा और उनसे लड़ने के लिए निकल पड़े। युद्ध की गर्मी में, इस्राएल ने भागना शुरू कर दिया, जैसा कि उन्होंने पहले किया था।

ऐ के लोगों ने उनका पीछा किया, जिससे शहर असुरक्षित हो गया।

एक बार जब लोग शहर से दूर आ गए, तो इस्राएली सैनिक छिपते हुए बाहर आए और ऐ में जाकर आग लगा दी। ऐ के लोगों ने पीछे मुड़कर देखा कि उनके शहर में आग लगी हुई थी। उन्हें एहसास हुआ कि वे अब इस्राएल की सेना के दो हिस्सों के बीच थे।

उन्होंने भागने की कोशिश की, लेकिन नहीं भाग सकें। वे सभी युद्ध में मारे गए।

लोगों को शहर में मिलने वाली हर चीज़ को रखने की अनुमति दी गई थी, जिसमें पशुधन भी शामिल था। तब उन्होंने शहर को नष्ट कर दिया।

इस सबके बाद, लोगों ने प्रभु को बलिदान दिया। बाद में, यहोशू ने सभी लोगों, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों सहित पूरी व्यवस्था को पढ़ा।

59 सूरज का स्थिर खड़ा होना *यहोशू 9 - 10*

यरीहो और ऐ के विनाश की खबर पूरे कनान में फैल गई। इस्राएल से खुद को बचाने के लिए अधिकांश शहरों ने गठबंधन बनाए। लेकिन एक शहर ने कुछ अलग करने की ठानी।

गिबोन शहर के पुरुषों के एक समूह ने पुराने कपड़े और जूते पहने। उन्होंने अपने गधों पर पुरानी बोरियां, बासी सूखी रोटी रखी और पुरानी शराब की मशकें लीं।

वे यहोशू के पास गए और कहा, “हम बहुत दूर रहते हैं, लेकिन हमने सुना है कि आपके परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है। हमारे बुजुर्गों ने हमें इस यात्रा पर भेजा। उन्होंने कहा, "जाओ और उनके साथ एक संधि करो।" देखो, हमने अपनी रोटी भट्ठी से बाहर निकाल ली। यह अब सूखी और बासी है। यात्रा इतनी लंबी थी कि हमारे कपड़े और चप्पल खराब और पुरानी हो गईं।”

इस्राएल के लोग ने उनके प्रावधानों को देखा, लेकिन उन्होंने प्रभु से मार्गदर्शन नहीं मांगा। इसलिए यहोशू ने उनके साथ एक संधि की। इस्राएल के बुजुर्गों ने वादा किया की दोनों राष्ट्र सहयोगी होंगे।

संधि के तीन दिन बाद, इस्राएल को पता चला कि गिबोनी कनान में रहते थे, जो करीब है।

यहोशू ने उनके लिए संदेश भेजा और कहा, "तुमने हमें धोखा क्यों दिया?" उन्होंने कहा, "हमने सुना है कि परमेश्वर ने तुम्हें यह देश दे दिया है। उसने मूसा से कहा था कि जो भी यहाँ रहता है उसे मार डाले। हमें अपनी जान गवाने का डर था, इसलिए हमने आपको धोखा दिया। अब आप वो कर सकते हैं जो आपको सही लगता है। हमें वह स्वीकार होगा।” यहोशू ने कहा, “तुम हमारे वादे के कारण जीवित रहोगे। हम तुमको स्पर्श नहीं कर सकते, लेकिन अब से, तुम हमारे दास हो । तुम हमारे लिए लकड़ी काटोगे और पानी लेकर जाओगे और तुम प्रभु के घर की सेवा करोगे।”

देश के अन्य राजाओं ने सुना कि गिबोन के लोगों ने इस्राएल के साथ शांति स्थापित की थी।

वे एक साथ शामिल हो गए, और उनके शहर के खिलाफ चल पड़े । गिबोन के लोगों ने यह संदेश यहोशू के पास भेजा, “हम तुम्हारे दास हैं। जल्दी आओ और हमारी मदद करो!”

इसलिए रात को यहोशू ने अपनी सेना ली और उन लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया, जो गिबोन के खिलाफ लड़ रहे थे। उन्होंने वापस लड़ने की कोशिश की, लेकिन इस्राएल की सेना उनके लिए बहुत शक्तिशाली थी। प्रभु ने उन पर बड़े-बड़े ओले भी भेजे, और तलवार की तुलना में ओलों के कारण अधिक लोग मारे गए।

यहोशू को और समय की ज़रूरत थी, इसलिए उसने ऊपर देखा और कहा, "सूर्य, गिबोन के ऊपर स्थिर खड़ा रहे!" प्रभु ने उसकी सुनी और उसे सम्मानित किया। सूरज आकाश में रुक गया। न कभी अतीत में, न तब से, उस जैसे कोई दिन कभी हुआ है।

पाँचों राजा भागकर एक गुफा में छिप गए, लेकिन किसी ने यहोशू को इस बारे में बताया। उन्होंने कहा, "गुफा के प्रवेश द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दे।" फिर उसने वहां के लोगों को रखवाली के लिए रखा। एक बार जब इस्राएल ने अपनी जीत सुनिश्चित कर ली, यहोशू ने राजाओं को गुफा से बाहर निकाला। उसने अपने सेनापतियों से कहा कि वे राजाओं की गर्दन पर पैर रखें। उन्होंने कहा, “मज़बूत और साहसी बनो। परमेश्वर तुम्हारे सभी दुश्मनों के लिए यह करेगा। उसने फिर उन पांच राजाओं को मार डाला।

यहोशू अपनी सेना को एक शहर से दूसरे शहर में ले गया, और प्रभु ने उसे जहाँ भी वह गए वहाँ विजय दिलाई।

60 यहोशू की विदाई

यहोशू 14-15 और 23-24

यहोशू ने कई राष्ट्रों को कनान से निकाल देने के बाद, देश को विभिन्न जातियों में विभाजित किया । कालेब यहोशू के पास गया और कहा, "मैं चालीस साल का था जब तुम और मैं इस देश में जासूसी करने आए थे। हम एक ईमानदार विवरण वापस ले गए, लेकिन हमारे भाइयों ने लोगों के दिलों में डर डाला। तुझको याद है, मूसा ने वादा किया था कि उस दिन हमने जो जमीन देखी थी, उसे हमे विरासत में देंगा।

"मैं अब पचासी साल का हूँ, लेकिन मैं आज भी उतना ही बलवान हूँ जितना पैंतालीस साल पहले था। मैं अभी भी युद्ध में जाता हूं और अपने दैनिक काम करता हूं। अब मुझे ये पहाड़ियाँ दे दे। कनानी अभी भी वहाँ रहते हैं, लेकिन मैं उन्हें बाहर निकाल दूंगा।"

इसलिए यहोशू ने उसे हेब्रोन के आस-पास का इलाका दिया। कालेब ने अपने लोगों को संगठित किया और कनानियों को प्रत्येक शहर से बाहर निकाल दिया। जब वह एक शहर में आया, तो उसने कहा, "जो कोई भी इस शहर को जीतता है वह मेरी बेटी से शादी कर सकता है।"

एक आदमी ने चुनौती ली और उसे जीत लिया।

इसलिए कालेब ने अपनी बेटी को बुलाया। जैसे ही वह पहुंची, उसने अपने होनेवाले पति से कहा, "मेरे पिता से उस क्षेत्र के लिए पूछ। इसमें पानी का प्राकृतिक झरना है।"

वह अपने गधे से उतरी और अपने पिता के सामने गई।

उसके पिता ने कहा, "तू क्या चाहती है?"

उसने कहा "तूने हमें यह शहर दिया है, अब हमें पानी का झरना भी दे।" उसने उसे वही दिया जो वह चाहती थी।

सालों बाद, यहोशू जानता था कि वह मरने वाला है, इसलिए उसने इस्राएल के लोगों को उसके पास आने के लिए कहा।

जब वे इकट्ठे हुए तो उसने कहा, "परमेश्वर ने तुम्हारे के लिए जो कुछ भी किया है, वह सब तुमने देखा है। तुम्हारे पास वह जमीन है जहां तुम्हारे परिवार रह सकते हैं क्योंकि वह तुम्हारे लिए लड़ा।

"मजबूत बनो और मूसा की व्यवस्था का पालन करो। इससे दूर न हों। उन लोगों के देवताओं की पूजा शुरू न करना जो अभी भी इस देश में रहते हैं।। इसके बजाय, अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति सच्चे रहना। यदि तुम ऐसा नहीं करतेहो , तो वह तुमको इस भूमि से हटा देगा।

तब यहोशू ने इस्राएल के पूरे इतिहास को देखा। उसने कहा, "परमेश्वर ने तुम्हारे आगे सींग वाली भेड़ों को भेजा और इस देश में रहने वाले लोगों को बाहर निकाला। उसने तुम्हें वह मैदान दिए, जिन्हें तुमने नहीं खरीदा था, जिन घरों को तुमने नहीं बनाया था, और जिन दाख की बारियों को तुमने नहीं लगाया था।

"आज चुन लो, तुम किसकी आराधना करोगे। तुम उन मूर्तियों की आराधना कर सकते हो जिन्हें तुम्हारे पिता ने प्रणाम किया था। तुम उन देवताओं की आराधना कर सकते हो

जो लोग इस देश में रहते हैं। या, तुम उस परमेश्वर की आराधना और सेवा कर सकते हो जो तुमको अपने शक्तिशाली हाथों से यहां लाया है। मैं और मेरा परिवार, हम प्रभु की सेवा करेंगे।"

लोगों ने कहा, "हम इस भूमि के देवताओं की आराधना नहीं करेंगे। हम अपने परमेश्वर के प्रति सच्चे रहेंगे। हमने उसके कामों को देखा है, इसलिए हम भी प्रभु की सेवा करेंगे।"

यहोशू ने कहा, "मैं तुम पर विश्वास नहीं करता। तुम अपनी पीठ परमेश्वर की ओर फेर दोगे, इसलिए उसे तुमको नष्ट करना होगा। उसके इतने अच्छे होने के बाद भी तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?"

लोग चिल्लाए, "नहीं! हम परमेश्वर की आराधना और सेवा करेंगे।"

यहोशू ने कहा, "तुमने जो कहा है, उसके तुम गवाह हो। ये पत्थर, जो तुमने कहा उस बात के गवाह हैं। सभी बेकार मूर्तियों से छुटकारा पाओं और अपने परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा रखो।"

इसके तुरंत बाद, यहोशू 110 साल की उम्र में मर गया। लोगों ने उस पूरे समय यहोवा की उपासना की जब वह उन्हें देश में ले जा रहा था। उन्होंने जीवन भर प्रभु की सेवा की जिन्होंने यहोशु के साथ परमेश्वर की सेवा की थी ।

लेकिन फिर अगली पीढ़ी बड़ी हुई, जो प्रभु को नहीं जानती थी। उन्होंने यह नहीं देखा था कि प्रभु ने उनके लिए क्या किया है।

61 अय्यूब के तीन दोस्त

अय्यूब की पुस्तक

अय्यूब बहुत सच्चा पुरुष था जो परमेश्वर से डरता था और बुराई से दूर रहता था। उसके सात बेटे और तीन बेटियां थीं। वह कई नौकरों वाला एक अमीर आदमी था। उसके पशुधन में बड़ी संख्या में भेड़, ऊंट, बैल और गधे शामिल थे।

एक दिन, जब सभी स्वर्गदूत वहां थे, तब शैतान यहोवा के पास गया। प्रभु ने कहा, "तू कहाँ से आता है और कहाँ को जाता है?"

शैतान ने कहा "ओह, यहाँ और वहाँ पृथ्वी पर घूम रहा हूँ।

प्रभु ने कहा, "क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब को देखा है? उसके जैसा धरती पर और कोई नहीं है। वह सच्चा है और वह बुराई से दूर रहता है।"

शैतान ने कहा, "ठीक है, बेशक वह दूर रहता है। वह जान गया कि धर्मी होना एक अच्छा सौदा है। तू उसकी रक्षा करता है और उसकी हर चीज की रक्षा करता है। तू उसे आशीष देता है और उसे वह सब कुछ देता हैं जो वह चाहता है। लेकिन उसकी सारी संपत्ति छीनने की कोशिश कर। फिर देख क्या होता है। वह तुझको तेरे सामने लानत देगा।"

प्रभु ने कहा, "हम देखेंगे। मैं तुझको वह सब कुछ लेने की अनुमति देता हूं, जो उसका है, लेकिन उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं छूना।

इसके तुरंत बाद, एक नौकर अय्यूब के पास गया और कहा, "कुछ गुडें आए और तेरे सभी बैलों और गधों को ले गए। उन्होंने सभी नौकरों को मारने की कोशिश की,

और केवल मैं बच गया। मैं तुरंत तुझको बताने के लिए आया कि क्या हुआ था।"

जब वह बात कर रहा था, तब एक और नौकर ने भागते हुए कहा, "एक बहुत बड़ा तूफान आया। बिजली गिरने से तेरे सभी भेड़ और नौकर मारे गए।

केवल मैं जीवित रह गया था, इसलिए मैं तुझको यह बताने के लिए यहां दौड़ा।"

जब वह बात कर रहा था, तब एक और नौकर भागाऔर कहा "एक सेना आई और तेरे सभी ऊंटों को ले गई और नौकरों को मार डाला। मैं बच गया और तुझको बताने आया कि क्या हुआ था।"

जब वह बात कर रहा था, तब एक और नौकर भागा। "तेरे बेटे और बेटियाँ एक साथ भोजन कर रहे थे, तब अचानक एक बवंडर आया और वे सभी मर गए। केवल मैं ही जीवित रहा। इसलिए मैं तुझको बताने के लिए यहां आया हूं कि क्या हुआ था।"

अय्यूब दुख के साथ गिर गया। उसने अपने कपड़े फाड़े और सिर गंजा करवा लिया। उसने फिर अपना सिर झुका कर कहा, "मैं इस दुनिया में नंगा आया थाऔर मैं इस जीवन से नंगा चला जाऊंगा। प्रभु हीदेता है, और प्रभु ही लेता है। प्रभु के नाम की स्तुति हो!" इस सब के बावजूद, अय्यूब ने पाप नहीं किया और परमेश्वर को दोष नहीं दिया।

एक बार फिर, जब सभी स्वर्गदूत वहां थे, तो शैतान प्रभु के पास गया। प्रभु ने कहा, "तुम कहाँ थे?"

शैतान ने कहा "ओह, यहाँ और वहाँ पृथ्वी पर घूम रहा था। प्रभु ने कहा, क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब को देखा है? उसके जैसा धरती पर और कोई नहीं है। वह सच्चा है और वह बुराई से दूर रहता है, यहां तक जब मैंने तुझको बिना किसी कारण के उसे नष्ट करने की अनुमति दी थी, तब भी उसने मेरा इनकार नहीं किया ।"

"ओह, लेकिन तूने मुझे उसके शरीर को छूने की अनुमति नहीं दी। एक आदमी अपनी जान बचाने के लिए कुछ भी कर सकता है। उसके मांस और हड्डियों को नुकसान पहुंचा, और वह तुझे तेरे चेहरे के सामने लानत देगा।"

प्रभु ने कहा, "हम देखेंगे। मैं तुम्हें उसे नुकसान पहुँचाने की अनुमति देता हूँ, लेकिन तू उसकी जान नहीं ले सकता ।

इसके तुरंत बाद, अय्यूब का शरीर, सिर से पैर तक फोड़े से ढंक गया। वह राख में बैठ गया और टूटे हुए बर्तनों का एक टुकड़ा लिया और खुद को उससे रगड़ने लगा।

उसकी पत्नी ने कहा, "तू यह सब कैसे कर सकता है और अभी भी अपनी सच्चाई कैसे बनाए रख सकता है? परमेश्वर को शाप दे और मर जा!"

उसने कहा, "तू मूर्खता की बातें कर रही है! मैं कुछ भी परमेश्वर जो मुझे देता है उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हूं, चाहे अच्छा या बुरा।" और इसलिए, इस सब के साथ, अय्यूब ने पाप नहीं किया और परमेश्वर को दोष नहीं दिया।

अय्यूब के तीन दोस्तों ने जो कुछ हुआ, उसके बारे में सुना और उससे मिलने गए। जब उन्होंने उसे वहाँ बैठे देखा तो उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वे चिल्लाए और अपने बालों में धूल डाल लीं।

तीनों अय्यूब के बगल में बैठ गए और सात दिनों तक कुछ भी नहीं कहा।

अंत में अय्यूब ने पुकारा, "काश मैं कभी पैदा ही नहीं हुआ होता!"

उसके दोस्तों ने उसे समझाने में मदद करने की कोशिश की कि उसके साथ क्या हो रहा है। एक दोस्त ने समझाया कि धर्मी लोग इस तरह से पीड़ित नहीं होते हैं, केवल पापी होते हैं। अय्यूब उनके साथ सहमत था, लेकिन उसे इस बात का कुछ भी पता नहीं था कि उसने इसके लायक क्या किया है।

उसका दूसरा दोस्त थोड़ा और खुलकर बोलने वाला था। उसने कहा, "अय्यूब, तू एक पाखंडी है! तुझे अपने पाप को स्वीकार करने की आवश्यकता है, और फिर परमेश्वर दयालु होंगे।"

अय्यूब ने फिर अपनी बेगुनाही को थामे रहा। उसने कहा, "मुझे याद है कि धर्मी लोग पीड़ित होते है, जबकि जो लोग बुराई करते हैं वह समृद्ध थे।"

उनका तीसरा दोस्त सबसे ज्यादा निडर था। उसने कहा, "अय्यूब, तू झूठा है! तू एक पापी आदमी है और तू परमेश्वर की सज़ा का हकदार हैं।" अब अय्यूब अपनी बेगुनाही के लिए भावुक हो गया।

एक युवक एक अलग दृष्टिकोण के साथ आया। वह अय्यूब को प्रोत्साहित करना चाहता था। उसने कहा "परमेश्वर का मक़सद है कि यह दुख तेरे लिए एक सबक के रूप में हो। हाँ, प्रभु तेरे पाप को सुधारने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह तुझको धार्मिकता के लिए बहाल कर रहा है।"

अचानक, परमेश्वर ने अय्यूब से बात की। परमेश्वर ने कहा, "तू जो समझ सकता हैं, उससे ऊपर मेरे तरीके हैं। दुख के लिए मेरा उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक व्यक्तिगत मामला है। अय्यूब, सुन। मैं हमेशा जानता हूं कि तेरे साथ क्या हो रहा है, और मैं हमेशा तेरे साथ हूं। मैं बस यही चाहता हूं कि तू मुझ पर पूरा भरोसा करें।"

प्रभु ने फिर अय्यूब के दोस्तों की ओर रुख किया और कहा, "मैं तुम से नाराज़ हूँ। तुम्हारी सारी सलाह झूठी है। केवल अय्यूब ने सच बोला।" परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे एक बलिदान करें और अय्यूब से उनके लिए प्रार्थना करने को कहें।

परमेश्वर ने फिर से अय्यूब को सब कुछ उसका दोगुना वापस दे दिया, जो पहले उसके पास था। उसे कई भेड़ें और ऊंट मिले। उसने बैलों और गधों को दोगुना प्राप्त किया। परमेश्वर ने उसे सात और बेटे और तीन बेटियां भी दीं।

अय्यूब एक बूढ़ा आदमी था। पूर्ण जीवन जीने के बाद, 140 वर्ष की आयु में उसका निधन हो गया।

62 ओत्नीएल और एहूद

न्यायियों 2 - 3

यहोशू के मरने के बाद, लोग परमेश्वर की सेवा करते रहे। लेकिन आखिरकार, अगली पीढ़ी बड़ी हो गई जो परमेश्वर को नहीं जानतेथी , और उन्होंने बाल की आराधना करना शुरू कर दिया।

प्रभु अपने लोगों से नाराज़ था, इसलिए उसने एक विदेशी राजा को आने और आठ साल तक उन पर शासन करने की अनुमति दी।

लोगों ने आखिरकार मदद के लिए परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाया, और उसने उन पर दया की। उसने उन्हें ओत्नीएल को उनका छुड़ाने वाले के रुप में भेजा। प्रभु का आत्मा उस पर था, और वह विदेशी राजा से लड़ने और उसको मारने में सक्षम हुआ। परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाया और वे चालीस साल तक शांति से रहे।

ओत्नीएल की मृत्यु के बाद, इस्राएल के लोगों ने एक बार फिर से अपने सभी पापों से परमेश्वर को नाराज़ कर दिया।

इस बार परमेश्वर ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर प्रबल किया, जो बेहद मोटा था। उसने अन्य राष्ट्रों की मदद ली, और साथ में उन्होंने इस्राएल को हराया। मोआब ने अठारह वर्षों तक लोगों पर शासन किया।

एक बार फिर उन्होंने प्रभु से दया करने और उनकी मदद करने की प्रार्थना माँगी। इस बार परमेश्वर ने एहूद नामक एक छुड़ाने वाले को भेजा।

जब इस्राएल के लोगों का राजा एग्लोन को पैसे भेजने का समय आया, तब एहूद ने उसे उसके पास ले जाने का फैसला किया। उसने एक दोधारी तलवार बनाई जो केवल अठारह इंच लंबी थी। उसने उसे अपने दाहिने तरफ अपने कपड़ों के नीचे बांध दिया। वह कई लोगों को अपने साथ ले गया और राजा को पैसे भेंट किए।

राजा के सामने अपनी प्रस्तुति देने के बाद, जब वे जाने वाले थे। तब एहूद ने अपने आदमियों को उसके बिना जाने के लिए कहा, और वह राजा के पास लौट आया।

उसने कहा, "राजा एग्लोन, मेरे पास तेरे लिए एक गुप्त संदेश है।"

राजा खुश हुआ, इसलिए उसने अपने पहरेदारों को दूर भेज दिया और एहूद को सीढ़ियों से एक बरामदें में ले गया जहां ठंडा था। वहां, वह अपने सिंहासन पर बैठ गया।

एहूद ने कहा, "जो संदेश मैं तेरे लिए ला रहा हूं वह प्रभु का है।" राजा उठ खड़ा हुआ, और एहूद ने अपने बाएँ हाथ को अपने कपड़ों में डाला और अपनी दाहिनी ओर से तलवार निकाल ली। उसने उस तलवार को एग्लोन के पेट में घोप दिया। तलवार राजा के पेट में धंस गई, इसलिए एहूद उसे बाहर नहीं निकाल पा रहा था। जैसे ही राजा जमीन पर गिरा, उसका पेट खुल गया और अंदर का सब बहार आ गया।

एहूद दरवाज़े से बाहर गया और उसे अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया। जब नौकर आए, तो उन्होंने देखा कि दरवाज़ा बंद है, इसलिए उन्होंने मान लिया कि राजा ने इसे बंद कर दिया है, ताकि वे शौचालय का इस्तेमाल कर सकें।

वे तब तक इंतजार करते रहे जब तक उन्हें कुछ गलत होने का एहसास नहीं हुआ। उन्होंने एक चाबी ढूंढी और दरवाजा खोला और अपने मालिक को मृत पाया।

इतनी देर मे एहूद को बच निकलने का समय मिल गया। उसने यरदन नदी को पार किया और नरसिंगा फूंका। इस्राएली लड़ने के लिए तैयार हो गए।

उन्होंने कहा, “मेरे पीछे आओ! यहोवा ने मोआबियों को हमें दिया है।

और एहूद के साथ, उन्होंने मोआबियों पर हमला किया, जिसमें 10,000 से अधिक योद्धा मारे गए। उस लड़ाई के कारण, मोआबियों को इस्राएल की सेवा करनी पड़ी, और लोग अस्सी साल तक शांति से रहे।

63 दबोरा और बाराक

न्यायियों 4 - 5

एहूद के मरने के बाद, इस्राएल ने एक बार फिर परमेश्वर के खिलाफ पाप किया। इसलिए यहोवा ने उन्हें एक कनानी राजा को बेच दिया।

इस राजा ने उन पर बीस वर्षों तक शासन किया। वह कठोर और क्रूर था। उनकी सेना में 900 लोहे के रथ थे, और उनके सेनापति का नाम सीसरा था।

उस समय इस्राएल का न्याय करने वाली दबोरा नाम एक नबिया थी। जब लोगों को आपस में समस्या थी, तो वे "दबोरा के खजूर" नामक स्थान पर जाते थे । वह वहाँ बैठकर उनकी शिकायतें सुनती और फिर उनकी समस्याओं को सुलझाती थी ।

एक दिन उसने बाराक नाम के एक व्यक्ति को बुलवाया और उससे कहा, “प्रभु का तेरे लिए एक संदेश है। वह कहता है, ‘10,000 आदमी ले और ताबोर पहाड़ पर चढ़। मैं सीसरा को उसका रथ और उसकी सेना के साथ तेरे पास लाऊंगा। वह तुझसे युद्ध करने आएगा, लेकिन मैं उसे तुझे दे दूंगा। ''

बाराक ने दबोरा से कहा, '' मैं परमेश्वर के कहे अनुसार जाता हूं और करता हूं, लेकिन केवल तभी जब तू मेरे साथ जाएगी। यदि तू नहीं जाएगी, तो मैं नहीं जाऊंगा।"

उसने कहा, "मैं तेरे साथ जाऊंगी, लेकिन अगर मैं जाती हूं, तो तुझे सीसरा को मारने का श्रेय नहीं मिलेगा। प्रभु एक महिला को वह सम्मान देगा ।” बाराक सहमत हो गया, इसलिए दबोरा उसके साथ गई।

बाराक ने 10,000 लोगों को इकट्ठा किया और ताबोर पर्वत पर चढ़ गया। सीसरा ने इस बारे में सुना, इसलिए वह अपने 900 रथों और अपनी सेना को लेकर ताबोर पर्वत की ओर बढ़ा। दबोरा ने बाराक से कहा, “अब समय आ गया है! अपने लोगों को ले जा और सीसरा पर हमला कर। ” इसलिए बाराक ने अपने लोगों को पहाड़ पर ले जाकर कनानी सेना पर हमला किया। प्रभु उसके साथ था, और इससे सीसरा के लोग भ्रमित हो गए। वे मुड़े और दौड़े। जब सीसरा ने यह देखा, तो उसने अपना रथ छोड़ दिया और पैदल भागने की कोशिश की। बाराक ने सेना का पीछा किया जब तक कि हर आदमी मारा नहीं गया।

सीसरा तब तक चला जब तक कि वह याएल के तम्बू में नहीं आ गया।

उसके पति और कनानी राजा में मेल था। उसने सीसरा को आते देखा, तो वह बाहर गई और कहा, "यहाँ आ, और तू सुरक्षित रहेगा।"

वह अंदर गया और उसने उसे एक गलीचे के नीचे छिपा दिया। उसने कहा, "कृपया, मुझे पीने के लिए पानी दे।" उसने उसे दूध पिलाया, और वह बैठ कर उसे पीने लगा। उसने कहा, “तम्बू के द्वार पर खड़े हो जा। अगर कोई पूछता है कि क्या यहां कोई आदमी है, तो उन्हें नहीं बताना ।

फिर उसने उसे फिर से ढँक दिया, और क्योंकि वह थक गया था, वह एक गहरी नींद में सो गया।

याएल गई और डेरे की एक खूंटी ली और एक हथौड़ा लिया।

वह चुपचाप सीसरा के बगल में नीचे झुक गई और तम्बू के खूंटे को उसके कनपटी पर रख दिया। फिर ठोस प्रहार से, उसने उसे उसके सिर के बीच से जमीन में ठोक दिया।

जल्द ही बाराक सीसरा की तलाश में उसके डेरे में आया। वह बाहर गई और कहा, "आ और मैं तुम्हें वह आदमी दिखाऊंगी जिसे तू खोज रहा है।" बाराक तब उसके साथ गया और देखा कि सीसरा मरा पड़ा है, और वह खूंटी उसकी कनपटी में गड़ी है।

इस्राएल ने कनानी राजा से तब तक लड़ना जारी रखा जब तक वे विजयी नहीं हुए। तब वे चालीस साल तक शांति से रहे।

64 गिदोन का ऊन

न्यायियों 6

सात साल तक, मिद्यानी लोग टिड्डियों के झुंड की तरह इस्राएल में आए। वे सभी फसलों और खेत, जानवरों - सब कुछ लेते हुए भूमि के पार चले गए। उन्होंने इस्राएलियों के खाने के लिए कुछ नहीं छोड़ा। लोग हताश हो गए और उन्हें पहाड़ की गुफाओं में छिपने के लिए जगह तलाशनी पड़ी।

गिदोन नाम का एक व्यक्ति भी मिद्यानियों से छिप रहा था। वह खलियान के बजाए दाखरस के कुण्ड में गेहूं झाड़ रहा था। प्रभु का दूत आया और पास ही एक बांज के पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने कहा, "हे वीर योद्धा ,परमेश्वर तुम्हारे साथ हैं।"

गिदोन ने कहा, हे मेरे प्रभु! अगर परमेश्वर हमारे साथ है, तो वह इन सभी बुरे कामों को हमारे साथ क्यों होने दे रहा है? हमारे पिता के बारे में हमारे द्वारा बताए गए सभी अद्भुत चमत्कार कहाँ हैं? परमेश्वर अब हमारे लिए नहीं लड़ रहा है।"

दूत ने कहा, "मैं तुझे इस्राएल को मिद्यानियों से बचाने के लिए भेज रहा हूँ।

गिदोन हैरान रह गया। "प्रभु, मैं इस्राएल को कैसे बचा सकता हूं? मैं कोई नहीं हूँ।

प्रभु ने कहा, "हां, लेकिन मैं तेरे साथ रहूंगा, और तेरी जीत होगी।"

गिदोन ने कहा, "प्रभु, मुझे एक संकेत की आवश्यकता है कि तू वास्तव में मुझसे बात कर रहा है। जब मैं बलिदान करने की तैयारी कर रहा हूं तो कृपया यहां रह।"

प्रभु ने कहा, "जब तक तुम लौटोगे तब तक मैं यहाँ रहूँगा।"

गिदोन भाग गया और उसके लिए एक बलिदान तैयार किया। जब वह तैयार हो गया, तो उसने बलिदान को एक चट्टान पर रख दिया। प्रभु का दूत वहाँ पहुँचा और अपनी लाठी की नोक से बलि को छू लिया। आग चट्टान से उठी और उसे जला दिया और फिर परमेश्वर गायब हो गए।

गिदोन चिल्लाया, "हे परमेश्वर! मैं मरने वाला हूँ! मैंने प्रभु के दूत को आमने सामने देखा है!"

प्रभु ने कहा, "डर मत। तू मरने वाला नहीं है। मैं जो कहता हूं वो कर। तेरे पिता के पास बाल की वेदी है। इसे हटा दे और परमेश्वर की एक वेदी बना। फिर यहोवा को एक होमबलि चढ़ाना ।"

गिदोन ने उसकी बात मानी, लेकिन उसने रात को ऐसा कियाक्यूंकी वह अपने परिवार और अपने शहर में रहने वाले पुरुषों से डरता था।

सुबह लोगों ने बाल की वेदी को हटा हुआ देखा । उन्होंने देखा कि उसके स्थान पर यहोवा की वेदी बनी हुई थी, और उसके ऊपर होमबलि की राख भी देखी । जल्द ही उन्हें पता चला कि गिदोन ने ऐसा किया था।

शहर के लोग उसके पिता के घर गए और कहा, "हमें अपना बेटा दे! हम उसे मार डालेंगे क्योंकि उसने बाल की वेदी को नीचे गिरा दिया था।

गिदोन के पिता ने उनसे कहा, "मुझे वह आदमी दिखाओ जो बाल का बचाव कर रहा है। वह सुबह तक मर जाएगा! अगर बाल वास्तव में देवता हैं, तो उसे खुद का बचाव करने दो।"

एक बार फिर मिद्यानी इस्राएल में आए और एक घाटी में डेरा डाल दिया। प्रभु की आत्मा ने गिदोन को भर दिया,और उसने लोगों को लड़ने के लिए तैयार होने के लिए संदेश भेजे।

तब गिदोन ने प्रार्थना की, "प्रभु, मुझे एक संकेत दें।"

इसके बाद उसने भेड़ी की ऊन को खलिहान में रखा और प्रभु से कहा, "मुझे पता है कि तू हमें बचा लेगा, अगर सुबह की ओस केवल ऊन पर हो, और सारी जमीन सूखी हो।"

वह सुबह जल्दी उठा और पाया कि ऊन गीला था, लेकिन जमीन सूखी थी।

गिदोन ने कहा, "प्रभु , मुझसे नाराज़ मत हो। मुझे एक और परीक्षण की अनुमति दें। इस बार ऊन को सूखा रहने दें, और ओस पूरे जमीन पर हो।" सुबह में, ऊन सूख था, और जमीन पर ओस भर गया था।

65 तीन सौ आदमी

न्यायियों 7 - 8

गिदोन ने 32,000 लोगों की एक टुकड़ी इकट्ठा की। वह उन्हें ले गया और मिद्यानियों के दक्षिण में डेरा डाला। प्रभु ने गिदोन से कहा, "तुम्हारे साथ बहुत सारे पुरुष हैं। अगर मैं मिद्यानियों को अभी तुमको दे दूं, तो इस्राएल कहेगा, "हमने अपनी शक्ति से यह जीत हासिल की।" उनसे कह, "यदि तुम डरते हों, तो घर जाओ।" "

गिदोन ने यह बात लोगों से कही, और 22,000 लोगों चले गए, और 10,000 लोग बचें। प्रभु ने गिदोन से कहा, "अभी भी बहुत सारे पुरुष हैं। उन्हें पानी के पास ले जा। ध्यान से देख। उन लोगों पर ध्यान दे जो अपने हाथों का उपयोग अपने मुंह में पानी लाने के लिए करते हैं। उन्हें उन लोगों से अलग करें जो घुटने टेक कर और कुत्ते की तरह पीते हैं।"

300 लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने हाथों का इस्तेमाल किए बिना ही पानी पी लिया। प्रभु ने कहा, "मैं इन 300 लोगों का उपयोग करके तुमको मिद्यानियों पर विजय दिलाऊंगा। बाकियों को घर भेज दें।" इसलिए गिदोन ने उन्हें घर भेज दिया।

जो बचे थे, उन्होंने ऊपर डेरा बनाया जहां मिद्यानी लोग घाटी में थे। मिद्यान के लोग टिड्डियों के झुंड की तरह थे, और उनके ऊंट समुद्र की रेत की तरह अनगिनत थे।

उस रात प्रभु ने गिदोन से कहा, "मिद्यानी डेरे में घुस। यदि तू डरता है, तो अपने नौकर को अपने साथ ले जा। सिपाही जो कहते हैं, उसे सुन।" इसलिए गिदोन अपने नौकर को लेकर मिद्यानी डेरे में गया।

उसने एक आदमी को अपने दोस्त से सपने के बारे में बताते सुना।

उसने कहा, "मैंने अपनी छावनी मे एक रोटी को लुढ़कते हुए आते देखा और डेरे को ऐसा टक्कर मारा कि वह गिर गया, और उसको ऐसा उलट दिया, कि डेरा गिरा पड़ा रहा।"

उसके दोस्त ने जवाब दिया: "मुझे पता है कि इसका क्या मतलब है। वह रोटी गिदोन नाम एक इस्राएली की तलवार है। उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिद्यान को सारी छावनी समेत कर दिया है"

गिदोन इस्राएल की छावनी में लौटा और कहा, "उठो, क्योंकि प्रभु ने मिद्यानियों को तुम्हें दिया है।" उसने 300 लोगों को 100 की तीन झुण्डों में विभाजित किया। उसने प्रत्येक पुरूष के हाथ में एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़ों के भीतर एक मशाल दिया।

उन्होंने कहा, "मुझे देखो और और जो मैं कर रहा हूं वह करो । जब हम सभी उनके शिविर के किनारे पर होंगे, तो हमारा समूह तुरही फूँकेगा। तुमको भी ऐसा ही करना है। फिर सब चिल्लाऐंगे, 'यहोवा की और गिदोन की तलवार!' "

फिर उसने उन्हें शिविर के तीन ओर रखा। जब वे सभी अपने-अपने स्थान पर थे, गिदोन के समूह ने अपनी तुरहियों को फूँका और घड़ों को तोड़ डाला। अन्य दो समूहों ने भी ऐसा ही किया। उन्होंने अपने हाथों में अपनी मशालें, अपने दाहिने हाथों में अपनी तुरहियां ली , और चिल्लाते हुए कहा, "यहोवा और गिदोन की तलवार!"

मिद्यानी एकदम चौंक गए! वे घबरा गए और भागने लगे, चिल्लाते हुए वे दौड़े। गिदोन के लोगों ने 300 तुरही फूंकीं। इसके साथ, मिद्यानी सैनिकों ने अपनी तलवारें निकाली और एक दूसरे को मारना शुरू कर दिया।

गिदोन ने फिर इस्राएल के बाकी लोगों को भेजा। साथ में वे मिद्यानियों के पीछे भागे जब वह इस्राएल छोड़ने की कोशिश कर रहे थे। उस दिन मिद्यान पर परमेश्वर ने बहुत बड़ी जीत दिलाई, और वे अब इस्राएल के लिए खतरा नहीं थे।

लड़ाई के बाद, लोग गिदोन को अपना राजा बनाना चाहते थे, लेकिन उसने मना कर दिया। वह बस अपने घर पर रहने के लिए वापस चला गया। तब इस्राएल चालीस साल तक शांति से रहा।

66 वृक्षों का राजा

न्यायियों 9

गिदोन और उसकी कई पत्नियों से सत्तर बेटे पैदा हुए। शकेम शहर में एक रखैल द्वारा उनका एक बेटा भी था। उसका नाम अबीमेलेक था।

गिदोन की मृत्यु के बाद, अबीमेलेक शकेम में अपने चाचाओं के पास गया। उसने कहा, "शहर के अधिकारियों से बात करो और कहो, क्या आप चाहते हैं कि गिदोन के सत्तर पुत्र आप पर शासन करें? उनके बजाय, मुझे चुनें। मैं गिदोन का एक बेटा हूं, लेकिन मैं आपके खून का रिश्तेदार भी हूं। ''

शकेम के लोग उसे इस्राएल का राजा बनाने के लिए सहमत हुए। उन्होंने उसे बाल मंदिर से सत्तर चांदी के सिक्के दिए।

इसके साथ, उसने गुडों के एक गिरोह को अपनी निजी सेना के रूप में काम पर रखा। पहला काम जो उन्होंने किया था वह था गिदोन के सत्तर बेटों को मारना। लेकिन एक बेटा छूट गया - सबसे छोटा बेटा जिसका नाम योताम था ।

शकेम के लोगों ने अबीमेलेक को सम्मानित करने के लिए एक उत्सव मनाया । अचानक उन्होंने दूर से चिल्लाने की आवाज़ सुनी। यह योताम था। उसने कहा "मेरी बात सुनो! पेड़ों ने राजा बनने का फैसला किया। वे जैतून के पेड़ के पास गए और कहा, 'हमारे राजा बनो। जैतून के पेड़ ने कहा, मेरे पास ऐसी मूर्खता के लिए समय नहीं है। मैं कीमती तेल का देता हूं जो परमेश्वर और मनुष्य का सम्मान करता है।'

"तो वे अंजीर के पेड़ के पास गए और कहा, हमारे राजा बनो। अंजीर के पेड़ ने कहा, 'ऐसी मूर्खता के लिए मेरे पास समय नहीं है। मैं मीठे फल का देता करता हूं जिसका सभी आनंद लेते हैं।"

"वे अंगूर के पास गए और कहा, हमारे राजा बनो। अंगूर ने कहा, 'मेरे पास ऐसी मूर्खता के लिए समय नहीं है। मैं दाखरास का देता हूं जो लोगों के लिए खुशी लाता है।'

"आखिरकार पेड़ कंटीली झाड़ी में चले गए। उन्होंने कहा, 'हमारे राजा बनो। कंटीली झाड़ी ने कहा, हां, मैं तुम्हारा राजा बनूंगा। लेकिन अब से, तुम मेरी सुरक्षा की छाया में हो । यदि तुम में से कोई भी विद्रोही है, तो आग मेरे कांटों से आएगी और तुमको जलाकर राख कर देगी।'

"मेरे पिता ने तुम्हारे लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। और बदले में तुमने क्या दिया? उसके बेटों को मार डाला! अब तुमने एक दासी के बेटे को अपना राजा बना लिया है।

"अगर यह सही है, तो मैं तुमको शुभकामना देता हूं। लेकिन अगर यह गलत है, तो मैं कहता हूं कि आग अबीमेलेक से आएगी और तुमको जलाएगी।" वह फिर अपना जीवन बचाने के लिए भाग गया क्योंकि वह जानता था कि उसका सौतेला भाई उसको मारने की कोशिश करेगा ।

अबीमेलेक ने तीन साल तक इस्राएल पर शासन किया।

तब परमेश्वर ने उसके और शकेम के लोगों के बीच एक बुरी आत्मा रख दी। यह गिदोन के बेटों के लिए न्याय था।

लोगों ने अपने द्वारा स्थापित राजा के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया। एक समय पर, उन्होंने एक बड़ी दावत की और नशे में हो गए। उन्होंने अबीमेलेक को कोसना शुरू कर दिया और डींग मारने लगे कि वे उसे कैसे हटाने जा रहे हैं।

शहर का मुखिया इस बात से नाराज़ हो गया और अबीमेलेक को बुलाया। मुखिया शकेम के पुरुषों को घात करने के लिए उसकी सेना की मदद करने के लिए सहमत हुआ।

उस रात, अबीमेलेक ने अपने आदमियों को शहर के बाहर छिपने के लिए रखा ताकि वह सुबह हमला कर सके। सूर्योदय के समय शकेम का एक आदमी मुखिए के साथ द्वार पर खड़ा था। अचानक उसने कुछ हलचल देखी। उसने कहा, "देखो! वो क्या है? क्या यह पुरुष हम पर हमला करने के लिए आ रहे हैं?"

मुखिया ने कहा, "नहीं। यह केवल पहाड़ की छाया है।"

कुछ क्षण बाद, उस आदमी ने शहर में पुरुषों की कई इकाइयाँ देखीं। वह शहर में वापस आया और चिल्लाया, "हम पर हमला हुआ है!"

लड़ाई कई दिनों तक चली। अंत में शहर पर कब्जा कर लिया गया और लोग एक मीनार में भाग गए।

अबीमेलेक और उसके लोगों ने मीनार के चारों ओर पेड़ की शाखाएँ लगा दीं और उसे जला दिया। उस दिन वहां 1,000 से अधिक पुरुषों और महिलाओं की मृत्यु हुई। शकेम के लोगों पर योताम का शाप सच हो गया।

अबीमेलेक ने शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। उसने वहां पर नमक फैला दिया ताकि वहां कुछ भी न उग सके।

जब ऐसा किया गया, तो वह और उसके लोग एक और विद्रोही शहर को नष्ट करने चले गए। फिर से लोग एक मीनार में भाग गए। अबीमेलेक और उसके लोग गए और लकड़ी ली ताकि वे उसे आग लगा सकें। जब वे आग लगा रहे थे, एक महिला ने नीचे देखा और अबीमेलेक को सीधे उसके नीचे देखा। उसने उसके सिर पर एक चक्की का पत्थर गिरा दिया।

अबीमेलेक ने अपने एक सैनिक को बुलाया कहा "जल्दी कर, मुझे अपनी तलवार से मार दे! मैं उस आदमी के रूप में नहीं जाना चाहता जो एक महिला द्वारा मारा गया था!

67 यिप्तह की प्रतिज्ञाएँ

न्यायियों 10: 6 - 11:40

यिप्तह की माँ एक वैश्या थी, लेकिन उसका पिता इस्राएल में एक प्रमुख व्यक्ति था। यिप्तह को उसके पिता के घर में पाला गया था, लेकिन जब उसके सौतेले भाई बड़े हो गए थे, उन्होंने कहा, "बाहर निकल जा! तू हमारी मां का बेटा नहीं है, और तू हमारे पिता से कुछ भी हासिल नहीं करेगा।"

इसलिए यिप्तह ने वह जगह छोड़ दी। वह एक महान योद्धा बना और गुडों के एक गिरोह को संगठित किया।

इस दौरान, इस्राएल के लोगों ने एक बार फिर से प्रभु के खिलाफ विद्रोह किया और अन्य देवताओं की उपासना शुरू कर दी। परमेश्वर ने अम्मोनियों को उन पर जीतने दिया। अम्मोनी लोग बहुत क्रूर थे, और इस्राएल अठारह वर्षों तक उसकी क्रूरता के अधीन रहा।

लोगों ने प्रभु को पुकारा और कहा, "हमारा उद्धार कर!"

प्रभु ने कहा, "नहीं! मैंने ऐसा नहीं करूंगा। मैंने तुम्हें बार-बार बचाया है। मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा। जाओ और उन मूर्तियों को बुलाओ जिनकी तुम पूजा करते हो।"

इसलिए इस्राएलियों ने अपने झूठे देवताओं को छोड़ दिया और प्रभु की उपासना करने लगे। उन्होंने कहा, "तू हमारे साथ वही कर जो तू चाहता है। हम जानते हैं कि हमने पाप किया है। लेकिन कृपया, हमें इस झंझट से बाहर निकालो!" इसलिए, परमेश्वर ने एक बार फिर उन पर दया की।

अम्मोनियों ने इस्राएल के खिलाफ लड़ने के लिए भूमि में कदम रखा। इस्राएली उनसे मिलने के लिए बाहर गए, लेकिन उनके पास कोई अगुआ नहीं था। उन्होंने यिप्तह को बुलवाया और उससे कहा, "आ और अम्मोनियों के खिलाफ लड़ाई में हमारी सेना का नेतृत्व कर।"

उसने एक संदेश वापस भेजते हुए कहा, ''तुम वही लोग हैं जिन्होंने मुझे बाहर निकाल दिया! अब तुम मेरे पास मदद के लिए आ रहे हों?"

उन्होंने कहा, "यह सच है। हमने ऐसा किया, लेकिन अगर तू आएगा और हमें जीत दिलाएगा , तो तू हमारा नेता होगा । सुन, प्रभु हमारा साक्षी हैं। जैसा हमने कहा था हम वैसा ही करेंगे।

इसलिए परमेश्वर की आत्मा यिप्तह पर आया, और उसने लोगों को युद्ध में नेतृत्व किया। उसने यहोवा के सामने एक प्रतिज्ञा की और कहा, हे प्रभु, अगर तू मुझे अम्मोनियों पर विजय दिलाएगा, तो जब मैं घर जाऊंगा तो मैं तुझे वह पहली चीज दूंगा जो मेरे घर से निकलेगी। मैं इसे एक होमबलि के रूप में तुझको अर्पित करूंगा।"

यहोवा ने यिप्तह को जीत दिलाई। उसने अम्मोनी सेना को पूरी तरह से खदेड़ दिया और उनके बीस शहरों को भी तबाह कर दिया।

यिप्तह की एक ही संतान थी, एक पुत्री। जब वह घर आया, तो वह उसके पास नाचती हुई आई। उसे उसकी जीत पर बहुत गर्व था। जब यिप्तह ने उसे देखा, तो उसने अपने कपड़े फाड़े और नीचे गिर गया। वह रोया, "ओह मेरी बेटी! मैंने क्या किया है! मैंने परमेश्वर के सामने एक प्रतिज्ञा की है, और मैं उसे आधा नहीं छोड़ सकता हूँ।

उसने कहा, "पिता, आपको प्रभु के सामने अपनी बात को पूरा करना चाहिए। उसने आपको बड़ी जीत देकर अपनी बात को पूरा किया है। अब आपको अपनी बात रखनी होगी। मैं सिर्फ एक बात मंगती हूं। मैं कभी शादी नहीं करूंगी, इसलिए मुझे दो महीने के लिए अपने सहेलियों के साथ पहाड़ियों में जाने की अनुमति दें। साथ में, हम इस बात का शोक मनाएंगे हैं कि मैं कभी शादी नहीं करूंगी।

उसका पिता सहमत था, इसलिए वह और उसकी सहेलियां पहाड़ियों पर गए। दो महीने के लिए उन्होंने इस बात का शोक व्यक्त किया कि वह कभी भी एक आदमी के साथ नहीं होगी और न बच्चों की खुशी पाएगी।

उसके बाद वह घर वापस चली गई, और यिप्तह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। उसके बाद, यह इस्राएल में एक प्रथा बन गई। हर साल, युवा महिलाएं बाहर जाती थीं और चार दिन यिप्तह की बेटी को याद करते हुए बिताती थी ।

68 शिमशोन का जन्म

न्यायियों 13

दान के कुल में का एक आदमी था, जिसकी पत्नी के बच्चे नहीं थे। यह उस समय के दौरान था जब पलिश्तियों ने इस्राएल पर अधिकार कर लिया था।

प्रभु के दूत ने महिला को दर्शन दिए और कहा, "जल्द ही तू गर्भवती होगी । तेरे गर्भ में पलने वाले उस बच्चे के जन्म के समय से ही उसे नाज़ीर की प्रतिज्ञा लेनी है। तो सावधान रह। शराब मत पीना या कुछ भी ऐसा मत खाना जो मूसा के कानून के खिलाफ है। और अपने बेटे के बाल कभी मत कटवाना। वह पलिश्तियों से इस्राएल को बचाएगा।"

महिला को यह महसूस नहीं हुआ कि वह प्रभु के दूत से बात कर रही थी। वह अपने पति के पास गई और कहा, "परमेश्वर का एक दास आया और उसने मुझे बताया

हमारा बच्चा होने वाला है। उसने मुझसे कहा कि मैं शराब नहीं पीऊं और न ही कुछ ऐसा खाऊं जो मूसा के कानून के खिलाफ हो। मैं उसके बाल नहीं कटवाउँ, क्योंकि हमारा बेटा जन्म से नाज़ीर की प्रतिज्ञा रखने जा रहा है।"

उसके पति ने तुरंत प्रार्थना की और परमेश्वर से पूछा कि क्या वह एक बार फिर परमेश्वर के दास को उनके पास भेजेगा। की वह जाने वास्तव में बच्चे के जन्म के समयक्या करना है, वे इस पर अधिक निर्देश चाहते थे।

बाद में, महिला खेत में बैठी थी, अचानक प्रभु का दूत उसे फिर से दिखाई दिया। वह जल्दी से भागी और अपने पति को बुलाया।

उसने कहा, "परमेश्वर का वही दास मैदान में है।"

पति उससे मिलने के लिए भागा। उन्होंने कहा, "क्या तुम मेरी पत्नी से बात करने वाले व्यक्ति हो?"

"हां मैं वही हूं।"

स्वर्गदूत ने उसे वही निर्देश दिए जो उसने महिला को दिए थे। उस आदमी ने कहा, " हम आपके लिए भोजन तैयार करते हैं तो कृपया यहाँ रह।"

दूत ने कहा, "मैं रुकूंगा, लेकिन मैं तुम्हारे साथ भोजन नहीं करूंगा। इसके बजाय, परमेश्वर को एक होमबलि भेंट करो।"

वह व्यक्ति और उसकी पत्नी अभी भी नहीं जानते थे कि वे प्रभु के दूत से बात कर रहे थे। उस आदमी ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?" जब तू जो कहता सच होगा तो हम तुझे सम्मानित करना चाहते हैं।"

दूत ने कहा, "मैं तुम्हें अपना नाम नहीं बताऊंगा। यह तुम्हारे लिए बहुत अद्भुत है।"

इसलिए उस आदमी ने एक होमबलि तैयार की और उसे एक चट्टान पर चढ़ा दिया। आग की लपटें आकाश की ओर उठीं। अचानक, आदमी और उसकी पत्नी के देखते ही देखते, यहोवा का दूत आग की लपटों में ऊपर चला गया।

दंपति तुरंत जमीन पर गिरा।

आदमी ने कहा, "हम मरने जा रहे हैं! हमने परमेश्वर को देखा है!"

महिला ने कहा, "मुझे नहीं लगता कि हम मरने जा रहे हैं। उसने हमारी होमबलि को स्वीकार कर लिया। इसके अलावा उसने कहा कि हमारी एक संतान होने वाली है।

महिला ने दिए गए निर्देशों का पालन किया, और नियत समय पर, उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम शिमशोन रखा।

69 बलवान और मीठा

न्यायियों 14

जब शिमशोन एक जवान आदमी था, तो उसने एक पलिस्तीनी महिला को देखा। वह अपने माता-पिता के पास गया और कहा, "मेरे और उस महिला के बीच विवाह कराओ।"

वे चौंक गए। “पलिश्तियाँ मूर्तिपूजक होते हैं। तुझको इस्राएल के लोगों से एक महिला खोजने की ज़रूरत है। ”

"नहीं। मैं केवल उसे चाहता हूं। जाओ और व्यवस्था करो।” उसके माता-पिता को यह पता नहीं था कि पलिश्तियों के खिलाफ अपराध करने के लिए प्रभु ऐसा करना चाहते थे।

शिमशोन और उसके पिता अंतिम व्यवस्था करने गए। रास्ते में, शिमशोन ने खुद ही रास्ता छोड़ दिया। अचानक एक शेर ने उस पर हमला कर दिया। परमेश्वर की आत्मा ने शिमशोन को भरा और उसने शेर को पकड़ लिया और उसे फाड़ दिया, जैसे वह एक छोटा जानवर था। बाद में, वह अपने माता-पिता के पास वापस चला गया लेकिन उन्हें शेर के बारे में नहीं बताया।

उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी और शादी की योजनाओं को अंतिम रूप दिया।

जब शादी का दिन आया, तो शिमशोन और उसके माता-पिता उसी रास्ते से वापस चले। जब वे वहां पहुंचे जहां उसने शेर को मार डाला था, तो शिमशोन एक बार फिर अपने माता-पिता के बिना रास्ते से एक तरफ हो गया।

उसने मृत शेर को पाया और यह देखकर चकित रह गया कि मधु मक्खियों ने उसमें एक छत्ता बनाया था। उसने अपने हाथ को बढ़ाया और कुछ शहद लेकर खाया। फिर वह अपने माता-पिता के पास थोड़ा सा शहद लेकर गया, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया कि वह इसे कहाँ से लाया था।

प लिस्तीन के तीस युवा शादी की दावत में आए, जो सात दिनों तक चली। शिमशोन ने कहा, "मेरे पास एक पहेली है। अगर तुम इन सात दिनों के दौरान इसका पता लगा सकते हों, तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े दूंगा। लेकिन यदि तुम उसे न बता सको, तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे।”

उन्होंने कहा, “हम सहमत हैं। हमें पहेली बता।

उन्होंने कहा, “खाने वाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली।

तीन दिनों तक युवकों ने पहेली पर काम किया। चौथे दिन, वे शिमशोन की पत्नी के पास गए और कहा, “तू हमें लूटने के लिए यहां लाई हैं। हम इसके लिए यहां नहीं आए। तू उसकी पत्नी है उसकी पहेली का जवाब ला, या हम तेरे पिता की हर चीज को जला देंगे।”

इसलिए वह शिमशोन के पास गई और उससे इसका अर्थ पूछा। शिमशोन ने कहा, "मैं तुझको नहीं बताऊंगा। मैंने अपने माता-पिता को भी नहीं बताया।"

उसने रोना शुरू कर दिया। "तू मुझसे प्यार नहीं करता है।" वह तब तक रोती रही और पूछता रही जब तक यह उसका सहनशीलता से परे नहीं हो गया। दावत के आखिरी दिन, उसने उसे पहेली का अर्थ बताया। उसने तुरंत दौड़कर पुरुषों को बताया।

उस रात, समय समाप्त होने से ठीक पहले, पुरुषों ने शिमशोन से कहा, “शहद से ज्यादा मीठा क्या है? शेर से ज्यादा बलवान क्या है? ”

वह तुरंत जान गया था कि उन्होंने क्या किया है। उन्होंने कहा, "यदि तुम मेरी गाय को हल में न जोतते, तो मेरी पहेली को कभी न बूझ पाते।"

वह पास के एक पलिश्ती शहर में गया और परमेश्वर ने उसे तीस आदमियों को मारने की शक्ति दी। वह उनके कपड़े ले गया और उन्हें शादी के मेहमानों को दे दिया। वह इतना क्रोधित था, कि वह अपनी पत्नी के बिना, अपने पिता के घर वापस चला गया।

70 लोमड़ियों और एक जबड़े की हड्डी

न्यायियों 15

शिमशोन के ससुर ने अपनी बेटी को एक आदमी को दे दिया, जो शादी में शामिल हुआ था। उसने सोचा कि शिमशोन उसे अब नहीं चाहता, क्योंकि वह उसके बिना घर गया था।

बाद में, शिमशोन अपनी पत्नी को उपहार देने के लिए वापस गया। उसके ससुर ने कहा, "तुम क्या चाहते हो?"

शिमशोन ने कहा "मैं अपनी पत्नी से उसके कमरे में मिलने आया हूँ।"

उस आदमी ने कहा, "तुम ऐसा नहीं कर सकते। मुझे लगा कि तू मेरी बेटी से नफ़रत करता है, इसलिए मैंने उसे दूसरे आदमी को दे दिया। लेकिन चिन्ता न कर। मेरी एक छोटी बेटी है। तू उसके पास जा सकता है। हर कोई जानता है कि वह अपनी बहन से ज्यादा खूबसूरत है।"

शिमशोन क्रोधित हो गया और कहा, "मैं उनमें से कुछ पलिस्तीन को चोट पहुंचाने जा रहा हूं - और मैं इसका आनंद लेने जा रहा हूं।"

उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ा और उन्हें जोड़े में किया, और प्रत्येक जोड़ी की पूंछ में एक मशाल बांध दी। तब उसने मशालें जलाईं, और उसने अलग-अलग पलिश्तियों के खेतों में लोमड़ियों को डाल दिया।

लोमड़ियों ने भागते हुए, जो कुछ भी आया उसे जला दिया। इससे न केवल खड़े अनाज को नष्ट किया गया, बल्कि काटे अनाज के ढेर भी नष्ट हो गए। उन्होंने अंगूर के खेतों और जैतून के पेड़ों को भी नष्ट कर दिया। पलिश्तियों को पता चला कि यह शिमशोन था जिसने ऐसा किया था। उन्होंने उसके ससुर को दोषी ठहराया क्योंकि उसने उसकी पत्नी को किसी और को देकर शिमशोन को क्रोधित कर दिया था।

वे उसे और उसकी बेटी को ले गए और उन्हें जलाकर मार डाला। इससे शिमशोन और भी क्रोधित हो गया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति, जिसका इसमें हाथ था, उसे ढूंढ़ा, और उसने उन्हें फाड़ दिया, अंग-अंग अलग कर दिया। बहुत लोग मारे गये। ऐसा करने के बाद, वह पलिस्तीन से चला गया, और वापस जाकर इस्राएल की एक गुफा में छिप गया।

पलिश्तियों ने एक सेना लेकर इस्राएल पर आक्रमण किया।

इस्राएलियों ने कहा, "तुम हम पर हमला क्यों कर रहे हो?"

उन्होंने ने कहा,तुम शिमशोन की रक्षा कर रहो हों। उसने जो किया, उसके लिए उसे दंडित किया जाना चाहिए।

3,000 इस्राएली उस गुफा में गए जहाँ शिमशोन छिपा था। उन्होंने कहा, "हम तुझको पलिश्तियों के पास ले जाने आए हैं। उन्होंने हमारे ऊपर शांति से शासन किया है, लेकिन अब तूने उन्हें उकसाया है।"

उन्होंने कहा, "अगर तुम वादा करते हो कि मुझे नहीं मारोगे तो मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा।"

उन्होंने कहा, "हम तुझको नहीं मारेंगे, लेकिन हम तुझको बांध देंगे।" उन्होंने उसे दो नई रस्सियों से बांध दिया और उसे ले गए।एक बार जब पलिश्तियों ने उसे पकड़ लिया, तो वे खुशी से चिल्लाए।

तुरंत प्रभु के आत्मा ने उसे भर दिया और उसने अपने हाथों से रस्सियों को तोड़ दिया। उसने एक गधे के जबड़े की हड्डी ली और पलिश्तिन की भीड़ में गया, और 1,000 लोग मारे गए। अपनी जीत के बाद, उसने जबड़े की हड्डी को फेंक दिया।

उसने देखा और चिल्लाया, "प्रभु, तूने मुझे जीत दी। मैंने 1,000 लोगों को मार डाला है अब, क्या तू मुझे प्यास से मरने देगा ?"

अचानक एक चट्टान खुली और उसमें से पानी निकलना बंद न हुआ, जब तक वह तरोताजा नहीं हुआ तब तक शिमशोन ने पानी पिया।

20 वर्षों तक वह इस्राएल का न्याय करने वाला था, फिर भी पलिश्तियों ने भूमि पर शासन किया।

एक बार, वह एक वैश्या के साथ सोने के लिए एक पलिश्ती शहर गया। जब उन्होंने सुना कि वह उनके शहर में हैं, तो उन्होंने द्वार बंद कर दिए ताकि वे सूर्योदय के समय उसे पकड़ सकें।

आधी रात के आसपास, शिमशोन घर जाने के लिए उठा। जब वह द्वार के पास गया, तो उसने उसे जमीन से उखाड़ लिया और ले गया। वह इसे एक इस्राएली पहाड़ी की चोटी पर ले गया और वहां छोड़ दिया,।

71 शिमशोन और दलीला

न्यायियों 16

कुछ समय बाद, शिमशोन को दलीला नामक एक महिला से प्यार हो गया। जब पलिश्तियों को इस बारे में पता चला, तो उनके अगुओं के एक समूह ने उससे मुलाकात की। उन्होंने कहा, "यदि हम में से प्रत्येक चांदी के 1,100 टुकड़ों को देंगा, अगर

तू उसकी ताकत का राज़ हमें बता सकें। एक बार जब हमें पता चल जाएगा तो, हम उसे मार डालेंगे।"

इसलिए उसने दलीला से पूछा, "कोई तुम्हें कैसे बाँध सकता है जो तुम शक्तिहीन हो जाओ?"

"ओह" उसने कहा, "मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह होऊंगा, अगर कोई मुझे सात नई नई तारों से बान्धे।"

पलिश्तियों ने उसे ऐसी सात नई तारें दीं और कुछ पहरेदारों को उसके कमरे में छिपा दिया।

उसने शिमशोन को तारों से बांध दिया, और फिर चिल्लाया, "शिमशोन, पलिश्ती आ गए हैं!"

उसने उछल कर तारों को ऐसे तोड़ दिया जैसे वे आग से छूए सूत के टुकड़े हों।

दलीला ने कहा, "तुमने मुझसे झूठ बोला! तूने मुझसे ऐसा मजाक क्यों किया? कृपया मुझे बता कि तुझको कैसे बांधा जा सकता है।"

उसने कहा, "कुंजी नई रस्सियाँ हैं, लेकिन केवल वही जो किसी और चीज़ के लिए उपयोग नहीं की गई हो । यदि मैं नई रस्सियों से बंधा जाऊं, तो मैं अन्य लोगों की तरह बन जाऊंगा।" इसलिए उसने कुछ नई रस्सियाँ लीं और उसे बाँध दिया। पहरेदार अभी भी अपने छिपने की जगह पर थे। वह चिल्लाई, "शिमशोन, जल्दी! पलिश्ती आ गए हैं!" वह कूद पड़ा और रस्सियों को तोड़ दिया जैसे वे धागे के टुकड़े थे।

उसने कहा, "मैं तेरे लिए मजाक के अलावा कुछ नहीं हूं। तू मुझसे झूठ क्यों बोलता है? अब मुझे बता कि तुझे कैसे बंधे सकते है।"

उसने कहा, "यह मेरे बाल हैं।" यदि तू मेरे सिर की सातों लटें ताने में बुने तो बन्ध सकूंगा, और मैं किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह कमजोर हो जाऊंगा।"

इसलिए वह इंतजार कर रही थी वह कब सोए और फिर उसने सावधानी से उसके बालों की लटें ताने में बुन दी । फिर वह चिल्लाई, "शिमशोन! पलिश्ती आ गए हैं।" वह और खूंटी को धरन में से उखाड़कर उसे ताने समेत ले गया।

दलीला ने कहा, "जब तू मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता है तो मुझे कैसे प्यार कर सकता है? तीन बार अब तू मुझसे झूठ बोलकर मुझ पर हंसा हैं। तू अपनी ताकत के रहस्य के विषय में मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करसकता ?"

वह उससे रोज़ यही पूछती रही। वह पूछती रही और उससे तब तक पूछा जब तक कि शिमशोन उससे थक नहीं गया। अंत में, उसने उसे सच्चाई बताई। उसने कहा, "मैं एक नाज़ीर हूं।" मैं जन्म से ही एक नाज़ीर रहा हूं। मेरे बाल कभी नहीं कटे हैं, और यह मेरी ताकत का राज़ है। अगर कोई मेरे सिर को मूड़ाता है, तो मैं किसी अन्य व्यक्ति की तरह बन जाऊंगा।"

दलीला को एहसास हुआ कि उसने आखिरकार उसे सच बता दिया था। उसने पलिस्तीन के शासकों को बुलाया। "आओ, मुझे आखिरकार उससे सच्चाई मिल गई। अपने साथ अपने पैसे लाना सुनिश्चित करें।" इसलिए वे पैसे लेकर आए।

उस रात, वह उसकी गोद में सिर रखकर सो गया। एक व्यक्ति छुपकर बाहर आया और उसकी सात लटों को काट दिया। जब उसने ऐसा किया, तो शिमशोन की ताकत चली गई । तब वह चिल्लाई, "शिमशोन, पलिश्ती आ गए हैं!"

वह खुद का बचाव करने के लिए उठा, लेकिन वह नहीं जानता था कि प्रभु उसके साथ नहीं था।

पलिश्तियों ने उसे पकड़ लिया और वह मुक्त नहीं हो पाया। उन्होंने उसे जमीन पर लेटा दिया और उसकी आंखें निकाल लीं। वे फिर उसे जेल ले गए, जहां वह चक्की पीसने लगा।

जब वह जेल में था, शिमशोन के बाल वापस बढ़ने लगे। समय के साथ, पलिश्ती अपने देवता के मंदिर में पूजा करने के लिए एकत्र हुए। उन्होंने तब तक खाया और पिया जब तक वे बहुत मतवाले ना हो गए। कोई चिल्लाया, "जाओ शिमशोन को ले आओ। वो हमारे लिये तमाशा करेगा।"

जगह भर गई थी, और एक लड़का शिमशोन को मंदिर में लाया। उसने लड़के से कहा, "मुझे खम्भों के बीच खड़ा कर दे।"

शिमशोन ने परमेश्वर को पुकारा। “हे परमेश्वर, मुझे सिर्फ एक बार और ताकत दें। मुझे पलिश्तियों से अपनी आँखें लेने के लिए बदला लेने की अनुमति दें। मैं उनके साथ मर जाऊंगा।”

उसने फिर दो खंभों को पकड़ा और एक साथ उन्हें धक्का दिया। वे अलग हो गए और टूट गए, और मंदिर उनके सभी अगुओं सहित पलिश्तियों पर गिर गया। शिमशोन की मृत्यु में कहीं अधिक लोग मारे गए, जितने उसके जीवन में नहीं मारे गए। वह 20 साल तक इस्राएल में न्यायी रहा था।

72 मूसा का पोता

न्यायियों 17 - 18

न्यायियों के समय में, मीका नाम के एक व्यक्ति ने अपनी माँ से 1,100 चाँदी के टुकड़े चुराए थे। तब उसे पता चला कि जिसने भी इसे लिया था, उस पर एक शाप था। इसलिए उसने उसे वापस दे दिया।

उसकी मां ने कहा, “ओह, बेटा, मुझे नहीं पता था कि तूने चुराए थे। मैं वैसे भी तुझे देने जा रही थी। लेकिन उसने इसे रखने से इनकार कर दिया। इसलिए उसने इसमें से कुछ लिया और अपने बेटे को घर में रखने के लिए एक मूर्ति बनवा के दी। बाकी के सिक्कों के साथ, मीका ने आराधना के लिए कुछ विशेष कपड़े, और एक याजक के लिए ज़रूरत की चीज़ें लाया।

योनातन नाम का एक युवक बैतलहम का एक लेवी था। उसने बसने के लिए जगह की तलाश में घर छोड़ दिया। वह रात में मीका के घर में रहा और वे दोनों दोस्त बन गए।

अंत में मीका ने कहा, "यहां रह और मैं तुझे अपनी मूर्ति का पुजारी बनाऊंगा। मैं तुझे वह सब कुछ दूंगा जो तुझे चाहिए - कपड़े, भोजन, रहने के लिए जगह - और मैं तुझको वेतन भी दूंगा। ” योनातन सहमत हो गया, और जल्द ही वह एक परिवार के सदस्य की तरह बन गया।

उसी समय, दान की जाति अपने लोगों के लिए एक स्थायी जगह की तलाश में थी। यहोशू के बाद सभी वर्षों में, उन्हें अपनी खुद की एक जगह नहीं मिली। उन्होंने जासूसों के रूप में पांच सैनिकों को भेजने का फैसला किया।

मीका के घर के पास जासूसों ने डेरा डाला और योनातन उनके साथ घूमने निकल गया । उन्होंने कहा, “तेरा लहजा ऐसा है जैसे तू बैतलहम से हैं। तू यहाँ क्या कर रहा है?"

उसने उन्हें अपनी नौकरी के बारे में बताया और यह की मीका ने उसके साथ कितना अच्छा व्यवहार किया। जब उन्हें पता चला कि वह एक लेवी और याजक था, तो उन्होंने कहा, "कृपया, परमेश्वर से पूछ कि क्या हम सफल होंगे या नहीं।"

उन्होंने कहा, "किसी चीज़ की चिंता मत करो। प्रभु तुम्हारे साथ है।”

सारे पुरुष वहां से गए और अपनी खोज जारी रखी।

अंत में, उन्हें एक अद्भुत जगह मिली, जहाँ लोग मिलनसार और सुरक्षित थे। जासूस अपने गोत्र में वापस चले गए और कहा, "हमें रहने के लिए जगह मिल गई है! यह अच्छी भूमि है और लोगों को जीतना आसान होगा।"

इसलिए दान के लोगों ने शहर को जीतने के लिए 600 लोगों को भेजा। जब वे मीका के घर गए, तो पाँचों जासूसों ने दूसरों से कहा, “उस घर के मालिक के पास एक मूर्ति, पूजा के लिए कपड़े और यहाँ तक कि एक पुजारी भी है। हम अपने नए शहर में उन चीजों का उपयोग कर सकते हैं।”

इसलिए 600 लोग मीका के घर गए।

योनातन उन्हें बधाई देने के लिए निकला। जब वह वहाँ खड़ा था, पाँच जासूस घर में गए और मूर्ति और उसके साथ सारा सामान ले लिया।

योनातन ने कहा, "तुम क्या कर रहे हो?"

उन्होंने कहा, “चुप रह और ध्यान से सुन। तेरे पास विकल्प है। तू यहां रह सकता है और किसी के लिए एक पुजारी बन सकता हैं, या तू हमारे साथ आ सकता हैं और एक पूरी जाति के लिए एक याजक बन सकता हैं। तू हमें बता सकता हैं कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है।”

योनातन को लगा कि यह एक अच्छे अवसर है, इसलिए वह उनके साथ जाने को तैयार हो गया। यहां तक कि उन्होंने मीका के घर से पूजा की सभी चीजें लेने में उनकी मदद की।

जब मीका को पता चला कि क्या हुआ है, तो उसने कुछ लोगों को संगठित किया और दान के लोगों का पीछा किया। जैसे ही उसने उन्हें देखा, वह उन पर चिल्लाया। तुरंत वे रुके, मुड़े, और उनका पीछा करने वाले पुरुषों का सामना किया। वे पीछे हट गए,और कहा "तुम हमारा पीछा क्यों कर रहे हो?"

मीका ने कहा, “तू ऐसा कैसे कह सकता है? तुम मेरे ईश्वर और मेरे पुजारी को ले गए। मेरे पास कुछ नहीं बचा है।"

दान के लोगों ने कहा, "हम पर चिल्लाना बंद कर वरना हम तुमसे कुछ और ले लेंगे। हम तेरा जीवन ले लेंगे और तेरे परिवार को मार डालेंगे।"

मीका ने देखा कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो वह कर सकता है। इसलिए वह मुड़ा और घर चला गया।

दान के लोगों ने अपने सैन्य अभियान को जारी रखा। उन्होंने शांतिप्रिय लोगों पर हमला किया और उन सभी को मार डाला। उन्होंने उनके शहर को जला दिया और एक नए शहर का निर्माण किया। उन्होंने इसे दान कहा, और यह उनका स्थायी घर बन गया।

योनातन और उनके वंशज सैंकड़ों वर्षों से दान के लोगों के याजक थे। उन्होंने उन्हें उस मूर्ति की पूजा करने में मदद की जब तक कि अश्शूरियों ने उन्हें बंदी नहीं बना लिया। योनातन मूसा का पोता था।

73 युद्ध के लिए भूमिका

न्यायियों 19

एक बार, न्यायियों के समय के दौरान, पूरे इस्राएल देश में गृह युद्ध छिड़ गया। सभी जातियां बिन्यामीन की जाति के खिलाफ एकजुट हुए और उन्हें लगभग समाप्त कर दिया। यह सब तब शुरू हुआ जब एक महिला ने एक पुरुष को छोड़ दिया।

एक लेवी ने एक महिला को अपनी रखैल बनने के लिए लाया। एक दिन वह उसे छोड़कर वापस अपने माता-पिता के घर चली गई। चार महीनों के बाद, आदमी ने उसके पास जाने और उसके साथ अच्छा व्यवहार करने की ठानी, यह आशा करते हुए कि वह उसके घर लौट आएगी।

जब वह वहाँ गया, तो उसके पिता ने उसका घर में स्वागत किया। दोनों आदमी दोस्त बन गए, इसलिए लेवी तीन दिनों तक रहा।

वह घर जाने के लिए चौथे दिन जल्दी उठा। लड़की के पिता ने कहा, "तू जाने से पहले अच्छा नाश्ता कर। जैसे-जैसे तू यात्रा करें यह तेरे लिए एक बेहतर दिन होगा।"

इसलिए उन्होंने एक साथ खाना खाया और अपनी दोस्ती का आनंद लिया। समय बीतता गया और आखिरकार दोपहर हो गई। पिता ने कहा, "बहुत देर हो चुकी है।"

अब छोड़ दें। सुबह तक प्रतीक्षा कर जब तू अपनी यात्रा जल्दी शुरू कर सकता है।"

लेवी रात भर रहा, और सुबह लड़की के पिता ने कहा, "जाने से पहले एक अच्छा नाश्ता कर। यात्रा करते समय यह तेरे लिए एक बेहतर दिन होगा।" फिर, उन्होंने खाया और देर दोपहर तक बात की। पिता ने कहा, "अब बहुत देर हो चुकी है। सुबह तक प्रतीक्षा कर और अपनी यात्रा जल्दी शुरू करना ।"

इस बार, आदमी ने जाना निर्धारित कर लिए था। वह अपनी रखैल के साथ चल पड़ा, लेकिन वे दूर नहीं पहुंचे थे इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि उन्हें कहीं रात बिताने की ज़रूरत है।

उन्होंने बिनयामीन की जाति द्वारा नियंत्रित शहर की यात्रा की। वे उम्मीद कर रहें थे कि कोई उन्हें उनके घर में आमंत्रित करेगा। पहले तो किसी ने जवाब नहीं दिया, लेकिन आखिरकार एक बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें देखा और उन्हें अपने घर में आमंत्रित किया।

वे उस शाम एक-दूसरे की संगति का आनंद ले रहे थे, जब अचानक पुरुषों के एक गिरोह ने बूढ़े व्यक्ति के घर को घेर लिया। उन्होंने उसे दरवाज़े पर पीटा और कहा, "उस आदमी को बाहर भेजो जो तुम्हारे पास रह रहा है। हम उसके साथ संभोग करना चाहते हैं।"

बूढ़ा व्यक्ति वापस चिल्लाया, "यह आदमी मेरे घर में मेहमान है। मैं आपको उसका दुरुपयोग नहीं करने दें सकता हूँ, मैं अपनी कुंवारी बेटी और उस आदमी की रखैल को बाहर भेजूंगा, तुम उनके साथ जो चाहते हो वह करो, लेकिन तुम उस आदमी के साथ कुछ नहीं कर सकते ।

जो पुरुष बाहर थे, वे मान नहीं रहे थे। वे अधिक हिंसक हो गए और उन्होंने आदमी के साथ संबंध बनाने पर जोर दिया। अंत में लेवी ने अपनी रखैल को पकड़ा और उसे दरवाजे से बाहर धकेल दिया।

आदमियों के गिरोह ने रात भर उसके साथ बलात्कार किया। सुबह-सुबह उन्होंने उसे जाने दिया। वह रेंगते हुए घर वापस आई, और दरवाजे के बाहर गिर गई। लेवी जाग गया और अपनी यात्रा जारी रखने के लिए तैयार हो गया। उसने दरवाज़े पर अपनी रखैल को देखा। "उठ जा। जाने का समय है।" वह नहीं हिली, इसलिए उसने उसे अपने गधे पर रख दिया और घर चला गया।

जब वे वहां पहुंचे, तो उसे एहसास हुआ कि वह मर चुकी है। उसने उसके शरीर को बारह टुकड़ों में काट दिया, और फिर उन्हें इस्राएल के हर क्षेत्र में भेज दिया। जब लोगों ने यह देखा, उन्होंने कहा, "इस्राएल के राष्ट्र में ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ है।"

यह हर कस्बे में चर्चा का विषय बन गया। अंत में लोगों को पता चला कि उन्हें बिन्यामीन की जाति के खिलाफ कार्यवाई करनी पड़ेगी ।

अगली कहानी में जारी

74 बिन्यामीन के लिए दुल्हन

न्यायियों 20 - 21

पिछली कहानी से जारी है

इस्राएल का पूरा देश गृहयुद्ध के लिए तैयार था। सभी जातियाँ बिन्यामीन की जाति के खिलाफ एकजुट हो गए। उन्होंने घोषणा की कि इस युद्ध से किसी भी शहर को नहीं बख्शा जाएगा। इसका उल्लंघन करने वाला हर शहर नष्ट हो जाएगा।

उन्होंने यह भी शपथ ली कि कोई भी व्यक्ति अपनी बेटी को बिन्यामीन की जाति में शादी करने के लिए नहीं देगा। दोनों पक्षों ने बड़े पैमाने पर सेनाओं को इकट्ठा किया। इस्राएल के सेनापतियों ने बेतेल में जाकर परमेश्वर का नेतृत्व मांगा। सुबह होते ही युद्ध शुरू हो गया।

दिन के अंत तक, बिन्यामीनियों ने कई इस्राएलियों को मार डाला था और लड़ाई जीत ली थी।

इस्राएल का सेनापति पीड़ा में प्रभु के सामने गया। उसने कहा, "क्या हमें अपने भाइयों के खिलाफ इस लड़ाई को जारी रखना चाहिए?"

प्रभु ने कहा, "उनसे लड़ो।"

अगले दिन, बिन्यामीनियों ने एक बार फिर कई इस्राएलियों को मार डाला और लड़ाई जीत ली। इस बार, पूरी सेना बेतेल में प्रभु के सामने गई। उन्होंने बलिदान दिया और पीड़ा में रो पड़े। उन्होंने कहा, "क्या हमें फिर से बिन्यामीन के खिलाफ लड़ना चाहिए, या हमें रुक जाना चाहिए?"

प्रभु ने कहा, "जाओ और उनसे युद्ध करो। मैं तुमको कल जीत दिलाऊंगा।"

इस्राएली सेना ने लोगों को सुबह लड़ने के लिए तैयार किया, लेकिन इस बार उन्होंने अपने कुछ लोगों को शहर के पीछे छिपा दिया। बिन्यामीनी लड़ाई करने के लिए बाहर आए, और एक बार फिर ऐसा लगा कि वे जीत रहे हैं। इस्राएली पीछे हुए और बिन्यामीनी उनके पीछे दौड़े। वे चिल्लाए, "हम हमेशा हर लड़ाई जीतते हैं!"

जल्द ही शहर असुरक्षित रह गया था। छिपने वालों ने शहर में प्रवेश किया और इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया, सभी को मार डाला। जब इस्राएल की सेना ने शहर से धुंआ निकलते देखा, तो वे मुड़े और युद्ध में वापस आ गए। बिन्यामीन की सेना ने भी धुआं देखा और उन्हें पता था कि उनके साथ छल किया गया है।

यहोवा ने बिन्यामीन के खिलाफ लड़ाई लड़ी, और जल्द ही वे घबरा गए और भागने की कोशिश की, लेकिन इस्राएल ने उन्हें घेर लिया। जीवित रहने वाले केवल 600 पुरुष थे जो एक किले में छिप गए थे। जाति के सभी लोग मारे गए, और उनके शहर नष्ट हो गए।

एक बार जब यह खत्म हो गया, तो इस्राएल के लोगों को एहसास हुआ कि उन्होंने क्या किया है। वे बेतेल गए और प्रभु के सामने बैठे। उन्होंने विलाप किया और शोक मनाया।

"हे प्रभु परमेश्वर, हमने क्या किया है? अब हम अपनी बारह जातियों में से एक को याद कर रहे हैं। "

वे पूरे दिन प्रभु के सामने रहे और बलिदान किए। उन्होंने कहा, "हम क्या कर सकते हैं? हमारे पास बिन्यामीन के केवल 600 पुरुष हैं और उनकी सभी महिलाएं मृत हैं।" उन्हें पता था कि यह महत्वपूर्ण है कि जाति फिर से आबाद हो।

वे अपनी शपथ के कारण अपनी बेटियों को नहीं दे सकते थे। अचानक उन्हें एक विचार आया। "क्या कोई ऐसा शहर था जो युद्ध में नहीं आया था जब उन्हें आज्ञा दी गई थी?"

एक शहर ने लड़ने का आदेश की नहीं माना था । इसलिए इस्राएल की सेना ने वहां जाकर सभी को मार डाला। केवल कुंवारी महिलाएं बचीं थीं। जब लड़ाई खत्म हुई, तो उनके पास उस शहर से 400 कुंवारी लड़कियां थीं। इस्राएल ने किले में 600 पुरुषों के साथ शांति स्थापित की, और 400 महिलाओं को उनकी पत्नियां बनने के लिए दिया। उन्हें अभी भी 200 महिलाओं की ज़रूरत थी।

तब उन्हें एक और विचार आया। उन्होंने बिन्यामीनियों से कहा, "शिलोह का एक वार्षिक त्योहार है। वहां युवा महिलाएं शहर से बाहर नृत्य करती हैं। सड़क के बगल में दाख की बारी में छिप जाते हैं।

जब समय सही होगा , तो तुम में से प्रत्येक बाहर आए, और अपने लिए एक पत्नी लें। उन्हें वापस अपनी देश पर ले जाओ। अपने पिता और भाइयों की चिंता मत करो। वे हमसे शिकायत करेंगे, लेकिन हम उन्हें स्थिति समझाएंगे।"

इसलिए बिन्यामीनी सड़क के बगल में दाख की बारी में छिप गए। वे तब तक इंतजार करते रहे जब तक युवतियां शिलोह से बाहर नाचने नहीं आईं। सही समय पर, वे कूद गए और अपने लिए पत्नियों को ले लिया।

उन महिलाओं के पिता और भाइयों ने शिकायत की, लेकिन इस्राएल के लोगों ने कहा, “दया करो और उन्हें अपनी बेटियों को रखने दो। उन्हें पत्नियों की आवश्यकता है, और हमारे पास उन्हें देने के लिए पर्याप्त महिलाएं नहीं हैं। शाप के बारे में चिंता न करें क्योंकि आपने वास्तव में उन्हें अपनी बेटियों को नहीं दिया है। वे उन्हें ले गए!"

बिन्यामीन के लोग अपने शहरों में वापस चले गए और उन्हें फिर से बनाया। वे अपनी नई पत्नियों के साथ बस गए, और उन्होंने परिवारों का पालन-पोषण किया। एक बार फिर, देश में सभी कुछ शांतिपूर्ण था।

75 रूत और नाओमी

रूत1-2

न्यायियों के समय के दौरान, एक व्यक्ति ने बैतलहम में अपना घर छोड़ने का फैसला किया। वह इस पत्नी नाओमी और उनके दो बेटों को ले गया और मोआब देश चला गया।

वहां चीजें ठीक नहीं हुईं। वे दस साल तक मोआब में रहे। उस समय के दौरान, आदमी की मृत्यु हो गई, दोनों बेटों ने मोआबी महिलाओं से शादी की और फिर बेटों की मृत्यु हो गई। नाओमी अपनी दो बहुओं के साथ अकेली रह गई थी।

उसने बैतलहम वापस जाने का फैसला किया। इसलिए तीनों महिलाएं यात्रा के लिए तैयार हुईं और वहां से चली। रास्ते में, नाओमी ने अपनी बहुओं से कहा, "अपने घरों को वापस जाओ। प्रभु तुम पर कृपा करें, जैसा कि तुम मुझ पर कृपा कर रहीं हों। मैं प्रार्थना करती हूं कि प्रभु तुम दोनों को एक अच्छा पति और कई बच्चे दें।" उसने उन्हें चूमा और अलविदा कहा।

तीनों महिलाएं रो पड़ीं, और दोनों बहुओं ने जोर देकर कहा कि वे नाओमी के साथ रहना चाहती हैं।

उसने कहा, "नहीं, तुम अपने घर जाओ। मेरे पास तुमको देने के लिए कोई पुत्र नहीं है। अगर मैं आज रात गर्भवती हुई, तो क्या तुम मेरे बच्चों के बड़े होने का इंतज़ार करोगी ताकि तुम उससे शादी कर सकों? नहीं, यह बेहतर है कि तुम घर जाओ। मेरे साथ जीवन कड़वा होने वाला है।"

इसी के साथ, एक बहु ने नाओमी को चूमा और अपने घर चली गई।

दूसरी बहू रूत थी। उसने कहा, "मैं तुम्हें नहीं छोड़ऊंगी! मुझे वापस मत भेज। मैं तेरे साथ जाऊंगी। जहां तू रहेगी, मैं वहीं रहूंगी। तेरे लोग मेरे लोग होंगे। तेरा परमेश्वर अब मेरा परमेश्वर है। जहां तू मरेगी, वही मैं मरूंगी और दफनाई जाऊंगी। केवल मृत्यु तुझको और मुझे अलग कर देगी।"

नाओमी ने देखा कि वह रूत के साथ बहस नहीं कर सकती। इसलिए वे दोनों बैतलहम वापस चली गई।

जब वे वहां पहुंची, पूरा शहर उत्साहित था कि नाओमी घर वापस आ गई थी। उसने उनसे कहा, "अब मुझे नाओमी मत कहो। इसका मतलब है कि 'सुखद,' और जीवन अब सुखद नहीं है। मुझे मारा कहो, जिसका अर्थ है, "कड़वा।" प्रभु ने मेरे जीवन को कड़वा बना दिया है।"

इसलिए नाओमी और रूत ने बैतलहम में अपना घर बसाया। जीवन कठिन था क्योंकि दोनों महिलाएं गरीब थीं।

सौभाग्य से, यह फसल कटने का समय था। गरीब लोगों को खेतों में जाने और फसल के दौरान गिराए गए किसी भी अनाज को लेने की अनुमति दी गई थी। इसलिए रूत उन दोनों के लिए भोजन इकट्ठा करने के लिए खेतों में गई। वह बोआज़ नाम के एक व्यक्ति के स्वामित्व वाले एक खेत में गई।

बाद में सुबह, बोआज़ अपने खेत में आया। उसने रूत को देखा और सेवक से कहा, "वह युवती कौन है?"

"ओह, वह मोआबी है जो नाओमी के साथ यहां आई थी। वह एक मेहनत करने वाली महिला है।"

बोआज़ रूत के पास गया और कहा, "किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना। मेरी ही दासियों के संग यहीं रहना। उन्हें देखें और उन्हीं के पीछे पीछे चला करना। पुरुष तुम्हें तकलीफ नहीं देंगे। मैंने उन्हें पहले ही तुमसे दूर रहने के लिए कहा है। जब तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनों के पास जा कर पुरुषों का भरा हुआ पानी पीना।"

रूत ने अपना सिर झुका लिया और बोआज़ को धन्यवाद दिया। उसने कहा, "आप एक विदेशी के लिए इतने दयालु क्यों हैं?"

उसने कहा, "हम सभी ने सुना है कि तूने नाओमी के साथ कितना अच्छा व्यवहार किया है।" तूने किस रीति अपने माता पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिनको तू पहले नहीं जानती थी

और उसकी देखभाल करने के लिए अपना सब छोड़ दिया। प्रभु तुम पर भरपूर कृपा करें!”

वह फिर वापस चला गया, और अपने आदमियों से कहा कि वह उसके रास्ते पर अतिरिक्त अनाज छोड़ दे। इसके अलावा, उसने उसके लिए भोजन उपलब्ध करवाने के लिए कहा, जब वह खाना खाना बंद कर दे।

उस शाम, रूत वो सब घर वापस लेकर आ गई जो उसने इकट्ठा किया था। यहां तक कि उसने अपना बचा हुआ भोजन भी लाया था । नाओमी चकित थी जब उसने यह सब देखा। रूत ने उसे खेत के मालिक, बोआज़ की दया के बारे में बताया।

नाओमी ने बोआज़ का नाम सुनते ही जवाब दिया। उसने कहा, "परमेश्वर उसे आशीर्वाद दे! ओह रूत, वह हमारे परिवार का करीबी रिश्तेदार है। जैसा उसने कहा है, वैसे ही उसके मैदान में रह। तू वहां सुरक्षित रहेंगी।”

इसलिए रूत ने बोआज़ की नौकर लड़कियों के साथ काम करना जारी रखा। उसने जौ की फसल और गेहूं की फसल में अनाज इकट्ठा किया।

अगली कहानी में जारी

76 रूत और बोअज़

रूत 3-4

पिछली कहानी से जारी

फसल कटने के अंत में, नाओमी ने रूत से कहा, "मैं यह सुनिश्चित करने जा रही हूं कि तेरी देखभाल की जाए। तुम्हें यह करना ही है। स्नान कर और कुछ इत्र लगा। अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन। बोआज़ और उसके लोग आज रात खलिहान में देर रात तक काम करेंगे। जब वह काम पूरा कर लें, तो वे खाएंगे और पीएंगे, और फिर अनाज की रक्षा के लिए खलिहान में सो जाएंगे।

"वहाँ जाना, लेकिन सुनिश्चित करना कि पुरुष तुझको नहीं देखें। ध्यान से देख कि बोआज़ कहाँ सोता है।

एक बार जब सभी सो जाए, तो बोआज़ के पैरों को खोल दें, और उस के बगल में लेट जा। जब वह उठता है, तो वह समझाएगा कि तुझको क्या करना हैं।

इसलिए रूत उस जगह गई जहाँ पुरुष काम कर रहे थे और छाया में छिप गए थे। वह तब तक ध्यान से देखती रही जब तक कि उसने बोआज़ और बाकी लोगों को सोने के लिए खलिहान में लेटते नहीं देखा। उनके सिर अनाज की ओर थे और पैर बाहर की ओर थे। जब वे सो गए, तो उसने चुपचाप बोआज़ के पैरों को खोल दिया, और लेट गई।

रात के दौरान, बोआज़ को महसूस हुआ कि उसके पैरों में एक महिला लेटी है। उसने कहा, "तू कौन हैं?"

उसने कहा, "मैं रूत हूं। तू मुझ पर अपनी चद्दर ओढ़ा दे, क्योंकि तू मेरा कुटुम्बी है।"

उसने कहा, "प्रभु तुझको आशीष दे! तू किसी धनी, किसी कंगाल की तलाश करने हमारे गाँव नहीं आई। इसके बजाय, तूने खुद को ईमानदार महिला साबित किया।

"तौभी एक और है जिसे मुझ से पहिले तुझे छुड़ाने का अधिकार है। सुबह मैं उससे बात करूंगा और उसे तेरा छुड़ाने का मौका दूंगा।" अगर वह नहीं करता है, तो मैं करूंगा।

अभी के लिए, रात में घर जाना सुरक्षित नहीं है। मैं तुझको सुबह वहाँ भेजूँगा।"

वह सुबह तक उसके पैरों पर लेटी रही और फिर उठ गई, जबकि अभी भी अंधेरा था। बोआज़ ने नाओमी के लिए अनाज दिया।

रूत ने अपनी सास को जो कुछ भी हुआ सब बताया। नाओमी ने कहा, "अब तुझको इंतजार करना होगा। जब तक यह मामला नहीं सुलझेगा तब तक बोआज़ आराम से नहीं रहेगा।"

उस दिन, बोआज़ ने अगले छुड़ाने वाले कुटुम्बी और शहर के बुजुर्गों के साथ एक बैठक की। उन्होंने कहा, "नाओमी मोआब से वापस आ गई है, और उसके पति की जमीन बेच रही है। आप निकटतम रिश्तेदार हैं। इसे इन बुजुर्गों की उपस्थिति में खरीद लें। और यदि तू नहीं खरीदता हैं, तो मैं इसे खरीदूंगा।"

आदमी ने जल्दी जवाब दिया। "मैं इसे खरीदूंगा!"

बोआज़ ने समझाया, "ठीक है, जब आप इसे खरीदते हैं, तो आपको मोआबी महिला रूत से भी शादी करनी होगी। यह संपत्ति के साथ परिवार का नाम रखेगा।"

उस व्यक्ति ने कहा, "मैं इस महिला से शादी नहीं कर सकता। यह मेरे परिवार के नाम को खाराब कर देगी । तुझको संपत्ति खरीदने की मेरी अनुमति है।" इसके साथ ही,

आदमी ने अपने एक जूते उतार कर बोआज़ को दे दिए। इससे सौदा कानूनी रूप से स्थापित हो गया।

बोआज़ ने जूतों को बुजुर्गों की ओर किया।

"आप गवाह हैं कि मैंने वह संपत्ति खरीदी थी जो नाओमी के पति और बेटों की थी। और उसकी वजह से रूत मेरी पत्नी बनेगी।"

लोग चारों ओर जमा हो गए थे और यह सब देख रहे थे। बुज़ुर्गों ने कहा, "हां, हमने पूरी बात देखी है। प्रभु तुमको आशीष दे, और प्रभु इस महिला को आशीष दे जो तेरी पत्नी बनेगी ।"

इसलिए बोआज़ ने रूत को अपनी पत्नी के रूप में लिया और समय के साथ उसने ओबेद नामक एक पुत्र को जन्म दिया। उनका यिशै नाम का एक बेटा था, जो दाऊद नाम के एक चरवाहे का पिता बन गया। वह इस्राएल का महान राजा बना!

77 शमूएल की बुलाहट

1 शमूएल 1 - 3

हन्ना के बच्चे नहीं हो सकते थे। इस बात ने उसे इतना तड़पाया कि वह पवित्रस्थान तक चली गई, और वहाँ उसने एक बच्चे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना माँगी। उसने कहा, "हे परमेश्वर, यदि तू मुझे एक पुत्र देता हैं, तो मैं उसे तुझको वापस दे दूंगी और वह जीवन भर तेरी सेवा करेगा।"

महायाजक एली ने देखा कि हन्ना मुँह चला रही है लेकिन वह कुछ बोल नहीं रही है। उसे लगा कि वह नशे में है।उसने कहा, "औरत, तू परमेश्वर छोड़ दे!"

"ओह प्रभु! मैं नशे में नहीं हूं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा हूं।"

"ओह, ठीक है...अपने रास्ते जा। यहोवा तेरी प्रार्थना का जवाब देगा।"

निश्चित रूप से, परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया। एक साल से भी कम समय में, उसने एक बच्चे को जन्म दिया और उसका नाम "शमूएल" रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर ने मुझे सुना।"

जब लड़का बड़ा हो गया, तो उसकी माँ उसे लेकर वापस पवित्रस्थान ले गई और उसने उसे एली के सामने पेश किया। उसने कहा, "मैंने एक बच्चे के लिए प्रार्थना की, और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया। अब मैं अपने पुत्र को प्रभु को दे दूंगी, और वह जीवन भर उसकी सेवा करेगा।"

हर साल हन्ना उससे मिलने आया करती थी, और वह शमूएल के लिए नए कपड़े लाती थी। याजक ने प्रार्थना की कि परमेश्वर हन्ना को और अधिक बच्चे दें। उसके बाद उसके तीन बेटे और दो बेटियां हुईं।

एली ने शमूएल को पवित्रस्थान में काम करने के लिए दिया।

जैसे-जैसे वह शारीरिक रूप से बढ़ता गया, वह प्रभु के और लोगों के अनुग्रह में भी बढ़ता गया।

एली के बेटे इसके ठीक विपरीत थे। वे दुष्ट थे और किसी भी तरह से परमेश्वर का सम्मान नहीं करते थे। उनके कई पाप प्रभु के घर में हुए थे। एली ने उनसे इस बारे में बात की, लेकिन इसके बारे में कुछ नहीं किया।

एक रात, जब शमूएल सो रहा था, तब यहोवा ने पुकारा, "शमूएल, शमूएल।"

वह उठा और एली के पास गया। उसने कहा, "हां, मैं यहां हूं!"

एली जाग गया और लड़के को देखा। "शमूएल, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। अपने बिस्तर पर वापस जा।"

शमूएल वापस जाकर लेट गया। जब वह सोने जा रहा था, प्रभु ने उसे फिर से बुलाया। "शमूएल, शमूएल।"

इस बार वह जानता था कि वह सपने नहीं देख रहा था। वह उठा और एली के पास भागा। "मैं यहां हूं!"

एली ने एक बार फिर कहा, "बेटा, मैंने तुझे नहीं बुलाया ।

अब, सो जा। इसलिए शमूएल वापस चला गया और लेट गया।

एक बार फिर, यहोवा ने उसे बुलाया, "शमूएल, शमूएल।"

इस समय में, शमूएल प्रभु को नहीं जानता था, और प्रभु ने उससे बात नहीं की थी। तो, लड़के ने वही किया जो वह करना जानता था। तीसरी बार, वह एली के पास गया। "मैं आया हूं क्योंकि तूने मुझे बुलाया है।"

इस बार, एली को एहसास हुआ कि क्या हो रहा था। वह जानता था कि यहोवा शमूएल को बुला रहा है, इसलिए उसने कहा, "वापस जा और लेट जा। यदि तू फिर से आवाज़ सुनता है, तो बोलना, प्रभु बोल, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।'

शमूएल अपने बिस्तर पर वापस चला गया और लेट गया।

यहोवा ने उसे एक बार फिर बुलाया, “शमूएल! शमूएल!"

चुपचाप शमूएल ने कहा, "बोलो प्रभु , क्योंकि आपका दास सुन रहा है।"

परमेश्वर ने कहा, "मैं इस बात से प्रसन्न नहीं हूं कि एली अपने बेटों को मेरे घर में बुराई करने की अनुमति देता है। मैं उसे और उसके बेटों को दंड देने जा रहा हूं।

शमूएल वापस अपने बिस्तर में लेट गया। सुबह एली ने उसे बुलाया, "शमूएल, प्रभु ने तुझसे क्या कहा?"

लड़का उसे परमेश्वर का संदेश बताने से डर रहा था। एली ने कहा, "बेटा, मुझसे मत छुपा।"

इसलिए शमूएल ने उसे सब कुछ बताया।

एली ने कहा, "वो परमेश्वर है! उसकी आँखों में जो अच्छा है उसे करने दो।”

उस दिन से यहोवा शमूएल के साथ था, और उसने परमेश्वर के शब्दों को प्रकट करना जारी रखा। शमूएल ने यहोवा की आज्ञा मानी, और जो कुछ उसने कहा वह सब सच हुआ। सभी इस्राएलियों ने माना कि वह प्रभु का भविष्यवक्ता था।

78 परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा किया जाना

1 शमूएल 4

परमेश्वर एली से खुश नहीं था। महायाजक जानता था कि उसके दो बेटे प्रभु के मंदिर के अंदर पाप कर रहे थे। उन्होंने इसे छिपाने की कोशिश भी नहीं की। फिर भी, एली ने उन्हें रोका नहीं। परमेश्वर ने उसे बताया कि उसके परिवार को सजा दी जाएगी। प्रभु ने कहा, "मैं ऐसा कुछ करूंगा, जिसके बारे में सुनकर लोग कांप जाएंगे।"

जब एली 98 साल का था, तब पलिश्तियों ने इस्राएल के साथ युद्ध किया। सेना अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए बाहर गई, लेकिन वे लड़ाई हार गए और 4,000 लोग मारे गए।

इस्राएल के बुजुर्ग व्याकुल थे। "परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया?" अचानक उनमें से एक को एक विचार आया। "चलो हम प्रभु के सन्दूक को ले कर आएं! हम इसे युद्ध में ले जाएंगे, और यह हमें विजय दिलाएगा। इसलिए उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को बुलवाया, और एली के बेटे उसे शिविर में ले आए। जब इस्राएलियों ने इसे देखा, तो वे खुशी से चिल्लाए। चीख इतनी जोरदार थी कि ऐसा लगा जैसे जमीन हिल गई हो।

पलिश्तियों ने चीख सुनी और सोचा कि यह युद्ध का नारा है। उन्होंने जासूसों को यह देखने के लिए भेजा कि क्या चल रहा था और पाया कि परमेश्वर के सन्दूक को शिविर में लाया गया था। पलिश्ती घबरा गए।

उन्होंने कहा, "उनके देवता अब उनके शिविर में हैं। हम बर्बाद हो गये! ये महान देवता हैं। वो वह देवता हैं जिन्होंने विपत्तियों से मिस्रियों को मार दिया था।"

पलिस्तीन के सेना का प्रमुख सामने खड़ा हुआ। "मज़बूत बनो और पुरुषों की तरह लड़ों! तुम शक्तिशाली पलिश्तियों हों, कमजोर इब्री नहीं। अब ऐसे लड़ने का समय आ गया है जैसे तुमने पहले कभी नहीं लड़ा। यदि तुम अच्छी तरह से नहीं लड़े, तो तुम उनके गुलाम बन जाओगें।

इसलिए पलिश्तियों ने ऐसा युद्ध किया जैसे कि वे सब कुछ खोने जा रहे थे। इस्राएलियों को कुचल दिया गया - उनके सैनिकों को मार डाला। एली के दो बेटों सहित 30,000 लोग मारे गए थे। तब पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा कर लिया और उसे अपने शिविर में ले गए।

इस्राएल में, एली सड़क पर एक कुर्सी पर बैठा था और लड़ाई की खबर की प्रतीक्षा कर रहा था। वह परमेश्वर के सन्दूक के बारे में चिंतित था। एक आदमी लड़ाई से भागकर सबको बताने आया कि क्या हुआ है।

पूरा शहर रोने लगा। एली अंधा था और उसे सुनने में भी कठिनाई होती थी। उसने शोर सुना, लेकिन वह नहीं सुन पा रहा था जो कहा जा रहा था।। "क्या चल रहा है?"

वह आदमी बूढ़े याजक के करीब गया और कहा, "हमारे लोगों को आज मार दिया गया।तेरे दोनों बेटे मारे गए, और परमेश्वर के सन्दूक ले जा लिया गया है।"

जब एली ने परमेश्वर के सन्दूक के बारे में सुना, तो वह कुर्सी पर पीछे की ओर गिर गया। वह एक भारी व्यक्ति था, इसलिए गिरने के कारण उसकी गर्दन टूट गई और उसकी मृत्यु हो गई।

एली की बहू गर्भवती थी। उसने परमेश्वर के सन्दूक और उसके पति की मृत्यु के बारे में सुना। फिर उसने सुना कि उसका ससुर भी मर चुका है। अचानक उसे प्रसव पीड़ा होने लग गई और उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसकी मदद करने वालों ने कहा, "अब तेरे पास खुश रहने के लिए कुछ है। तूने एक बेटे को जन्म दिया है!"

पहले तो उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और फिर उसने अंत में कहा, "महिमा इस्राएल से चली गई है क्योंकि परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया

है।" मरने से ठीक पहले, उसने बच्चे का नाम ईकाबोद रखा, जिसका अर्थ है, "महिमा उठ गई है।"

अगली कहानी में जारी

79 परमेश्वर के सन्दूक का लौटाया जाना

1 शमूएल 5 - 6

पिछली कहानी से जारी

पलिश्तियों के परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा करने के बाद, उन्होंने इसे अपने देवता के मंदिर में रख दिया। अगली सुबह, उन्होंने अपनी मूर्ति को सन्दूक के सामने नीचे गिरा पाया। उन्होंने मूर्ति को वापस स्थापित किया, लेकिन अगली सुबह वह फिर से जमीन पर थी। इस बार, उसके सिर और हाथ टूटे हुए थे।

अचानक शहर चूहों से भर गया था, और लोगों के शरीर पर बड़ी गिलटियां हो गई थी। लोगों ने कहा, "यह इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक के कारण हो रहा है।" इसलिए उन्होंने इसे दूसरे शहर में स्थापित कर दिया।

तुरंत, परमेश्वर की सजा उस शहर पर आ गई।

वह शहर चूहों से भर गया और लोगों को बड़ी दर्दनाक गिलटियां हो गई। इससे लोग घबरा गए। लोगों ने परमेश्वर के सन्दूक को दूसरे शहर में भेजा, लेकिन वहाँ के लोग उन पर चिल्लाए। "तुम हमें मारने की कोशिश कर रहे हों! हम नहीं चाहते हैं कि हमारे शहर में सन्दूक आए!"

वह सन्दूक को एक शहर से दूसरे शहर सात महीनो तक ले जाते रहे। जहाँ भी सन्दूक गया, भय और मौत ने उनका पीछा किया। अंत में, पलिश्तियों ने अपने पुजारियों से पूछा, "हम यहोवा के सन्दूक को वापस इस्राएल कैसे भेज सकते हैं?"

उन्होंने कहा, "यदि तुम सन्दूक को वापस इस्राएल भेजते हों, तो तुमको इसके साथ अपराध की पेशकश भेजनी चाहिए। तब परमेश्वर उसके निर्णय का हाथ हटा देगा, और तुम ठीक हो जाओगे। तुम्हारी गिलटियों की पाँच सोने की छवियां और जमीन को नष्ट करने वाले चूहों की पांच सोने की छवियां बनाओ। इस्राएल के परमेश्वर की महिमा करो, और वह तुम्हें दंड देना बंद कर देगा। लेकिन अगर तुम जिद्दी हो जाते हैं, तो तुम फिरौन की तरह हो जाओगे जब वे लोग मिस्र छोड़ रहे थे। जब तक तुम सन्दूक को वापस इस्राएल नहीं भेजते तब तक वह तुम पर और विपत्तियाँ भेजेगा।

"तुमको यही करना है। एक नई गाड़ी तैयार करों और उस पर परमेश्वर का सन्दूक रखो। सोने की वस्तुओं को बगल में एक बक्से में रखो। दो दूध देने वाली गायों का चयन करो, जो कभी जुएं में नहीं डाली गई हैं। बछड़ों को गायों से दूर ले जाओ और घर में बन्द कर दों। फिर पीछे खड़े होकर देखो कि गायें क्या करती हैं। यदि वे सब अपने बछड़ों को नजरअंदाज करती हैं और इस्राएल की ओर बढ़ते हैं, तो तुम यह जान जाओगें कि यह वह परमेश्वर था जिसने हमें सात महीने तक सताया। लेकिन, अगर गाय अपने बछड़ों की ओर बढ़ती हैं, तो हम जान जाएगें कि यह सब कुछ ऐसा था जो संयोग से हुआ था। यह परमेश्वर का दण्ड नहीं था।

जैसा निर्देश दिया गया था, वैसा ही पुरुषों ने किया।

उन्होंने दो दूध देने वाली गायों को लेकर उस गाड़ी में जोतां और उन्हें उनके बछड़ों से अलग किया। उन्होंने गायों को गाड़ी में जोतां, भले ही वे इससे पहले कभी जुएं में नहीं जोती गई थी। उन्होंने सोने के चूहों और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया और साथ ही परमेश्वर के सन्दूक को एक नई गाड़ी में डाल दिया।

जब सब तैयार हो गए, तो वे पीछे खड़े होकर देखते रहे। गायें सीधे सड़क पर, इस्राएल की ओर चली गईं। इस्राएल के लोग गेहूं की कटाई कर रहे थे जब उन्होंने सन्दूक को अपनी ओर आते देखा।

वे खुशी के मारे चिल्लाए। जब वे देख रहे थे, गाय एक बड़ी चट्टान के पास एक खेत में रुक गई। इस्राएल के लोगों ने सन्दूक को चट्टान पर रख दिया। फिर उन्होंने गाड़ी से लकड़ी का इस्तेमाल किया और

गायों को परमेश्वर को अर्पित बलिदान के रूप में चढ़ाया। जब पलिस्तीन के शासकों ने यह देखा, तो वे अपने देश लौट गए।

पास के एक शहर के 70 लोग थे जो इस बात से उत्सुक थे कि परमेश्वर के सन्दूक में क्या था, इसलिए उन्होंने इसे खोला और अंदर देखा। इसके कारण परमेश्वर के हाथ से सभी 70 लोगों की मौत हो गई। इससे लोगों में डर पैदा हो गया, लेकिन यह शुरुआत थी कि इस्राएल देश उनके दिलों को परमेश्वर की ओर फेरता।

80 एबेनेज़र

1 शमूएल 7 - 8

इस्राएल के लोग धीरे-धीरे परमेश्वर की ओर लौट आए। यह एक प्रक्रिया थी जिसमें बीस साल लगे। अंत में शमूएल ने कहा, "अगर यह सच है कि तुम परमेश्वर की सेवा करना चाहते हो, तो अपनी सभी मूर्तियों को छोड़ दों। तुम अपने आप को प्रभु को समर्पित करो और उसकी सेवा करो। ऐसा करो, और वह तुम्हें पलिश्तियों पर विजय दिलाएगा।"

लोगों ने वही किया जो शमूएल ने कहा और उन मूर्तियों को हटा दिया। इसलिए उसने उन्हें समर्पण सेवा के लिए इकट्ठा होने के लिए कहा। उन्होंने कहा, "आओ, मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा।" लोगों ने एकजुट होकर खुद को प्रभु के लिए समर्पित कर दिया। तब से, शमूएल उनका न्यायाधीश बन गया।

पलिश्तियों ने सुना कि इसराएली एक जगह इकट्ठा हो गए हैं। उन्होंने सोचा कि यह युद्ध का एक कार्य है, इसलिए उन्होंने भूमि पर मार्च किया और इस्राएल पर हमला करने के लिए तैयार किया। पलिस्तीन की विशाल सेना को देखकर लोग डर गए।

शमूएल ने कहा, "अपने दुश्मन को मत देखो।

इसके बजाय, परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करो और उससे प्रार्थना करो। यहोवा हमें पलिश्तियों से बचाएगा।" फिर उसने परमेश्वर के सामने एक बलिदान पेश किया, और मदद माँगी।

यहोवा ने शमूएल की प्रार्थना का जवाब दिया। पूरे पलिस्तीन को शिविर में अचानक तेज गरज सुनाई दी। वे भ्रमित हो गए और दौड़ने लगे।

इस्राएल के लोगों ने उनका पीछा किया और उनमें से कई को मार डाला।

शमूएल ने उस दिन जो कुछ हुआ था, उसके स्मारक के रूप में एक बड़ा पत्थर स्थापित किया। उन्होंने इसे एबेनेजेर कहा, जिसका अर्थ है "मदद की चट्टान।" उन्होंने कहा, "प्रभु ने इस जगह पर हमारी मदद की है।"

जब तक शमूएल जीवित रहा तब तक पलिश्तियों के खिलाफ प्रभु ने संघर्ष किया। हर साल भविष्यवक्ता एक रास्ते पर जाता, ताकि वह लोगों का बेहतर तरीके से न्याय कर सके। बाकी समय वह अपने नगर से उनका न्याय करता था।

जब वह बूढ़ा हो गया, तो उसने अपने बेटों को न्यायी बनने के लिए नियुक्त किया। दुर्भाग्य से, उनके पास उनकी तरह अखंडता नहीं थी। उन्होंने रिश्वत स्वीकार की और उसके अनुसार न्याय किया।

लोग शमूएल के पास गए और कहा, "तुम्हारे बेटे अभी नहीं हैं। इसलिए, हम सभी अन्य देशों की तरह बनना चाहते हैं, और हम चाहते हैं कि हमारे पास एक राजा होना चाहिए। मरने से पहले हमारे लिए एक राजा का चयन कर।"

शमूएल हैरान रह गया। वह समझ नहीं पाया कि वे ऐसा क्यों चाहते हैं। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, लेकिन प्रभु ने कहा, "नाराज मत हो। उन्होंने तुझको अस्वीकार नहीं किया है। उन्होंने मुझे अस्वीकार कर दिया है। वे जो कहते हैं, वैसा हीकर , लेकिन पहले उन्हें बता कि राजा का होना कैसा होता है।

शमूएल लोगों के सामने खड़ा था और उसने विस्तार से वर्णन किया कि कैसे एक राजा उनका दुरुपयोग करेगा और उनका लाभ उठाएगा। उन्होंने कहा, "एक राजा तुम्हारे बेटों को तुमसे दूर ले जाएगा, और वे तुम्हारे बजाय उसके लिए काम करेंगे। वे उसकी सेना में सेवा करेंगे, या उसके लिए व्यक्तिगत रूप से काम करेंगे। वह तुम्हारी बेटियों को ले जाएगा और उन्हें काम पर लगा देगा। वह तुम्हारे सबसे अच्छे खेतों, दाख की बारियों और बागों को छीन लेगा। वह तुम पर कर लगाएगा ताकि वह खुले दिल से रह सके। तुम उनके सेवक बन जाओगे, और तुम

उनकी हर इच्छा को पूरा करने के लिए काम करोगे।"

लोगों ने इस चेतावनी को मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने जोर देकर कहा, "हम अभी भी एक राजा चाहते हैं! वह हमें न्याय देगा और हमारे लिए हमारी लड़ाई लड़ेगा। "

प्रभु ने कहा, "जैसा वे कहते हैं वैसा ही कर । उन्हें एक राजा दे ।" इसलिए शमूएल ने उन्हें घर जाने के लिए कहा, और वह उनके लिए एक राजा खोजेने के लिए चला ।

81 शाऊल बना राजा

1 शमूएल 9 - 10

शाऊल बिन्यामीन के गोत्र का था। वह लंबा और सुंदर था और बाकी सभों की तुलना में लंबा था। एक दिन, उसके पिता ने उसे अपने खोए हुए गधों को ढूंढने के लिए कहा, इसलिए वह कुछ नौकरों को ले गया और उन्हें ढूंढता रहा। काफी देर तक तलाश करने के बाद, वे खोज छोड़ कर घर जाने वाले थे। तब एक सेवक ने पास के एक शहर की ओर इशारा किया और कहा, "उस कस्बे में परमेश्वर का दास है। चलो उससे पूछें कि क्या वह हमें बता सकता है कि गधे कहाँ हैं।

उन्होंने नगर में जाकर देखा कि एक व्यक्ति उनकी ओर आ रहा है। उन्हें नहीं पता था कि यह शमूएल था। रात होने से पहले, परमेश्वर ने उसे बताया था कि शाऊल अगले दिन आएगा। प्रभु ने कहा, "वह राजा बनेगा, जो इस्राएल पर शासन करेगा।"

शाऊल ने शमूएल से कहा, "क्या तुम जानते हो कि भविष्यवक्ता कहाँ रहता है?"

शमूएल ने कहा, "मैं वह भविष्यवक्ता हूँ मेरे साथ एक बलिदान करो।

बाद में हम एक साथ भोजन करेंगे और मैं तुमको कई बातें बताऊंगा। उन गधों के विषय में जिन्हें तुम खोज रहे हो ; वे मिल गए हैं। तुम्हारे पास चिंता करने के लिए अधिक महत्वपूर्ण चीज़ें हैं। इस्राएल का भविष्य तेरे हाथों में है।"

शाऊल हैरान था। उसने कहा, "इस्राएल का भविष्य मेरे हाथ में नहीं हो सकता। मैं इस्राएल की सबसे छोटी जाति से हूं और उस जाति में भी, हमारा परिवार महत्वपूर्ण नहीं है।"

शमूएल शाऊल को तीस महत्वपूर्ण लोगों के साथ भोज में ले गया और उसे सम्मान का स्थान दिया। बावर्ची शाऊल के लिए एक विशेष भोजन लाया और कहा, "यह भोजन विशेष रूप से इस दिन के लिए बनाया गया है। अब मैं यह खाना परोसूंगा।"

शाऊल और उसके सेवक रात बिताने के लिए शमूएल के घर गए। उसे छत पर जगह दी गई थी, जहां शीतलता थी । सुबह भविष्यवक्ता ने शाऊल से कहा, "अपने नौकरों को घर भेज । मैं चाहता हूं कि तू थोड़ी देर रहें। मैं तुझको परमेश्वर से मिले एक संदेश के बारे में बताता हूँ।"

शाऊल के सेवकों के चले जाने के बाद, शमूएल ने कुछ तेल लिया और शाऊल का अभिषेक किया। उन्होंने कहा, "परमेश्वर ने तुझे अपने लोगों पर राजकुमार के रूप में अभिषिक्त किया है।"

भविष्यवक्ता ने शाऊल को बताया कि अगले कुछ दिनों में उसके साथ क्या होगा, वह जिन स्थानों पर जाएगा और वे जिन लोगों सेमिलेगा । उसने कहा, "जब ये सभी चीजें होंगी, तो परमेश्वर का आत्मा तुम पर आ जाएगा। तू बदल कर पूरी तरह से नया व्यक्ति बन जाएगा । उस समय, तुझे पता होगा कि क्या करना है क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ रहेगा।"

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा शमूएल ने कहा था। इसलिए एक दिन नियुक्त किया गया जब शमूएल को नए राजा को इस्राएल के सभी गोत्रों में प्रस्तुत करना था। जब सही समय आया, तो शमूएल ने चारों ओर देखा, लेकिन शाऊल को नहीं पाया। उसने परमेश्वर से पूछा, "वह कहाँ है?"

प्रभु ने कहा, "वहाँ देख। वह सामान के बीच छिपा है।"

शमूएल ने लोगों के सामने शाऊल को लाने के लिए कुछ लोगों को भेजा। तब शमूएल दूसरों के पास गया और चिल्लाया, "यह वह शख्स है जो तुम्हारा राजा होगा और तुम्हारी लड़ाई लड़ेगा और तुम पर शासन करेगा।"

लोगों ने चिल्लाकर कहा, "राजा जीवित रहे!" उस दिन से, प्रभु शाऊल के साथ था और उसे एक राजा के सभी कर्तव्यों को निभाने में सक्षम बनाता रहा।

82 एक आंख के लिए शांति

1 शमूएल 11

राजा बनने के बाद शाऊल अपने नगर वापस चला गया और समारोह समाप्त हो गया। परमेश्वर ने शाऊल के साथ जाने के लिए कई युद्ध कर रहे लोगों को भेजा।

शाऊल के राजा बनने के विचार से दूसरे लोग हँसे। उन्होंने उसे उपहार देने से इनकार करके अपनी घृणा दिखाई। शाऊल ने इस पर ध्यान नहीं दिया और परिवार के खेत में काम करने के लिए वापस चला गया।

उसी समय, अम्मोनियों की सेना इस्राएल के एक शहर के खिलाफ लड़ने के लिए गई थी। शहर के अगुओं ने अम्मोनी राजा से कहा, "हम तुम्हारे सामने आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं। तुम्हारी शर्तें क्या हैं?"

राजा ने कहा, "मेरी शर्तें यह हैं। मैं सारे इस्राएल के लोगों का अपमान करने के लिए तेरा उपयोग करने जा रहा हूं। मैं तुम्हारे शहर में रहने वाले सभी लोगों की दाईं आंख निकाल कर ऐसा करूंगा।"

शहर के अगुओं ने एक संदेश वापस भेजा। "तेरी मांगों पर विचार करने के लिए हमें सात दिन का समय दें। हम उस समय का उपयोग करेंगे यह देखने के लिए कि क्या इस्राएल में कोई भी हमारी मदद करने में सक्षम है। यदि नहीं, तो हम तेरी शर्तों का पालन करेंगे।"

शहर के अगुओं ने सारे इस्राएल में अपने दूत भेजें। जब इस बात का समाचार शाऊल के शहर में आया, तो लोग विलाप करने लगे और रोने लगे। शाऊल मैदान में एक दिन का काम खत्म करने के बाद अपने बैलों के साथ शहर आया। उसने चारों ओर देखा और कहा, "हर कोई क्यों रो रहा है?" उन्होंने उसे अम्मोनियों के राजा की शर्तें बताईं।

इन शब्दों को सुनकर, शाऊल के भीतर क्रोध धधक गया, और परमेश्वर के आत्मा ने उसकी आत्मा पर नियंत्रण कर लिया। उसने मुड़कर अपने ही बैलों मे से एक जोड़ी बैल को मार डाला। उसने उन्हें टुकड़ों में काट दिया और उन्हें इस संदेश के साथ पूरे इस्राएल मे भेजा,जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे ना हो लेगा उसके बैलों से यही किया जाएगा ।"

जैसे ही लोगों ने यह संदेश सुना, वह प्रभु के भय से भर गए। शाऊल का लड़ाई में पीछा करने के लिए 330,000 आदमी एक साथ आए।

उसने शहर को एक संदेश भेजा, जो अम्मोनियों के खतरे में था। "हम तुम्हारी रक्षा के लिए एक सेना ला रहे हैं। हम मध्य सुबह से पहले वहां पहुंचेंगे।"

शहर के लोग बहुत खुश थे। उन्होंने अम्मोनी राजा को एक संदेश भेजा और कहा, "हम कल तुम्हारे पास आएंगे। फिर तू हमारे साथ जो चाहें कर सकता हैं।"

सूर्योदय से पहले, शाऊल की सेना ने अम्मोनी के शिविर पर हमला किया। इस्राएलियों ने सुबह और दोपहर में अम्मोनियों को मारना जारी रखा। कुछ ही भाग निकले।

इस महान जीत के बाद, लोगों ने शमूएल से कहा, "वे कौन लोग हैं जो शाऊल के हमारे राजा होने के बारे में निराश थे? हमें उनके नाम दें और हम उन्हें मार डालेंगे। "

शाऊल बोला, "नहीं! उन्हें मत मारो! आज बहुत खास दिन है। आज, प्रभु ने इस्राएल को छुड़ाया हैं ।"

शमूएल ने कहा, "मेरे पास एक बेहतर विचार है। चलो एक साथ एकजुट होते हैं और एक बार फिर शाऊल को अपना राजा बनाते हैं।" इसलिए लोगों ने

एकजुट होकर और शाऊल को अपना राजा बनाकर आनन्द मनाया ।

83 परीक्षा में असफल

1 शमूएल 13

जब शाऊल इस्राएल का राजा बना, तो लोगों को लोहे के औजार खरीदने के लिए पलिश्तियों के पास जाना पड़ता था। जब ये उपकरण खराब हो जाते थे, तो लोगों को पलिश्तियों के पास वापस जाना पड़ता, क्योंकि उन्हें लोहार रखने की अनुमति नहीं थी। लेकिन पलिश्तियों ने इस्राएल के लोगों को युद्ध के हथियार नहीं बेचे। आधुनिक तलवार और भाले रखने वाले एकमात्र व्यक्ति शाऊल और उसका बेटा योनातान थे।

राजा के रूप में, शाऊल ने 3,000 लोगों की एक सेना का आयोजन किया।

उसने व्यक्तिगत रूप से 2,000 लोगों की देखरेख की, और अपने बेटे को 1,000 दिए। योनातान अपने आदमियों को ले गया और पलिस्तीन चौकी पर हमला किया। शाऊल जानता था कि यह युद्ध का एक कार्य है, इसलिए उसने जल्दी से तैयारी में अपनी सेना बनाने की कोशिश की।

पलिश्तियों ने बल के साथ इस हमले पर प्रतिक्रिया की। उन्होंने 3,000 रथों, 6,000 घुड़सवारों और भारी संख्या में सैनिकों के साथ इस्राएल में गए।

जब उन्होंने इस विशाल सेना को अपनी भूमि में आते देखा तो इस्राएल के लोग घबरा गए। शाऊल की सेना के अधिकांश लोग अपने जान बचाने के लिए भागे। वे जहां भी छिप सकते थे, छिप गए। वे गुफाओं में, चट्टानों के बीच, और कुओं में नीचे छिप गए। कुछ ने देश छोड़ भी दिया। अन्य पलिश्ती सेना में शामिल हो गए!

शमूएल ने राजा से कहा कि वे तब तक युद्ध में न उतरें जब तक वे प्रभु के लिए बलिदान नहीं कर देते। उसने शाऊल से कहा कि वह किसी खास जगह पर जाए और उसका इंतज़ार करे। राजा उस स्थान पर गया, लेकिन शमूएल वहां नहीं था। उसने तीन दिन — चार दिन इंतजार किया। फिर भी, शमूएल नहीं आया। उसने पांच दिन — छह दिन इंतजार किया। शमूएल नहीं आया।

शाऊल ने देखा कि उसके लोग सेना को छोड़ रहे हैं। अंत में, सातवें दिन, उसने महसूस किया कि वह अब और इंतजार नहीं करेगा। उसने होमबलि के लिए ज़रूरी चीज़ें लीं और उन्हें चढ़ाया। जैसे ही बलिदान समाप्त हुआ, शमूएल आ पहुँचा। शाऊल नमस्कार करने के लिए बाहर गया। भविष्यवक्ता ने कहा, "तूने क्या किया है?"

शाऊल ने कहा, "पलिश्ती आक्रमण करने वाले थे, और मेरी सेना मुझे छोड़कर जा रही है। मुझे नहीं पता कि मुझे परमेश्वर की मदद मिलेगी या नहीं। मैंने तेरा इंतजार किया, लेकिन तू नहीं आया । मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था, इसलिए मैंने अपने आप यह करने का फैसला किया। मैंने यहोवा को होमबलि दी।"

शमूएल ने कहा, "ओह, तूने मूर्ख की तरह काम किया है!

क्या तुझको यह महसूस नहीं हुआ कि यह एक परीक्षा थी? तू इसमें विफल हो गया!

यदि तूने यहोवा पर भरोसा किया होता, तो प्रभु हर समय के लिए इस्राएल पर अपना राज्य स्थापित कर लेता ।

अब तेरा राज्य लंबे समय तक नहीं टिकेगा। प्रभु को पहले ही अपने दिल के अनुसार एक आदमी मिला है। वह राजा बन जाएगा और परमेश्वर हमेशा के लिए अपना राज्य स्थापित कर लेंगे।"

शमूएल ने फिर राजा को छोड़ दिया। शाऊल ने अपने आदमियों की गिनती की और पाया कि उसके पास केवल 600 सैनिक थे। पलिश्तियों ने एक चट्टान के शीर्ष पर डेरा डाल दिया था ताकि उस महत्वपूर्ण

मार्ग को नियंत्रित कर सकें जो नीचे था। इसलिए शाऊल ने अपनी छोटी सेना ली और पास की विपरीत चट्टानों के ऊपर डेरा डाल दिया।

अगली कहानी में जारी

84 योनातन की विजय

1 शमूएल 14

पिछली कहानी से जारी

योनातन ने मार्ग के दूसरी तरफ पलिश्तियों के शिविर को देखा। उसने अपने कवचधारी से कहा, ''चल, वहाँ चलें और कुछ पलिश्तियों को मार डालेंगे। सिर्फ प्रभु हमारी मदद कर सकता है। उसके लिए यह मायने नहीं रखता कि हम कितने लोग हैं।"

उस आदमी ने कहा, "अगर तुम जाओगे , तो मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा।"

योनातन ने कहा, "मेरी योजना यह है। हम पलिस्तीन शिविर के पिछले हिस्से में जाएंगे। हम उन्हें चट्टानों के तल पर, हमें देखने देंगे। यदि वे हमें रुकने के लिए कहते हैं, तो हम यहां वापस आएंगे। लेकिन अगर वे हमें ऊपर आने के लिए कहते हैं, तो हम विश्वास करेंगे कि यह परमेश्वर की ओर से एक संकेत है। हम जानते हैं कि प्रभु हमें जीत दिलाएंगे।"

उन्होंने फैसला किया कि वे राजा को नहीं बताएंगे कि वे कहां जा रहे थे। जब वे चट्टान पर चढ़े, तो पलिश्तियों ने उन्हें देखा। उन्होंने कहा, "देखो, इब्री अपने छिपने के स्थानों से बाहर आ रहे हैं!"

वे योनातन के पास जा पहुँचे। "ऊपर आओ, और हम तुमको एक सबक सिखाएंगे!"

योनातन ने हँसते हुए कहा, "मेरे पीछे आओ। प्रभु ने उन्हें हमें दिया है।" दो लोगों ने चट्टानों पर चढ़कर बीस पलिश्तियों को मार डाला।

जल्दी समाचार पलिश्ती शिविर के बाकी हिस्सों से फैल गया। इससे दहशत फैल गई। उन्होंने कहा, "इस्राएलियों ने हम पर पीछे से हमला किया है।"

अचानक पृथ्वी हिल गई, और उनकी घबड़ाहट आतंक में बदल गई। वे हर दिशा में भागे।

शाऊल के शिविर के लोगों ने इसे देखा और राजा को बताया। उसने चारों ओर देखा। "यहां सभी को बुलाओ और पता करो कि कौन गायब है।" उन्होंने पाया कि योनातन और उनके कवच-वाहक चले गए थे।

जैसे ही शाऊल ने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया, पलिस्तीन के शिविर में भगदड़ मच गई। जब शाऊल की सेना लड़ाई में गई, तो उसने पाया कि पलिश्तियाँ सेना आपस में लड़ रही थीं।

पलिश्तियों में शामिल होने वाले इस्राएली अब शाऊल के चारों ओर इकट्ठे हो गए। जो लोग चट्टानों और गुफाओं के बीच छिप गए, वे बाहर आए और लड़ाई में शामिल हुए। शाऊल चाहता था कि उसके लोग पूरी तरह से लड़ाई जीतने पर ध्यान दें, इसलिए वह चिल्लाया, " इस जीत से पहले जो कोई भी भोजन करता है, उसके लिए श्राप देता हूं।" उसके लोगों ने आज्ञा का पालन किया, लेकिन जल्द ही वे भूखे हो गए और थक गए।

योनातन को यह नहीं पता था कि उसके पिता ने क्या कहा था। उसने जंगल में कुछ शहद पाया और उसे खा लिया। अन्य लोगों ने तुरंत उसे राजा के आदेश के बारे में बताया। उसने कहा, "राजा को यह नहीं कहना चाहिए था। मुझे देखो। मैंने कुछ शहद खाया, अब मैं फिर से लड़ने के लिए तैयार हूं। हमारे लोगों को यह सब खाना चाहिए, जिसे पलिश्ती पीछे छोड़ आए हैं। तब वे कड़ी लड़ाई लड़ेंगे।"

शाऊल को आखिरकार एहसास हुआ कि उसकी सेना भूखी है! उसने भोजन तैयार करवाया और अपने आदमियों को खाने की अनुमति दी। राजा फिर युद्ध में वापस जाना चाहता था, लेकिन अचानक कुछ गलत होने का एहसास हुआ। उसने सभी को एक साथ बुलाया और कहा, "कुछ गलत है, और मैं यह पता लगाने जा रहा हूं कि इसके पीछे कौन है। एक बार मुझे पता चल गया कि यह कौन है, तो उसे मौत

के घाट उतार दिया जाएगा, भले ही वह मेरा ही बेटा क्यूँ ना हो।"

फिर उन्होंने चिट्ठिया डाली, और उसमें योनातन का नाम आया। राजा ने उससे पूछा, "तूने क्या किया?"

"मैंने थोड़ा शहद खाया। अगर मैं उसके लिए मर जाऊं, तो मैं मरने के लिए तैयार हूं।

शाऊल ने अपने बेटे से कहा, "मैंने शपथ ली, इसलिए तुम्हें मरना होगा।"

लोग चिल्लाए, "योनातन नहीं मारा जाएगा ! परमेश्वर ने आज हमें जीत दिलाने के लिए उसका इस्तेमाल किया। प्रभु के जीवन की शपथ , उसके सिर का एक भी बाल जमीन पर नहीं गिरेगा।

इसलिए लोगों ने योनातन की जान बचाई। उसी के साथ, लड़ाई खत्म हो गई और पलिश्ती अपने अपने क्षेत्र में लौट आए।

85 शाऊल का आज्ञा न मानना

1 शमूएल 15

एक दिन शमूएल परमेश्वर का निर्देश लेकर शाऊल के पास गया। उसने कहा, "जब मैं मिस्र से बाहर आया , तब अमालेकियों ने मेरे लोगों पर हमला किया। इसलिए, उनके साथ युद्ध कर, और सब कुछ नष्ट कर दे। सभी लोगों और उनके सभी पशुधन को मार डाल । कुछ भी जीवित न छोड़ना।

इसलिए शाऊल ने अपनी सेना ली और अमालेकियों पर हमला किया। उसने उन्हें हराया, लेकिन सब कुछ नहीं मारा। शाऊल के लोगों ने अपने लिए सबसे अच्छे पशुओं को रख लिया। उन्होंने राजा अगाग पर भी कब्जा कर लिया और उसे नहीं मारा।

यहोवा ने शमूएल से कहा, "मुझे अफसोस है कि मैंने इस्राएल पर शाऊल को राजा बनाया। वह मेरे पीछे नहीं चलता है और जैसा मैं कहता हूं वैसा वह नहीं करता है।

शमूएल ने उसकी आत्मा में शोक मनाया, और सारी रात प्रार्थना की। अगली सुबह, वह शाऊल के पास गया।

जब भविष्यवक्ता उसके पास गया, तो राजा ने कहा, "प्रभु आपको आशीष दे। मैंने वही किया है जो परमेश्वर ने मुझे करने के लिए कहा था।"

शमूएल ने उसकी ओर देखा और कहा, "फिर मैं भेड़ और मवेशियों की आवाज़ क्यों सुन रहा हूँ?"

"ओह, सैनिकों ने सबसे अच्छे पशुधन को बचाया ताकि हम उन्हें प्रभु के लिए बलिदान कर सकें। लेकिन हमने बाकी को नष्ट कर दिया।"

शमूएल ने कहा, "बात करना बंद कर! मैं तुझे बताता हूँ कि परमेश्वर ने तेरे बारे में क्या सोचा है। जब तू विनम्र था, परमेश्वर ने तुझको अपने लोगों पर राजा बनाया। फिर उसने तुझको एक काम करने के लिए दिया। उसने कहा, जा इन अत्यंत पापी लोगों को मार डाल। किसी भी व्यक्ति या जानवर को जीवित न रहने दें। उसने तुझे जो करने के लिए कहा था, उसे न करके तूने उसे क्रोधित क्यों किया?"

शाऊल ने कहा, "मैंने उसकी आज्ञा मानी। मैंने उनके राजा अगाग को छोड़कर सभी को मार डाला। और फिर मैंने इन कुछ पशुओं को छोड़कर सभी जानवरों को मार दिया। हमने बलिदान के लिए सर्वश्रेष्ठ रखें हैं।"

शमूएल ने कहा, "क्या तुझको लगता है कि प्रभु आज्ञाकारिता से अधिक बलिदान चाहता हैं? नहीं! आज्ञा को पालन करना, बलिदान करने से बेहतर है। विद्रोह, जादू टोने के पाप के समान है। जिद करना मूर्तियों की पूजा करने जितना ही खराब है। तूने परमेश्वर की आज्ञा को अस्वीकार कर दिया। इसलिए, उसने तुझको इस्राएल के राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है।"

शाऊल ने कहा, "मैंने पाप किया है! मैं अब स्पष्ट रूप से देख सकता हूं कि मैंने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी और तेरी बात नहीं मानी। मैं लोगों से डर गया था, और परमेश्वर के बजाय उनकी बात मान लीं थी। कृपया मेरे पाप को क्षमा कर। आ, प्रभु की एक साथ आराधना करते हैं।"

शमूएल ने कहा, "नहीं, मैं तेरे साथ नहीं जाऊँगा। तूने प्रभु को अस्वीकार किया है। अब वह तुझको राजा के रूप में अस्वीकार कर रहा है।"

शाऊल ने शमूएल के कपड़े को पकड़ लिया और जब वह चला तो कपड़ा फट गया। शमूएल रुक गया और कपड़े के फटे हिस्से को देखा। उसने कहा, "प्रभु ने आज ही के दिन तुझ से इस्राएल का राज्य छीन लिया है। उसने इसे तेरे पड़ोसी को दे दिया है, जो

तुझसे बेहतर है। प्रभु लोगों की तरह नहीं है, वह अपना विचार नहीं बदलेगा।।

शाऊल चिल्लाया, “मैंने पाप किया है! मैं केवल इतना चहता हूं कि तू लोगों के सामने मेरा सम्मान करे। आ, मेरे साथ आराधना कर। ”

इसलिए शमूएल उसके साथ गया, और उसने उसे प्रभु के सामने झुकने की अनुमति दी। भविष्यवक्ता ने तब कहा, "अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आ ।"

अगाग शमूएल से पहले आया, वह नहीं जानता था कि क्या उम्मीद की जाए। शमूएल ने एक तलवार ली और कहा, '' तूने बहुत सी महिलाओं को निःसंतान बना दिया। अब तेरी माँ निःसंतान होगी।”
भविष्यवक्ता ने अगाग को मार डाला और उसे टुकड़ों में काट दिया।

तब शमूएल अपने घर लौट आया। जब तक वे जीवित रहा, वह कभी शाऊल से नहीं मिला। फिर भी, वह उसके लिए दुखी रहा।

86 दाऊद का अभिषेक

1 शमूएल 16

शमूएल ने यह सोचना बंद नहीं किया कि परमेश्वर ने इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल को कैसे अस्वीकार कर दिया। यहोवा ने शमूएल से कहा, “शाऊल के बारे में सोचना बंद कर! अभिषेक का तेल लें और बैतलहम में यिशै के घर जा। मैंने उसके एक बेटे को राजा बनने के लिए चुना है।"

शमूएल ने कहा, "परमेश्वर, राजा शाऊल को पता चला तो वह मुझे मार डालेगा।"

प्रभु ने कहा, “बेतलेहम में एक बछड़ा ले जा और कह कि तू प्रभु के लिए बलिदान करने जा रहा है। उसमें शामिल होने के लिए यिशै और उसके बेटों को आमंत्रित कर। मैं तुझको दिखाऊंगा कि किस को अभिषेक करना है।"

इसलिए शमूएल बेतलेहेम गया। उसे देखते ही शहर के अगुए डर गए। वे उससे मिले और कहा, "क्या आप शांति के साथ आ रहे हैं?"

भविष्यवक्ता ने कहा, “हाँ, मैं यहोवा के लिए बलिदान करने आया हूँ। जाओ यिशै और उसके बेटों को बुलाओ और उन्हें मेरे पास आने के लिए कहो।”

जब वे आए, तो शमूएल यिशै के सबसे बड़े बेटे से तुरंत प्रभावित हो गया । "आह," उसने सोचा, "यह वही है जिसे प्रभु चुनेंगे।"

परमेश्वर ने कहा, "शमूएल, बाहरी रूप को मत देख। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आदमी कितना लंबा या कितना बलवान है। मैं उन चीजों को देखता हूं जिन्हें तू नहीं देख सकता। वह नहीं है।"

तब यिशै ने अपने दूसरे बेटे को शमूएल से मिलवाया। फिर भी , परमेश्वर की पसंद वह नहीं था।

यिशै ने अपने सात बेटों को भविष्यवक्ता से मिलवाया। जब वह उनमें से प्रत्येक से मिला, तो प्रभु ने कहा, "यह वह नहीं हैं।"

अंत में, शमूएल ने यिशै से कहा, "क्या तेरे और बच्चे नहीं हैं?"

उसने कहा, “ओह, हाँ। मेरे पास एक और है - मेरा सबसे छोटा बेटा। वह भेड़ों की देखभाल कर रहा है।”

शमूएल ने कहा, “उसे यहाँ बुलाओ। जब तक मैं उसे नहीं देख लेता, मैं तुम्हारे साथ नहीं खाऊंगा।

जैसे ही दाऊद कमरे में आया, शमूएल देख सकता था कि वह एक अच्छा दिखने वाला युवक था - स्वस्थ और सुंदर। प्रभु ने कहा, "यही है। उठ और उसका अभिषेक कर।” इसलिए शमूएल ने उसका तेल से अभिषेक किया। उसके बाद, परमेश्वर की आत्मा राजा शाऊल पर से चला गया और दाऊद पर एक शक्तिशाली तरीके से आ गया।

उस दिन से, राजा शाऊल को निराशा से सताया गया था। उनके नौकरों को एक विचार आया। उन्होंने कहा, “हमें वीणा बजाने में कुशल व्यक्ति खोजने की अनुमति दें। जब आप उदास हो जाएंगे तो उसका संगीत आपको खुश कर देगा।”

जब शाऊल सहमत हुआ, तो नौकरों में से एक ने कहा, “मैंने एक ऐसे युवक के बारे में सुना है जो वीणा बजाने में बहुत कुशल है। वह बैतलहम से यिशै का एक बेटा है। अच्छी वीणा बजाने के अलावा, वह एक अच्छा योद्धा है और लोगों के सामने बात करने की क्षमता रखता है। वह परमेश्वर के साथ चलता है।"

इसलिए शाऊल ने यिशै को एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया की, "अपने बेटे दाऊद को मेरे पास भेज, जो भेड़ों की देखभाल करता है।" इसलिए यिशै

ने राजा के लिए दाऊद को शाऊल के पास उपहारों के साथ भेजा।

शाऊल उससे तुरंत प्रभावित हुआ। दाऊद को शाऊल का कवच उठानेवाला बनाया गया, लेकिन जब भी राजा गहरे उदासी में जाता, वह वीणा बजाता था । उसकी वीणा की आवाज़ ने राजा की आत्मा को शांत किया और उसे शांति प्रदान की।

87 गोलियत

1 शमूएल 17

पलिश्तियों ने एक बार फिर से इस्राएल पर आक्रमण किया। दोनों सेनाओं ने एक दूसरे का सामना खड्डे के पार किया। अचानक एक बड़े पलिस्तीन ने कदम आगे बढ़ाया। उसका नाम गोलियत था, और वह 9 फीट, 9 इंच लंबा था।

वह चिल्लाया, "तुम लड़ाई की तैयारी क्यों कर रहे हो? हमारे लिए केवल दो लोगों को इसका निपटारा करने दें। किसी को बाहर भेजो जो मुझसे लड़ें। अगर तुम्हारा आदमी मुझे मारता है, तो हम तुम्हारे दास होंगे। लेकिन अगर मैं तुम्हारे आदमी को मार देता हूँ, तो तुम हमारे गुलाम बनोगे। चलो, किसी को बाहर भेजो और लड़ाई होने दो।"

किसी ने उसकी चुनौती को स्वीकार नहीं किया, इसलिए वह बाहर आता, और हर सुबह और शाम को इस्राएल पर चिल्लाता था। शाऊल ने इस विशाल योद्धा को हराने वाले को इनाम की पेशकश की।

उसने कहा, "मैं उसे अमीर बनाऊंगा, और वह मेरी बेटी से शादी कर सकता है।"

जब यह सब हो रहा था, तब यिशै ने दाऊद से कहा, "अपने भाइयों के पास जा और उन्हें कुछ खाने को दे । लड़ाई कैसे चल रही है, इसके बारे में समाचार ला।"

इसलिए दाऊद जल्दी उठा और युद्ध स्थल पर चला गया। उसने देखा कि युद्ध के लिए लोग पंक्तियों में खड़े थे। उसने सेना मे खाद्य पहुँचानेवाले अफ़सर को खाना दिया और यह देखने के लिए दौड़े कि क्या चल रहा है।

अचानक, गोलियत ने अपनी चुनौती को चिल्लाना शुरू कर दिया। "आओ। किसी को यहाँ भेजो और लड़ने दो - आदमी से आदमी। विजेता को सब कुछ मिलेगा।"

सब लोग पीछे हट गए।

दाऊद हैरान रह गया। उसने कहा, "यह पलिस्ती अपने आप को क्या समझता है? वह जीवित परमेश्वर की सेनाओं को चुनौती दे रहा है।

दाऊद के सबसे बड़े भाई को गुस्सा आ गया। "तू यहाँ क्यों आया है ? अपनी भेड़ों के पास वापस जा। युद्ध पुरुषों के लिए है।"

दाऊद ने उसे जवाब दिया। "मैंने कुछ गलत नहीं किया। मैंने सिर्फ एक सवाल पूछा।" उसने मुड़कर सवाल फिर पूछा। "यह अधर्मी पलिस्ती अपने आप को क्या समझता है?"

शाऊल ने दाऊद के सवाल के बारे में सुना और उसे बुलाया। दाऊद ने कहा, "इस पलिस्ती के बारे में चिंता मत कर। मैं उससे लड़ूंगा।"

राजा ने कहा, "वह एक योद्धा है - एक अनुभवी योद्धा। तू युवा हैं, जिसके पास कोई अनुभव नहीं है।"

दाऊद ने कहा, "मैं अपने पिता की भेड़ें देखता हूं। हर बार जब कोई भालू या शेर आया और एक भेड़ को लेने की कोशिश की, तो मैंने जानवर को पकड़ लिया और उसे मार डाला। प्रभु हमेशा मेरे साथ था और मुझे जीत दिलाई। यह अधर्मी पलिस्तीन भी शेर या भालू की तरह है। प्रभु मुझे उस पर भी विजय दिलाएगा।"

शाऊल ने कहा, "जा, और प्रभु तेरे साथ रहे।"

फिर उसने दाऊद को अपना कवच दे दिया, लेकिन दाऊद चल नहीं पाया क्योंकि वह बहुत भारी

था। उसने कहा, "मैं ये नहीं पहन सकता। यह मेरे लिए एक बाधा होगी।"

दाऊद ने अपने चरवाहे के लाठी और एक गोफन लिया। वह नदी के पास गया और पांच चिकने पत्थर चुनें और उन्हें अपने चरवाहे के थैले में डाल दिया। फिर वह उस विशाल व्यक्ति की ओर चलने लगा।

गोलियत ने दाऊद को आते देखा। वह चिल्लाया, "क्या मैं एक कुत्ता हूँ कि तू मेरे पास लाठी लेकर आया है?" आ, और मैं तेरा मांस पक्षियों को दूंगा।"

दाऊद चिल्लाया, "तू मेरे पास तलवार और भाला लेकर आया है, लेकिन मैं प्रभु के नाम से तेरे पास आता हूं। तूने उसका अपमान किया है इसलिए मैं तेरा सिर काटकर पक्षियों को देने जा रहा हूं। यह लड़ाई प्रभु की है, और उसने मुझे तुझ पर विजय दिलाई है।"

गोलियत दाऊद की ओर चलने लगा, लेकिन दाऊद उसकी ओर भागा। उसने अपना हाथ अपने चरवाहे के थैले में डाला और अपनी गोफन में एक पत्थर रखा। सटीकता के साथ, पत्थर गोलियत को लगा, और वह उसके माथे में धस गया। वह आगे की ओर मुंह करके जमीन पर गिर गया।

दाऊद भागा, गोलियत की तलवार निकाली और उसका सिर काट दिया।

यह देखते ही दोनों सेनाएँ चौंक गईं। पलिश्ती मुड़कर भागे। इस्राएलियों ने जीत का नारा लगाया और उनका पीछा किया।

उस दिन कई पलिश्ती मारे गए।

शाऊल ने अब्नेर से पूछा, "वह युवक कौन है?" "मुझे नहीं पता।"

शाऊल ने दाऊद को बुलवाया। वह आया और गोलियत के सिर के साथ राजा के सामने खड़ा हो गया।

शाऊल ने कहा, "तू कौन हो? तेरा पिता कौन है?" दाऊद ने कहा, "मैं बैतलहम के यिशै का बेटा हूं।"

शाऊल ने दाऊद को घर वापस नहीं जाने दिया, और उसे सेना में सेनापति बना दिया। दाऊद वह सब कुछ करने में सफल रहा जो शाऊल ने उससे करवाया।

88 दाऊद को पत्नी मिलना

1 शमूएल 18

गोलियत की मृत्यु के बाद, शाऊल का पुत्र, योनातन, दाऊद का घनिष्ठ मित्र बन गया। इन दोनों के बीच का प्यार बहुत अच्छा था। योनातन ने दाऊद को युद्ध के मैदान पर लड़ने के लिए आवश्यक सभी चीजें दीं, और यह भी कि राजा के दरबार में काम करने के लिए उसे क्या चाहिए।

दाऊद सेना में एक सेनापति के रूप में सफल था। सभी लोगों ने उसकी प्रशंसा की और उसके लोग उसके प्रति वफादार हो गए थे। एक दिन जब शाऊल और उसकी सेना युद्ध से वापस आए, तो विभिन्न शहरों की महिलाओं ने उनका स्वागत नृत्य और गायन के साथ किया। उनका गीत था, "शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा।"

इससे शाऊल भड़क गया! उसने कहा, "उनकी बात सुनो। वे उसे मुझसे ज्यादा श्रेय दे रहीं हैं। वे आगे क्या करेंगे? उसे राज्य देंगे? " उस दिन से, शाऊल दाऊद से अधिक ईर्ष्या करने लगा।

अगले दिन, परमेश्वर ने शाऊल पर नियंत्रण करने के लिए एक बुरी आत्मा को अनुमति दी। वह पागल होने लगा। जब राजा इनमें से किसी ऐसी स्थिति में होता था, तब वीणा को बजाना दाऊद का काम था। जब दाऊद ने बजाया, तो शाऊल ने खुद से कहा, "मैं इसे अभी समाप्त करूंगा। मैं उसे दीवार पर टांग दूंगा।" जब समय सही था, तो उसने एक भाला पकड़ा और दाऊद पर फेंक दिया। दाऊद ने उसे सही समय पर देखा और बच गया और वीणा बजाता रहा। शाऊल ने इंतजार किया, और एक बार फिर जब समय सही था, उसने एक और भाला पकड़ा और दाऊद पर फेंक दिया। फिर दाऊद ने उसे सही समय देखा और फिर बच गया।

उस के साथ, शाऊल ने महसूस किया कि प्रभु की आत्मा ने उसे छोड़ दिया था और अब आत्मा दाऊद के साथ थी। राजा का गुस्सा डर से बदल गया।

उसने दाऊद को 1,000 सैनिकों के साथ रखा और उसे युद्ध के लिए बाहर भेज दिया। दाऊद अपने हर अभियान में सफल रहा। इससे लोगों में उसके लिए प्यार बढ़ा, लेकिन उसने शाऊल को उससे भी ज्यादा डरा दिया।

राजा की बेटियों में से एक, जिसका नाम मीकल था , दाऊद से प्यार करती थी। जब शाऊल को इस बारे में पता चला, तो उसे एक विचार आया। उसने सोचा पलिश्ती दाऊद को मार डालेंगे। राजा ने अपने सेवकों को दाऊद के पास जाकर कहने को कहा, "राजा तुम्हें इतना पसंद करता है कि वह तुम्हें दामाद बनने के लिए तैयार है।"

जब दाऊद ने यह सुना, तो उसने कहा, "मैं एक अमीर आदमी नहीं हूँ। मैं राजा को उसकी बेटी के लिए कुछ भी नहीं दे सकता हूँ।

"ओह, राजा नहीं चाहते कि तू उन्हें पैसे दें। वह चाहता है कि तू उसके दुश्मनों से बदला लें। वह चाहता है कि तू 100 पलिश्तियों को मारें, और सबूत वापस लाएँ कि वे मर चुके हैं।"

दाऊद इन शर्तों से प्रसन्न था। इसलिए उसने और उसके लोगों ने बाहर निकलकर 200 पलिश्तियों को मार डाला और शाऊल को सबूत दे दिया कि वे मर चुके हैं। शाऊल के पास अपनी बेटी मीकल को दाऊद को देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

शाऊल ने दाऊद को अब और भी अपना दुश्मन माना। फिर भी, यहोवा ने दाऊद को हर बार युद्ध में

जीत दिलाई। वह अन्य सभी सैन्य अधिकारियों की तुलना में अधिक सफल था और उसका नाम अधिक से अधिक प्रसिद्ध हो गया।

89 दाऊद की रक्षा करना

1 शमूएल 19

शाऊल दाऊद को मरवाना चाहता था। इसलिए उसने अपने सेवकों और योनातन को उसे खोजने और उसे मारने के लिए कहा। योनातन ने दौड़कर दाऊद से कहा, "जा और छिप जा। मैं अपने पिता से बात करूंगा और देखूंगा कि क्या मैं उसे मना सकता हूं। अगर मैं सफल होता हूं तो तुझको बता दूंगा।

योनातन ने अपने पिता से बात की और उसने बताया कि दाऊद एक वफादार सेवक है और राजा को नुकसान पहुँचाने के लिए कुछ नहीं करेगा। शाऊल ने अपने बेटे की बात सुनी और दाऊद को जाने देने का वादा किया। इसलिए दाऊद राजा के दरबार में वापस गया और उसकी सेवा की। पलिश्तियों के साथ एक बार फिर युद्ध छिड़ गया और दाऊद ने सेना को उनके खिलाफ जीत में नेतृत्व किया।

एक बार फिर प्रभु ने एक दुष्ट आत्मा को राजा में प्रवेश करने की अनुमति दी। जब दाऊद वीणा बजा रहा था, तब शाऊल ने एक भाला लिया और उस पर फेंका। दाऊद उसके सामने से कूदकर कमरे से भाग गया।

शाऊल ने अपने पहरेदारों को बुलाया और कहा कि वे सुबह दाऊद के घर जाएं और उसे मार डालें। मीकल ने इस बारे में सुना और अपने पति को चेतावनी दी। "तू आज रात यहां से जा। वे तुझको मारने के लिए सुबह यहां आएंगे।"

वह खिड़की से बाहर चला गया और मीकल ने उसकी मदद की। उसने उसके बिस्तर में एक छवि रखी और उसके ऊपर बकरी के बाल रख दिए। फिर उसने उसे एक कंबल से ढक दिया। सुबह उसने पहरेदारों से कहा, "वह बीमार है और बिस्तर में है।"

उन्होंने जाकर राजा को बताया। उसने कहा, "जाओ! मेरे लिए दाऊद को बिस्तर समेत ले आओ, और मैं उसे खुद मार डालूंगा।"

जब वे बिस्तर तक गए, तो उन्हें छवि और बकरी के बाल मिले। शाऊल मीकल पर चिल्लाया।

"तू मुझसे कैसे झूठ बोल सकती हैं और मेरे दुश्मन को दूर जाने दे सकती है?"

उसने कहा, "उसने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया। उसने कहा कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो वह मुझे मार देगा ।

दाऊद शमूएल के पास गया और उसे वह सब कुछ बताया जो हुआ था। शाऊल को पता चला कि दाऊद शमूएल के साथ था, इसलिए उसने उसे लाने के लिए पहरेदार भेजे। जब वे वहां पहुंचे, तो उन्होंने शमूएल को कुछ नबियों के साथ बैठे हुए देखा। अचानक पहरेदार बैठ गए और भविष्यवाणी करने लगे।

शाऊल ने इस बारे में सुना, इसलिए उसने और पहरेदार भेजे। उनके साथ भी यही हुआ। वे बैठे और भविष्यवाणी करने लगे। इसलिए शाऊल ने तीसरी बार पहरेदार भेजे, और वे बैठे और भविष्यवाणी करने लगे।

अंत में शाऊल खुद चला गया। जब वह जहां थे, उसके करीब पहुंचा, तो परमेश्वर का आत्मा उस पर आ गई और वह भी भविष्यद्वाणी करने लगा, जबकि वह साथ चल रहा था। जब उसने घर में प्रवेश किया, तो राजा ने अपने कपड़े उतार दिया थे क्योंकि वह भविष्यवाणी कर रहा था। फिर वह गिर गया और उस दिन, और पूरी रात, वह नग्न रहा।

90 तीन तीर

1 शमूएल 20

दाऊद ने कहा, "योनातन, तुम्हारा पिता मुझे मारने की कोशिश क्यों कर रहा हैं? मैंने किया क्या है?"

उसने कहा, "राजा तुझे नहीं मारना चाहता। क्योंकि अगर वह ऐसा चाहता तो मुझे पता होता। वह मुझसे कुछ नहीं छिपाता है।

दाऊद ने कहा, "जैसा कि परमेश्वर का अस्तित्व निश्चित है, और यह सत्य सुनिश्चित है कि तू जीवित हैं, तेरा पिता मुझे मारना चाहता है। वह तुझे नहीं बताता क्योंकि वह जानता है कि हम सबसे अच्छे दोस्त हैं।

योनातन ने कहा, "तू क्या चाहता है मैं क्या करूं? मुझे बता और मैं वह करूँगा।

दाऊद ने कहा, "कल, मुझे राजा के साथ तीन दिवसीय भोज में जाना है। अगर वह यह ध्यान देता है कि मैं वहां नहीं हूं, तो उसे बताना कि तूने मुझे एक वार्षिक बलिदान के लिए बेतलेहम जाने की अनुमति दी है। उसे बताना कि यह महत्वपूर्ण था कि मैं वहां रहूं क्योंकि इसमें मेरा पूरा वंश शामिल होगा।

"यदि तेरा पिता उस उत्तर को स्वीकार कर लेता है तो हमें पता चल जाएगा कि सब ठीक है और वह मुझसे नफरत नहीं करता । लेकिन अगर वह गुस्सा हो जाता है, तो यह हम दोनों के लिए स्पष्ट होगा कि वह मुझे मारना चाहता है।

"योनातन, अगर तुझको पता चलता है कि उसके पास मुझसे नफ़रत करने का अच्छा कारण है, तो आ ... और तू खुद मुझको मार डालना।"

योनातन ने कहा, "मुझे पता चलेगा कि मेरा पिता तेरे बारे में क्या सोचता है। यदि तू सही हैं और वह तुझको मारना चाहता है, तो मैं तुझको शांति से भेज दूंगा। लेकिन याद रखना, हमने एक-दूसरे को यहोवा के सामने एक वचन दिया है। अगर मैं मर जाऊं और यहोवा तेरा भला करे, तो मेरे परिवार का ख्याल रखना। मेरे घरवालों से प्यार करना जैसे कि वे तेरे अपने है।

"मेरी योजना यह है। मैदान में बड़ी चट्टान के बगल में छिप जाना। मैं यह जानने की कोशिश करूंगा कि मेरा पिता तेरे बारे में क्या सोचता हैं। फिर मैं यहां आऊंगा और चट्टान की ओर तीन तीर चलाऊंगा। मैं उन्हें लाने के लिए अपने नौकर को भेजूँगा। जब वह जाता है, तो मैं उससे चिल्लाकर कुछ कहूंगा। अगर मैं कहूं, कि तीर तो चट्टान के इस तरफ हैं। यह तेरे लिए संकेत है कि सब ठीक है और तू वापस आ सकता हैं।

"लेकिन अगर मैं चिल्लाता हूं, तीर चट्टान के दूसरी तरफ हैं, तो यह तेरे लिए यह संकेत है कि तुझको अपने जीवन को बचाने के लिए भागना चाहिए, क्योंकि मेरे पिता तुझको मारने की कोशिश कर रहा है।"

भोज के पहले दिन के दौरान, शाऊल ने देखा कि दाऊद अपनी जगह पर नहीं था, लेकिन उसने कुछ भी नहीं कहा। दूसरे दिन शाऊल ने योनातन से कहा, "वह यिशै का बेटा कहाँ है? वह अब तक दोनों दिन यहां नहीं था।"

"ओह, मैंने उसे बेतलेहम जाने की अनुमति दी। उसका परिवार एक बड़ा वार्षिक बलिदान कर रहा है, और उनके भाइयों ने जोर देकर कहा कि वह वहाँ रहे।

शाऊल अपने बेटे पर चिल्लाया। "तू एक वेश्या का बेटा! मुझे पता है कि तू क्या कर रहा है तू उसका पक्ष ले रहा हैं। क्या तुझको एहसास नहीं है कि वह तेरा राज्य छीनने वाला है? तू हमारे परिवार के लिए

शर्म का कारण हैं। अब जा और उसे यहाँ ले आ ताकि मैं उसे मार सकूँ।"

योनातन वापस चिल्लाया। "उसने क्या किया है? तू उसे क्यों मारना चाहता है?

शाऊल ने एक भाला पकड़ा और अपने बेटे पर फेंक दिया। योनातन मेज से उठकर चला गया।

उसने पूरे दिन खाना नहीं खाया क्योंकि अपने पिता की वजह से शर्मिंदा था।

सुबह वह अपने नौकर के साथ खेत में गया। उसने चट्टान से परे तीन तीर मारे। जैसा कि नौकर उन्हें पाने के लिए भागा, योनातन चिल्लाया, "वे उस चट्टान के दूसरी ओर हैं। तुझको जल्दी करने की ज़रूरत है। जितनी जल्दी हो सके जा।"

सेवक ने तीरों को पाया और उन्हें वापस लाया। तब योनातन ने उसे उपकरण लेने और शहर वापस जाने के लिए कहा।

उसके जाने के बाद, दाऊद छिपकर बाहर आ गया। दोनों गले मिले और रोए। योनातन ने कहा, "तू सही था। मेरा पिता तुझको मारना चाहता है। जा। लेकिन एक-दूसरे और अपने बच्चों और मेरे बच्चों के बीच की प्रतिज्ञा को याद रखना ।"

इस प्रकार, दाऊद चला गया और योनातन शहर वापस चला गया।

91 शाऊल से भागना

1 शमूएल 21 - 22

दाऊद शाऊल के सामने से भाग गया, उसके पास उसकी मदद करने के लिए कुछ ही आदमी थे। वे याजक अहीमेलेक के पास गया, जो परमेश्वर के सन्दूक का प्रभारी था । याजक ने कहा, "तुम यहाँ क्यों हो?"

"राजा ने मुझे एक विशेष काम पर भेजा है। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे किसी को भी यह नहीं बताना चाहिए कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं इतनी तेजी से गया कि हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है। कृपया हमें कुछ रोटी दें।"

अहीमेलेक ने कहा, "हमारे पास जो रोटी है, वह पवित्र स्थान की भेंट की रोटी है। केवल याजक को इसे खाने की अनुमति है।"

वह पुरानी रोटी थी जिसे उन्होंने वेदी सेलिया था , जब उन्होंने वहाँ नई रोटी डाली। याजक ने कहा, "मुझे लगता है कि तुम पुरानी रोटी खा सकते हो, लेकिन केवल अगर तुम लोगों ने खुद को प्रभु के सामने शुद्ध रखा है।"

दाऊद ने कहा, "हम सभी राजा के लिए एक विशेष कार्य करने आए हैं, इसलिए, निश्चित रूप से, हम सभी ने प्रभु के सामने खुद को पवित्र रखा है।"

इसलिए अहीमेलेक ने उन्हें पुरानी रोटी दी। दाऊद ने देखा कि एदोमी दोएग ने इस पूरे मामले को देखा। वह शाऊल के लिए मुख्य चरवाहा था।

दाऊद ने अहीमेलेक से कहा, "मैं इतनी तेजी से निकला कि अपने हथियार लाना भूल गया। क्या आपके पास एक भाला या तलवार है जिसका मैं उपयोग कर सकता हूं?"

"मेरे पास एकमात्र तलवार वही है जो तुमने गोलियत से ली थी। तू उसे वापस ले सकता हैं। मेरे पास बस वही है।" दाऊद ने तलवार ले ली और शाऊल से दूर भागता रहा। वह पलिश्तियों के शहर गाद में गया। वहाँ, वह शाऊल की पहुँच से बाहर होगा। लेकिन लोगों ने पलिश्तियों के राजा से कहा, "यह दाऊद है, जिस के बारे में वे गाते हैं: शाऊल ने हजारों को मार डाला, लेकिन दाऊद ने लाखों को मार डाला।"

जब दाऊद ने यह सुना, तो उसने तुरंत दिखावा किया कि वह पागल है। उन दिनों में, लोगों ने उन लोगों को चोट नहीं पहुंचाई जो पागल थे, क्योंकि वे डरते थे कि उनमें कोई दुष्ट आत्मा हो सकती है। दाऊद नीचे गिर गया और उसने दरवाजे की चौखट पर खरोंच करना शुरू कर दिया। उसने अपनी दाढ़ी में लार को बहने दिया। जब राजा ने यह देखा, तो उसने कहा, "यह आदमी पागल है। उसे यहाँ से निकालो!"

दाऊद गाद से चला गया, और एक गुफा में छिप गया। उसके भाई उन्हें उनके सभी रिश्तेदारों के पास ले आए ताकि वे शाऊल से सुरक्षित रहें। दाऊद अपने माता-पिता को मोआब ले गया और उन्हें वहां के राजा की रक्षा में छोड़ दिया।

जल्द ही लोग दाऊद से मिलने के लिए पहुंचने लगे। ये ऐसे पुरुष थे जो किसी तरह की परेशानी में थे या कर्ज से परेशान थे। अंत में दाऊद के चारों ओर 400 आदमी थे, और वह उनका नेता बन गया।

इस बीच, एदोमी दोएग, शाऊल के पास गया और कहा, "मैंने देखा कि अहिमेलेक दाऊद को भोजन और गोलियत की तलवार दे रहा है।"

शाऊल ने अहीमेलेक और उसके साथ आए सभी 85 याजकों को बुलवाया। "तुमने यिशै के बेटे की

मदद क्यों की? तुम्हें पता है कि वह मुझे मारना चाहता है।"

अहिमेलेक ने कहा, "मुझे लगा कि वह तुम्हारा वफादार नौकर है। आखिरकार, वह तुम्हारा दामाद हैं। मुझे नहीं पता था कि तुम्हारे बीच परेशानी है।"

शाऊल अपने पहरेदारों की ओर मुड़ा और कहा "इन आदमियों को मार डालो। वे दाऊद की तरफ हैं। "

पहरेदार चौंक गए। वे इस कारण आगे नहीं बढ़े क्योंकि वे प्रभु के याजकों को नहीं मारना चाहते थे।

शाऊल ने तब एदोमी दोएग को देख कहा "इन सभी लोगों को मार डाल और हर एक चीज़ जो उनकी है।" इसलिए, दोएग ने सभी याजकों, उनकी पत्नियों, उनके बच्चों और यहां तक कि उनके पशुओं को भी मार डाला। केवल अहिमेलेक का एक पुत्र बच सका। उसने दौड़कर दाऊद को जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बताया।

92 - शाऊल के कपड़े का कोना

1 शमूएल 24

शाऊल एक जगह से दूसरी जगह दाऊद का पीछा करने लगा। एक बिंदु पर, वे एक बड़े चट्टानों के गढ़ में आए।

दाऊद और उसके लोग एक तरफ थे, और शाऊल की सेना दूसरी तरफ थी। अगर शाऊल थोड़ा दूर चला जाता, तो वह दाऊद को देख लेता और उसे पाने में सक्षम हो जाता।

तभी, एक दूत शाऊल के पास गया और कहा, "जल्दी कर! तुझको वापस आने की ज़रूरत है। पलिश्तियों ने हमारी भूमि पर आक्रमण कर दिया हैं!" इसलिए शाऊल को पलिश्तियों से अपने राष्ट्र को बचाने के लिए वापस जाना पड़ा।

उसके बाद, उस चट्टान के गढ़ को "बचने की चट्टान" कहा गया।

दाऊद अपने आदमियों को एनगदी की घाटी में ले गया। शाऊल ने पलिश्तियों का मुकाबला करने के बाद, सुना कि दाऊद एनगदी में था। उसने अपने सर्वश्रेष्ठ सैनिकों में से 3,000 का चयन किया और उन्हें एनगदी की ओर ले गया।

रास्ते में, शाऊल रुक गया, और खुद को राहत देने के लिए एक गुफा में चला गया। वह नहीं जानता था कि दाऊद और उसकी सेना उस गुफा के पीछे थी। उसकेपुरुष उत्साहित थे कि प्रभु ने शाऊल को दाऊद को दे दिया था। वे फुसफुसाए, "उसे मार डालो!"

इसके बजाय, दाऊद चुपचाप पास आ गया और शाऊल के कपड़े के कोने को काट लिया। ऐसा करने से तुरंत उसे दोषी महसूस हुआ। उसने अपने आदमियों से कहा, "सुनो मैं क्या कह रहा हूँ। परमेश्वर ने इस्राएल पर राजा होने के लिए शाऊल का अभिषेक किया। यहां तक कि मेरी छोटी उंगली भी उसे चोट नहीं पहुंचाएगी।" उसने अपने आदमियों को पकड़ लिया ताकि शाऊल शांति से गुफा से बाहर निकल सके।

जब राजा जा रहा था, तब दाऊद बाहर आया और चिल्लाया, "मेरे प्रभु, राजा!" जब शाऊल ने रुककर पीछे देखा, तो दाऊद झुक गया।

उसने कहा, "तू किसकी सुन रहा हैं? तुमसे किसने कहा कि मैं तुम्हें चोट पहुंचाना चाहता हूं? अपने कपड़ों के कोने को देख। यह कटा है क्योंकि मैं इसे अपने हाथ में पकड़े हुए हूं। परमेश्वर ने मुझे तेरा जीवन दिया जब तू इस गुफा में आया था। मेरे लोगों ने मुझसे कहा कि मुझे तुझे मारना चाहिए, लेकिन मैंने तुझे नहीं मारा क्योंकि तू मेरे राजा है । तू परमेश्वर का अभिषेक किया हुआ हैं, और मैं तुझको कभी दुख नहीं पहुँचाऊँगा।

"मैं जो कह रहा हूं उसे सुन। मैंने तेरे खिलाफ पाप नहीं किया है। फिर भी, तू मुझे मारने की कोशिश कर रहा हैं। मैं परमेश्वर से हमारे बीच न्याय करने के लिए कह रहा हूं, और मुझे पता है कि वह चीजों को सही कर देगा । लेकिन मैं तुझे कभी चोट नहीं पहुँचाऊँगा।"

शाऊल ने जब यह सुना, तो वह फूट-फूट कर रोया। उसने कहा, "हे मेरे पुत्र, हे दाऊद, तू मुझसे अधिक धर्मी है। मेरे द्वारा किए गए सभी बुराई के बजाय तूने अच्छाई लौटाई हैं। यह कैसे है कि प्रभु ने मुझे तुम्हें दिया है, और तुमने मुझे नहीं मारा? ऐसी बात किसने सुनी है?

"अब मुझे पता है कि यह सच है। तू इस्राएल का राजा होगा । हे मेरे पुत्र, हे प्रभु, मेरी कसम खा। जब तू राजा होगा , तो मेरे वंशजों को मत मारना। मेरे पिता का नाम हमारे गोत्र से खत्म न करना ।"

इसलिए दाऊद ने शाऊल को यह वचन दिया। राजा फिर अपने आदमियों को ले कर वापस घर लौट आया। दाऊद ने अपने लोगों को गढ़ तक पहुंचाया।

93 अबीगैल

1 शमूएल 25

दाऊद और उसके लोग कालेब के वंशज में नाबाल नामक एक अमीर चरवाहे के इलाके में रहते थे। वह मतलबी और कठोर होने के लिए जाना जाता था, लेकिन उसकी एक सुंदर पत्नी थी जो दूसरों के साथ व्यवहार करने में बहुत अधिक व्यावहारिक थी। उसका नाम अबीगैल था।

क्षेत्र में दाऊद की सेना होने से नाबाल को बहुत फायदा हुआ क्योंकि विदेशी हमलावरों ने उसके झुंडों से आकर चोरी नहीं की। फिर भी, नाबाल ने दाऊद और उसके आदमियों को अपनी सालाना भेड़ों के ऊन कतर की दावत में नहीं बुलाया। इसलिए दाऊद ने एक संदेश के साथ 10 जवानों को भेजा। "तुम्हें और तुम्हारे लोगों को शांति। मैं तुम्हारा अपने पिता की तरह ही सम्मान करता हूं। तुम्हारे चरवाहे तुमको बताएंगे, कि हमने इस क्षेत्र में रहते हुए पूरे समय तुम्हारे झुंडों की रक्षा की है। हमें अपनी दावत में आने के बजाय, कृपया इन युवकों के लिए कुछ भोजन और प्रावधान भेजें।"

नाबाल ने कहा, "मैं दाऊद को नहीं जानता। मैं निश्चित रूप से उसका पिता नहीं हूं। दास हमेशा अपने स्वामी से दूर भागते रहते हैं। उसे बताओ कि वह जहां से आया है, वहां वापस चला जाए। मैं अपने नौकरों से खाना लेकर उसे अजनबियों को नहीं दूंगा।

जवान वापस चले गए और दाऊद को वह सब बताया जो कहा गया था। दाऊद ने अपने आदमियों से कहा, "अपनी तलवारें रखो। मैंने इस आदमी के सामान की रक्षा की, और वह इसके बदले अपमान करता है। सुबह तक उनके शिविर का एक भी आदमी जीवित नहीं रहेगा।"

इस बीच, नाबाल के एक नौकर ने जाकर अबीगैल को बताया कि क्या कहा और किया गया। उसने कहा, '' जब हम खेतों में थे, तब दाऊद के लोग दीवार की तरह थे। उन्होंने रात-दिन हमारी रक्षा की। हमने इस दौरान एक भी जानवर नहीं खोया। फिर भी, आपके पति ने उनका अपमान किया और उनकी मदद करने से इनकार कर दिया। आपको कुछ सोचना चाहिए क्योंकि आपके पति ने एक सेना को नाराज कर दिया है जो हम सभी को मार सकती है।"

अपने पति को बताए बिना, अबीगैल ने दाऊद के लोगों के लिए प्रावधान एकत्र किए। उसने दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु, और पांच भेड़ों का मांस, और एक बुशल भूना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ टिकियां लीं। उसने इन सभी चीजों को कुछ गधों पर रखा और सड़क पर चली गई।

जैसे ही वह एक पहाड़ की आड़ तक पहुचीं, उसने देखा कि दाऊद के आदमी उसकी ओर आ रहे हैं। वह गधे से उतर कर उसके पास गई। उसने नीचे घुटने टेके और ज़मीन की ओर मुँह करके बोली, "यह मेरी गलती है कि आपके लोगों के साथ गलत व्यवहार किया गया। अगर मैं जानती कि वे आ रहे हैं तो मैंने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया होता । मेरे पति को क्षमा कर दो। उनके नाम का अर्थ है 'मूर्ख,' और वह ऐसे ही कार्य करता है। कृपया भोजन के इन उपहारों को स्वीकार करों।

"यह परमेश्वर है जिसने आज तुझको बदला लेने से रोक दिया है। उसने हमेशा आपके लिए अपनी

लड़ाइयाँ लड़ी हैं, और वह हमेशा आपके साथ रहेगा। जब वह आपको राजा बनाएगा, तो आप इस दिन के बारे में स्पष्ट विवेक रखें।"

दाऊद ने कहा, "यह परमेश्वर ही था जिसने तुम्हें आज यहां भेजा है। तुम्हारी बुद्धि ने मुझे खून बहाने और एक ऐसे व्यक्ति से बदला लेने से रोक रखा है जिसने मुझे नाराज़ किया है। यदि तू नहीं आती, तो तुम्हारे शिविर का प्रत्येक पुरुष मर गया होता।" उन्होंने अबीगैल के उपहार स्वीकार किए।

वह घर वापस गई, और उसने देखा कि नाबाल राजा की तरह दावत कर रहा था। उसने यह नहीं बताया कि क्या हुआ था। वह नशे में धुत होकर सो गया।

सुबह में, वह उसके नशे के उतरने का इंतजार करती रही, और फिर उसे बताया कि उसने एक दिन पहले क्या किया था।

नाबाल को तुरंत दिल का दौरा पड़ा और वह 10 दिनों तक बेहोशी में रहा । तब प्रभु ने उसे मार डाला।

दाऊद ने उसकी मृत्यु के बारे में सुना और कहा, "प्रभु की स्तुति हो! परमेश्वर ने मुझे बुराई करने से रोका, और उसने नाबाल को उस बुराई के लिए दंडित किया जो उसने की थी।"

इसके बाद दाऊद ने अबीगैल को संदेश भेजकर पूछा कि क्या वह उसकी पत्नी बनेगी। वह मान गई और उसके पास चली गई।

इस बीच, शाऊल ने अपनी बेटी मीकल को दूसरे की पत्नी बनने के लिए दे दिया।

94 परमेश्वर के अभिषिक्त को बचाना

1 शमूएल 26 - 27

शाऊल ने एक बार फिर अपने सबसे अच्छे योद्धाओं में से 3,000 को लिया और दाऊद के पीछे चला गया। उस रात उन्होंने सड़क के किनारे शिविर लगाया। दाऊद ने सुना कि वे कहाँ थे, इसलिए वह रात के समय वहाँ गया।

शाऊल अपने लोगों के बीच में सो गया था। उसके आगे सेना का सेनापति अबनेर था। प्रभु ने उन सभी पर गहरी नींद डाल दीं।

दाऊद अबीशै को ले गया और ठीक उसी जगह गया जहाँ शाऊल और अबनेर सो रहे थे। अबीशै ने कहा, "आज परमेश्वर ने तुझे तेरा दुश्मन दे दिया है। तू बोल और मैं उसके बीच एक भाला घोप कर उसे जमीन में गाड़ दूंगा।"

दाऊद ने कहा, "नहीं। परमेश्वर ने उसे इस्राएल का राजा बनने के लिए अभिषिक्त किया। केवल परमेश्वर ही इसे मार सकता है। उसने शाऊल को मारने के लिए एक समय नियुक्त किया है, और हम इसे स्वीकार करेंगे। मैं कभी भी परमेश्वर द्वारा किए गए अभिषिक्त व्यक्ति को नहीं छूता हूँ।"

दाऊद ने राजा का पानी का घड़ा ले लिया और वह भाला भी जो शाऊल के सिर के बगल में जमीन में गड़ा हुआ था।

वे बिना किसी को जगाए शिविर से चले गए। जब वे अगली पहाड़ी की चोटी पर सुरक्षित दूरी पर थे, तो दाऊद शाऊल के शिविर की ओर चिल्लाया।

"अबनेर, मेरी बात सुन।"

अबनेर उठा और चिल्लाया। "तू राजा को क्यों जगा रहा है। तू कौन है?"

दाऊद ने कहा, "अबनेर, तू इस्राएल का सबसे अच्छे सैनिकों मे से है। फिर भी, तू राजा, परमेश्वर के अभिषिक्त की रक्षा करने में विफल रहा। जब तू सो रहा था तब पुरुष शिविर में आए थे।। चारों ओर देख। राजा का भाला और पानी का घड़ा कहाँ है? तुझे मौत की सजा दी जानी चाहिए।"

शाऊल वापस चिल्लाया, "मेरा बेटे दाऊद, क्या यह तेरी आवाज़ मुझे सुनाई दे रही है?"

"हाँ, मेरे राजा। यह मेरी आवाज़ है। मैंने क्या किया है, जिससे तू एक अपराधी की तरह मेरा पीछा कर रहा है? जिसने भी तुम्हें मेरे खिलाफ किया वह शापित हो। उनकी वजह से, मुझे उस देश को छोड़ना पड़ रहा है जिस पर परमेश्वर की आशीष है।"

शाऊल ने कहा, "ओह, मेरे बेटे दाऊद। एक बार फिर तेरे पास मुझे मारने का मौका था और तूने नहीं मारा। अब यह मेरे लिए स्पष्ट है कि मैंने पाप किया है। मैं एक मूर्ख हूँ। मेरे पास वापस आ जा। मैं तुझको चोट नहीं पहुंचाऊंगा।"

दाऊद ने कहा, "हां, यह सच है। प्रभु ने तुम्हें मुझे दिया, लेकिन मैं जानता था कि मुझे उनके अभिषिक्त राजा को नहीं छूना चाहिए। परमेश्वर मेरे जीवन को महत्व दे और मुझे छोड़ दे जैसे मैं तेरे जीवन को महत्व देता हूं। मैं चाहता हूं कि तू देखे कि मैं धर्मी और वफादार हूं। अपना भाला लेने के लिए एक जवान को यहाँ भेज।"

शाऊल ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम परमेश्वर के धन्य हो। तू प्रभु के लिए महान कार्य करेगा ।" इसके साथ ही राजा शाऊल अपने घर वापस चला गया।

दाऊद ने अपने आदमियों से कहा, "आखिरकार शाऊल मुझे ढूंढ लेगा, और जब वह मुझे पाएगा , तो मुझे मार डालेगा। मुझे ऐसी जगह जाना चाहिए जो उसकी पहुंच से बाहर हो। पलिश्तियों के राजा के साथ से अच्छी जगह और क्या हो सकती है।"

इसलिए दाऊद अपने 600 लोगों को गाद में ले गया। सभी अपने परिवार को अपने साथ ले गए। दाऊद ने राजा से कहा, "कृपया मुझे पास में एक छोटा शहर दें। मैं ऐसे महान राजा के शहर में रहने के लायक नहीं हूं।" इसलिए उसने दाऊद को सिकलग शहर दिया।

दाऊद और उसके लोग एक साल और चार महीने तक वहाँ रहे। पलिश्तियों के राजा ने दाऊद को अपने ही देशवासियों के रूप में विश्वास करना सीखा।

95 सामान के पास रहना

1 शमूएल 29 - 30

जब पलिश्ती इस्राएल पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगे, तब उनके राजा ने दाऊद से कहा, "तू मेरे साथ चलेगा। मैं चाहता हूं कि तू और तेरे लोग मेरे निजी अंगरक्षक बनें। "

दाऊद ने कहा, "अच्छा, अब तू देख पाएगा कि मेरे आदमी और मैं क्या कर सकते हैं।"

सभी सैन्य इकाइयाँ एक ऐसी जगह गईं जहाँ वे युद्ध की तैयारी के लिए खुद को समीक्षा में प्रस्तुत कर सकती थीं। जब उन्होंने दाऊद और उसके लोगों को देखा, तो पलिश्ती सेनापति हैरान रह गया।

उन्होंने राजा से कहा, "तुम उन इब्रानियों को हमारे साथ लड़ने के लिए नहीं ला सकते!"

उसने कहा, "दाऊद इस्राएल से निकल गया, और तब से मेरे लिए वफादार है। मेरे पास उसकी वफादारी पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।"

सेनापति क्रोधित हो गयाऔर कहा "उसे भेज! वह वही है जिसके बारे में वे गाते हैं। शाऊल ने तो हजारों को मारा है; दाऊद ने लाखों को मारा । वह अचानक लड़ाई के बीच हमारे खिलाफ हो सकता है। शाऊल की कृपा को फिर से हासिल करने के लिए यह एक अच्छा तरीका होगा।"

राजा दाऊद के पास गया। "तू एक सम्मानित आदमी हैं, और मैं व्यक्तिगत रूप से तुझको युद्ध में मेरी तरफ से चाहता हूं। लेकिन सेनापति को तुझ पर भरोसा नहीं है। इसलिए मुझे तुझको सिकलग वापस भेजना होगा।"

दाऊद ने कहा, "मैंने इसके लायक क्या किया है? मैं यहाँ आने के पहले दिन से तेरे लिए वफादार हूँ।"

राजा ने कहा, "मुझे पता है कि तुमने ऐसा किया है, लेकिन मेरे हाथ बंधे हैं। तुमको सुबह जाना होगा।"

इसलिए दाऊद और उसके लोग चले गए। जब वे सिकलग वापस आए, तो उन्होंने पाया कि विदेशी हमलावर आए थे और शहर को जला दिया था। उन्होंने किसी को नहीं मारा, लेकिन बस सभी लोगों को अपने साथ ले गए। इसमें दाऊद और उसके आदमियों की सभी पत्नियाँ, बेटे और बेटियाँ शामिल थीं।

पुरुष तब तक रोते रहे जब तक कि वे और नहीं रो सकते थे।

कुछ लोग दाऊद को पत्थर मारना चाहते थे, लेकिन परमेश्वर उसके पास खड़ा था। उसने प्रभु से प्रार्थना की, "क्या मुझे इन हमलावरों का पीछा करना चाहिए? क्या मैं उन्हें पकड़ पाऊंगा?

प्रभु ने कहा, "उनके पीछे जा। तू उन्हें पकड़ लेगा और वह सब कुछ वापस पा लेगा जो तुझसे लिया गया है।"

इसलिए दाऊद अपने 600 लोगों को ले गया और हमलावरों के पीछे चला गया। एक बिंदु पर, वे रुक गए क्योंकि उनके 200 लोग बहुत दूर रह गए थे।

तो 400 ने 200 के साथ अपने राशन छोड़ दिया और चलते रहे।

वे एक ऐसे गुलाम से मिले, जो हमलावरों से संबंधित था, लेकिन वह बीमार होने के कारण पीछे रह गया था। उसने तीन दिनों से कुछ भी नहीं खाया था। दाऊद के लोगों ने उसे भोजन और पानी दिया और उसे सजीव होने में मदद की।

दाऊद ने कहा, "क्या तू हमें हमलावरों तक ले जाएगा ?"

उसने कहा, "यदि आप शपथ लेते हैं कि आप मुझे नहीं मारेंगे, तो मैं आपको उनके पास ले जाऊंगा और आप मुझे उन्हें वापस नहीं देंगे।" दाऊद राजी हो गया।

दास ने दाऊद के आदमियों को सीधे हमलावरों तक पहुँचाया। वे जश्न मना रहे थे कि उन्होंने पलिश्तियों और इस्राएलियों से कितनी लूट छीनी थी। चेतावनी के बिना, दाऊद के लोगों ने हमला किया और उनमें से ज्यादातर को मार डाला। कुछ ही भाग निकले। दाऊद के लोगों को अपना खोया हुआ सब कुछ वापस मिल गया, साथ ही वह सारी लूट जो हमलावरों ने अन्य शहरों से ली थी।

जब वे 200 आदमियों से मिले, तो 400 में से कुछ ने कहा, "उन्होनें हमारे साथ लड़ाई नहीं की। इसलिए वे केवल अपनी पत्नियों और बच्चों को वापस ला पाए हैं। हमें कोई अतिरिक्त लूट नहीं मिली।

दाऊद ने कहा, "नहीं! यह गलत है। परमेश्वर ने आज हमें बहुत बड़ी जीत दी। हम उन लोगों के साथ समान रूप से साझा करेंगे जो हमारी सामान के पास रहे। " उस दिन से, यह इस्राएल का कानून बन गया।

दाऊद और उसके लोग सिकलग वापस चले गए। फिर उसने कुछ लूट को इस्राएल के विभिन्न शहरों में वापस भेज दिया।

96 एन्दोर की भूतसिद्धि करने वाली

1 शमूएल 28

पलिश्तियों ने इस्राएल पर अपना भारी आक्रमण शुरू कर दिया। उन्होंने उनके देश में प्रवेश किया और शिविर लगाया।

शाऊल ने अपनी सेना इकट्ठी की और युद्ध की तैयारी की। उसका शरीर डर से कांप गया जब उसने देखा कि पलिश्ती सेना कितनी बड़ी है।

उसने प्रभु से मार्गदर्शन मांगा, लेकिन परमेश्वर ने उससे बात नहीं की। सब शातं था। कोई सपना, या एक भी याजक, या एक भी भविष्यवक्ता नहीं था जिसने उसे प्रभु का संदेश दिया।

वह शमूएल से बात करना चाहता था, लेकिन वह मर गया था और शाऊल ने हर उस व्यक्ति को हटा दिया जिसने कहा था कि वे मृत लोगों से बात करने में सक्षम थे। फिर भी वह शमूएल से बात करना चाहता था। उसने अपने सेवकों से कहा, "एक ऐसी स्त्री को खोज जो मरे लोगों की आत्माओं से बात कर सके। मुझे पता लगाना होगा कि क्या होने जा रहा है।"

उन्होंने कहा, "एन्दोर में एक महिला है। वह कहती है कि वह मृतकों से बात कर सकती है।"

उस रात शाऊल ने भेष बदला, दो नौकर लिए और उस महिला के घर गया। उसने उससे कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम मेरे लिए एक आत्मा को बुलाए।"

उसने कहा, "क्या तुम मेरे लिए जाल बिछा रहे हो? तुम जानते हो कि राजा शाऊल ऐसा करने वाले को मार देगा।

उन्होंने कहा, "मेरी बात ध्यान से सुन। जैसा कि निश्चित है कि परमेश्वर जीवित है, तुझको ऐसा करने से कष्ट नहीं होगा।"

उसने कहा, "तुम मृतकों में से किसे लाना चाहते हो?"

"शमूएल को बुला। मुझे उससे बात करनी है।"

अचानक महिला ने शमूएल को देखा। वह चीख पड़ी और फिर वह पलट कर राजा पर चिल्लाई। "तुमने मुझे धोखा दिया! तू राजा शाऊल है !"

उन्होंने कहा, "इसके बारे में चिंता मत कर। अब बता, तुने क्या देखा?"

"मुझे एक आत्मा पृथ्वी में से उठता हुआ दिखाई पड़ता है।"

शाऊल ने कहा, "वो कैसा दिखता है?"

उसने कहा, "यह एक बूढ़ा आदमी है जो एक बागा पहने हुए है।"

तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिर के दण्डवत किया। भविष्यवक्ता ने कहा, "तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? तुम क्या चाहते हो?"

"ओह, मैं मुश्किल में हूँ और मुझे नहीं पता कि क्या करना है। परमेश्वर ने मुझसे बात नहीं की, और पलिश्तियों ने एक विशाल सेना के साथ देश पर आक्रमण किया। इसलिये मैं ने तुझे बुलाया। मुझे बताएं कि क्या करना है।"

शमूएल ने कहा, "प्रभु अब तेरा शत्रु है, तो तू क्यों सोचता है कि मैं तेरी सहायता करूंगा? मैंने तुझको पहले ही बता दिया था कि वह क्या करने जा रहा है। खैर, वह आखिरकार ऐसा कर रहा है। वह तेरे हाथों से राज्य को फाड़ रहा है, और तेरे पड़ोसी दाऊद को दे रहा है। तूने प्रभु की बात नहीं मानी । उसने जो

करने के लिए कहा था, उसे करने से इनकार कर दिया। इसलिए, कल तू और तेरा पुत्र मेरे साथ होंगे। इस्राएल को पलिश्तियों को सौंप दिया जाएगा।"

यह सुनकर शाऊल घबरा गया और ज़मीन पर रहा। वह कमजोर था क्योंकि उसने दिनभर से कुछ नहीं खाया था। महिला ने कहा, "मैं कुछ खाना बनाती हूँ। जाने से पहले तुझको अपनी ताकत दोबारा हासिल करनी होगी।

पहले तो राजा ने मना कर दिया, लेकिन उसके नौकर महिला से सहमत थे। अंत में, वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया, जबकि उसने भोजन तैयार किया। उसने एक मोटे बछड़े को मार डाला, उसे पकाया और कुछ रोटी सेंकी। शाऊल और उसके सेवकों ने खाना खाया और फिर रात में चले गए।

97 शाऊल और योनातान की मृत्यु

1 शमूएल 31 और 1 इतिहास 10

पलिश्तियों और इस्राएल के बीच भयंकर युद्ध हुआ था। कई इस्राएली मारे गए और अन्य युद्ध के मैदान से भाग गए। शाऊल के तीन बेटे मारे गए, जिनमें योनातान भी शामिल था।

एक तीर शाऊल को लगा और वह जानता था कि वह मरने वाला है। वह उस व्यक्ति की ओर मुड़ा जो उसका कवच-वाहक था।

और उससे कहा , "अपनी तलवार निकाल और मुझे मार डाल। यदि ये मूर्तिपूजक मुझे जीवित पाते हैं, तो वे मुझे तब तक यातना देंगे जब तक मैं मर नहीं जाता। "

कवचधारी ने अपने राजा को मारने से इनकार कर दिया, इसलिए शाऊल अपनी तलवार पर गिर गया और मर गया। जब उसके कवचधारी ने यह देखा, तो वह अपनी तलवार पर गिर गया और मर गया।

एक आदमी आया, जो इस्राएल का सैनिक था, लेकिन दूसरे देश का था। उसने देखा कि शाऊल मर चुका था, इसलिए उसने राजा का मुकुट अपने सिर पर ले लिया ताकि वह उसे दाऊद के पास ले जा सके।

जब उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने शाऊल की सेना का कुल विनाश देखा, तो उन्होंने अपने शहरों को छोड़ दिया और अपना जीवन बचाने के लिए भाग गए। पलिश्तियों ने उन शहरों में प्रवेश किया और उन्हें अपने कब्जे में ले लिया।

अगले दिन, वे शवों को लूटने के लिए खेत में वापस चले गए। तब उन्होंने शाऊल और उसके बेटों को पाया। उन्होंने शाऊल का सिर काट दिया और उसके शरीर को शहर की दीवार से लटका दिया। उन्होंने फिर उसके बेटों के शव को उसके बगल में लटका दिया। उन्होंने उसके कवच-वाहक को अपने देश वापस भेज दिया और इसे अपने देवताओं के मंदिर में रख दिया। शाऊल की मौत की खबर उनके पूरे देश में फैल गई।

जब शाऊल राजा बना था, तो सबसे पहले उसने अम्मोनियों के ख़िलाफ़ एक शहर को बचाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा था कि वे उस शहर के हर व्यक्ति की दाईं आंख को फोड़ने वाले थे।

जब उस शहर ने शाऊल के शरीर को एक दीवार से लटकाए जाने के बारे में सुना, तो उन्होंने उसे पाने के लिए पूरी रात यात्रा की।

उन्होंने शाऊल के शरीर को दीवार से उतारा, साथ ही उसके बेटों के शवों को भी उतारा। उन्हें दफनाने के बाद, उन्होंने सात दिनों तक उपवास किया।

शाऊल के मुकुट को लेने वाला व्यक्ति दाऊद को राजा शाऊल और उसके पुत्रों की मृत्यु के बारे में बताने के लिए सिकलग गया। दाऊद ने कहा, "तू कैसे जानते हैं कि शाऊल और योनातन मर चुके हैं?"

उस व्यक्ति ने कहा, "जब राजा ने मुझे देखा तो मैं युद्ध के मैदान से गुजर रहा था। वह चिल्लाया, यहाँ आ और मुझे अपनी तलवार से मार दे । ये अधर्मी कुत्ते कुछ ही मिनटों में यहां पहुंच जाएंगे। यदि वे मुझे जीवित पाते हैं, तो वे मुझे यातना देंगे।'

इसलिए मैंने जैसा कहा गया था वैसा ही किया। मैंने अपनी तलवार ली और उसे मार डाला। मैं फिर उसका मुकुट आपके पास लाया।"

दाऊद ने अपने कपड़े फाड़े और दर्द में चिल्लाया।

उसने और उसके लोगों ने शाऊल और योनातन की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया। दाऊद ने तब उस आदमी से कहा जो खबर लेकर आया था। "तूने स्वीकार किया है कि तूने प्रभु के अभिषिक्त व्यक्ति को मार डाला है।" वह अपने एक आदमी की ओर मुड़ा और कहा, "अपनी तलवार निकाल और इस आदमी को मार डालो।"

दाऊद राजा शाऊल और योनातन की मृत्यु का शोक मनाता रहा।

98 योआब और अब्नेर

2 शमूएल 2 और 1 इतिहास 2:16, 12:22

जब दाऊद सिकलग के पलिश्तीन शहर में रहता था, तब इस्राएल के सभी गोत्रों के लोग उसकी सेना में शामिल होने के लिए आते रहे। वे हर दिन आए जब तक कि उनके पास एक महान सेना नहीं थी। शाऊल की मृत्यु के बाद, दाऊद ने प्रभु से पूछा कि क्या उसे यहूदा के किसी शहर में वापस जाना चाहिए।

प्रभु ने कहा, "हेब्रोन जा।"

इसलिए दाऊद और उसके लोग अपने परिवारों को ले गए और हेब्रोन के आसपास के सभी शहरों में चले गए। यहूदा के लोग दाऊद के पास गए और उसे अपने गोत्र का राजा बनाया।

अन्य सभी जातियों ने शाऊल की सेना के सेनापति अबनेर के नेतृत्व का पालन किया। उसने राजा शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को लिया, और यहूदा को छोड़कर पूरे इस्राएल में उसे राजा बनाया।

इससे इन दोनों पक्षों के बीच युद्ध हुआ। अबनेर ने अपने लोगों को दाऊद की सेना का सामना करने के लिए प्रेरित किया, जिसका नेतृत्व दाऊद की बहन के पुत्र योआब ने किया था। दोनों सेनाएँ एक कुंड के विपरीत दिशा में मिलीं। अब्नेर योआब के ऊपर चिल्लाया। "हम दोनों को हमारे लिए लड़ने के लिए 12 आदमी भेज।" इसलिए प्रत्येक पक्ष ने 12 लोगों को युद्ध के लिए भेजा। सभी 24 लोग युद्ध में कुशल थे, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति ने अपने प्रतिद्वंद्वी को मार डाला। सभी 24 लोगों की मौत हो गई।

उसके साथ, दोनों पक्ष युद्ध करने लगे और यो आब विजयी हुआ। भयंकर लड़ाई के बाद, अब्नेर और उसके लोग भाग गए। योआब के भाइयों में से एक अब्नेर के पीछे भागा। वह युवक एक बहुत तेज धावक था, लेकिन वह अबनेर की तरह लड़ने में कुशल नहीं था।

अब्नेर ने देखा कि योआब का भाई उस पर चढ़ा हुआ है।

वह वापस चिल्लाया, "मेरे एक सैनिक के पीछे जा जो तेरे जैसा है। इससे लड़ो और देखो कि क्या होता है।"

लेकिन युवक ने इस सलाह को नहीं सुना।

वह अब्नेर के पीछे दौड़ता रहा। फिर से उसने चेतावनी दी।

"मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर मत करो। तुझको मारने के बाद, मैं कभी भी तुम्हारे भाई का सामना नहीं कर पाऊंगा।"

फिर भी, युवक ने सुनने से इनकार कर दिया और दौड़ना जारी रखा। जब वह अब्नेर के ठीक पीछे था, तो कुशल योद्धा मुड़ा और जवान के पेट से भाला भोंक दिया। वह ज़मीन पर गिर गया और मर गया।

योआब की सेना ने अब्नेर के लोगों का पीछा करना जारी रखा। सूर्यास्त तक, सहायक सेना आकर अब्नेर के आदमियों में शामिल हो गई। वह योआब पर चिल्लाया।

"चलो इस लड़ाई को समाप्त करें यदि हम लड़ते रहते हैं, तो इससे केवल कड़वाहट बढ़ेगी। अपने

भाइयों से कह कि मेरे भाइयों के पीछे दौड़ना बंद करें।"

योआब वापस चिल्लाया, "तू सही है! अगर तुम कुछ नहीं कहते तो हम पूरी रात लड़ते रहते । इसलिए उसने नरसिंगा बजाया और उसके लोग रुक गए। दोनों सेनाएं अपने शहर में वापस चली गई, और योआब ने अपने भाई को बेतलेहेम में अपने परिवार की कब्र में दफनाया।

यहूदा और इस्राएल के बीच युद्ध जारी रहा।

यहूदा के लोग दाऊद को अपना राजा मानते थे, और ईशबोशेत अन्य सभी जातियों का राजा था। यह एक लंबा, कड़वा संघर्ष था। दाऊद का शासन और शक्तिशाली होता गया और ईशबोशेत का शासन कमजोर होता गया।

99 दाऊद को राजा बनाया जाना

2 शमूएल 3 - 4 और 1 इतिहास 11: 1-3

ईशबोशेत का राज्य कमजोर होता चला गया। फिर भी, अब्नेर का प्रभाव अधिक होता गया।

एक दिन राजा ने उससे कहा, "तूम मेरे पिता की रखैल के साथ क्यों सोए थे?" अब्नेर ने क्रोधित होकर कहा, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तेरे पिता के प्रति मेरी वफादारी ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसने मुझे तुझको दाऊद के हवाले करने से रोका है। अब तू मुझ पर इस महिला के साथ पाप करने का आरोप लगा रहे हैं। बहुत हुआ! मैं पूरे इस्राएल में दाऊद को राजा के रूप में स्थापित करने जा रहा हूं। ईशबोशेत की बोली बंद हो गई।

अब्नेर ने दाऊद को संदेश भेजा। "मैं तुम्हें इस्राएल राज्य देने के लिए तैयार हूं, चल समझौते की शर्तों पर काम करते हैं।"

दाऊद ने कहा, "तुम्हारे साथ कोई भी समझौता करने से पहले मुझे एक बात करनी होगी। यदि तू आता हैं, तो तुझको मेरी पत्नी मीकल, शाऊल की बेटी को लाना होगा। उसके बिना मत आना।"

पहरेदार गए और मीकल से मिले और उसे अपने नए पति से दूर ले गए। जब वे सड़क पर चल रहे थे, तो पति रोते हुए उनके पीछे-पीछे चल रहा था। अंत में अब्नेर ने मुड़कर चिल्लाया, "घर जा!" तो वह आदमी मुड़ा और घर चला गया।

अब्नेर ने इस्राएल के बुजुर्गों को इस बात के लिए सहमत किया कि दाऊद इस्राएल का राजा होगा। उसने तब जाकर दाऊद को बताया। इस खबर को मनाने के लिए दोनों ने मिलकर दावत दी।

अब्नेर ने कहा, "मैं जाऊंगा और तेरे राज्याभिषेक के लिए अंतिम व्यवस्था करूंगा । तब तू पूरे देश में राजा होगा ।" इसलिए दाऊद ने उसे शांति से भेज दिया।

जब यह सब हो रहा था, योआब वहां नहीं था। अब्नेर के जाने के ठीक बाद वह लौटा।वह दाऊद के पास गया और कहा, "तूने अबनेर को क्यों भागने दिया? क्या तुझको एहसास नहीं है कि यह सब तुझको फंसाने की एक चाल है?"

फिर, राजा के जाने बिना, योआब ने अबनेर को संदेश भेजा। "कृपया, हेब्रोन वापस आ।" जब अबनेर वापस गया, तो योआब ने उसे एक तरफ आने के लिए कहा ताकि वे निजी बातचीत कर सकें। जब वह कोने में आया, तो योआब ने अबनेर के पेट में चाकू मार दिया । वह जमीन पर गिर गया और मर गया।

दाऊद बहुत दुखी हुआ जब उसने सुना कि क्या हुआ था।। उसने योआब और उसके वंशजों के लिए एक शाप रखा। राजा जानता था कि योआब ने अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए अब्नेर को मार डाला था। फिर भी, उसने उसे और उसके आदमियों को अपने कपड़े फाड़ने, टाट-पट्टी पहनने और अबनेर के शोक मनाने का आदेश दिया।

दाऊद फिर अंतिम संस्कार के जुलूस के पीछे चला गया और कब्र पर खुलकर रोया। उसने बाकी

दिन कुछ भी नहीं खाया। उसने अपने सैनिकों से कहा, "इस्राएल के एक महान नेता का आज निधन हो गया है।"

सभी ने इस बात पर ध्यान दिया कि दाऊद ने क्या किया, और वे आश्वस्त थे कि अबनेर की मृत्यु से उनका कोई लेना-देना नहीं है।

दो लोग ईशबोशेत के घर में गए और उसे मार डाला, जब वह दोपहर की नींद ले रहा था। उन्होंने उसका सिर काट दिया और उसे राजा दाऊद के पास ले गए और कहा, "तुम्हारा दुश्मन मर गया है।"

दाऊद ने कहा, "जब मैं सिकलग में था, तो एक आदमी आया और उसने मुझे बताया कि वह राजा शाऊल पर दया कर रहा है, क्योंकि पलिश्तियों ने उसे यातनाएं दी थीं। उसने सोचा कि वह मेरे लिए अच्छी खबर लाया है, लेकिन मैंने उसे मौत के घाट उतार दिया। अब तुम आए हो और मुझे बता रहे हो कि जब वह अपने बिस्तर में सो रहा था, तब मैंने इस्राएल के राजा को मार डाला। " दाऊद ने दोनों को मार डाला।

उसके बाद उनके हाथ और पैर काटे गए और उनके शवों को हेब्रोन के कुंड के पास लटका दिया गया।

इस्राएल के सभी गोत्र हेब्रोन में मिले और दाऊद को अपना राजा बनाया। तब वह 30 साल का था।

100 दाऊद के पराक्रमी पुरुष

2 शमूएल 5, 23: 13-23 और 1 इतिहास 11

दाऊद ने 30 आदमियों का एक समूह विकसित किया था, जो उसकी लड़ाई सेना का मूल था। योआब के भाई अबीशै ने अपनी बहादुरी के कारण समूह का नेतृत्व किया।

यह लड़ने वाले सभी 30 पुरुष कौशल और साहस से भरे योद्धा साबित हुए थे। लेकिन उनमें से सबसे शक्तिशाली पूरी सेना के लिए एक प्रेरणा थे - उन्हें "तीन" कहा जाता था। तीन में से एक ने एक लड़ाई में 800 सैनिकों को व्यक्तिगत रूप से मारा था। जब सेना के बाकी सदस्य पीछे हट गए, तो उनमें से एक दृढ़ खड़ा रहा था। जब वे वापस गए, तो उसने पलिश्तियों पर खुद हमला किया। वह इतनी मेहनत और इतनी देर तक लड़ा कि उसका हाथ उसकी तलवार से चिपक गया। अन्य अंत में वापस आए, लेकिन केवल उसके आसपास के शवों को लूटने के लिए।

दाऊद के राजा बनने से पहले, एक समय था जब वह और उसके लोग छिप गए थे। वह प्यासा हो गया और बोला, "ओह, मुझे बेतलेहम में कुएं से पानी चाहिए!" उस समय, बेतलेहेम पलिश्तियों के हाथों में था।

तीनों ने दाऊद को उस पानी के लिए तरसते हुए सुना। वे छावनी से बाहर निकले और बेतलेहेम चले गए। वे शहर में चले गए और कुएं से पानी लिया। वे पलिस्तीन क्षेत्र से सुरक्षित बाहर निकलने में सक्षम थे।

जब वे दाऊद के लिए पानी लेकर आए, तो वह चौंक गया कि उन्होंने यह क्या किया है। उसने कहा, "मैं यह पानी नहीं पीऊंगा! यह अनमोल है, उन पुरुषों के खून जितना जिन्होंने इसे पाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली।"

वह परमेश्वर के सामने खड़ा हुआ, और उसे परमेश्वर के लिए एक भेंट के रूप में उंडेल दिया। राजा बनने के बाद दाऊद के सभी लोग उसके प्रति वफादार रहे। परमेश्वर उसके साथ था और उसने इस्राएल पर उसका राज्य स्थापित किया।

यरूशलेम, यबूसियों द्वारा नियंत्रित सिय्योन पर्वत, पर एक दीवार वाला शहर था। दाऊद ने अपने आदमियों से कहा, "जो कोई भी इस शहर को जीतेगा वह मेरी सेना का सेनापति बनेगा।" योआब ने पानी की सुरंगों में से दीवारों के अंदर प्रवेश करके उसे जीत लिया। इसलिए वह सेना का सेनापति बन गया।

दाऊद ने शहर का नाम बदलकर "दाऊदपुर" रखा और उसी समय से यह उसके शासन का केंद्र था।

जब पलिश्तियों ने उसके इस्राएल के राजा बनने के बारे में सुना, तो उन्होंने उसके खिलाफ लड़ने का फैसला किया। दाऊद ने प्रभु से पूछा, "क्या मुझे उनसे लड़ना चाहिए?"

प्रभु ने कहा, "जा। मैं उन्हें तुझे दे दूंगा।"

इसलिए दाऊद ने जाकर उन्हें हराया।

बाद में, उन्होंने इस्राएल पर फिर से आक्रमण किया। इसलिए उसने प्रभु से पूछा, "क्या मुझे उनसे लड़ना चाहिए?"

प्रभु ने कहा, "जा, लेकिन इस बार उनके पीछे चक्कर लगाना। अपने शिविर को पेड़ों के बीच में रख। जब तक पेड़ों के शीर्ष में से सेना के चलने की सी आहट ना सुनाईं पड़े, तब तक इंतजार करते रहना। तब तुझको पता चलेगा कि मैं आगे अभी पधारा हूँ।दाऊद ने वही किया जो प्रभु ने उसे करने के लिए कहा था। उसने पलिश्तियों को पराजित किया और उन्हें पूरी तरह से देश से बाहर भगा दिया।

101 परमेश्वर के सन्दूक को आगे बढ़ाना

2 शमूएल 6 और 1 इतिहास 13, 15 - 17

राजा के रूप में शाऊल के शासनकाल के दौरान परमेश्वर के सन्दूक को अनदेखा किया गया था। इसलिए दाऊद ने इसे अपनी नई राजधानी में लाने का फैसला किया। उसने पूरे इस्राएल को संदेश भेजा और इस महान समारोह में शामिल होने के लिए उन्हें आमंत्रित किया।

लोग सहमत थे कि यह करना सही था। दुर्भाग्य से, उन्होंने परमेश्वर के निर्देशों का पालन नहीं किया कि कैसे सन्दूक को लाया जाना था।

इसके बजाय, उन्होंने सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाया और इसे कुछ बैलों से खींचवाया।

जैसे ही गाड़ी यरूशलेम की ओर बढ़ी, राजा और लोग जश्न मनाते हुए चले। उन्होंने गाने गाए, और बाजे बजाए।

अचानक बैलों में से एक को ठोकर लगी और गाड़ी हिल गई। उज्जा नाम का एक व्यक्ति सन्दूक को सँभालने के लिए आगे आया। जिस क्षण उसने सन्दूक को छुआ, परमेश्वर ने उसे मारा और वह जमीन पर गिर गया और मर गया। दाऊद हैरान और परेशान हो गया। वह नहीं जानता था कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया। उसे यह सोचने के लिए समय चाहिए था कि क्या किया जाए, इसलिए उसने पास के घर में परमेश्वर के सन्दूक को रख दिया। तीन महीने तक सन्दूक वहाँ रहा। उस दौरान, प्रभु ने उस परिवार को जो वहां रहता था, आशीष दी।

दाऊद ने सुना कि परमेश्वर परिवार को कैसे आशीष दे रहा है, इसलिए उसने एक बार फिर सन्दूक को यरूशलेम लाने का फैसला किया। इस बार उसने लेवियों से कहा कि वे खुद को शुद्ध करें और मूसा के निर्देशों का पालन करें कि कैसे परमेश्वर के सन्दूक को ले जाया जाए।

यरुशलम में प्रवेश करते ही इस्राएल के लोग उत्साहित हो गए। उन्होंने यहोवा के लिए बलिदान दिया, खुशी से चिल्लाया, और तुरही फूंकी। दाऊद ने अपने बाहरी कपड़े उतार दिए और अपनी पूरी ताकत के साथ नृत्य किया। सभी ने मिलकर आनन्द लिया।

मीकल ने खिड़की से बाहर देखा और अपने पति को सन्दूक के सामने नाचते हुए देखकर चौंक गई। उसे लगा कि यह घिनौना है।

दाऊद ने सन्दूक को एक विशेष तम्बू में रखा था जिसे उन्होंने इसके लिए तैयार किया था। और परमेश्वर के लिए बलिदान किए गए। तब दाऊद ने लोगों को आशीष दी, और उन्हें खाने के लिए भोजन दिया।

घर जाते ही मीकल अपने पति के सामने आई। उसने कहा, "तुमने जो किया वह शर्मनाक था। तूने अपने शाही कपड़े उतार दिए और कर्मचारियों की लड़कियों के सामने मूर्ख की तरह उछल रहा था।"

दाऊद ने कहा, "मैंने प्रभु के सामने अपने आप को दीन बना लिया। और हाँ, मैं फिर से ऐसा करूँगा। उन आम लोगों के बारे में, जिनके बारे में तूने बात की थी, वे मुझे अपने जीवन भर के लिए सम्मानित करेंगे।"

मीकल ने अपना पूरा जीवन बच्चों के बिना गुजारा।

102 एक साम्राज्य का निर्माण

2 शमूएल 7 - 9 और 1 इतिहास 17 - 18

दाऊद ने अपना राज्य स्थापित किया और अपने आस-पास के देशों से उसका बचाव किया। अंत में इस्राएल में शांति थी। उसने तब यहोवा के लिए एक मंदिर बनाने के बारे में सोचना शुरू किया। एक दिन उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता से कहा, "मैं एक सुंदर महल में रहता हूं, जबकि परमेश्वर का सन्दूक एक तंबू में रहता है!"

भविष्यवक्ता ने सहमति व्यक्त कीऔर कहा, " मंदिर का निर्माण कर। परमेश्वर प्रसन्न होगा ।"

उस रात परमेश्वर ने भविष्यवक्ता से बात की और उसे दाऊद के लिए एक संदेश दिया। प्रभु ने कहा, "जब मैंने तुझे इस्राएल का राजा बनाया था तो तू भेड़-बकरी के पीछे घूमता था। मैं इन सभी वर्षों में तेरे साथ रहा हूं, और मैंने तुझे तेरे दुश्मनों पर जीत दिलाई है। अब मैं उन सबसे महान पुरुषों में तेरा नाम स्थापित करूँगा। तेरा शाही परिवार हमेशा चलता रहेगा।

"फिर भी, मैंने तुझे अपना घर बनाने की अनुमति नहीं दी है। मैंने तुझे युद्ध का व्यक्ति बनाया है और बुहत सारे लोग तेरी वजह से मारे गए हैं। तेरा बेटा शांति का व्यक्ति होगा, और वह मेरा घर बनाएगा। मैं उसके लिए पिता बनूंगा और उसका राज्य स्थापित करूंगा।"

जब उसने यह संदेश सुना, तब राजा दाऊद संतुष्ट था और उसने अपने आप को प्रभु के सामने रख दिया। उस दिन से उसने अपने आसपास के राष्ट्रों को देखना शुरू कर दिया। उसने पलिश्तियों पर आक्रमण किया और उन शहरों और ज़मीनों को वापस ले लिया जो उन्होंने इस्राएल से लिए थे। इसके बाद उसने मोआबियों और एदोमियों की ओर रुख किया और उन्हें इस्राएल के अधीन कर दिया।

उसने अपनी सेनाओं को उत्तर की ओर घुमाया और कई देशों को हराया। यरूशलेम समृद्ध हुआ, क्योंकि सोने, चांदी, कांस्य और घोड़ों को शहर में लाया गया। दाऊद ने इन सभी देशों में उन पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए छावनियां स्थापित कीं। उसने अपनी सेना बढ़ाने के लिए उनके आदमियों का इस्तेमाल किया। उसका नाम दुनिया भर में माना गया और सम्मानित हो गया।

दाऊद ने प्रभु को वह सब कुछ समर्पित किया जो उसने प्राप्त किया था। उसने लोगों का न्याय किया, और उन्हें धार्मिकता सिखाई।

एक दिन दाऊद ने अपने नौकरों से पूछा, "क्या शाऊल के परिवार का कोई सदस्य अभी भी जीवित हैं? मैं उस पर दया करना चाहता हूं, ठीक वैसे ही जैसे योनातन ने मुझ पर दया की।

सीबा नाम के एक नौकर ने उसे मपीबोशेत के बारे में बताया, जो योनातन का बेटा था। वह पांच

साल का था जब उसकी दाई ने शाऊल और योनातन की मौत के बारे में सुना। वह घबरा गई और उसने लड़के को अपने कंधों पर बिठा लिया और भागी। वह जमीन पर गिर गया और उसके पैर में चोट लग गई। तब से वह दोनों पैरों में लंगड़ा था। दाऊद ने उसे बुलवाया। वह अंदर आया और उसके सामने झुक गया। उसने कहा, "मैं आपका सेवक हूं।"

दाऊद ने कहा, "डर मत। तेरे पिता ने मुझपर जो दया की थी, मैं तुझको वही लौटा रहा हूं। मैं तुझको शाऊल से संबंधित सारी भूमि दे रहा हूं। इसके अलावा, अब से तू मेरी मेज पर भोजन करेगा।"

मपीबोशेत ने एक बार फिर नमन किया और कहा, "मैं एक मृत कुत्ते के अलावा कुछ नहीं हूं। आपको मेरी परवाह क्यों है?"

राजा ने सीबा से कहा, "तू और तेरे बेटे उन ज़मीनों पर काम करेंगे जो मैंने अभी मपीबोशेत को दी हैं। अब तू उसका सेवक है।"

इसलिए मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था, और वह राजा की मेज पर भोजन करता था। वह दाऊद के बेटों की तरह बन गया।

103 अम्मोनियों

2 शमूएल 10 और 1 इतिहास 19 - 20

दाऊद के सभी विजय के दौरान, उसने अम्मोनियों पर हमला नहीं किया क्योंकि वहाँ का राजा उसके प्रति दयालु था, जब दाऊद शाऊल से भाग रहा था। एक दिन, अम्मोनियों के राजा की मृत्यु हो गई और उसके पुत्र ने उसके स्थान पर शासन किया।

दाऊद ने नए राजा को शांति का संदेश देने के लिए पुरुषों का एक समूह भेजा। जब वह लोग वहाँ पहुँचे, तो अम्मोनियों के नेताओं ने अपने राजा से कहा, "ये लोग तुम्हारे लिए दाऊद की चिंता दिखाने के लिए यहाँ नहीं हैं। तेरे पिता के प्रति सम्मान दिखाने के लिए वे यहाँ नहीं हैं। वे हम पर जासूसी कर रहे हैं। वे हमारे शहर को देखने के लिए आए हैं, कि हम कहां कमजोर हैं।"

इसलिए नए राजा ने पुरुषों को लिया और प्रत्येक व्यक्ति की दाढ़ी को आधा काट दिया। फिर उन्होंने अपने शरीर के निचले हिस्से को उजागर करते हुए अपने कपड़े काट दिए। बहुत अपमानित होकर यह पुरुष इस्राएल चले गए।

दाऊद ने इस महान अपमान के बारे में सुना और अपने आदमियों को संदेश भेजा। "यरीहो में रहो जब तक तुम्हारी दाढ़ी वापस नहीं बढ़ती। फिर हमारे पास लौट आओ।"

अम्मोनियों को आखिरकार एहसास हुआ कि उन्होंने क्या किया है। उन्होंने दाऊद को बेहद नाराज कर दिया था। इसलिए उन्होंने अपनी सेना का निर्माण शुरू कर दिया। उन्होंने अन्य देशों के 33,000 सैनिकों को भी काम पर रखा था।

दाऊद ने योआब और उसकी सेना को अम्मोनियों के खिलाफ लड़ने के लिए भेजा। जब उन्होंने अपनी जगह ले ली, तो इस्राएली सेना एक ऐसी स्थिति में चली गई जहाँ एक तरफ अम्मोनी थे, और दूसरी ओर विदेशी सैनिक। योआब को एहसास हुआ कि वह दोनों के बीच में है, दोनों तरफ सेना की अग्रिम पंक्ति थी। इसलिए उसने सेना को विभाजित कर दिया। उसने अपने साथ लड़ने के लिए और विदेशी सैनिकों पर हमला करने के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ सैनिकों का चयन किया। बाकी सभों को उसके भाई की आज्ञा के तहत अम्मोनियों से लड़ना था।

योआब ने अपने भाई से कहा, "ज़रूरत पड़ने पर हम दोनों एक-दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहेंगे। बहादुर बनो और संघर्ष करो। हमें अपने लोगों और परमेश्वर के शहरों की रक्षा करनी है। प्रभु की इच्छा पूरी हो।"

लड़ाई निर्णायक थी। योआब और उसके सैनिकों ने विदेशी सेनाओं को इतनी कड़ी टक्कर दी कि वे पलट कर भाग गए। जब अम्मोनियों ने यह देखा, तो वे वापस अपने दीवार वाले शहरों में चले गए। इसके

साथ, योआब अपनी सेना को वापस यरूशलेम ले गया।

विदेशी सेना फिर से संगठित हुई और फिर से लड़ने के लिए वापस आई। इस बार, दाऊद अपने आदमियों के साथ गया और उन्हें पूरी तरह से हरा दिया, जिसमे 40,000 से अधिक लोग मारे गए। जो बच गए वे अपने देश वापस चले गए और फिर कभी नहीं लौटे। दाऊद ने अम्मोनियों को हराने के लिए वसंत तक इंतजार किया।

104 बतशेबा

2 शमूएल 11

जब वसंत आई, एक बार फिर अम्मोनियों पर हमला करने का समय था। आम तौर पर दाऊद अपने आदमियों के साथ जाता था, लेकिन उसने घर पर रहने का फैसला किया।

एक दोपहर झपकी लेने के बाद, वह महल की छत पर लगी खिड़की पर चला गया। वहाँ से उसने एक सुंदर स्त्री को स्नान करते देखा। उसने एक नौकर के लिए संदेश भेजा और पूछा, "वह महिला कौन है?"

"ओह, उसका नाम बतशेबा है। वह तेरे 30 योद्धा पुरुषों में से एक, ऊरिय्याह की पत्नी है।

दाऊद ने उसे बुलवाया, तो वह महल में आई और उस रात वह उसके साथ सोया। समय में उसने महसूस किया कि वह गर्भवती थी, और वह जानती थी कि यह रात वह है जो राजा के साथ बिताई थी। उसने दाऊद को संदेश भेजा कि वह गर्भवती है।

उसने फैसला किया कि उसने जो किया उसे छिपाना था। इसलिए उन्होंने तुरंत योआब को एक संदेश भेजा। "ऊरिय्याह को मेरे पास भेज।"

ऊरिय्याह सिपाही आया और राजा ने उससे पूछा, “युद्ध कैसा चल रहा है? योआब ठीक है?” बाद में ऊरिय्याह ने सब कुछ बताया, राजा ने उससे कहा कि वह लड़ाई में जाने से पहले अपनी पत्नी के पास घर जा सकता है। यहां तक कि उसने जोड़े के लिए एक उपहार भी भेजा।

ऊरिय्याह चला गया, लेकिन घर नहीं गया। वह रात को राजा के सभी नौकरों के साथ महल के दरवाजे पर सोया। सुबह, राजा ने उसे अंदर बुलाया और पूछा, "तुम घर क्यों नहीं गए?"

उसने कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। परमेश्वर का सन्दूक युद्ध के मैदान में है। इस्राएल की सेना तंबू में सोती है। योआब और उसके सैनिक मैदान पर हैं। मैं अपने घर नहीं जा सकता और आराम से नहीं रह सकता हूं। मैं अपनी पत्नी के साथ खाना-पीना नहीं कर सकता, जबकि वह लोग हमारे देश के लिए बलिदान कर रहे हैं।”

दाऊद ने कहा, "एक दिन और यहां रह, और फिर मैं तुझे युद्ध में वापस भेज दूंगा।"

राजा ने ऊरिय्याह को अपने साथ खाने और पीने के लिए कहा। शाम के दौरान,

दाऊद ने उसे शराब पिलाई। फिर भी, वह घर नहीं गया, लेकिन महल के दरवाजों पर एक खाट पर सो गया था।

अगली सुबह दाऊद ने अपने सेनापति को एक पत्र लिखा। “ऊरिय्याह को उस मोर्चे में रख जहाँ लड़ाई सबसे भयंकर है। एक नियत समय पर, अपने लोगों को पीछे कर लेना, उसे मरने के लिए छोड़ दो।”

राजा ने सीलबंद पत्र ऊरिय्याह को दे दिया, और उसे योआब को देने के लिए कहा। वह वापस युद्ध में गया और अपने सेनापति को पत्र दिया। योआब ने आज्ञा का पालन किया और ऊरिय्याह को उस स्थान पर रखा जहा बहुत खतरा था। नियत क्षण में, बाकी सभी पीछे हट गए और ऊरिय्याह मारा गया। बतशेबा ने सुना कि उसका पति युद्ध में मर गया, उसने उसकी मृत्यु का शोक मनाया।

योआब ने अम्मोनियों की राजधानी के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखी। अंत में, वह टूट गया और उनकी पानी की आपूर्ति पर कब्जा कर लिया। उसने दाऊद को सन्देश भेजा। "जल्दी आ! शहर में सेना का नेतृत्व कर और उस पर कब्जा कर ताकि तुझको गौरव प्राप्त हो।"

दाऊद ने जाकर सेना को अम्मोनी शहरों पर विजय दिलाई। उन्होंने अम्मोनी लोगों से उनकी दीवारों और उनकी सभी इमारतों को पूरी तरह से तुड़वा दिया। उन्होंने वह सब कुछ लिया जो मूल्यवान था, और लोगों को ईंट बनाने के काम में लगा दिया।

तब दाऊद वापस यरूशलेम चला गया। एक बार बतशेबा के शोक का समय समाप्त होने के बाद, उसने उसे अपनी पत्नी बना लिया। इसके तुरंत बाद, उसने उनके बेटे को जन्म दिया। केवल परमेश्वर ही उनके पाप के बारे में जानता था, और वह इससे प्रसन्न नहीं था।

105 नातान की कहानी

2 शमूएल 12 और भजन 51

बतशेबा के साथ दाऊद के पाप के बारे में केवल परमेश्वर ही जानता था। उसने भविष्यवक्ता नातान को भेजा, जिसने राजा के सामने खड़ा होकर यह कहानी बताई: "एक ही शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था। उसके पास मवेशियों का एक बड़ा झुंड और भेड़ों का एक बड़ा झुंड था। दूसरा व्यक्ति गरीब था। उसके पास केवल एक छोटा सा मेमना था, लेकिन वह उसके लिए एक बेटी की तरह थी। भेड़ का बच्चा उसके बच्चों के साथ एक पालतू जानवर के रूप में बड़ा हुआ। वह उनके कटोरे से खाता , और उनके प्यालों से पीया करता था, और रात में भी उनके साथ सोता था।

अमीर आदमी का एक दोस्त था जो बहुत दूर के शहर से घूमने आया था। जब भोजन का समय आया, तो धनी व्यक्ति ने अपनी स्वयं की भेड़ को उपयोग नहीं करना चाहा। इसके बजाय उन्होंने गरीब आदमी का मेमना लिया और उसे अपने मेहमान के लिए पकाया।

दाऊद नाराज़ हो गया। वह उठ खड़ा हुआ और चिल्लाया, "यह घृणित है! वह इतना हृदयहीन कैसे हो सकता है? वह मरने योग्य है। उसने जो किया उसके लिए उसे उस गरीब आदमी को चार मेमने देने होंगे ।

नातान ने दाऊद की ओर इशारा करते हुए कहा, "तुम वो आदमी हो! प्रभु कहता है, 'मैंने तुम्हें इस्राएल पर राजा बनाया और तुम्हें सब दिया। यदि तुमने कहा होता, तो मैंने तुम्हें और अधिक दिया होता। फिर तुमने मुझे क्यों तुच्छ जाना है और यह बुराई की है? तू ने अम्मोनियों की तलवार से ऊरिय्याह को मार डाला, और उसकी पत्नी को ले लिया।

इस वजह से, तलवार तुम्हारे घर को कभी नहीं छोड़ेगी। तुमने यह सब गुप्त रूप से किया था, लेकिन मैं खुलेआम तुम्हारे न्याय करूंगा। '

नातान के सामने दाऊद टूट गया और कहा, "मैंने प्रभु के खिलाफ पाप किया है।" बाद में, उसने यह प्रार्थना लिखी:

"हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर।
मुझे अपने प्यार में जकड़ लें।
तेरी अनुकंपा में, मेरे विद्रोह को हटा।
मेरे अपराध को धो, और मेरे पाप के दाग को हटा।
मुझे पता है कि मैं विद्रोही हूं।
मेरे पाप मुझे दिन-रात परेशान करते है।
मैं तेरे खिलाफ लड़ा।
यह बुराई तेरे खिलाफ है।

तेरा मुझसे नाराज़ होना, और मुझे दूर फेंक देना सही है।

मैं जीवन भर इसी तरह रहूं।

लेकिन मुझे पता है कि तू मुझे कुछ सिखाना चाहता है।

मेरे अंदर गहराई में जा और वहाँ ज्ञान रख।

कठोर सफाई करनेवाला उपयोग कर जब तक कि सब कुछ बिल्कुल साफ न हो।

मेरी निराशा को खुशी से बदल।

मेरे पाप को दूर कर और मुझे एक स्वच्छ नया दिल दें।

मुझे एक दृढ़ आत्मा प्रदान कर, और अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे।

यदि तू ये काम करता हैं, तो मैं दूसरों को तेरे तरीकों के बारे में सिखाऊँगा। "

नातान ने दाऊद के पास जाकर कहा, "प्रभु ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरा पाप दूर किया है। तू नहीं मरेगा , लेकिन जिस तरह से तुमने प्रभु के साथ व्यवहार किया, उसके कारण तेरा बच्चा मर जाएगा।"

अचानक, बच्चा बीमार हो गया। दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे छोड़ दे। राजा ने खाना नहीं खाया , लेकिन दिन-रात परमेश्वर के सामने गुहार लगा रहा था । उसके सेवकों ने उसे खाना खिलाने की कोशिश की, लेकिन उसने मना कर दिया।

सातवें दिन, बच्चे की मृत्यु हो गई। नौकर दाऊद को बताने से डर रहे थे। उन्होंने उसे तड़पते हुए देखा था, जबकि बच्चा अभी भी जीवित था। उन्होंने सोचा कि जब वह बच्चे को मरा हुआ पाएगा तो वह कठोर हो जाएगा ।

उसने उन्हें एक दूसरे से फुसफुसाते हुए देखा। उसने कहा, "क्या बच्चा मर गया है?"

उन्होंने कहा, "हाँ, वह मर चुका है।"

फिर दाऊद मैदान से उठा, स्नान किया, और साफ कपड़े पहने। उसने प्रभु के घर में आराधना की और फिर कुछ खाने के लिए गया।

नौकर चकित थे। उसने उन्हें समझाया। "जब बच्चा जीवित था, तब मैंने परमेश्वर से विनती की कि वह अनुग्रह करे और बच्चे को जीवित रहने दे। लेकिन अब जब वह मर चुका है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। वह मेरे पास वापस नहीं आ सकता है, लेकिन मैं उसके पास जा सकता हूं।"

बाद में, बतशेबा ने एक और बेटे को जन्म दिया, और दाऊद ने उसका नाम सुलैमान रखा। यहोवा सुलैमान से प्यार करता था, और उसने कहा कि वह इस्राएल का अगला राजा होगा।

अम्नोन दाऊद का सबसे बड़ा बेटा था और उसका पसंदीदा था। अम्नोन के पास एक चीज़ के अलावा वह सब कुछ था जो वह चाहता था। वह अपनी सौतेली बहन तामार को चाहता था। वह सुंदर और कुंवारी थी। उसने हर समय उसके बारे में सोचा। उसके साथ सोने की चाहत के कारण, वह सचमुच बीमार हो गया था। उसका एक चचेरा भाई था जो बहुत चालाक था ।

जब उसने सुना कि अम्नोन कैसा महसूस करता था, तो वह एक योजना लेकर आया। उसने कहा, "अपने बिस्तर में लेट जा जैसे कि तू बीमार है। जब राजा तेरे बारे में पूछता है, तो उसे बताना कि तू चाहता हैं कि तामार तेरे कमरे में कुछ रोटी बनाके ले आए। राजा से कह, कि तू चाहता है कि तामार तुझे रोटी खिलाए।"

अम्नोन ने इस योजना का पालन किया, इसलिए राजा ने तामार को अपने भाई के पास कुछ खाने के लिए ले जाने के लिए कहा।

जब वह वहाँ थी, तो अम्नोन ने सभी नौकरों को कमरे से बाहर भेज दिया। जब उसने उसे कुछ खाना दिया, तो उसने उसे पकड़ लिया और कहा, "मेरे साथ बिस्तर में आ!"

उसने उससे विनती की, "नहीं, कृपया, यह मत कर। यह एक भयानक पाप है। राजा से पूछ, और वह मुझे तुम्हें दे देगा। वह तुझे कुछ भी देगा।

लेकिन अम्नोन ने नहीं सुना। उसने उसे बिस्तर में खींच लिया और उसके साथ बलात्कार किया। जैसे ही उसने वह किया , अब वह उसे नहीं चाहता था । वास्तव में, वह उससे नफरत करता था। उसने कहा, "यहाँ से चले जा!"

वह चिल्लाई, "नहीं! मुझे मत निकाल। तूने जो किया वह गलत है, लेकिन मुझे भेजना और भी बुरा है।

उसने चिल्लाकर अपने नौकर को बुलाया। "इस महिला को यहाँ से बाहर ले जाओ और दरवाजा बंद करो।"

तामार को बाहर निकालने के बाद, उसने अपने कपड़े फाड़ दिए, जो कपड़े यह दिखाते कि वह एक कुंवारी थी। उसने अपने सिर पर राख डाली है और बहुत रोई ।

उसका भाई अबशालोम था। जैसे ही उसने सुना कि क्या हुआ, उसने अम्नोन को मारने की शपथ खाई।

लेकिन वह जानता था कि इसे सावधानीपूर्वक नियोजित किया जाना था। इसलिए, वह अपनी बहन को अपने घर ले गया। उसने उससे कहा, "अभी के लिए, इसे अपने दिमाग से निकालने की कोशिश कर। इसके बारे में कुछ मत कह।"

उस दिन से, तामार उदास और चिड़चिड़ी थी, और अबशालोम ने अम्नोन से बोलना पूरी तरह से बंद कर दिया। बलात्कार की बात सुनकर राजा भड़क गया था। फिर भी उसने इसके बारे में कुछ नहीं किया।

दो साल बाद, अबशालोम ने भेड़ों के ऊन कतरने का उत्सव रखा और दाऊद के सभी बेटों को आमंत्रित किया।

उसने सुनिश्चित किया कि अम्नोन वहाँ रहे। अबशालोम ने इस अवसर के लिए एक बड़ा भोज दिया।

सभी के पास खाने-पीने के लिए बहुत कुछ था। अबशालोम ने नौकरों से कहा कि वे अम्नोन को देखते रहे। उन्होंने कहा, "जब तक वह बहुत नशे में ना हो, तब तक रुको, फिर उसे मार डालो। डरो मत। तुम दंडित नहीं किए जाओगे। तुन बस मेरे आदेशों का पालन कर रहे हों।"

उन्होंने जैसा उनको कहा गया था, वैसा ही किया। जब समय सही था, उन्होंने अम्नोन को मार डाला। दूसरे बेटे अपनी जान बचाकर भागे।

इस बात का समाचार जल्दी से राजा को मिल गया।

राजा को कहा गया था कि अबशालोम ने राजा के सभी बेटों को मार डाला है। दाऊद अपने कपड़े फाड़ कर जमीन पर गिर गया। अंत में किसी ने उसे बताया कि यह सच नहीं था। केवल अम्नोन की मृत्यु हुई थी। उसने कहा, "अबशालोम इसकी योजना बना रहा था क्योंकि उसकी बहन का बलात्कार हुआ था।"

अंत में, दाऊद के दूसरे बेटे सड़क पर उतर आए और राजा के सामने गए। सब लोग एक साथ रोये।

अबशालोम अपने पिता से छिपने के लिए पड़ोसी देश भाग गया। दाऊद तीन साल तक अम्नोन के लिए दुखी रहा।

107 अबशालोम की वापसी

2 शमूएल 14

तीन साल के बाद, दाऊद ने आखिरकार अम्नोन के लिए विलाप करना बंद कर दिया। फिर वह अपने बेटे अबशालोम को याद करने लगा। फिर भी, उसे लौटने के लिए नहीं कहा।

योआब ने यह देखा, इसलिए उन्होंने एक महिला को काम पर रखा, जो अभिनय में अच्छी थी। उसने उसे राजा के पास जाने के लिए कहा, और उसने उसे बताया कि उसे क्या कहना था।

उसने शोक के कपड़े पहने और दाऊद के सामने गई। वह उसके सामने झुकी और बोली, "मेरी मदद कर, मेरे राजा।"

दाऊद ने कहा, "मुझे अपनी समस्या बता।"

"मेरे पति के मरने के बाद मेरे केवल दो बेटे थे। हाल ही में उनका झगड़ा हुआ और उन्हें किसी ने नहीं रोका। जल्द ही, एक ने दूसरे को मार डाला। अब मेरा परिवार कहता है कि मुझे उन्हें इकलौता बेटा देना होगा। वे कहते हैं कि उसे मरना होगा क्योंकि वह एक हत्यारा है। मेरे राजा, इससे पृथ्वी से मेरे पति का नाम हट जाएगा।"

दाऊद ने कहा, "तू घर जा सकती है। मैं तेरे लिए इसका ध्यान रखूंगा, अगर कोई कहता है कि यह सही नहीं है, तो उन्हें मेरे पास ले आ।"

उसने कहा, "ओह, कृपया परमेश्वर की शपथ खा कि मेरे बेटे ने जो किया उसके लिए वह नहीं मारा जाएगा।"

दाऊद ने कहा, "मैं यहोवा की शपथ खाता हूं, जो जीवित है। तेरे बेटे को इसके लिए मरना नहीं होगा।

उसने कहा, "क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकती हूं?"

दाऊद ने कहा, "हां, क्या प्रश्न है?"

"मैं जानती थी कि तू मुझे सही निर्णय दे पाएगा क्योंकि परमेश्वर का ज्ञान तेरे अंदर है। तुमने स्पष्ट रूप से देखा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। इसलिए यह निर्णय अच्छा था।

"तो, तुम अपने स्वयं के निर्णयों का पालन क्यों नहीं करते? तुम अपने पुत्र को वापस न लाकर परमेश्वर के राष्ट्र के लिए गलत कर रहे हो । हम सभी किसी दिन मरने वाले हैं, लेकिन परमेश्वर जीवन का परमेश्वर हैं। वह चाहता है कि हम एक-दूसरे से मेल-मिलाप करें।"

दाऊद ने कहा, तूने मुझसे एक सवाल पूछा, अब मेरे पास तेरे लिए एक सवाल है। मुझे ध्यान से सुन। मुझे सच बता। क्या योआब ने तुझको यहाँ मुझसे बात करने के लिए भेजा है?"

उसने कहा, "मेरे प्रभु राजा को प्रभु के दूत जैसा ज्ञान है। उससे कोई कुछ नहीं छिपा सकता। हां, तेरे नौकर योआब ने मुझे बताया कि क्या कहना है, लेकिन यह केवल इसलिए है क्योंकि वह तुझसे प्यार करता है और तेरे लिए सबसे अच्छा चाहता है।"

राजा ने योआब को बुलवाया और कहा, "जा और अबशालोम को शांति से वापस ले आ, लेकिन मैं उसे देखना नहीं चाहता।" इसलिए योआब ने अबशालोम को यरूशलेम वापस लाया। उसे अपने घर में रहने की अनुमति थी।

दो साल बीत गए और उसे अभी भी राजा से मिलने की अनुमति नहीं थी। अंत में उसने योआब से उसके और उसके पिता के बीच एक बैठक की व्यवस्था करने को कहा।

उसने योआब को बुलाया, लेकिन वह नहीं आया। उसने उसे दूसरी बार बुलाया, लेकिन वह अभी भी नहीं आया।

अंत में अबशालोम ने अपने सेवकों को योआब के जौ के खेत में आग लगाने के लिए बुलाया।

योआब जाकर अबशालोम पर चिल्लाया। "तूने मेरे खेत में आग क्यों लगाई?"

उसने कहा, "मुझे तेरा ध्यान आकर्षित करना था। अब मुझे बता। तू मुझे यरूशलेम क्यों वापस लाया? मैं जहां था वहां बेहतर था। राजा के पास जा और हम दोनों के बीच एक बैठक की व्यवस्था कर। मैं उसे देखना चाहता हूं, भले ही वह मुझे मार डाले।

इसलिए योआब ने एक समय की व्यवस्था की जब राजा और उसका पुत्र मिल सकता था। अबशालोम अपने पिता के सामने गया और अपना चेहरा ज़मीन की ओर झुका लिया।

दाऊद उठा और अपने बेटे को चूमा।

108 अबशालोम का विद्रोह

2 शमूएल 15 - 17:23

अबशालोम सुंदर घने बालों वाला एक सुंदर व्यक्ति था। वह महत्वाकांक्षी भी था और राजा बनना चाहता था। लोगों को प्रभावित करने के लिए, वह एक रथ में सवार होता, जिसमें 50 आदमी उसके आगे दौड़ते थे।

सुबह वह शहर के फाटक की ओर जाने वाली सड़क पर खड़ा होता। जो भी उसे नमन करता, वह उन्हें सम्मानित करता। यदि वह देखता कि कोई व्यक्ति किसी समस्या के बारे में राजा से मिलने जा रहा है, तो उन्हे पूछता, "आप किस शहर से हैं?" यदि वे उत्तरी जातियों में से एक होता, तो वह कहता है, "मैं तुम्हारी समस्या समझता हूँ। यह बहुत बुरा है कि राजा तुम्हारी बात नहीं सुनेगा। यदि मैं राजा होता, तो मैं यह सुनिश्चित करता कि तुम्हें सुना जाए।"

जल्द ही, इस्राएल की उत्तरी जातियाँ अबशालोम के वफादार बन गईं। जब समय सही था, तो उन्होंने दूत को यह कहकर भेजा, " भेंड़ के सींग की ध्वनि सुनना। जब यह तुम्हें सुनाई दें, चिल्लाना, 'अबशालोम राजा है!'

साजिश तेजी से फैली। अधिक से अधिक लोगों ने अबशालोम का समर्थन करना शुरू कर दिया। उसने शहर छोड़ दिया और दाऊद के सलाहकारों में से एक, अहीतोपेल को मदद के लिए चुना। दाऊद और अबशालोम दोनों जानते थे कि अहीतोपेल का ज्ञान प्रभु का एक उपहार था।

दाऊद ने इस बारे में नहीं सुना था, जब तक बहुत देर हो चुकी थी। तब तक वह जानता था कि उसका जीवन खतरे में है, इसलिए वह और उसके नौकर जल्दी से शहर छोड़कर चले गए। जब वह जैतून के पहाड़ पर चल रहा था उसने अपने जूते उतार दिए, अपना सिर ढंक लिया, और खुले तौर पर रोते हुए उसने जैतून के पहाड़ को देखा। लोग रास्ते में आकर उसके साथ रोने लगे।

एक बार जब वह पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, तो अपने एक मित्र और सलाहकार हूशै से मिला। दाऊद ने उससे कहा, "मेरे साथ मत आ। अबशालोम से कह कि तू उसकी सेवा करेगा, जैसे तूने मेरी सेवा की है। यदि हो सके तो मेरे बेटे को अहीतोपेल के खिलाफ सलाह दें।

इसके बाद उन्होंने एक तरीका स्थापित किया जिसमें हूशै दाऊद को अबशालोम की योजनाओं के बारे में जानकारी भेज सके। हूशै उसी समय यरूशलेम लौटा , जब अबशालोम और एक बड़ी भीड़ शहर में प्रवेश कर रहे थें। अहीतोपेल उनकी

ओर था। हूशै ने अबशालोम के सामने झुककर कहा, "राजा जीवित रहे !"

अबशालोम ने कहा, "तुम अपने दोस्त के साथ क्यों नहीं गए?"

हूशै ने कहा, "मैं उस व्यक्ति की सेवा करूंगा जिसे परमेश्वर और लोगों ने चुना है। जैसा मैंने आपके पिता की सेवा की थी, मैं आपकी सेवा करूंगा।"

जब दाऊद जा रहा था, वह शिमी नाम के एक व्यक्ति के घर से गुजरा। वह शाऊल के परिवार से था। शिमी ने दाऊद पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए और चिल्लाते हुए कहा, "तुम इसके लायक हो, तुम गंदे कातिल हो! राजा शाऊल के साथ तुमने जो किया उसके लिए परमेश्वर तुम्हारा न्याय कर रहा हैं। एक गड्ढे में छुप जाओ, जो तुम्हारी जगह है।"

अबीशै ने अपनी तलवार निकाली और कहा, "यह गन्दा कुत्ता मरेगा! मैं उसका सिर काटने जा रहा हूँ!"

दाऊद उसकी ओर मुड़ा और कहा, "तुम ऐसा क्यों करोगे? यह प्रभु ही था जिसने उनसे कहा,, शिमी, जा और दाऊद को शाप दें!' हम इस तरह परमेश्वर से क्यों लड़ें? हो सकता है कि यहोवा देखेगा कि मैं क्या कर रहा हूँ और मुझ पर दया करेगा।"

इसलिए दाऊद और उसके लोग सड़क पर चलते रहे, जहाँ शिमी उनके ऊपर एक पहाड़ी की चोटी पर खड़ा था। वह शाप देता रहा और दाऊद पर पत्थर और गंदगी फेंकता रहा।

जब अबशालोम महल में था, तो अहीतोपेल ने कहा, "मुझे आज रात 12,000 लोगों को ले जाने और दाऊद का पीछा करने की अनुमति दो। कमजोर और थके हुए होने पर मैं उन पर हमला करूंगा। इससे उनके लोग घबरा जाएंगे और वे तितर-बितर हो जाएंगे। मैं केवल राजा को मारूंगा, और बाकी सभी लोगों को वापस लाऊंगा। उसने कहा, शांति होगी जब लोग देखेंगे कि तुमने केवल राजा को मार डाला है और बाकी सभी को जीवित रहने दिया है।"

यह प्रस्ताव अबशालोम को अच्छा लगा, लेकिन उसने कहा, "हूशै को बुलाओ। मैं उसकी सलाह सुनना चाहता हूं।"

जब हूशै ने यह योजना सुनी, तो उसने कहा, "अरे नहीं! ऐसा मत करो तुम अपने पिता और उनके लोगों को जानते हो। वे योद्धा हैं। अभी वे एक जंगली भालू की तरह हैं, जिनके बच्चे ले लिए गए हैं। तुम्हारा पिता लड़ना जानता है। वह शायद किसी गुफाओं में छिपा है, तुम्हारे लोगों के बाहर आने का इंतजार कर रहा है। यदि तुम अभी कार्य करते हो , तो तुम्हारे कुछ लोग मारे जाएंगे। जब लोग यह सुनेंगे, तो वे कहेंगे कि दाऊद तुम्हारी सेनाओं को मार रहा है। हर कोई इस पर विश्वास करेगा क्योंकि वे जानते हैं कि तुम्हारे पिता एक कुशल योद्धा हैं।

"यहाँ तुमको यह करना चाहिए, पूरे इस्राएल से एक बड़ी सेना इकट्ठा करो। व्यक्तिगत रूप से उन्हें लड़ाई में नेतृत्व करें। दाऊद पर हमला करो जहाँ भी तुम उसे पाओ।

एक विशाल सेना के साथ, यह सुनिश्चित करना कि वह बच नहीं सकें। यदि कोई भी शहर उसे छुपाता है, तो उस शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दें और एक पत्थर दूसरे पर ना छोड़ना।"

सबसे पहले, हूशै को यह नहीं पता था कि अबशालोम उनकी सलाह का पालन करेगा या अहीतोपेल की। इसलिए उसने दाऊद को बदतर परिणाम के लिए तैयार करने का फैसला किया। यह पहले से तय किया गया था कि दो धावक दाऊद को हूशै से आए किसी भी संचार को लाएंगे। इसलिए उसने उन्हें एक नौकर लड़की द्वारा एक संदेश भेजा, जिसमें कहा गया था, "राजा के पास जाओ और उसे बताओ, यरदन नदी के इस ओर रात मत बिताना। उसके बजाय, दूसरी तरफ से चले जाना। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप और आपके साथ के सभी लोग नष्ट हो जाएंगे। '' तो पुरुष दाऊद की ओर दौड़ने लगे।

दुर्भाग्य से, एक लड़के ने लड़की को वह संदेश देते देख लिया। उसने तुरंत जाकर अबशालोम को बताया कि उसने क्या देखा था। अबशालोम ने दो आदमियों को पकड़ने के लिए पहरेदार भेजे।

धावक एक परिवार के पास आए, जिनके आंगन में एक कुआं था। घर के पुरुष ने उन्हें कुएं में चढ़ने में मदद की, और उसकी पत्नी ने उस पर एक ढक्कन रखा और ऊपर से अनाज बिखेर दिया।

जब पहरेदार पहुंचे, तो उन्होंने महिला से पूछा, "यहाँ आने वाले दो आदमी कहाँ हैं?"

उसने कहा, "ओह, वे गुजर गए और पानी की ओर चले गए।"

पहरेदारों ने जल्दबाजी की और दोनों धावकों की तलाश की, लेकिन वे उन्हें ढूंढ नहीं पाए। जल्द ही उन्होंने हार मान ली और यरूशलेम लौट आए।

पहरेदारों के चले जाने के बाद, दोनों लोग कुएँ से बाहर निकले और अपने रास्ते चले गए। उन्होंने राजा दाऊद को पाया और उससे कहा, “जाओ, तुरंत उठो और नदी पार करो!" उन्होंने उसे उस सलाह के बारे में बताया जो अहीतोपेल ने दी थी।

इसलिए दाऊद और उसके साथ के सभी लोग यरदन को पार कर गए। दिन के समय तक, वे सुरक्षित रूप से पार हो गए थे।

उन्होंने तब तक उत्तर की यात्रा की, जब तक वे महनैम शहर में नहीं आए, जिसका अर्थ है "दो शिविर।" उनकी मुलाकात बजिल्लै नाम के एक 80 वर्षीय व्यक्ति से हुई जो प्रमुख व्यक्तियों के एक समूह का नेतृत्व करता था।

पुरुषों ने कहा, “तुम्हारे साथ के लोग भूखे, थके और प्यासे होंगे। हम लिए चारपाइयां, तसले मिट्टी के बर्तन लाए हैं।” उन्होनें उन्हें गेहूं, जव, मैदा, लोबिया,

108B राजा की ओर भागना

2 शमूएल 17: 15-29

मसूर, चबेना, मधु, मक्खन, भेड़-बकरियां, और गाय के दही का पक्कीर भी दिए। इसलिए दाऊद और उसके साथ के लोगों का शहर में स्वागत किया गया और उनकी जरूरतों का ध्यान रखा गया।

109 अबशालोम की हार

2 शमूएल 17:24 - 19: 8

पिछले पृष्ठ से जारी है

प्रभु ने अबशालोम को अहीतोपेल की सलाह को अनदेखा करने के लिए प्रेरित किया, भले ही वह बेहतर थी। इसलिए अबशालोम ने कहा, "हम हूशै की सलाह का पालन करेंगे।"

जब अहीतोपेल ने यह सुना, तो वह जानता था कि दाऊद युद्ध जीत जाएगा। इसलिए वह अपने नगर गया, अपने मामलों को सही किया , और खुद को लटका दिया।

हूशै की सलाह के कारण, दाऊद उस समय युद्ध के लिए तैयार था जब अबशालोम ने एक बड़ी सेना इकट्ठा की थी और उसका पीछा किया था।

उस क्षेत्र के लोगों ने उसे आपूर्ति दी और योआब ने सेना का आयोजन किया।

दाऊद ने अबशालोम की सेना से लड़ने की कार्ययोजना तैयार की। उसने अपने आदमियों से कहा, "मैं तुम्हें युद्ध में ले जाऊंगा।"

उन्होंने कहा, “नहीं! शहर में रह। अगर हममें से कोई मर जाए, तो कोई परवाह नहीं करेगा। हम में से आधे मर जाए, तो कोई क फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन तू 10,000 सैनिकों के बराबर हैं। शहर में रह।”

तो राजा फाटक के पास खड़ा था, जबकि उसके सैनिक चले गए। उसने योआब से बहुत जोर से कहा, ताकि हर कोई सुन सके, "मेरी खातिर, मेरे बेटे, अबशालोम के ऊपर रहम करना।"

दाऊद की सेना ने युद्ध में भाग लिया और इस्राएल की सेना को हरा दिया। यह एक वध में बदल गया, जिसमें 20,000 से अधिक लोग मारे गए थे।

अबशालोम खच्चर पर सवार होकर लड़ाई से दूर जा रहा था। अचानक उसके बाल एक बड़े पेड़ की शाखाओं में फंस गए। इसने उसे खच्चर से खींच लिया, और वह हवा में लटक गया। दाऊद के कुछ लोगों ने उसे वहाँ लटकते हुए देखा, और योआब को बताया।

उसने कहा, “क्या? तुमने उसे वहां लटका हुआ देखा, और उसे नहीं मारा? अगर तुमने उसे मार दिया होता तो मैं तुमको चाँदी के दस टुकड़े दे देता!"

उन्होंने कहा, "अगर तूने हमें 1000 चांदी के टुकड़े भी दिए तो भी हम राजा के बेटे को नहीं मारेंगे।" हमे जो कहा गया था हमने सुना। वह चाहता है कि हम उसके बेटे को बख्श दें। अगर हमने उसे मार दिया होता, तो राजा को इसके बारे में पता चलता ... और तूने हम पर दोष आने दिया होता।"

योआब ने कहा, "मैं तुमसे बात करने में अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ!" उसने तीन भाले लिए और जहाँ अबशालोम लटक रहा था, वहाँ गया। उसने और उसके कई लोगों ने अबशालोम को घेर लिया और उसे मार डाला।

तब योआब ने नरसिंगा बजाया, और उसके सैनिकों ने इस्राएल की सेना का पीछा करना बंद कर दिया। अबशालोम को पेड़ से नीचे उतारा गया और एक बड़े गड्ढे में फेंक दिया गया। उस के साथ, इस्राएल के सभी लोग घर चले गए।

एक युवक ने योआब से कहा, "मैं दौड़ूंगा और राजा को बताऊंगा कि कैसे प्रभु ने उसे विजय दिलाई है।"

योआब ने कहा, "नहीं, मैं किसी और को भेजूंगा।" इसलिए उसने फिर दूसरे धावक को भेजा।

युवक ने योआब से विनती की कि वह उसे भी चलने दे। अंत में उसे जाने की अनुमति दी गई। वह युवक भागा, लेकिन वह दूसरे धावक की तुलना में तेज था और पहले राजा से मिला।

दाऊद फाटक के अंदर ही बैठा था, लड़ाई की खबर का इंतजार कर रहा था।दीवार पर एक चौकीदार ने उसे बताया कि एक धावक आ रहा है।

जैसे ही युवक पास आया, चौकीदार ने दाऊद को बताया कि एक और धावक आ रहा है। युवक राजा के सामने झुक गया और कहा, "लड़ाई अच्छी तरह से हुई। आप जीत गए! प्रभु ने आपको विजय दिलाई है। "

दाऊद ने कहा, "अबशालोम के बारे में क्या? क्या वह जीवित है? "

उसने कहा, "मुझे नहीं पता। मैंने बहुत शोर सुना, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वहाँ क्या हुआ था।"

"वहाँ पर खड़े होकर प्रतीक्षा कर।"

दूसरा धावक आया और उसने कहा, "मेरे पास खुशखबरी है। प्रभु ने आज आपको जीत दिलाई है।"

दाऊद ने कहा, "अबशालोम के बारे में क्या? क्या वह जीवित है? "

धावक ने कहा, "आपके सभी दुश्मनों का अंत उसके जैसा हो।"

अगली कहानी में जारी

110 दाऊद का राज्य बहाल

2 शमूएल 19

अबशालोम की मृत्यु के बारे में सुनकर राजा बहुत दुखी हुआ। वह फाटक के कक्ष तक गया और पीड़ा में रो पड़ा। "मेरा बेटा अबशालोम! मेरा बेटा, मेरा बेटा अबशालोम! काश मैं तुम्हारी जगह मर गया होता अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"

इस बात की खबर सेना को वापस मिल गई। अचानक उनकी जीत की खुशी उदासी में बदल गई। ऐसा लग रहा था कि वे लड़ाई हार गए हैं।

योआब दाऊद के पास गया। "तेरे लोगों ने तेरे लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। उन्होंने न केवल आपकी जान बचाई, बल्कि उन्होंने तेरे परिवार की जान बचाई। अब उन्होंने जो किया है उससे शर्मिंदा हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि तू चाहता था कि वे तेरे बेटे के बजाय मर जाएं।

"अभी उठो। बाहर जाओ और अपने आदमियों को प्रोत्साहित करो। यदि तुम नहीं करते , तो वे सभी तुझको छोड़ देंगे और तेरी परेशानियां पहले से कहीं ज्यादा खराब हो जाएंगी।

इसलिए दाऊद उठकर फाटक पर बैठ गया।

जल्द ही उसके सभी लोग उसके साथ आकर बैठ गए।

अबशालोम के मारे जाने और उसकी सेना के हार जाने के बाद, उसके लोग युद्ध के मैदान से भागे और अपने घरों को वापस चले गए। उस समय इस्राएल के लोगों ने उन सभी अच्छे कामों को याद करना शुरू कर दिया जो दाऊद ने उनके लिए उन सालों में किए थे। साथ में, उन्होंने दाऊद को एक संदेश जारी किया, जिसमें एक बार फिर से उसे राजा बनने के लिए कहा।

यहूदा की जाति इस संदेश मे शामिल नहीं थी , इसलिए दाऊद ने उन्हें एक संदेश भेजा। "तुम मुझे वापस आने के लिए क्यों नहीं कह रहे हो ?" आखिरकार, मैं तुम में से एक हूं।"

उन्होंने तुरंत उसे एक संदेश भेजा, "वापस आओ और हमारे राजा बनो।" फिर वे यरदन नदी में भाग गए और उसे और उसके परिवार को पार किया।

जैसे ही दाऊद ने नदी पार की, शिमी दौड़कर उसके सामने गिर गया। उसने कहा, "मुझे पता है कि जब तूने यरूशलेम छोड़ दिया था तो मैंने तेरे खिलाफ पाप किया। कृपया इसे मेरे खिलाफ न रख। जैसा कि तू देख सकता है, मैं तेरा स्वागत करने वाला पहला व्यक्ति हूं।"

योआब का भाई, अबीशै, आगे बढ़ा और कहा, "मुझे उसे मारने दो। तू प्रभु का अभिषिक्त हैं और इसने तेरा अपमान किया।

दाऊद ने कहा, "अपनी तलवार निकाल दूर कर। आज बहुत खास दिन है। मैं एक बार फिर राजा हूं। आज इस्राएल में किसी को नहीं मारा जाएगा।" वह उसके बाद आदमी की ओर मुड़ा और कहा, "शिमी, तुमने जो किया उसके लिए तुम नहीं मरोगे।"

तुरंत, इस्राएल के जातियों के बीच एक तर्क हुआ। अन्य जातियों ने यहूदा से कहा, "जब तुम राजा को नदी के पार लाए थे तो तुमने हमें क्यों शामिल नहीं किया?"

यहूदा ने कहा, "हम उसके रिश्तेदार हैं।"

अन्य लोगों ने कहा, "वह केवल इस्राएल के राजा है, न कि केवल यहूदा के। इसलिए वह हमारा राजा दस गुना अधिक है।" इसने एक बार फिर देश को विभाजित किया और जातियों के बीच लड़ाई तीव्र हो गई।

शीबा नाम का एक व्यक्ति आगे बढ़ा और एक नरसिंगा बजाया। उन्होंने कहा, "दाऊद इस्राएल का राजा नहीं है। यहूदा को उसे लेने दो। चलो घर चलें।"

उसके साथ, इस्राएल के लोग चले गए। केवल यहूदा की जाति दाऊद को यरूशलेम ले गई।

111 अबीगैल एक बुद्धिमान स्त्री

2 शमूएल 20 और 1 इतिहास 2: 16-17

दाऊद ने योआब को सेनापति के पद से हटा दिया। उसने उसे अमासा से बदल दिया, जो उसका भतीजा भी था। उसने अमासा से कहा, "तीन दिनों में मेरे सैनिकों को इकट्ठा करो ताकि तुम शीबा को ढूढ़ सको।"

अमासा ने एक सेना को इकट्ठा करना शुरू कर दिया, लेकिन इसमें उसे काफी समय लगा। वह तीन दिन में वापस नहीं आया।

दाऊद ने योआब के भाई, अबीशै से कहा, "अगर हमे शीबा को हराना है तो हम तेज़ी से काम करें। यदि हम उसे समय देते हैं, तो वह अबशालोम से बड़ा खतरा होगा। तुरंत उसके पीछे जाओ।"

योआब अपने भाई के साथ शामिल हो गया, और दोनों ने मिलकर एक सेना तैयार की। तब शीबा को पकड़ने के लिए वह यरूशलेम से निकले।

रास्ते में, आखिरकार अमासा उन्हें मिल गया। योआब उसके पास गया, "अमासा, मेरे चचेरे भाई। क्या हाल है?" तब उसने अपना दाहिने हाथ बढ़ाया, जैसे कि वह अमासा को करीब लाने और उसे एक चुंबन के साथ स्वागत करने के लिए करना चाहता था। अमासा ने योआब के बाएँ हाथ में चाकू नहीं देखा।

योआब ने अमासा को पेट में चाकू मार दिया। वह जमीन पर गिर गया, और मर रहा है लेकिन अभी तक मरा नहीं था । योआब मुड़ा और शीबा की खोज जारी रखने के लिए चल पड़ा।

एक सैनिक अमासा के बगल में खड़ा हो गया और चिल्लाया, "योआब के पीछे चलो यदि तुम राजा दाऊद के प्रति वफादार हों।"

जब सेना ने योआब का पीछा किया, तो जब वे अमासा के पास से गुजरते तो वे धीमे पड़ते रहे , जो बहुत तकलीफ में कराह रहा था। कुछ लोगों ने उसकी तरफ देखा भी नहीं। अंत में एक सैनिक ने अमासा को सड़क के किनारे खींच लिया और उसके ऊपर एक कंबल डाल दिया। फिर सेना जल्दी चली गई।

उन्होंने शीबा का पूरे देश में पीछा किया। आखिरकार वह अपने लोगों को आबेल नाम के एक शहर में ले गया। योआब के सैनिकों ने शहर की घेराबंदी की और ऐसी आड़ बान्धी कि वह शहरपनाह से सट गई। इसका उद्देश्य दीवारों को तोड़ना और शहर को नष्ट करना था।

जब वे काम कर रहे थे, एक महिला ने उन्हें पुकारा। वह उस क्षेत्र में बुद्धिमान महिला के रूप में जानी जाती थी। उसने कहा, " जाओ, योआब को लाओ ताकि मैं उससे बात कर सकूं।"

योआब दीवार के उस हिस्से पर आया और चिल्लाया, "तुम क्या चाहती हो?"

वह वापस चिल्लाई , "तू योआब हैं?"

उसने कहा, "हाँ, तुम्हें क्या चाहिए?"

उसने कहा, "लोग कहते हैं, 'सबसे अच्छी सलाह लेने के लिए आबेल जाओ।' ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जानते हैं कि समस्याओं को कैसे हल किया जाए। तो तू आबेल जैसे मूल्यवान संसाधन को क्यों नष्ट करना चाहेगा ? हमारा शहर इस्राएल के लिए एक माँ की तरह है।"

उसने कहा, "हम यहां तेरे शहर को नष्ट करने के लिए नहीं आए हैं। हम शीबा का पीछा कर रहे हैं, जिसने दाऊद, हमारे राजा के खिलाफ विद्रोह किया है। यदि तू हमें वह आदमी देती हैं, तो हम तेरे शहर को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे ।"

महिला ने कहा, "मैं तेरे शब्दों को एक सौदे के रूप में लेती हूं। हम उसका सिर शहरपनाह पर से तेरे पास फेंक देंगे।"

महिला ने जाकर शहर के अधिकारियों से बात की। उन्होंने उसकी बुद्धि पर भरोसा किया, इसलिए उन्होंने शीबा को पकड़ लिया, उसका सिर काट दिया, और उसे योआब के पास फेंक दिया।

जब योआब ने देखा, तो उसने नरसिंगा बजाया, और उसकी सेना घर चली गई। योआब यरूशलेम वापस चला गया, जहाँ उसे एक बार फिर दाऊद की सेना का सेनापति बनाया गया।

112 नैतिक सफाई

2 शमूएल 21

इस्राएल देश में अकाल पड़ा। पहले दाऊद ने सोचा कि यह एक प्राकृतिक घटना है, लेकिन यह तीन साल तक चला। उन्होंने तब महसूस किया कि अकाल परमेश्वर की ओर से था। इसलिए उसने प्रभु से इसके बारे में प्रार्थना की । परमेश्वर ने कहा, "यह शाऊल ने गिबोनियों के साथ जो किया है, उसका परिणाम है।"

गिबोन में परमेश्वर का निवास स्थान था। परमेश्वर का सन्दूक यरूशलेम में था, लेकिन गिबोन में पवित्रस्थान की स्थापना की गई थी। इसलिए, दो आराधना स्थल थे।

गिबोनियों ने यहोशू के दिनों में इस्राएल के साथ एक समझौता किया। शाऊल ने उन समझौतों को नज़रअंदाज़ करने और गिबोन की आबादी को खत्म करने का फैसला किया। उन्होंने उनके अस्तित्व को पूरी तरह से खत्म करने की कोशिश की।

दाऊद उनके पास गया और कहा, "हमारे लोगों ने तुम्हारे साथ गलत किया है। हम एक बार फिर तुम्हारे साथ कैसे सामंजस्य बिठा सकते हैं?"

उन्होंने कहा, "हमारे भाइयों और बहनों की हत्या के लिए पैसा नहीं दे सकते। और हमारे पास वापस इस्राएल पर हमला करने की शक्ति नहीं है। फिर भी, हमारी शिकायत इस्राएल की ओर नहीं है। यह केवल उस व्यक्ति के लिए है जिसने हमें पृथ्वी से विनाश करने की कोशिश की है।"

दाऊद ने कहा, "तो, हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?"

उन्होंने कहा, "हमें शाऊल के सात वंशजों को दे। हम उन्हें उनके नगर में लटका देंगे, जहां लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं।"

दाऊद राजी हो गया। उसने शाऊल के दो पुत्रों और अपने पाँच पौत्रों का चयन किया। उसने योनातन से अपने वादे के कारण मपीबोशेत को बख्शा।

गिबोनियों ने सात लोगों को मार डाला और उनके शव को एक पहाड़ी पर लटका दिया जहां लोग आराधना करने जाते थे। उन्हें अप्रैल से वहां लटका देना था, जो कि फसल की शुरुआत थी और अक्टूबर तक लटका देना था, जो बारिश के मौसम की शुरुआत थी।

शाऊल की पत्नी उस जगह पर गई जहाँ उसके बेटे और पोते लटक रहे थे। दिन में पक्षियों से और रात में जंगली जानवरों से शवों को बचाने के लिए वह दिन-रात वहाँ रहती थी।

जब आवंटित समय समाप्त हो गया, तो दाऊद उस शहर में गया जहाँ शाऊल और योनातन को दफनाया गया था और उनकी हड्डियाँ मिली थीं। फिर उन्हें सात लोगों के साथ उनके परिवार की कब्र में दफनाया गया। यह सब हो जाने के बाद, परमेश्वर ने भूमि के विषय में दाऊद की प्रार्थना को एक बार फिर से सुना।

सालों बाद, पलिश्तियों ने एक बार फिर इस्राएल पर युद्ध की घोषणा की। दाऊद अपने आदमियों के साथ लड़ाई लड़ने गया। लड़ाई के दौरान वह अचानक थक गया। गोलियत के एक रिश्तेदार ने इसे दाऊद को मारने के अवसर के रूप में देखा। पलिश्ती विशाल था, और एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति था। वह दाऊद को मारने के लिए आगे बढ़ा। दाऊद के लोगों में से एक ने उसको रोका और उसे मार डाला।

दाऊद को युद्ध के मैदान में ले जाया गया, और उसके लोगों ने शपथ ली। उन्होंने कहा, “तू हमारे साथ फिर कभी नहीं लड़ेगा । तू इस्राएल का दीपक हैं, और तू इसे युद्ध के मैदान में नहीं डालेगा ।” इसलिए दाऊद फिर से युद्ध करने नहीं गया।

113 लोगों की संख्या

2 शमूएल 24 और 1 इतिहास 21

राजा दाऊद ने योआब को बुलाया और कहा, "पूरे देश में जा और सभी लोगों की गिनती कर।" वह देखना चाहता था कि वह कितनी बड़ी सेना बना सकता है।

योआब जानता था कि यह दाऊद के लिए परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। उसने कहा, “प्रभु की अनआज्ञाकारिता मत कर। परमेश्वर तुझको किसी भी परिस्थिति में जितने लोगों की आवश्यकता होगी, तुझको देंगे।”

लेकिन दाऊद ने जोर दिया, इसलिए योआब ने अपनी सेना का इस्तेमाल इस्राएल के हर हिस्से में जाकर लोगों की गिनती की।

जब उन्होंने गिनती पूरी कर ली, तो उन्होंने दाऊद से कहा कि 1,300,000 से अधिक पुरुष थे जो ज़रूरत पड़ने पर युद्ध में जाने में सक्षम थे।

दाऊद के यह सुनने के बाद, वह जान गया कि परमेश्वर खुश नहीं थे कि उसने ऐसा किया है। उसने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मैंने मूर्खतापूर्ण कार्य किया और तेरे खिलाफ पाप किया है । मेरे पाप को क्षमा कर दो।”

दाऊद को संदेश देने के लिए प्रभु ने एक भविष्यवक्ता भेजा। "तुझे इस पाप के लिए तीन दंडों में से एक का चयन करना होगा :

• एक अकाल जो भूमि को तीन साल में तबाह कर देगा,

• एक हमलावर सेना जिससे तू तीन महीने के लिए लड़ाई के बाद हार जाए,

• या एक महामारी जो तीन दिनों के लिए भूमि पर ठहर जाए।"

दाऊद ने कहा, "ये तीनों मुझे भयभीत करते हैं!" फिर भी, मैं पुरुषों के बजाय परमेश्वर के हाथों से भुगतना चुनूंगा। मुझे पता है कि परमेश्वर दयालु हैं।"

इसलिए परमेश्वर ने एक दूत को भेजा, जो एक गंभीर महामारी के साथ भूमि पर चला। और 70,000 लोग मार गए! स्वर्गदूत ने फिर यरूशलेम पर ध्यान केंद्रित किया।

जैसे ही मौत शहर में आई, परमेश्वर ने कहा, “रुक जा! बहुत हुआ!"

दूत तुरंत रुक गया। वह एक खलिहान पर था जिसका मालिक अरौना नाम का यबूसी था। यह वही

जगह थी जहाँ अब्राहम ने अपने पुत्र को परमेश्वर को अर्पित किया था। दाऊद ने ऊपर देखा, और देखा कि दूत एक तलवार पकड़े हुए , शहर के बाहर खड़ा हुआ है।

अरौना ने भी दूत को देखा, इसलिए वह भाग कर छिप गया।

दाऊद नीचे गिर गया, उसके चेहरे के साथ जमीन की ओर।

"हे परमेश्वर, मैंने पाप किया है! इन लोगों ने नहीं। वे भेड़ की तरह हैं। उन्होंने क्या किया है? मुझे और मेरे परिवार को सजा दे।"

भविष्यवक्ता दाऊद के पास परमेश्वर के एक संदेश के साथ गया था। "उस खलिहान पर परमेश्वर के लिए एक वेदी बना।" दाऊद तुरंत उसकी ओर चल दिया। जब अरौना ने यह देखा, तो वह राजा के पास गया और उसे प्रणाम किया।

दाऊद ने कहा, "मुझे अपना खलिहान बेच दे, ताकि मैं यहोवा के लिए एक वेदी बना सकूं। फिर वह लोगों को महामारी से बचाएगा। मैं तुमझको इसके लिए पूरी कीमत दूंगा।"

अरौना ने कहा, "हे राजा, मैं इसे तुम्हें दे दूंगा। कृपया इसे ले और अपनी वेदी बना।बलिदान के लिए मेरे बैलों का उपयोग कर, और अग्नि के लिए मेरी लकड़ी का उपयोग कर। मैं यह सब देता हूं। मुझे भरोसा है कि प्रभु तेरी सुनेंगे।"

दाऊद ने कहा, "नहीं मेरे दोस्त, मैं इसे पूरी कीमत पर खरीदूंगा।" मैं उस चीज़ का उपयोग करके यहोवा के लिए बलिदान नहीं करूँगा, जिसकी मुझे कुछ भी कीमत नहीं देनी पड़े । इसलिए दाऊद ने खलिहान, बैल और लकड़ी खरीदीं। उसने तब वेदी का निर्माण किया और प्रभु को बलिदान चढ़ाया।

परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना सुनी और उसने भेंट को जलाने के लिए स्वर्ग से आग भेज दी। उसने फिर दूत को आज्ञा दी, "अपनी तलवार दूर रखो!"

उसके साथ, महामारी खत्म हो गई थी।

उस दिन से, दाऊद ने उस वेदी का उपयोग किया जब भी उसने परमेश्वर को बलिदान किया। उसने कहा, "यह प्रभु का घर है।"

फिर उसने लोगों को संगठित किया और मंदिर निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री को खरीदा। वर्षों बाद, सुलैमान ने उसी स्थान पर यहोवा के मंदिर का निर्माण किया।

114 सत्ता का बदलना

1 राजा 1

जब दाऊद बूढ़ा और कमजोर हो गया, तो वह हमेशा ठंडा रहता था। कंबल से उसे ढकने से कोई फायदा नहीं होता था। अंत में उन्होंने उसके लिए एक दाई रखने का फैसला किया जो उसके साथ सोएगी। उन्हें एक सुंदर कुंवारी मिली और वह हमेशा उसकी देखभाल करने के लिए वहाँ रहती थी। वह उसके साथ सोती थी, लेकिन वे संभोग नहीं करते थे।

अदोनिय्याह, दाऊद का चौथा पुत्र था, जो अबशालोम का एक छोटा भाई था। वह अपने भाई की तरह ही सुंदर था। दाऊद ने कभी भी अदोनिय्याह को अनुशासित नहीं किया, या उसे ठीक भी नहीं किया।

क्यूंकि दाऊद बूढ़ा और बीमारी के कारण बिस्तर पर पड़ा हुआ था, अदोनिय्याह ने कहा, "मैं अगला राजा बनूँगा।" रथ में सड़कों पर दौड़ते हुए उसने अपने सामने दौड़ने के लिए 50 अंगरक्षकों को काम पर रखा। उसने योआब को उसकी मदद करने के लिए कहा, और महायाजक की मदद लेने के लिए कहा। दूसरों ने मदद करने से इनकार कर दिया, जिसमें नातान नबी भी शामिल था।

अदोनिय्याह ने एक भोज भी रखा और समर्थन देने वालों को आमंत्रित किया। उसने अपने भाइयों, दाऊद के सेवकों और यहूदा के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया। लेकिन उसने उन लोगों को आमंत्रित नहीं किया जिन्होंने उसका विरोध किया था, और उसने सुलैमान को भी आमंत्रित नहीं किया।

बतशेबा सुलैमान की माँ थी। नातान ने जाकर उसे बताया कि क्या हो रहा है। उसने कहा, "राजा को पता नहीं है कि अदोनिय्याह क्या कर रहा है। अगर हम इस पर रोक नहीं लगाते हैं, तो तू और तेरा बेटा मारे जाएंगे।" उसने फिर उसे बताया कि वे राजा को कैसे बताएं।

वह दाऊद के शयनकक्ष में गई, जहाँ उसकी दाई उसकी सेवा कर रही थी। बतशेबा ने कहा, "मेरे प्रभु, तुमने कहा कि सुलैमान तेरे बाद राजा होगा। लेकिन अब अदोनिय्याह ने तेरे जाने बिना ही खुद को राजा बना लिया। इस्राएल में हर कोई आपकी ओर देख रहा है, आप उन्हें बताएं कि वास्तव में कौन राजा होगा। यदि आप उन्हें बताए बिना मर जाते हैं, तो सुलैमान और मैं अपराधियों के रूप में मारे जाएंगे।"

ठीक उसी समय पर, नातान अंदर आया और कहा, "मेरे प्रभु राजा, क्या तूने अदोनिय्याह को राजा बनाया है? आज वह इस्राएल के अधिकारियों के साथ भोज कर रहा है। वे खा-पी रहे थे और कह रहे थे कि 'राजा लंबे समय तक जीवित रहें।' मुझे आश्चर्य है कि ऐसा होने के लिए आपने अपनी सहमति दे दी, बिना मुझे बताए।"

दाऊद ने बतशेबा से कहा, "जैसा कि प्रभु जानता है, तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा बनेगा। यह आज होगा। "

इसके बाद उसने कुछ याजकों, अधिकारियों और नातान नबी को एक काम सौंप दिया। "सुलैमान को मेरे निजी खच्चर पर उस स्थान पर ले जाओ जहाँ तुम उसका राजा होने के लिए अभिषेक करोगे। बाद में, नरसींगें बजाना! चिल्लाओ, राजा सुलैमान लंबे समय तक जीवित रहें!' तब उसे मेरे सिंहासन पर बैठाना। सभी को बताना कि वही है जिसे मैंने अपने बाद राजा बनने के लिए चुना है।"

पुरुषों ने दाऊद के निर्देशों का पालन किया। जैसे ही सुलैमान को राजा घोषित किया गया, लोगों ने सड़कों पर चिल्लाना, बांसुरी बजाना और जश्न मनाना शुरू कर दिया।

अदोनिय्याह के भोज में लोगों ने शोर सुना और सोचा कि क्या हो रहा है। पुरुषों ने दौड़कर उन्हें बताया। "राजा दाऊद ने इस्राएल का राजा सुलैमान को बनाया है! अभी वह शाही सिंहासन पर बैठा है।"

सभी लोग जल्दी से भोज छोड़कर घर चले गए। अदोनिय्याह घबरा गया कि सुलैमान उसके साथ क्या करेगा। वह पवित्रस्थान के पास गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। उसने सुलैमान को संदेश भेजा कि "मैं तेरा दास हूँ। कृपया मुझसे वादा कर कि तू मुझे नहीं मारेगा ।"

सुलैमान ने एक संदेश वापस भेजा।"यदि तू चरित्रवान व्यक्ति की तरह व्यवहार करता हैं, तो मैं तुझको नहीं मार सकता। लेकिन अगर नहीं, तो मुझे तुझे मारना पड़ेगा।" इसलिए अदोनिय्याह जाकर सुलैमान के सामने झुक गया और उसे नए राजा के रूप में सम्मान दिया।

115 दाऊद और योआब की मौत

1 राजा 2

दाऊद के मरने से पहले, उसने सुलैमान को निर्देश दिया कि वह राजा के रूप में किस तरह शासन करे। उसने कहा, "सफल होने के लिए, तुझको मज़बूत और बहादुर होना चाहिए, और हमेशा परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार चलना चाहिए।"

"जब सही समय हो तो योआब को मार डालना। उसने इस्राएल के दो सेनापतियों - अबनेर, शाऊल के सेनापति और अमासा, उसके चचेरे भाई की हत्या कर दी। उसने उन्हें युद्ध के मैदान में नहीं मारा। इन दोनों पुरुषों ने उस पर भरोसा किया क्योंकि यह शांति का समय था। उसने कहा, उसे शांति से बूढ़ा न होने देना।

"याद रख कि जब मैं अबशालोम से भाग रहा था, तब शिमी ने मुझे शाप दिया था। उसने दया की भीख माँगी और मैंने कहा कि वह जी सकता है। उसे दंडित करना तेरे ऊपर है। अपनी बुद्धि के अनुसार उससे निपटना। "

इसके तुरंत बाद, दाऊद की मृत्यु हो गई और उन्होंने उसे यरूशलेम में दफना दिया। वह चालीस वर्षों तक राजा रहा।

बाद में, अदोनिय्याह ने बतशेबा के पास जाकर कहा, "आप जानते हैं कि सभी इस्राएलियों ने मुझसे राजा बनने की उम्मीद की थी। मैं सुलैमान को राजा के रूप में स्वीकार करता हूं, क्योंकि यह इस्राएल के लिए परमेश्वर की इच्छा है। मेरा बस एक अनुरोध है।"

उसने कहा, "क्या अनुरोध है?"

"अगर तू मांगेंगी तो राजा कुछ भी मना नहीं करेगा। इसलिए, कृपया जाकर पूछ कि क्या दाऊद की दाई मेरी पत्नी हो सकती है।"

इसलिए बतशेबा सुलैमान के पास गई। उसने खड़े होकर उसका अभिवादन किया और अपने दाहिने तरफ एक सिंहासन रखवाया।

वह बैठ गई और बोली, "मेरा एक निवेदन है। कृपया मुझे दें।"

"माँ, पूछ और मैं तुझ दे दूंगा।"

उसने कहा, "कृपया दाऊद की दाई को अदोनिय्याह की पत्नी होने के लिए दें।"

सुलैमान हैरान था। उसने कहा, "यह पूछना ऐसा है कि क्या उसे राजा बनाया जा सकता है। इस अनुरोध पर अदोनिय्याह को अपना जीवन देना होगा।

इस दिन के समाप्त होने से पहले वह मृत हो जाएगा।" तब सुलैमान ने आज्ञा दी, और अदोनिय्याह मारा गया।

महायाजक ने अदोनिय्याह का समर्थन किया था, इसलिए राजा ने उससे उसका काम छीन लिया। वह एली के वंश से आखिरी पुजारी थे। इससे उसके बारे में दी गई भविष्यवाणी को पूरा किया।

योआब जानता था कि उसका समय आ गया है, इसलिए वह पवित्रस्थान पर गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। सुलैमान ने इस बारे में सुना और एक पहरेदार से कहा, "उसे मार डालो।"

पहरेदार ने जाकर योआब से कहा, "बाहर आ।"

उसने कहा, "नहीं, मैं यही मरूंगा।"

रक्षक वापस गया और राजा को बताया।

सुलैमान ने कहा, "जैसा उसने पूछा था वैसा ही कर। उसे वही मार दें! वह उससे बेहतर दो अच्छे लोगों की हत्या करने के लिए मरने के लायक है।" इसलिए योआब को वेदी पर मार दिया गया और उसके घर के पास दफना दिया गया।

तब सुलैमान ने शिमी को बुलाया। राजा ने कहा, "यरुशलेम में एक घर बना और वहीं रह। तू अपने जीवनभर इस शहर को नहीं छोडेगा । अगर तू चला गया, तो तू मर जाएगा। तो, तेरा जीवन तेरे हाथों में है।"

शिमी ने कहा, "यह उचित है। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।

वह तीन साल तक यरूशलेम में रहा। एक दिन, उसके दो दास भाग गए, इसलिए शिमी उनके पीछे गया और उन्हें वापस ले आया।

सुलैमान ने उसे अंदर बुलवाया। मैंने तुझे जो आज्ञा दी, उसे तूने नज़रअंदाज़ कर दिया। अब तूने मेरे पिता के साथ जो किया उसके लिए तू भुगतान करेगा । तूने उसे शाप दिया, फिर भी उसका राज्य हमेशा के लिए चलेगा।" उसी के साथ शिमी मारा गया।

इसलिए सुलैमान ने खुद को इस्राएल के राजा के रूप में स्थापित किया।

116 सुलैमान की बुद्धि

1 राजा 3 - 4 और 2 इतिहास 1

सुलैमान ने यहोवा से प्यार किया और अपने पिता दाऊद की मिसाल पर चलने की कोशिश की। एक दिन, वह गिबोन गया और वेदी पर 1,000 बलिदान किए। उस रात परमेश्वर उसे एक सपने में दिखाई दिया। "तू क्या चाहता है की मैं तुझे दूं?"

बिना किसी हिचकिचाहट के, उसने कहा, "परमेश्वर, मेरे पिता एक महान राजा थे, लेकिन मैं एक बच्चे की तरह महसूस करता हूं, जो कुछ भी नहीं जानता है। मुझे अपने लोगों पर शासन करने के लिए ज्ञान और समझ दे।"

सुलैमान के उत्तर से परमेश्वर प्रसन्न हुआ। "तूने लंबा जीवन, धन, या शांति के बजाय ज्ञान के लिए कहा है। इसलिए मैं तझको ज्ञान दूंगा। तेरा ज्ञान उस ज्ञान से अधिक होगा जो दूसरों के पास है। मैं तुझको बहुत धन और सम्मान भी दूंगा। और मैं तुझको दीर्घायु दूंगा, लेकिन केवल तभी जब तू मेरे पीछे चले जैसे दाऊद चलता था।"

इस वादे के तुरंत बाद, दो वेश्याएँ फैसले के कक्ष में गईं और राजा के सामने खड़ी हो गईं।

एक ने कहा, "यह औरत और मैं एक ही घर में रहते हैं। हम में से प्रत्येक ने बेटों को जन्म दिया। जब हम सो रहे थे, तब वह गलती से अपने बेटे के ऊपर लेट गई और उसे मार डाला। इसलिए रात में, उसने मेरे बच्चे को ले लिया और मेरे बच्चे के स्थान पर अपने मृत बेटे को रख दिया। मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए सुबह उठी, लेकिन

बच्चा मर चुका था। मुझे तब एहसास हुआ कि यह मेरा बेटा नहीं था, लेकिन बच्चा उसका था। उसके पास मेरा बच्चा है।"

दूसरी महिला ने कहा, "नहीं, जीवित बच्चा मेरा है और मृतक उसका है!" दोनों राजा के सामने बहस करने लगीं।

सुलैमान ने एक पहरेदार की ओर रुख किया और कहा, "यहां तलवार लेकर आओ।" बच्चे की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "लड़के को दो टुकड़ों में काट और प्रत्येक माँ को उसका आधा हिस्सा दे।"

एक महिला ने पुकारा, "नहीं! मेरे बेटे को मत मारो! वह उसे रख सकती है! कृपया उसे जीवित रहने दें।"

दूसरी महिला ने कहा, "हां, उसे आधा काट दें, तो हम दोनों का एक हिस्सा होगा।"

राजा ने पहरेदार से कहा , "पहली स्त्री को लड़का दो। वह मां है क्योंकि उसका दिल बच्चे के लिए रोया है।" उसकी बुद्धि ने इस्राएल के लोगों को चकित कर दिया।

सुलैमान ने उत्तर में पिशोन नदी से लेकर दक्षिण में मिस्र तक सभी देशों पर शासन किया। जब तक वह रहा उस पूरे क्षेत्र में शांति थी। इस्राएल में इतने सारे लोग थे कि वे समुद्र की रेत की तरह थे। हर कोई शांति से था और युद्ध के डर के बिना रहता था।

सुलैमान ने कई विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उसे पौधों, पक्षियों और जानवरों के बारे में समझ थी। उसकी बुद्धि दुनिया में हर किसी से ज्यादा थी। दुनिया भर के राजा लोगों को उनकी बात सुनने और उनसे सीखने के लिए भेजते थे।

117 मंदिर का निर्माण

1 राजा 5 - 9 और 2 इतिहास 2 - 7

सुलैमान जानता था कि यहोवा के मंदिर का निर्माण करना उसकी ज़िम्मेदारी है। इसलिए, उसने एक बड़े कार्यबल को इकट्ठा किया और उन्हें हर वह सामग्री प्रदान की जिनकी उन्हें ज़रूरत थी। उसे लेबनान के राजा हीराम से देवदार मिला, जो उसके पिता दाऊद का दोस्त था।

मंदिर का निर्माण पूरा होने में सात साल लग गए। उस समय के दौरान, मंदिर स्थल पर उपकरणों की कोई आवाज़ नहीं थी क्योंकि सब कुछ कहीं और बनाया गया था। अंदर की दीवारें पूरी तरह से देवदार से ढंकी थीं। सबसे पवित्र स्थान की दीवारों को शुद्ध सोने से ढंक दिया गया था। आराधना के लिए सभी बर्तन, सामान और उपकरण भी सोने से बने थे। उसने अन्यजातियों के लिए भी जगह बनाई जो मंदिर में आकर प्रार्थना करना चाहते थे।

एक बार मंदिर पूरा होने के बाद, राजा सुलैमान ने इस्राएल के सभी गोत्रों के अगुओं को इकट्ठा किया। याजकों ने जाकर परमेश्वर का सन्दूक ले लिया।

उस समय सन्दूक में एकमात्र चीज पत्थर की दो पटिया थी जो मूसा ने उसमें रखी थी। जब याजकों ने ध्यान से सन्दूक को मंदिर की ओर बढ़ाया, और रास्ते भर बलिदान किए गए।

अंत में वे पहुंचे, और परमेश्वर के सन्दूक को परम पवित्र स्थान में रखा गया।

अचानक, प्रभु की महिमा ने मंदिर को बादल की तरह भर दिया। यह इतना घना था कि याजक कुछ नहीं कर पा रहें थे।

राजा ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर वह लोगों की ओर मुड़कर उसने उन्हें एक आशीष और समर्पण की प्रार्थना दी। अंत में, वह प्रभु की वेदी के सामने खड़ा हुआ और प्रार्थना की। उसने परमेश्वर से अपने लोगों को सुनने के लिए कहा जब वे अपने पापों को स्वीकार कर रहे थे और माफी मांग रहे थे। उसने परमेश्वर से मंदिर में प्रार्थना करने वाले अन्यजातियों को सुनने के लिए भी कहा।

एक साथ, पूरे इस्राएल देश ने परमेश्वर के लिए बलिदान किया और मंदिर को परमेश्वर को समर्पित किया।

यह उत्सव चौदह दिनों तक चलता रहा । जब यह खत्म हो गया, तो लोग खुशी से भरे दिलों से अपने घरों को लौट गए।

परमेश्वर ने तब सुलैमान के साथ दूसरी बार मुलाकात की।

उन्होंने कहा, "मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है और इस घर को अपने लिए अलग कर दिया है। यदि तू अपने पिता की तरह मेरे साथ चलता है, तो मैं हमेशा के लिए तेरा राज्य स्थापित करूँगा। लेकिन अगर तू या तेरे वंशज मेरी आज्ञाओं की नहीं मानते हैं और अन्य देवताओं की पूजा करना शुरू करते हैं, तो मैं इस घर से विदा हो जाऊंगा, और यह एक अपमानित स्थान बन जाएगा। मैं तब इस्राएल के लोगों को इस भूमि से हटाऊंगा।"

अगले तेरह वर्षों में, सुलैमान ने अपने लिए एक घर बनाया। उसके बाद, उसने कई शहरों का निर्माण किया। उसने अपने सभी निर्माण परियोजनाओं के लिए एक महान कार्यबल की स्थापना की। पूरी दुनिया में सुलैमान की तरह कोई दूसरा राजा नहीं था।

118 शीबा की रानी

1 राजा 10 - 11:25 और 2 इतिहास 9

शीबा की रानी ने राजा सुलैमान की महान बुद्धि के बारे में सुना। वह विश्वास नहीं कर पा रही थी कि यह सच था। इसलिए उसने कठिन प्रश्नों की सूची के साथ जाने और उसका परीक्षण करने का फैसला किया। उसने अपने साथ यात्रा करने के लिए नौकरों के एक बड़े समूह को संगठित किया और राजा को भेंट देने के लिए उपहारों का चयन किया। वह सोने, जवाहरात और मसालों से लदे ऊंटों के एक बड़े कारवां के साथ यरुशलेम पहुंची।

वह राजा से मिली और उससे अपने सवाल पूछें। वह हर एक सवाल का जवाब देने में सक्षम था। उनमें से कोई भी सवाल उसे समझने के लिए बहुत मुश्किल नहीं था। वह उस महल को देखकर चकित हो गई थी जो उसने बनाया था, जैसे हर बार विभिन्न प्रकार के भोजन, जिस तरह से उसके सेवक कपड़े पहने थे, और मंदिर में उसके द्वारा दिए गए बलिदान। उसने कहा, "मैंने तेरे बारे में जो कुछ भी सुना है वह सच है, लेकिन मैं तब तक इस पर विश्वास नहीं कर सकती जब तक मैं इसे अपनी आँखों से नहीं देख लेती। अब मुझे पता चला कि जो सच है उसका आधा मुझे तेरे बारे में नहीं बताया गया। तेरा परमेश्वर तुझको आशीष देता रहे क्योंकि तू न्याय और धर्म से काम करता है ।"

उसने उसे आधा टन सोना दिया, और इतने अधिक मसाले दिए जो कि यरुशलेम में कभी नहीं आए थे।

सुलैमान ने उसे और उसके सेवकों को घर लौटने से पहले कई उपहार दिए।

हर साल, सुलैमान को सामान्य व्यापार के अलावा 25 टन सोना मिला। इस वजह से, उसने कई चीजों को सोने से ढक दिया - गहने, पीने के गिलास , बरतन, और उसका सिंहासन। उसने चांदी का उपयोग नहीं किया क्योंकि उसे नहीं लगा कि यह मूल्यवान था।

सुलैमान ने 200 बड़ी ढाल बनवाई, जो प्रत्येक 15 पाउंड के सोने के साथ बनाया गया था। उसने 300 छोटे ढालें बनवाई, जिनमें से प्रत्येक में 4 पाउंड सोना था। दुनिया में कोई भी दूसरा राजा सुलैमान की तरह अमीर और बुद्धिमान नहीं था।

उसने अपनी सेना के लिए घोड़ों का एक बड़ा झुंड जमा किया। ये दुनिया के उस हिस्से के आसपास के कई देशों से आयात किए गए थे।

दुर्भाग्य से, सुलैमान ने कई महिलाओं को भी जमा किया, जो कि परमेश्वर के कानून का सीधा उल्लंघन था। उसकी 700 पत्नियाँ थीं, जो सभी राजाओं की बेटियाँ थी। हर एक अपने देश के देवताओं की पूजा करती थी। उसके पास 300 रखैलें भी थी।

जब सुलैमान बूढ़ा हो गया, तो इन स्त्रियों ने उसे अपने देवताओं के लिए एक मंदिर बनाने के लिए मना लिया। आखिरकार, यरूशलेम के चारों ओर की हर पहाड़ी पर एक मंदिर था, जिसमें उनके कई देवताओं का सम्मान किया जाता था।

सुलैमान ने इन स्थानों पर धूप जलानी शुरू की और बलिदान चढ़ाया। अंत में वह परमेश्वर की उपासना करने से दूर हो गया और अपनी पत्नियों को अपने देवताओं की पूजा में शामिल किया। दुष्टता से उसका दिल भर गया।

परमेश्वर सुलैमान से नाराज़ था क्योंकि उसने दाऊद के तौर-तरीकों का पालन नहीं किया था। प्रभु ने कहा, "मैं तेरे राज्य को दो हिस्सों में फाड़ने जा रहा हूं, और तेरा एक हिस्सा तेरे किसी सेवक को दूंगा। लेकिन मैं दाऊद से अपने वादे के कारण तेरे जीवनकाल में ऐसा नहीं करूंगा। तेरा पुत्र तेरे राज्य का अधिकांश भाग खो देगा।

तब परमेश्वर ने सुलैमान के दुश्मनों को उसके खिलाफ संगठित होने की अनुमति दी, इसलिए देश में अब शांति नहीं थी। अंत में, सुलैमान की मृत्यु हो गई। वह चालीस वर्षों तक इस्राएल का राजा रहा।

119 साम्राज्य विभाजित

1 राजा 11:26 - 12:24 और
2 इतिहास 10 - 11: 4

जब सुलैमान जीवित था, तो उसने अपने एक सेवक को बढ़ावा दिया, जिसका नाम यारोबाम था। उसके पास चीजों को प्राप्त करने की एक अनोखी क्षमता थी।

एक दिन यारोबाम एक भविष्यवक्ता से मिला, जिसने एक नया कपड़ा पहना था। भविष्यवक्ता ने कहा, "यह परमेश्वर का संदेश है।"

फिर उसने कपड़ा उतार दिया और उसके बारह टुकड़े कर दिए । उसने यारोबाम को उनमें से दस दिए और उसे प्रभु का यह संदेश दिया:

"सुलैमान ने मुझे छोड़ दिया और मूर्तियों की पूजा करने लगा। इसलिए, मैं राज्य को उसके हाथों से फाड़ने जा रहा हूं। तू इस्राइल के उत्तरी दस जातियों पर शासन करेगा । मैं दाऊद और यरुशलेम की वजह से सभी जातियों को दूर नहीं ले जा रहा हूं। इसलिए सुलैमान का पुत्र यहूदा पर शासन करेगा।

"मेरा अनुसरण कर और मेरी आज्ञाओं का पालन कर। यदि तू ऐसा करता हैं, तो मैं तेरे साथ रहूंगा मैं तेरे राज्य की स्थापना करूंगा, और तेरे पास एक स्थायी राजवंश होगा जैसे मैंने दाऊद को दिया था। "

सुलैमान को इस भविष्यवाणी के बारे में पता चला और उसने यारोबाम को मारने की कोशिश की। लेकिन वह भाग गया और सुलैमान के मरने तक मिस्र में छिप गया।

सुलैमान का एक बेटा रहूबियाम था, जिसकी माँ एक अम्मोनी महिला थी। उसके पिता की मृत्यु के बाद, रहूबियाम शकेम गया, ताकि इस्राएल की उत्तरी जातियां उसे राजा बना सकें।

इससे पहले कि इस्राएल के बुजुर्ग उसे मिले, उन्होंने यारोबाम को बुलवाया। एक बार जब वे पहुंचे, तो उन्होंने रहूबियाम से कहा, "तेरे पिता ने हमारे लिए जो कर लगाए

वह कठोर थे। हमसे वादा करें कि तू हमारा भार हल्का करेगा और हमारे करों को कम करेगा । यदि तू ऐसा करता हैं, तो हम ख़ुशी से तेरी सेवा करेंगे।"

रहूबियाम ने कहा, "मुझे इस बारे में सोचने के लिए तीन दिन का समय दीजिए।"

यरोबाम और इस्राएल के बुजुर्गों के चले जाने के बाद, रहूबियाम ने अपने पिता के दरबार में पुराने सलाहकारों से सलाह मांगी। उन्होंने कहा, "इन लोगों की पूरे दिल से सेवा करो। उनके प्रति दयालु रहें, और वे जीवन भर तेरी सेवा करेंगे।"

रहूबियाम ने फिर अपने छोटे सलाहकारों से सलाह माँगी, जिनके साथ वह बड़ा हुआ था।

उन्होंने कहा, "उन बागियों से कह, मेरे मुकाबले मेरे पिता तेरे प्रति नरम थे। मेरी छोटी उंगली मेरे पिता के पैर से भारी होगी। उसने तुम्हें चाबुक से मारा। मैं तुम्हें बिच्छुओं से मारने जा रहा हूँ। ''

रहूबियाम ने इस सलाह को सुना और बड़े लोगों की सलाह को अस्वीकार कर दिया। उसने इस्राएल के नेताओं से कहा, "मेरे मुकाबले मेरे पिता तुम्हारे प्रति नरम थे। मेरी छोटी उंगली मेरे पिता के पैर से भारी होगी। उसने तुम्हें चाबुक से मारा। मैं तुम्हें बिच्छुओं से मारने जा रहा हूँ। प्रभु उससे यही कहलवाना चाहते थे।

जब यारोबाम और इस्राएल के लोगों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, "हमें दाऊद के घर से कोई लेना-देना नहीं है! हम यहूदा से नहीं हैं।

इसलिए इस्राएल के लोग घर गए और रहूबियाम यरूशलेम को लौट आया। उन्होंने अपने एक अधिकारी को उत्तरी जातियों के बीच व्यवस्था बहाल करने के लिए भेजा। लोगों ने उसे तब तक पत्थर मारा जब तक वह मर नहीं गया।

दस जातियां यहूदा से अलग हो गई और खुद को इस्राएल कहा। उन्होंने यारोबाम को अपना राजा बनने के लिए कहा।

रहूबियाम ने यहूदा और बिन्यामीन की जातियों से एक सेना इकट्ठा की। उसने इस्राएल पर आक्रमण करने और उन्हें रहूबियाम के नियंत्रण में वापस लाने के लिए तैयार किया।

तभी परमेश्वर का एक दास परमेश्वर का संदेश लेकर उनके पास आया और कहा, "अपने भाइयों से मत लड़। घर जा। मैं वो हूं जो तेरे खिलाफ उनकी बगावत का कारण बना। सभी ने प्रभु की बात सुनी, और घर चले गए।

120 यारोबाम का पाप

1 राजा 12:25 - 13:10 और 13: 33-34

यारोबाम ने शकेम शहर को इस्राएल की राजधानी चुना। उसने इसे बनाया, और वहाँ अपना महल बनाया।

उसने महसूस किया कि उसके लोगों में दाऊद के परिवार के प्रति वफादार रहने की स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। उन्होंने अपने सलाहकारों से कहा, "लोग मंदिर में पूजा करने के लिए यरूशलेम जाते रहते हैं। आखिरकार, वे तय करेंगे कि उनकी सच्ची वफादारी दाऊद के वंश के राजा की होगी। वे मुझे मार डालेंगे और यहूदा के साथ फिर से मिल जाएंगे।"

इस समस्या को हल करने के लिए, उसने दो सुनहरे बछड़े बनाए। उसने एक को बेथेल के दक्षिण में और दूसरे को दान में उत्तर में रखा। उसने लोगों से कहा, "वर्ष में कई बार यरूशलेम की यात्रा करना बहुत कठिन है। यह तुम्हारा देवता है जोतुमको मिस्र से बाहर लाया था।"

यारोबाम ने इन मूर्तियों के लिए मंदिर बनाए और उनके लिए याजक नियुक्त किए। याजक लेवी जाति से नहीं थे, जो भी याजक बनना चाहता था, वे बन सकता था। उन्होंने तब वार्षिक उत्सव शुरू किए, ये यरूशलेम में होने वाले समारोहों के समान थे।

जब वह दान के पास सोने का बछड़ा ले गया, तो लोग उसके पीछे चले जबकि उसे ले जाया जा रहा था। एक बार जब वे वहाँ पहुँचे, तो यारोबाम ने इस नई मूर्ति के लिए बलिदान दिया।

उसके बाद वह बेतेल के दक्षिण में वेदी पर बलिदान करने के लिए गया।

यहूदा के परमेश्वर का युवा सेवक आदमी यरोबाम के पास चला गया क्योंकि वह वेदी के पास खड़ा था। नबी चिल्लाया, "वेदी, वेदी! सुनिये परमेश्वर यहोवा तुमसे क्या कहता हैं। 'यहूदा में एक राजा पैदा होगा जिसका नाम योशिय्याह है। वो उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो वेदी पर धूप जलाते हैं, वेदी पर बलि कर देगा।'

युवा नबी फिर लोगों की ओर मुड़े और कहा, "प्रभु ने मुझे संकेत दिया कि ये चीजें होंगी। यह वेदी अलग हो जाएगी और राख जमीन पर गिर जाएगी।"

राजा यारोबाम को गुस्सा आया और उसने नबी की ओर इशारा किया। "उस आदमी को पकड़ो!" जैसे ही उसने इन शब्दों को कहा, उसने जो हाथ बढ़ाया था वह उसी स्थिति में जम गया था और वह उसे वापस नहीं खींच सका। अचानक वेदी अलग हो गई और राख जमीन पर गिर गई।

यह देखकर, राजा ने परमेश्वर के दास से भीख मांगी।

"कृपया प्रभु से प्रार्थना कर और उससे मेरे हाथ को वापस सामान्य करने के लिए कह।"

इसलिए परमेश्वर के दास ने प्रार्थना की और यारोबाम का हाथ वापस पहले जैसा हो गया था। राजा ने कहा, "मेरे साथ महल में आ और कुछ खा। फिर मैं तुझको एक उपहार दूंगा।"

युवा भविष्यवक्ता ने कहा, "यदि तूने मुझे अपना सब कुछ दे दिया, तो भी मैं तेरे साथ नहीं जा सकता। प्रभु ने कहा कि मैं यहाँ रहते हुए कुछ भी नहीं खाऊँगा और न ही पीऊँगा। और मैं जिस मार्ग से आया था, मुझे उससे अलग मार्ग से यहूदा वापस जाना है।" और फिर वह चला गया।

इस चेतावनी के साथ भी, यारोबाम ने जो कुछ किया था, उससे पछतावा नहीं था। वह दो बछड़ों की पूजा को बढ़ावा देता रहा और उनके लिए पुजारी नियुक्त करता रहा। इस पाप के कारण, उनका राज्य उनकी मृत्यु के बाद जारी नहीं रहा, और उसका कोई वंशज नहीं था।

121 बुजुर्ग भविष्यवक्ता

1 राजा 13: 11-32

बेतेल में एक बूढ़ा भविष्यवक्ता रहता था। उसके बेटों ने उसे यहूदा के परमेश्वर के युवक के बारे में बताया, की उसने यारोबाम की वेदी पर क्या किया। पुराने भविष्यवक्ता ने कहा, "वह किस रास्ते गया?"

फिर उसने अपने बेटों से कहा कि वह अपने गधे को तैयार कर ले। वह सड़क पर गया जब तक उस परमेश्वर के दास को एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठा नहीं पाया।

उसने कहा, "क्या तू यहूदा के परमेश्वर का दास है?"

उसने कहा, "हां मैं हूं।"

बूढ़े भविष्यवक्ता ने कहा, "मेरे साथ घर आ और मैं तुम्हें खाना परोसूंगा।"

उसने कहा, "नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। प्रभु ने मुझे बताया है कि जब तक मैं यहाँ हूँ मैं कुछ भी नहीं खा या पी सकता नहीं हूँ।"

बूढ़े आदमी ने कहा, "हाँ मुझे पता है। मैं भी तुम्हारी तरह एक नबी हूं। प्रभु ने मुझे एक दूत भेजा जिसने मुझसे कहा कि मैं तुझे अपने घर ले जाऊं और तुझे भोजन और पानी उपलब्ध कराऊं। इसलिए, मेरे घर आ।"

यह झूठ था, लेकिन परमेश्वर का दास उसके साथ गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया। जब वे मेज पर बैठे थे, तो प्रभु ने बूढ़े भविष्यवक्ता के माध्यम से बात करते हुए कहा, "तूने मेरी आज्ञा के खिलाफ विद्रोह किया है। मैंने तुझसे कहा था कि इस जगह पर कुछ भी मत खाना या पीना। क्योंकि तूने मेरा कहना नहीं माना, तू मर जाएगा और तू अपने परिवार की कब्र में दफ़न नहीं होगा ।"

दोनों व्यक्तियों के खाने के बाद, बूढ़े भविष्यवक्ता ने युवक के गधे को तैयार किया। वह चला गया, और रास्ते में एक शेर ने परमेश्वर के दास पर कूद कर उसे मार डाला। उसका शरीर जमीन पर गिर गया, लेकिन गधा भाग नहीं पाया। वह बस युवा भविष्यवक्ता के शरीर के पास खड़ा रहा। शेर दूसरी तरफ खड़ा था।

कुछ यात्रियों ने यह देखा और कस्बे के लोगों को इसके बारे में बताया। जब बूढ़े भविष्यवक्ता ने इसके बारे में सुना, तो उसने कहा, "मुझे पता है कि वह

कौन है। यह परमेश्वर का दास है जिसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी है।"

उसने अपने बेटों से कहा कि वह एक बार फिर से उसके लिए एक गधा तैयार करें। वहां जाकर उसे शव मिला।

शेर अभी भी उसके बगल में खड़ा था, साथ ही गधा भी था। फिर भी, शेर ने लाश को नहीं खाया और न ही गधे पर हमला किया।

बूढ़े भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के दास के शरीर को गधे पर रखा, जो वहां खड़ा था। वह इसे वापस घर ले गया और उसे अपनी कब्र में दफन कर दिया।

उसने युवक की मौत पर शोक व्यक्त करते हुए कहा, "ओह मेरे भाई।"

उसने फिर अपने बेटों को बताया। "जब मैं मर जाऊँ, तो मुझे वहाँ दफनाना जहाँ परमेश्वर का यह आदमी दफन है। मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के पास रख देना। उसने मूर्तियों और इस्राएल के पाप के खिलाफ परमेश्वर के वचन बोले। उनकी कही हुई हर बात सच होने वाली थी ।"

122 रहूबियाम और यारोबाम

1 राजा 14 और 2 इतिहास 12

यारोबाम का एक बेटा बीमार हो गया। राजा ने अपनी पत्नी से कहा, "जब मैं सुलैमान का नौकर था, तो एक भविष्यवक्ता ने मुझसे कहा कि मैं इस्राएल के उत्तरी दस जनजातियों का राजा बनूँगा। वह शीलो में रहता है। उसके लिए भोजन का उपहार लें और उससे पूछें कि हमारे बेटे का क्या होगा। अपना भेष बदलकर रखना, ताकि वह नहीं जाने कि तू मेरी पत्नी है।

नबी अब बूढ़ा और अंधा हो चुका था। यहोवा ने उससे कहा, "यारोबाम की पत्नी भेष धारण करके आ रही है। वह अपने बेटे के बारे में पूछेगी जो बीमार है।" तब प्रभु ने उसे बताया कि क्या कहना है। जल्द ही भविष्यवक्ता ने महिला के कदमों को सुना।

उसने कहा, "यारोबाम की पत्नी आ। भेष क्यों बदला है? सुन, परमेश्वर ने तेरे पति के लिए एक संदेश दिया है, एक भयानक संदेश!"

प्रभु कहता हैं, "मैंने तुझको तब चुना जब तू एक आम व्यक्ति था। मैंने दाऊद के परिवार से राज्य का कुछ हिस्सा छीन लिया और तुझको दे दिया। लेकिन देखा कि तूने क्या किया है। तूने मेरा अनुसरण नहीं किया, तूने मेरी आज्ञाओं को नहीं माना। उसके बजाय, तूने दो सुनहरे बछड़ों से मेरा अपमान किया है, और तू किसी और की तुलना में अधिक दुष्ट हो गया है।

"तो, सुन मैं तुझे क्या कहने जा रहा हूँ। तेरे परिवार के सभी पुरुष एक भयानक मौत मरेंगे। तेरे जाने के बाद यारोबाम का पारिवारिक नाम जारी नहीं रहेगा। कुत्ते शहर में मरने वालों को खाएँगे, और देश में मरने वाले पक्षियों को खाएँगे।

"केवल एक ही व्यक्ति होगा जिसके साथ ऐसा नहीं होगा। तेरा बेटा जो अब बीमार है, वह एक अच्छा आदमी है, जो तेरे परिवार में अकेला है। वह एक सामान्य मौत मरेगा। लेकिन तेरे घर पहुँचते ही वह मर जाएगा। तुम उसे दफनाओगे, और समस्त इस्राएल उसकी मृत्यु का शोक मनाएगा। लेकिन वहतुम्हारे परिवार का एकमात्र व्यक्ति होगा जिसे दफनाया जाएगा।

"यह सब उस वजह से होगा, जो यारोबाम ने इस्राएल के साथ किया था। उसका पाप मुझे इस्राएल पर इतना प्रहार करने के लिए मजबूर करेगा कि उनकी जड़ें इस मिट्टी से उखड़ जाएँगी। उन्हें दूर किया जाएगा और राष्ट्रों में बिखेर दिया जाएगा।"

यारोबाम की पत्नी घर गई, और उसके घर में जाते ही उनके बेटे की मृत्यु हो गई। उसे दफनाया गया और इस्राएल के प्रत्येक व्यक्ति ने उसकी मृत्यु पर शोक व्यक्त किया।

यारोबाम ने 22 वर्षों तक शासन किया, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।

उसका पुत्र उसके बाद राजा बना। उन्होंने अपने पिता के उदाहरण का अनुसरण किया लेकिन केवल दो वर्षों तक शासन किया।

वह मारा गया और यारोबाम का पूरा परिवार नष्ट हो गया। यह सब वैसा ही हुआ जैसा नबी ने कहा था।

जहाँ यारोबाम ने उत्तर में इस्राएल पर शासन किया, वहीं रहूबियाम ने दक्षिण में यहूदा पर शासन किया। उसने लोगों को बुराई करने के तरीकों में आगे करके प्रभु को क्रोधित किया। यहूदा आसपास के सभी राष्ट्रों की तरह दुष्ट बन गया।

रहूबियाम के शासनकाल के पांचवें वर्ष के दौरान, मिस्र आया और यरूशलेम को लूट लिया। उन्होंने मंदिर और शाही महल से सारा सोना ले लिया। वे सुलैमान द्वारा बनाई गई सोने की ढाल ले गए।

उनके चले जाने के बाद, रहूबियाम ने पीतल की ढालें बना दीं। जब भी राजा महल छोड़ कर मंदिर जाता, तो पहरेदार पीतल की ढालें लेकर उसके साथ चलते थे। यहूदा और इस्राएल के बीच युद्ध तब तक चला जब तक रहूबियाम और यारोबाम जीवित थे।

17 साल तक यहूदा पर राज करने के बाद रहूबियाम की मौत हो गई और उसका बेटा उसके बाद राजा बना।

123 अबिय्याह और आसा

1 राजा 15 और 2 इतिहास 13 - 16

यारोबाम तब भी इस्राएल का राजा था जब रहूबियाम की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद, अबिय्याह यहूदा का राजा बना। इसके तुरंत बाद, यारोबाम और इस्राएल की सेना ने यहूदा पर आक्रमण किया।

जब दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे का सामना किया, उस समय इस्राएल की सेना उनसे दुगनी थी। फिर भी, अबिय्याह एक पहाड़ी पर खड़ा था और इस्राएल की सेना पर चिल्लाया। उसने कहा, "इस्राएल के लोग, तुमने सुलैमान के सेवक की सेवा करने के लिए दाऊद के परिवार को छोड़ दिया है। उसके ऊपर, तुमने यारोबाम के दो सुनहरे बछड़ों की पूजा करने के लिए इस्राएल के परमेश्वर को छोड़ दिया है। और तुम्हारे याजक लेवी जाति से नहीं हैं।"

वह आदमियों को उपदेश देता रहा।

उसने महसूस नहीं किया कि जब वह ऐसा कर रहा था, तब यारोबाम अपने लोगों में से आधो को अबिय्याह की सेना के पीछे भेज रहा था। अचानक यहूदा की सेना ने महसूस किया कि वे घिरे हुए हैं। वे प्रभु के पास गए और याजकों ने तुरही फूंकी।

परमेश्वर ने इस्राएल के खिलाफ लड़ाई लड़ी और वे युद्ध के मैदान से भागे। उस दिन उनके कई सैनिक मारे गए।

यारोबाम इस भारी हार से कभी उबर नहीं पाया, और जल्द ही उसकी मृत्यु हो गई। अबिय्याह शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने प्रभु पर भरोसा किया।

अबिय्याह के मरने के बाद, उसका बेटा आसा यहूदा का राजा बना। उन्होंने 41 वर्षों तक शासन किया। यहोवा ने उसे 10 साल की शांति दी, क्योंकि उसने दाऊद के तौर-तरीकों से राष्ट्र को वापस लौटाया। उसने उन मूर्तियों को नष्ट कर दिया जिन्हें सुलैमान ने स्थापित किया था। उसने यहूदा के लोगों से कहा कि वे परमेश्वर की तलाश करें।

अचानक अराम की एक विशाल सेना ने दक्षिण से आक्रमण किया। अरामी सेना की तुलना में यहूदा की सेना संख्या में बहुत कम थी। आसा ने प्रार्थना की, "हे

परमेश्वर, केवल आप ही अब हमारी मदद कर सकते हैं!"

इसलिए यहोवा ने उसे अराम की सेना को हराने में मदद की। उनमें से कई लोग मारे गए क्योंकि उन्होंने भागने की कोशिश की। जब यह सब हो गया, तो उनकी सेना को प्रभु के सामने कुचल दिया गया। यहूदा के लोगों ने युद्ध के मैदान में पड़े शवों से सारी संपत्ति इकट्ठा की। उन्हें उनकी सभी भेड़ें और ऊंट भी मिल गए।

जब आसा और उसके लोग वापस यरूशलेम गए, एक भविष्यवक्ता ने उनसे मुलाकात की और उन्हें परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसलिए राजा ने यहूदा के अन्य सभी शहरों से मूर्तियों को नष्ट कराना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि उसने अपनी माँ को एक मूर्ति के प्रति वफादारी के कारण रानी माँ होने से भी हटा दिया।

इस्राएल के उत्तरी राज्य के लोग बड़ी तादाद में यहूदा चले गए क्योंकि वह यहोवा की उपासना करते थे । एक निश्चित दिन पर, सभी ने एक साथ मुलाकात की और प्रतिज्ञा ली कि वे हमेशा परमेश्वर की सेवा करेंगे।

आसा ने तब चांदी और सोना लेकर मंदिर के खजाने में डाल दिया। तब यहोवा ने यहूदा को उनके सभी शत्रुओं से शांति दिलाई।

दुर्भाग्य से आसा के जीवन में एक मोड़ आया। इस्राएल के नए राजा ने यहूदा पर युद्ध की घोषणा की और भूमि पर आक्रमण किया। उसने एक प्रमुख शहर पर अधिकार कर लिया।

परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, आसा ने एक और तरीका सोचा जिसके द्वारा वह इस्राएल पर लाभ प्राप्त कर सकता था। उसने सोने और चाँदी को मंदिर से बाहर निकाला और उसे अराम के राजा बेन्हदद के पास भेजा, जो कि इस्राएल के उत्तर में था। उसने एक संदेश भेजा, "मैं तुम्हें सोना और चाँदी भेज रहा हूँ ताकि तुम इस्राएल के साथ अपनी संधि तोड़ दों, और हमारे दोनों देशों के बीच एक संधि स्थापित करो।"

बेन्हदद ने सोना और चांदी ले लिया और आसा के साथ एक संधि की। उसने तब इस्राएल पर आक्रमण किया और उनके कई शहरों पर कब्जा कर लिया। जल्दी से इस्राएल की सेना ने यहूदा को छोड़ दिया ताकि वे अराम के खिलाफ अपना बचाव कर सकें।

ऐसा लग रहा था कि आसा की योजना काम रही थी । लेकिन फिर, एक भविष्यवक्ता राजा आसा के पास गया और कहा, "तुझको प्रभु को तेरे लिए लड़ने के लिए कहना चाहिए था - क्या तुझको याद नहीं है कि अराम की विशाल सेना के साथ प्रभु ने क्या किया था? यहोवा उन लोगों की तलाश में है जो उस पर भरोसा करते है । तेरा ऐसा करना मूर्खता थी। इसलिए, जब तक तू जीवित है तब तक युद्ध में रहेगा।"

आसा भविष्यवक्ता से नाराज़ था और एक पहेरदार को बुलाया। "इस आदमी को जेल में डाल दो!" उसके बाद, वह अपने ही लोगों के प्रति क्रूर हो गया। अचानक उसके पैरों में एक बीमारी हो गई, जो बदतर होती गई। फिर भी, उसने प्रभु की मदद नहीं ली, तब भी नहीं जब बीमारी जीवन के लिए खतरा बन गई थी। इसके बजाय, उसने डॉक्टरों का भरोसा किया । अंत में, दो साल तक पीड़ा सहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

124 एलिय्याह और विधवा

1 राजा 17

इस्राएल के कई दुष्ट राजा थे। उन सभी ने यारोबाम के उदाहरण का अनुसरण किया।

जब आसा यहूदा का राजा था, तब अहाब इस्राएल का राजा बना। वह अपने से पहले के किसी भी राजा की तुलना में बेहद दुष्ट था। उसने ईज़ेबेल नाम की एक महिला से शादी की, जो बाल की पूजा करती थी। उसके प्रभाव के कारण, अहाब ने राजधानी सामरिया में बाल का मंदिर बनवाया।

नबी एलिय्याह ने राजा के सामने खड़े होकर कहा, "मेरे पास परमेश्वर का संदेश है। मेरे कहने तक कोई ओस या बारिश नहीं होगी!"

यहोवा ने एलिय्याह से कहा, "यहाँ से चले जा और एक निश्चित नाले के पास जा। वह तुझको पानी उपलब्ध कराएगा, और मैंने तेरे लिए भोजन लाने के लिए पहले ही कौओं को आज्ञा दी है।"

इसलिए एलिय्याह उस नाले के पास गया। और जैसा कि प्रभु ने कहा था, कौवे हर सुबह और हर शाम उसके लिए रोटी और मांस लाते थे। लेकिन समय के साथ, नाला सूख गया क्योंकि कोई बारिश नहीं हुई थी।

प्रभु ने कहा, "सारपत नामक नगर में जा। मैंने एक विधवा का चयन किया है जो तेरे लिए वहां मुहैया कराएगी।" जब एलिय्याह ने गाँव में प्रवेश किया, तो उसने देखा कि एक महिला लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही है। उसने उससे कहा, "कृपया मुझे थोड़ा पानी दें।" जब वह पानी लेने जा रही थी, तो उसने कहा, "और मेरे लिए रोटी भी ला।"

उसने मुड़कर उसकी ओर देखा। "मेरे पास कोई रोटी नहीं है। मेरे पास कुप्पी में एक मुट्ठी भर मैदा और घड़े में थोड़ा सा तेल है। मैं इन लकड़ियों को इकट्ठा कर रही थी ताकि मैं अपने बेटे और अपने लिए रोटी बना सकूं। हम इसे खाते और फिर मर जाते।"

भविष्यवक्ता ने कहा, "मैं जो कहता हूं उसे करने से मत डर। जा और रोटी बना, लेकिन जब बन जाए तो मुझे पहले थोड़ी देना। इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है, जब तक परमेश्वर बारिश नहीं भेजें, तब तक कुप्पी

में हमेशा आटा रहेगा, और घड़े हमेशा तेल से भरा रहेगें ।''

फिर, उसने उसकी ओर देखा और फिर जाकर उसने जैसा कहा था वैसा ही किया। उसने रोटी बनाई, और पहले उसे दिया। उस दिन से, कुप्पी में हमेशा थोड़ा आटा होता था, और तेल का घड़ा कभी सूखी नहीं हुआ।

उसने अपने घर के ऊपरी कमरे में नबी के लिए एक जगह तैयार की। इसमें एक बिस्तर, एक मेज और एक कुर्सी थी।

कुछ समय बाद, महिला का बेटा बीमार हो गया। जल्द ही उसकी बीमारी गंभीर हो गई, और अंत में उसकी मृत्यु हो गई। वह स्त्री एलिय्याह के पास गई और बोली, "परमेश्वर के दास, तू मेरे घर क्यों आया? क्या मेरे अपराध का खुलासा करना था, ताकि तू मेरे बेटे को मार सकें?"

एलिय्याह ने कहा, "मुझे अपना बेटा दे।" वह लड़के को ऊपरी कमरे में ले गया जहाँ वह रह रहा था। उसने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और फिर प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, तूने मुझे इस महिला के घर में क्यों लाया, और फिर उसके बेटे को मार दिया?

फिर वह उस लड़के के ऊपर लेट गया, और प्रार्थना की, "हे परमेश्वर मेरे परमेश्वर, कृपया इस लड़के में जीवन वापस ला!"

फिर वह उस लड़के के ऊपर दूसरी बार लेट गया, और प्रार्थना की। "हे परमेश्वर मेरे परमेश्वर, कृपया इस लड़के में जीवन वापस ला!"

फिर वह उस लड़के के ऊपर तीसरी लेट बार गया, और प्रार्थना की। "हे परमेश्वर मेरे परमेश्वर, कृपया इस लड़के में जीवन वापस ला!"

अचानक लड़का साँस लेने लगा। एलिय्याह उसे घर में वापस ले गया, और उसे उसकी माँ को सौंप दिया। उसने कहा, "तेरा बेटा यहाँ है। वह ज़िंदा है।"

नबी के सामने महिला गिर गई और कहा, "अब मुझे पता है कि तू परमेश्वर का दास है, और उसका वचन तेरे मुंह में है!"

125 कर्म्मेल पर्वत पर एलिय्याह

1 राजा 18

इस्राएल में अकाल गंभीर था और यह तीन साल तक चला। अंत में प्रभु ने एलिय्याह से कहा, "जा और राजा अहाब से कह कि मैं भूमि पर वर्षा करने जा रहा हूं।"

अहाब की राजसभा का प्रभारी ओबद्दाह नाम का एक व्यक्ति था। वह प्रभु के प्रति वफादार था, और जब ईज़ेबेल उसको मारने की कोशिश कर रही थी, तब उसने 100 नबियों को छिपा भी रखा था।

वह और राजा महल के पशुओं के लिए घास खोजने निकले। वे अलग-अलग दिशाओं में गए ताकि वे और अधिक भूमि खोज सकें।

जब ओबद्दाह साथ गया, तब एलिय्याह अचानक उसके पास आया । ओबद्दाह तुरंत जमीन पर गिर गया और कहा, "ओह, मेरे प्रभु एलिय्याह।"

भविष्यवक्ता ने कहा, "राजा से कहो कि मैं यहां हूं।"

ओबद्याह हैरान था। उसने कहा, "मैंने ऐसा क्या किया है कि तुम मुझे मार डालना चाहते हो? राजा तुझको पूरे देश में और यहां तक कि अन्य देशों में भी खोज रहा है। जैसे ही मैं उससे कहूंगा कि तू यहां है , प्रभु तुझे किसी अन्य स्थान पर ले जाएगा और अहाब मुझे मार डालेगा जब वह आएगा और पाएगा कि तुम वहाँ नहीं हो। कृपया मेरे साथ ऐसा न कर।

नबी ने कहा, "चिंता मत कर। प्रभु के जीवन की शपथ, मैं आज अहाब से मिलूंगा।"

इसलिए ओबद्दाह ने जाकर अहाब को बताया। जैसे ही राजा ने एलिय्याह को देखा, उसने कहा, "तो यह वह आदमी है जिसने इस्राएल को नष्ट कर दिया है।"

एलिय्याह ने कहा, "नहीं, यह मै नहीं, तूने इस्राएल को नष्ट कर दिया है। तूने अपनी पीठ परमेश्वर की ओर मोड़ दी है और बाल की सेवा कर रहा है। जा और इस्राएल के हर व्यक्ति को कर्म्मेल पर्वत में मुझसे मिलने को कह । बाल और अशेरा के नबियों को ला, जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं।"

इसलिए अहाब ने भविष्यवक्ताओं के साथ इस्राएलवासियों को कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा होने के

लिए कहा। जब सब लोग वहाँ आ गए, तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, “तुम कब तक आगे-पीछे होते रहोगे ? यदि प्रभु परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करो। अगर बाल परमेश्वर हैं, तो उसका अनुसरण करें।” लोगों ने कुछ नहीं कहा, लेकिन सिर्फ नबी को देखते रहे।

उसने कहा, “मैं प्रभु का केवल एक नबी यहां खड़ा हूं, लेकिन देखो, बाल के 450 नबी हैं। हमें दो बैल दो। वे एक ले लेंगे, उसे बलिदान के लिए तैयार करेंगे, और इसे लकड़ी के ऊपर रख देंगे। लेकिन उस लकड़ी में आग नहीं लगाएगें। मैं भी यही करूंगा। वे अपने परमेश्वर का नाम पुकारेंगे, और मैं यहोवा का नाम पुकारूंगा। जो परमेश्वर आग जलाता है, वह परमेश्वर है।”

लोगों ने कहा। "हाँ, यह उचित लगता है। ”

एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा। "तुम पहले करों।"

इसलिए उन्होंने बैल को तैयार किया, और बाल के नाम को पुकारा। उन्होंने सुबह से दोपहर तक प्रार्थना की। उन्होंने वेदी के चारों ओर नृत्य किया, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ।

एलिय्याह ने उनका मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया। “शायद तुम्हें जोर से चिल्लाना चाहिए! तुम्हारा देवता सो रहा होगा, और उमहे उसे जगाने की ज़रूरत है! हो सकता है कि वह शौचालय गया हो।” वे जोर से चिल्लाए, और खुद को काट लिया, जब तक कि खून नहीं निकला। उन्होंने यह पूरी दोपहर किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

अंत में एलिय्याह ने बारह पत्थरों के साथ एक वेदी बनाई, जो इस्राएल के प्रत्येक गोत्र के लिए थी। उसने वेदी के चारों ओर खड्डा खुदवाया, और उस पर लकड़ी रख दी। उसने फिर बैल को लकड़ी के ऊपर रखा।

उसने लोगों से कहा, "जाओ कुछ पानी लाओ और बलि पर डालो।" एक बार जब वे ऐसा कर चुके थे, उसने उन्हें फिर से ऐसा करने के लिए कहा। जब उन्होंने दूसरी बार ऐसा किया, तो उसने उन्हे तीसरी बार ऐसा ही करने के लिए कहा। एक बार जब वे ऐसा कर चुके, वेदी पूरी तरह से गीली थी, और खड्डा पानी से भर गया था ।

एलिय्याह फिर वेदी के पास गया और प्रार्थना की।

“अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर। सभी को बता कि तू परमेश्वर हैं, और मैं तेरा सेवक हूं। मुझे जवाब दे ताकि ये लोग तेरे पास लौट आएं!”

अचानक, आग स्वर्ग से नीचे गिर गई और बलिदान, लकड़ी और बारह पत्थरों को जला दिया। यहां तक कि खड्डे में जो पानी था, उसे भी सुखा दिया।

लोग गिरे और चिल्लाए, “हे प्रभु, वह परमेश्वर है! यहोवा, ही परमेश्वर है! एलिय्याह ने आदेश दिया, “बाल के नबियों को पकड़ो! उनमें से किसी को भी भागने न देना ।" लोगों ने बाल के नबियों को पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन सभी को मार डाला।

उन्होंने अहाब की ओर रुख किया और कहा, “कुछ खाले। एक आंधी आ रही है।”

वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ की चोटी तक गया। उसने अपने नौकर से कहा, “समुद्र की ओर देखो। क्या दिखता है?"

नौकर ने कहा, "मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।"

सात बार एलिय्याह ने उससे कहा कि वह जाकर देख ले।

अंत में सातवीं बार, उसके नौकर ने उससे कहा, "मुझे एक छोटा बादल दिखाई दे रहा है, यह एक आदमी की मुट्ठी के आकार जितना बड़ा है, यह समुद्र से आ रहा है।"

एलिय्याह ने कहा, "जल्दी, अहाब को बता, जितनी जल्दी हो सके अपने घर जा, ताकि बारिश तुझको रोक न सके।"

अहाब अपने रथ पर सवार होकर घर की ओर बढ़ा।

थोड़े ही समय में आसमान में अंधेरा छा गया और तेज हवा चलने लगी। अचानक बारिश के साथ बूंदाबांदी हुई। परमेश्वर की शक्ति एलिय्याह के ऊपर आ आई, और वह अहाब के रथ से तेज दौड़ने लगा, और उससे पहले इस्राएल पहुंच गया।

126 होरेब पर्वत पर एलिय्याह

1 राजा 19

अहाब ने ईज़ेबेल को बताया कि एलिय्याह ने कर्म्मेल पर्वत पर क्या किया था। उसने उसे बताया कि कैसे बाल के सभी नबी मारे गए थे। ईज़ेबेल ने एलिय्याह के लिए एक दूत भेजा। उसने कहा, "मैं तुझे मारने जा रही हूँ! मेरे शब्दों को लिख कर रख ले। तू कल रात से पहले मर जाएगा ।"

इससे एलिय्याह के दिल में डर पैदा हो गया। वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। वह इस्राएल को छोड़कर यहूदा के दक्षिणी भाग में चला गया। उसने अपने नौकर को वहाँ छोड़ दिया और जंगल में चला गया। वह एक दिन तक चलता गया और अंत में रुक गया और एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गया।

वह रोया, "मैंने क्या किया है! मैं अपने पिता से बेहतर नहीं हूं। परमेश्वर, मेरी जान ले लो"। फिर वह लेट गया और सो गया।

जब वह कुछ देर सोया, उसके बाद एक स्वर्गदूत ने उसे छुआ। "उठ और खा।" एलिय्याह उठा और उसने देखा कि पानी की एक सुराही है और रोटी गर्म अंगारों पर पक रही है। उसने रोटी खाई और पानी पिया और फिर से सो गया।

बाद में, प्रभु के दूत ने उसे फिर से जगाया और कहा, "उठ और खा। तुझे आगे लंबी यात्रा करनी है।"

एलिय्याह जाग गया और एक बार फिर रोटी और पानी पाया। तो वह उठा, रोटी खाई और पानी पिया। फिर वह 40 दिन और 40 रात चलता रहा और परमेश्वर के पर्वत, होरेब पहुंचा, जिसे सिनै पर्वत भी कहा जाता है। एक बार जब वह वहाँ गया, तो उसने एक गुफा में प्रवेश किया और वहाँ रात बिताई। सुबह प्रभु ने उससे कहा, "एलिय्याह, तू यहाँ क्या कर रहा है?"

उसने कहा, "परमेश्वर, मैंने आपके लिए पूरे मन से काम किया है। लेकिन इस्राएल आपके साथ अपने वादे को भूल गया है। उन्होंने आपकी वेदियों को तोड़ दिया है। उन्होंने आपके नबियों को मार डाला। मैं अंतिम हूं, और वे मुझे मारने की कोशिश कर रहे हैं।

प्रभु ने कहा, "बाहर जा और पहाड़ पर खड़े रह।" अचानक, एक शक्तिशाली हवा पहाड़ों पर चली और चट्टानों को चकनाचूर कर दिया। लेकिन प्रभु हवा में नहीं था।

तब भूकंप आया, लेकिन प्रभु भूकंप में भी नहीं था।

उसके बाद, आग दिखाई दी। लेकिन प्रभु आग में नहीं था।

तब एलिय्याह ने एक दबा हुआ धीमा शब्द सुना। और अपना मुंह चद्दर से ढांपकर गुफा से बाहर चला गया और प्रवेश द्वार पर खड़ा हो गया।

उस आवाज़ ने उससे कहा, "एलिय्याह , तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उसने कहा, "परमेश्वर, मैंने आपके लिए पूरे मन से काम किया है। लेकिन इस्राएल आपके साथ अपने वादे को भूल गया है। उन्होंने आपकी वेदियों को तोड़ दिया है। उन्होंने आपके नबियों को मार डाला। मैं अंतिम हूं, और वे मुझे मारने की कोशिश कर रहे हैं।"

प्रभु ने कहा, "ओह एलिय्याह, घर वापस जा। इस्राएल में मेरे 7,000 लोग हैं जो बाल के सामने नहीं झुकते । फिर उसने भविष्यवक्ता को विस्तृत निर्देश दिए कि वह क्या करे, जिसमें उसकी जगह एलीशा का अभिषेक करना और इस्राएल के लिए एक नए राजा का चयन करना शामिल था।

एलिय्याह वापस इस्राएल चला गया जहाँ उसने एलीशा को एक खेत की जुताई करते हुए पाया। एलिय्याह उसके पास गया और अपनी चद्दर उस पर डाल दी और चल पड़ा। एलीशा ने बैलों को छोड़ा और नबी को पकड़ने के लिए दौड़ा। उसने कहा, "कृपया, मुझे अपने पिता और माँ को अलविदा कहने दे। तब मैं तेरे पीछे आऊंगा।"

एलिय्याह ने कहा, "तू वापस जा सकता है, लेकिन उस बुलाहट को मत भूलना जो अब तेरी है।"

इसी के साथ, एलीशा ने लकड़ी का जूआ और हल लिया और आग लगाई। उसने बैलों को मार डाला और उनके परिवार के लिए भोजन बनाया। जब वे खाना खत्म कर चुके थे, तब एलीशा ने उन्हें छोड़ दिया और एलिय्याह के पीछे चल दिया।

127 घायल भविष्यवक्ता

1 राजा 20

अराम के राजा ने इस्राएल पर आक्रमण किया और शोमरोन के खिलाफ अपनी सेना का नेतृत्व किया। उसने राजा अहाब को एक संदेश भेजा जिसमें कहा गया था, "मुझे अपनी चाँदी और अपना सोना दे। मैं तम्हारी पत्नियों और बेटों को भी चाहता हूं।"

अहाब ने एक संदेश वापस भेजा। "मैं तुम्हें सब कुछ दूंगा। मैं खुदकोभी तुम्हें दे दूंगा।"

अराम के राजा ने एक और संदेश भेजा।

"एक बात और है। कल, मैं लोगों को तुम्हारे महल, और सभी बेहतरीन घरों की खोज करने के लिए भेज रहा हूँ। वे हर मूल्यवान चीज लेंगे।"

अहाब ने यह बात इस्राएल के अगुओं को बताई। उन्होंने कहा, "यह मत करो। हम उसके खिलाफ लड़ेंगे।"

अहाब ने यह संदेश अराम के राजा के पास भेजा और वह क्रोधित हो गया। उसने कहा, "मैं शोमरोन को पूरी तरह से नष्ट कर दूंगा! जब मैं ऐसा कर लूंगा, तो यह केवल एक कचरा ढेर होगा।" इसी के साथ, वह कुछ अन्य राजाओं के साथ नशे में हो गया जो उसके साथ थे।

जब अहाब ने लड़ाई की तैयारी की, तो एक नबी उसके पास गया और कहा, "अराम की सेना तुमसे बहुत बड़ी है, लेकिन प्रभु तुमको उन्हें हराने में मदद करने वाले हैं। तुझको व्यक्तिगत रूप से अपनी सेना का युद्ध में नेतृत्व करना होगा, ताकि तू स्वयं देख सकें कि प्रभु नियंत्रण में है।"

अराम का राजा तब भी नशे में था जब उसने सुना कि अहाब अपनी सेना को शोमरोन से निकाल रहा है। उसने अपने सैनिकों से कहा, "इस्राएल के लोगों को जीवित रखो। मैं उन्हें गुलाम के रूप में चाहता हूं।"

इस्राएल की सेना ने अराम की सेना के साथ इतनी कड़ी लड़ाई की कि वे युद्ध के मैदान से भागे। यह अराम की सेना के लिए एक करारी हार थी। यहां तक कि उनका राजा भी मुश्किल से बच पाया था।

नबी ने अहाब के पास जाकर कहा, '' तैयार हो। वे अगले वसंत में वापस आएंगे।”

अराम के अधिकारियों ने अपने राजा से मुलाकात की और कहा, “उनका देवता पहाड़ों का देवता है। तू हार गया क्योंकि तूने पहाड़ियों में उनके खिलाफ लड़ाई लड़ी। यदि तू समतल भूमि पर उनसे लड़ता है तो तू जीत जाएगा ।”

इसलिए वसंत ऋतु में उसने एक बार फिर इस्राएल पर आक्रमण किया।

अहाब की सेना एक विशाल सेना की तुलना में बकरियों के छोटे झुंड की तरह थी।

नबी ने अहाब से कहा। “उन्हें लगता है कि परमेश्वर पहाड़ियों के देवता हैं, और समतल भूमि पर की कोई शक्ति नहीं है। इसलिए तू उन्हें हरा देगा , और तब तू जानेगा कि प्रभु नियंत्रण में है।”

लड़ाई शुरू हुई और अराम की सेना को भारी हार का सामना करना पड़ा। उनके 100,000 लोगों की मृत्यु हो गई। वे अपने शहर वापस चले गए, लेकिन अचानक

एक दीवार गिर गई और 27,000 लोग मारे गए।

अराम का राजा दौड़कर एक कोठरी में छिप गया।

अंत में उनके अधिकारियों ने खुद को विनम्र करने और अहाब से अपने राजा पर दया करने का अनुरोध करने का फैसला किया।

अहाब ने कहा, “ओह, क्या मेरा भाई अभी भी जीवित है? उसे यहाँ लाओ।” दोनों राजा आपस में मिले और समझौता किया।

जब नबी ने इस बारे में सुना, तो उसने एक दोस्त सेर कहा, "परमेश्वर चाहता है कि तुम मुझे मारो।"

दोस्त हैरान था। उसने कहा, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।"

भविष्यवक्ता ने कहा, “तुमने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी है। इसलिए एक शेर तुझको मार देगा।" उसके कहते ही ऐसा हुआ। दोस्त के जाने के तुरंत बाद, एक शेर ने उस पर कूद कर उसे मार डाला।

नबी ने दूसरे आदमी से कहा, "परमेश्वर चाहता है कि तुम मुझे मारो।" तो उस आदमी ने उसके साथ मारपीट की। नबी ने अपने घावों को पट्टियों से ढंक दिया और सड़क पर खड़ा हो गया।

जल्द ही अहाब आया, लेकिन यह नहीं जानता था कि यह आदमी कौन था। नबी चिल्लाया, "महाराज, लड़ाई के दौरान, मुझे एक कैदी की रक्षा के लिए रखा गया था। मुझे बताया गया था कि अगर वह भाग गया तो मुझे मार दिया जाएगा। ओह, मैं विचलित हो गया और कैदी भाग गया।"

राजा ने कहा, “तुम मूर्ख हो! तुमको वही मिलेगा जो तुमने कहा था।

फिर नबी ने अपनी पट्टियाँ हटा दीं और अहाब ने देखा कि वह कौन है। उसने कहा, "प्रभु ने तुमको अराम के राजा को मारने के लिए कहा था, और तुमने ऐसा नहीं किया। तो अब तुम उसकी जगह मरोगे! और तुम्हारे लोग उसके लोगों की जगह मरेंगे।”

अहाब ने नबी को छोड़ दिया और वापस शोमरोन चला गया, लेकिन वह अब अपनी जीत के बारे में खुश नहीं था। उसके बजाय, वह क्रोधित और उदास हो गया।

128 नाबोत की दाख की बारी

1 राजा 21

यिज्रेली शहर में, राजा अहाब के महल के बगल में नाबोत नाम के एक व्यक्ति की एक दाख की बारी थी। राजा ने नाबोत को बताया कि वह उसकी दाख की बारी खरीदकर उसे सब्जी के बाग में बदलना चाहता था। उसने कहा, "मैं आपको चांदी में पूरा मूल्य दूंगा या यदि आप चाहें, तो मैं आपको कहीं और एक बेहतर दाख की बारी दे दूंगा।"

नाबोत ने कहा, "नहीं। मैं इस दाख की बारी को नहीं बेच सकता। यह कई सौ वर्षों से हमारे परिवार के पास है।"

पहले तो इसने राजा को क्रोधित कर दिया। उसने घर जाकर कुछ भी खाने से मना कर दिया। अंत में वह उदास हो गया और जाकर अपने बिस्तर पर दीवार की ओर मुँह करके लेट गया।

राजा की पत्नी, ईज़ेबेल ने उससे पूछा कि क्या बात थी। उसने कहा, "मैंने नाबोत को अपनी दाख की बारी बेचने के लिए कहा और उसने मुझसे कहा कि नहीं! मैंने उसे उसके बदले में एक बेहतर दाख की बारी की पेशकश की।"

इज़ेबेल ने कहा, "ओह, यही बात है? खैर, कुछ खाने के लिए आओ, और नोबोत के दाख की बारी के बारे में चिंता मत करो। मैं इसे तेरे लिए ले लूँगी ।"

उसने शहर के अधिकारियों को एक पत्र लिखा। उसने कहा, "जाओ और नाबोत को ले आओ और उसे अपने सामने खड़ा करो। दो झूठें गवाहों को लाओ और वे यह कहेंगे कि उसने परमेश्वर और राजा को शाप दिया था। फिर उसे बाहर निकालो और उसे तब तक पत्थर मारो, जब तक वह मर न जाए।" उसने अहाब के नाम से पत्र पर हस्ताक्षर किए और उसे मुहर के साथ बंद कर दिया। शहर के अगुओं ने वैसा ही किया जैसा कि उन्हें बताया गया था। वे नाबोत को ले आए और उस पर मौत का आरोप लगाया।

पत्थरवाह करने के बाद, उन्होंने यह कहते हुए ईंज़ेबेल को वापस संदेश भेजा, "नाबोत मर चुका है।"

वह अपने पति के पास गई और बोली, "अब तू उस दाख की बारी का मालिक है जो तू चाहता था।

जा और इसका आनंद ले क्योंकि नाबोत मर चुका है।" जब राजा ने यह खुशखबरी सुनी, तो वह अपनी दाख की बारी देखने गया।

उसी क्षण, प्रभु ने एलिय्याह से कहा, "राजा अहाब ने नाबोत की दाख की बारी को चुरा लिया। जाओ उसे यह बताओ। तूने नाबोत की हत्या कर दी और कुत्तों ने उसका खून ज़मीन से चाट दिया। कुत्ते उस स्थान पर तेरे खून को चाटेंगे।'

एलिय्याह ने नाबोत की दाख की बारी में अहाब को पाया। जब राजा ने नबी को आते देखा, तो उसने कहा, "अच्छा, यह देखो। मेरे दुश्मन ने मुझे पा लिया है।"

उसने कहा, "हाँ, मैंने तुझको ढूंढ लिया। और तुमने ऐसी बातें करने का हर संभव तरीका पाया है, जिससे परमेश्वर को नफरत है। अब निर्णय का समय है तेरी सजा सिर्फ राजा यारोबाम की तरह होगी। तेरा कोई वंशज नहीं होगा । सबसे पहले, कुत्ते तेरी पत्नी ईज़ेबेल के शरीर को खाएंगे। उसके बाद, तेरा पूरा परिवार पृथ्वी से समाप्त होगा । कुत्ते तेरे सभी रिश्तेदारों को खा जाएंगे जो शहर में मरते हैं। पक्षी देश में मरने वालों को खा जाएंगे।"

इसे अहाब ने दिल से लगा लिया। उसने दुःख में अपने कपड़े फाड़ दिए। उसने दिन-रात उपवास किया और टाट पहनी। अंत में, यहोवा ने एलिय्याह से कहा, "अहाब ने जो किया, उसे उसके लिए वास्तव में खेद है। इसलिए, मैं उसके परिवार को तब तक नष्ट नहीं करूंगा जब तक वह मर नहीं जाता। यह सब जो मैंने कहा है, यह तब होगा जब उसका बेटा राजा होगा।"

129 यहोशापात और अहाब

1 राजा 22 और 2 इतिहास 17 - 18

आसा के मरने के बाद, उसका पुत्र यहोशापात यहूदा का राजा बना। प्रभु उसके साथ था, और उसने दाऊद के उदाहरण का अनुसरण किया।

उसने जो पहला काम किया, वह राष्ट्र को अधिक सुरक्षित बनाता था। उसने एक शैक्षिक कार्यक्रम भी स्थापित किया ताकि लोग परमेश्वर के व्यवस्था को समझ सकें। यहोवा ने आसपास के देशों को यहोशापात से भयभीत किया, इसलिए वे उसके साथ युद्ध नहीं करते थे।

राजा ने इस्राएल राज्य के साथ एक गठबंधन बनाने का फैसला किया। इसलिए उसने अपने बेटे और राजा अहाब की बेटी की शादी की व्यवस्था की।

तब यहोशापात गठबंधन को मज़बूत बनाने के लिए शोमरोन के पास गया। अहाब ने उससे कहा, "मैं एक लड़ाई लड़ने जा रहा हूँ। मेरे साथ आ और हम इसे एक साथ लड़ेंगे।"

यहोशापात ने कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो मैं युद्ध में जाने के लिए तैयार हूं, इसलिए भविष्यद्वक्ता से पूछ।"

अहाब ने अपने 400 भविष्यद्वक्ताओं को बुलाया। उन्होंने कहा, "क्या हमें इस लड़ाई में जाना चाहिए?"

उन्होंने कहा, "हाँ! लड़ाई लड़ो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें जीत दिलाएगा।"

राजा यहोशापात ने कहा, "मैं प्रभु के एक नबी से सुनना चाहता हूं। तुम्हारे पास इस्राएल में एक परमेश्वर का नबी नहीं है?"

अहाब ने कहा, "हाँ। हमारे पास एक परमेश्वर का नबी है। लेकिन मुझे उसे बुलाने से नफरत है क्योंकि वह मेरे बारे में केवल बुरी बातें कहता है। वह हमेशा दंड की बात करता है।"

यहोशापात ने कहा, "फिर भी, मैं उससे सुनना चाहता हूं।"

इसलिए अहाब ने अपने पहरेदारों से कहा, "जाओ मीकायाह को यहां ले आओ।"

जैसे ही पहरेदार नबी को अंदर ला रहे थे, उन्होंने उससे कहा, "बाकी सभी लोग राजा की योजनाओं के

बारे में अच्छी बातें कह रहे हैं। इसलिए तू उनके साथ अच्छी बातें भी कहना।

उसने कहा, "जैसा कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है, मैं वही कहता हूं जो प्रभु मुझसे कहलवाना चाहता है।"

जब राजा अहाब ने मीकायाह को देखा, तो उसने कहा, "मुझे बता। क्या मुझे अपनी सेना को इस लड़ाई में नेतृत्व करना चाहिए, या मुझे घर में रहना चाहिए?"

मीकायाह ने कहा, "ओह, तुझको निश्चित रूप से जाना चाहिए। तू सफल होगा।"

अहाब ने उसकी ओर देखा, ''मैंने तुम्हें बार-बार कहा था। हमेशा मुझे सच बताओ। इस लड़ाई के बारे में प्रभु वास्तव में क्या कहते हैं?"

मीकायाह ने कहा, "मैं देख रहा हूँ कि इस्राएल चरवाहे के बिना भेड़ों की तरह बिखरा हुआ है। उनका मालिक मर गया है।"

अहाब ने यहोशापात की ओर रुख किया। "देखो मैंने तुमसे कहा था। वह केवल मेरे बारे में बुरी बातें कहता है।"

मीकायाह ने कहा, "प्रभु का वचन सुनो। मैंने परमेश्वर को अपने स्वर्गदूतों के बीच बैठे देखा। उन्होंने कहा, मैं कैसे इस युद्ध में राजा अहाब को ले जाऊं?'

स्वर्गदूतों के पास विभिन्न विचार थे। तब एक आत्मा ने कहा, 'मैं उसे जाने दे सकता हूं। मैं उनके नबियों के मुंह में एक झूठी आत्मा बन जाऊंगा। वह उन पर विश्वास करेगा और लड़ाई में चला जाएगा।' सुनो, प्रभु तुम्हें उस युद्ध में चाहते हैं। "

अहाब के एक भविष्यवक्ता ने मीकायाह को थप्पड़ मारा। अहाब अपने पहरेदारों पर चिल्लाया, "इस आदमी को जेल में डाल दो। जब तक मैं युद्ध से वापस नहीं आ जाता, तब तक उसे रोटी और पानी के अलावा कुछ नहीं दिया जाए।"

मीकायाह भीड़ पर चिल्लाया, "सभी लोग सुनो और याद रखो। यदि राजा इस युद्ध से लौटता है तो मैं परमेश्वर का भविष्यवक्ता नहीं।

दोनों राजा युद्ध के मैदान में गए। एक बार जब वे वहां थे, तो अहाब ने यहोशापात से कहा, "तू अपने शाही वस्त्र पहन सकता है, लेकिन मैं खुद को एक आम सैनिक के रूप में रखूंगा।"

लड़ाई भयंकर थी। विरोधी सेना अहाब को मारने पर केंद्रित थी, लेकिन वे उसे नहीं खोज पाए। एक बिंदु पर, उन्होंने सोचा कि राजा यहोशापात अहाब था। लेकिन जब उन्हें एहसास हुआ कि उनसे गलती हुई है, तो वे उससे दूर हो गए।

अंत में एक व्यक्ति ने बिना लक्ष्य के हवा में तीर चलाया। वह तीर अहाब के कवच के जोड़ पर लगा।

वह चिल्लाया, "मुझे युद्ध के मैदान से दूर ले जाओ। मैं घायल हूं।"

अहाब ने अपने रथ पर सवार युद्ध को देखा। पश्चिम में सूर्य अस्त होते ही उसकी मृत्यु हो गई।

वे उसके शरीर को वापस शोमरोन ले गए और उसे दफना दिया। एक कुंड के पास किसी ने उसका रथ धोया। जैसे परमेश्वर ने कहा था कि कुत्तों ने उसके खून को चाटा।

130 यहोशापात की जीत

2 इतिहास 19 - 20

यहोशापात 35 वर्ष का था, जब वह यहूदा का राजा बना। उसने 25 वर्षों तक शासन किया। उसने एक शैक्षिक प्रणाली स्थापित की, देश में न्याय स्थापित किया और कानूनी प्रणाली में सुधार किया।

यहूदा में हालात ठीक-ठाक चल रहें थे, जब तक कि अचानक मोआब, अम्मोन और एदोम के देशों ने मिलकर एकजुट होकर यहोशापात के खिलाफ लड़ने का फैसला किया। एक विशाल सेना मृत सागर के पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर एनगदी में चली गई।

यहोशापात डरता था, इसलिए उसने यहोवा से मदद माँगी। उसने यह कहते हुए एक उद्घोषणा की कि सभी को उपवास करना था और अनुग्रह मागंना था।

लोगों ने जवाब दिया, और कई लोग अपने राजा के पास और उसके साथ प्रार्थना करने के लिए यरूशलेम गए। एक विशाल भीड़ मंदिर में गई और प्रभु के सामने खड़ी हो गई। पुरुष अपनी पत्नियों और बच्चों को लेकर आए, इसलिए पूरे परिवारों ने एक साथ प्रार्थना की और परमेश्वर से मदद मांगी।

यहोशापात सभी लोगों के सामने खड़ा था और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने कहा, हे परमेश्वर, तू स्वर्ग का परमेश्वर हैं। तूने यह देश अपने दोस्त अब्राहम को दिया था। तू सारी शक्ति और ताकत को नियंत्रित कर सकता हैं। तूने कहा कि जब हम मुसीबत में होंगे तो हमें तुझ पर भरोसा करना है। देख! मोआबी और अम्मोनियों ने एक विशाल सेना इकट्ठा की है और हमें नष्ट करने के लिए आए हैं। हमारे पास उनसे लड़ने की ताकत नहीं है। हमें नहीं पता कि हमें तेरी ओर देखने के अलावा और क्या करना है।"

अचानक परमेश्वर का आत्मा एक नबी पर आया। उसने कहा, “सुनो, परमेश्वर तुमसे क्या कहता है। इस विशाल भीड़ से डर मत। यह तुम्हारी लड़ाई नहीं है, लेकिन यह मेरी लड़ाई है। कल, उनके खिलाफ जाना। तुम उन्हें आते हुए देखोगे, लेकिन तुमको उनसे लड़ना नहीं पड़ेगा। तैयार हो जाओ और अपना स्थान ले लो, लेकिन खड़े रहो और प्रभु के उद्धार को देखो। डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं। ''

यहोशापात ने झुककर अपना चेहरा जमीन की ओर कर दिया। सभी लोगों ने ऐसा ही किया और परमेश्वर की आराधना की। अचानक लेवियों ने खड़े होकर तेज आवाज के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी शुरू कर दी।

सुबह, लोग जल्दी उठ गए और अपने दुश्मनों का सामना करने के लिए निकल गए। यहोशापात ने उनसे कहा, "प्रभु पर विश्वास रखो, और तुम सफल होगे।" उसने तब लोगों को प्रभु के लिए गाने के लिए नियुक्त किया। वे सेना के सामने गाते हुए चले गए, "प्रभु को धन्यवाद दो। उनका वफादार प्यार हमेशा के लिए है।"

जैसे ही लोग चिल्लाए और प्रभु की स्तुति की, अचानक उनका दुश्मन भ्रमित हो गया। अम्मोनियों और मोआबियों एदोमियों के खिलाफ हो गए और उन्हें पूरी तरह से खत्म कर दिया। वे फिर एक-दूसरे के खिलाफ हो गए और तब तक मारते रहे जब तक कि हर आदमी मर नहीं गया। जब यहूदा की सेना युद्ध के मैदान में पहुँची, तो जमीन पर पड़ी लाशों के अलावा कुछ भी नहीं था। कोई भी फरार नहीं हुआ था।

यहोशापात ने अपने लोगों से कहा कि वे शवों से कुछ भी मूल्य न लें। उन्होंने पाया कि उनके दुश्मनों ने युद्ध के मैदान में बड़ी मात्रा में कीमती सामान ले गए थे। वहां इतना ज्यादा था कि तीन दिन तक लोग इकट्ठे करते रहे। अंत में वे अब और कीमती सामानों को नहीं ले जा सकते थे ।

बस परमेश्वर की स्तुति करने के लिए, वे चौथे दिन मिले। तब वे यहोशापात के साथ यरुशलेम लौटे और यहोशापात ने उनका नेतृत्व किया। हर कोई मंदिर में एक बार फिर से बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रभु की स्तुति में जुट गया!

यहूदा के चारों ओर के सभी देशों ने उस महान विजय के बारे में सुना जो परमेश्वर ने अपने लोगों को दी थी। वे सभी प्रभु से भयभीत थे, और उनमें से किसी ने भी यहोशापात पर हमला न किया, जब तक वह जीवित रहा। इसलिए भूमि में शांति थी, और सब शांत था।

131 पचास कप्तान

2 राजा 1

अहाब के मरने के बाद, उसका बेटा अहज्याह इस्राएल का राजा बना। थोड़े समय बाद, वह एक झिलमिलदार खिड़की में से जो शोमरोन में उसकी अटारी में थी, गिर पड़ा, और बीमार हो गया। उसका चेहरा गंभीर रूप से घायल हो गया था, इसलिए उसने अपने नौकरों से कहा, जाओ और बालजबूब देवता से पूछो, कि क्या मैं इससे उभर पाऊंगा या नहीं।

एलिय्याह ने सेवकों को रास्ते मे रोका और कहा, "इस्राएल में एक परमेश्वर है। तो तुम इस प्रश्न को बालजबूब से क्यों पूछ रहे हो? राजा के लिए परमेश्वर का यह जवाब है। तू अपने बीमारी से उठ नहीं सकता है। इसके बजाय तू मरने जा रहा है।

नौकरों ने वापस जाकर राजा अहज्याह को यह संदेश दिया। राजा ने कहा, "वह आदमी कैसा दिखता था जिसने तुम्हें यह बताया है ?" उन्होंने कहा, "वह अपनी कमर में चमड़े की पेटी बांधता है, वह बालों वाला आदमी था।"

उसने कहा, "ओह, मुझे पता है कि वह कौन है। वह एलिय्याह है। "

इसलिए राजा अहज्याह ने एलिय्याह को लाने के लिए 50 सैनिकों को भेजा। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वह ठहरा हुआ था, नबी एक तटबंध के ऊपर बैठा था। पुरुषों के कप्तान ने उस पर चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर के दास, नीचे आ! मेरे पास तुझको राजा के पास ले जाने का आदेश है।"

एलिय्याह ने कहा, "अगर मैं परमेश्वर का दास हूं, तो आसमान से आग निकलेगी और तुझको और तेरे 50 लोगों को मार देगी।"

अचानक आग आसमान से गिर गई और कप्तान और उसके आदमियों को मार डाला।

इसलिए राजा ने एलिय्याह को लाने के लिए एक और बार 50 सैनिक भेजे। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वह ठहरा हुआ था , तब भी भविष्यवक्ता ऊपर बैठा था। पुरुषों का कप्तान उस पर चिल्लाया। "परमेश्वर के दास, नीचे आ! मेरे पास तुझको राजा के पास ले जाने का आदेश हैं।"

एलिय्याह ने कहा, "अगर मैं परमेश्वर का दास हूं, तो आसमान से आग निकलेगी और तुझको और तेरे 50 लोगों को मार देगी।"

एक और आग का गोला आसमान से गिर गया और कप्तान और उसके आदमियों को मार डाला।

एक बार फिर, राजा ने एलिय्याह को लाने के लिए 50 सैनिकों को भेजा। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वह ठहरा हुआ था, तो एलिय्याह के सामने पुरुषों के कप्तान उसके घुटनों पर गिरा। उन्होंने कहा, "परमेश्वर के दास, हम पर दया कर। मेरे और मेरे इन 50 नौकरों के जीवन को बचा।"

यहोवा के स्वर्गदूत ने एलिय्याह से कहा, "उनके साथ जा। तू सुरक्षित रहेंगा।" इसलिए एलिय्याह उठकर उनके साथ चला गया।

जब उसने राजा अहज्याह को देखा, तो उसने कहा, "प्रभु का यह संदेश है। तू मुझसे कुछ भी मांग सकता था और मैंने जवाब दिया होता। लेकिन नहीं! तूने अपने दूत बालजबूब के पास भेजे। इसलिए, तू अपने बीमारी से नहीं उठेंगा। इसके बजाय, तू मर जाएंगा।"

जैसा एलिय्याह ने कहा था वैसे ही हुआ। राजा अहज्याह की मृत्यु हो गई। उसके बच्चे नहीं थे, इसलिए उसका भाई यहोराम इस्राएल का राजा बन गया।

132 बवंडर में एलिय्याह

2 राजा 2

वह समय आया जब प्रभु को एलिय्याह को स्वर्ग ले जाना पड़ा। इसलिए बूढ़े भविष्यवक्ता ने एलीशा से कहा, "यही रह। यहोवा मुझे बेतेल भेज रहा है।"

एलीशा ने कहा, "प्रभु के जीवन की शपथ, मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा।" इसलिए वे बेतेल चले गए।

बेतेल में नबियों का एक समूह था। उन्होंने एलिशा से कहा, "क्या तू जानता है कि प्रभु आज तेरे स्वामी को तुझसे दूर ले जाने वाला है?"

"हाँ मैं जानता हूँ। अब चुप रहो।"

एलिय्याह ने कहा, "एलीशा, यही रह। यहोवा मुझे यरीहो भेज रहा है।"

एलीशा ने कहा, "प्रभु के जीवन की शपथ, मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा।" इसलिए वे यरीहो के पास गए।

यरीहो के नबियों ने एलिशा से कहा, "क्या तू जानता है कि प्रभु आज तेरे स्वामी को तुझसे दूर ले जाने वाला है?"

"हाँ मैं जानता हूँ। अब चुप रहो।"

एलिय्याह ने उससे कहा, "यही रह। यहोवा मुझे यरदन नदी के पार भेज रहा है।"

एलीशा ने कहा, "प्रभु के जीवन की शपथ, मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा ना ही छोडूँगा ।" इसलिए वे साथ-साथ चले।

जब वे यरदन पहुँचे, तो एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़ कर ऐंठ ली और पानी पर मारी। तुरंत, पानी दो भाग में बट गया और दोनों लोग सूखी जमीन पर नदी के पार चले गए। पचास नबी दूर से देख रहे थे।

एक बार जब दोनों दूसरी तरफ चले गए थे, एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इससे पहले कि मैं उठा लिया जाऊं, तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?"

एलीशा ने संकोच नहीं किया। उसने कहा, "मुझे तेरी आत्मा का दोगुना हिस्सा चाहिए।"

एलिय्याह चौंक गया था। उसने कहा, "क्या? तेरा अनुरोध कठिन है। लेकिन, तेरे पास मेरी आत्मा का दोगुना हिस्सा होगा, अगर तू मुझे तब तक देखता रहे

जब तक मुझे उठाया जा रहा हो। यदि नहीं, तो तुझको वह नहीं मिलेगा।"

जैसे ही वे आगे बढ़े, अचानक आग के घोड़ों का एक रथ दिखाई दिया और उन दोनों को अलग कर दिया। तब एलिय्याह को बवंडर में स्वर्ग में ले जाया गया ... और वह चला गया।

एलीशा ने यह सब देखा। उसने अपने कपड़े फाड़ लिए और चिल्लाया, "मेरे पिता, मेरे पिता, इस्राएल के रथ और घुड़सवार!"

उसने तब एलिय्याह की चद्दर देखी, जो नबी के हवा में ऊपर जाने पर गिर गई थी। एलीशा ने उसे उठा लिया। वह मुड़कर वापस चला गया और यरदन नदी के किनारे खड़ा हो गया। उसने हवा में चद्दर ऊँची उठाई, और फिर पानी पर मारी। उसने कहा, "एलिय्याह का परमेश्वर कहाँ है?" पानी दो भागों में विभाजित हो गया, और वह सूखी जमीन पर चला गया।

पचासों नबियों ने यह सब देखा। उन्होंने कहा, "एलिय्याह की आत्मा एलीशा में रहती है।" उस दिन से, उन्होंने उसे अपने नए अगुवे के रूप में सम्मानित किया।

जब वह वापस यरीहो के पास पहुंचा, तो शहर के लोगों ने उससे कहा, "यरीहो रहने के लिए एक अच्छी जगह है, लेकिन यहां का पानी अच्छा नहीं है। यहां तक कि यह हमारी फसलों को बढ़ने से भी रोकता है।

उसने कहा, "एक नए कटोरे में थोड़ा नमक डालों और उसे मेरे पास ले आओ।"

वे उसे उसके पास ले आए और वह जल के सोते के पास चला गया। उसने नमक को पानी में फेंक दिया और कहा, "परमेश्वर ने इस पानी को शुद्ध बनाया है। अब तुम फसल उगा सकते हो और कोई भी भूखा नहीं रहेगा।"

वह यरीहो से बेतेल लौटने के लिए चला गया। रास्ते में कुछ लड़कों ने उसका मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, "यहाँ से चले जा गंजे!" नबी ने मुड़कर उन पर शाप भेजा।

तुरंत, दो भालू जंगल से आए और 42 लड़कों को मार डाला और उन्हें फाड़कर अलग कर दिया।

133 पानी की खाई

2 राजा 3

कई सालों के लिए, मोआब को इस्राएल द्वारा नियंत्रित किया जाता था और उन्होंने उससे उच्च कर का भुगतान किया था। जब अहाब मर गया, तो मोआब के राजा ने इस्राएल को और अधिक कर देने से इनकार कर दिया।

अहाब के बेटे, राजा यहोराम ने अपनी सेना को संगठित किया और मोआब के खिलाफ मार्च करने की तैयारी की। उसने यहूदा के राजा यहोशापात को संदेश भेजा। "मोआब के राजा के खिलाफ हमारे अभियान में शामिल हों। उसने मेरे खिलाफ बगावत कर दी है।"

यहोशापात सहमत हो गया और दोनों सेनाओं ने मृत सागर के दक्षिण और एदोम में प्रवेश किया।

एदोमियों की सेना ने उनका साथ दिया। इसलिए तीनों ने मोआब की ओर अपनी चढ़ाई जारी रखी।

जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि उनके सभी पुरुषों और जानवरों के लिए उस रेगिस्तान में पर्याप्त पानी नहीं है। यहोराम ने कहा, "मुझे लगता है कि प्रभु ने हमें यहां तक पहुंचाया है, ताकि हम सभी मोआबियों द्वारा कब्जा किए जा सकें।"

यहोशापात ने कहा, "क्या हमारे पास परमेश्वर का कोई नबी है?"

अधिकारियों में से एक ने कहा, "हाँ, एलीशा यहाँ है।"

तीनों राजा उसके पास गए। जब उसने यहोराम को देखा, तो उसने कहा, "तू मेरे पास क्यों आ रहा है? तू अपनी किसी मूर्ति से बात क्यों नहीं करता ?"

यहोराम ने कहा, "कृपया, मुझे लगता है कि तेरे परमेश्वर ने हमें यहां तक पहुंचाया है ताकि हम मोआबियों द्वारा पकड़ लिए जाएं।"

एलीशा ने कहा, "अगर यह सिर्फ तुम होते, तो मैं तुम्हें दिन का समय नहीं देता। लेकिन मुझे राजा यहोशापात के लिए बहुत सम्मान है, इसलिए किसी को वीणा के साथ भेजो।"

वीणा बजाते ही, प्रभु ने एलिशा को यहोराम का संदेश दिया। "इस सूखी नदी में गड्ढे खोदो। तुमको

तूफान नहीं दिखाई देगा, लेकिन यह नदी खूब पानी से भर जाएगी। यह तेरे और तुम्हारे जानवरों के लिए पर्याप्त होगा। प्रभु के लिए यह एक आसान काम है। वह मोआबी सेना को हराने में भी तुम्हारी मदद करेगा, और तूम उनके शहरों पर कब्जा करने में सक्षम होंगे।

अगली सुबह, पानी अचानक बहने लगा, इतना कि इससे गड्ढे मे पानी भर गया। मोआबी सेना ने जल्दी उठकर तीनों राजाओं की दिशा में देखा। सूरज पानी पर चमक रहा था और इसकी वजह से वह लाल दिख रहा था।। वे चिल्लाए, "वह सब खून देखो। तीन राजाओं की सेनाओं ने एक दूसरे को मार डाला। आओ, चलो उनके शिविरों से लूट का माल इकट्ठा करें।"

जब वे इस्राएलियों के शिविर में पहुँचे, तो इस्राएली सेना ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने मोआब तक उनका पीछा किया, और शहरों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया। अंत में केवल एक ही बचा था जो हारा नहीं।

इस्राएल ने उसे घेर लिया। मोआब के राजा ने अपने 700 प्रमुख सैनिकों को लेकर भागने की कोशिश की और आगे की पंक्तियों को तोड़ दिया। योजना विफल हो गई, इसलिए उसने अपने सबसे बड़े बेटे को पकड़ लिया और उसे शहर की दीवार पर बलिदान कर दिया। यह नज़ारा इतना भयानक था कि मोआब के सैनिक गुस्से में आग बबूला हो गए। यह देखकर तीनों सेनाएँ पीछे हट गईं और घर चली गईं।

134 तेल, खिचड़ी, रोटी, और कुल्हाड़ी

2 राजा 4: 1-7, 4: 38-44 और 6: 1-7

एलीशा नबियों के स्कूल का प्रभारी था। युवा पुरुषों के उस समूह के साथ कई चमत्कार जुड़े हैं:

एक भविष्यद्वक्ता की मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी एलीशा के पास आई और कहा, "तुम जानते हो कि मेरा पति प्रभु का अनुसरण करता था और उसका सम्मन करता था। जब वह मरा, तो वह किसी का कर्जदार था। अब वह आदमी पैसे लेने आ रहा है। वह मेरे दो बेटों को लेने और उन्हें दास के रूप में बेचने जा रहा है।"

नबी ने कहा, "मुझे सोचने दो। निश्चित रूप से मैं तेरी मदद कर सकता हूं। मुझे बता, क्या तेरे घर में कुछ भी है जो मूल्यवान है?"

उसने कहा, "नहीं, मेरे पास घर में कुछ भी मूल्यवान नहीं है। बस मेरे पास तेल का एक छोटा बरतन है।

एलीशा ने कहा, "अपने सभी पड़ोसियों के पास जा और उनके पास जितने बरतन हैं उतने उधार ले आ। कम मत लाना। जब तेरे पास वे सभी बर्तन हो, तो अपने बेटों के साथ अपने घर में जा और दरवाजा बंद कर दें।

उन सभी बरतनों में तेल डाल। हर बार जब एक बरतन भर जाए तो, उस तेल को अलगे में भरना और फिर अगले को भरना।"

वह और उसके बेटे हर घर में गए और जितने बरतन उधार ले सकते थे उतने लिए। वे उन्हें अपने घर में ले गए और दरवाजा बंद कर दिया। उसने फिर प्रत्येक बरतन में तेल डालना शुरू कर दिया। उसके बेटे उसके लिए खाली बरतन लाते रहे। जब वे सब भरे गए, उसने कहा, "बेटा, मुझे एक और बरतन दो।"

उन्होंने कहा, "माँ, अब और नहीं हैं।" इसी के साथ ही, तेल भरना बंद हो गया।

उसने दौड़कर परमेश्वर के दास को बताया कि क्या हुआ था। उसने कहा, "जाओ और तेल बेचो। अपने कर्ज का भुगतान करो और जो बच जाए, उसको अपनी आजीविका के रूप में उपयोग करो।"

एक बार, एक अकाल इतना गंभीर था कि खाने के लिए बहुत कम था। जब एलीशा एक यात्रा से लौटा, तो भविष्यवक्ता उसे सिखाने के लिए चारों ओर इकट्ठा हो गए। उसने एक नौकर से कहा, "इन लोगों के लिए हण्डाभर कर खिचड़ी बनाओ।"

एक युवक खिचड़ी के लिए कुछ जड़ी-बूटियाँ लेने के लिए जंगल में चला गया। उसे जंगली लौकी की एक बेल मिली और यह नहीं पता था कि वे जहरीली थीं। वह जितने ले जा सकता था, इकट्ठा किया, उन्हें काटा, और खिचड़ी में डाल दिया।

एक बार जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई, तो कुछ लोगों ने इसे चखा और महसूस किया कि क्या हुआ था। वे चिल्लाए, "परमेश्वर के दास। ध्यान रह। हण्डे में मौत है। इसे न खा।

एलीशा ने कहा, "मेरे लिए थोड़ा आटा ला।" उन्होंने उसे आटा दिया और उसने उसे हण्डे में फेंक दिया।

उसने फिर कहा, "आओ, खाओ।" सभी ने खाया, और खिचड़ी ठीक थी।

एक बार एक आदमी 20 रोटियों को लेकर एलीशा के पास आया। यह फसल की पहली रोटी थी। परमेश्वर के दास ने कहा, "इसे नबियों को परोसो ताकि वे इसका आनंद ले सकें।"

"साहब, यहाँ 100 आदमी हैं, और हमारे पास केवल 20 रोटियाँ हैं। सभी के लिए पर्याप्त नहीं है।"

एलीशा ने कहा, "उन्हें दे दो। प्रभु कहते हैं कि पर्याप्त होगा, और हमारे पास कुछ बचेगा भी।"

इसलिए रोटी पुरुषों को दी गई, और यह वैसे ही हुआ जैसा कि यहोवा ने वादा किया था। सभी के लिए पर्याप्त था, और कुछ बच भी गया।

एक बार जब नबियों को एहसास हुआ कि उनकी सुविधाएं उनके लिए बहुत छोटी पड़ रही थीं। एलीशा ने उन्हें यरदन नदी में जाने की और एक नई इमारत के लिए कुछ लकड़ी काटने की अनुमति दी। यहां तक कि वह उनके साथ जाने को तैयार हो गया।

पुरुषों में से एक ने एक लोहे की कुल्हाड़ी उधार ली और एक पेड़ को काटने के लिए इसका इस्तेमाल कर रहा था। अचानक कुल्हाड़ी का सिरा निकल कर जल में गिर गया। आदमी चिल्लाया, "स्वामी! मैंने वह कुल्हाड़ी उधार ली और अब वह बर्बाद हो गई है।

एलीशा ने कहा, "यह पानी में कहां गिर गई?"

आदमी ने उस जगह की ओर की ओर इशारा किया। तब एलीशा ने एक छड़ी को काटा और उस जगह पर पानी में फेंक दिया जो उस आदमी ने उसे दिखाया था। कुल्हाड़ी सिर सतह पर तैरने लगी। आदमी ने उसे पकड़ लिया और कुल्हाड़ी को ठीक किया।

135 शुनेमिन स्त्री

2 राजा 4: 8-37

एलीशा ने शूनेम नामक शहर की यात्रा की। एक प्रमुख महिला ने उसे भोजन कराया। उसके बाद जब भी वह अपने शहर में होता, तो वह उन्हें अपने घर पर खाने का निमंत्रण देती।

कुछ समय बाद, महिला ने अपने पति से कहा, "जो आदमी यहाँ आता है वह एक पवित्र आदमी है। हमें उसके लिए एक छोटा कमरा बनवाना चाहिए। हम उस कमरें में एक बिस्तर, मेज, कुर्सी और एक दीपक रखेंगे। जब भी वह हमारे शहर में आता है तो वह वहां रह सकता है।" उन्होंने कमरा तैयार किया, और जब एलीशा शुनेम में होता, तब वह वहीं रुकता था।

एक दिन, नबी घर आया और अपने कमरे में चला गया। उसने अपने नौकर गेहजी से कहा, "शुनेमिन स्त्री ने यह सब हमारे लिए किया है। जा उससे पूछ कि मैं उसके लिए क्या कर सकता हूं। संभवतः वह मुझसे चाहेगी कि मैं उसके लिए राजा से बोलूं, या सेनापति से।

गेहजी ने जाकर उससे बात की, लेकिन उसने कहा कि उसके परिवार ने उसकी सभी जरूरतों को पूरा किया है। तब एलीशा ने अपने नौकर से पूछा, "क्या तेरे पास कोई सुझाव है की हम उसके लिए क्या कर सकते हैं?"

सेवक ने कहा, "उसका कोई बेटा नहीं है, और उसका पति बूढ़ा है।"

एलीशा ने कहा, "उसे आने और द्वार पर खड़े होने के लिए कह।"

महिला सीढ़ियों से ऊपर गई और नबी के कमरे के द्वार पर खड़ी हो गई। उसने उससे कहा, "इस समय, अगले साल, तेरे पास एक बेटा होगा।"

उसने उससे भीख माँगी। "हे परमेश्वर के दास, मुझे यह मत बता अगर यह सच न हो।"

एक साल बाद, उसने एक बच्चे को जन्म दिया, जिस तरह एलिशा ने वादा किया था। बच्चा बड़ा हो गया और समय के साथ-साथ अपने पिता की फसल में मदद करने के लिए काफी बड़ा हो गया।

एक दिन मैदान में उसने बहुत सिरदर्द की शिकायत की। उसके पिता ने एक नौकर से कहा कि लड़के को उसकी माँ के पास ले जाए। नौकर उसे वहाँ ले गया और माँ ने अपने बेटे को अपनी गोद में बिठा लिया। फिर भी, वह दोपहर के आसपास मर गया। वह उसे एलीशा के कमरे में ले गई और उसे नबी के बिस्तर पर लिटा दिया।

उसने फिर अपने पति को एक संदेश भेजा।

“मेरे लिए एक गधा और एक नौकर भेज। मुझे परमेश्वर के दास को मिलने जाने की ज़रूरत है। मैं जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाऊंगी।”

पति ने सहमति व्यक्त की और उसके लिए एक गधा और एक नौकर भेजा। उसने नौकर से कहा, “मुझे कर्मेल पर्वत में परमेश्वर के दास के पास ले चल। धीरे मत चलना जब तक मैं ना कहूं।”

एलीशा ने उसे दूर से आते देखा, लेकिन प्रभु ने उसे यह नहीं बताया कि वह क्यों आ रही थी। उसने गेहजी को यह पूछने के लिए भेजा कि वो क्यों आई है, लेकिन उसने उसे नहीं बताया।

जब वह नबी के पास पहुंची, तो वह दौड़ी, गिरी, और उसके पैर पकड़ लिए। गेहजी ने उसे दूर करने की कोशिश की, लेकिन नबी ने कहा, "मत करो! वह बहुत परेशान है और परमेश्वर ने अभी भी मुझे नहीं बताया है क्यों।

महिला ने देखा और चिल्लाया, "मैंने तुमसे कहा था कि जब तक यह सच न हो मुझे बेटे के बारे में नहीं बताना!"

नबी ने गेहजी की ओर रुख किया। “उसके घर वापस जा। रास्ते में किसी से बात न करना। इस छड़ी को लें और इसे लड़के के चेहरे पर रख देना।

गेहजी ने छड़ी ली और चला गया। तब एलीशा ने महिला से कहा कि वह और उसका नौकर घर जा सकते हैं। उसने कहा, “मेरी बात ध्यान से सुन। जैसा कि परमेश्वर जीवित है, और जैसा तू जीवित हैं, मैं निश्चित हूं कि मैं तब तक तुझको नहीं छोड़ूंगी, जब तक मेरा पुत्र जीवित ना हो जाए।” इसलिए एलीशा उनके साथ उसके घर गया।

गेहजी पहले वहां पहुंचा और छड़ी को लड़के के चेहरे पर रख दिया। कुछ नहीं हुआ। जब एलीशा पहुंचा, तो वह अकेले कमरे में गया और दरवाजा बंद कर लिया। उसने प्रभु से प्रार्थना की, और फिर लड़के के शरीर के ऊपर खुद को फैलाया, उसकी आँखें लड़के की आँखों पर, उसका मुँह लड़के के मुँह पर, और उसके हाथ लड़के के हाथों पर थे।

जल्द ही लड़के का शरीर एक बार फिर गर्म हो गया, लेकिन उसने सांस लेना शुरू नहीं किया।

नबी उठकर आगे-पीछे चलने लगा। फिर उसने एक बार फिर खुद को लड़के के शरीर पर फैलाया। अचानक लड़के ने छींका ... और फिर उसने फिर से छींका ... और फिर उसने फिर से छींका।

उसने सात बार छींका। उसके बाद, लड़के ने अपनी आँखें खोलीं और नबी की तरफ देखा।

एलीशा ने उठकर गेहजी को बुलाया। "जा और शुनेमिन स्त्री को ले आ।"

जब वह कमरे में आई, तो भविष्यवक्ता ने कहा, "अपने बेटे को उठा।" एक शब्द कहे बिना, वह परमेश्वर के दास के चरणों में झुक गई। फिर उसने अपने बेटे को उठाया और चली गई।

136 नामान

2 राजा 5: 1-14

नामान शोमरोन सेना का सेनापति था। वह एक बहादुर योद्धा था और उसने अपनी सेना को कई जीत हासिल करने के लिए प्रेरित किया। उसका राजा उसे एक महान व्यक्ति मानता था। इस्राएल के साथ एक युद्ध के दौरान, वह एक लड़की बंदी बनाकर ले आया ताकि वह उसकी पत्नी के लिए नौकर बन सके।

कुछ समय बाद, नामान को एहसास हुआ कि उसे कुष्ठ रोग है, जो त्वचा का एक गंभीर रोग है। दासी लड़की ने कहा, "काश मेरा मालिक इस्राएल जा सकता। उनके पास एक भविष्यवक्ता है जो कुष्ठ रोगियों को भी ठीक करने में सक्षम है।"

नामान ने राजा को यह बताया। तुरंत राजा ने नामान को इस्राएल के राजा के पास भेजने की तैयारी की। उसने एक पत्र के साथ सोने, चांदी और बढ़िया कपड़ों के उपहार भेजे, कहा, "मैं अपने सेवक नामान को भेज रहा हूं ताकि आप उसके कुष्ठ रोग का इलाज करा सकें।"

जब उसने पत्र पढ़ा, तो इस्राएल का राजा हैरान रह गया। उसने अपने कपड़े उतारे और चिल्लाया, "वह कौन सोचता है कि मैं हूँ? मैं परमेश्वर नहीं हूँ जो कुष्ठ रोग का इलाज कर सकता है! वह मेरे साथ युद्ध शुरू करने की कोशिश कर रहा है।"

एलीशा ने इस बारे में सुना और राजा को एक संदेश भेजा। "तू अपने कपड़े क्यों फाड़ रहा है? उस आदमी को मेरे पास भेज ताकि उसे पता चले कि इस्राएल में एक नबी है।

इसलिए नामान और उसके लोग नबी के घर की ओर बढ़े और बाहर खड़े थे। इस संदेश के साथ एलीशा ने अपने नौकर गेहजी को बाहर भेजा। उसने नामान से कहा, "यरदन नदी में जा और सात बार अपने आपको धो। जब तू खुद को धो लेगा, तो तू कुष्ठ रोग से ठीक हो जाएगा।"

नामान को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह क्या सुन रहा है।

वह आगबबूला हो गया और भड़क गया। उसने कहा, "अगर एक सच्चा नबी सामने आता और मेरे सामने खड़ा होता। वह प्रभु से प्रार्थना करता और मेरी त्वचा पर हाथ फेरता। अगर मुझे लगा कि नदी में

धुलाई से मुझे मदद मिलेगी, तो मैं अराम की खूबसूरत नदियों में से एक में स्नान कर लेता - यरदन जैसी गंदी नदी में नहीं।"

उसके नौकरों ने उससे कहा, "मेरे पिता, अगर भविष्यवक्ता ने आपको कुछ कठिन करने के लिए कहा है, तो आप इसे पूरा नहीं करेंगे।" लेकिन उन्होंने आपसे कुछ आसान करने को कहा - धो और साफ हो जाओ।"

इसलिए नामान यरदन नदी में गया और सात बार उसमें डूबकि लगाई। अचानक उसकी त्वचा ठीक हो गई, जैसे नबी ने कहा था। वास्तव में, उसकी त्वचा एक बच्चे की तरह हो गई।

अगली कहानी में जारी

137 गेहजी

2 राजा 5: 15-27

पिछली कहानी से जारी

यरदन नदी में नामान के चंगा होने के बाद, वह और उसके लोग वापस नबी के घर गए और उसके सामने खड़े हो गए। नामान ने कहा, "आज मैंने सीखा है, और अब जानता हूं, कि इस्राएल के परमेश्वर को छोड़कर पृथ्वी पर कोई परमेश्वर नहीं है। कृपया मेरा विनम्र उपहार स्वीकार कर।"

एलीशा ने कहा, "परेमश्वर के जीवन की शपथ, कि मैं तुमसे उपहार नहीं लूंगा।" नामान ने जोर दिया, लेकिन नबी ने फिर भी मना कर दिया।

तब सेनापति ने कहा, '' कृपया तेरे दास को उतनी मिट्टी मिले जितनी दो खच्चर उठा सकते है। मैं अब किसी अन्य परेमश्वर की आराधना नहीं करूंगा। इसके बजाय, मैं परेमश्वर से इस मिट्टी पर घुटने टेकूंगा और परेमश्वर यहोवा की आराधना करूंगा।"

उसने फिर कुछ और मांगा। "जब मेरा राजा अपने देवता के मंदिर में जाता है, तो मुझे उसके साथ जाना आवश्यक है क्योंकि मैं उसका सेनापति हूं। जबकि मैं वहाँ होता हूँ, तब मुझे मूर्ति के सामने घुटने टेकना होगा। मैं पूछता हूं कि ऐसा करने के लिए प्रभु मुझे क्षमा करें।"

एलीशा ने कहा, "शांति से घर जा, और उस स्थिति के बारे में चिंता मत कर।"

नामान के जाने के कुछ समय बाद, गेहजी ने सोचना शुरू किया। "मेरे गुरु ने इस अरामी को बहुत आसानी से जाने दिया। उसे कुछ भुगतान करना चाहिए। मैं उसके साथ जाऊँगा और अपने लिए एक उपहार माँगूँगा।"

इसलिए गेहजी अरामी सेनापति के पीछे चला गया।

जल्द ही, नामान ने उसे आते देखा और अपने रथ को रोक दिया। वह उतर गया और सेवक का अभिवादन किया। "क्या सब कुछ ठीक है?"

गेहजी ने कहा, "हाँ, सब ठीक है। मेरे गुरु को पता चला कि आज रात हमारे साथ रहने वाले दो युवा मेहमान आ रहे हैं। वे नबियों के चेलों में से हैं। वह

सोच रहा था कि क्या आप खर्चों में मदद करना चाहेंगे - संभवतः 75 पाउंड चांदी और कुछ जोड़ी कपड़े।"

उसने कहा, "निश्चित रूप से! मैं तुमको दो थैलों में 150 पाउंड की चाँदी देता हूँ, साथ ही दो जोड़े कपड़े।"

सेनापति ने यह सब अपने कुछ आदमियों को दिया, ताकि वे इसे नौकर के लिए वापस ले जा सकें।

गेहजी ने आदमियों से चाँदी और कपड़े लिए और अपने घर ले गया। जब सब कुछ अच्छी तरह से रखा गया, तो उसने आदमियों को भेज दिया। वह फिर गया और अपने मालिक के पास खड़ा हो गया।

एलीशा ने कहा, गेहजी, तू कहां गया था?

उसने कहा, "मैं कहीं नहीं गया था।"

एलीशा ने कहा, "ओह मेरे प्यारे दोस्त। मेरी आत्मा वहाँ थी जब नामान ने अपने रथ को रोक दिया और तुझको नमस्कार करने के लिए आगे बढ़ा। तुझको पैसे, कपड़े, जैतून के पेड़, दाख की बारियां, जानवरों या दासों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। इसलिए, नामान का कोढ़ अब तुझको हो जाएगा।"

उसी के साथ, गेहजी ने घर छोड़ दिया। उसने अपने हाथों को देखा, और वे पहले से ही कुष्ठ रोग के कारण सफेद हो गए थे।

138 अंधे सैनिक

2 राजा 6: 8-23

अराम के राजा ने इस्राएल पर आक्रमण किया। वह अपने सैन्य अगुओं को लाया और उन्हें अपनी योजनाएं बताईं कि वह कहां शिविर स्थापित करने जा रहा था और वह कैसे इस्राएलियों पर हमला करने जा रहा था।

जैसे ही उसने यह शब्द बोले, एलीशा इस्राएल के राजा के पास गया। तू एक निश्चित मार्ग के माध्यम से अपनी सेना लेने की योजना बना रहे हो। सावधान रहे! अराम सेना वहां तेरा इंतजार कर रही होगी।"

उसने राजा को ठीक वही बताया जो अराम के लोग कर रहे थे। इस्राएल की सेना ने तैयारी की और लड़ाई जीत ली।

यह कई बार हुआ जब तक कि अराम के राजा को आखिरकार यह एहसास नहीं हुआ कि इस्राएलियों को हमेशा पता होता था कि वह क्या योजना बना रहा था। उसने अपने सेनापतियों से कहा, "तुम में से कौन इस्राएल का जासूस है?"

"मेरे स्वामी, हम सभी आपके प्रति वफादार हैं। यह एलीशा, नबी है। वही है जो उनके राजा को आपकी योजनाओं के बारे में बताता है। वह जानता है कि आप अपने सोने के कमरे में रहते हुए भी क्या कहते हैं।"

उसने कहा, "पता करों कि यह नबी कहाँ रहता है।"

जल्द ही उसके आदमी वापस आ गए। "मेरे स्वामी, वह दोतान में रहता है।"

इसलिए राजा ने घोड़ों और रथों के साथ एक बड़ी सेना को दोतान भेजा। वे रात में पहुंचे और शहर को घेर लिया।

एलीशा का नौकर जल्दी उठा और बाहर निकला। अचानक उसने इस विशाल सेना को देखा। अंदर भागते हुए, वह चिल्लाया, "अराम की सेना ने शहर को घेर लिया है। हम क्या करें?"

एलीशा हैरान था। "तू भयभीत क्यों है? हमारी सेना उनकी तुलना में बहुत बड़ी है।"

फिर उसने प्रार्थना की, "परमेश्वर, इस आदमी की आँखें खोलें ताकि वह देख सके।" इसलिए प्रभु ने

उसकी आँखें खोलीं। उसने देखा कि पहाड़ पर आग के कई घोड़े और रथ हैं। वे सभी एलीशा के लिए थे।

उस समय, अरामी सेना शहर की ओर बढ़ने लगी। नबी ने प्रार्थना की, "परमेश्वर, कृपया इन सभी लोगों को अंधा बना दें।" अचानक प्रभु ने उन्हें अंधा बना दिया।

नबी उनके पास गया और कहा, "किसी तरह तुम लोग गलत रास्ते पर आ गए हो। तुम गलत शहर में हो मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूंगा और तुमको सही जगह पर ले जाऊंगा।"

इसके बाद वह उन्हें इस्राएल की राजधानी शोमरोन ले गया। एक बार जब वे फाटक के अंदर पहुंच गए, उसने प्रार्थना की, "प्रभु, इन पुरुषों की आंखें खोल ताकि ये देख सकें।" पुरुषों ने चारों ओर देखा और महसूस किया कि वे शोमरोन में थे।

इस्राएल के राजा ने यह देखा और एलीशा से कहा, "क्या मुझे उन्हें मारना चाहिए? क्यों नहीं, मैं उन्हें मार डालूँगा!"

एलीशा ने कहा, "नहीं। तू इन लोगों को नहीं मार सकता है। तूने उन्हें युद्ध में कैद नहीं किया। वे तेरे मेहमान हैं, उन्हें खाना-पीना दे, और उन्हें उनके मालिक के पास वापस जाने दो।"

इसलिए राजा ने मेहमानों के लिए एक शानदार दावत तैयार की। जब सबने खा-पी लिया तो वे सीरिया के राजा के पास वापस चले गए।

उस समय से, अरामी हमलावरों ने फिर से इस्राएल में प्रवेश नहीं किया।

139 चार कोढ़ी

2 राजा 6:24 - 7:20

अराम के राजा ने एक बार फिर इस्राएल पर आक्रमण किया। उनकी सेना ने सामरिया को घेर लिया और शहर की दीवारों के ठीक बाहर शिविर लगाया। उन्होंने शहर में जाने वाली सभी आपूर्तियों को रोक दिया। आखिरकार, कोई भोजन नहीं था और लोग भूखे रहने लगे। यह इतना बुरा था कि एक गधे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ों में, और कबूतर की छोटी कटोरी भर बीट पांच टुकड़े चान्दी में बिक रही थी।

एक महिला ने राजा को शहर की दीवार पर चलते हुए देखा। उसने उससे मदद करने के लिए कहा। राजा ने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं तेरी मदद कर सकता हूं या नहीं। तेरी समस्या क्या है?"

उसने कहा, "मेरी दोस्त ने अपना वादा नहीं निभाया। हम सहमत हुए थे कि हम अपने दो बेटों को खा लेंगे, पहले दिन मेरा और दूसरे दिन उसका। इसलिए, हमने मेरे बेटे को उबला और खाया, लेकिन अब उसने अपने बेटे को छिपा लिया है। ''

जब राजा ने यह सुना, तो उसने अपने कपड़े फाड़ लिए। उसने कहा, "मैं इसके लिए एलीशा को लाऊंगा यदि यह आखिरी काम है जो मुझे करना है।" उसने नबी के सिर को काटने के लिए एक पहरेदार को भेजा।

एलीशा इस्राएल के कई बुजुर्गों के साथ अपने घर में बैठा था। उसने कहा, "मेरे हत्यारे राजा ने मेरा सिर काटने के लिए एक पहरेदार भेजा है। राजा उसके ठीक पीछे है। "

तभी राजा अंदर चला गया। वह नबी पर चिल्लाया। "तूने कहा कि यह सारी परेशानी परमेश्वर की ओर से है। अगर वह इस तरह से काम करता है तो मुझे उसकी सेवा क्यों करनी चाहिए?"

एलीशा ने कहा, "मेरे पास परमेश्वर का संदेश है। उसने कहा कि यह आपदा लगभग खत्म हो चुकी है। कल इस समय, लोग कुछ सिक्कों के लिए एक बोरी आटा और एक बड़ी बोरी जौ एक ही मूल्य में बिकेगी।"

राजा के मुख्य सलाहकार ने कहा, "असंभव! भले ही परमेश्वर स्वर्ग की खिड़कियाँ खोल दे, तौभी हमारे यहाँ उतना भोजन नहीं होगा।

परमेश्वर के दास ने कहा, "तू इसे अपनी आँखों से देखेगा, लेकिन इसमें से कुछ भी नहीं खाएगा।"

रात के दौरान, अरामी सेना ने एक बड़ी आवाज़ सुनी जैसे कि एक बड़ी सेना उनकी ओर आ रही है।

शोर तेज हो गया और ऐसा लगने लगा जैसे सेना के पास कई घोड़े और रथ हैं।

अरामी सैनिकों ने सोचा कि इस्राएल ने अन्य देशों को काम पर रखने और उनकी मदद करने के लिए रखा है। वे चिल्लाए, "चलो यहाँ से चलो!" वे उठे और सब कुछ पीछे छोड़कर भाग गए।

अगली सुबह रोशनी से पहले, शहर के फाटकों के ठीक बाहर चार कोढ़ी बैठे थे। एक ने दूसरों से कहा, "हम यहाँ क्यों धीरे-धीरे भूख से मर रहे हैं?"

दूसरे ने कहा, "ठीक है, शहर में परिस्थिति बेहतर नहीं है। अगर हम वहां जाते हैं, तो हम भूख से मरेंगे।"

"खैर, यह सच है, लेकिन हम यहाँ नहीं रह सकते। अरामी शिविर में चलते हैं, अगर वे हमें मारते हैं - ठीक है, हम वैसे भी मरने वाले हैं। लेकिन शायद वे हम पर दया करेंगे और हमें भोजन देंगे।

इसलिए, चारों लोग उठकर शिविर की ओर चल दिए, यह ना जानते हुए भी कि यह खाली नहीं है। वे पहले तम्बू में गए और भोजन, सोना, चाँदी पाया। और महंगे कपड़े। सबसे पहला काम जो उन्होंने किया, वह था खाना खाया। वे फिर अन्य चीजों को ले गए और उन्हें छिपा दिया। वे वापस आए और उन्होंने अगले तंबू में जो कुछ भी पाया उसे छिपा दिया।

अंत में उन्होंने कहा, "हम जो कर रहे हैं वह सही नहीं है। लोग दीवार के दूसरी ओर भूख से मर रहे हैं। अगर हम उन्हें इस बारे में नहीं बताएंगे तो परमेश्वर हमें दंड देगा।

इसलिए वे शहर के फाटक पर गए और द्वारपाल को बताया कि उन्होंने क्या पाया है।

जब राजा ने इस बारे में सुना, तो उसने सोचा कि यह एक जाल है। उसने कहा, "अराम की सेना छिपी हुई है, हमारे शहर से बाहर आने का इंतजार कर रही है।"

इसलिए उसने कुछ सैनिकों को भेजकर वहां की जासूसी करने के लिए कहा। पुरुषों ने अरामी लोगों के मार्ग को पाया। यह उन कपड़ों और उपकरणों से भरा हुआ था जिन्हें सेना ने फेंक दिया था ताकि वे तेज़ी से भाग सकें।

सैनिकों ने वापस जाकर राजा को बताया कि उन्हें क्या मिला है। उसी के साथ, लोग अराम के शिविर पर छापा मारने के लिए शहर से बाहर चले गए। खाने के दाम तुरंत गिर गए।

राजा ने फाटक पर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अपने मुख्य सलाहकार को काम दिया। जल्द ही, वह लोगों के पांवों के नीचे दब कर मर गया। परमेश्वर के भक्त ने जो कहा था, वह सब पूरा हुआ।

140 एलीशा रोया

2 राजा 8: 1-15

एलीशा शूनेमिन महिला के पास गया और कहा, "अपने परिवार को ले और जितनी जल्दी हो सके, इस्राएल से दूर जा। इस देश में एक अकाल आएगा और सात साल तक चलेगा।"

जैसा कि परमेश्वर के सेवक ने कहा था। उसका परिवार इस्राएल से चला गया और पलिश्तियों की भूमि में चले गए और सात साल तक वहाँ रहे। जब वह इस्राएल वापस आई, तो वह राजा से यह पूछने के लिए गई कि उसके परिवार का घर और जमीन उन्हें वापस कर दी जाए।

जब वह पहुंची, तो उसने पाया कि राजा, गेहजी को सुन रहा था, जो एलीशा के कुछ महान कामों के बारे में बात कर रहा था। ऐसा हुआ कि नौकर उस समय के बारे में बता रहा था जब नबी ने मृत लड़के को वापस जीवन दिया था। तभी शुनेमिन महिला अंदर गई।

गेहजी ने कहा, "मेरे स्वामी। यह वही महिला है जिसके बारे में मैं बात कर रहा था। वो उसी का बेटा था जिसे मृतकों से जिलाया गया था।"

राजा ने शुनेमिन महिला को अपने दृष्टिकोण से कहानी बताने के लिए कहा। उसकी कहानी सुनने के बाद, राजा ने अदालत के एक अधिकारी से कहा, "सुनिश्चित करें कि इस महिला को वह सब कुछ वापस मिल जाए जो उसका है। इसके अलावा, उसके खेतों से जो भी पैसा आया था, उसे दे दो।"

कुछ समय बाद, एलीशा अराम की राजधानी गया। अराम का राजा बीमार था। जब उसने सुना कि एलीशा शहर में है, तो उसने अपने नौकर हजाएल को नबी के पास भेजा। "परमेश्वर के सेवक के लिए कुछ उपहार लें और उससे पूछ कि क्या मैं इस बीमारी से उभर पाऊंगा या नहीं।"

हजाएल ने उपहार के रूप में सभी प्रकार के सामानों को 40 ऊंटों पर भर लिया। उसने भविष्यवक्ता से कहा, "अराम का राजा जानना चाहता है कि क्या वह अपनी बीमारी से उभरेगा ।"

एलीशा ने कहा, "उसे बता कि वह अपनी बीमारी से उभर जाएगा। लेकिन यह सच नहीं है। प्रभु ने मुझे बताया है कि वह मर जाएगा।"

फिर एलीशा ने हजाएल को देखा। वह इतनी देर तक घूरता रहा कि हजाएल शर्मिंदा हो गया। फिर नबी फूट फूट कर रोने लगा। हजाएल ने कहा, "प्रभु के सेवक, तू क्यों रो रहा है?"

"ओह, क्योंकि तू इस्राएल के लोगों के प्रति भयानक काम करेगा। तू उनके शहरों को जला देगा और उनके नौजवानों को मार डालेगा। तू बच्चों के सिर कुचल देगा और गर्भवती महिलाओं को चीर देगा।"

हजाएल ने कहा, "मैं ये भयानक काम कैसे कर सकता हूँ? मैं केवल एक सेवक हूँ।"

"ओह, प्रभु ने मुझे दिखाया है कि तू अराम का राजा बनने जा रहा है।"

हजाएल नबी के पास से गया और अपने मालिक के पास वापस चला गया। राजा ने पूछा, "एलीशा ने क्या कहा?"

"उसने कहा कि आप अपनी बीमारी से उभर जाएंगे।"

अगले दिन, हजाएल ने पानी मे एक भारी कपड़ा डुबोया, और इसका इस्तेमाल राजा का दम घुटने के लिए किया। उसके मरने के बाद, हजाएल ने सीरिया के राजा के रूप में अपना स्थान ग्रहण किया।

141 येहू

2 राजा 9: 1-29

एलीशा ने युवा भविष्यवक्ताओं में से एक को चुना। उसने उससे कहा, "यह तेल की बोतल ले और येहू के पास जा। वह अपने दोस्तों के साथ होगा, इसलिए उसे अकेला मे बात करने के लिए कह। उसे इस्राएल के राजा के रूप में अभिषेक कर। एक बार जब तू ऐसा कर लेता है, तो दरवाजा खोल और भाग जा।"

युवा भविष्यवक्ता ने येहू को सेना के अन्य सेनापतियों के साथ दौरा करते हुए पाया। युवक ने उससे कहा, "मेरे पास तुम्हारे लिए एक संदेश है।"

दोनों घर के अंदर गए। युवा भविष्यवक्ता ने येहू के सिर पर तेल डाला और कहा, "प्रभु का यह संदेश है। मैं इस्राएल पर राजा होने के लिए तेरा अभिषेक करता हूँ। तू अहाब के पूरे घराने को मारेगा। उसके परिवार में हर पुरुष को मरना है। ईज़ेबेल कुत्तों द्वारा खाई जाएगी। '' इसी के साथ, युवक ने दरवाजा खोला और भाग गया।

येहू अपने दोस्तों के पास वापस गया। उसने कहा, "वह पागल भविष्यद्वक्ता क्या चाहता था?"

उसके दोस्तों ने पुछा, "ओह, तुम्हें पता है कि वो

क्या चाहता हैं। उसने उतर दिया, "वह किसी भी बारे मे बात नहीं कर रहा था।"

उन्होंने कहा, "तू सच नहीं कह रहा हैं। उसने क्या कहा?"

"ओह ठीक है, उसने एक दिलचस्प बात कही। उसने कहा, 'मैं इस्राएल पर राजा होने के लिए तेरा अभिषेक करता हूँ। ''

वह लोग कूद पड़े और अपने कपड़ो को उसके सामने फैला दिया। उन्होंने नरसींगा फूंका और चिल्लाया "येहू राजा है!" तुरंत उन्होंने योजना बनाना शुरू कर दिया कि वे कैसे इस्राएल के राजा योराम को हटाने जा रहे हैं। वह अहाब और ईज़ेबेल का पुत्र था।

योराम यिज्रैल के अपने महल में था। उसका भतीजा, जो यहूदा का राजा था, उससे मिलने आया था।

येहू अपने आदमियों को इकट्ठा करके यिज्रैल के पास गया। चौकीदार ने उसे और उसके आदमियों

को आते देखा और राजा से कहा, "सैनिकों का एक दल है जो इस तरफ आ रहा है।"

योराम ने कहा, "एक सवार को उनके पास यह देखने के लिए भेजें कि क्या वे शांति से आ रहे हैं।"

एक आदमी ने येहू के पास दौड़कर कहा, "राजा जानना चाहता है कि क्या तुम शांति से आ रहे हो।"

उसने कहा, "वह शांति के बारे में कुछ नहीं जानता। मेरे आदमियों के पीछे हो जाओ।"

पहरेदार ने राजा से कहा, "सवार तो वहां गया, लेकिन वापस नहीं आया। वह अब उनके पीछे दौड़ रहा है।"

इसलिए राजा ने एक और सवार को बाहर भेजा। वह येहू के पास पहुंचा और कहा, "राजा जानना चाहते हैं कि क्या आप शांति से आ रहे हैं।"

उसने फिर कहा, "वह शांति के बारे में कुछ नहीं जानता। मेरे आदमियों के पीछे हो जाओ।"

पहरेदार ने राजा से कहा, "दूसरा सवार भी उनके साथ शामिल हो गया है। मेरे स्वामी, मुझे पता है कि यह कौन आ रहा है। यह एक जंगली आदमी की तरह रथ चला रहा है। वह येहू की तरह रथ चला रहा है।"

योराम ने कहा, "जाओ हमारे रथ लाओ!" दोनों राजा अपने-अपने रथ में सवार सैनिकों से मिलने के लिए निकल पड़े। योराम चिल्लाया, "येहू, क्या कुशल है "

वह वापस चिल्लाया, "जब ईज़ेबेल छिनालपन और टोना करती है, तब तक कुशल कहां हो सकता है?"

योराम ने अपने रथ को घुमाया और अपने भतीजे को कहा। "भाग! यह एक जाल है।"

येहू ने तीर चलाया और योराम को मार डाला, उसे उसके कंधे के बीच मार दिया। सेनापति चिल्लाया, "उसके शरीर को लो और उस खेत में फेंक दो जो नाबोत से चुराया गया था।"

फिर उसने यहूदा के युवा राजा का पीछा किया, क्योंकि वह अहाब का पोता था। एक बार जब सही दूरी पर था, तब येहू ने एक तीर राजा को मारा।

इसलिए, एक दिन में, येहू ने इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा दोनों को मार डाला।

अगली कहानी में जारी

142 ईज़ेबेल

2 राजा 9:30 - 10:36

पिछली कहानी से जारी

येहु के दो राजाओं को मारने के बाद, वह ईज़ेबेल को खोजने के लिए यिज्रैल गया। वह जानती थी कि वह आ रहा है, इसलिए उसने अपनी आंखों में सुर्मा लगाया, अपना सिर संवार कर और अपनी दूसरी मंजिल की खिड़की के पास बैठ गई।

जब वह आया, तो उसने उसे कहा, "तुम यहाँ क्यों हो - ऐसे लोगों को मार रहें हो जो तुमसे बेहतर हैं?"

उसने उसकी ओर देखा और फिर कहा, "क्या कोई मेरी तरफ है?" रानी के लिए काम करने वाले कुछ लोगों ने खिड़की से नीचे देखा। येहू चिल्लाया, "उसे खिड़की से बाहर फेंक दो!"

उन्होंने ईज़ेबेल को उठाया और उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया। जब वह ज़मीन पर गिरी तो दीवार पर खून के छींटे पड़ गए । येहू ने कई बार अपने रथ को उसके ऊपर चढ़ाया। वह तब कुछ खाने के लिए अंदर गया।

भोजन के बाद, उसने कहा, "मुझे लगता है कि हमें उसे दफनाना चाहिए। आखिरकार, वह एक रानी है।"

उसने कुछ पुरुषों को यह करने के लिए बाहर भेजा, लेकिन उन्हें केवल उसकी खोपड़ी, पैर और हाथों की हथेलियाँ ही मिली। उन्होंने येहू से कहा, "ऐलिय्याह के माध्यम से परमेश्वर ने बात की," कुत्ते नाबोत के खेत में ईज़ेबेल खाएंगे, और वह खाद होगी।""

तब येहू ने शोमरोन में प्राचीनों को संदेश भेजा। "आपके शहर की दीवारें मजबूत हैं, और आपके पास बहुत सारे घोड़े, रथ और हथियार हैं। अहाब के 70 बेटे आपकी सुरक्षा में रहते हैं। इसलिए, अपना राजा बनने के लिए उनमें से एक का चयन करें, और लड़ाई के लिए तैयार रहें।"

यह पत्र मिलते ही प्राचीन घबरा गए। उन्होंने उसे यह कह कर एक संदेश भेजा, "हम अहाब के इन बेटों को अपना राजा नहीं बनाना चाहते। हम तुम्हारे सेवक हैं और तुम जो कहोगे हम वह करेंगे।"

उसने उन्हें एक संदेश भेजा। "अगर यह सच है, तो उन 70 बेटों के सिर को टोकरियों में मेरे पास भेज दो।" अहाब के 70 पुत्र मारे गए, और उनके सिर येहू को भेजे गए।

उन्होंने तब सुनिश्चित किया कि अहाब का कोई अन्य रिश्तेदार अब जीवित नहीं है।

एक बार यह सब हो जाने के बाद, येहू ने शोमरोन में एक घोषणा की। उसने कहा, "अहाब ने बाल की थोड़ी सेवा की, लेकिन मैं पूरी तरह से उनके लिए समर्पित हूं। इसलिए मैं बाल के लिए एक महान बलिदान कर रहा हूं। बाल के सभी सच्चे उपासकों को यहां उपस्थित होने की आवश्यकता है। मैं इस बैठक में नहीं आने वाले को मार दूंगा।"

यह घोषणा पूरे इस्राएल में की गई। बाल के भक्त राष्ट्र के हर हिस्से से आए। उन्होंने बाल के मंदिर को भर दिया। सब लोग वहां थे। येहू ने कहा, "चारों ओर देखो और देखो कि क्या हमारे साथ प्रभु के कोई सेवक हैं। यदि तुमको कोई दिखता है, तो उसे तुरंत बाहर फेंक दों। केवल बाल के सेवकों का यहाँ स्वागत है।"

यह हो जाने के बाद, लोगों ने अपने बलिदान देने शुरू कर दिए। येहू ने बाहर जाकर अपने आदमियों से कहा। "अंदर जाओ और सभी को मार डालो। अगर कोई बच जाता है, तो तुम उसके लिए अपनी जान गवा दोगे ।"

इसलिए पुरुषों ने अंदर जाकर सभी को मार डाला। उन्होंने तब बाल मंदिर को तोड़ दिया और एक बड़े शौचालय में बदल दिया।

प्रभु ने कहा, "तुमने उत्साह के साथ मेरे निर्देशों का पालन किया है। इसलिए, तेरे पुत्र चार पीढ़ियों के लिए इस्राएल के राजा होंगे।"

इसलिए येहू ने 28 साल तक इस्राएल पर शासन किया।

143 अतल्याह

2 राजा 8: 16-29, 9: 14-29, 11: 1-21, 2 इतिहास 21 - 23

यहोशापात, यहूदा का राजा, इस्राएल राज्य के साथ एक अच्छा रिश्ता कायम करना चाहता था। ऐसा करने के लिए, उसने अपने सबसे बड़े बेटे की शादी इस्राएल के राजा अहाब की बेटी, अतल्याह से की। दुर्भाग्यवश, अतल्याह ने अपने पति को इस्राएल के पापपूर्ण तरीकों को मानने के लिए प्रभावित किया।

जब यहोशापात की मृत्यु हुई, उसका बेटा राजा बना और यहूदा के चारों तरफ मूर्तियों को रखवा दिया, और यरूशलेम में बाल के लिए एक मंदिर का निर्माण किया। उसने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने छह भाइयों को मार डाला कि वे राज्य उससे छीन ना लें।

एलीशा ने उसे एक संदेश भेजा। "तूने लोगों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए प्रेरित किया है, और अब तूने अपने भाइयों को मारवा डाला है। वे सभी तुझसे बेहतर इंसान थे। इसलिए, तेरे सभी बेटों को मार दिया जाएगा, और तू एक धीमी और दर्दनाक मौत मरेगा।"

इसके तुरंत बाद, यहूदा ने लड़ाईयां शुरू कर दीं। राजा को पेट की गंभीर बीमारी हो गई। उसके सभी बेटे सबसे छोटे को छोड़कर मारे गए। राजा की बीमारी ने उन्हें दो साल तक बहुत पीड़ा दी। जब वह आखिरकार मर गया, तो किसी ने भी उसकी मृत्यु पर शोक नहीं जताया।

उसका सबसे छोटा बेटा राजा बन गया, और उसने अपनी माँ अतल्याह का पालन किया। वह अपने चाचा, इस्राएल के राजा से मिलने गया। जब वह वहां था, तब येहू ने दोनों को मार डाला।

जब उसने सुना कि उसका बेटा मर गया है, तो अतल्याह ने राजा बनने का फैसला किया, भले ही वह एक महिला थी। फिर भी, वह जानती थी कि यहूदा के लोग हमेशा दाऊद के वंश से अपने राजाओं का चयन करते हैं। इसका मतलब था कि लोग उसे मार सकते हैं और उसके पोते को राजा बना सकते हैं। इसलिए, उसने उन्हें मरवाने का फैसला किया। उसने

पहरेदार को बलवाया और कहा कि वह महल में जाए और उन सभी को मार डालें।

अतल्याह की बेटी ने यह सुना और महल में भाग गई। वह यहोवा की आराधना करती थी और महायाजक यहोयादा की पत्नी थी। महल में, उसने बच्चे योआश और दाई को लिया और वहाँ से चली गई - पहरेदार के वहां पहुंचने से ठीक पहले।

उसने बच्चे को प्रभु के मंदिर में छिपा दिया।

इस बीच पहरेदार ने दाऊद के अन्य सभी शाही वंशजों को मार डाला।

अतल्याह को भरोसा था कि उसने उन सभी को मार दिया है। इसलिए, वह यहूदा की राजा बनी और छह साल तक देश पर शासन किया।

यहोयादा ने सात साल की उम्र तक योआश को मंदिर में छिपाए रखा। अंत में याजक को पता था कि यह कार्य करने का समय है। उसने विश्वसनीय सैन्य अधिकारिओं और विभिन्न परिवार समूहों के प्रमुखों के साथ एक बैठक आयोजित की। उसने उनसे पूछा, "यदि आपके पास राजा दाऊद के वंशज हैं तो आप क्या करेंगे।"

"हम उसे राजा बना देंगे!"

यहोयादा तब योआश को उनके सामने लाया और कहा, "यहाँ तुम्हारा अगला राजा है।"

दोनों ने मिलकर उसे लोगों के सामने लाने की तारीख तय की। उन्होंने सैन्य, मंदिर गतिविधियों और भीड़ नियंत्रण का आयोजन किया। उस दिन, यहूदा के लोग मंदिर गए।

योआश को बाहर लाया गया और राजा के लिए आरक्षित स्थान पर रखा गया। यहोयादा ने उसे तेल से अभिषेक किया और उसके सिर पर मुकुट रखा। तुरही फूंकी, गाना बजानेवालों ने गाया, और लोगों ने चिल्लाया, "राजा लंबे समय तक जीवित रहें" !!

अतल्याह ने सबको चिल्लाते हुए सुना, इसलिए वह यह देखने के लिए बाहर गई कि क्या चल रहा है। लोग सड़कों पर दौड़ रहे थे, जश्न मना रहे थे और राजा के बारे में बात कर रहे थे। वह मंदिर में गई और योआश को राजा के लिए आरक्षित स्थान पर देखा, और उसके सिर पर एक मुकुट था। उसने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाई, "देशद्रोह! देशद्रोह!"

यहोयादा ने उसकी ओर इशारा किया और कहा, "उस महिला को बाहर निकालो, क्योंकि मंदिर में किसी को मारना सही नहीं है।"

इसलिए उन्होंने अतल्याह को मंदिर से बाहर खींचा, और उसे घोड़े के बाड़े में मार दिया। लोग शहर के बीच से चले गए और बाल के साथ संबंधित सभी चीजों को हटा दिया। महायाजक ने एक बार फिर मंदिर में परमेश्वर की आराधना की स्थापना की। सभी ने ख़ुशी मनाई क्योंकि अतल्याह का आतंक शासनकाल खत्म हो गया था।

144 योआश

2 राजा 12 और 2 इतिहास 24

योआश सात वर्ष का था, जब वह यहूदा का राजा बना। यहोयादा, महायाजक ने राजा को सिखाया और उसे एक धर्मी जीवन जीने में मदद की। जब तक यहोयादा रहा, तब तक योआश यहोवा के मार्गों पर चलता था।

जब राजा बड़ा हो गया, तो उसने यहोवा के मंदिर की मरम्मत करने का फैसला किया। बाल की पूजा में इस्तेमाल करने के लिए, अतल्याह ने इसमें से हर मूल्यवान चीज़ को निकाल लिया था।

योआश ने पुरोहितों और लेवियों को पूरे देश में जाने और मंदिर की मरम्मत और वार्षिक रखरखाव के लिए धन इकट्ठा करने का काम सौंपा। कई साल पहले, मूसा ने एक कर लगाकर इसके लिए प्रावधान किया था।

उन्होंने पैसा इकट्ठा करना शुरू कर दिया, लेकिन मरम्मत शुरू नहीं हुई। राजा को एहसास हुआ कि पैसे का इस्तेमाल प्रशासन की लागतों और अन्य चीजों के लिए किया जा रहा है, जिन्हें याजक महत्वपूर्ण समझते हैं।"

यह स्पष्ट था कि याजक और लेवी लोग मंदिर की मरम्मत और देखरेख करने के लिए गलत लोग थे।

योआश ने एक अलग तरीके का फैसला किया। उन्होंने पुरुषों से कहा कि वे एक बड़ा बक्सा बनाएं और उसे मंदिर के गेट पर रख दें।

फिर उसने घोषणा की कि लोग अपने पैसे मंदिर के लिए लाएं और बक्से में डालेंगे।

यहूदा के लोगों को यह पसंद आया, इसलिए वे अपने दान ले आए, और उन्हें बक्से में डाल दिया।

जब यह भर गया, तो मरम्मत करने वाले पुरुषों को पैसे दिए गए। इससे उन्हें अपने काम पर रखने की क्षमता मिली और काम धीमा नहीं हुआ। वे सच्चे पुरुष थे, इसलिए उन्हें राजा को पैसे का हिसाब देने की आवश्यकता नहीं थी और यह कैसे खर्च किया जाता था।

काम पूरा होने के बाद भी दान आता रहा। इसलिए आराधना के विभिन्न उपकरणों को बनाने के लिए अतिरिक्त धन का उपयोग किया गया था। यहूदा के लोग मंदिर में आने और परमेश्वर की उपासना करने में विश्वासयोग्य हो गए।

यह सब किया गया था जब यहोयादा अभी भी जीवित था। जब वह 130 साल का था, तब उसकी मृत्यु हो गई थी। उसने अपने राजा, अपने परमेश्वर और यहूदा के लोगों की सेवा की थी।

उसकी मृत्यु के बाद, योआश ने यहूदा के विभिन्न अगुओं की बात सुनी, जो राष्ट्र के लिए एक अलग दिशा चाहते थे। उसने उन्हें परिवर्तन करने की अनुमति दी, और जल्द ही लोगों ने परमेश्वर की आराधना करने के लिए मंदिर जाना बंद कर दिया। इसके बजाय, वे मूर्तियों और काम देवी की ओर मुड़ गए।

प्रभु ने इसके खिलाफ प्रचार करने के लिए भविष्यद्वक्ता भेजे। यहोयादा का पुत्र अब एक याजक था। प्रभु ने उसे लोगों के सामने खड़ा होने और यह कहने के लिए कहा, "यदि तुम प्रभु को छोड़ देते हो, तो वह तुमको छोड़ देगा।"

लोगों ने इस संदेश को अस्वीकार कर दिया और याजक को मारना चाहते थे। अंत में योआश ने उसे यह कहते हुए पत्थर मारने का आदेश दिया, भले ही वह यहोयादा का पुत्र था, जो एक वफादार दोस्त और सलाहकार था।

इसके तुरंत बाद, परमेश्वर ने एक छोटी अरामी सेना को यहूदा की श्रेष्ठ सेना के खिलाफ जीतने और यरूशलेम को लेने की अनुमति दी। यहूदी अगुओं में से कई मारे गए, राजा बुरी तरह से घायल हो गया, और अरामी लोगों ने सब कुछ जो मूल्यवान था ले लिया । उनके जाने के बाद, कई लोग राजा के सोने के कमरें में गए और उसे मार डाला।

योआश 40 साल से राजा था। यहोयादा के पुत्र ने जो किया था, उसके कारण लोगों ने उसे राजाओं की कब्रों में नहीं दफनाया।

145 एलीशा की मौत

2 राजा 13

येहू के मरने के बाद, उसका बेटा इस्राएल का राजा बना। दुर्भाग्य से वह एक अच्छा राजा नहीं था। फिर भी, एक समय था जब उसे परमेश्वर की मदद की सख्त ज़रूरत थी, और प्रभु ने उसकी मदद की।

मरने के बाद, उसका बेटा योआश राजा बना। उसके शासनकाल के दौरान, एलीशा बीमार हो गया और मरने वाला था। राजा नबी के बिस्तर के पास लेट गया और रोने लगा। उसने कहा, "मेरे पिता, मेरे पिता, इस्राएल के रथ और घुड़सवार!"

एलीशा ने उससे कहा, "जाओ अपना धनुष और कुछ तीर ले आओ।"

राजा ने जाकर उन्हें लाया। जब वह वापस आया, तो नबी ने कहा, "धनुष को पकड़ो।" राजा ने धनुष पकड़ा। परमेश्वर के दास ने तब योआश के हाथ के ऊपर हाथ रखा और कहा, "अब, खिड़की खोलो।"

राजा ने खिड़की खोली। एलीशा ने कहा, "खिड़की के बाहर तीर चलाओ ।" योआश ने खिड़की से बाहर तीर चलाया।

एलीशा ने कहा, "यह परमेश्वर की जीत का तीर था। अराम पर तुम्हारी विजय होगी। अब मुट्ठी भर तीर पकड़ और उन्हें जमीन पर मारो।"

योआश ने कुछ तीरों को पकड़कर तीन बार जमीन पर मारा और रुक गया। नबी उस पर चिल्लाया। "तूने केवल तीन बार ही ज़मीन में क्यों मारा? तुमको इसे पांच या छह बार मारना चाहिए था। फिर तूने अराम को पूरी तरह से हरा और उनका अंत कर दिया होता। अब तू केवल तीन बार उन्हें हराएगा ।"

एलीशा की मृत्यु हो गई और उसे एक कब्र में दफन कर दिया गया। अगली वसंत, कुछ इस्राएली अंतिम संस्कार कर रहे थे। अचानक उन्होंने कुछ आदमियों को आते देखा, और महसूस किया कि वे मोआबी हमलावर थे। इस्राएल के लोगों ने एलीशा की कब्र में शव फेंका और भाग गए। जैसे ही वह लाश

एलीशा की हड्डियों को छुई, मृत व्यक्ति जीवित खड़ा हो गया।

146 योना और मछली

योना 1 - 2

यहोवा ने योना नबी से कहा, “अभी नीनवे जा। तू उन्हें बताना कि मैं उनकी दुष्टता के कारण उन्हें दंडित करने जा रहा हूं।"

योना जानता था कि परमेश्वर दयालु हैं और अगर वे पश्चाताप करेंगे तो परमेश्वर नीनवे को माफ कर देगा। वह ऐसा नहीं चाहता था, इसलिए वह परमेश्वर की इच्छा से भागा और यापो नगर को जा कर तर्शीश जाने वाला एक जहाज पाया। उसने एक टिकट खरीदा और तर्शीश जाने वाले जहाज पर चढ़ गया। वह परमेश्वर की इच्छा से बहुत दूर जाना चाहता था, ताकि नीनवे के पश्चाताप की कोई संभावना न रहे।

एक बार जब जहाज समुद्र में गया, परमेश्वर ने समुद्र में एक बड़ा तूफान भेजा। नाविक घबरा गए क्योंकि तूफान उनकी नाव को नष्ट करने और उन्हें डूबाने वाला था। उन्होंने जहाज के भार को हल्का करने के लिए अपने सामान को जहाज से फेंक दिया। जब उससे उनकी मदद नहीं हुई, तो उन्होंने अपने विभिन्न देवताओं से प्रार्थना की। जब यह सब चल रहा था, योना नाव के निचले हिस्से में गहरी नींद सो रहा था।

कप्तान ने उसे जगाया और कहा, “तू कैसे सो सकता है? हम मरने वाले हैं। उठ और अपने देवता से प्रार्थना कर।”

आखिरकार नाविकों को पता चला कि यह तूफान जहाज पर केवल एक व्यक्ति की ओर निर्देशित किया गया था। उन्होंने यह देखने के लिए की वह कौन है चिट्ठियां डाली। परिणामों से पता चला कि योना उनकी परेशानियों का कारण था। उन्होंने कहा, "तू कौन है और तूने क्या किया है?"

उसने कहा, “मैं प्रभु परमेश्वर की सेवा करता हूं, जिसने समुद्र और सूखा मैदान बनाया है। लेकिन मैं उससे दूर भाग रहा हूं।"

अचानक तूफान और बिगड़ गया! योना पर लोग चिल्लाए, "तूफान को शांत करने के लिए हमें बता कि क्या करना चाहिए?"

योना वापस चिल्लाया, "परमेश्वर केवल एक चीज़ चाहता है, और तूफान तब तक नहीं रुकेगा जब तक वह उसे प्राप्त नहीं कर लेता। तुम सब मुझे नाव से फेंक दो।"

पुरुष एक निर्दोष व्यक्ति को मारना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने तूफान से लड़ने और भूमि तक पहुंचने के लिए और भी कड़ी मेहनत की। अंत में उन्हें एहसास हुआ कि वे परमेश्वर से नहीं लड़ सकते। वे प्रभु को पुकारने लगे और उनसे दया के लिए अनुरोध करने लगे। अंत मे उन्होंने फिर उसे नाव से फेंक दिया।

तुरंत, तूफान थम गया! परमेश्वर के सामर्थ को देखकर लोग आश्चर्यचकित थे। वे जहाज़ के फर्श पर गिरे और परमेश्वर की आराधना की और प्रतिज्ञा कि की केवल उसकी सेवा करेंगे।

जब वह पानी में फेंका गया तो परमेश्वर ने योना की परीक्षा करने के लिए एक बड़ी मछली को आज्ञा दी थी। मछली ने तुरंत उसे निगल लिया, और वह तीन दिनों तक मछली के पेट में रहा।

योना ने प्रार्थना की और स्वीकार किया कि यह परमेश्वर था जिसने उसे मछली में डाल दिया। उसने अंत में कहा, "मैं तुम्हें वही दूंगा जो तुम चाहते हो। मैं

तेरी इच्छा के लिए धन्यवाद देता हूं, और जो तूम मुझसे कराना चाहते हो, उसके लिए धन्यवाद।

उसी के साथ, प्रभु ने मछली से बात की। वह भूमि पर गई और योना को किनारे पर उगल दिया।

अगली कहानी में जारी

147 योना और बेल

योना 3 - 4

पिछली कहानी से जारी

एक बार फिर, परमेश्वर ने योना से कहा, "अभी नीनवे में जा। तुझे उन्हें बताना होगा कि मैं उनकी दुष्टता की वजह से उन्हें दंडित करने जा रहा हूं।" इस बार, योना तुरंत उठा और नीनवे चला गया।

नीनवे शहर बहुत बड़ा था। एक तरफ से दूसरी तरफ चलने में तीन दिन लगते थे। इसलिए योना ने पूरे शहर में चलना शुरू कर दिया।

वह चिल्लाया, "परमेश्वर 40 दिनों में इस शहर को नष्ट करने जा रहा है!"

शहर के लोगों ने उसका उपदेश सुना और विश्वास किया कि वो जो कह रहा था वह सच था। उन्होंने एक कानून जारी किया जिसमें कहा गया कि सभी को उपवास करना होगा - कोई भी व्यक्ति उससे छूट नहीं सकता है। सभी को भोजन के बिना रहना था, और उन्हें टाट पहनने थे। उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर से उनके प्रति दया करने को कहा।

राजा अपने सिंहासन से नीचे उतर गया और अपने शाही वस्त्र बिछा दिए। उसने टाट पहनी और राख पर बैठ गया। उसने एक और कानून बनाया, जिसमें कहा गया था, " कोई भी भोजन नहीं करेगा या कुछ भी नहीं पीएगा। जिसमें जानवर भी शामिल थे। सभी को टाट पहननी है, और जो भी बुराई वे कर रहे हैं उसे रोकना है। शायद परमेश्वर अपना मन बदल देंगे और हमें जीवन देंगे।"

प्रभु ने देखा कि वे सब क्या कर रहे थे। वह जानता था कि वे अपनी दुष्टता से दूर हो गए हैं, इसलिए उसने सजा को रोक दिया, जो उन्हें मारने और उनके शहर को नष्ट करने के बारे में थी।

इस बारे में सुनकर योना आगबबूला हो गया।

उसने कहा, "मैंने तुझसे कहा था कि यही होगा! मुझे पता था कि तू एक दयालु परमेश्वर हैं। मुझे पता था कि तू माफ़ करने में जल्दी करता है। यही कारण है कि मैं यहां नहीं आना चाहता था। इसलिए मैं भाग गया। मुझे अभी मार डाल। मैं जीना नहीं चाहता हूँ।"

प्रभु ने कहा, "क्या तुझको लगता है कि इस बारे में इतना गुस्सा होना सही है?"

योना ने जवाब नहीं दिया, लेकिन शहर के पूर्व की ओर चला गया। उसने एक छोटा आश्रय बनाया ताकि वह बैठ सके और यह देख सके कि परमेश्वर शहर के साथ क्या करने जा रहा है।

जब वह वहां बैठा था, परमेश्वर ने उसके बगल में एक बेल उगाई। बेल में बड़ी पत्तियाँ थीं, जो तेज धूप मे छाया प्रदान करती थीं।

योना पौधे से प्रसन्न था, और उसने छाया का आनंद लिया।

अगली सुबह, परमेश्वर ने बेल पर हमला करने और उसे नष्ट करने के लिए एक कीड़ा पैदा किया। जैसे ही सूरज गर्म हुआ, पौधा मुरझा गया। तब परमेश्वर ने एक गर्म पूर्व हवा

योना की ओर भेजी। जैसे-जैसे दिन गुजरता गया, सूरज और हवा और गर्म होतीं गई, और उसकी रक्षा के लिए कोई बेल नहीं थी। योना रोया, "मैं अब और जीना नहीं चाहता। मैं मरना चाहता हूँ!"

परमेश्वर ने उससे कहा, "क्या बेल के बारे में गुस्सा करना सही है?"

"हाँ, मेरा गुस्सा करना सही है। मुझे इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं मरना चाहता हूं।"

प्रभु ने कहा, "तू एक साधारण बेल के बारे में गुस्सा है। तूने इसे नहीं लगाया तूने इसे पानी नहीं दिया। यह एक दिन आई और अगले दिन मर गई।

"क्या मुझे इस शहर के लोगों की भी परवाह नहीं करनी चाहिए? यहां रहने वाले जानवरों के अलावा 120,000 से अधिक बच्चे हैं।"

148 झाड़ी और देवदार

2 राजा 14: 1-22, 2 इतिहास 25

योआश के मरने के बाद, अमस्याह यहूदा का राजा बना। उसने एक अच्छे राजा के रूप में शुरुआत की, और कई वर्षों तक प्रभु का अनुसरण किया।

आखिरकार, उसने एदोम पर हमला करने और अपने नियंत्रण में लाने का फैसला किया। उसने 300,000 सैनिकों की एक सेना का आयोजन किया। इसके बाद उसने इस्राएल से 100,000 सैनिकों को किराए पर रखा और उन्हें चार टन चांदी का भुगतान किया।

परमेश्वर का एक दास एक संदेश लेकर आया था। "इस्राएल के सैनिकों का उपयोग न कर। यदि तू उपयोग करता हैं, तो परमेश्वर सुनिश्चित करेंगे कि तू लड़ाई हार जाए।"

राजा ने कहा, "लेकिन मेरे पहले से ही भुगतान किए गए धन के बारे में क्या होगा?"

नबी ने कहा, "उस पैसे के बारे में चिंता मत कर। परमेश्वर तुझको उससे बहुत अधिक देने में सक्षम है।"

इसलिए राजा ने इस्राएल के सैनिकों को घर जाने के लिए कहा। वे नाराज़ हो गए थे। रास्ते में, उन्होंने यहूदा के कई शहरों में छापे मारे और 3,000 से अधिक लोगों को मार डाला।

जब यह सब चल रहा था, तब यहूदा की सेना ने एदोम की दक्षिण की ओर कूच की। उन्होंने लड़ाई जीत ली और उन पर फिर से नियंत्रण पा लिया।

दुर्भाग्यवश, अमस्याह एदोम के देवताओं को यहूदा में ले आया। उसने उन्हें स्थापित किया और उनकी उपासना करने लगा।

प्रभु क्रोधित हो गए और उन्होंने राजा से बात करने के लिए एक नबी भेजा। "तू उन देवताओं की उपासना क्यों कर रहा है जो सेना से अपने लोगों की रक्षा करने में सक्षम नहीं है?"

इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, अमस्याह ने कहा, "बात करना बंद करो! तूम मेरे सलाहकार नहीं हो। चले जाओ या मैं तुम्हें मारवा दूंगा।"

भविष्यवक्ता ने कहा, "क्योंकि तू परमेश्वर के संदेश को नहीं सुन रहा है, वह तुझे दंड देगा।"

इसलिए यहोवा ने अमस्याह के दिल में डाल दिया कि वह इस्राएल के खिलाफ युद्ध में जाने की इच्छा रखे। राजा ने राजा योआश के पास संदेश भेजा और कहा, "बाहर आ और युद्ध में मेरा सामना कर ।"

योआश ने एक संदेश अमस्याह को वापस भेज दिया। उसने कहा, "एक झाड़ी ने देवदार के पेड़ को संदेश भेजा। उसने कहा, 'मैं अपने बेटे और अपनी बेटी के बीच शादी का इंतजाम करना चाहता हूं।'' अचानक एक जानवर ने गलती से झाड़ी पर पैर रखा और उसे कुचल दिया।''

"झाड़ी की तरह मत बन। एदोम के खिलाफ तेरी जीत अच्छी थी। इसका आनंद ले, लेकिन अपने ऊपर गर्व महसूस मत कर। घर पर रह, क्योंकि अगर तू मेरे पीछे आएगा, तो यहूदा गिर जाएगा।

परमेश्वर ने सुनिश्चित किया कि अमस्याह यह न सुने।

दोनों सेनाएँ युद्ध में चली गईं और यहूदा पूरी तरह से हार गया। उसकी सेना युद्ध के मैदान से भाग गई।

योआश ने अमस्याह को पकड़ लिया और फिर यरूशलेम ले गया। इस्राएल ने यरूशलेम की दीवार को 600 फीट नीचे गिरा दिया। उन्होंने मंदिर से और राजा के महल से सारा सोना और चांदी ले लिया।

योआश ने अमस्याह को यरूशलेम में छोड़ दिया और शोमरोन वापस चला गया। पुरुषों के एक समूह ने अमस्याह को मारने की कोशिश की, लेकिन वह दूसरे शहर भाग गया। उन्होंने उसे खोजा, और उसे वहीं मार डाला।

149 उज्जिय्याह

2 राजाओं 15, 2 इतिहास 26 - 27

जब अमस्याह की मृत्यु हो गई, तो लोगों ने उसके बेटे, उज्जिय्याह को राजा बना दिया। वह 16 वर्ष का था और उसने 52 वर्षों तक राजा के रूप में कार्य किया। परमेश्वर ने उसे बड़ी सफलता दी क्योंकि वह प्रभु का अनुसरण करता था और उसे प्रसन्न करना चाहता था।

उज्जिय्याह ने कई अद्भुत काम किए। उसने यहूदा के दुश्मनों को हराया और एक शक्तिशाली राजा के रूप में दूर-दूर तक जाना जाता था। उसने यरूशलेम को बहाल किया और यहूदा के दूसरे शहरों को मज़बूत किया। वह मिट्टी से प्यार करता था, इसलिए उसने कृषि गतिविधियों में भाग लिया।

उसने अपनी सेना के लिए अच्छी मात्रा में प्रदान किया ताकि हर आदमी युद्ध के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हो। उसने एक बड़े गुलेल जैसे उपकरण का आविष्कार किया, ताकि वह यरूशलेम की दीवारों से बड़े पत्थर फेंक सकें।

एक दिन, राजा उज्जिय्याह अपनी उपलब्धियों और परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण पर गर्व महसूस कर रहा था।

उसने मंदिर में जाने और याजक के बजाय खुद ही वेदी पर धूप जलाने का फैसला किया। महायाजक को अचानक एहसास हुआ कि वह क्या करने वाला है। उसने 80 अन्य याजकों को लिया और मंदिर में गया ताकि वे राजा को ऐसा करने से रोक सकें।

उन्होंने कहा, "उज्जिय्याह, यह गलत है! परमेश्वर ने स्पष्ट किया है कि केवल हारून के वंशज के लोगों को ही परमेश्वर के सामने धूप जलाने की अनुमति है। कृपया, अभी यह छोड़ दे! तू ऐसा करके परमेश्वर का सम्मान नहीं कर रहा है।"

वो अपने हाथ में धूप लेकर वेदी के पास खड़ा था, और उज्जिय्याह क्रोधित हो गया। वह यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि सभी याजक इस बात में उसका

सामना करने के लिए इतने निर्भीक थे। अचानक उसके माथे पर कुष्ठ दिखाई दिया। सभी याजकों ने इसे देखा और उसे मंदिर से बाहर निकाल दिया। वह स्वेच्छा से उनके साथ गया क्योंकि वह जानता था कि प्रभु उसे सजा दे रहा है।

उज्जिय्याह को अपने पूरे जीवन कुष्ठ रोग रहा। उसे अन्य लोगों से दूर रहना पड़ता था, इसलिए वह अलग रहता था। कुष्ठ रोग के कारण, उसे मंदिर में जाने की अनुमति नहीं थी। वह अपने महल में भी नहीं जा सकता था। उसका पुत्र योताम वहाँ रहता था और राजा के स्थान पर लोगों पर शासन करता था।

योताम अपने पिता के मरने के बाद राजा बना। उसने अपने पिता के शुरुआती वर्षों के उदाहरणो का अनुसरण किया। उसने यहूदा राज्य का निर्माण जारी रखा। उसने वही किया जो सही था और वह एक शक्तिशाली राजा बन गया।

150 आहाज

2 राजा 16, 2 इतिहास 28

जब आहाज यहूदा का राजा बना, तब वह 20 वर्ष का था। अपने पिता और दादा के विपरीत, उसने प्रभु का अनुसरण नहीं किया। उसने यरूशलेम में बाल की पूजा शुरू की, और यहां तक कि बाल बलिदान के अनुष्ठान भी करना शुरू किया। अराम यरूशलेम के खिलाफ गया और लोगों को बंदी बना लिया। आहाज ने अश्शूर की राजधानी नीनवे के राजा को सोना और चाँदी भेजी। उसने कहा, "अगर तुम हमें अराम से छुड़ाते हो, तो मैं तुम्हारा वफादार सेवक बनूंगा।"

इसलिए अश्शूर ने अराम पर हमला किया और उनके राष्ट्र को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और अपने अधिकांश लोगों को बन्धुआ बना लिया।

नीनवे के राजा से मिलने के लिए आहाज अराम गया। जब वह वहां था, उसने एक विशेष वेदी देखी जो उसे पसंद आई, और उसके नमूने को यरूशलेम वापस भेजा, ताकि उसके कारीगर इसकी तरह एक वेदी बना सकें।

राजा के यरूशलेम पहुँचने से पहले उसे बना दिया गया था। इसलिए उसने मंदिर के अंदर से कई चीजें लीं और उन्हें अपनी नई वेदी के साथ इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। उसने तब मंदिर के दरवाजे बंद कर दिए ताकि कोई भी आराधना करने के लिए अंदर न जा सके।

यहोवा क्रोधित हो गया और उसने इस्राएल के राजा को यहूदा को हराने की अनुमति दी। उनकी सेना यरूशलेम के खिलाफ गई और आहाज के कुछ पुत्रों सहित 120,000 लोगों को मार डाला। सेना ने यहूदा का धन बड़ी मात्रा में इस्राएल वापस ले आया। उन्होंने 200,000 महिलाओं और बच्चों को भी गुलाम के रूप में इस्तेमाल किया।

शोमरोन में आते ही प्रभु के एक नबी ने सेना से मुलाकात की। उसने कहा, “यहोवा ने इस्राएल को यहूदा पर जीत दिलाई क्योंकि वह उनसे नाराज था।

लेकिन प्रभु तुमसे खुश नहीं हैं क्योंकि तुमने जरूरत से ज्यादा कर दिया है। तुमने उनके लोगों का वध किया और उनकी महिलाओं और बच्चों को दास के रूप में लिया।

"उन्हें अभी यहूदा वापस ले जाओ! यदि तुम उन्हें वापस नहीं ले जाते हो, तो प्रभु तुमको क्रोध में मार देगा, जैसा कि उसने यहूदा के खिलाफ किया था।

इससे इस्राएल के लोग डर गए। उनके अगुओं ने सेना से कहा, "उन लोगों को यहाँ मत ला! हम प्रभु को और ज्यादा नाराज़ नहीं करना चाहते।

इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहूदा की लूट का उपयोग अपने बंदियों के लिए प्रबंधन करने के लिए किया। उन्होंने उन्हें कपड़ों और उनके चिकित्सीय ध्यान की ज़रूरतों के लिए दे दिया। उन्होंने सभी को खाना-पीना दिया।

एक बार जब बंदियों की देखभाल की गई, तो वे उन्हें यरीहो ले गए, और यहां तक कि जो लोग कमजोर थे, उनके लिए गधे भी उपलब्ध कराए। जब बंदी अपने लोगों की देखभाल में सुरक्षित थे, इस्राएली सामरिया को वापस चले गए।

आहाज की मुसीबतें जारी रहीं। उसके आस-पास के सभी देशों ने यरूशलेम पर हमला किया और वे जो चाहते थे, ले लिया। उसने एक बार फिर अश्शूर से मदद मांगी, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

आहाज ने फिर भी यहोवा की ओर रुख नहीं किया। इसके बजाय, उसने और देवताओं को खोजने की कोशिश की जो उसकी मदद करते। अंत में उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र हिजकिय्याह राजा बन गया।

हिजकिय्याह यहूदा के सबसे महान राजाओं में से एक बना।

151 गोमेर

होशे 1 - 3

परमेश्वर ने होशे भविष्यवक्ता से कहा, "जा एक वैश्या को ढूंढ और उससे शादी कर।"

इसलिए, होशे उस जगह जहां वैश्याएं रहती थीं, गोमेर नामक एक वैश्या को चुना। वह उसकी पत्नी होने के लिए सहमत हो गई। लेकिन शादी के बाद भी वह अपने कई प्रेमियों से मिलती रही।

जल्द ही गोमेर इन पुरुषों में से एक से गर्भवती हो गई। उसने एक बेटे को जन्म दिया, और परमेश्वर ने होशे से कहा, "इस बच्चे को अपने बच्चे के रूप में स्वीकार कर।"

इसलिए होशे ने बच्चे को स्वीकार किया और उसका नाम "यिज्रैल" रखा। उसने इस्राएल के लोगों को उपदेश दिया और कहा, "परमेश्वर ने तुम्हें चुना और तुम्हें अपना बनाया। लेकिन तुम बेवफा हो जो दूसरे देवताओं के पीछे भागते हैं। अब वह तुमसे कहता है, यिज्रैल को याद करो और येहू ने वहाँ जो किया था। उसी तरह मैं तुम्हारा न्याय करूंगा और तुम यिज्रैल की घाटी में एक समाप्त राष्ट्र हो जाओगे।''

गोमेर अपने किसी प्रेमी से दूसरी बार गर्भवती हो गई। इस बार, एक लड़की पैदा हुई। होशे को उसे स्वीकार करने के लिए कहा गया था, इसलिए उसने उसे नाम दिया, "कोई दया नहीं।"

जब उसका दूध छुड़ाया गया, तो गोमेर अपने प्रेमियों के पास चली गई। उसने एक और बेटे को जन्म दिया। परमेश्वर ने कहा, "इस बच्चे को अपने घर में स्वीकार कर, लेकिन उसे "मेरा नहीं" कहना।"

होशे ने इस्राएल के लोगों को उपदेश दिया, "तुम परमेश्वर से बहुत दूर चले गए हो। तुम नहीं जानते कि किसके हो और परमेश्वर कहता है, तुम मेरे नहीं हों।'

"लेकिन वह दिन आएगा जब यह बदल जाएगा! परमेश्वर गर्व से कहेगा, 'तुम मेरे लोग हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं।'

"यिज्रैल अपने भाई से कहेगा, अब तेरा एक नया नाम है। मेरा नहीं की जगह, तुम मेरे लोग।'' वह

अपनी बहन से कहेगा, 'कोई दया नहीं के जगह अब तेरा नाम भरपूर दया है।''

होशे और उसके बच्चों के साथ रहने के कारण गोमेर ऊब गई। वह अपने एक प्रेमी के साथ भाग गई। तब उसे पता चला कि वह एक दास व्यापारी था, और उसने उसे गुलाम बना दिया।

वह अपने पति के साथ वापस जाने के लिए तरस गई। "ओह, मैं फिर से घर जाने की इच्छा रखती हूँ! होशे ने मुझे बहुत कुछ दिया, लेकिन मैंने उसकी ओर से अपना मुंह फेर लिया।" वह जानती थी कि उसने जो खोया था उसे फिर से हासिल करना असंभव था।

परमेश्वर ने होशे से कहा, "दासों के बाज़ार जा, और अपनी पत्नी को दासों के बीच से खरीद ला।"

नबी अपने पैसे लेकर दासों के बाज़ार गया। उसने सभी दासियों को सभी के सामने नग्न खड़े देखा। इनमें गोमेर भी थी।

होशे गया और मूल्य दे दिया।

फिर उसने अपना कपड़ा उतार दिया और उससे अपनी पत्नी को ढंक लिया। साथ में वे अपने घर वापस चले गए।

उसने कहा, “मैंने तुम्हें चुना और तुमसे शादी की। अब मैंने तुम्हें खरीद लिया है। तुम फिर कभी मुझे छोड़कर अपने प्रेमियों के पास नहीं जाओगी।” होशे ने उससे प्यार किया और उसकी देखभाल की।

उसने इस्राएल से कहा, “तुमने अपने इस्राएल के परमेश्वर को छोड़ दिया है और खुद को मूर्तियों को बेच दिया है। उन्होंने तुम्हारे साथ कठोर और दुर्व्यवहार किया है, तुझको नग्न और अकेला छोड़ दिया है। लेकिन वह दिन आएगा जब परमेश्वर तुमको वापस खरीद लेगा और तुझको भरपूर दया दिखाएगा, और कहेगा, "तुम मेरे अपने हो।"

152 इस्राएल का देश से निकल जाना

2 राजा 17

इस्राएल कई सालों तक यहूदा से अलग राज्य रहा था। उनके पहले राजा ने आराधना के लिए दो सुनहरे बछड़े स्थापित किए। उनके किसी भी राजा ने बछड़ों को नष्ट नहीं किया, और उनमें से किसी ने भी प्रभु का अनुसरण नहीं किया।

कुछ सबसे बड़े भविष्यद्वक्ताओं को इस्राएल भेजा गया था। फिर भी, लोगों ने परमेश्वर की ओर मुड़ने से इनकार कर दिया।

इसलिए, कई चेतावनियों के बाद, परमेश्वर ने आखिरकार अन्य राष्ट्रों को उन पर जीतने दिया। उन्हें देश से हटा दिया गया और दूसरे शहरों में रहने के लिए मजबूर किया गया।

इसकी शुरुआत अश्शूर के राजा के इस्राएल राज्य पर हमला करने और उस पर नियंत्रण करने से की थी। लोगों को भारी कर देना पड़ता था। अचानक मिस्र के राजा ने कहा कि वह इस्राएल को अश्शूर से अपने बंधन से मुक्त होने में मदद करेगा। लोगों ने इस पर विश्वास किया और करों का भुगतान बंद कर दिया।

अश्शूर की सेनाओं ने इस्राएल पर आक्रमण किया, उनके राजा को बंदी बनाया और उसे जेल में डाल दिया। फिर उन्होंने सामरिया को घेर लिया और किसी को भी अंदर या बाहर जाने से रोक दिया। यह तीन साल तक चला, जब तक कि सामरिया ने आत्मसमर्पण नहीं कर दिया।

अश्शूरी क्रूर थे। उन्होंने अन्य राष्ट्रों को अपने अधिकार के खिलाफ विद्रोह नहीं करने की चेतावनी के रूप में इस्राएल के लोगों का इस्तेमाल किया। जो बचे थे उन्हें देश से निकाल दिया गया।

अन्य लोगों को इस्राएल की भूमि पर रहने के लिए लाया गया था। वे शहरों में बस गए और अपने नए राष्ट्र को सामरिया बुलाया।

नए लोग प्रभु के बारे में कुछ नहीं जानते थे, इसलिए वे अपने साथ लाई गई मूर्तियों की आराधना करते रहे। परमेश्वर ने एक शेर भेजा, और कई लोग मारे गए।

अश्शूर के राजा के एक सलाहकार ने कहा, "सामरी लोग देश के परमेश्वर को नहीं जानते। उसने शेरों को मारने के लिए भेजा क्योंकि वे नहीं जानते कि उसकी सही तरीके से आराधना कैसे की जाए।"

राजा ने कहा, "इस्राएल के लोगों में से कुछ याजकों का चयन करो और उन्हें सामरिया में वापस भेजो। उन्हें लोगों को देश के परमेश्वर की आराधना करने का तरीका सिखाओ।"

कुछ पुजारियों का चयन किया गया और उन्हें वहां भेज दिया गया।

उन्होंने सामरी लोगों को प्रभु के और उसकी आराधना करने के तरीके के बारे मे सिखाया। लोगों ने परमेश्वर की आराधना शुरू कर दी, लेकिन उन्होंने अपनी पुरानी मूर्तियों को भी रखा। उन्होंने दोनों को आपस में मिलाया। यह आने वाले कई वर्षों तक जारी रहा।

153 हिजकिय्याह

2 राजा 18: 1-12, 2 इतिहास 29 - 31

जब वह 25 साल का था, तब हिजकिय्याह राजा बना। उसने दाऊद के बाद से किसी भी राजा से अधिक प्रभु का पालन किया।

उसने जो पहली चीज की, वह थी, अपने पिता द्वारा बंद कराए मंदिर को खुलवाना। उसने याजकों से कहा, "हम सभी जानते हैं कि परमेश्वर हमारे पाप के कारण हमारे विरुद्ध हो गया है। हम इस्राएल राज्य की तरह हैं और लगभग आशा से परे हैं। लेकिन मैं परमेश्वर के साथ एक समझौता कर रहा हूं, इसलिए शायद वह अपना गुस्सा हमसे दूर करें। मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है क्योंकि आप परमेश्वर द्वारा उनकी उपस्थिति में खड़े होने और उनकी सेवा करने के लिए चुने गए हैं।"

याजक और लेवी अपने राजा के पास इकट्ठे हुए। पहली चीज़ जो उन्होंने की वह खुद को प्रभु के सामने शुद्ध करना था। वे फिर मंदिर में गए और उसे साफ करना शुरू किया। जो चीज़ें अपवित्र थीं, उन्हें हटाकर बाकी सब कुछ साफ कर दिया।

उसके बाद, राजा हिजकिय्याह और शहर के अधिकारियों ने जाकर यहोवा को बलिदान दिया। उन्होंने इसलिए तैयारी की ताकि यरूशलेम के सभी लोग आ सकें और प्रभु की अराधना कर सकें। याजकों और लेवियों को जगह दी गई थी। संगीत बजाने वाले लेवियों ने अपने बाजे तैयार किए। भजन गाने वालों का समूह दाऊद के गीत गाने के लिए तैयार हुआ।

लोग आए और परमेश्वर के सामने बलिदान चढ़ाया। उन्होंने प्रभु के लिए गाया और तुरही फूंकी गई। सभी ने आनन्दित होकर, दंडवत किया और आराधना की। इतने बलिदान लाए गए, कि याजक यह सब अपने आप नहीं कर सकें। काम पूरा होने तक लेवियों को उनकी मदद करनी पड़ी।

जब फसह का समय था, तो हिजकिय्याह ने पूरे यहूदा और इस्राएल में एक संदेश भेजा। उसने सभी को यरूशलेम में एक साथ फसह मनाने के लिए आमंत्रित किया।

दूत पूरे क्षेत्र में हर शहर में गए। परमेश्वर ने यहूदा के लोगों के दिलों को बदल दिया, और वे अपने राजा के साथ फसह मनाने आए।

इस्राएल के अधिकांश लोग दूसरे देशों में ले जाए गए थे, लेकिन देश में अभी भी कुछ बाकी थे। जब हिजकिय्याह ने उन्हें वापस आने और यरूशलेम में परमेश्वर की आराधना करने के लिए आमंत्रित किया तो वे चकित रह गए। कुछ लोग दूतों पर हँसे, लेकिन दूसरों ने खुद को विनम्र किया और यरूशलेम की यात्रा की।

बहुत बड़ी भीड़ एक साथ मिली।

सबसे पहले राजा ने उनसे पूरे शहर में घूमने और सभी बुतपरस्त वेदियों को फाड़ने को कहा। उसने उनसे पीतल साँप को भी नष्ट करवा दिया था जो मूसा ने बनवाया था, क्योंकि लोग उसके सामने धूप जला रहे थे।

तब उन्होंने फसह के मेमनों को प्रभु के सामने अर्पित किया। इस्राएल के कई लोग परमेश्वर के सामने शुद्ध नहीं थे। दुर्भाग्य से, उस प्रक्रिया से गुजरने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। राजा हिजकिय्याह ने प्रार्थना की और प्रभु से उन्हें छूट देने के लिए कहा क्योंकि वे प्रभु की तलाश में आ रहे थे। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और लोगों को शुद्ध किया ताकि वे फसह का भोजन कर सकें।

यह उत्सव सात दिनों तक चला। तब पूरी भीड़ ने इसे अगले सात दिनों तक बढ़ाने का फैसला किया। सभी ने मिलकर खुशी मनाई, चाहे वे यहूदा के हों या इस्राएल के। यहाँ तक कि सामरी लोग भी उनके साथ आनन्दित थे। इस तरह का त्योहार दाऊद और सुलैमान के दिनों से यरूशलेम में नहीं देखा गया था।

यह सब खत्म होने के बाद, लोग घर चले गए।

पहला काम जो उन्होंने किया वह था झूठे देवताओं और मूर्ति पूजा की सभी वेदियों को हटाना था। उन्होंने मंदिर में अपने दशमांश और दान भेजना शुरू कर दिया, ताकि याजक और लेवी परमेश्वर के नियमों के लिए अपनी पूर्णकालिक सेवा जारी रख सकें।

यहूदा के सारे इतिहास में, हिजकिय्याह जैसा कोई राजा नहीं था। उसने 29 वर्षों तक शासन किया।

154 अश्शूर का राजा

2 राजा 18:13 - 19:37; 2 इतिहास 32: 1-23

जब हिजकिय्याह राजा था, तब अश्शूर की सेना ने यहूदा पर आक्रमण किया। उन्होंने कुछ साल पहले ही इस्राएल को जीत लिया था।

जब वे यरुशलम पहुंचे, तो अश्शूरी सेना के सेनापति ने शहर की दीवारों के बाहर यहूदी अधिकारियों के साथ बैठक की। उसने कहा, "अश्शूर के महान राजा सन्हेरीब हिजकिय्याह को यह संदेश भेजता है: तू हमारी महान सेना का विरोध क्यों कर रहा है? क्या तुझको लगता है कि अन्य राष्ट्र आकर तेरी मदद करेंगे? बात सुन, वे नहीं आएंगे! वे हमसे डरते हैं।

"ओह, क्या तू अपने परमेश्वर पर भरोसा कर रहा है? क्यों? तेरे परमेश्वर ने तुम्हें नष्ट करने के लिए हमें यहां भेजा है!"

जब सेनापति बात कर रहा था, यरूशलेम के लोग शहर की दीवारों पर थे - वे सब कुछ सुन रहे थे जो वह कह रहा था। वह ईब्री में बात कर रहा था और जोर से बोल रहा था ताकि वे सुन सकें। यहूदी अधिकारियों ने कहा, "कृपया, अपनी भाषा में बोलें। हम इसे समझते हैं।"

सेनापति हँसा और जोर से चिल्लाया, "नहीं! यह संदेश केवल तुम्हारे राजा के लिए नहीं है। यह आम लोगों के लिए भी है। जब हम तुम्हें कुचलेंगे, तो वे पीड़ित होंगे।

उसने दीवार पर पुरुषों को इशारा किया। "मेरी बात सुनो! अपने राजा पर विश्वास मत करो। अपने परमेश्वर पर भरोसा मत करो! अश्शूर के महान राजा सन्हेरीब पर भरोसा रखो!

अपना अच्छे से ख्याल रखना। हमने कई देशों के खिलाफ जीत हासिल की, और उनके देवता उनकी रक्षा करने में सक्षम नहीं थे। तुम्हारा परमेश्वर अश्शूर के महान राजा को रोक नहीं सकता है!"

जब राजा हिजकिय्याह ने यह सुना, तो उसने अपने कपड़े फाड़ दिए और प्रार्थना करने के लिए मंदिर में चला गया। उसने भविष्यवक्ता यशायाह के

पास संदेश भेजा कि वह परमेश्वर के लोगों के लिए प्रार्थना करे।

यशायाह ने हिजकिय्याह को संदेश भेजा। “मैंने इस आदमी को सुना है। उससे डरो मत। मैं उसके कान में धीरे से बोलूंगा, और वह अपने देश वापस चला जाएगा। जब वह वहां पहुंचेगा तो कोई उसे मार डालेगा।''

अचानक, सेनापति ने अश्शूर में मुसीबत के बारे में सुना। वह जानता था कि उसके राजा को उसकी ज़रूरत है। पूरी सेना चली गई।

कुछ समय बाद, सन्हेरीब ने अपनी सेना को एक बार फिर यरूशलेम की ओर भेजा। रास्ते में, उसने हिजकिय्याह को एक संदेश भेजा। "क्या तेरे परमेश्वर ने तुझको बताया है कि तू मुझसे सुरक्षित हैं? उस पर विश्वास मत कर! मैंने कई अन्य राष्ट्रों के देवताओं पर विजय प्राप्त की, और उन्हें आग में जला दिया है। वे अपने राष्ट्रों की रक्षा नहीं कर सकते थे। तुझको क्या लगता है कि तेरा परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा?”

हिजकिय्याह पत्र को मंदिर ले गया। उसने इसे परमेश्वर के सामने फैलाया और प्रार्थना की। यशायाह ने हिजकिय्याह को एक संदेश भेजा, लेकिन यह उसके लिए संबोधित नहीं किया गया था। यह सन्हेरीब के लिए परमेश्वर का जवाब था।

उसने कहा, “तुझको क्या लगता है कि तू कौन हैं? मैंने यरूशलेम को तुझ पर थूकने के लिए कहा है। तुझको क्या लगता है कि तू किसका मज़ाक उड़ा रहा है? मैं वह हूं जो तुझको सत्ता में रखता है ताकि तू अन्य राष्ट्रों का न्याय कर सकें। अब क्या तू इतना घमंडी हो गया है कि तू मुझ पर चिल्लाए?अब मैं तेरे साथ ऐसा करने जा रहा हूँ की मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डाल कर और तेरे मुंह में अपना लगाम लगाऊंगा। फिर मैं तुझको उस खलिहान में वापस ले जाऊंगा जहाँ से तू आया था!

“हिजकिय्याह, सन्हेरीब की चिंता मत कर। एक भी तीर यरूशलेम की दीवारों से नहीं टकराएगा। इससे पहले कि उसकी सेना यहां पहुंचे, वे चारों ओर घूमेंगे और

अपने देश वापस चले जाएंगे। मैं तुम्हारी रक्षा कर रहा हूँ! मैं इस लड़ाई को लड़ूंगा और शहर को बचाऊंगा।”

उस शाम अश्शूर की सेना ने शिविर लगाया।

सूरज ढल गया और पुरुष आग के चारों ओर तब तक बैठे रहे जब तक कि सोने का समय नहीं हो गया। जब अगली सुबह सूरज उगा, तो जहां वे सोए थे, 185,000 सैनिक मर चुके थे। अश्शूर के राजा के पास मरे हुए लोगों की एक सेना थी!

वह जल्दी से नीनवे को घर लौटा और अपनी मूर्ति के सामने घुटने टेक दिए। उसके दो बेटों ने आकर उसे मार डाला। अश्शूर का महान राजा सन्हेरीब मर चुका था, और यरूशलेम में शांति थी।

155 पंद्रह साल

2 राजाओं 20, 2 इतिहास 32: 24-33

राजा हिजकिय्याह बहुत बीमार हो गया। यशायाह नबी उसके पास गया और कहा, “परमेश्वर ने मुझे बताया था कि यह बीमारी तुम्हें मार डालेगी। इसलिए मरने की तैयारी करो।”

फिर वह मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया।

हिजकिय्याह ने परमेश्वर को पुकारा। "हे परमेश्वर! मैं आपके साथ चलता हूं और आपकी आज्ञाओं के अनुसार रहता हूं। कृपया मेरी जान बख्श दें।” उसने अपना मुह दीवार की तरफ किया और फूट फूट कर रोया।

एक बार फिर, परमेश्वर ने यशायाह से बात की। "राजा हिजकिय्याह से कह कि मैं उसकी प्रार्थना सुनूँगा और उसके आँसू देखूँगा। इसलिए मैं उसके जीवन में पंद्रह साल जोड़ दूंगा। मैं उसे एक संकेत भी दूंगा ताकि वह जान सके कि यह वचन सत्य है। मैं धूपघड़ी की छाया दस अंश पीछे करूँगा।

हिजकिय्याह ने धूपघड़ी की छाया देखी और उसे दस अंश पीछे ले जाते देखा।

तुरंत उसकी बीमारी ने उसे छोड़ दिया और वह पूरी तरह से ठीक हो गया। वह प्रभु के सामने गाया और धन्यवाद दिया।

अपनी बीमारी से उभरने के बाद, बाबुल से एक समूह उपहार के साथ आया। उन्होंने उसे अपने राजा से एक पत्र देते हुए कहा कि वह हिजकिय्याह के बीमारी से उभरने के बारे में खुश था।

हिजकिय्याह इससे प्रसन्न था, और समूह को अपने महल और सरकारी भवनों के दौरे के साथ सम्मानित किया। वह उन्हें खजाने के घर में ले गया और उन्हें देश के सभी खज़ानें दिखाए - जिसमें सोना, चांदी, मसाले और कीमती तेल शामिल थे।

बाबुल के लोगों के जाने के बाद, भविष्यवक्ता यशायाह ने पूछा, "वे कौन लोग थे और उन्होंने तुमसे क्या कहा?"

राजा ने कहा, "वे एक दूर देश से जो बाबुल नाम का है, वह वहाँ से आए है।"

यशायाह ने पुछा, "तूने उन्हें क्या दिखाया?"

उसने कहा, "मैंने उन्हें सब कुछ दिखाया। मैंने उनसे कुछ भी मूल्य नहीं छिपाया।

भविष्यवक्ता ने कहा, "प्रभु का वचन सुन। एक दिन आएगा जब बाबुल यहूदा पर आक्रमण करेगा और वह सब कुछ ले जाएगा जो उन्होंने तुम्हारे देश में देखा था। तेरे वंशज बाबुल के राजा के व्यक्तिगत दास बन जाएंगे। ''

हिजकिय्याह ने अपना सिर झुका लिया, और अंत में कहा, "प्रभु का यह संदेश अच्छा है। मेरे जीवनकाल में ऐसा कुछ नहीं होगा। जब मैं जीवित रहूंगा, तो शांति और सुरक्षा होगी।"

156 दुष्ट राजा का पश्चाताप

2 राजा 21, 2 इतिहास 33

हिजकिय्याह दाऊद के सभी वंशजों में से एक सबसे अच्छा राजा था। हालाँकि, उसका बेटा मनश्शे उन सभी में से सबसे दुष्ट था।

जब वह 12 साल का था, तब वह राजा बना और उसने 55 साल तक शासन किया।

उसने इस्राएलियों के वहाँ पहुँचने से पहले कनान के राजाओं से भी बदतर काम किया। उसके पिता ने झूठे देवताओं की सभी वेदियों को नष्ट कर दिया था, लेकिन मनश्शे ने उन्हें फिर से बनवाया। उसने मंदिर के अंदर ही कई मंदिर बनवाए। उसने पूरे देश को जादू टोने के लिए प्रेरित किया, और यहां तक कि झूठे देवताओं के लिए अपने स्वयं के बेटों का बलिदान किया।

परमेश्वर ने मनश्शे और यहूदा देश से बात की, लेकिन उन्होंने नहीं सुनी। अंत में, प्रभु ने राजा को पकड़ने के लिए अश्शूर से सेनापति को अनुमति दी। उन्होंने उसकी नाक में नकेल डाल दी और उसे पीतल की जंजीरों में बांधकर ले गए। उसे बाबुल की एक जेल में रखा गया था।

यह मनश्शे के जीवन का सबसे काला समय था।

इसलिए उसने खुद को दीन बना लिया और परमेश्वर को पुकारा। प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनी और उस पर अनुग्रह किया।

वह समय आया जब परमेश्वर ने उसे वापस यरूशलेम जाने और एक बार फिर राजा बनने की अनुमति दी। एक बार जब वह वहाँ गया, मनश्शे जानता था कि यहोवा ने उसके लिए यह किया है, और वह इसके लिए आभारी था।

उसने मंदिर से सभी मूर्तियों और वेदियों को हटा दिया। उसने यहोवा की वेदी को फिर से बनाया और उसका उपयोग प्रभु को धन्यवाद देने के लिए किया। उसने यरूशलेम की दीवारों का निर्माण किया और शहर को अधिक सुरक्षित बनाया। उसके नेतृत्व में, सेना मज़बूत हो गई।

जब मनश्शे की मृत्यु हुई, तो उसका पुत्र आमोन राजा बना। उसने केवल दो वर्षों तक शासन किया,

लेकिन वह उतना ही दुष्ट था जितना कि उसका पिता अपने शुरुआती वर्षों में था।

अपने पिता के विपरीत, उसने प्रभु की ओर रुख नहीं किया।

उसके नौकरों ने उसके खिलाफ साजिश रची और आखिरकार उसे मार डाला। यहूदा में लोगों की भीड़ ने उन लोगों को खोजा और उन्हें मार डाला।

फिर उन्होंने आमोन के पुत्र को लिया और उसे राजा बनाया। उसका नाम योशिय्याह था, और वह केवल 8 साल का था। फिर भी, योशिय्याह यहूदा का एक महान राजा बना।

157 एक पुस्तक का मिलना

2 राजा 22, 2 इतिहास 34: 1-32

योशिय्याह आठ साल का था जब वह यहूदा का राजा बना। वह उस दिन से प्रभु के साथ चला जिस दिन वह राजा बना था और 31 साल बाद उस दिन तक वह मर गया , वह उस समय तक उसके साथ चलता रहा। यहूदा के लोगों के कैद में जाने से पहले वह अंतिम महान राजा था।

जब वह 26 साल का था, उसने मंदिर को बहाल करने के लिए पुरुषों को काम पर रखा था। उस उद्देश्य के लिए उन्हे पैसा दिया गया था, इसलिए उन्होंने इसे काम करने वालों को दिया और कहा, "तुम सच्चे पुरुष साबित हुए हो। इसलिए तुमको इस पैसे का हिसाब नहीं रखना होगा।"

एक दिन, महायाजक को मूसा द्वारा लिखी गई व्यवस्था की पुस्तक मिली। उसने इसे राजा के पास भेजा, जिसने इसे जोर से पढ़वाया। जब योशिय्याह ने किताब में लिखा हुआ सुना, तो उसने अपने कपड़े फाड़ दिए और कहा, "निश्चित रूप से परमेश्वर का गुस्सा हमारे खिलाफ है! हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर के साथ एक वादा किया और फिर इसे बार-बार तोड़ दिया। हमारे बारे में उसका फैसला बहुत करीब होगा। जाओ और किसी ऐसे व्यक्ति को खोजो जो इस बारे में प्रभु से पूछ सके।"

याजक शहर के एक निश्चित हिस्से में एक महिला भविष्यवक्ता हुल्दा के घर गया। उन्होंने उससे पूछा कि इस किताब में क्या लिखा है।

उसने कहा, "मेरे पास परमेश्वर का एक संदेश है, उसके लिए जिसने तुम्हें यहां भेजा था। परमेश्वर कहता है, "इस देश के लोग मेरे खिलाफ हो गए हैं। वे मूर्तियों और झूठे देवताओं की सेवा करते हैं। मैं उस न्याय को पूरा करने वाला हूं जो तुमको मिली किताब में लिखा गया है। विपत्ति जल्द ही इस जगह और यहां रहने वाले सभी लोगों पर आ जाएगी। जो भी फैसला आ रहा है, उसे दूर नहीं कर सकते।"

तब हुल्दा ने फिर कहा, "मेरे पास यहूदा के राजा के लिए एक और संदेश है। प्रभु कहते हैं, जब तुमने इस पुस्तक के शब्दों को सुना, तेरा दिल दुखी हुआ और तूने अपने कपड़े फाड़ दिए और रोया। तुमने मुझे विनम्रता से खोजा है, और मैंने तुमको सुना है।

इसलिए, तुम उस विपत्ति को नहीं देखोगे जो मैं इस जगह पर लाने जा रहा हूं। मैं तब तक इंतजार करूंगा जब तक तू मर नहीं जाता और तुझे दफना नहीं दिया जाता है।" याजक ने यह संदेश योशिय्याह को वापस लाया।

जब उसने यह संदेश सुना, तो उसने यरूशलेम और यहूदा के सभी प्राचीनों को इकट्ठा किया। वे गए और बाकी लोगों को मिलें। सभी लोग मंदिर गए, जहाँ उन्होंने राजा को मूसा की विधि पढ़ते सुना। उन्होंने उन वादों के बारे में सुना जो उनके राष्ट्र ने परमेश्वर के साथ किए थे।

एक बार व्यवस्था पढ़ने के बाद, योशिय्याह राजा अपनी जगह पर खड़ा हो गया। सबके सामने, उसने यहोवा के लिए उस व्यवस्था को वचनबद्ध किया। उसने शपथ खाई कि वह अपनी सारी ऊर्जा और शक्ति के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेगा। सभी लोग ऐसा ही करने को तैयार हो गए।

158 योशिय्याह के सुधार

2 राजा 23, 2 इतिहास 34:32 - 35:27

राजा योशिय्याह और यहूदा के राष्ट्र ने परमेश्वर के नियमों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नया किया। राजा ने सभी झूठी वेदियों को मंदिर से बाहर निकाला और उन्हें जला दिया। लोगों ने पूरे यरुशलेम में जाकर उन सभी मूर्तियों को नष्ट कर दिया जो शहर में थीं।

एक बार ऐसा हो जाने के बाद, राजा व्यक्तिगत रूप से यहूदा देश में गया और सभी शहरों में मूर्ति पूजा को नष्ट कर दिया।

इसके बाद, वह पूरे इस्राएल में गया और वहाँ लगी सभी मूर्तियों और वेदियों को नष्ट कर दिया। जब उन्हें एक प्रमुख मूर्ति पूजा की जगह मिली, तो उन्होंने वेदी को उखाड़ दिया ताकि लोग फिर कभी इसका इस्तेमाल न करें।

वह उस वेदी के पास गया, जिसे यारोबाम ने बेतेल में बनाई था। योशिय्याह ने उसके आस-पास की हर चीज़ को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। उसने पास में कुछ कब्रें देखीं, इसलिए उसने कुछ लोगों की हड्डियां लेने के लिए लोगों को भेजा। उसने उन्हें अपवित्र करने के लिए वेदी के ऊपर जला दिया।

तब योशिय्याह ने पास में एक स्मारक देखा। उसने कहा, "वह क्या है?"

वहां के लोगों ने कहा, "जो नबी यहूदा से आया था, यह उसकी कब्र है। यहोवा ने उसे यारोबाम के खिलाफ बोलने के लिए यहाँ भेजा, जब यारोबाम ने इस वेदी को अपने सुनहरे बछड़ों को समर्पित किया था। उसने भविष्यवाणी की और लोगों को बताया कि तू इस वेदी का क्या करेगा। आज तूने उसकी भविष्यवाणी पूरी कर दी। यह सामरिया के एक बूढ़े नबी की कब्र भी है।"

योशिय्याह ने कहा, "इन हड्डियों को मत छुओ।" वह फिर यरूशलेम लौट आया।

राजा ने सबसे शानदार फसह पर्व का आयोजन किया। उसने और यहूदा के प्रमुख लोगों ने उदारता से काम किया ताकि हर कोई बलिदान दे सके।

यहूदा के पूरे इतिहास में, योशिय्याह जैसा कोई राजा कभी नहीं हुआ था, जो अपने पूरे मन, दिल और शक्ति के साथ प्रभु से प्यार करता था और उसकी सेवा करता था। उसने पूरी तरह से प्रभु के तरीकों का पालन किया था।

फिर भी, प्रभु ने यरूशलेम को नष्ट करने की योजना बनाई। वह यहूदा के लोगों को देश से भेजने जा रहा था, जैसे उसने इस्राएल के साथ किया था। लेकिन जब तक योशिय्याह की मृत्यु नहीं हुई, तब तक उसने ऐसा नहीं होने दिया।

जब राजा 39 वर्ष का था, तब मिस्र के फिरौन ने अश्शूर की मदद करने के लिए यहूदा के रास्ते अपनी सेना का नेतृत्व किया। योशिय्याह ने उन्हें रोकने के लिए अपनी सेना निकाली। फिरौन ने कहा, "मेरी लड़ाई तुम्हारे खिलाफ नहीं है। मैं किसी और के खिलाफ लड़ने जा रहा हूं। तुम बीच में नहीं आओगे, वरना परमेश्वर तुमको नष्ट करने के लिए मेरा इस्तेमाल करेगा।"

योशिय्याह ने यह सलाह नहीं सुनी। वह युद्ध में चला गया, लेकिन खुद का भेष बदल दिया ताकि दुश्मन को पता न चले कि वह राजा था। अचानक एक तीर उसे लग गया, और वह अपने रथ में बैठ गया। उसके सेवक उसे वापस यरूशलेम ले गए, और वहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

यहूदा के सभी लोगों ने योशिय्याह की मृत्यु पर शोक मनाया। भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने एक गीत लिखा जो उसके अंतिम संस्कार में गाया गया ।

159 टूटे हुए बर्तन

यिर्मयाह 1 और 18 - 20; 2 राजा 23: 28-37; 2 इतिहास 36

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

राजा योशिय्याह के समय में, भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को परमेश्वर ने यहूदा के लोगों को उपदेश देने के लिए बुलाया । यहोवा ने कहा, "तू उन्हें बताना कि वे दुष्ट हैं, और बाबुल आकर उन्हें ले जाएगा। इस आक्रमण का विरोध करना बेकार होगा क्योंकि मैं ऐसा करवा रहा हूं।"

यिर्मयाह ने कहा, "परमेश्वर, मैं यह काम नहीं चाहता। मैं बहुत छोटा हूं, और मैं लोगों के सामने नहीं बोल सकता हूं।

प्रभु ने कहा, "तेरे जन्म से पहले ही मैंने तुझे इस काम के लिए चुना था। मैं तुझको बताऊंगा कि क्या कहना है। फिर भी, लोग नहीं सुनेंगे, और वे तुझको मारने की कोशिश करेंगे। लेकिन चिंता मत करना। मैं तेरे साथ रहूंगा और तेरी रक्षा करूंगा।"

सालों तक, राजा योशिय्याह के समय, यहोवा ने यिर्मयाह को उन सभी बातों के बारे में बताया, जिनके कारण यहूदा को दंडित किया जाएगा और देश से निकला जाएगा। यिर्मयाह के दिल में राष्ट्र के लिए बोझ था, इसलिए वह रोया और उनके लिए प्रार्थना की। परमेश्वर ने कहा, " रुक जा! ये लोग विपत्ति की ओर बढ़ रहे हैं और इसके बारे में तू कुछ नहीं कर सकता है। अगर शमूएल और मूसा भी मेरे सामने खड़े होते और उनके लिए गुहार लगाते, तो भी मैं नहीं सुनता! यह स्थिति धार्मिक कामों और प्रार्थनाओं से परे है।"

यहोवा ने यिर्मयाह को कुम्हार के घर भेजा। वहां उसने कुम्हार को चाक पर मिट्टी के घड़े बनाते देखा। अचानक उसका बर्तन खराब हो गया। तो उसने मिट्टी को कुचल दिया और फिर से बनाना शुरू कर दिया।

प्रभु ने कहा, "हे इस्राएल, ऐसे ही मैं तुम्हारे साथ कर रहा हूँ। तुम मेरे हाथों में मिट्टी की तरह हो और मैं तुम्हें कुचल दूंगा, ताकि मैं तुम्हें वह बना सकूं जिसमें मेरी आशीष और आनंद होगा।"

यहोवा ने यिर्मयाह से कहा कि वह एक मिट्टी का बर्तन खरीदे और यहूदा के शासकों के पास जाए।

नबी ने बर्तन खरीदा और लोगों के अगुओं के सामने खड़ा हो गया। उसने इसे उठाया और कहा, "लोगों ने परमेश्वर को त्याग दिया है और इसके बजाय वे मूर्तियों की पूजा करते हैं। इसलिए, सुनो कि परमेश्वर तुमसे क्या कह रहा है!"

उसने बर्तन को नीचे फेंक दिया और वह टुकड़ों में बिखर गया! उसने कहा, "यरूशलेम इस मिट्टी के बर्तन की तरह होगा। मैं शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दूंगा। तेरे शत्रु लोगों का वध करेंगे। यह शहर मिट्टी के घड़े की तरह ही खंडहर हो जाएगा।"

याजकों में से एक को गुस्सा आया और उसने यिर्मयाह को पीटा और पेटी में डाल दिया। अगले दिन याजक उसे निकालने गए। यिर्मयाह ने उससे कहा, "प्रभु ने तुम्हारा नाम बदल दिया है। तुम्हारा नाम अब 'आतंक' है। आतंक में, तुम अपने दोस्तों को सड़कों पर मरते हुए देखोगे। आतंक में, तुम शहर को नष्ट होते हुए देखोगे। तुमको बाबुल ले जाया जाएगा जहाँ तुम मरोगे; और तुमको दफनाया जाएगा। "

मिस्र की सेना से लड़ते समय राजा योशिय्याह मारा गया था। यहूदा के लोगों ने उसके बेटे को राजा बनाया। तीन महीने बाद, मिस्र के फिरौन ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया और नए राजा को मिस्र ले गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। तब फिरौन ने योशिय्याह के एक और पुत्र को यहूदा का राजा बनाया। उसका नाम यहोयाकीम था।

160 किताब को जलाना

यिर्मयाह 26 और 36, 2 राजा 24: 1-7; 2 इतिहास 36

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

यिर्मयाह 23 साल तक भविष्यवाणी करता रहा, जब यहोयाकीम राजा बना। यहूदा मिस्र के नियंत्रण में था और राजा ने उन्हें हर साल उच्च कर का भुगतान किया।

परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा कि वह मंदिर में जाए और लोगों से कहे कि वह पश्चाताप करे वरना मंदिर खंडहर बन जाएगा। जब वह उपदेश दे चुका, तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने उसे पकड़ लिया और कहा, "हम तुम्हें मारने जा रहे हैं। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई की प्रभु के नाम पर ये बातें बोलें!"

यहूदा के अधिकारियों ने यिर्मयाह का बचाव करते हुए कहा, "उसे प्रभु के नाम पर बोलने का अधिकार है। उसे छोड़ दो।" उन्होंने उसे जाने दिया, लेकिन कहा कि वह वापस मंदिर नहीं आ सकता है।

यहोवा ने यिर्मयाह से कहा, "यहूदा और यरुशलेम पर आने वाले न्याय के बारे में मैंने जो भी बातें बताई हैं, उन सबको एक किताब में लिख।"

यिर्मयाह ने बारूक को, उसका लिखनेवाला,और उसने उससे वह सब कुछ लिखने के लिए बोला जो प्रभु ने कहा था।

जब उन्होंने कार्य पूरा कर लिया, तो भविष्यवक्ता ने कहा, "मुझे मंदिर जाने की अनुमति नहीं है, इसलिए वहां जा और लोगों को यह पुस्तक पढ़ के सुना।" बारूक ने जाकर मंदिर में पुस्तक पढ़ी।

राजा के अधिकारियों ने किताब के बारे में सुना और बारूक को इसे पढ़ने के लिए कहा। जब वह पढ़ी गई, तो अधिकारी डर गए। उन्होंने कहा, "राजा को यह सुनने की ज़रूरत है।"

उन्होंने लिखनेवाले से कहा, "हम इस पुस्तक को राजा के पास ले जा रहे हैं। तूम और यिर्मयाह छुप जाओ, और किसी को भी यह न बताना कि कहां गए हो।"

वो किताब राजा यहोयाकिम के पास ले जाई गई, और उसने उसे पढ़ने की अनुमति दी। क्योंकि सर्दी थी, वह आग के सामने बैठा था। हर बार जब पुस्तक

के एक हिस्सा पढ़ा जाता, वह उस हिस्से को कटवा देता और उसे आग में फेंकवा देता। उसके अधिकारियों ने उन्हें ऐसा नहीं करने के लिए कहा, लेकिन वे पूरी किताब के पढ़े जाने तक वैसे ही करता रहा।

कमरे में मौजूद सभी लोगों ने किताब सुनी, लेकिन किसी ने भी अपने कपड़े नहीं फाड़े और उनके अंदर डर नहीं था। तब यहोयाकीम ने यिर्मयाह और उसके लिखनेवाले को कैद करने का आदेश दिया, लेकिन परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

यहोवा ने यिर्मयाह से कहा, "दूसरी किताब लिख, ठीक वैसी ही जैसी जलाई गई थी। इसके अलावा, राजा यहोयाकीम को यह संदेश देना। 'तूने पुस्तक को जला दिया क्योंकि तू नहीं चाहता कि कोई इस बारे में बात करे कि बाबुल यरूशलेम को कैसे नष्ट करेगा। देख, तेरे साथ यह होगा। तेरे मृत शरीर को दफनाया नहीं जाएगा, लेकिन वो खुले सूरज में सड़ जाएगा। साथ ही, दाऊद का सिंहासन तेरे वंशजों से छीन लिया जाएगा।''

यिर्मयाह ने एक बार फिर बोला और बारूक किताब लिखता गया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उसने इसमें और कुछ कुछ किया।

यिर्मयाह ने यहूदा के लोगों से कहा, "बाबुल आकर इस शहर को नष्ट कर देगा और तुम्हें कैद में ले जाएगा। तुम सत्तर साल तक वहां रहोगे। उसके बाद, परमेश्वर तुम्हारे बच्चों को इस भूमि पर वापस लाएगा।"

परमेश्वर ने बारूक को एक विशेष संदेश भेजा।

"तू इस बारे में चिंतित हैं कि तेरे साथ क्या होगा। तू परमेश्वर के नबी के लिए लिखनेवाला होने का भार उठाता है। चिंता मत कर। जब मैं इस शहर को नष्ट करूंगा, तो मैं तेरे जीवन को छोड़ दूंगा। तू जहां भी जाएगा, मैं तेरे साथ रहूंगा।"

161 अंजीर की दो टोकरियां

यिर्मयाह 24, 2 राजा 24: 8-17; 2 इतिहास 36

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया। राजा यहोयाकीम ने मिस्र के प्रति अपनी निष्ठा को छोड़ दिया और अपनी वफादारी बाबुल को दे दी। कई साल बाद, बाबुल और मिस्र में भयंकर युद्ध हुआ। यहोयाकीम ने मिस्र के प्रति अपनी वफादारी वापस ली। यिर्मयाह ने उसे ऐसा न करने की चेतावनी दी, लेकिन उसने उसकी नहीं सुनी।

एक बार फिर, नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया, लेकिन इस बार यरूशलेम पर कब्जा कर लिया। यहोयाकीम को जंजीरों में डालकर बाबुल ले जाया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका पुत्र यकोन्याह राजा बना।

नबूकदनेस्सर ने अपने देवताओं को मंदिरों में रखने के लिए मंदिर से चीजें लीं। वह सबसे अच्छे युवकों को बाबुल वापस ले गया ताकि वे सलाहकार के रूप में काम करें। इनमें दानिय्येल भी शामिल था।

यकोन्याह केवल तीन महीनों के लिए राजा था जब उसने भी बाबुल के खिलाफ विद्रोह किया था।

यिर्मयाह ने उसे चेतावनी दी कि अगर उसने ऐसा किया, तो उसे अपने पिता की तरह ही हटा दिया जाएगा। पर युवा राजा ने नहीं सुनी।

नबूकदनेस्सर की सेना वापस आ गई, और इस बार उन्होंने मंदिर से सभी खजाने और सोना ले लिया। वे शहर से सब कुछ ले गए, हर मूल्यवान वस्तु, जिसमें कारीगर, सैन्य पुरुष और विद्वान शामिल थे। 10,000 लोगों को बाबुल ले जाया गया। उनमें से यहेजकेल भी था।

जमीन की देखरेख के लिए केवल गरीबों को छोड़ दिया गया था।

नबूकदनेस्सर यकोन्याह को बाबुल ले गया और उसे जेल में डाल दिया। उसके चाचा, सिदकिय्याह को यहूदा का राजा बनाया गया था।

उनके चले जाने के बाद, परमेश्वर ने यिर्मयाह को एक दर्शन दिया। प्रभु ने कहा, "तू क्या देखता है?"

नबी ने कहा, "मुझे अंजीर से भरी दो टोकरियाँ दिखाई देती हैं। एक सबसे स्वादिष्ट फलों से भरी है।

दूसरे में सड़े हुए अंजीर हैं, जिसमें से भयंकर बदबू आ रही है।

प्रभु ने कहा, "कैद में रहने वाले लोग अच्छे अंजीर की तरह हैं। मैं उन पर नजर रखूंगा और उनकी देखभाल करूंगा। उनके बच्चे इस भूमि पर वापस आएँगे, और उनके दिलों में मेरे प्रति इच्छा होगी। मैं उनका परमेश्वर बनूंगा और वे मेरे लोग होंगे।

"लेकिन यहाँ यहूदा में ये लोग सड़े हुए अंजीर की तरह हैं। वे भ्रष्ट और सड़े हुए हैं, और मैं उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करूंगा। मैं दिल का दर्द, विपत्ति और अकाल भेज दूंगा। जब मैं यह चीजें कर लूंगा, तो मैं सिदकिय्याह और उसके लोगों को कचरे में फेंक दूंगा।"

प्रभु ने यिर्मयाह से उन लोगों को पत्र भिजवाया जिन्हें देश से निकाल दिया गया था। उसने कहा, ''बाबुल में घर बनाओ और बाग लगाओ। शादी करो, बच्चे पैदा करो और

अपने बच्चों की शादी में मदद करो। अपने समुदाय के साथ जुड़ों और अपने शहर को समृद्ध बनाने में मदद करो। किसी पर विश्वास न करना जो तुझको बताता है कि तुम लंबे समय तक वहां नहीं रहोगे। यह सच नहीं है। तुम 70 साल के लिए देश से निकाले गए हो, इसलिए आराम से रहो।

"मैं तुम्हारी परवाह करूंगा। तुम जब चाहें मुझे बुला सकते हो - और मैं सुनूंगा। जब तुम्हारे देश से निकाले जाने का समय समाप्त हो जाएगा, तो मैं तुमको यहां वापस लाऊंगा और तुम्हारी छोड़ी गई सभी चीजों को पुनर्स्थापित करूंगा।

"यहाँ के लोग सड़े अंजीर की तरह हैं। मैं उनमें दिल का दर्द, विपत्तियाँ और अकाल भेजने के बाद, उन्हें कचरे में फेंक दूंगा।"

162 यरूशलेम की घेराबंदी

यिर्मयाह 37, 2 राजा 24:18 - 25:2
2 इतिहास 36

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह को यहूदा का राजा बनाया था। नौ वर्षों तक राजा रहने के बाद, उसने बाबुल के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उसने सोचा कि मिस्र उसकी मदद करेगा। यिर्मयाह ने कहा, "यदि तू ऐसा करता हैं, तो बाबुल का राजा यरूशलेम को पूरी तरह से नष्ट कर देगा।"

सिदकिय्याह ने नबी की बात नहीं मानी, इसलिए नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना लाई और किसी को अंदर या बाहर नहीं जाने देते हुए शहर की घेराबंदी की। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से प्रार्थना करने और परमेश्वर से मदद माँगने को कहा।

अचानक दक्षिण से मिस्र की सेना आ गई। उसी के साथ, बाबुल की सेना यरूशलेम से दूर चली गई।

यहोवा ने सिदकिय्याह को एक संदेश भेजा। "मैं यह करने जा रहा हूँ। फिरौन की सेना मिस्र लौट जाएगी। बाबुल वापस आएगा और इस शहर को जलाकर राख कर देगा। तू उन्हें रोक नहीं सकता, यहां तक कि अगर तेरी सेना बाहर चली गई और उन्हें हरा दिया, और केवल कुछ घायल लोगों को जीवित छोड़ दिया, वे कुछ लोग उठेंगे, शहर में आएंगे, और इसे जलाकर राख कर देंगे।"

यिर्मयाह ने शहर के बाहर जाने और कुछ संपत्ति को देखने का फैसला किया जो उसकी थी। एक पहरेदार ने उसे शहर के फाटक से बाहर निकलते देखा। उसने कहा, "तू बाबुल की सेना में जा रहा है।"

नबी ने कहा, "नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा।" लेकिन पहरेदार ने उस पर विश्वास नहीं किया, और उसे शहर के अधिकारियों के पास ले गया। वे उस पर भड़के हुए थे और उसे पीटकर एक तहखाने में डाल दिया था। वह वहां काफी समय रहा।

जल्द ही बाबुल के लोग वापस आ गए और एक बार फिर शहर को घेर लिया। सिदकिय्याह ने चुपके से यिर्मयाह को बुलवाया, और उसे महल में लाया। राजा ने कहा, "क्या तेरे पास प्रभु का संदेश है?"

यिर्मयाह ने कहा, "हाँ मेरे पास प्रभु का संदेश है। वह कहता है, 'तू बाबुल के लोगों से हार जाएगा।'

तब नबी ने राजा से कहा, "मुझे उस काल कोठरी में वापस मत भेज। यदि तू ऐसा करता हैं तो मैं मर जाऊंगा। मैंने किया क्या है? मैंने जो कुछ भी कहा है वह सच हो गया है। वे भविष्यद्वक्ता कहाँ हैं, जिन्होंने कहा कि बाबुल वापस नहीं आएगा? मैं तुझसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूं। मुझे वापस मत भेज।"

इसलिए राजा सिदकिय्याह ने यह आज्ञा दी कि यिर्मयाह को कालकोठरी में वापस नहीं भेजा जाए। उसे महल की जेल में रखा गया था, जहां उसे प्राप्त किया गया था, वहाँ उसे बेहतर देखभाल मिली। जल्द ही शहर में कोई भोजन नहीं था क्योंकि बाबुल के लोगों ने सब कुछ अंदर या बाहर जाने से रोक दिया था। यरूशलेम के शासकों ने यिर्मयाह को एक संदेश भेजा। "कृपया, प्रार्थना कर और परमेश्वर से हमें बाहर निकालने के लिए कह! शायद वह हमें एक चमत्कार देगा जैसे उसने अतीत में किया था।"

प्रभु ने उन्हें एक संदेश भेजा, "नहीं! मैं तुमको नहीं निकालूंगा। मैं तुम्हारे खिलाफ लड़ रहा हूँ। मैंने तुमको बाबुल के राजा को दिया है। तुम भूख, बीमारी और विपत्तियों से पीड़ित होंगे। सारे लोग और जानवर मर जाएंगे। इसके बाद भी जो लोग जीवित हैं, उन्हें बाबुल को दिया जाएगा।

163 मिट्टी का कुआँ

यिर्मयाह 32, 33, 38, 39, 40: 1-6, 52: 1-30
2 राजा 25: 3-21, 2 इतिहास 36

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

यहोवा ने यिर्मयाह को लोगों के लिए एक संदेश दिया। उसने कहा, "चुनाव तुम्हारा है। तुम्हारे पास जीवन या मृत्यु हो सकती है। यदि तुम यरूशलेम में रहते हो, तो तुम भूख, बीमारी और मृत्यु से पीड़ित होंगे। यदि तुम बाबुल की सेना के सामने आत्मसमर्पण करते हो, तो तुम जीवित रहोगे। मैंने उन्हें यह शहर दिया है, और वे इसे पूरी तरह से नष्ट कर देंगे।

जब यहूदा के अधिकारियों ने यह सुना, तो वे राजा के पास गए और कहा, "इस आदमी को मरना चाहिए। वह गद्दार है। वह लोगों से कह रहा है कि हमें छोड़ दो।"

इसलिए सिदकिय्याह ने उन्हें वह जो यिर्मयाह के साथ करना चाहते थे वो करने की अनुमति दी। उन्होंने उसके चारों ओर रस्सियाँ लगाईं और उसे एक खाली कुएँ में गिरा दिया। इसमें पानी नहीं था, और नीचे मिट्टी के अलावा कुछ भी नहीं था। जल्द ही नबी मिट्टी में डूब गया।

एक अन्य अधिकारी राजा के पास गया और कहा, "यह गलत है! नबी उस कुएं में मर जाएगा। उसके पास कोई भोजन या पानी नहीं है।"

राजा ने उस आदमी को यिर्मयाह को कुएँ से बाहर निकालने की अनुमति दी। इसलिए उसकी मदद करने के लिए उसके पास 30 अन्य पुरुष थे। उन्होंने कुएँ में पुराने कपड़े के टुकड़े फेंकें और नबी से कहा कि वे उसे रस्सियों से बचाने के लिए अपनी बाहों के नीचे रखें। फिर उन्होंने उसे कुएँ से बाहर निकाला और उसे वापस महल की जेल में ले गए।

बाबुल के लोगों ने ढाई साल तक शहर को घेरे रखा। अंत में, वे दीवारों के माध्यम से आए, और उन्होंने शहर पर कब्जा कर लिया। जब सिदकिय्याह ने यह सुना, तो वह रात के दौरान यरूशलेम से बाहर निकला और भागने की कोशिश की।

बाबुल के लोगों ने राजा का पीछा किया और जल्द ही उसे पकड़ लिया। वे उसे नबूकदनेस्सर के पास

वापस ले आए। वह सिदकिय्याह को ले गया और उसे वह सब देखने के लिए मजबूर किया जब उन्होंने उसके सामने उसके बेटों को मार दिया। फिर उन्होंने उसकी आँखों को निकाल, उसे जंजीरों में जकड़ दिया और उसे बाबुल ले गए।

बाबुल के लोगों ने शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, ताकि वह फिर कभी उनका विरोध नहीं कर सका। उन्होंने मंदिर को नष्ट कर दिया, सभी घरों को जला दिया, और दीवारों को तोड़ दिया। शहर पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था। बाबुल की सेना बाकी लोगों को बाबुल ले गई, पीछे कुछ ही लोग रह गए थे जो जमीन की देखभाल करते थे।

नबूकदनेस्सर ने यिर्मयाह के बारे में सुना, इसलिए उसने अपने कप्तान से कहा, “इस आदमी को खोजो, और सुनिश्चित करो कि उसे चोट न पहुंचे। उसकी देखभाल करो और जो चाहो उसे दे दो।”

कप्तान गया और नबी को पाया। वह उन लोगों के साथ जंजीरों में था जिन्हें देश से निकाला जा रहा था। कप्तान ने यिर्मयाह के ऊपर से जंजीर उतार ली और कहा, “तुम जाने के लिए स्वतंत्र हो। यदि तुम हमारे साथ बाबुल आते हो, तो हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे और जीवन भर तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। लेकिन अगर तुम चाहो, तो तुम यहाँ यहूदा में रह सकते हो। चुनाव तुम्हारा है।"

यिर्मयाह ने कहा कि वह यहूदा में रहेगा, इसलिए उन्होंने उसे और बारूक को अपने घरों में वापस जाने की अनुमति दी। प्रभु ने उस अधिकारी की भी रक्षा की जिसने नबी को कुएं से बाहर निकलने में मदद की थी।

यहोवा ने यिर्मयाह से कहा, “वह दिन आएगा जब दाऊद के वंश से एक धर्मी शाखा निलकेगी, और वह न्याय और धर्म को भूमि पर लाएगा। उसे 'प्रभु हमारी धार्मिकता है' कहा जाएगा।”

164 मिस्र जाना

यिर्मयाह 40 - 44, 52: 31-34; 2 राजा 25: 22-30

159 - 164 कहानियां जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह की सेवाकाई और जीवनकाल के दौरान हुईं।

बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। उसने कुछ लोगों को ज़मीन की देखभाल करने के लिए छोड़ दिया, और गदल्याह को यहूदा का राजपाल बनाया।

विद्रोही सैनिक अब भी यहूदा की पहाड़ियों में रहते थे। गदल्याह उनसे मिला और कहा, “बाबुल का राजा तुम्हारे साथ शांति रखना चाहता है। इसलिए लड़ना बंद करो। जब वो गए तो उन्हें देश से बाहर भेज दिया गया और लोगों को पीछे छोड़ दिया। तुम उनके अंगूर और जैतून और गर्मियों के फल ले सकते हो। एक शहर का चयन करो और वहाँ रहो। मैं बाबुल के लोगों के सामने तुम्हारा प्रतिनिधित्व करूँगा।"

सैनिकों ने इस सलाह का पालन किया और वहा रहने लगे। दूसरे देशों में रहने वाले यहूदी वापस आ गए और गदल्याह को अपना गवर्नर स्वीकार कर लिया।

कुल मिलाकर, उनके पास उस वर्ष बहुत अच्छी फसल थी। अम्मोन के राजा ने गदल्याह को मारने के लिए दस यहूदियों को रखा। यहूदा के लोगों ने इस साजिश के बारे में राजपाल को चेतावनी दी। उन्होंने कहा, “हमारे पास यहाँ सब कुछ अच्छा है। हम नहीं चाहते कि ये गद्दार हममें से बाकी लोगों के लिए सब बर्बाद कर दें। लेकिन गदल्याह ने उन पर विश्वास नहीं किया। उसने सोचा कि वे बस अपने साथी देशवासियों की तुलना में थोड़ा फायदा पाने की कोशिश कर रहे थे।

गदल्याह ने दस गद्दारों को अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। भोजन के दौरान, लोगों ने अपनी तलवारें निकालीं और राजपाल को मार डाला। उसके शरीर को एक बड़े कुएं में फेंकने के बाद, वे वापस अम्मोन के पास गए। यहूदा के लोगों ने उनका पीछा किया। एक लड़ाई हुई, लेकिन अधिकांश देशद्रोही भाग गए।

यहूदा के लोग जानते थे कि नबूकदनेस्सर तब लड़ेंगे जब उसे पता चलेगा कि उसके राजपाल को

मार दिया गया था। उन्होंने मिस्र भागने की योजना बनाई। वे यिर्मयाह के पास गए और कहा, "प्रभु से पूछ कि हमें क्या करना चाहिए। हम वादा करते हैं कि वह जो भी कहेगा हम करेंगे।"

दस दिन बाद, यिर्मयाह ने उन्हें प्रभु का संदेश दिया। "मिस्र में मत जाओ, लेकिन यहूदा में रहो। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और बाबुल के राजा से तुम्हारी रक्षा करूँगा। यदि तुम रुकते हो, तो मैं तुमको यहाँ स्थापित करूँगा।

"मुझे पता है कि तुम डरते हो, लेकिन मेरी बात सुनो। तुम्हारा डर मिस्र में तुम्हारा इंतजार कर रहा है। तुम्हें यहूदा में युद्ध, भूख और बीमारी नहीं मिली। नहीं, वे मिस्र में तुम्हारा इंतजार कर रहीं हैं।"

लोग यिर्मयाह पर चिल्लाए, "तुम हमसे झूठ बोल रहे हो। प्रभु ने तुमको यह नहीं बताया। तुम चाहते हो कि हम यहां रहें ताकि बाबुल हमें मार डाले।"

लोग यहूदा छोड़कर मिस्र चले गए। वे नबी और बारूक को अपने साथ ले गए। यिर्मयाह ने मिस्र में अपनी पुस्तक समाप्त की, और फिर उसकी मृत्यु हो गई।

वर्षों बाद, एक नए राजा ने बाबुल पर शासन किया। वह राजा यकोन्याह को जेल से बाहर लाया और उसे आज़ादी दी। उन्हें एक जीवित भत्ता भी दिया गया था और उन्हें बाबुल के राजा की मेज़ पर खाने के लिए आमंत्रित किया गया था। वह जीवन भर आराम से रहा।

165 सूखी हड्डियों की घाटी

यहेजकेल 37

कई अन्य यहूदियों के साथ, यहेजकेल को कैद में ले लिया गया था। वह परमेश्वर का भविष्यवक्ता बन गया।

एक दिन प्रभु उसकी आत्मा को एक घाटी में ले गया। उसने देखा कि यह हड्डियों से भरी थी। वह बहुत सुखी थी, अगर कोई उन्हें छूते तो वो धूल बन जाती।

प्रभु ने कहा, "मनुष्य का बेटे, क्या ये हड्डियाँ फिर से जीवित हो सकती हैं?"

उसने कहा, "हे प्रभु, केवल आप ही इसका उत्तर दे सकते हैं।"

परमेश्वर ने कहा, "उनके बीच में खड़े हो जा और कह, सूखी हड्डियों, सुनो परमेश्वर तुमसे क्या कहता है। हाँ, प्रभु तुमसे बात कर रहा है। वह तुमको बता रहा है कि वह तुम्हारे अंदर वापस सांस देने जा रहा है, और तुम एक बार फिर जीवित हो जाओगे। तुम पर मांस, और मांसपेशियों और त्वचा होगी... और तुम में जीवन होगा । फिर, तुमको पता चलेगा कि वो ही परमेश्वर है।''

इसलिए यहेजकेल ने खड़े होकर हड्डियों से यह सब कहा।

अचानक घाटी में चारों ओर एक आहट आई, और भुईडोल हुआ। हड्डियां ठोस हो गई थीं, और हड्डी से हड्डी जुड़ गई थीं। जल्द ही पूरे कंकाल जमीन पर पड़े थे।

जब नबी देख रहा था, कंकालों पर नसे और मांसपेशियों आई। और फिर मांस के ऊपर त्वचा आई। वे पूरे मैदान में जमीन पर पड़े शवों की तरह थे।

लेकिन फिर भी, उनमें जीवन नहीं था।

यहोवा ने यहेजकेल से कहा, "मनुष्य के पुत्र, साँस को आज्ञा दे। कह, सुनो परमेश्वर तुमसे क्या कहता है। हाँ, प्रभु तुमसे बात कर रहा है। वह तुमसे कह रहा है कि हवाओं पर सवार होकर आओ और इन शवों में प्रवेश करो। ''

इसलिए यहेजकेल ने यह सब साँस से कहा। अचानक हवा चली और साँस ने सभी शवों में प्रवेश किया, और वे जीवित हो गए! वे बैठ गए ... और फिर उठ गए। तब यहेजकेल को पता चला कि वे एक विशाल सेना थी।

प्रभु ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, ये हड्डियाँ इस्राएल के सभी बारह गोत्रों को दिखाती हैं। अभी वे कह रहे हैं, 'हम अब राष्ट्र नहीं हैं। हमारे लिए कोई उम्मीद नहीं है हमारी हड्डियां सूख गई हैं।'

"उनके लिए प्रचार कर! कह, सुनो परमेश्वर तुमसे क्या कहता है। हाँ, प्रभु तुमसे बात कर रहा है। वह तुमको बता रहा है कि वह तुम्हारी कबरें खोल कर तुमको उन से निकालेगा और तुमको वापस इस्राएल की भूमि पर लाएगा। उसने अपना आत्मा तुम में डाल दिया है, और तुम फिर से जीवित हो जाओगे। तब तुम जानोगे कि वो ही परमेश्वर है।''

यहोवा ने यहेजकेल से फिर से बात की। "मनुष्य के पुत्र, लकड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा खोज। उस पर 'यहूदा' शब्द तराश। लकड़ी का एक और टुकड़ा ढूंढ़ और उस पर 'इस्राएल' शब्द को लिख।"

यहेजकेल ने ऐसा ही किया। तब यहोवा ने कहा, "उन्हें एक साथ पकड़ जैसे कि वे एक ही लकड़ी का टुकड़े है। जब तक लोग तुझसे ना पूछें कि इसका क्या मतलब है, उन्हें चारों ओर ले जा।

उन्हें बता कि प्रभु परमेश्वर कह रहा है, "एक समय आएगा जब मैं दोनों राष्ट्रों को फिर से एक साथ लाऊंगा। वे दो राष्ट्र नहीं होंगे, बल्कि एक राष्ट्र होंगे। मैं उन्हें उनकी भूमि दूंगा, वह भूमि जो मैंने याकूब को दी थी। उनके पास एक राजा होगा। दाऊद उन पर शासन करेगा। वे अब खुद को मूर्तियों से भ्रष्ट नहीं करेंगे। मैं उन्हें पवित्र कर दूंगा और वे मेरे लोग होंगे, और मैं उनका परमेश्वर बनूंगा।''

166 दानिय्येल का निर्णय

दानिय्येल 1: 1-16

नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। उसने यरूशलेम को जीत लिया और लोगों को बंदी बना लिया। फिर उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे सर्वश्रेष्ठ युवकों का चयन करें और उन्हें शाही दरबार में सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करें। उन्हें भाषा, साहित्य और ज्ञान में सबसे अच्छा प्रशिक्षण दिया जाना था।

यह प्रशिक्षण तीन साल तक चलेगा, और उस समय के दौरान, राजा उन्हें सर्वश्रेष्ठ भोजन और दाखरस उपलब्ध कराएगा।

चुने गए चार युवकों में से दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो थे। इन लोगों ने प्रभु के सामने यह तय किया कि वे परमेश्वर के नियम के विरुद्ध खाने और पीने की चीजों से खुद को अपवित्र नहीं करेंगे। दानिय्येल ने देखभाल करनेवाले को अपने दैनिक आहार से उन चीजों को हटाने के लिए कहा।

उसने कहा, "अरे नहीं। मैं तुझे ऐसा करने नहीं दे सकता! एक दिन सब राजा के सामने खड़े होंगे। वह देखेगा कि तुम दूसरों की तुलना में दुबले-पतले हो, और फिर वह मुझे मार डालेगा!"

इस बिंदु पर, दानिय्येल ने अपने शब्दों को सावधानी से चुना। उसने कहा, "कृपया, निर्णय लेने से पहले, एक परीक्षा ले।

हम चारों को दस दिनों तक सब्जी खाने और पानी पीने की अनुमति दें। फिर देखें कि हम दूसरों की तुलना में कैसे दिखते हैं।"

देखभाल करनेवाला दानिय्येल का बहुत सम्मान करता था, इसलिए वह इस परीक्षण के लिए सहमत हो गया। दस दिनों के अंत में, दानिय्येल और उसके दोस्त राजा के भोजन और शराब खाने वाले सभी लोगों की तुलना में बेहतर और स्वस्थ दिखे। इसलिए देखभाल करनेवाले ने उन चारों को केवल सब्जियां और पीने का पानी जारी रखने की अनुमति दी।

परमेश्वर दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो के साथ था। उसने उन्हें ज्ञान दिया, और ज्ञान को समझने की शक्ति दी। दानिय्येल सपने और दर्शन भी समझ सकता था।

तीन साल के अंत में, नबूकदनेस्सर उन सभी युवकों से मिला, जो उसके प्रशिक्षण कार्यक्रम से गुजरे थे। दूसरों में से कोई भी दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो से उच्च स्थान पर नहीं रहा। इसलिए वे राजा के दरबार में सेवा करने लगे। राजा ने ज्ञान और समझ से संबंधित हर मामले में उनसे सलाह ली।

समय के साथ, राजा ने उनको अपने परामर्शदाताओं से दस गुना अधिक महत्व दिया। कई राजाओं के शासनकाल के दौरान दानिय्येल ने राजसभा में काम करना जारी रखा।

167 नबूकदनेस्सर का सपना

दानिय्येल 2

नबूकदनेस्सर ने एक सपना देखा था जिसने उसे परेशान किया। उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और कहा कि वे उसके सपने की व्याख्या करे। उन्होंने कहा, "हमें सपना बताएं और हम आपको बताएंगे कि उसका क्या मतलब है।"

राजा ने कहा, "जो मैं कहने वाला हूं, उसे ध्यान से सुनो। तुम मुझे मेरे सपने के साथ-साथ उसका मतलब भी बताना होगा। यदि तुम ऐसा कर सके, तो मैं तुम सभी को महान पुरस्कार दूंगा और सभी के सामने तुम्हारा सम्मान करूंगा। लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं कर सके, तो तुम एक धीमी मौत मरोगे, और तुम्हारी सारी संपत्ति नष्ट हो जाएगी। अब, मुझे मेरा सपना बताओ!

उसके सलाहकार हैरान थे। उन्होंने दूसरी बार पूछा, "कृपया, हमें अपना सपना बता और हम तुझको उसका अर्थ देंगे।"

नबूकदनेस्सर बेताब हो गया। "तुम अधिक समय प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हों।। मैंने जो कहा, वह तुमने सुना। अगर मैं तुमको अपना सपना बताता हूं, तो तुम बस मुझे हंसाने के लिए कुछ बता दोगे। एकमात्र तरीका जिससे मुझे पता होगा कि तुम्हारा अर्थ सही है, वह यह है यदि तुम मुझे मेरा सपना बता सकते हो या नहीं।

इस बिंदु पर, सलाहकारों ने उससे भीख मांगी। “किसी भी राजा ने अपने सलाहकारों से ऐसा करने के लिए कभी नहीं कहा। केवल ईश्वर ही जानता है कि लोग क्या सपना देखते हैं, जब वे सो रहे होते हैं।"

नबूकदनेस्सर नाराज़ हो गया। उसने घोषणा की कि सभी सलाहकार मारे जाए। इसलिए पहरेदारों ने उन्हें इकट्ठा करना शुरू कर दिया। दानिय्येल ने यह सुना और तुरंत राजा को एक संदेश भेजा, "मुझे कुछ समय दे और मैं तुझको तेरा सपना बताता हूं, साथ ही साथ उसका मतलब भी।"

परमेश्वर ने दानिय्येल को राजा का सपना दिखाया और उसे मतलब भी बताया। तब दानिय्येल राजा के साथ मिलने गया। नबूकदनेस्सर ने देखा और उससे कहा, "क्या यह सच है कि तू मुझे मेरा सपना और उसका मतलब बता सकता है?"

दानिय्येल ने बहुत ध्यान से जवाब दिया। "कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है, लेकिन स्वर्ग में एक परमेश्वर है जिसने मुझे दिखाया है कि तूने क्या सपना देखा जब तू सो रहा था।

"उसने मुझे दुनिया के भविष्य में क्या होने जा रहा है, इसका एक दर्शन दिया।" तूने सपने में एक विशाल मूर्ति देखी। उसका सिर सोने से बना था। उसकी भुजाएं और छाती चांदी की थी और उसके पेट और कूल्हे पीतल के थे। उसके लोहे की टांगे थी, और उसके पांव लोहे और मिट्टी का मिश्रण थे। एक पहाड़ से अचानक एक पत्थर काटा गया, लेकिन तूने यह नहीं देखा कि किसने इसे काटा था। यह पत्थर पैरों से टकराया और पूरी प्रतिमा नष्ट हो गई।

"टुकड़े जमीन पर गिरे और हवा ने उन्हें उड़ा दिया जैसे कि उनका कोई वजन नहीं था। जब तू उसे देख रहा था, पत्थर पूरी पृथ्वी को भरने तक बड़ा हो गया।

“यह तेरा सपना था। अब यह उसका मतलब है। परमेश्वर ने तुझको सोने का सिर बनाया है। तेरे बाद, एक और राज्य उत्पन्न होगा जो तेरे जितना अच्छा नहीं है।

“फिर पीतल का एक तीसरा राज्य दुनिया पर राज करेगा। चौथा राज्य लोहे की तरह मज़बूत होगा और हर चीज़ जो उसके रास्ते में आएगी वह उसे कुचल देगा। यह राज्य प्रतिमा के पैरों की तरह दो भागों में विभाजित होगा। अंतिम राज्य को भी दो पैरों में विभाजित किया जाएगा, जिसमें दस उंगलियां होंगी। उसमें लोहे की ताकत होगी, लेकिन यह मिट्टी की तरह ही नाजुक होगा।

“पहाड़ से उखाड़ा गया पत्थर परमेश्वर का राज्य है, जो मानव हाथों के बिना बनाया जाएगा। परमेश्वर इस दुनिया के सभी राज्यों को नष्ट कर देंगे, लेकिन उनका राज्य कभी खत्म नहीं होगा।

"हे राजा, परमेश्वर ने तुझको एक सपने के द्वारा भविष्य दिखाया है, और यह वैसा ही होगा जैसा कि सपने मे बताया है।"

नबूकदनेस्सर गिरा, उसका चेहरा जमीन की ओर था। उसने कहा, "तेरा परमेश्वर, ही परमेश्वर है! वह परमेश्वर है!” नबूकदनेस्सर ने तब दानिय्येल को अपने राज्य में एक महान शासक बनाया।

168 आग की भट्टी

दानिय्येल 3

नबूकदनेस्सर ने एक सोने की मूर्ति बनवाई। यह 90 फीट लंबी और 9 फीट चौड़ी था। फिर उसने अपने राज्य के सभी अधिकारियों को इकट्ठा किया। वे प्रतिमा के सामने आकर खड़े हो गए।

अधिकारियों में से एक ने घोषणा की। "जब सब बाजे बजने की आवाज़ सुनते हो, तो ज़मीन पर गिरकर उस सोने की मूर्ति की आराधना करो जिसे राजा नबूकदनेस्सर ने स्थापित किया है। यदि तुम तुरंत ऐसा नहीं करते , तो तुमको आग की भट्टी में डाल दिया जाएगा।” बाजे बजने लगे और भीड़ सोने की मूर्ति के सामने जमीन पर गिर पड़ी।

इस अवसर ने कुछ अधिकारियों को एक विचार दिया। उन्होंने सोचा कि यह कुछ यहूदियों से, जो उनमें से थे, उनसे छुटकारा पाने का उनका मौका था।

उन्होंने राजा से कहा, “आपकी आज्ञा स्पष्ट थी। जब बाजे बजते थे, तो सभी को जमीन पर गिरकर प्रतिमा की आराधना करनी थी। आपने कहा कि अगर किसी ने ऐसा नहीं किया, तो उसे आग की भट्टी में फेंक दिया जाएगा। तीन यहूदी हैं जिन्होंने आपकी आज्ञा नहीं मानी, और वे राज्य में उच्च पदों पर हैं। इनके नाम शद्रक, मेशक और अबेदनगो हैं। वे आपके परमेश्वर की आराधना नहीं करते हैं, और न ही वे सोने की मूर्ति की आराधना करते हैं।

नबूकदनेस्सर गुस्से में था। उसने तीनों यहूदियों को बुलावा भेजा और उन्हें उनके सामने खड़ा कर दिया। "मुझे बताया गया है कि तुम मेरे परमेश्वर की सेवा नहीं करते हो, और तुमने सोने की मूर्ति की आराधना नहीं की है।" मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह सच है। बाजे बजेंगे, और तुम ज़मीन पर गिरकर सोने की मूर्ति की आराधना करोगे। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो तो तुमको आग की भट्टी में फेंक दिया जाएगा। कोई देवता नहीं है जो तुम्हें मेरी शक्ति से बचा सके।”

तीनों ने राजा को जवाब देने में संकोच नहीं किया। उन्होंने कहा, “हम आपसे कभी बहस नहीं करेंगे, लेकिन कृपया समझें। हमारा परमेश्वर हमें आग की

भट्टी से बचाने में सक्षम है। वह हमें आपकी शक्ति से आसानी से बचा सकता है, लेकिन अगर वह ऐसा नहीं भी करता है, तो हम यह बताना चाहते हैं कि हम अभी भी आपके द्वारा स्थापित की गई सोने की मूर्ति की आराधना नहीं करेंगे।"

नबूकदनेस्सर इतना क्रोधित हो गया कि उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। वह अपने पहरेदारों से चिल्लाया, "भट्ठी को सात गुना गर्म करो! इन आदमियों को बाँध कर उसमेफेंक दो!"

भट्ठी को गर्म किया गया, और तीनों यहूदियों को बांधकर आग में डाल दिया गया । क्यूंकि भट्ठी इतनी गर्म थी और राजा चाहते थे कि सज़ा जल्दी दीं जाए, इसलिए आग की लपटों ने फेकने वालों को मार डाला, जब वह उनको भट्टी में फेंक रहें थे।

अचानक राजा ने जो देखा, उससे हैरान रह गया। वह उठा और चिल्लाया, "क्या हमने तीन लोगों को आग में नहीं फेंका था?"

"बेशक महाराज। हमने तीन लोगों को फेंका था।"

राजा ने कहा, "लेकिन देखो! मुझे वहां चार आदमी दिखाई दे रहे हैं। आग उन्हें चोट नहीं पहुँचा रही है, और वे बंधे नहीं हैं। वे स्वतंत्र रूप से घूम रहे हैं। और देखो! चौथा आदमी परमेश्वर की तरह है।"

नबूकदनेस्सर भट्टी के करीब गया और चिल्लाया। "शद्रक, मेशक, अबेदनगो, परमपिता परमेश्वर के सेवक। कृपया, बाहर आओ।"

तीनों आदमी आग से बाहर आए। हर कोई चारों ओर इकट्ठा हो गया और देखा कि आग से पुरुष और उनके कपड़े बिलकुल नहीं जले थे। उन से धुएं की गंध भी नहीं आ रही थी। नबूकदनेस्सर ने एक घोषणा की। "मैं शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की स्तुति करता हूं। उन्होंने किसी ईश्वर को नहीं, बल्कि अपने परमेश्वर की आराधना करने के बजाय मरना चुना। इसलिए उसने उन्हें बचाने के लिए अपने दूत को भेजा। शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के बारे में कोई भी कुछ भी अप्रिय नहीं कहेगा। यदि कोई कहता है तो उस व्यक्ति को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा और उनके घर को कचरे के ढेर में बदल दिया जाएगा।"

169 एक जंगली जानवर बनना

दानिय्येल 4

एक रात, राजा नबूकदनेस्सर ने एक सपना देखा जिसने उसे भयभीत कर दिया था। उसने तुरंत अपने सभी सलाहकारों और ज्योतिषियों को बुलाया। उसने उन्हें सपना बताया, लेकिन वे उसका अर्थ नहीं समझ सकें।

अंत में उसने दानिय्येल को बुलवाया और कहा, "मुझे पता है कि तुम्हारे अंदर देवताओं की आत्मा है। तेरे पास सभी रहस्यों के उत्तर हैं। कल रात मुझे एक भयानक सपना आया, और कोई भी मेरे लिए उसका अर्थ नहीं समझा पा रहा है। मैं तुमको बताऊंगा, ताकि तुम मुझे बता सको कि उसका क्या मतलब है।

"मैंने धरती के बीच में एक पेड़ देखा। यह लंबा और मजबूत था। पृथ्वी पर हर कोई इसे देख सकता था। यहां तक कि स्वर्ग ने भी इसे देखा। इसमें सभी के लिए सुंदर पत्ते और पर्याप्त फल थे, जितना कि वे चाहते है। यह जानवरों को शरण देता था, और पक्षी इसकी शाखाओं में रहते थे।

"मैं पेड़ को निहार रहा था, जब एक दूत स्वर्ग से आया था। यह पवित्र जन चिल्लाया ताकि हर कोई सुन सके, इस पेड़ को काटो! इसकी शाखाओं को काट दों, इसके पत्तों को हटा दों और फल को तितर बितर कर दों। जानवरों और पक्षियों का पीछा करो। लेकिन सावधान रहना। जमीन में अभी भी इसकी जड़ों को ठूंठ समेत छोड़ दो। उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्ध कर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो।

"अब उसे सात साल के लिए अकेला छोड़ दो। उसके पास एक जानवर का दिमाग होगा और वह खेत में घास खाएगा। प्रत्येक सुबह वह स्वर्ग की ओस से ढका रहेगा। जब तक उसे पता ना चले है कि पृथ्वी के सभी राज्यों पर सर्वोच्च शासक है, तब तक वह इस तरह रहेगा। वह जिसे चाहता है उन्हें देता है। वह नीच दास को भी राज्य दे सकता है।'

"दानिय्येल, यह वह सपना है जो मैंने देखा था। केवल तू ही मुझे बता सकता है कि इसका क्या मतलब है।"

दानिय्येल हैरान था! उसने एक बात नहीं कही, लेकिन बस राजा को घूरता रहा।

नबूकदनेस्सर ने कहा, "दानिय्येल, डर मत। मुझे बता कि इसका क्या मतलब है।"

"ओह मेरे राजा। काश सपने का अर्थ आपके दुश्मनों के लिए होता। लेकिन ऐसा नहीं है। आप पेड़ हो, लंबा और मज़बूत। आप दूर-दूर के लोगों को फायदा पहुंचाते हो। स्वर्ग से नीचे आने वाले पवित्र व्यक्ति ने आपके खिलाफ फैसला सुनाया है।

"आप लोगों से दूर हो जाओगे और एक जंगली जानवर की तरह रहोगे। आप घास खाओगे और रात की ओस के नीचे सोओगे। जब तक आपको पता नहीं चलता है कि आप सभी राज्यों पर सर्वोच्च शासक हैं, तब तक आप सात साल तक इस तरह रहेंगे। वह राष्ट्रों को वह देता है जो वह चाहता है।

"फिर भी, पवित्र व्यक्ति ने अपनी जड़ों के साथ पेड़ की ठूंठ को छोड़ने के लिए कहा। इसका अर्थ है कि स्वर्ग के नियमों को स्वीकार करने के बाद आपका राज्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

"मेरी सलाह यह है। अपने जीवन से पाप को हटाओ। न्याय करने वाले बनो। दया दिखाओ। शायद परमेश्वर भी आप पर दया करेगा।"

एक साल बाद, नबूकदनेस्सर बाबुल में अपने महल की छत पर टहल रहा था। अचानक वह रुका और कहा, "यह देखो! यह बाबुल महान है, और मैंने इसे बनाया है। मैंने ऐसा किया है क्योंकि मैं शक्तिशाली हूं। यह राज्य मेरी महान महिमा को दिखाता है!"

जब वह ये शब्द कह ही रहा था, तब स्वर्ग की एक आवाज़ ने उससे कहा, "राजा नबूकदनेस्सर, मैं इस राज्य को तुझसे दूर कर रहा हूँ। लोग तेरा पीछा करेंगे, और तू जानवरों के बीच रहेगा। तू सात साल तक घास खाएगा। जब तक तू यह नहीं सीखेगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी राज्यों को नियंत्रित करता है। वह उसे देता है जिसे वह देने के लिए चुनता है।"

तुरंत राजा पागल हो गया। लोगों ने आखिरकार उसे महल से बाहर निकाल दिया और वह खेतों में चला गया। उसने भोजन के रूप में घास खाई। उसके बाल लंबे हो गए और उसके नाखून पंजों की तरह हो गए थे। ओस ने उसे हर रात ढंका।

सात साल के अंत में, उसने आकाश की ओर देखा और उसका मानसिक स्वास्थ्य ठीक हो गया। उसने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की प्रशंसा करता हूं। वह हमेशा के लिए जीवित है, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं है। वह वही करता है जो वह चाहता है, और कोई भी उसे रोक नहीं सकता है।"

परमेश्वर ने मन्त्री और सलाहकारों को उसकी तलाश में भेजा। जब उन्होंने देखा कि उसकी दिमागी स्थिति ठीक है, तो उन्होंने उसे उसके पुराने स्थान पर बहाल कर दिया। उसका राज्य वापस आ गया था, लेकिन उस दिन से उसने हमेशा कहा, "मैं स्वर्ग के राजा की प्रशंसा करता हूं और उसकी महिमा करता हूं। उसके काम सच्चे और नेक हैं।"

170 दीवार पर लिखावट

दानिय्येल 5 और 9

राजा बेलशस्सर नबूकदनेस्सर का पोता था। उसने एक हजार बाबुल के मंत्रियों के साथ एक दावत देने का फैसला किया। उसके पास यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर से लाए गए सोने के प्यालें थे, जो उसके पास लाए गए थे, जिसे बाबुल सेना ने ले लिया था। इन प्यालों को उनके कई देवताओं के सम्मान में पीने के लिए इस्तेमाल किया जा रहे था।

अचानक ... एक आदमी की हाथ की उंगलियाँ एक दीवार के पास दिखाई दीं जिसमें पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था थी।

जब बेलशस्सर देख रहा था, तो उंगलियाँ दीवार पर लिखने लगीं। इसने राजा को इतना भयभीत कर दिया कि वह भय से कांपने लगा।

जब हाथ से लिखना समाप्त हो गया, तो वह गायब हो गया। बेलशस्सर ने दीवार पर शब्दों को पढ़ा, लेकिन उसे पता नहीं था कि उनका क्या मतलब है। उसने अपने सलाहकारों के लिए संदेश भेजा और कहा, "यदि तुम इन शब्दों का अर्थ पता लगा सकते हों, तो मैं तुमको बहुत धनराशि दूंगा और तुमको बाबुल का तीसरा शासक बनाऊंगा!"

उन्होंने लिखावट को देखा लेकिन यह समझने में सक्षम नहीं थे कि उसका क्या अर्थ है। इससे बेलशस्सर और अधिक भयभीत हो गया।

रानी मां ने कहा, "डरो मत। एक सलाहकार है जिसे तूने नहीं बुलाया है। उसका नाम दानिय्येल है, और वह पवित्र देवताओं के आत्मा से भरा हुआ व्यक्ति है। जब भी उन्हें कोई समस्या होती थी, तो तेरे दादा उसे हमेशा बुलाते थे। वह तुझको बताएगा कि इसका क्या मतलब है।"

बेलशस्सर ने दानिय्येल को बुलाया और कहा, “मुझे पता है कि तुम में देवताओं की आत्मा है। यदि तुम मुझे बता सको कि इसका क्या अर्थ है, तो मैं तुमको महान धन दे दूंगा और बाबुल का तीसरा सबसे बड़ा शासक बना दूंगा।"

दानिय्येल ने संकोच नहीं किया। उसने कहा, “तू अपने उपहार और खिताब अपने पास रख सकता है।

मैं लिखावट को पढ़ूंगा और तुझको बताऊंगा कि उसका क्या अर्थ है।

"सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यह साम्राज्य दिया और उसे पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बनाया। और उसने खुद को परमेश्वर के सामने नम्र किया और स्वीकार किया कि वह सभी का परमेश्वर था।

"तू भी यह जानता है, फिर भी घमंड करता हैं और प्रभु परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता है। तूने झूठे देवताओं की स्तुति करने के लिए परमेश्वर के मंदिर से सोने के प्यालों का उपयोग किया। तू उस परमेश्वर का मजाक उड़ाता हैं जो तेरे जीवन को अपने हाथों में रखता है।"

इसलिए, उसने तुझको यह संदेश भेजा है:

मने, मने, तकेल, और ऊपर्सीन।

"इसका अर्थ यह है:

मने - परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिनों की संख्या तय की है। तेरा समय समाप्त हुआ!

तकेल - तू तराजू में तौला गया और हलका पाया गया!

ऊपर्सीन - तेरा राज्य अब तेरा नहीं है। इसे मादियों और फारसियों के बीच बांट दिया गया है।"

तुरंत, बेलशस्सर ने अपने नौकरों को बुलाया और उनसे कहा कि वे दानिय्येल को बढ़िया कपड़े पहनाए और उसके गले में महंगे गहने डालें। उन्होंने बाबुल में दानिय्येल को तीसरा सबसे बड़ा शासक घोषित किया।

उसी रात, मादियों और फारसियों की सेना शहर में आ गई, बेलशस्सर को मार डाला, और राज्य पर कब्जा कर लिया। दानिय्येल फारसी अदालत में एक सम्मानित सलाहकार बन गया।

सालों बाद, दानिय्येल पढ़ रहा था कि कैसे यिर्मयाह ने कहा कि यरूशलेम शहर सत्तर साल तक खंडहर रहेगा। दानिय्येल ने प्रार्थना की और परमेश्वर से पूछा कि उसके बाद क्या होने वाला था। परमेश्वर ने एक दूत भेजा कि वह उसे बताए कि क्या होगा।

स्वर्गदूत ने कहा, "यरूशलेम के पुनर्निर्माण के लिए एक आदेश दिया जाएगा। यह आदेश तेरे लोगों के लिए एक विशेष 490 साल की अवधि शुरू करेगा। पहले 483 वर्षों के बाद, मसीहा आएगा। वह मारा जाएगा, और यरूशलेम फिर से नष्ट हो जाएगा। अंतिम सात सालों की शुरुआत तब होगी जब एक दुष्ट शासक इस्राएल के साथ 7 साल का शांति समझौता करेगा।"

दानिय्येल को यह बताने से, परमेश्वर ने इस्राएल को दिखाया कि पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने से पहले वह क्या करेगा।

171 शेरों की मांद

दानिय्येल 6

जब दारा राजा बना, तो उसने अपने प्रत्येक 120 प्रांतों पर एक अधिकारी नियुक्त किया। इसके बाद उसने 120 अधिकारियों पर तीन प्रशासकों का चयन किया।

दानिय्येल तीन प्रशासकों में से एक था, और वह सबसे अधिक सक्षम था। राजा उसे पूरे राज्य पर अधिकार देने वाला था।

अधिकारी और अन्य दो प्रशासक ऐसा नहीं चाहते हैं। उन्होंने दानिय्येल को राजा के सामने बुरा दिखने का फैसला किया। उन्होंने उसके जीवन में खामियां खोजी, या सरकार के लिए जो कुछ किया उसमें किसी तरह के भ्रष्टाचार खोजा। उन्हें कुछ भी नहीं मिला। अंत में उन्होंने कहा, "ऐसा करने का केवल एक ही तरीका है। हमें उसके परमेश्वर के नियमों के बारे में कुछ पता लगाना चाहिए।"

अंत में उन्होंने कुछ पाया, इसलिए उन्होंने एक योजना बनाई। वे राजा के पास गए और कहा, "हे दारा राजा, सदा जीवित रहो। अधिकारियों और प्रशासकों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि हम आपको सम्मानित करेंगे। आपकी अनुमति से, हम चाहते हैं कि हर कोई 30 दिनों तक आपकी उपासना करे। हम एक ऐसा कानून बनाएंगे जिसमें कहा गया है कि कोई भी उस दौरान किसी अन्य परमेश्वर की पूजा नहीं कर सकता है। हम चाहते हैं कि आप इसे मादियों और फारसियों के कानून के रूप में लागू करें, जिसे बदला नहीं जा सकता। यदि कोई इस कानून को नहीं मानता है, तो उसे शेरों की मांद में फेंक दिया जाएगा।" दारा इस सम्मान से प्रसन्न था, इसलिए उसने कानून पर हस्ताक्षर किए।

ऐसा किए जाने के बाद दानिय्येल ने इस बारे में सुना। फिर भी उसने पूजा की अपनी सामान्य दिनचर्या का पालन किया। दिन में तीन बार, वह अपने घर में जाता और ऊपरी खिड़की को खोलता, जो यरूशलेम की ओर खुलती थी। वहाँ, उसने घुटने टेके और प्रार्थना की, परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

यह बात पुरुषों को पता था कि वह ऐसा करेगा। वे राजा के पास गए और कहा, "क्या यह सच है कि आपने एक कानून पर हस्ताक्षर किए हैं जिसमें कहा गया है कि 30 दिनों तक कोई भी आपके अलावा किसी अन्य परमेश्वर की उपासना नहीं कर सकता है? और क्या यह नहीं कहा गया कि जिसने भी इसका उल्लंघन किया उसे शेरों की मांद में फेंक दिया जाएगा?'

उसने कहा, "बेशक। मैंने इसे मादियों और फारसियों का कानून बनाया था, जिसे बदला नहीं जा सकता।

"ओह राजा, हम आपको यह बताने के लिए दुखी हैं कि दानिय्येल, एक यहूदी निर्वासन, उस कानून को तोड़ रहा है। वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर की उपासना करता है और उससे प्रार्थना करता है।" राजा दारा चौंक गया! वह जानता था कि उसे दानिय्येल को बचाने के लिए एक रास्ता खोजना होगा। उन्होंने पूरे दिन इस पर काम किया।

अंत में पुरुषों ने आकर कहा, "आप जानते हैं कि मादियों और फारसियों के कानून को नहीं बदला जा सकता है।"

इसलिए राजा ने दानिय्येल को बुलाने का आदेश दिया।

मांद में फेंके जाने से ठीक पहले राजा ने उनसे बात की। "जिस परमेश्वर की तुम सेवा करते हो, वह तुम्हें इन शेरों से छुड़ाए।"

दानिय्येल को मांद में उतारा गया, और फिर मांद के ऊपर एक पत्थर रखा गया। राजा ने उस पर अपनी मुहर लगाई ताकि कोई उसके साथ छेड़छाड़ न कर सकें। वह अपने महल में वापस चला गया और शाम का मनोरंजन रद्द कर दिया। उसने खाने से इनकार कर दिया, और वह पूरी रात सो नहीं सका।

जब अंततः सुबह हो गई, तो वह शेरों की मांद में वापस चला गया। एक बार जब पत्थर हटा दिया गया, तो वह चिल्लाया, "हे दानिय्येल, जीवित परमेश्वर के सेवक। क्या तेरा परमेश्वर तझको शेरों से छुड़ाने में सक्षम था? "

दानिय्येल वापस चिल्लाया, "मेरे राजा, परमेश्वर ने अपने दूतों को भेजा, जिन्होंने इन शेरों के मुंह बंद कर दिए। मुझे किसी भी तरह से चोट नहीं पहुंची है। परमेश्वर जानता है कि मैं निर्दोष हूं। महामहिम, मैंने आपके खिलाफ किसी भी तरह से कुछ भी गलत नहीं किया है।"

राजा ने दानिय्येल को मांद से बाहर निकालने का आदेश दिया। दारा ने तब पहरेदारों को कहा। "जाओ उन लोगों को लाओ जिन्होंने दानिय्येल के खिलाफ साजिश रची। उनकी पत्नियों और बच्चों को भी लाओ। उन सभी को शेरों की मांद में फेंक दो।"

सभी पुरुषों और उनके परिवारों को शेरों की मांद में लाकर धकेल दिया गया। फर्श तक पहुँचने से पहले शेर नीचे उनका इंतज़ार कर रहे थे और उन्हें फाड़ के अलग कर दिया।

राजा दारा ने अपने पूरे राज्य में एक फरमान भेजा। उसने कहा, "सभी को दानिय्येल के परमेश्वर से डरना है क्योंकि वह जीवित परमेश्वर है। उसका राज्य हमेशा के लिए रहेगा। वह उन लोगों को बचाने में सक्षम है जो उसकी सेवा करते हैं।"

172 मंदिर का पुनर्निर्माण

2 इतिहास 36: 21-23, एज्रा 1 - 6
हाग्गै 1 - 2

यिर्मयाह ने कहा था कि यहूदा 70 साल तक कैद में रहेगा। उस समय के अंत में, फारस के राजा ने कहा, "प्रभु ने मुझे उसके लोगों को उसके मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए यरूशलेम वापस भेजने के लिए कहा है। इसलिए, वे परमेश्वर के घर जाने और उसे बनाने के लिए स्वतंत्र हैं।"

राजा ने परियोजना के लिए उनको सोना और चांदी दिया, और उसने यरूशलेम को नष्ट किए जाने पर मंदिर के बर्तनों को वापस कर दिया। उन्होंने मंदिर के अंदर लगाने के लिए लबानोन के देवदार खरीदने के लिए धन दान किया। यहाँ तक कि उसने पशुओं को भी उपलब्ध कराया ताकि लोग परमेश्वर के लिए बलिदान कर सकें। प्रभु ने अपने लोगों के दिलों में हलचल शुरू की। कई लोगों ने परमेश्वर के कार्य करने के लिए यहूदा वापस जाने की चुनौती स्वीकार की। कुछ, जो खुद नहीं जा सकते थे, उन्होंने पैसे और समान दिए।

जब लोग पहुंचे, तो उन्होंने मंदिर स्थल पर परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाया। लोग खुशी से चिल्लाए, और फिर मंदिर का निर्माण शुरू किया।

वहां रहने वाले लोग परेशान थे कि यहूदी वापस आ गए हैं। उन्होंने परियोजना को रोकने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। अंत में, एक नए राजा ने फारस पर शासन किया। उन्होंने उसे एक संदेश भेजा, और नए मंदिर के बारे में खबर दी। उन्होंने उसे निर्माण रोकने के लिए मना लिया।

यहूदी बनानेवालो ने स्थिति को बदलने के लिए रुके और इंतजार करना पड़ा। इससे उन्हें अपने घर बनाने का मौका मिला। कुछ समय बाद, एक के बाद एक परिवार ने अपने घरों में देवदार लगवाया। आखिरकार लबानोन से देवदार का भंडार खत्म हो गया! वे जानते थे कि इसे प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, जब भी कोई

मंदिर के निर्माण के बारे में बात करते, लोग उनसे कहते, "यह निर्माण का अच्छा समय नहीं है।"

भविष्यवक्ता हाग्गै ने लोगों से कहा, "मेरे पास प्रभु का संदेश है! अपने तरीकों पर विचार करो! तुम कहते हो कि यह परमेश्वर का घर बनाने का समय नहीं है। फिर भी तुम अपने घर में रहते हो, जबकि मेरा घर खंडहर है। अपने तरीकों पर विचार करें! अपने तरीकों पर विचार करें!

हाग्गै ने उन्हें बताया कि परमेश्वर ने उनके जीवन से उनकी आशीष निकाल दी है। और उसने कहा, "तुम अनाज की एक बड़ी मात्रा बोते हो, फिर भी बहुत कम फसल लाते हो। तुम खाते हो, लेकिन फिर भी भूखे हो। तुम पीते हो, लेकिन तुम अभी भी प्यासे हो। तुम कपड़े पहनते हो, फिर भी तुम गर्म नहीं हो। तुम पैसा कमाते हो और उसे थैली में डालते हो, पर यह नहीं जानते कि थैली में छेद हैं। अपने तरीकों पर विचार करो!"

लोगों ने सुना, लेकिन वे जानते थे कि मंदिर को बनाने के लिए कोई देवदार नहीं था। हाग्गै ने कहा, "परमेश्वर कहते हैं कि पहाड़ियों में जाओ और आम लकड़ी लाओ और मंदिर में उसका उपयोग करो। वह कहता है कि तुम जो कुछ भी बनाते हो, उससे वह प्रसन्न होगा, और उसकी महिमा होगी। इसलिए लोग मान गए और पहाड़ियों में चले गए और देवदार की जगह आम लकड़ी का इस्तेमाल होने लगा। तब उन्होंने परियोजना को फिर से शुरू करने की तैयारी की।

कुछ समय बाद, एक दूसरा राजा फारस की सत्ता में आया। उसने एक आदेश दिया, "जो कोई भी मंदिर के निर्माण का विरोध करेगा उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा!" इस फरमान के साथ, यरूशलेम के आसपास रहने वाले लोगों को मंदिर के निर्माण में बाधा डालने की अनुमति नहीं थी। इसके बजाय, उन्हें इसके पूरे होने के लिए आपूर्ति देने की आज्ञा दी गई।

लोगों ने उत्साह के साथ काम किया। हाग्गै प्रभु से एक और संदेश लेकर आया। उसने कहा, "मुझे खुशी है कि तुम मेरी बात मान रहे हो!" देखो, मैं तुम्हारे लिए चीजें प्रदान कर रहा हूं। तुमने बीज नहीं लगाया है, तुम्हारी बेलों मे अभी तक अंगूर नहीं लगे हैं, और तुम्हारे पेड़ में फूल नहीं खिले हैं। फिर भी तुमको मुझसे आशीष और प्रावधान मिल रहा है।

ज्यादातर लोग तब खुश थे जब उन्होंने देखा कि इमारत लगभग बन चुकी है, लेकिन कुछ बड़े लोगों ने कहा, "हमें सुलैमान का मंदिर याद है। वह खूबसूरत था! यह मंदिर छोटा है और सुंदर नहीं है।" बनानेवाले हतोत्साहित हो गए।

हाग्गै परमेश्वर का एक और संदेश लेकर आया । "सुलैमान द्वारा बनाया गए मंदिर को कौन याद करता है? इस मंदिर की तुलना उस मंदिर से क्यों कर रहे हैं? नहीं, हतोत्साहित मत हो। इस मंदिर की महिमा, तुम्हारी कल्पना से अधिक होगी। मैं राष्ट्रों को हिला दूंगा और पूरी दुनिया इस पर ध्यान केंद्रित करेगी। 'सभी राष्ट्रों की इच्छा' आएगी और मैं इस मंदिर को महिमा से भर दूंगा। दृढ़ रहो और अपनी आंखों को वर्तमान कार्य पर केंद्रित रखो। मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं।"

इसलिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया ... और उन्होंने काम किया ... और उन्होंने मंदिर को पूरा कर दिया।

173 एज्रा

एज्रा 7 - 10

एज्रा परमेश्वर के नियमों का विशेषज्ञ था। इसलिए, यह तय किया गया कि उसे यरूशलेम के नए मंदिर में जाना चाहिए और लोगों को सिखाना चाहिए।

फारस के राजा ने उसे और उसके सहायकों को यरुशलेम जाने के लिए पत्र लिखा । राजा ने बड़ी मात्रा में सोना और चांदी भेजा।

एज्रा उन न्यायाधीशों को नियुक्त करने के लिए भी अधिकृत किया गया था जो परमेश्वर के नियमों को जानते थे। उन्हें बताया गया था कि फारस का राज्य उन कानूनों को ना मानने वालों को दंडित करेगा।

पुरुषों ने स्वेच्छा से एज्रा के साथ जाकर अपने परिवारों को यहूदा ले जाने के लिए कहा। उन्हें अचानक एहसास हुआ कि समूह में कोई लेवी नहीं थे। इसलिए एज्रा ने एक निवेदन भेजा, और कई लेवियों ने स्वेच्छा से जाने के लिए कहा।

हर कोई जानता था कि फारस से यरूशलेम जाना एक खतरनाक यात्रा थी। उनके पास परिवार, उनकी संपत्ति और बड़ी मात्रा में सोना और चांदी था। फिर भी उनकी रक्षा के लिए उनके पास कोई सैनिक नहीं थे। एज्रा ने राजा से हथियारबंद सैनिक के लिए नहीं कहा क्योंकि उसका कहना था, "परमेश्वर हमारा रक्षक हैं। उसके मज़बूत हाथ उन लोगों पर है जो उसकी सेवा करते हैं।"

इसलिए समूह ने प्रार्थना की और उपवास किया, परमेश्वर से उनकी रक्षा के लिए कहा। वे अपनी यात्रा पर निकल पड़े, और परमेश्वर ने उनकी यात्रा मे उनकी रक्षा की। रास्ते में भी किसी ने उन पर घात लगाने की कोशिश नहीं की। वे यरूशलेम में सुरक्षित रूप से पहुंचे, और सभी सोने और चांदी को मंदिर में ले गए।

कई अगुए एज्रा के पास गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के नियमों के बारे में अपने निर्देशों की तैयारी की थी। उन्होंने कहा, “हमारे कई लोग इस क्षेत्र में

रहने वाले गैर-यहूदियों से खुद को अलग नहीं कर पाए हैं। उन्होंने उनकी महिलाओं से शादी कर ली है, और ये पत्नियां उनके साथ अपने मूर्तिपूजा के तरीके साथ ले आईं हैं।

यह सुनते ही एज्रा चौंक गया। उसने अपने कपड़े फाड़े और मंदिर में जाकर घुटने टेक दिए और अपने हाथ प्रभु की ओर फैलाए। उसने प्रार्थना की "हे प्रभु, हम इसे फिर से कर रहे हैं - हमारे पूर्वजों की तरह। आपने उन्हें कैद में भेज दिया क्योंकि वे विदेशी पत्नियों को ले गए और मूर्तियों की पूजा करने लगे।

"अब आपने हमें थोड़ा समय दिया , हमें यहां वापस आने की अनुमति दी है।" और हमने क्या किया? हमने विदेशी पत्नियों से शादी की। हे प्रभु, हम आपकी आशीष के योग्य नहीं हैं। आपके पास उन छोटे समूह को पूरी तरह से नष्ट करने का अधिकार है जो यहां रहते हैं।"

एज्रा ने रोना, प्रार्थना करना और पाप कबूल करना जारी रखा। जब उसने ऐसा किया, लोग आए और उसके साथ बैठकर प्रार्थना की। जब तक आसपास बड़ी भीड़ जमा नहीं हो जाती, तब तक और लोग आते रहे। वे सभी रोए और अपने पापों को कबूल किया।

अंत में, लोगों ने कहा, "हम जानते हैं कि हमने गलत किया है, लेकिन अभी भी आशा है। हम परमेश्वर से पहले एक वादा करेंगे। हम अपनी विदेशी पत्नियों और उनके बच्चों को भेज देंगे। लेकिन अगर तुमको यह ठीक से करना है तो तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। उठो! कार्य करो! हमें दिखाओ कि हमें क्या करना है और हम करेंगे।"

इसलिए एज्रा इस बात की देखरेख करने के लिए तैयार हो गया, और सुनिश्चित किया कि यह ठीक से किया जा रहा था। सभी लोगों ने अपनी विदेशी पत्नियों को वापस भेज दिया और मूर्तियों से दूर हो गए। उन्होंने तब पूरी तरह से प्रभु के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया।

174 दीवारों का पुनर्निर्माण

नहेमायाह 1 - 13

नहेमायाह एक यहूदी व्यक्ति था जो फारस के राजा की सेवा करता था। एक दिन उसे खबर मिली कि यहूदा में लोग पीड़ित हैं। वह यह सुनकर चौंक गया कि यरूशलेम की दीवारें खंडहर बन गई थीं। वह रोने लगा और कई दिनों तक उदास था। उसने प्रार्थना की और परमेश्वर से अपने लोगों की मदद करने के लिए कहा।

राजा ने देखा कि वह दुखी है, तब नहेमायाह ने उसे यरूशलेम की स्थिति के बारे में बताया। राजा ने कहा, "मैं कैसे मदद कर सकता हूं?"

उसने कहा, "कृपया, मुझे यरूशलेम भेज और मुझे शहरपनाह के पुनर्निर्माण की अनुमति दें।"

राजा ने कहा, "जा। मैं तुझको सुरक्षित यात्रा के लिए पत्र दूंगा।"

जब वह यरूशलेम आया, तो उसने लोगों को यह नहीं बताया कि वह क्यों आया था। इसके बजाय, उसने हालात को देखने में तीन दिन बिताए। अंत में वह अगुओं को साथ लाया और समझाया कि कैसे फारस के राजा ने उसे शहर की दीवारों के पुनर्निर्माण की अनुमति दी थी। उसने कहा, "हम अब इस अपमान के साथ नहीं रह सकते। शहरपनाह के पुनर्निर्माण का समय आ गया है!"

अगुओं ने सहमति व्यक्त की और उस काम के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया। यह तय किया गया था कि प्रत्येक अगुवा अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी के तहत दीवार के एक हिस्से का चयन करेगा। उन्होंने भवन निर्माण शुरू करने के लिए तुरंत अपने परिवारों को संगठित किया।

क्षेत्र के गैर-यहूदी लोग हैरान थे जब उन्होंने देखा कि क्या हो रहा है।

वे हंसे और उनका मज़ाक उड़ाया। "ये लोग अपने शहर के पुनर्निर्माण के लिए बहुत कमजोर हैं। हाँ! अब हम इसे देख सकते हैं। वे दीवार के एक खंड का

निर्माण करेंगे, और एक छोटी लोमड़ी के चढ़ने से वह नीचे गिर जाएगा।"

फिर भी, बनानेवालें दृढ़ थे और तेजी से काम किया। जल्द ही दीवार आधी बन गई, और उन्होंने अलग अलग हिस्सों को जोड़ना शुरू किया । इससे उनके दुश्मन उग्र हो गए। उन्होंने महसूस किया कि इस निर्माण को रोकने के लिए उन्हें कुछ करना होगा। उन्होंने काम करनेवालों को डराया और मारने की धमकी दी। उन्होंने कहा, "इस दीवार को रोकने के लिए जो भी करना होगा हम करेंगे!"

बनानेवाले डर गए, इसलिए उन्होंने दिन-रात निगरानी रखने के लिए पहरेदार रखे।

नहेमायाह ने कहा, “डरो मत। परमेश्वर तुम्हारे दुश्मनों से सामर्थी है। लड़ने के लिए तैयार रहो! अपने साथी यहूदियों के लिए लड़ो। अपने बेटों और बेटियों के लिए लड़ो। अपनी पत्नियों और अपने घरों के लिए लड़ो।”

दीवार के किसी भी हिस्से पर हमला होने की स्थिति में काम करनेवालों ने चेतावनी देने के लिए तरीका बनाया।

लोग उस क्षेत्र में भागने और लड़ने के लिए तैयार थे। सभी ने एक साथ काम किया और जल्द ही दीवारें बनाई गईं, सिवाय फाटकों के। दुश्मन ने फैसला किया कि परियोजना को रोकने की एकमात्र आशा नहेमायाह को मारना है। ऐसा करने के लिए, उसे बहार निकलना ज़रूरी था। इसलिए उन्होंने एक संदेश भेजा और उसे पास के एक गाँव में मिलने के लिए कहा।

नहेमायाह ने कहा, “मैं यहाँ बहुत अच्छा काम कर रहा हूँ। इसे क्यों रोके ताकि हम बात कर सकें?”

उन्होंने उससे मिलने का निवेदन किया। अंत में उन्होंने एक संदेश भेजा, "लोग कह रहे हैं कि तू दीवार का निर्माण कर रहा हैं ताकि तू राज्य के खिलाफ विद्रोह कर सके और खुद को राजा बना सके। यदि तू हम से नहीं मिलता है तो हम तेरे विद्रोह के बारे में फारस के राजा को बताने जा रहे हैं।"

नहेमायाह ने उनकी धमकियों को नज़रअंदाज़ किया और तब तक काम करना जारी रखा जब तक कि दीवार और द्वार पूरे नहीं बन गए। परियोजना को पूरा करने में केवल पचपन दिन लगे। आखिरकार शहर अब सुरक्षित हो गया था।

एज्रा लोगों के सामने खड़ा हुआ और मूसा की व्यवस्था को पढ़ा। उसने इसे देने के लिए परमेश्वर की आराधना की। वे तब रोने लगे जब उन्होंने व्यवस्था का अर्थ सुना। उन्होंने महसूस किया कि उन्होंने इसका पालन नहीं किया है।

नहेमायाह और एज्रा ने कहा, “रोओ मत। यह दिन परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र है। जो परमेश्वर ने किया है, उसके लिए खाओ, पियो, और जश्न मनाओ। प्रभु का आनंद तुम्हारी सामर्थ है!”

लोगों ने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। आसपास के शहरों में रहने वाले यहूदियों ने फैसला किया कि दस में से एक परिवार शहर में चला जाएगा। परमेश्वर ने इस्राएल के लिए महान कार्य किए थे, और यहां तक कि उनके दुश्मन भी यह देखकर चकित थे!

175 एस्तेर का रानी बनना

एस्तेर 1 - 5: 8

एक दिन फारस की रानी ने राजा को दरबार के अधिकारियों के सामने शर्मिंदा किया। वे सभी सहमत थे कि राजा को दूसरी रानी लानी चाहिए। इसलिए एक आदेश दिया गया जिसमें कहा गया था कि सभी सुंदर कुंवारी लड़कियों को महल में आना था। उनमें से, राजा एक नई रानी का चयन करेगा।

एस्तेर एक खूबसूरत युवती थी जिसे उसके बड़े चचेरे भाई मोर्दकै ने पाला था।

वह अपनी सुंदरता और गुणो के कारण महल में गई। लेकिन ... उसके चचेरे भाई ने उससे कहा कि वह किसी को भी न बताए कि वह यहूदी है।

समय के दौरान, उसे नई रानी के रूप में चुना गया। इसके तुरंत बाद, दो घटनाएं हुईं। पहली घटना यह थी, कि मोर्दकै ने राजा को मारने की योजना के बारे में सुना था। उसने इसके बारे में सूचना दी, और साजिश को रोक दिया गया। उसका अच्छा काम सरकारी अभिलेख में दर्ज किया गया था।

दूसरी घटना यह थी, कि हामान नाम के एक व्यक्ति को सरकार में सर्वोच्च पद वाला अधिकारी बनाया गया था। तब से, लोग उसके सामने झुकते थे, जब वह चलता था - मोर्दकै को छोड़कर।

जब हामान ने यह देखा, तो वह क्रोधित हुआ और मोर्दकै को मारना चाहा। लेकिन वह इससे अधिक चाहते था - वह यहूदियों को पूरी तरह से नष्ट करना चाहता था।

इसलिए वह राजा के पास गया और कहा, "राज्य में ऐसे लोग हैं जो हम से अलग हैं। वे तेरे कानूनों का पालन नहीं करते क्योंकि उनके पास अपनी स्वयं की व्यवस्था है। उन्हें जीवित रहने देना अच्छा नहीं है। मुझे उन सभी को मारकर तेरी सेवा करने की अनुमति दें। ऐसा करने की लागत के लिए व्यक्तिगत रूप से भुगतान करना मेरा सम्मान होगा।"

राजा हामान की राज्य की सेवा करने की इच्छा से प्रसन्न था, इसलिए उसने उसे यहूदी लोगों को नष्ट

करने का अधिकार दिया। हामान ने एक तारीख तय की और फिर एक घोषणा की।

इसमें कहा गया है कि सभी यहूदियों को एक तय दिन को मार दिया जाएगा। इसमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल होंगे। उनकी संपत्ति उनको दी जाएगी जो उन्हें मारेंगे।

एक बार जब इस घोषणा को कई भाषाओं में अनुवादित किया गया, इसे राज्य के सभी देशों में भेज दिया गया। सभी यहूदी डर और दहशत से भर गए।

एस्तेर महल में थी और उसे इस फरमान के बारे में पता नहीं था। जल्द ही उसने सुना कि मोर्दकै एक सार्वजनिक स्थान पर विलाप कर रहा था। उसने नौकर से पूछा कि क्या समस्या है। मोर्दकै ने नौकर को सब कुछ बताया और उसे वह घोषणा दिखाई। उसने कहा, "रानी से कहो कि वह राजा से बात करे और उससे अपने लोगों पर दया करने के लिए कहे।"

उसने उसे एक संदेश भेजा। "बिना निमंत्रण के किसी को भी राजा के सामने जाने की अनुमति नहीं है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें तब तक मौत के घाट उतार दिया जाता है, जब तक कि उनकी ओर स्वर्ण राजदंड न किया जाता है। 30 दिन हो गए जब उसने आखिरी बार मुझे अपने सामने बुलाया था।

मोर्दकै ने उसके पास वापस संदेश भेजा। ''यह मत समझ सिर्फ इसलिए कि तू महल में रहती है तू इससे बच जाएगी। सुन, यदि तू मदद नहीं करती हैं, तो तेरे लोगों का किसी अन्य तरीके से छुड़ाव किया जाएगा। फिर भी, तू मर जाएगी! मेरा मानना है कि तुझको ऐसे ही समय के लिए राज्य में लाया गया था।"

उसने एक चिट्टी वापस भेजी। "हमारे लोगों से कह कि तीन दिन उपवास करें। वे कुछ भी ना खाए और ना पीए। मैं और मेरे सेवक भी ऐसा ही करेंगे। फिर मैं राजा के सामने जाऊंगी, भले ही वह कानून के खिलाफ हो। अगर मैं मर गई तो मैं मर गई।"

तीन दिनों के बाद, एस्तेर ने अपने शाही वस्त्र पहनें और भीतर के दरबार में खड़ी हो गई ताकि राजा उसे अपने सिंहासन से देख सकें। जब उसने देखा, तो वह उसे देखकर प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत सोने का राजदंड उसकी ओर बढ़ाया। वह गई और राजदंड के शीर्ष को छूआ।

उसने कहा, "मुझे बता कि तू क्या चाहती है, और मैं तुझे वह दे दूंगा।"

उसने कहा, "अगर यह आपको प्रसन्न करता है, तो मैं चाहती हूं कि आप और हामान मेरे द्वारा तैयार किए गए भोज में आएं।"

"ठीक है!" राजा ने कहा। "पेहरेदारो, जाओ और हामान को यहाँ लाओ। हम रानी एस्तेर के भोज में जा रहे हैं।"

अगली कहानी में जारी

176 एस्तेर द्वारा अपने लोगों को बचाया जाना

एस्तेर 5: 9 - 10: 3

पिछली कहानी से जारी

राजा और हामान, रानी एस्तेर के भोज में गए। बाद में राजा ने कहा, "अब मुझे अपना अनुरोध बता ताकि मैं तुझको वह दे सकूं।"

"ओह राजा, अगर यह सच है कि आप मेरे अनुरोध को स्वीकार करना चाहते हैं, तो कृपया हामान को लाएं और कल दूसरे भोज में आएं। मैं आपको तब बताऊंगी।"

उस दिन राजसभा से बाहर निकलते समय हामान को गर्व था।

उसे लगातार दो दिन रानी के भोज में आमंत्रित किया गया था! अचानक उसका आनंद क्रोध में बदल गया, जब उसने देखा कि मोर्दकै एक बार फिर उसके सामने नहीं झुका। वह उस शाम दोस्तों के साथ था। उसने बताया कि इस यहूदी ने उसका आनन्द बर्बाद कर दिया था।

उन्होंने कहा, "एक 75 ऊंचा फांसी का खम्बा बना। सुबह-सुबह राजा के पास जा और उन्हें मोर्दकै की मृत्यु का आदेश देने के लिए कह। उसे तुरंत फांसी पर लटका दें ताकि तू रानी के भोज का आनंद ले सकें।"

हामान ने एक नौकर को बुलाया और फांसी का फंदा बनाने का आदेश दिया।

उस रात वह सो नहीं पा रहा था। इसलिए वह अपने सोने के कमरे में आया और आधिकारिक अभिलेख पढ़ा। नौकर ने पढ़ा कि कैसे मोर्दकै ने उसे मारने की साजिश का खुलासा करके राजा की जान बचाई थी।

राजा ने कहा, "इस आदमी को क्या पुरस्कार दिया गया?" नौकर ने अभिलेख को देखा, फिर कहा, " उसे पुरस्कार नहीं दिया गया था, मेरे राजा।"

"इस आदमी को पुरस्कृत करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया!" राजसभा में जा और देख कि क्या कोई है।"

नौकर ने हामान को राजा से मिलने का इंतज़ार करते पाया। राजा ने कहा, "उसे अंदर लाओ।" इससे पहले कि हामान बात कर पाता, राजा ने कहा, "मुझे उस आदमी के लिए क्या करना चाहिए जिसे मैं एक विशेष तरीके से सम्मान देना चाहता हूं?"

हामान ने तुरंत अपने बारे में सोचा। उसने कहा, "ओह, मेरे राजा। आपको अपने शाही वस्त्र और मुकुट पहिनाकर इस आदमी का सम्मान करना चाहिए। उसे अपने घोड़े पर बिठाकर आपके सबसे महान अधिकारी उसे सड़कों पर चिल्लाते हुए ले चलें, 'राजा उस आदमी के लिए यह करता है, जिसे वह सम्मान देना चाहता है!''

राजा प्रसन्न हुआ। "बहुत अच्छा। जा और मोर्दकै को खोज और वह सब कुछ कर जो तूने कहा था। सावधान रह, कि तू कुछ भी भूल ना जाए।"

हामान सदमे में वहाँ खड़ा था, लेकिन उसे राजा की हर बात को पूरा करना था।

उसने मोर्दकै पर शाही वस्त्र और मुकुट रखा, उसे शाही घोड़े पर बिठाया, और उसे शहर में चिल्लाते हुए ले गया, "राजा उस आदमी के लिए यह करता है, जिसे वह सम्मान देना चाहता है!"

जब यह सब हो गया, तो हामान अपमान से भरा घर चला गया, लेकिन रानी का भोज उसका इंतजार कर रहा था। इसलिए उसे वहाँ पहुँचने को जल्दी करनी पड़ी।

खाने के बाद, राजा ने एस्तेर से पूछा, "मुझे बता कि तुझे क्या चाहती है ताकि मैं तुझ वह दे सकूं।"

उसने कहा, "हे राजा, अगर मेरी विनती स्वीकार हो, तो मेरे जीवन और मेरे लोगों के जीवन को बचा ले। एक आदमी ने मेरी पूरी जाति को नष्ट करने की साजिश रची।"

राजा चौंक गया, "यह आदमी कौन है और वह कहाँ है?"

एस्तेर ने हामान की ओर इशारा किया। "हमारा दुश्मन यह दुष्ट आदमी है।"

हामान घबरा गया। वह बोल भी नहीं पा रहा था। राजा ने उसकी ओर देखा और क्रोधित हो गया। वह उठा और बगीचे में चला गया ताकि वह सोच सके।

हामान भागा और एस्तेर के पैरों पर गिरकर अपनी जान की भीख माँगने लगा। राजा वापस कमरे में आया और उसने देखा कि हामान रानी के बगल में लेटा है।

उसने कहा, "क्या तू मेरे सामने रानी का बलात्कार करने जा रहा है?"

जैसे ही उसने यह कहा, नौकर दौड़कर आए और हामान के सिर पर एक डंडा रख दिया। उनमें से एक राजा के पास गया। "हामान ने उस आदमी को फांसी देने के लिए योजना बनाई है जिसने आपकी जान बचाई थी।"

इससे राजा और भी क्रोधित हुआ। उसने हामान को इशारा किया, "उसे उसी पर लटकाओ!"

हामान को तुरंत बाहर ले जाया गया और उसके द्वारा बनाई गए फांसी के खंबे पर लटका दिया गया। इसके बाद, राजा ने उसकी जगह मोर्दकै को दी।

इस तरीके से, यहूदी लोग उस विपत्ति से बचाए गए जिसकी योजना हामान ने बनाई थी, और मोर्दकै सरकार में सर्वोच्च पद वाला अधिकारी बन गया।

177 जिब्राईल की घोषणाएँ

लूका 1: 5-80

जकरयाह एक याजक था जो परमेश्वर के पीछे चलता था। वह और उसकी पत्नी इलीशिबा के बच्चे नहीं थे, और उनके बच्चे पैदा करने की उम्र चली गई थी।

एक दिन, जकरयाह को मंदिर में जाने और वेदी पर धूप जलाने के लिए चुना गया । लोग बाहर प्रार्थना में इंतजार कर रहे थे। अचानक एक दूत याजक को दिखाई दिया और कहा, “जकरयाह, तेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया है। इलीशिबा एक बेटे को जन्म देगी, और तू उसे यूहन्ना नाम देना। वह तेरे दिल में एक खुशी होगा। वह प्रभु के सामने महान होगा और मसीहा के लिए रास्ता तैयार करेगा।”

जकरयाह डर गया और कहा, “यह कैसे संभव है? हम बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े हैं।”

दूत ने कहा, "मेरा नाम जिब्राईल है, और मैं प्रभु की उपस्थिति में खड़ा हूं। उसने तुझको यह खुशखबरी देने के लिए मुझे भेजा, और तू मेरी बात पर विश्वास नहीं कर रहा है। इसलिए, तू तब तक बोलने में सक्षम नहीं होगा जब तक मैंने जो कुछ कहा है वह वास्तव में नहीं होता है।”

बाहर के लोग सोच रहे थे कि याजक इतनी देर क्यों लगा रहा है। स्वर्गदूत के चले जाने के बाद, जकरयाह बाहर गया और उनके सामने खड़ा हो गया। उसने कुछ कहने की कोशिश की लेकिन कह नहीं पाया क्योंकि वह बात नहीं कर सकता था। लोगों ने सोचा कि उसने एक दर्शन देखा है।

याजक घर चला गया, और जल्द ही इलीशिबा एक बच्चे के साथ गर्भवती हो गई। खुशी के साथ, वह खुद को एकांत में ले गई।

जब वह छह महीने की गर्भवती थी, तो वही दूत नासरत नामक शहर में गया। वह मरियम नामक एक युवा महिला को दिखाई दिया।

वह यूसुफ नामक एक व्यक्ति की मंगेतर थी। दोनों दाऊद के वंशज थे।

जिब्राईल ने उससे कहा, "मरियम, परमेश्वर ने तुझे आशीष दी है।" युवती

हैरान थी और उसे पता नहीं था कि क्या कहना है।

दूत ने कहा, "डर मत। परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। तू एक पुत्र को जन्म देगी, और तूझे उसका नाम यीशु रखना होगा। वह महान होगा, और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा।

मरियम ने कहा, "यह सच कैसे हो सकता है? मै कुवारी हूँ।"

"पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा और तू गर्भवती होगी। इसलिए, बच्चे को परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा! मरियम, परमेश्वर के माध्यम से सब संभव है। यहां तक कि तेरी बहन इलीशिबा भी बुढ़ापे में बच्चा पैदा करने वाली है।"

उसी के साथ, मरियम ने अपना सिर झुकाया और कहा, "मैं प्रभु की दासी हूं। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ऐसा होने दो।"

दूत के जाने के बाद, मरियम उसकी बहन से मिलने गई। जैसे ही इलीशिबा ने उसकी आवाज़ सुनी, उसके गर्भ में उसका बच्चा अंदर उछला, और वह पवित्र आत्मा से भर गई। उसने कहा, "ओह मरियम, तू सभी महिलाओं से अधिक धन्य है, जो बच्चा तेरे पेट में है, वह धन्य है। मैं कैसे योग्य हूँ कि मेरे प्रभु की माँ मुझसे मिलने आये?"

मरियम इस बुद्धिमान बुजुर्ग महिला के साथ तीन महीने रही, उससे सीखती रही और प्रोत्साहन प्राप्त किया। बाद में, वह अपने परिवार का सामना करने के लिए घर गई।

मरियम के जाने के बाद इलीशिबा ने एक बच्चे को जन्म दिया। पड़ोसी और परिवार बूढ़े जोड़े के साथ खुशी मनाने आए। उन्होंने कहा, "हम बच्चे का नाम जकरयाह रखेंगे, उसके पिता के नाम पर।"

इलीशिबा ने कहा, "नहीं! उसका नाम यूहन्ना है।"

"यूहन्ना! यूहन्ना नाम का तेरे परिवार में कोई नहीं है। हम इस बारे में जकरयाह से बात करेंगे।" याजक ने लिखकर दिया, "उसका नाम यूहन्ना है!"

फिर तुरंत वह बात करने लगा था। "ओह, प्रभु धन्य हो। वह "वादा किया हुआ" भेज रहा है, जो हमें परमेश्वर के पास वापस लाएगा। "

उसने अपने बेटे को उठाया और कहा, "तू परमेश्वर का नबी होगा और मसीहा के लिए रास्ता तैयार करेगा। वह हमें उद्धार और पापों की क्षमा प्रदान करेगा। वह हमें शांति देगा।"

178 यीशु का जन्म

मत्ती 1: 18-25, लूका 2: 1-38

युसूफ को पता चला कि मरियम इलीशिबा के घर जाने के तुरंत बाद गर्भवती थी। वह जानता था कि वह उस बच्चे का पिता नहीं है। फिर भी, क्यूंकि वह एक धर्मी व्यक्ति था, इसलिए वह उसका अपमान नहीं करना चाहता था।

उसने सगाई तोड़ने और चुपचाप उसे छोड़ने का फैसला किया।

वह गहरी सोच में सो गया तब एक सपने में एक दूत उसे दिखाई दिया। "यूसुफ, मरियम को लाने और उसे अपनी पत्नी बनाने से मत डर। वह बच्चा जो उसके गर्भ में है, पवित्र आत्मा से है। जब वह पैदा होता है, तो उसका नाम यीशु रखना। वह मसीहा है। वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।" यूसुफ ने संकोच नहीं किया। उसने तुरंत मरियम को अपनी पत्नी बनाया, लेकिन बच्चे के जन्म के बाद तक वह उसके पास नहीं आया।

वे नासरत में रहते थे, जो इस्राएल के उत्तरी भाग में था। फिर भी शास्त्रों मे लिखा था कि मसीहा बैतलहम में पैदा होगा, जो यरूशलेम के पास है। उस समय, रोम के साम्राज्य ने एक आदेश भेजा, जिसमें सभी को अपने मूल शहर में उनके नाम लिखे जाने की आवश्यकता थी। इसलिए, यूसुफ और उसकी पत्नी को बैतलहम जाना पड़ा।

उनके वहाँ पहुँचने के तुरंत बाद, मरियम के बच्चे को पैदा करने का समय आ गया। जैसे ही बच्चा पैदा हुआ, उसने उसे कपड़े की पट्टियों में लपेटा, और उसे एक चरनी में लेटा दिया क्योंकि सोने के लिए कोई जगह नहीं थी। और मसीहा का जन्म हुआ।

उसी रात, चरवाहें पास के एक खेत में अपने झुंड देखरेख कर रहे थे। अचानक एक दूत उनके पास आकर खड़ा हो गया, और वह जगह प्रभु की महिमा से भर गई। चरवाहे घबरा गए, लेकिन दूत ने कहा, "डर मत। मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी खबर लाया हूँ!"

उसने फिर पास के शहर की ओर इशारा किया।

"आज रात, उद्धारकर्ता बैतलहेम में पैदा हुआ है। वह मसीहा है। वहाँ जाओ, और तुम एक बच्चे को

कपड़े में लिपटे और एक चरनी में पड़ा हुआ पाओगे।"

अचानक पूरा आकाश मंडल दूतों से भर गया, जो परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे थे, और कह रहे थे, ''परमेश्वर की जय! पृथ्वी पर शांति और सद्भावना।" फिर, वे गायब हो गए।

जैसा कि उन्हें बताया गया था, चरवाहों ने तुरंत किया। उन्होंने बैतलेहम में जाकर मरियम, यूसुफ और बच्चे को पाया, जैसा कि दूत ने कहा था। उन्होंने उन्हें बताया कि उस रात क्या हुआ था, और हर कोई चकित था। बाद में, वे मैदान में वापस चले गए, जो उन्होंने देखा था उसके लिए परमेश्वर की प्रशंसा की।

एक दिन बाद, यूसुफ और मरियम के लिए यीशु को मंदिर में ले जाने और प्रभु को बलिदान देने का समय आया। इसलिए वे तीनों यरूशलेम गए।

मंदिर में एक आदमी था जिसका नाम शिमोन था। परमेश्वर ने उसे बताया था कि वह तब तक नहीं मरेगा जब तक कि वह "वादा किए हुए" को नहीं देखा लेता।

परमेश्वर के आत्मा ने उसे उस दिन मंदिर जाने के लिए प्रेरित किया। उसने यूसुफ और मरियम को देखा और पूछा कि क्या वह बच्चे को उठा सकता है। यीशु के चेहरे की ओर देखते हुए, उसने कहा, "ओह, परमेश्वर की स्तुति हो!" स्वर्ग की ओर देखते हुए उसने कहा, “प्रभु, अब तू मुझे मरने दे सकता है। मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देखा है।”

हन्ना नाम की एक महिला उसके पास गई।

वह 84 वर्ष की थी, और उसने मंदिर में परमेश्वर की सेवा तब से की जब उसके पति की शादी के सात साल बाद मृत्यु हो गई। उसने बच्चे को देखने चाहा। बाद में, उसने सभी से कहा, “वादा किया हुआ आ गया है! वादा किया हुआ आ गया है!"

तब यूसुफ अपने छोटे परिवार को बैतलहम में उनके घर ले गया।

179 राजा के लिए उपहार

मत्ती 2

जब यीशु अभी भी एक छोटा बच्चा था, तब कुछ लोग पूर्व से आए। उन्हे उनकी शोध से पता चला है कि एक शाही उद्धारकर्ता एक दिन इस्राएल में आएगा। उन्होंने सितारों का अध्ययन किया, और उन संकेतों को देखा जो यह बताते थे कि इस राजा का जन्म हुआ था।

वे यरूशलेम गए और हेरोदेस से बात की, जो राजा रोम के लोगों द्वारा इस्राएल पर शासन करने के लिए नियुक्त किया गया था। उन्होंने कहा, "वह बच्चा कहां पैदा हुआ है जो यहूदियों का राजा है?" हमने उसका सितारा देखा है, उसकी आराधना करने आए हैं।”

हेरोदेस दुष्ट और क्रूर था। अपने प्रदेश में एक अलग राजा के पैदा होने की खबर सुनकर वह क्रोधित हो गया। फिर भी, उसने खुद को नियंत्रित किया और पुरुषों से कहा कि वह इस मामले को देखेगा। उसने याजकों और शिक्षकों को बुलाया और पूछा, " तुम्हारे शास्त्र कहाँ कहते हैं कि मसीहा पैदा होगा?"

उन्होंने जल्दी जवाब दिया। "वह बैतलहम में पैदा हुआ है।"

हेरोदेस अपने मेहमानों के पास वापस गया और उसने स्वर्गीय संकेतों के बारे में पूछा, और वास्तव में वह शाही तारा पहली बार दिखाई दिया था। फिर उसने उनसे कहा, “बैतलहम जाओ। एक बार जब तुम उस बच्चे को पा लेते हों, तो मुझे वापस आ कर बताना। मैं जाना चाहता हूँ ..... की उसकी भी आराधना करूँ।"

पुरुषों ने कुछ मील की दूरी पर बैतलहम की यात्रा की और ठीक उसी घर में गए जहाँ यूसुफ, मरियम और छोटा बच्चा रहता था। उन्होंने यीशु के सामने झुककर उसकी आराधना की। उन्होंने उसे सोने, मुर्र और लोबान के उपहार दिए।

परमेश्वर ने इन आदमियों को चेतावनी दी कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएँ, इसलिए वे यरूशलेम से बचकर एक अलग रास्ते से घर की ओर चले गए। उस रात, यूसुफ को एक स्वर्गदूत दिखाई दिया। "उठ! हेरोदेस बच्चे को मारने के लिए सैनिक भेजेगा।

मिस्र जा और वहाँ रह जब तक मैं तुझे लौटने के लिए न कहूँ।" इसलिए यूसुफ रात में उठा और अपने परिवार को मिस्र ले गया।

हेरोदेस गुस्से में था जब उसे पता चला कि पूरब के लोगों ने उसकी आज्ञा नहीं मानी थी। उसने बैतलहम में सैनिकों को भेजा और सभी युवा लड़कों को मरवा डाला - जो दो साल से कम उम्र के थे।

समय के साथ, हेरोदेस की मृत्यु हो गई, और स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया कि इस्राएल लौटना सुरक्षित है। फिर भी, उसने बैतलहम वापस जाने के बजाय अपने परिवार को नासरत ले जाने का फैसला किया।

यीशु बढ़ता गया और बलवान होता गया। वह ज्ञान से भर गया था, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

180 बारह साल का

लूका 2: 40-52

जब यीशु बारह वर्ष का था, तब यूसुफ और मरियम फसह मनाने के लिए उसे यरूशलेम ले गए। जब उनके घर लौटने का समय हुआ, तो यीशु अपने माता-पिता को बताए बिना, मंदिर में रुक गया। उन्होंने पूरे दिन की यात्रा पूरी की यह सोचकर कि वह भीड़ के बीच था।

उस शाम उन्हें एहसास हुआ कि वह वहां नहीं है। वे वापस यरूशलेम गए और तीन दिनों तक उसकी खोज की। अंत में यीशु उन्हें मंदिर के आंगन में शिक्षकों के बीच बैठा मिला।

वह उनकी बातें सुन रहा था और सवाल पूछ रहा था। जिसे सुनकर हर कोई उसकी समझ और सवालों के जवाब देने की क्षमता से आश्चर्यचकित था।

उसकी माँ ने भागते हुए कहा, "बेटा, तुम हमारे साथ ऐसा कैसे कर सकते हो? हम तुमको खोज रहे थे।"

उसने कहा, "आप निश्चित रूप से जानते थे कि मैं यहां अपने पिता के घर में रह रहा हूं - अपना काम कर रहा हूं।" उन्हें समझ में नहीं आया कि वह किस बारे में बात कर रहा था।

यीशु नासरत वापस चला गया, और अपने माता-पिता के अधीन रहने लगा। वह बड़ा हो गया, और परिपक्व हो गया, और जो कोई भी उसे जानता था, उसका आदर करता था। उसके जीवन पर परमेश्वर की आशीष थी।

181 बपतिस्मा और परीक्षा

मत्ती 3: 1 - 4:11, मरकुस 1: 9-13
लूका 3:21 - 4:13, यूहन्ना 1: 19-34

जब यूहन्ना बड़ा हुआ और एक आदमी बन गया, परमेश्वर उसे जंगल में ले गया। वह ऊंट के बालों से बने कपड़े पहता, और े टिड्डे और जंगली शहद खाता था। उसने प्रचार किया कि लोगों को अपने पापों से पश्चाताप करना चाहिए और अपने दुष्ट कार्य छोड़ने चाहिए। उसने उनसे कहा, "अब्राहम के बच्चे होने पर भरोसा मत करो। परमेश्वर चट्टानों से अब्राहम के बच्चे बना सकता है।" उसने तब उन लोगों को बपतिस्मा दिया जो परमेश्वर के लिए जीना चाहते थे।

कुछ धार्मिक अगुओं ने उससे ेे पूछा, "क्या तू मसीहा हैं?"

उसने कहा, "नहीं, मैं मसीह नहीं हूं। मुझे उसके लिए रास्ता तैयार करने के लिए भेजा गया है। वह मेरे बाद आएगा। मैं उसके जूते खोलने योग्य भी नहीं हूं।"

अगले दिन, यूहन्ना यरदन नदी में बपतिस्मा दें रहा था, जब उसने यीशु को अपनी ओर आते देखा।

यूहन्ना भीड़ में से चिल्लाया, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना हैं जो दुनिया के पापों को लिए जाता हैं! यह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु पानी में चला गया और उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए कहा। यूहन्ना ने कहा, "नहीं, तू मुझे बपतिस्मा दे।"

यीशु ने कहा, "ऐसा होने दे। यह परमेश्वर की इच्छा है।"

इसलिए यूहन्ना ने यीशु को सभी लोगों के सामने बपतिस्मा दिया। जब वह पानी से बाहर आया, तो आकाश अचानक खुल गया और परमेश्वर्ना का आत्मा, कबूतर की तरह, उस पर आ गया। फिर एक आवाज़ नें कहा, "तू मेरे बेटा है! मैं तुझसे प्रसन्न हूं।"

बपतिस्मे के बाद, परमेश्वर का आत्मा े यीशु को जंगल में शैतान के द्वारा परीक्षा के लिए ले गया। उसने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया। उसके बाद उसे बहुत तेज़ भूख लगी।

अचानक शैतान आया और कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों को रोटी में बदल दे ताकि तू कुछ खा सके ेे।"

यीशु ने कहा, "परमेश्वर का वचन कहता है कि, मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीवित रहेगा, बल्कि हर उस वचन से है जो परमेश्वर के मुख से निकलता है!"

मंदिर की दीवार के सबसे ऊंचेचे बिंदु पर शैतान उसे यरूशलेम ले गया। यीशु ने नीचे चट्टानों को देखा। शैतान ने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को इस दीवार से नीचे फेंक दे। परमेश्वर का वचन कहता है कि तेरी देखभाल करने वाले स्वर्गदूत हैं। वे तुझको उन चट्टानों पर गिरने से बचाए रखेंगे। तेरे पैर के अंगूठे को भी चोट नहीं पहुंचेगी।

यीशु ने कहा, "हाँ, लेकिन परमेश्वर का वचन यह भी कहता है, 'तुम परमेश्वर की परीक्षा मत लेना!"

शैतान तब यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया। उसने पृथ्वी के राज्यों को, उनकी महिमा में, उसके सामने प्रकट किया। उसने यीशु की ओर मुड़कर कहा, "मैं तुझे यह सब कुछ दूँगा, जो तूम देख रहे हो। तुझको बस इतना करना है कि झुककर मेरे सामने दंडवत करना है।" यीशु ने मुड़कर उसे देखा। "मुझसे दूर हो शैतान! परमेश्वर का वचन कहता है, 'उसकी ही आराधना करो। परमेश्वर ही की सेवा करो।'

उसी के साथ, शैतान उसके पास से चला गया। जल्द ही स्वर्गदूत यीशु के पास आए और उसकी ज़रूरतों की देखभाल करने लगे।

182 पानी से दाखरस

यूहन्ना 1:35 - 2:11

एक दिन, यूहन्ना ने यीशु को जाते देखा। वह अपने ही शिष्यों की ओर मुड़ा और कहा, "देखो, वहाँ परमेश्वर का मेम्ना है।" यूहन्ना के दो शिष्य तुरंत यीशु के पीछे चलने लगे और उसके साथ पूरा दिन बिताया। उनमें से एक का नाम अन्द्रियास था। वह अपने भाई के पास गया और बोला, "शिमोन, हमें मसीहा मिल गया है!"

उसका भाई उत्सुक था, इसलिए वह खुद देखने गया। जैसे ही यीशु ने उसे देखा, उसने कहा, "तेरा नाम शिमोन है, लेकिन अब से तू पतरस के रूप में जाना जाएगा।"

अगले दिन, यीशु को फिलेप्पुस नाम का एक व्यक्ति मिला, और उससे कहा, "मेरे पीछे आओ!"

फिलेप्पुस ने जाकर अपने दोस्त नतनएल को पाया। "हमें वह मिल गया है, जिसके बारे में मूसा और सभी नबियों ने बात की थी। उसका नाम यीशु है, वो नासरत से है।"

नतनएल को आश्चर्य हुआ। "नासरत! क्या नासरत से कुछ अच्छा निकल सकता है?"

"आएं और अपने आप को देखें।"

जब यीशु ने नतनएल को आते देखा, तो उसने कहा, "यहाँ एक सच्चा इस्राएली है - एक ईमानदार आदमी - जिसमें कोई दिखावा नहीं है।

फिर से नतनएल को आश्चर्य हुआ। "तुम मुझे कैसे जानते हो?"

"आह, मैंने तुम्हें तब देखा जब फिलेप्पुस ने तुमसे बात की थी - जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे खड़े थे।"

तीसरी बार, नतनएल को आश्चर्य हुआ।

फिर उसने कहा, "तुम परमेश्वर के पुत्र हो, इस्राएल का सच्चा राजा।"

यीशु ने कहा। "नतनएल, तुम विश्वास करते हो, क्योंकि मैंने कहा कि मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था। तुम इससे बड़ी चीजें देखने जा रहे हों!"

इस समय के दौरान यीशु और उसके शिष्यों को उसकी मां के साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था और वह काना में एक शादी में शामिल

हुआ। बाद में दिन में, मरियम यीशु के पास आई और कहा, "उनके पास दाखरस खत्म हो गया है"

उसने उसकी ओर देखा और कहा, "आप मेरे लिए यह समस्या क्यों लाई हो? आप जानती हैं कि अभी मेरा समय नहीं है।"

वह नौकरों की ओर मुड़ी। "वह जो कुछ भी तुम्हें करने के लिए कहता है वह करो।"

उन्होंने उसके निर्देशों का इंतज़ार करते हुए उसकी ओर देखा।

उसने पास में छह बड़े पत्थर के पानी के घड़े देखे। प्रत्येक में लगभग 76 लीटर पानी भरा जा सकता था।

उसने नौकरों से कहा, "उन घड़ों को पानी से भर दो।"

उन्होंने जल्दी से सभी छह घड़ों को पानी से भर दिया, घड़े के मुँह तक। जब ऐसा हो गया, तो उन्होंने यीशु की ओर देखा। उन्होंने कहा, "अब इस को निकालो और दावत के प्रबंधक के पास ले जाओ।"

नौकरों को जैसा कहा गया था उन्होंने वैसा ही किया। दावत के प्रबंधक को पता नहीं था कि यह दाखरस कहां से आया है, तो उसने इसे चखा। उनके आश्चर्य के लिए, यह उस दिन दिए गए किसी भी दाखरस से बेहतर था!

वह दूल्हे के पास गया और कहा, "तुमने यह कहाँ छिपा रखाा था. आमतौर पर सबसे अच्छी दाखरस दावत की शुरुआत में दीं जाती है। फिर, जैसे जैसे दिन गुज़रता है, कम अच्छी दाखरस दी जाती है। तुमने अब तक ी सबसे अच्छी बचा के रखी थी।"

यह पहला चमत्कार था जो यीशु ने किया था।

183 नया जन्म

यूहन्ना 2:13 - 3:21, संख्या 21: 4-9

यरूशलेम में फसह मनाने के लिए यीशु अपने शिष्यों को ले गया। जब वह वहां पहुंचा, तो उसने मंदिर में लोगों को विदेशी धन का आदान-प्रदान करते हुए और बलि के लिए जानवरों को बेचते देखा।

उसने चमड़े के पट्टियों से एक कोड़ा बनाया और जानवरों को मंदिर से बाहर निकाल दिया। उसने सिक्कों को बिखेरते माज़े, जिन पर पैसे रखे थे, उन्हें पलट दिया। उसने कबूतरों के मालिकों से कहा, "इन चीजों को यहाँ से ले जाओ! तुमने मेरे पिता के घर को एक बाज़ार में बनाया हुआ है।"

कुछ अगुओं ने उसेहें चुनौती दी और कहा, "तुझको ऐसा करने का अधिकार किसने दिया? हमें एक संकेत दे।"

उसने कहा, "इस मंदिर को फाड़ दो और मैं इसे तीन दिनों में फिर से बनाऊंगा।" वे चकित थे! उन्हे नहीं लगा कि वह अपने शरीर के बारे में बात कर रहा था।

अन्य लोग फसह के दौरान यीशु के पास इकट्ठे हुए और उसकी शिक्षा सुनी। जब उन्होंने उसके चमत्कारों को देखा, उन्होंने उस पर विश्वास किया।

नीकुदेमुस एक यहूदी शासक और एक फरीसी था। वह रात को यीशु के पास आया और उसने कहा, "शिक्षक, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से है क्योंकि हमने तेरे चमत्कारों को देखा है।"

यीशु ने उससे सीधी बात की और कहा, "मेरी बात ध्यान से सुन। जब तक कोई व्यक्ति नया जन्म ना प्राप्त करे, वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता है।

नीकुदेमुस हैरान था। "यह असंभव है! एक आदमी अपनी माँ के गर्भ में वापस कैसे जा सकता है, और दूसरी बार कैसे पैदा हो सकता है?"

यीशु ने समझाया, "स्वर्ग जाने के लिए, एक व्यक्ति को शारीरिक जन्म और आध्यात्मिक जन्म दोनों का अनुभव करना होगा। यदि तू केवल एक बार पैदा हुआ हैं, तो तू इस धरती की चीजों पर ध्यान केंद्रित करेगा। जो लोग आत्मिक रूप से जन्म लेते हैं वे आत्मा की बातों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। तुझको दूसरी बार जन्म लेना चाहिए।'' इतना चकित मत होना। ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें तू अपनी आंखों से नहीं

देख सकता है। तू हवा को सुनता है और महसूस करता हैं, लेकिन तू इसे देख नहीं सकता। परमेश्वर के आत्मा के साथ भी ऐसा ही है।"

नीकुदेमुस ने अपना सिर हिलाया, "मुझे अभी समझ नहीं आया है।"

यीशु ने पीछे मुड़कर उसे देखा। "तू इस्राएल का एक शिक्षक हैं, और तू इन चीजों को नहीं समझता?

"जंगल में, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के खिलाफ शिकायत की। उसने उनके बीच सांप भेजे, और कई लोग मर गए। उसने तब मूसा को पीतल का एक सांप बनाने और उसे एक खंभे पर लटकाने के लिए कहा। जिसने उसे देखा वे ठीक हो गया।

"मनुष्य के पुत्र के साथ भी यही होगा। उसे उठा लिया जाएगा, और जो लोग उस पर विश्वास करते हैं, वे अनंत जीवन पाएंगे। परमेश्वर दुनिया से इतना प्यार करते है कि उसने अपने बेटे को दुनिया को बचाने और लोगों के लिए अनंत जीवन देने के लिए भेजा जो उस पर विश्वास करते है ।

"मुझे इसे ध्यान से समझाने दें ताकि तू इसे अच्छी तरह से समझ सके। यदि तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, तो तेरे पास अनन्त जीवन होगा। यदि तू उस पर विश्वास नहीं करता हैं, तो परमेश्वर का न्याय तुझ पर होगा।"

184 कुएँ पर महिला

यूहन्ना 4: 1-42

एक बार यीशु अपने चेलों को सामरिया के रास्ते ले गया, जब वह यरूशलेम से गलील जा रहा था। यह असामान्य था, क्योंकि यहूदी सामरी लोगो के साथ कोई भ संपर्क नहीं रखते थे।

दोपहर के आसपास, वे सब सामरी गांवों में एक कुएं के पास आए। यीशु थक गया था, इसलिए वह बैठ गया और उसके शिष्य भोजन खरीदने के लिए शहर में गए।

एक सामरी महिला पानी लेने के लिए कुएँ पर आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी दे।"

महिला हैरान हो गई। "यहूदी आमतौर पर सामरी लोगों से बात नहीं करते हैं। इसलिए, तूने मुझसे, एक सामरी महिला से, पीने के लिए क्यों कहा? "

यीशु ने कहा, "यदि तू जानती कि मैं कौन हूं, तो तू मुझसे जीवन का जल देने के लिए कहती।"

उसने कहा, "कुआँ गहरा है, और तेरे पास कोई घड़ा नहीं है। तू 'जीवन का जल' कैसे ला सकता हैं? क्या तू याकूब से बड़ा है? जिन्होंने इसे खोदा था ? "

यीशु ने कहा, "जो लोग इस कुएँ से पानी पीते हैं वह फिर से प्यासा होगा। लेकिन जो पानी मैं उन्हें पिलाता हूं, उससे उसके अंदर से जीवन जल की नदियां बहेंगी।"

महिला अचंभित थी। "ओह कृपया मुझे यह पानी पिला ताकि मुझे फिर कभी प्यास न लगे। फिर मुझे इस कुएं पर वापस नहीं आना पड़ेगा।

"जा अपने पति को यहाँ ले आ।"

उसने नज़र चुराई। "मेरे पास पति नहीं है।"

"मुझे पता है कि तेरा पति नहीं है । तेरे पांच पति थे, और अब तू जिसके साथ रह रही है, वह तेरा पति नहीं हैं। "

उसने फिर से आँखें चुराई। "महाशय, मैं बता सकती हूं कि तू एक नबी हैं। कृपया इस पुराने तर्क को सुलझा। हम सामरी लोग कहते हैं कि यह पहाड़ परमेश्वर की आराधना करने का स्थान है। यहूदियों का कहना है कि आराधना करने के लिए यरूशलेम जाना है। कौन सही है?"

"महिला, ध्यान से सुन। अब समय आ गया है जब परमेश्वर उन लोगों की तलाश कर रहाे हैं जो आत्मा और सच्चाई में उसकी आराधना करेंगे।"

वह कुछ बोल नहीं पाई! "मुझे पता है कि किसी दिन मसीहा आने वाला है, और वह इन सभी चीजों की व्याख्या करेगा।"

यीशु मुस्कुराया। "जो व्यक्ति तुझसे बात कर रहा है, वही मसीहा है।"

महिला ने अपना पानी का घड़ा छोड़ दिया, और वापस गाँव लौट आई, जब शिष्य भोजन लेकर लौट रहे थे। वे चकित थे कि यीशु उसके साथ बात कर रहा था, लेकिन किसी ने इसके बारे में कुछ नहीं कहा।

जब वह महिला शहर में आई, तो उसने सभी को उस आदमी के बारे में बताया, जिससे वह कुएँ पर मिली थी।

"आओ और देखो, किसी ने मुझे वह सब कुछ बताया जो मैंने अपने जीवन में किया है। निश्चित रूप से वह मसीह है।"

पुरुष उत्सुक हो गए, इसलिए वे यह देखने के लिए बाहर गए कि वह किस बारे में बात कर रही है।

इस बीच, चेले यीशु को शहर से लाए गए भोजन को खाने की कोशिश कर रहे थे। उसने कहा, "मेरे पास खाने के लिए वोभोजन है, जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते हो।"

उन्होंने एक-दूसरे को देखा। "क्या कोई प्रभु के लिए खाने के लिए कुछ लाया था?"

यीशु ने अपना सिर हिलाया। "नहीं, मेरा भोजन परमेश्वर की इच्छा करना है।

"तुमकोो लगता है कि फसल कटने तक हमारे पास अभी भी चार महीने हैं।" उसने शहर से आते पुरुषों की ओर इशारा किया। "वहां देखो। अभी फसल काटने का समय है।"

पुरुषों ने यीशु के साथ आकर बात की, और अंत में उसे कुछ समय के लिए उनके साथ रहने के लिए कहा। वह दो दिनों तक रहा, और कई लोगों ने उसे अपना परमेश्वर और उद्धारकर्ता माना।

185 नासरत में अस्वीकृत

मत्ती 4: 13-17, 13: 54-58
लूका 4: 14-32, यूहन्ना 4: 43-54

कफरनहूम का एक शाही अधिकारी यीशु को देखने गया। उसने कहा, "मेरा बेटा बीमार है और मरने वाला है। कृपया कफरनहूम आं और उसे ठीक कर। "

यीशु ने यह कहकर उसका परीक्षण किया, "तू सभी की तरह हैं। यदि तू चमत्कार नहीं देखेगा तो तू विश्वास नहीं करेगा । "

उस आदमी ने निवेदन किया, '' कृपया मेरे बेटे को ठीक करने आ। यदि तू जल्दी नहीं आएगा तो वह मर जाएगा।"

यीशु ने उस पर दया की और कहा, "शांति से जा। तेरा बेटा जीवित रहेगा। "

पिता ने यीशु की ओर देखा, और अचानक उसे विश्वास हो गया। घर के रास्ते में, उसका नौकर उसे मिला और कहा, "तेरा बेटा जीवित है!"

अधिकारी ने उनसे पूछा, "वह किस समय बेहतर हुआ?"

उसने कहा, "बुखार दोपहर में लगभग एक बजे ठीक हो गया था।"

पिता को पता था कि यह वही समय है जब यीशु ने कहा था उसका बेटा ठीक हो गया। उस आदमी के पूरे परिवार ने यीशु मसीह पर विश्वास किया।

उसके बाद यीशु नासरत गया (जहाँ वे एक बच्चे के रूप में बड़ा हुआ था)। वह आराधनालय में गया, जैसा कि वह सामान्य रूप से जाता था। वह खड़ा था, और यशायाह की पुस्तक उसे सौंपी गई थी। उसने पढ़ा:

"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक कया है;
टूटे हुए को ठीक करने के लिए,
कैदियों को क्षमा की घोषणा करने के लिए,
दृष्टिहीन को ठीक करने के लिए,
दीन-दुखियों को स्वतंत्रता ा,
प्रभु के वर्ष का प्रचार करने के लिए। "

एक बार जब वह यह पढ़ चुका था, उसने पुस्तक को बंद कर दिया और उसे परिचारक को वापस दे

दिया। वह फिर बैठ गया। आराधनालय में सभी लोग उसकी ओर देखने लगे ।

अंत में उसने कहा, "आज, यह शास्त्र पूरा हो गया है।"

सभी लोग अचंभित थे। उन्होंने कहा, "क्या यह यूसुफ का बेटा नहीं है, जो हमारे शहर में बड़ा हुआ है?"

यीशु ने उनकी ओर देखा और कहा, "मुझे पता है कि तुम क्या सोच रहे हो। तुम कह रहे हो, हमने अन्य शहरों में उसके द्वारा किये चमत्कारों के बारे में सुना। हमें यहां भी कुछ दिखा।' "

"वो कहावत सच है, एक भविष्यवक्ता को उसके शहर में सम्मान नहीं मिलता है। 'एलियाह के समय े महान अकाल में, इस्राएल में कई विधवाएं थीं, लेकिन परमेश्वर ने एक गैर यहूदी विधवा के लिए प्रदान किया। एलीशा के समय में इस्राएल में कई कुष्ठ रोगी थे, लेकिन परमेश्वर ने सीरिया से एक अन्य व्यक्ति को चंगा किया।"

सभा के घर के लोग उग्र हो गए। उन्होंने उसे पकड़ लिया और शहर से बाहर ले गए।

वे उस स्थान पर गए, जहाँ उन्होंने लोगों को एक चट्टान से फेंककर मार डाला था। जब वे वहां पहुंचे, तो उन्हें एहसास हुआ कि वह उनके साथ नहीं है। वह मुड़कर, भीड़ के बीच से चला गया था।

उस समय के बाद, यीशु नासरत में नहीं रहता था, बल्कि वह कफरनहूम में बस गया था।

186 लोगों के पकड़नेवाले

मत्ती 8: 14-17, मरकुस 1: 21-39
लूका 4:31 - 5:11

यीशु कफरनहूम में आराधनालय में गया। एक व्यक्ति जो दुष्ट आत्मा से भरा था उस पर चिल्लाया, "चले जा! मुझे अकेला छोड़ दो! मुझे पता है तू कौन है! तू परमेश्वर का पवित्र है।"

यीशु ने कहा, "बात मत कर! उससे बाहर आ। "

दुष्ट आत्मा ने आदमी को फर्श पर फेंक दिया। वह चिल्लाया और दुष्ट आत्मा ने उसके शरीर को छोड़ दिया। भीड़ हैरान थी। उन्होंने ऐसा अधिकार और शक्ति कभी नहीं देखी थी।

बाद में, यीशु पतरस और अन्द्रियास के घर गया। पतरस की सास को तेज बुखार था। परिवार ने यीशु से उसे ठीक करने के लिए कहा। तो उसने उसके हाथ को छुआ और बुखार से कहा, "इस औरत को छोड़ दे!"

उसका हाथ उठाकर उसने कहा, "उठ।" तुरंत बुखार ने उसे छोड़ दिया और वह उठ गई। वह पूरी तरह से ठीक हो गई थी, इसलिए उसने अपने घर में मेहमानों की सेवा शुरू कर दी।

शाम तक, लगभग पूरा शहर घर पर आ गया था। यीशु ने लोगों को सिखाया, बीमारों को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को बाहर निकाला।

अगली सुबह, वह सूर्योदय से पहले उठ गया और एक ऐसी जगह गया जहाँ वह अकेला हो सकता था। वहाँ उसने प्रार्थना की और अपने पिता से बात की।

जब कस्बे के लोग जागे, तो उन्होंने यीशु की खोज शुरू की और आखिरकार उसे पा लिया। उसने उन्हें बताया कि वह क्षेत्र के अन्य शहरों का दौरा करने जा रहा है। उन्होंने यीशु से उनके साथ रहने के लिए कहा, लेकिन उसने कहा, "नहीं, मुझे अन्य शहरों में भी परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने की आवश्यकता है।" तब उन्होंने पूरे गलील में यात्रा की, लोगों को पढ़ाया, बीमारों को चंगा किया और दुष्ट आत्माओं को बाहर निकाला।

एक दिन वह लोगों को सिखाने के लिए गलील सागर के तट पर गया। उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए उसके चारों ओर भीड़ लगा दी।

किनारे पर मछली पकड़ने की दो नावें थीं, और मछुआरे पास में अपना जाल धो रहे थे। यीशु उस

नाव में सवार हो गया जो शिमोन पतरस की थी, और उसे किनारे से थोड़ा हटाने के लिए कहा। जब यह किया गया, तो वह बैठ गया और लोगों को सिखाया।

समाप्त होने के बाद, उसने पतरस से कहा, "गहरे पानी में जा और जाल डाल।"

पतरस ने कहा, "परमेश्वर, हमने पूरी रात जाल डाला और कुछ भी नहीं पकड़ा। फिर भी, यदि आप चाहते हैं, तो मैं एक बार फिर से जाल बाहर डालूँगा। वह फिर नाव को गहरे पानी में ले गया। जब उसने अपना जाल डाला, तो उसने तुरंत इतनी सारी मछलियाँ पकड़ीं - इतनी मछलियाँ कि जाल फटने लगे। पतरस अपने साथियों को चिल्लाया, "याकूब, यूहन्ना !" वे आए और मछली को इकट्ठा करने में मदद की। उन्होंने दोनों नावों को भर दिया ... जब तक डूबने का खतरा नहीं था।

इस चमत्कार से पतरस पूरी तरह से चकित रह गया। वह अपने घुटनों पर गिरा और उसने यीशु से कहा, “चले जा! मैं एक पापी आदमी हूँ! "

यीशु ने कहा, "शिमोन, डर मत। पहले तूने मछली पकड़ी। अब से, तू लोगों को पकड़ेगा। "

मछुआरे अपनी नावों को किनारे ले आए, जहाँ उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और यीशु का के पीछे हो लिए।

187 पहाड़ी उपदेश

मत्ती 5 - 7, लूका 6: 37-42

यीशु अपने अनुयायियों को सीखाने के लिए एक पहाड़ पर चढ़ गया। उसने समझाया कि मसीहा के शिष्य और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन कैसे जिया जाए। उसने ऐसे शुरुआत की:

धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।

आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था॥

यदि तुम ये काम करते हो, तो तुम पृथ्वी के नमक हो। तुम जगत की ज्योति हो। कई लोग इसे देखेंगे और परमेश्वर की महिमा करेंगे।

ऐसा मत सोचो कि मैं परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ना चाहता हूं - यह ठीक विपरीत है! मेरे शिष्यों को उच्च स्तर का जीवन जीना है।

उदाहरण के लिए, व्यवस्था कहती है कि हत्या न करना। तुम्हे उच्च स्तर का जीवन जीना है। किसी से घृणा मत करो। जब तुम किसी व्यक्ति से घृणा करते हो, तो यह उस व्यक्ति को मार डालने जैसा है।

व्यवस्था कहती है कि तू व्यभिचार न करना। तुम्हे उच्च स्तर का जीवन जीना है। अनियंत्रित सोच दुख, बेवफाई और तलाक का आधार है।

व्यवस्था समान न्याय के लिए प्रावधान करती है - "आंख के लिए आंख, दांत के लिए दांत"। तुम्हे उच्च

स्तर का जीवन जीना है। उन लोगों से प्यार करो जो तुमसे बुरा व्यवहार करते हैं और तुम्हारा फायदा उठाते हैं।

अगर कोई तुम्हारे लिए कुछ बुरा करता है, तो उनके लिए कुछ अच्छा करो।

इस "उच्च मानक" के बारे में सुनकर शिष्य असहज हो गए। यह जीने का एक अलग तरीका था। यह संभव नहीं लग रहा था। यीशु ने कहा:

तीन बड़े क्षेत्र हैं जो तुमको परमेश्वर की सेवा करने से दूर रखेंगे - गर्व, पैसा और चिंता। अपने आत्मिक जीवन में घमंड से सावधान रहना।

परमेश्वर चाहता है की तुम गरीबो को दान दो, लेकिन तुम्हारी उदारता के प्रदर्शन के रूप में नहीं। वह चाहता है कि तुम प्रार्थना करो, लेकिन दूसरों को प्रभावित करने के उद्देश्य से नहीं। परमेश्वर चाहते हैं कि तुम उपवास करो, लेकिन दूसरों के आनंद के लिए मनोरंजन के रूप में नहीं।

वह चाहता है कि तुम इन चीज़ो को निजी तौर पर करो। वे परमेश्वर से छिपी नहीं हैं, और वह तुमको इसका इनाम देगा।

पैसा एक और क्षेत्र है जो तुम्हें परमेश्वर की सेवा करने से दूर रखेगा। पैसा और परमेश्वर दोनों ही स्वामी हैं, जो तुम्हारा पूरा समर्पण चाहते हैं। तुम इन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करो और उसे महिमा देने के लिए धन का उपयोग भी करो। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो तुम्हें पैसे से नियंत्रित किया जाएगा और वह तुमको खरीद सकता है।

स्वर्गीय खजाने पर अपना जीवन केंद्रित करो।

आम चिंताओं के बारे में सावधान रहो, जैसे भोजन और कपड़े। ये चीज़ें तुम्हारे जीवन को डर से भरने के लिए नहीं हैं। परमेश्वर पर अपनी नज़र रखो, और जो वह तुम्हें देता है उसे स्वीकार करो। अपने आसपास देखो की वह पक्षियों और फूलों की देखभाल करता है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि वह तुम्हारी अधिक परवाह करता है? वह जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए। उस पर ध्यान केंद्रित करो, और उसे तुमहरी चिंता करने दो।

इस तरह के कठिन शिक्षण से पूरी भीड़ बेचैन हो गई, लेकिन यीशु के बोलने पर वे एक बार फिर शांत हो गए। उन्होंने दूसरों के प्रति उनके रवैये के बारे में बात की। उसने कहा:

दूसरे लोग क्यों और क्या करते हैं, इसका न्यायी अपने आप को मत बनाओ। याद रहे। तुम उन्ही मापकों से ना पे जाओगे जिससे तुम दूसरों को नापते हो।

दूसरों को न्याय देना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना कि खुद की आंख मे लकड़ी का टुकड़ा। वह इसे नजरअंदाज कर देता है, क्योंकि वह किसी और की आंख के तिनके पर केंद्रित है। यह एक अंधे व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण है जो सड़क पर एक दूसरे अंधे व्यक्ति की मदद करने की कोशिश कर रहा है। दोनों खाई में गिरेंगे।

दूसरों पर दोष लगाने के बदले, उन्हें दें। नहीं, बस थोड़ा सा नहीं। उन्हें बड़े पैमाने पर दे। यह एक दुकानदार की तरह है जो कहता है, "एक निश्चित मूल्य के लिए, तुम्हारे पास एक बाल्टी भरी हो सकती है।" जब तुम उस बाल्टी को भरते हैं, तो तुम इसे हिलाते हैं और इसे नीचे दबाते हैं ताकि तुम अधिक अंदर डाल सकें। फिर तुम अपने शरीर का उपयोग बाल्टी को ऊपर तक भरने के लिए करते हो। इस तरह से तुमको दूसरों को देना हैं! और यदि आप ऐसा करते हो, तो तुमको भी ऐसे ही दिया जाएगा!

भीड़ शांत थी क्योंकि वे जो सुन रहे थे, सोच रहे थे । यीशु ने अपना हाथ ओर बढ़ाया और कहा:

यदि तुम मेरे शिष्य बनने जा रहे हो, तो जो मैं कहता हूं वह करो। तुम्हारे सामने दो सड़कें हैं। एक चौड़ी है और उसपे अधिक यात्रा की जाती है। यह प्राकृतिक तरीका है, और अधिकांश लोग इसका उपयोग करते हैं। तुम्हें अलग रास्ते पर जाना होगा। यह रास्ता सकरा है, और इस पर कम यात्रा की जाती है। अब यह तुम्हारी मर्ज़ी है।

यह उन दो लोगों की तरह है जिन्होंने घर बनाने का फैसला किया है। पहलेवाले ने एक ठोस नींव वाली चट्टान पर अपना घर बनाया। दूसरे ने रेत पर अपना घर बनाया।

जब घर बन गए , तो वे एक जैसे दिखते थे। लेकिन फिर तूफान आया और घरों से

लहरें टकराई। चट्टान पर बना घर दृढ़ता से खड़ा रहा, जबकि दूसरा घर गिर गया।

जो मैं तुम्हें सिखा रहा हूं, उसके आधार पर अपना जीवन बनाओ। यदि ऐसा करते हो तो तुम मजबूत होंगे, जब जीवन के तूफान तुम्हारे खिलाफ आएंगे। मैं जो कहता हूं, उसे नजरअंदाज करोगे तो तुम्हारा जीवन चरमरा जाएगा।

जब यीशु लोगों को सिखा रहे थे, तो वे चकित थे। उन्होंने महसूस किया कि वह बड़े अधिकार के साथ सिखा रहा था।

188 पापों को क्षमा करना

मत्ती 9: 9-13, मरकुस 2: 1-17

यीशु सिखाने के लिए एक घर में गया। जैसे ही यह बात इधर-उधर लोगों को पता चली, पूरा घर लोगों से भर गया।

उनमें फरीसी और व्यवयस्था के शिक्षक भी थे। भीड़ द्वार से बाहर तक चली गई, और लोग द्वार के भी बाहर खड़े थे।

चार आदमी एक लकवाग्रस्त आदमी को खाट पर लेकर आए। उन्हें एहसास हुआ कि उनके पास यीशु के करीब जाने का कोई रास्ता नहीं है। इसलिए उन्होंने उस आदमी और उसकी खाट को छत पर बाहर की सीढ़ियों से पहुँचाया। वहां उन्होंने छत्त खोली। जब यह काफी खुल गई, तो उन्होंने उस आदमी को भीड़ के बीच में और यीशु के सामने उतार दिया।

जब यीशु ने चार आदमियों के विश्वास को देखा, तो वह खाट पर पड़े व्यक्ति की ओर बढ़ा, "बेटा, तुम्हारे पाप क्षमा हुए।"

यह सुनकर धर्म के शिक्षक हैरान रह गए। उन्होंने सोचा, “उसने ऐसा कहने की हिम्मत कैसे की! यह निन्दा है! केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है। ”

यीशु जानता था कि वे क्या सोच रहे थे। उन्होंने कहा, “तुम इतने परेशान क्यों हो? मेरे लिए यह कहना आसान होता, 'उठो और चल फिर।' लेकिन तुम्हें यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य का पुत्र पापों को क्षमा पर अधिकार रखता है।”

उसने फिर उस आदमी से कहा, “उठ! अपनी खाट उठा, और घर जा।"

तुरंत वह आदमी उठा, उसने अपनी खाट उठाई, और सबके सामने बाहर चला गया। लोग चकित थे और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की। उन्होंने कहा, "हमने इससे पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था।"

उसके बाद, यीशु वह घर छोड़कर समुद्र के किनारे चला गया। रास्ते में, उसने एक चुंगी लेनेवाले, जिसका नाम मत्ती था, बैठे देखा।

यहूदी लोग चुंगी लेनेवालों से घृणा करते थे और कहते थे कि वे इस्राएल के गद्दार थे।

यीशु ने उसे रोका और उससे कहा, "मत्ती, मेरे पीछे आ।" तुरंत, उस आदमी ने सब कुछ छोड़ दिया और यीशु का अनुसरण किया।

इसके तुरंत बाद, उन्होंने अपने घर में यीशु के लिए एक स्वागत समारोह आयोजित किया। उन्होंने कई

अन्य चुंगी लेनेवालों को आमंत्रित किया। वे आए, साथ ही कम प्रतिष्ठा के अन्य लोग भी।

धार्मिक अगुओं चकित रह गए ! उन्होंने उसके चेलों से कहा, "तुम्हारा स्वामी चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ भोजन क्यों कर रहा है?"

यीशु ने यह सुना, इसलिए उसने उन्हें उत्तर दिया। "वैद्य बीमार लोगों के लिए हैं, उन लोगों के लिए नहीं जो अच्छे हैं। मैं ऐसे लोगों के साथ काम करने नहीं आया जो सोचते हैं कि वे धर्मी हैं। मैं पापियों के लिए पश्चाताप लाने आया हूँ। "

189 बारहों को बुलाना

मत्ती 10, 12: 9-15
मरकुस 3: 13-19, लूका 6: 6-16

एक शाम, यीशु भीड़ को छोड़कर एक पहाड़ पर चढ़ गया। वह अकेला रहना चाहता था ताकि वह पिता के साथ बात कर सके। उसने पूरी रात प्रार्थना की।

दिन के समय, वह नीचे आया और चेलों के एक समूह को अपने पास बुलाया। उन्हें उसके साथ रहना था ताकि वह उन्हें सिखा सके और उन्हें प्रचार करने के लिए तैयार कर सके। उसने उन्हें बीमारों को चंगा करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने की सामर्थ दी।

उसने शमौन को चुना, जिसका नाम बदलकर पतरस रखा गया और उसके भाई अन्द्रियास को भी चुना।

अगले दो थे, याकूब और उसका भाई यूहन्ना , जिन्हें "गर्जन के पुत्र" कहा जाता था।

फिलेप्पुस और बरतुल्मै, थोमा थे, जो एक जुड़वा था, और मत्ती, जो एक चुंगी लेनेवाले थे।

इस समूह में एक और याकूब था, इसलिए इतिहास उसे " छोटा याकूब " कहता है।

तद्दी को यहूदा भी कहा जाता था, लेकिन वह यीशु को धोखा देने वाला नहीं था।

एक और शमौन था, और वह "कनानी" के रूप में जाना जाता था।

अंत में यहूदा इस्करियोती था, जिसने यीशु को धोखा दिया।

उसने इन आदमियों से कहा, "मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेज रहा हूँ। इसलिए सर्प के समान बुद्धिमान हो, और कबूतर के समान हानिरहित हो।

लोग तुमसे वैसे ही नफरत करेंगे जैसे मुझसे नफरत करते हैं। लेकिन डरो मत। पिता तुम्हारे ऊपर से देख रहा है। वह जानता है कि कब गौरैया जमीन पर गिरती है, और तुम गौरैया से ज्यादा मूल्यवान हो। वह यह भी जानता है कि तुम्हारे सिर पर कितने बाल हैं। तुमहारे परिवार के सदस्य चाहते हैं कि तुम मेरे बजाय उनके प्रति वफादार रहो। यदि तुम उन्हें चुनते हो, तो तुम मेरे योग्य नहीं हो । यदि तुम मेरा अनुसरण करते हो, तो तुम्हें अपना क्रूस उठाना और मेरी शर्म को सहन करना होगा।"

यदि तुम मेरे बिना जीवन पाते हो, तो तुम इसे खो दोगे, और यदि तुम मेरे कारण अपना जीवन खो देते हो , तो तुम इसे पा लोगे। "

यीशु सिखाने के लिए एक आराधनालय में गया। भीड़ में एक अपंग हाथ वाला आदमी था।

कुछ धर्मगुरुओं ने इसे यीशु को परमेश्वर के नियम को तोड़ने के अवसर के रूप में देखा।

कानून ने कहा कि एक व्यक्ति सब्त के दिन काम नहीं कर सकता था, और जब यीशु ने किसी को चंगा किया तो उन्होंने इसे काम माना। तो उन्होंने उससे पूछा, "क्या सब्त के दिन चंगा करना व्यव्यस्था के अनुसार सही है?"

यीशु को पता था कि वे क्या सोच रहे हैं, इसलिए वह उस अपंग हाथ वाले आदमी की ओर मुड़ गया। "उठ और यहाँ खड़े हो जा।" तो वह आदमी उठकर उन सब के सामने खड़ा हो गया।

यीशु ने तब उन से कहा जो उस पर दोष लगा रहे थे, "मेरे पास तुम्हारे लिए एक प्रश्न है। क्या सब्त के दिन अच्छा करना, या बुराई करना व्यवस्था के अनुसार है? क्या जीवन को बचाना, उसे नष्ट करने से बेहतर नहीं है?" उन्होंने जवाब नहीं दिया।

"यदि आपके पास एक भेड़ थी जो सब्त के दिन एक गड्ढे में गिर जाती है, तो आप उसे बाहर निकालने में संकोच नहीं करेंगे।

लोग एक भेड़ से बेहतर हैं! इसलिए मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूंगा। हां, सब्त के दिन अच्छा करना बिल्कुल व्यवस्था के अनुसार है। "

वह फिर अपंग आदमी की ओर मुड़ा। "अपना हाथ बढ़ा!"

आदमी ने अपना हाथ बढ़ाया, और जब उसने ऐसा किया, तो वह ठीक हो गया और उसके दूसरे हाथ के समान मजबूत हो गया था।

इसने धार्मिक शिक्षकों को प्रभावित किया, और उन्होंने तुरंत चर्चा शुरू कर दी कि वे यीशु को कैसे मरवा सकते हैं।

190 एक रोमी और एक अंतिम संस्कार

लूका 7: 1-17

एक रोमी अधिकारी कफरनहूम में रहता था। वह एक अच्छा इंसान था और उसने इस्राएल के लोगों के लिए अद्भुत काम किए थे। एक दिन उसका नौकर बीमार हो गया और वह मरने वाला था। उसने कुछ यहूदी अगुओं से पूछा क्या वे यीशु से उसकी ओर से बात करेंगे। उसने कहा, "उसे मेरे नौकर को चंगा करने के लिए आओ।"

वे यीशु के पास गए और कहा, "वह एक अच्छा आदमी है और हमारे राष्ट्र से प्यार करता है। उसने हमारे लिए एक आराधनालय भी बनवाया है। " यीशु उनके साथ उस आदमी के घर जाने को तैयार हो गया।

जैसे ही वे पास आया, रोमी अधिकारी ने इस संदेश के साथ दोस्तों को यीशु के पास भेजा। "मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप मेरे घर आएं। मैं अधिकार को समझता हूँ। जब मैं बोलता हूं, तो दूसरों को मानना पड़ता है। इसलिए मुझे पता है कि अगर आप अपना वचन भी भेज देंगे, तो मेरा नौकर ठीक हो जाएगा।"

यीशु ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "मैंने पूरे इस्राएल में इस तरह का विश्वास नहीं देखा!" आदमी के दोस्त वापस उसके घर गए, और पाया कि नौकर चंगा हो गया था।

यीशु अपने शिष्यों को दूसरे शहर ले गए, और एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। जब वे द्वार पर पहुंच रहे थे, उन्होंने एक अंतिम संस्कार का जुलूस देखा। यह एक युवक का था जो एक महिला का इकलौता बेटा था, उसने अपने पति को भी खो दिया था।

यीशु ने उसकी हताश स्थिति को देखा और उसके पास गया। उसने कहा, "रो मत।"

वह फिर अर्थी के पास गया और उस पर अपना हाथ रखा। तुरंत ही अर्थी ले जाने वाले लोग रुक गए। यीशु ने कहा, "जवान आदमी, मेरी बात सुन। उठ जा!"

उस आदमी ने अपनी आँखें खोलीं और फिर उठ बैठा। उसने चारों ओर देखा और पूछा कि क्या हो रहा है। यीशु ने उसकी मदद की और उसे उसकी माँ के पास ले गया।

भीड़ दंग रह गई, और फिर डर गई।

अंत में, वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे। इस की खबर पूरे इस्राएल और आसपास के देशों में फैल गई।

191 क्षमा मिलना और आभारी

लूका 7:36-50

शमौन नाम के एक फरीसी ने यीशु को भोजन के लिए अपने घर बुलाया। लोगों ने मेज के साथ रखी एक गद्दी पर झुक कर खाना खाया, उनके पैर उनके पीछे थे।

जब वे भोजन कर रहे थे, एक महिला आई जो बहुत पापी होने के लिए जानी जाती थी। वह यीशु के पीछे जाकर रोने लगी। उसने फिर घुटने टेके और अपने आँसुओं से उसके पैर धोए। उसने अपने बाल नीचे किए और उसके पैरों को सुखाने के लिए इसका इस्तेमाल किया। उसने उसे चूमा और महंगे तेल से अभिषेक किया।

शमौन ने सोचा, "ठीक है, यह साबित करता है कि यीशु एक भविष्यवक्ता नहीं है। अगर उसे पता होता कि वह किस तरह की महिला है, तो वह उसे छूने नहीं देता।"

यीशु जानता था कि वह क्या सोच रहा था। उसने कहा, "शमौन, मेरे पास तेरे लिए एक प्रश्न है। एक ही ऋणदाता के दो लोगों पर कर्ज बकाया था। एक पर 2500 रुपये बकाया है, जबकि दूसरे पर 25,000 रुपये बकाया है। दोनों इसे वापस भुगतान करने में असमर्थ थे, जिसका मतलब था कि उन्हें गुलामी में बेच दिया जाएगा। इसके बजाय, ऋणदाता ने अपने ऋणों को माफ करने और उन्हें मुक्त करने का फैसला किया। इनमें से कौन ऋणदाता का सबसे आभारी और वफादार होगा?"

शमौन को जवाब देने की जल्दी थी। "बेशक, जिसका 25,000 रुपये बकाया है।"

यीशु ने कहा, "तू बिल्कुल सही कह रहा है। मैं तेरे घर में आया और तूने मुझे पैर धोने के लिए पानी नहीं दिया। इस महिला को देख। उसने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन बस मेरे पैरों को अपने आँसुओं से धोया और उन्हें अपने बालों से सुखाया।"

"तूने मेरा चुंबन से स्वागत नहीं किया। लेकिन इस औरत ने मेरे पैर चूमना बंद नहीं किया।"

"तूने मुझ पर तेल नहीं लगाया। पर देख, उसने महंगे तेल से मेरे पैरों का अभिषेक किया है।"

"वह ऐसा क्यों कर रही है? यह इसलिए है क्योंकि उसके पाप कई हैं, और वह क्षमा पाने के लिए

आभारी थी। जो लोग महसूस करते हैं कि वे अपने जीवन भर अच्छे रहे हैं वे इस तरह के गहरे आभार का अनुभव नहीं करते हैं।”

उसने महिला की ओर देखा और कहा, "तेरे पाप क्षमा हुए।" इससे मेज़ के चारों ओर बैठे लोग चौंक गए, लेकिन यीशु ने कहा। "शांति से जा। तेरे विश्वास ने तुझको बचाया है।”

192 चार मिट्टियां

मत्ती 13: 1-23, 31-32, मरकुस 4: 1-32

यीशु ने भीड़ को एक किसान के बारे में कहानी सुनाई जो अपने खेत में रोपने के लिए निकला। रास्ते में चलते समय उसने अपने चारों ओर बीज फेंक दिए।

कुछ बीज रास्ते पर गिर गए। यह कठोर मिट्टी थी और कभी अंकुरित नहीं हुए, इसलिए पक्षियों ने आकर इसे खा लिया। कुछ बीज चट्टानों के बीच गिरे, जहाँ बहुत कम मिट्टी थी। यह अंकुरित हुए, लेकिन इसकी जड़ें मज़बूत नहीं थीं। इसलिए यह तेज धूप के कारण मुरझा गए।

कुछ बीज जंगली पौधों के ढेर में गिरे। यह अंकुरित हुआ, लेकिन जंगली पौधों ने नमी और धूप ले लीं। नए अंकुर बड़ें नहीं हो सकें और उनमें फल नहीं लगें।

लेकिन कुछ बीज अच्छी मिट्टी पर गिरे जो इसके लिए तैयार की गई थी। वहाँ, उसकी देखभाल हुई, उसे पोषण मिला और पौधे बड़ें हुए। फसल बढ़िया हुई!

यीशु ने भीड़ के लिए इस दृष्टांत का अर्थ स्पष्ट नहीं किया, इसलिए शिष्यों ने पूछा, "इसका क्या मतलब है?"

यीशु ने कहा, “बीज परमेश्वर का वचन है। विभिन्न मिट्टी वह लोग है जो इसे ग्रहण करते हैं। कुछ लोग मार्ग में गिरे हुए बीज की तरह परमेश्वर का वचन ग्रहण करते हैं। वे इसे सुनते हैं, लेकिन वे इसे नहीं समझते हैं - और पक्षियों की तरह - शैतान आता है और बीज को उनसे दूर ले जाता है ताकि वे विश्वास न करें।

कुछ वचन ऐसे ग्रहण करते हैं जैसे बीज चट्टानों के बीच गिरे है। वे ख़ुशी से इसे ग्रहण करते हैं, लेकिन जड़ों को स्थापित होने में समय नहीं लगाते है। वे परीक्षण और उत्पीड़न सहन नहीं कर पाते हैं।

कुछ लोगवो जंगली पौधों में गिरे बीज की तरह वचन ग्रहण करते हैं। वे इसे ग्रहण करते हैं, लेकिन उनकी प्राथमिकताएं उन्हें परिपक्व होने से रोकती हैं और एक फसल नहीं पैदा हो पाती हैं। चिंता, पैसा, और आनंद सभी उनका समय और ध्यान आकर्षित करते हैं।

लेकिन कुछ लोग परमेश्वर के वचन को एक इसे ऐसे बीज की तरह ग्रहण करते हैं जो अच्छी जमीन पर गिरा है। वे खुले दिल से वचन को सुनते हैं, और इसे समझते हैं। इसलिए, वे परिपक्व होते हैं और फसल अच्छी होती है।

यीशु ने कहा, "स्वर्ग के राज्य की तुलना सरसों के बीज से की जा सकती है। एक आदमी ने देखा कि यह बहुत छोटा बीज था। फिर भी, उसने यह देखने के लिए की क्या होगा इसे मैदान में लगाया। उस छोटे से बीज ने एक पेड़ पैदा किया। इसकी शाखाएँ थीं जो फैल गईं, ताकि पक्षी आए और वहाँ अपना घोंसला बनाए।

193 कहानियों के साथ समझाना

मत्ती 13: 24-30, 34-43
मत्ती 25: 14-30

यीशु लोगों को कहानियाँ सुनाता रहा। वास्तव में, उसने कहानियों का उपयोग किए बिना भीड़ से कुछ भी नहीं कहा।

एक बार उसने उन्हें एक किसान के बारे में बताया, जिसने अपने खेत में गेहूं बोया था। दिन भर के बाद, वह घर लौट आया और बिस्तर में सो गया। रात के दौरान, एक व्यक्ति जो उससे नफरत करता था, वह खेतों में गया और जंगली बीज बो आया।

जब वे बढ़ रहे थे, तो वे जंगली पौधे बिल्कुल गेहूं जैसे दिखते थे। इसलिए पहले, किसी को नहीं पता था कि क्या हुआ था। यह तब पता चला जब पौधे बड़ें होने लगे। खेत के मज़दूरों ने कहा, "हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें खेतों में जाना चाहिए और जंगली पौधों को निकाल लेना चाहिए?"

किसान ने कहा, "नहीं, यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम गेहूं को नष्ट कर दोगे। फसल आने तक प्रतीक्षा करो।"

जब फसल तैयार हो गई, तो किसान ने अपने मजदूरों को खेत में भेजा। उन्होंने गेहूं इकट्ठा किया और उसे खलिहान में डाल दिया। फिर उन्होंने जंगली पौधों को इकट्ठा किया, उन्हें बांधा, और उन्हें जला दिया।

चेले यीशु के पास आए और पूछा कि इसका क्या मतलब है। उसने कहा, "किसान मनुष्य का पुत्र है, खेत यह दुनिया है, और परमेश्वर के बच्चे हैं। दुश्मन शैतान है और जंगली पौधें वे हैं जो शैतान के पीछे चलते हैं।

"समय के अंत में, मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के बच्चों को इकट्ठा करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा। उसके बाद, वे दुष्टों को इकट्ठा करेंगे, और उन्हें एक धधकती हुई भट्टी में फेंक देंगे।"

एक और बार, यीशु ने कहा कि परमेश्वर का राज्य एक धनी व्यक्ति की तरह है जिसने लंबी यात्रा पर जाने का फैसला किया। उसने अपने भरोसेमंद नौकरों को बुलाया और उन्हें ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं, ताकि उसका कारोबार ख़त्म ना हों।

उसने उनकी क्षमताओं के अनुसार उनमें से प्रत्येक को धन दिया। एक को उसने 5000 रुपये, दूसरें को 2000 रुपये और आखिरी नौकर को 1000 रुपये दिए।

तुरंत, पहला नौकर बाहर गया और काम करने के लिए अपने पैसे लगा दिए। ऐसा करके, उसने 5,000 रुपये कमाए। दूसरे आदमी ने ऐसा ही किया और उसने 2,000 रुपये कमाए। लेकिन तीसरे आदमी ने एक सुरक्षित स्थान देखा, एक गड्ढा खोदा, और अपने 1,000 रुपये वहाँ दबा दिए।

बहुत समय बाद, मालिक वापस आया। तीन सेवक उसके सामने खड़े थे कि उन्होंने जो किया था उसका लेखा-जोखा दें। पहले वाले ने कहा, "आपने मुझे 5,000 रुपये दिए थे। देखिए, मैंने उन पैसों से काम किया है, और मैंने उन्हें दोगुना कर दिया है।"

मालिक खुश हो गया। उन्होंने कहा, "बहुत अच्छा! मुझे तुझ पर गर्व है। मैं तुझको बेहतर सुविधाओं के साथ उच्च पद पर रखूंगा।" दूसरे आदमी ने कहा, "आपने मुझे 2,000 रुपये दिए थे। देखिए, मैंने उन पैसों से काम किया है, और मैंने उन्हें दोगुना कर दिया है।"

फिर से, मालिक खुश हो गया। "अच्छा काम! मुझे तुझ पर गर्व है। मैं तुझको बेहतर सुविधाओं के साथ उच्च पद पर रखूंगा।"

तीसरा आदमी आगे बढ़ा और कहा, "मालिक, मैं जानता था कि तू एक चतुर व्यापारी है और तू गलतियाँ बर्दाश्त नहीं करता है। मुझे डर था, इसलिए मैं गया और अपने 1,000 रुपये सुरक्षित स्थान पर छिपा दिए। यह वह पैसें हैं, पूरी राशि।

मालिक क्रोधित हो गया! उसने कहा, ''तू बेकार और किसी काम का नहीं है। तू इतना आलसी कैसे हो सकता है? अगर और कुछ नहीं, तू एक बैंक में उसे रखकर थोड़ा ब्याज कमा सकता था। लेकिन नहीं, तूने कुछ नहीं किया।"

उसने पहरेदारों को बुलाया। "इस आदमी के 1,000 रुपये ले लो और उन्हें उस नौकर को दे दो जिसके पास 10,000 रुपये हैं। फिर इस बेकार नौकर को ले जाओ और उसे अंधेरे में बाहर फेंक दो। वहाँ वह अकेला होगा, उसकी मूर्खता के अलावा कुछ भी नहीं होगा।

194 दो तूफानों को शांत करना

मत्ती 8: 23-34, मरकुस 4:35 - 5:20
लूका 8: 22-39

यीशु ने पूरे दिन भीड़ को सिखाया। शाम को, उसने अपने शिष्यों से कहा, "झील के दूसरी तरफ चलो।" इसलिए उन्होंने कई नावें लीं, और गलील समुद्र के उस किनारे की ओर अपनी यात्रा शुरू की, जहाँ अन्यजातियां रहती थी।

थके होने के कारण, यीशु नाव के पीछले हिस्से में गया और एक बड़े गद्दे पर लेट गया। जल्द ही वह एक गहरी नींद में सो गया। रात के समय, झील में एक भयंकर तूफान आया। नाव के ऊपर बड़ी लहरें आईं और ऐसा लगा कि लहरें नाव को डुबो देंगी। यीशु अभी भी सो रहा था, जबकि यह सब हो रहा था।

शिष्यों ने उसे जगाया और कहा, "गुरु, जागो! क्या तुझको परवाह नहीं है कि हम मरने वाले हैं?"

यीशु उठा और तूफान को देखा। उसने कहा, "रुक जा! शांत हो जा!" तुरंत हवा रुक गई और समुद्र शांत हो गया।

फिर वह शिष्यों की ओर घूमा और कहा, "तुम्हें डर क्यों लगा? तुम्हारा विश्वास कहाँ है?" फिर वो लेट गया और वापस सो गया।

पुरुषों ने आकाश और शांत समुद्र को देखा। उन्होंने कहा, "यह कैसा आदमी है, कि हवा और समुद्र भी उसकी बात मानते हैं!"

उनकी नाव किनारे पर आ गई, एक जगह के पास जहां एक जंगली आदमी था, जो कब्रों में रहता था। कोई उसे नियंत्रित नहीं कर पाया था। कई बार उन्होंने उसे जंजीरों में बांधने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें आसानी से तोड़ दिया। वह पहाड़ियों पर नग्न घूमता था, और कब्रों में रहता था। वह चिल्लाता, और खुद को पत्थरों से चोट पहुंचाता था।

जब उसने यीशु और उसके चेलों को नाव से बाहर निकलते देखा, तो वह दौड़ा और उसके सामने घुटने टेक दिए।

वह चिल्लाया, "मुझे पता है कि तू कौन है। तू यीशु है, सबसे उच्च परमेश्वर का पुत्र हैं! मुझे अकेला छोड़ दे। मुझे यातना मत दे।"

यीशु ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"हम सेना कहलाते हैं क्योंकि हम कई सारे हैं। कृपया, हमें अताहकुंड में न भेज। देख, उस पहाड़ी के ऊपर सुअर हैं। हमें वहाँ भेज दे।"

यीशु ने सूअर को देखा, और कहा, "हाँ, तुम वहाँ जा सकते हो।"

उसी के साथ, दुष्ट आत्माओं ने उस आदमी को छोड़ दिया और सूअरों में प्रवेश किया। उनमें से सभी 2,000 सुअर जंगली हो गए और पहाड़ी पर गए और नीचे कूद गए। वे समुद्र में गिरे और डूब गए।

सूअर चराने वाले लोग शहर में भागे और लोगों को बताया कि क्या हुआ था।

यह देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। जब वे यीशु के पास पहुँचे, तो उन्होंने उस आदमी को देखा, जिसके पास पहले दुष्ट आत्माएं थी। वह चुपचाप बैठा था, पूरी तरह से कपड़े पहने हुआ यीशु की बातें सुन रहा था।

फिर, पुरुषों ने बताया कि क्या हुआ था।

हर कोई डर गया , इसलिए उन्होंने उसे उनके शहर से जाने के लिए कहा।

जैसे ही वह नाव में चढ़ा, ठीक होने वाले व्यक्ति ने कहा, "क्या मैं आपके साथ जा सकता हूं?" यीशु ने उसकी ओर संकेत किया और कहा, "अपने लोगों के पास जा और उन्हें बता कि प्रभु ने तेरे लिए कितना कुछ किया है। उन्हें अपने जीवन पर परमेश्वर की दया के बारे में बता।"

इसलिए यीशु और उनके शिष्य किनारे से चले गए, और वे उस झील के उस तरफ लौट आए जहां यहूदी रहते थे। वह आदमी अपने नगर गया और सबको बताने लगा कि यीशु ने उसके लिए क्या किया है। यह सुनकर लोग अचंभित थे।

195 बारह वर्ष

मत्ती 9: 18-26, मरकुस 5: 21-43
लूका 8: 40-56

यीशु और उसके चेले झील के उस पार जहाँ कि अन्यजाति रहते थे से उस तरफ जहाँ यहूदी रहते थे गए थे। बड़ी भीड़ उसका इंतजार कर रही थी।

याईर नाम का एक व्यक्ति यीशु के सामने भागा आया और गिर गया। वह आराधनालय के सरदारों में से एक था।

उसने कहा, "मेरी बेटी मर रही है! वह केवल बारह साल की है। मैं आपसे विनती करता हूं, कृपया आइए और उसे ठीक कीजिए।"

यीशु सहमत हुए, इसलिए वह और उसके शिष्य न याईर के पीछे गए। एक बड़ी भीड़ भी उनके पीछे आई।

जब वे सड़क पर चले, तो वे एक महिला के घर से गुज़रे। उसे बारह साल से खून बहने की बीमारी थी। कई वैद्यों ने उसकी मदद करने की कोशिश की, लेकिन उसकी हालत केवल बदतर होती गई। यह तब तक जारी रहा जब तक उसका सारा पैसा खत्म नहीं हो गया।

जब उसने सुना कि यीशु वहाँ से गुज़र रहा है, तो उसने सोचा, "मैं ठीक हो जाऊँगी अगर मैं उसके कपड़ों के किनारे को छू सकूँ। किसी को भी इसके बारे में कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं होगी।"

इसलिए उसने भीड़ में से अपना रास्ता बनाया और हाथ बढ़ाकर उसके कपड़ों के कोने को छू लिया। तुरंत उसे पता चला कि वह ठीक हो गई है।

यीशु ने महसूस किया कि सामर्थ उसके शरीर से निकली है, इसलिए वह रुक गया और कहा, "मुझे किसने छुआ?"

पतरस ने भीड़ को देखा और कहा, "किसने तुझे छुआ से तेरा क्या मतलब है? अपने चारों ओर इन लोगों को देख, सारी भीड़ तुझपर गिरी पड़ी है।"

यीशु ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और उस व्यक्ति की तलाश जारी रखी जिसने उसे छुआ था। जब महिला को एहसास हुआ कि उसने जो किया है, उसे छिपा नहीं सकती है, तो वह कांपती हुई उसके सामने आई।

यीशु ने उससे कहा, “डर मत। तेरे विश्वास ने तुझको ठीक किया है। वापस घर जा। वह बीमारी वापस नहीं आएगी।"

जब वह बात कर रहे थे, कुछ लोगों ने आकर याईर से कहा, "गुरु को परेशान करने की आवश्यकता नहीं है। तेरी बेटी मर गई है।”

यीशु ने उन्हें सुना और याईर से कहा, “डर मत। बस मुझ पर विश्वास कर।” वे उसके घर गए।

जब वे वहां पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि शोक मनाने वाले पहले ही आ चुके थे। बांसुरी बजाना और बहुत जोर से रोना उनका काम था। यीशु ने कहा, “तुम यह सब क्यों कर रहे हो? लड़की केवल सो रही है।”

वे उस पर हंसें क्योंकि वे जानते थे कि वह मर चुकी है। इसलिए उसने उन्हें घर से निकाल दिया। फिर वह याईर और उसकी पत्नी, साथ ही पतरस, याकूब और यूहन्ना को ले गया, और जहां लड़की लेटी थी, वहां गए। उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसका हाथ थाम लिया। "बच्चे, उठ।"

तुरंत, लड़की ने अपनी आँखें खोलीं और उठ गई। उसके माता पिता आश्चर्य में देखने लगे। अंत में यीशु ने कहा, "उसे कुछ खाने को दो।"

फिर उसने उनसे कहा, "इस बारे में किसी को मत बताना।" फिर भी, इस घटना की खबर पूरे इलाके में फैल गई।

196 बेतहसदा का कुंड

यूहन्ना 5

यरूशलम में बेतहसदा नामक एक कुंड था। यह भेड़ फाटक के पास था। स्थानीय लोगों का मानना था कि कभी-कभी एक दूत कुंड के पानी को हिलाते थे। उन्होंने महसूस किया कि अगर कोई व्यक्ति पानी के अंदर जाता है, तो वह बीमार से ठीक हो जाता है। इसलिए, एक बड़ा समूह दूत के इंतजार में कुंड के पास रहता था।

यीशु वहां गया जब वह एक यहूदी त्योहार के लिए यरूशलेम में था। उसने एक आदमी को देखा जो 38 साल से बीमार था। प्रभु ने कहा, "क्या तू चंगा होना चाहता है?"

उस आदमी ने कहा, "हां, लेकिन जब मैं पानी की हलचल देखता हूं, तो हमेशा कोई मुझसे पहले कुंड में उतर जाता है।"

यीशु ने कहा, “खड़े हो जा! अपना बिस्तर उठा और चल।” तुरंत वह आदमी ठीक हो गया और उठ गया। यीशु भीड़ में चला गया, जबकि वह आदमी अपना बिस्तर उठा रहा था।

कुछ यहूदी अगुओं ने उस आदमी को अपना बिस्तर ले जाते हुए देखा। उन्होंने कहा, “तेरी हिम्मत कैसे हुई! आज सब्त है। सब्त के दिन बिस्तर ले जाना कानूनी नहीं है।”

उस आदमी ने कहा, "लेकिन ... लेकिन ... एक आदमी ने मुझे चंगा किया और फिर मुझसे कहा कि बिस्तर उठा और घर जा।"

"किसने तुमसे कहा था कि यह काम सब्त पर करना है?"

"मुझे नहीं पता। उसने मुझे चंगा किया और फिर भीड़ में गायब हो गया।”

बाद में, यीशु ने इस व्यक्ति को मंदिर में देखा। प्रभु ने कहा, "तू ठीक हो गया है, लेकिन तुझे पाप करना बंद कर देना चाहिए। यदि तू नहीं करेगा, तो कुछ बुरा होगा।" उस आदमी को तब पता चला कि किसने उसे चंगा किया है। इसलिए वह यहूदी अगुओं के पास गया और उन्हें बताया कि यह यीशु था। यह सुनकर उन लोगों में यीशु के प्रभाव को समाप्त करने के लिए और अधिक दृढ़ हो गया। उन्होंने महसूस किया कि सब्त के दिन उसकी हरकतें पूरी तरह से अस्वीकार्य थीं।

यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पिता सब्त के दिन काम करते है, इसलिए मैं भी करूँगा।" यह सुनकर, अगुओं ने उसे मारने की बात शुरू कर दी। उन्होंने कहा, "वह सब्त के बारे में नियम तोड़ता है। अब वह परमेश्वर को अपना पिता कहता है। वह सोचता है कि वह परमेश्वर के बराबर है!

यीशु ने कहा, "पुत्र केवल वही करता है जो पिता उसे करने के लिए कहता है। पिता पुत्र से प्यार करता है, और उसे शक्ति देता है ताकि वह किसी को भी जीवन दे सके, जिसे वह चाहता है। पिता ने पुत्र को लोगों का न्यायी बनाया है। यदि तुम पुत्र का सम्मान नहीं करते हो, तो तुम उस पिता का सम्मान नहीं कर रहे हों, जिसने उसे भेजा है।

"मैं उन लोगों को अनंत जीवन दूंगा जो मुझे सुनते हैं और उस पर विश्वास करते हैं जिसने मुझे भेजा है। जो लोग मानते हैं, उनका न्याय नहीं होगा, लेकिन वे मृत्यु से जीवन में जाएंगे।

"तुम कैसे जानते हो कि मैं तुमको सच बता रहा हूँ? मैंने तुमको बताया है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है क्योंकि मैं अपने बारे में बात कर रहा हूं। तुमने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को मेरे बारे में बात करते सुना, लेकिन तुमने उस पर विश्वास नहीं किया। पिता ने मेरे बारे में बात की, लेकिन तुमने अपने कान बंद कर लिए। मेरे चमत्कार दिखाते हैं कि मैं सच कह रहा हूं, लेकिन तुम उन्हें प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करते।

"तुम लगातार शास्त्रों का अध्ययन करते हो। वे मेरे बारे में बात करते हैं, लेकिन तुम अपनी नज़रें उन शास्त्रों से हटा लेते हों। सच तो यह है, तुम मेरे पास आने और जीवन के लिए तैयार नहीं हो।"

197 यूहन्ना का सिर काटा जाना

मरकुस 6: 14-29, लूका 9: 7-9

अपनी पत्नी को खुश करने के लिए, राजा हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को गिरफ्तार किया था। यूहन्ना ने उसकी शादी का विरोध करते हुए कहा था, "अपने भाई की पत्नी से शादी करना पाप है।"

हेरोदेस की पत्नी उसे मरवाना चाहती थी! लेकिन हेरोदेस जानता था कि यूहन्ना एक नेक इंसान था। राजा लोगों से भी डरता था, यह जानकर कि वे एक भविष्यवक्ता था। इसके अलावा, उसेयूहन्ना के उपदेश अच्छे लगते थे। इसलिए, उसने नबी को मारने के बजाय जेल में रखने का फैसला किया।

हेरोदेस ने अपना जन्मदिन मनाने के लिए एक बड़ा भोज रखा। उसने महत्वपूर्ण लोगों की एक बड़ी भीड़ को आमंत्रित किया। भोज के दौरान, उन्होंने अपनी पत्नी की बेटी को बुलाया, की वह भीड़ के लिए नृत्य करे।

हेरोदेस उसके प्रदर्शन से प्रसन्न था। तो उसने लड़की से कहा, "मुझसे कुछ भी मांग और मैं तुझे दे दूंगा।"

वह बता सकता है कि इसने भोज में लोगों को प्रभावित किया, इसलिए उसने कहा, "मुझसे कुछ भी मांग। मैं शपथ खाता हूं कि मैं तुझको अपना आधा राज्य तक दे दूंगा।"

बेटी को पता था कि उसे इसके बारे में सलाह लेनी चाहिए। इसलिए, उसने अपनी माँ से बात की। "मुझे क्या मांगना चाहिए?"

उसकी माँ वही चाहती थी। उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर मांग।"

लड़की वापस गई और कहा, "मैं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर एक थाली में चाहती हूं। और मैं इसे अभी चाहती हूं।

हेरोदेस हैरान था। फिर भी, अपना वादा उसने अपने मेहमानों के सामने किया था। इसलिए, उसने पहरेदार से कहा कि वह यूहन्ना के पास जाए और लड़की के लिए सिर लाए।

पहरेदार को जैसा कहा गया था उसने वैसा ही किया। वह जेल गया और यूहन्ना को मार डाला। फिर उसने उसका सिर लाया और उसे एक थाल पर युवती को दे दिया। वह इसे अपनी मां के पास ले गई।

यूहन्ना के शिष्यों ने जेल में जाकर उसका शरीर प्राप्त किया। उन्हें दफनाने के बाद, उन्होंने जाकर यीशु को बताया।

कुछ समय बाद, हेरोदेस ने यीशु के कामों के बारे में सुना। वह बहुत आश्वस्त था।

उसने कहा, "मैंने यूहन्ना को मार डाला, और अब वह मृतकों में से जी उठा है। वह महान शक्तियों के साथ वापस आया है।"

उस दिन से, हेरोदेस यीशु से मिलना और बात करना चाहता था।

198 भोजन की भरपुरी और पानी पर चलना

मत्ती 14: 14-33, यूहन्ना 6: 1-21
मरकुस 6: 30-52, लूका 9: 10-17

5,000 को खिलाना, एकमात्र चमत्कार है जो चारों सुसमाचारों में दर्ज है।

यीशु एक पहाड़ पर चढ़ गया जहाँ उसने अपने चेलों को सिखाया। एक बड़ी भीड़ उनके साथ गई ताकि वे उसे सिखाते सुन सकें।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वे भूखे थे, और भोजन नहीं था। यीशु जानता था कि वह क्या करने जा रहा है, लेकिन फिर भी उसने फिलेप्पुस से पूछा,

"हम इन लोगों के लिए भोजन कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं?"

"प्रभु, आठ महीने का वेतन भी इन सभी लोगों के लिए पर्याप्त भोजन नहीं खरीद सकता है।" दूसरे चेलों ने कहा, "उन्हें गाँवों में भेज दे ताकि वे अपने लिए भोजन खरीद सकें।"

यीशु ने कहा, "नहीं, मैं चाहता हूं कि तुम उन्हें खिलाओ। जाओ और देखो कि हमारे पास कितना भोजन है।"

अन्द्रियास एक युवा लड़के के साथ वापस आया। "प्रभु, इस बालक के पास पांच जौ की रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ हैं। लेकिनइससे इतनी बड़ी भीड़ को कैसे खिलाया जा सकता है?"

यीशु ने कहा, "मुझे दो।" उसने रोटी और मछली ली, और उन्हें आशीष दी।

फिर उसने उन्हें शिष्यों में बांट दिया और कहा, "लोगों को यह बताना कि वे जितना चाहें उतना ले सकते हैं।"

उन्होंने लोगों को भोजन परोसा, और तब तक खाते गए जब तक वे संतुष्ट नहीं हो गए। वहां 5,000 से अधिक लोग थे। तब यीशु ने कहा, "जाओ और बचा हुआ भोजन उठाओ।" जब वे सब खा चुके थे, तब भी उनके पास रोटी और मछली से भरे हुए बारह टोकरे थे।

लोगों ने कहा, "यह वही है जिसके बारे में पवित्रशास्त्र बात करता है - मूसा जैसा महान भविष्यवक्ता।" उन्होंने उसे राजा बनाने के बारे में आपस में बात करना शुरू किया।

यीशु जानता था कि वे क्या सोच रहे थे, इसलिए उसने उन्हें भेज दिया और अपने शिष्यों से कहा कि वे समुद्र के रास्ते वापस जाएं। और उसने पहाड़ पर चढ़कर प्रार्थना की।

जब यीशु प्रार्थना कर रहा था, समुद्र में एक तूफान आया। विशाल लहरों ने जहाज को बीच की ओर धकेल दिया। पुरुषों ने वापस किनारे पर जाने के लिए कड़ी मेहनत की, लेकिन हवा बहुत ज़ोरदार थी।

सुबह तीन बजे, यीशु पानी के ऊपर समुद्र में चलता हुआ आया। आदमियों ने बाहर देखा और किसी को लहर के बीच चलते देखा। वे चिल्लाए क्योंकि उन्होंने सोचा कि यह कोई भूत था।

यीशु ने कहा, "डरो मत। यह मैं हूँ।"

पतरस ने कहा, "प्रभु, अगर यह आप है, तो मुझे आपके पास आने के लिए कहें।"

"आ जा।"

इसलिए पतरस नाव से बाहर निकला और यीशु की ओर चलने लगा। अचानक उसने लहरों और हवा को देखा। वह डर गया, और डूबने लगा। वह चिल्लाया, "प्रभु, मुझे बचा।"

प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया। उन्होंने कहा, "ओह पतरस, तेरा विश्वास इतना छोटा है। तुझको शक क्यों हुआ?"

वे दोनों वापस चले गए, और नाव में सवार हो गए। अचानक तूफान थम गया। चेलों ने घुटने टेक दिए और यीशु की आराधना की। उन्होंने कहा, "यह सच है। तू परमेश्वर का पुत्र है।"

199 रोटी का जीवन

मत्ती 15: 21-28, मरकुस 7: 24-30
यूहन्ना 6: 22-71

जिस दिन यीशु ने 5,000 लोगों को खिलाया था, उस दिन लोगों ने उसे दूसरे किनारे पर पाया और जाना कि वह एक विशेष नाव से आया है। वे यह भी जानते थे कि वही नाव उसके बिना एक दिन पहले चली गई थी। उन्होंने कहा, "आप वहां कैसे पहुंचे?"

यीशु ने उनके सवाल को नज़रअंदाज़ किया और असली मुद्दे पर ध्यान दिया। उसने कहा, "तुम यहाँ हो क्योंकि तुमने मेरे द्वारा दी गई रोटी से अपना पेट भरा है। तुमको जीवन की रोटी की तलाश होनी चाहिए जो तुमको अनंत जीवन दे।"

उन्होंने कहा, "परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?"

यीशु ने कहा, "परमेश्वर तुमसे यह चाहता हैं। जिसको उसने तुम्हारे लिए भेजा है, उस पर विश्वास करो।"

उन्होंने कहा, "हमें एक संकेत दें ताकि हम विश्वास कर सकें। तू हमें अभी तो खिला सका है। यह मूसा जैसा है जिसने हमें जंगल में मन्ना दिया।"

उसने कहा, "तुम्हारे पिता ने जंगल में मन्ना पा लिया, लेकिन अंत में वे मर गए। मैं जीवन की रोटी हूँ, जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से नीचे भेजा है। मैं जो रोटी देता हूँ वह मेरा शरीर है, और जो मैं पीने के लिए देता हूँ वह मेरा खून है। मेरा मांस और मेरा खून तुम्हारे लिए अनंत जीवन लाएगा।"

लोग चौंक गए! उन्होंने एक दूसरे से कहा, "यह आदमी कैसे कह सकता है कि वह परमेश्वर की ओर से नीचे आया है? हम उसके माता-पिता को जानते हैं। और वह हमें खाने और पीने के लिए अपना मांस और खून कैसे दे सकता है?"

उस दिन से, उनके कई चेलों ने उसके पीछे चलना छोड़ दिया। उन्होंने कहा, "यह विश्वास करना बहुत कठिन है।"

यीशु बारह की ओर मुड़ा और कहा, "क्या तुम भी मुझे छोड़ना चाहते हो?"

पतरस ने कहा, "प्रभु, हम कहां जा सकते हैं? तू ही हैं जो हमें अनंत जीवन देता है। हमने देखा है, और अब विश्वास करते हैं। तू परमेश्वर का पवित्र हैं।"

यीशु ने कहा, "मैंने तुम बारह को चुना है, फिर भी तुम में से एक मेरे खिलाफ हो जाएगा।"

उसके बाद, यीशु अपने चेलों को सूर और सैदा ले गया, जो इस्राएल के उत्तर में एक अन्यजातियों का क्षेत्र था। जब वह वहाँ था, एक अन्यजाति महिला ने आकर उससे भीख माँगी। "दाऊद के बेटा, मुझ पर दया कर। एक दुष्टात्मा ने मेरी बेटी को दबोच लिया है और उसे लगातार यातनाएं दे रहा है।"

यीशु ने उसको पूरी तरह नज़रअंदाज़ किया और एक शब्द भी नहीं कहा। वह तब तक गिड़गिड़ाती रही जब तक उसके चेलों ने कहा, "हे प्रभु, उसे विदा कर। उसका रोना हमें परेशान कर रहा है।"

यीशु ने उसकी ओर देखा और कहा, "परमेश्वर ने मुझे अपनी खोई हुई भेड़ों, इस्राएल के लोगों की मदद करने के लिए भेजा है।"

इसके साथ, वह उसके सामने झुक गई और कहा, "परमेश्वर, मेरी मदद कर।"

उसने कहा, "बच्चों का भोजन लेकर कुत्तों के सामने डालना सही नहीं है।"

उसने कहा, "हां, प्रभु, यह सच है। लेकिन कुत्तों को भी तो मेज से गिरा चुरा खाने की अनुमति होती है।"

उसने कहा, "नारी, तेरा विश्वास महान है! अब तू घर जा सकती हैं। दुष्टात्मा ने तेरी बेटी को छोड़ दिया है। "

वह उठ कर घर चली गई। वहां उसने अपनी बेटी को अपने बिस्तर पर पड़ा पाया। दुष्टात्मा चली गई थी।

200 4,000 लोगों को खिलाना

मत्ती 15:29 - 16:16,
मरकुस 8: 1-21, 27-30

यीशु सूर और सैदा के क्षेत्र से चला और गलील के सागर की दूसरी तरफ जहां अन्यजातियां रहती थी चला गया। जब वह लोगों को सिखा रहा था, तो एक बड़ी भीड़ उन लोगों को ले आई, जो विभिन्न शारीरिक समस्याओं से जूझ रहे थे। वे लंगड़े, अंधे, अपंग और कई बीमारियों से पीड़ित लोगों को लाए। यीशु ने उन सभी को चंगा किया, और भीड़ चकित हो गई।

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मैं भीड़ के लिए चिंतित हूं। वे तीन दिन से हमारे साथ है, और उनका खाना खत्म हो गया। मैं उन्हें खाना खिलाए बिना उन्हें नहीं भेजना चाहता क्योंकि वे जाते-जाते भूख से मर जाएंगे।"

चेलों ने कहा, "प्रभु, हमारे पास इतनी बड़ी भीड़ को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है।"

यीशु ने कहा, "तुम्हारे पास कितना है?"

चेलों ने कहा, "हमारे पास सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ हैं।"

यीशु ने कहा, "भीड़ को बैठने के लिए कहो।"

उसने रोटी और मछली ली और उसे आशीष दी।

फिर उसने इसे टुकड़ों में तोड़ दिया और अपने चेलों को दे दिया। उन्होंने मुड़कर भीड़ को दिया।

4,000 लोग वहां मौजूद थे। सभी ने तब तक खाया जब तक उनके पेट भर नहीं गए। चेलों ने तब बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा किया और पाया कि उनके पास सात टोकरियां भरी हुई थीं।

बाद में, उन्होंने भीड़ को घर भेज दिया। यीशु और उसके चेले नाव में सवार होकर यहूदी झील की उस तरफ गए, जिस तरफ यहूदी रहते थे।

यहूदी अगुवें वहाँ थे, और उसके साथ बहस करने लगे। वे चाहते थे कि वह उन्हें स्वर्ग से संकेत दे। उसने इनकार कर दिया और नाव में वापस आ गया।

जब वे झील के किनारे वापस जा रहे थे, जहाँ अन्यजाति रहते थे, चेलों को एहसास हुआ कि वे यात्रा के लिए पर्याप्त भोजन लाना भूल गए हैं। उनके पास केवल एक छोटी रोटी थी।

यीशु ने उनसे कहा, "धार्मिक अगुओं के खमीर से सावधान रहो।" चेलों को लगा कि वह उन्हें रोटी भूल जाने के लिए डांट रहा था।

उसने कहा, “तुम्हारा विश्वास अभी भी बहुत छोटा है! तुम क्यों सोच रहे हो कि मैं रोटी के बारे में चिंतित हूं? तुम वहाँ थे। तुमने देखा कि कैसे सिर्फ पांच रोटियों और दो मछलियों से 5,000 लोगों को खिलाया गया। हमने बाद में कितने टोकरियाँ एकत्रित कीं?”

"बारह।"

तुमने देखा कि कैसे सिर्फ सात रोटियों और कुछ छोटी मछलियों से 4,000 लोगों को खाना खिलाया गया। हमने बाद में कितने टोकरियाँ एकत्रित कीं?”

"सात।"

“इसलिए ध्यान से सुनो और समझो कि मैं क्या कह रहा हूँ। धार्मिक अगुओं के खमीर से सावधान रहो। अंत में पुरुषों ने समझा कि वह किस बारे में बात कर रहा है।

एक बार जब वे दूसरी तरफ पहुँचे, तो यीशु उन्हें कैसरिया फिलिप्पी ले गया। वहां, उन्होंने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूं?"

चेलों ने कहा, "कुछ लोग कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है। अन्य लोग कहते हैं कि तू एलिय्याह या यिर्मयाह हैं।"

"तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?"

पतरस ने कहा, "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीहा हैं।"

यीशु ने कहा, "पतरस, तू धन्य है! तूने यह मानव स्रोतों से नहीं सीखा है, लेकिन पिता ने इसे तुझ पर प्रकट किया है।"

इसके बाद उसने अपने सभी चेलों से कहा "अभी के लिए, किसी को भी यह नहीं बताना कि मैं मसीहा हूँ।"

201 यीशु का रूपांतरण

(मती 17:1-13, मरकुस 9:2-29, लूका 9:28-36)

यीशु पतरस, याकूब और यहूना को एक पहाड़ पर प्रार्थना करने गया! जब यीशु प्रार्थना कर रहा था, तब उसका चेहरा तेज प्रकाश के समान चमकने लगा और उसके वस्त्र भी उज्वल सफेद हो गए! उसी समय मूसा और एलियाह वहाँ प्रकट हुए और यीशु से उसके होने वाले बलिदान के विषय मे बात करने लगे! पतरस ने कहा, “प्रभु, ठीक हुआ की हम यहाँ है! यदि तू चाहे तो हम तीन तंबू बनाएँ- एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए, एक एलियाह के लिए!”

तभी एक उज्वल बादल ने उन्हे ढक लिया और उस बादल से एक आवाज आई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो!” यह सुनकर शिष्य डर गए और भूमि पर गिर पड़े! यीशु उनके पास आया, उन्हे छुआ और कहा, “डरो मत, उठो!” जब उन्होंने आंखे खोली तो वहाँ केवल यीशु ही था!

पहाड़ से उतरते समय यीशु ने उनसे कहा, “जो कुछ तुमने आज देखा है, उसे तब तक किसी से न कहना जब तक मैं मरे हुओं मे से जी ना उठूँ!” चेले आपस मे इस बात पर सोचते रहे की ‘मरे हुओं मे से जी उठना’ क्या है! फिर उन्होंने पुछा, “गुरुजी, शास्त्री कहते है की पहले एलियाह का आना जरूरी है?” यीशु ने उतर दिया, “हाँ, एलियाह पहले आएगा और सब कुछ सुधार देगा! पर मैं तुमसे कहता हूँ की एलियाह आ चुका है, पर लोग उसे पहचान ना सके और उसके साथ जैसा चाहा वैसा किया! वैसे ही वे मेरे साथ भी करने वाले है!” तब शिष्यों ने समझा की यीशु यहूना बपतिस्मा देने वाले की बात कर रहा था!

जब वे नीचे पहुंचे तो भीड़ उनका इंतज़ार कर रही थी! एक आदमी दौड़ता हुआ आया और यीशु के सामने गिरकर बोला, “प्रभु, मेरे पुत्र पर दया करो! उसपर दुषटआत्मा आती है और उसे आग ओर पानी मे गिरा देती है! वह बोल भी नहीं सकता, मुहँ से झाग निकलता है और वह कांपने लगता है! मैं आपके चेलों के पास गया, पर वे उसे चंगा नहीं कर पाए! यदि आप कुछ कर सकते है तो कृपया हमारी सहायता करें! यीशु ने कहा, “यदि कर सकता हूँ? विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ संभव है!” उस लड़के के पिता ने घबराकर कहा, “हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, मेरी अविश्वास मे सहायता कर!”

यीशु ने उस बालक को बुलवाया! जब बुरी आत्मा ने यीशु को देखा तो उसने लड़के को जोर से पटक दिया! वह ज़मीन पर गिरकर झाग निकालने लगा! यीशु ने उस आत्मा को डांटा, "इस लड़के से बाहर निकल जा और फिर कभी उसमे प्रवेश न करना!" आत्मा चिल्लाई और लड़के को पटक कर बाहर निकल गई! लड़का ऐसा पड़ा रहा की लोग कहने लगे, "यह तो मर गया!" पर यीशु ने उसे हाथ पकड़कर उठाया और वह जी उठा!
बाद मे शिष्यों ने यीशु से पुछा, "हम इस आत्मा को क्यूँ नहीं निकाल सके?" यीशु ने कहा, " इस प्रकार की आत्मा केवल प्रार्थना और उपवास से ही निकलती है!"

202 मंदिर का कर भुगतान करना

मत्ती 17: 22-27, मरकुस 9: 33-42

यीशु अपने चेलों के साथ वापस कफरनहूम गया। चलते समय उसने कहा, "वे पुत्र को उन लोगों को दे देंगे जो उसे मार देंगे। लेकिन तीन दिनों में, वह मृतकों से जी उठेगा।

चेलों को समझ नहीं आया कि वह किस बारे में बात कर रहा है। फिर भी, उन्होंने उससे इस बारे में नहीं पूछा क्योंकि वे अपनी चर्चा के बीच में थे। वे इस बारे में बहस कर रहे थे कि उनमें से कौन सबसे बड़ा था।

जब वे कफरनहूम में घर पहुँचे, यीशु के पास सभी बारह आदमी इकट्ठे थे। उसने फिर एक बच्चे को साथ में खड़े होने के लिए इशारा किया। उसने कहा, "यदि तुम सभी में सबसे महान बनना चाहते हो, तो तुमको सब का सेवक बनना चाहिए।"

उसने फिर अपना हाथ बच्चे के कंधे पर रखा। "जब तुम मेरे नाम से आनेवाले इस छोटे बच्चे का स्वागत करते हो, तो तुम मेरा स्वागत कर रहे हो। लेकिन यह उससे कहीं अधिक है। तुम प्रभु का स्वागत कर रहे हो।"

यूहन्ना ने बोला, "प्रभु, हमें एक आदमी मिला है जो तेरे नाम से दुष्ट आत्माएं निकलता है। लेकिन वह हमारे समूह का हिस्सा नहीं था। इसलिए हमने उसे रोक दिया।"

यीशु ने कहा, "नहीं नहीं! उसे मत रोको। यदि कोई मेरे नाम से चमत्कार करता है तो वह मेरे खिलाफ काम नहीं कर रहा है। अगर वह हमारे खिलाफ नहीं है, तो वह हमारे साथ है। सुनो, अगर कोई आदमी मेरे नाम से एक कटोरा पानी भी देता है, तो उस आदमी को इनाम दिया जाएगा।"

उसने एक बार फिर बच्चे पर हाथ रखा।

"मेरी बात बहुत ध्यान से सुनो। अगर इन छोटों में से एक मुझ पर विश्वास करता है, और कोई उससे पाप करवाता है, तो बेहतर होगा कि उस आदमी को एक बड़ी चट्टान से बंधकर समुद्र में फेंक दिया जाए।''

अगले दिन, एक व्यक्ति जो मंदिर का कर लेता था, पतरस के पास आया और बोला, "क्या तुम्हारा शिक्षक मंदिर के कर का भुगतान करता है?"

"हाँ, वह करता है।" लेकिन पतरस को यकीन नहीं था।

कफरनहूम में, यीशु ने उसे कुछ सोचते देखा। उसने कहा, "शमौन, मुझे अपनी राय दो। जब एक राजा एक कर जारी करता है, तो क्या वह अपने परिवार से इसका भुगतान करवाता है?"

"अरे नहीं। दूसरों को भुगतान करना है, लेकिन उसके परिवार को नहीं।"

यीशु ने कहा, "यह सच है। राजा के बेटों को भुगतान नहीं करना होगा। लेकिन हम इस मुद्दे पर दूसरों को नाराज़ नहीं करना चाहते हैं। इसलिए समुद्र में जाओ और एक मछली पकड़ लो। जब तुम मछली पकड़ो, तब उसका मुंह खोलो। वहां तुमको एक सिक्का मिलेगा। यह तुम्हारे लिए कर का भुगतान करने के लिए पर्याप्त होगा – तुम्हारे और मेरे लिए।

203 सात के सत्तर बार

मत्ती 18:21-35

पतरस ने यीशु से एक प्रश्न पूछा। "परमेश्वर, अगर कोई मेरे साथ गलत करे, और मैं उसे माफ कर दूं, लेकिन वह फिर से मेरे साथ गलत करता है? कितनी बार मुझे उसे माफ करना चाहिए - सात बार?"

यीशु ने कहा, "पतरस, ध्यान से सुन। तुझे उसे सात के सत्तर बार माफ करना होगा!

"इस पर इस तरीके से विचार कर। एक राजा ने उन लोगों के खातों को निपटाने का फैसला किया, जिनके पास पैसे थे। तो वह एक आदमी को लाया, जिस पर उसके लाखों रुपये बकाया थे।

राजा को एहसास हुआ कि कोई तरीका नहीं है जिससे यह आदमी उसे वापस भुगतान कर सके। इसलिए उसने अपने मुनीम से कहा, इस आदमी को, उसकी पत्नी और उसके बच्चों को ले जा, और उन्हें बेच दे। और फिर उसके पास जो कुछ है, उसे बेच दे। जितना हो सके उतना लें और इसे अपने ऋण की जगह स्वीकार कर।

"आदमी जमीन पर गिर गया और चिल्लाया, 'हे राजा, कृपया मेरे साथ धैर्य रख और मैं आपका सब कुछ भुगतान करूंगा जो मैंने लिया है।'

"राजा जानता था कि यह एक खाली वादा था, लेकिन उसने उसके लिए सहानुभूति व्यक्त की। उसने कहा, इस आदमी को छोड़ दो। मैं उसका पूरा कर्ज माफ कर दूंगा।'

उसके कानों को यकीन हुआ। उसका पूरा कर्ज उतर चुका था, और वह आजाद था।

"कुछ दिनों बाद, इसी व्यक्ति को एक दोस्त मिला, जिसे उसके 5,000 रुपये देने थे। उसने उसे पकड़ लिया और उसे पीटना शुरू कर दिया। तुझ पर मेरे 5,000 रुपये बकाया हैं, और मैं इसे अभी चाहता हूं।''

"दोस्त नीचे गिर गया और चिल्लाया, ओह कृपया, मेरे साथ धैर्य रख और मैं तेरे द्वारा दी गई हर चीज़ का भुगतान करूंगा।"

"नहीं, मैं अब तेरे साथ धैर्य नहीं रख सकता!" मैं तुझे एक जेल में फेंकने जा रहा हूं, और जब तक मैं अपना सारा धन नहीं प्राप्त कर लेता, तब तक तू वही रहेगा।'

"जब उसने सुना तो राजा हैरान रह गया। उसके सामने वह आदमी लाया गया।

तू एक कृतघ्न व्यक्ति हैं! मैंने तेरे दस लाख रुपये का कर्ज माफ कर दिया क्योंकि मुझे तुझ पर दया आ रही थी। तू अपने दोस्त के साथ ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है, और वो भी 5,000 रुपये के लिए!? पहरेदारों, इस आदमी को ले जाओ और उसे जेल में डाल दो।'

यीशु ने तब पतरस से कहा। "मेरा स्वर्गीय पिता तेरे साथ उदार रहा हैं जब उसने तेरे सब पापों को माफ कर दिया था। इसलिए, तुमको दूसरों को क्षमा करने में उदार होना चाहिए।"

204 व्यभिचार में पकड़ी गई

यूहन्ना 7: 1 - 8:12

यरूशलेम में एक त्योहार का समय था। यीशु ने कहा कि वह नहीं जा रहा था, लेकिन वह बिना किसी के जाने वहाँ गया। धर्म गुरु लोग उसकी तलाश कर रहे थे ... लेकिन उसे खोज नहीं सके।

फिर भी, हर कोई उसके बारे में बात कर रहा था। कुछ लोगों ने कहा कि यीशु एक अच्छा इंसान था, जबकि दूसरों ने कहा कि उसने अपने शिक्षण से लोगों को धोखा दिया है। कोई भी बहुत ज्यादा नहीं कहना चाहता था क्योंकि वे धार्मिक अगुओं से डरते थे।

आधे त्योहार के बाद, यीशु मंदिर गया और भीड़ को सिखाना शुरू कर दिया। उसकी कही बात पर हर कोई अचंभित था। धर्मगुरुओं ने उसे पाने के लिए पहरेदार भेजे।

वे गए, लेकिन वे उसे पकड़ नहीं पाए, क्योंकि उसके मरने का समय नहीं था। जल्द ही, पहरेदार उसके शिक्षण द्वारा मोहित हो गए। वे अंत में धार्मिक अगुओं के पास लौट आए। अगुओं ने कहा, “वह कहाँ है? तुम उसे क्यों नहीं लाए? "

पहरेदार ने कहा, "हमने कभी किसी को इस आदमी की तरह बात करते नहीं सुना।"

अगली सुबह, यीशु एक बार फिर मंदिर में शिक्षा दे रहा था। धार्मिक अगुए एक महिला के साथ उसके पास गए, जिसे उन्होंने व्यभिचार में पकड़ा था। उन्होंने सोचा कि वे यीशु को फंसाने और उसके खिलाफ सबूत हासिल करने के लिए उसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा, ''शिक्षक, यह महिला व्यभिचार में पकड़ी गई है। मूसा का नियम कहता है कि हमें उसे पत्थर मारने चाहिए। लेकिन हम चाहते हैं कि तू हमें बताएं कि हमें क्या करना चाहिए।”

उसने ऐसे किया जैसे उसने उन्हें सुना ही नहीं। वह रुक गया और अपनी उंगली से धूल में लिखने लगा। उन्होंने उसे उन्हें अनदेखा नहीं करने दिया। वे इस स्थिति के बारे में पूछते रहे। अंत में, वह खड़ा हुआ और उनका सामना किया। "आगे बढ़ो और उसे पत्थर मारो। लेकिन पहला पत्थर वह मारे, जिसने कभी पाप नहीं किया है।” फिर वह रुक गया और फिर से जमीन पर लिखने लगा। लोग बिना कुछ बोले वहाँ खड़े हो गए।

अंत में वे एक-एक करके जाने लगे , पहले बड़े लोग। तब यीशु ने खड़े होकर चारों ओर देखा। केवल वह और महिला भीड़ के बीच में खड़े थे। उसने उससे कहा,

“नारी, तुझ पर आरोप लगाने वाले लोग कहाँ है? क्या उन्होंने तुझे मारा नहीं?"

उसने कहा, "नहीं, वे परमेश्वर नहीं थे।"

उन्होंने कहा, "ठीक है, मैं भी तुझे मौत के लिए दोषी नहीं ठहराता हूँ। जा, और अब पाप मत करना।

फिर वह भीड़ की ओर मुड़ा और कहा, “मैं जगत की ज्योति हूँ। जो लोग मेरे पीछे चलते हैं वे कभी अंधेरे में नहीं चलेंगे क्योंकि उनके पास जीवन की ज्योति होगी।”

205 जन्म से अंधा व्यक्ति

यूहन्ना 9

यीशु और उसके चेलों एक ऐसे व्यक्ति से मिले जो जन्म से ही अंधा था। उसके शिष्यों ने कहा, “शिक्षक, किसके पाप के कारण यह आदमी अंधा जन्मा है? क्या यह उसका पाप था, या उसके माता-पिता का?

यीशु ने कहा, "उसका अंधापन किसी विशेष पाप का परिणाम नहीं है। यह अंधापन इस लिए है ताकि वह परमेश्वर की सामर्थ को प्रदर्शित कर सके। मत भूलो, मैं जगत की ज्योति हूँ।”

यीशु ने फिर जमीन पर थूका और थूक से मिट्टी की ढेली बनाई। उसने इसे उस आदमी की आंखों पर रखा और कहा, "कुंड में जा और इसे धो लें।"

वह आदमी कुंड में गया, अपनी आँखें धोई और अचानक वह देख पा रहा था। वह घर गया, और उसके पड़ोसी चौंक गए कि वह देख सकता है।

उन्हें लगा कि शायद वह वही आदमी नहीं है। उसने कहा, "यह सच है, मैं वह आदमी हूं जो अंधा पैदा हुआ था।"

सबने पुछा, "तुझको दृष्टि कैसे मिली?"

उसने कहा, “यीशु नामक एक व्यक्ति ने ज़मीन पर थूक कर गीली मिट्टी बनाई। उसने मेरी आँखों पर वह लगाई और मुझसे कहा कि इसे धो ले। जैसा ही मैंने ऐसा किया, मैं देख पा रहा था।”

उन्होंने कहा, "यह आदमी कहाँ है?"

"मुझे नहीं पता।"

वे उसे फरीसियों के पास ले गए, और उसने उन्हें पूरी बात समझाई। उसने यह कहकर अपनी कहानी समाप्त की, “तो मैं कुंड में गया और उसे धोया, जैसा उसने मुझे कहा था। अब मैं देख पा रहा हूँ ।"

इससे धर्मगुरुओं में बहस शुरू हो गई। उनमें से कुछ ने सोचा कि यह चमत्कार परमेश्वर से नहीं था, क्योंकि यह सब्त के दिन किया गया था। दूसरों ने बताया कि बुरे लोग चमत्कार नहीं कर सकते।

तो उन्होंने उस आदमी से पूछा। "तू क्या बोलता है? किस तरह के आदमी ने तेरा अंधापन ठीक किया?”

बिना किसी हिचकिचाहट के उसने कहा, "वह एक नबी है!"

वे सब यह नहीं सुनना चाहते थे। तो कुछ ने सवाल किया कि क्या वह आदमी वास्तव में अंधा था?

उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाया। “क्या यह तुम्हारा अंधा बेटा है? यदि ऐसा है, तो वह देख कैसे सकता है?"

माता-पिता जवाब देने से डर रहे थे, क्योंकि उन्हें पता था कि धर्मगुरु उन्हें आराधनालय से बाहर निकाल सकते हैं। उन्होंने कहा, "वह हमारा बेटा है, और हाँ, वह अंधा पैदा हुआ था। बस हमें यही पता है। हमें नहीं पता कि वह अब कैसे देख सकता है। वह बड़ा हो गया है, उससे पूछों।”

इसलिए उन्होंने एक बार फिर आदमी की ओर रुख किया। "इस आदमी यीशु की प्रशंसा मत कर, यह दुष्ट है। परमेश्वर की स्तुति कर।”

उस आदमी ने कहा, "मैं धर्मशास्त्र के बारे में नहीं जानता। मुझे पता है कि मैं अंधा था, लेकिन अब मैं देख सकता हूं।

फिर से, उन्हें उसका जवाब पसंद नहीं आया। तो उन्होंने एक बार फिर उससे पूछा कि यह कैसे हुआ?

उसने कहा, "मैं पहले ही बता चुका हूं कि क्या हुआ था। आप इसे फिर से क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप उसके चेलें बनने की योजना बना रहे हैं?"

वे उसके साहस से दंग रह गए। "नहीं! हम मूसा के चेलें हैं, जिसने परमेश्वर से बात की थी। यह आदमी? हमें नहीं पता कि उसके पास क्या अधिकार है।

उस आदमी को हैरानी हुई। उसने कहा, "आपको नहीं पता कि उसे उसका अधिकार कहाँ से मिलता है? मुझे देखो! मैं अंधा था और उसने मुझे चंगा किया! परमेश्वर बुरे लोगों को उस तरह की शक्ति नहीं देता है!"

फरीसी इस वजह से नाराज हो गए। "तेरी हमें सिखाने की हिम्मत कैसे हुई!" उन्होंने तुरंत उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया।

यीशु ने सुना कि क्या हुआ था, इसलिए उसने जाकर उस आदमी को ढूंढा। उसने कहा, "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?"

"परमेश्वर, वह कौन है, जो मैं उस पर विश्वास करूँ?"

यीशु मुस्कुराया, "तूने उसे अपनी आँखों से देखा है। वह तुझसे बात कर रहा है।"

वह आदमी गिरा और कहा, "प्रभु, मुझे विश्वास है।"

206 कोढ़ी, न्यायी, और घमंड

लूका 17: 11-19, 18: 1-14

जब यीशु यरूशलेम की यात्रा कर रहा था, वह एक गाँव से गुज़रा। कुष्ठ रोग से ग्रस्त दस आदमी उसकी ओर चले। उन्हें अपने और अन्य लोगों के बीच एक दूरी बनाए रखने की आवश्यकता थी। इसलिए वे दूर से ही उसके पास पहुँचे।

"गुरु, हम पर दया कर।"

यीशु उनके पास गया और वापस कहा। "जाओ अपने आप को याजकों को दिखाओ।"

उन्होंने एक-दूसरे को देखा और जैसा उसने कहा, वैसा करने का फैसला किया। रास्ते में, उन्होंने अचानक महसूस किया कि वे सब ठीक हो गए थे।

दस आदमियों में से एक सामरिया से था। वह तुरंत घूमा और यीशु के पास वापस चला गया। उसने जाते ही परमेश्वर की स्तुति की। वह प्रभु के सामने गिरा और उसे धन्यवाद दिया।

यीशु ने चारों ओर देखा और कहा, "क्या तुम दसों चंगे नहीं हुए? बाकि नौ कहाँ हैं? तुम सामरिया से हो, फिर भी तू वापस आने और परमेश्वर का शुक्रिया करने वाला एकमात्र व्यक्ति है।

तब यीशु ने उस आदमी को उठने में मदद की। और कहा, "जा, तेरे विश्वास ने तुझे ठीक किया है।"

बाद में, यीशु भीड़ को सिखा रहा था कि वे प्रार्थना करते समय कभी निराश न हों। उसने कहा, "एक न्यायी था जो परमेश्वर से नहीं डरता था, और लोगों के बारे में पूरी तरह से बेपरवाह था।

"उसके शहर में, एक विधवा थी जो उसके पास जाती और कहती, मैं चाहती हूं कि अदालत मुझे उस आदमी के खिलाफ न्याय दे, जिसने मेरे प्रति गलत किया है।" सबसे पहले, न्यायी ने उसकी मदद करने से इनकार किया। अंत में, उसने कहा, मुझे परवाह नहीं है कि इस महिला के साथ क्या होता है, लेकिन मैं उसकी मदद करने जा रहा हूं क्योंकि वह मुझे परेशान कर रही है।''

प्रभु ने कहा, "तुमको उसी संकल्प के साथ परमेश्वर के पास जाना चाहिए। लेकिन तुम्हें उस विधवा की तुलना में अधिक फायदे हैं। उसके न्यायी ने उसकी परवाह नहीं की, लेकिन तुम्हारे पास स्वर्गीय पिता हैं जो तुमसे प्यार करता है और तुम्हारी मदद करना चाहता है।"

यीशु ने भीड़ को एक और कहानी सुनाई, जब उन्होंने देखा कि कुछ लोग सोचते हैं कि वे बेहतर थे। उन्होंने कहा, "दो लोग मंदिर में प्रार्थना करने गए। एक फरीसी था, जिसे सभी ने सम्मानित किया था। दूसरा एक चुंगी लेनेवाला था, जिससे सभी ही नफरत करते थे, यह सोचकर कि वह राष्ट्र का गद्दार है।

"फरीसी एक प्रमुख स्थान पर खड़ा था और उसने प्रार्थना की। 'परमेश्वर, मुझे खुशी है कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूं - जो लालची या बेईमान हैं - या उन लोगों की तरह जो अपनी पत्नियों के प्रति विश्वासघाती हैं। मुझे विशेष रूप से खुशी है कि मैं उस मनहूस चुंगी लेनेवाले की तरह नहीं हूँ। परमेश्वर, जैसा कि आप जानते हैं, मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं और जो कुछ भी कमाता हूँ उसका दसवां हिस्सा आपको देता हूं।'

"चुंगी लेनेवाला सभी से दूर खड़ा था। वह ऊपर देख भी नहीं पा रहा था, लेकिन शर्म से अपनी छाती

पीटता रहा। उसने कहा, परमेश्वर, मुझे पता है कि मैं एक पापी हूं। कृपया मुझ पर दया कर।'

यीशु ने कहा, "दोनों आदमी घर गए, लेकिन परमेश्वर के सामने केवल एक ही उचित था। यह चुंगी लेनेवाला था, फरीसी नहीं। परमेश्वर उन लोगों को बढाएगा जो स्वयं को विनम्र करते हैं, लेकिन वह उन लोगों को कम करेगा जो खुद को बढ़ाते हैं।"

यीशु ने कहा, "हत्या मत कर। व्यभिचार न कर। चोरी न कर। गलत गवाही न दें, अपने माता-पिता का सम्मान कर।"

"गुरु, मैंने इन्हें तब से माना है जब मैं एक बच्चा था। क्या कमी है?"

यीशु ने उसे देखा और उसे प्यार किया। उसने कहा, "तुझमें एक चीज़ की कमी है। यदि तू स्वर्ग में खजाना चाहता हैं, तो तेरे पास जो कुछ भी है उसे गरीबों को दे दें। एक बार जब तू ऐसा कर लेता हैं, तो आ और मेरे पीछे चल।"

यह सुनते ही युवक दंग रह गया। वह बहुत अमीर था और वो वह सब देने के लिए तैयार नहीं था। उदासी के साथ, वह चला गया।

यीशु ने देखा कि जब वह गया था तो वह जवान कितना दुखी था। इसलिए प्रभु ने अपने चेलों की ओर रुख किया और कहा, "किसी अमीर व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। ऊँट के लिए एक सूई के छेद से गुज़रना उतना कठिन नहीं है, पर अमीर व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना बहुत कठिन है।"

यह सुनकर शिष्य चौंक गए। उन्होंने कहा, "फिर किसे बचाया जा सकता है?"

यीशु ने उनकी ओर देखा और कहा, "यह लोगों के साथ असंभव है लेकिन परमेश्वर के साथ नहीं। परमेश्वर के साथ सभी चीजें संभव हैं।"

206B अमीर युवा शासक

मत्ती 19: 16-26, मरकुस 10: 17-27, लूका 18: 18-27

यीशु सड़क पर चल रहा था, जब एक युवा अधिकारी दौड़ता हुआ उसके सामने आया। उसने कहा, "अच्छे शिक्षक, मैं यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकता हूं कि मुझे अनंत जीवन मिले?"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तूने मुझे 'अच्छा' क्यों कहा?" केवल परमेश्वर ही अच्छा है। लेकिन तेरे सवाल के अनुसार - आज्ञाओं का पालन कर और तू अनंत जीवन पाएगा।"

उसने कहा, "कौन सी आज्ञाएं?"

207 नेक सामरी

लूका 10: 25-42

एक आदमी था जो मूसा की व्यवस्था का विशेषज्ञ था। उसने यीशु से पूछा, "कोई व्यक्ति स्वर्ग जाने का अधिकार कैसे कमा सकता है?"

यीशु ने कहा, "मुझे बता कि व्यवस्था में क्या लिखा है।"

उसने कहा, "अपने हृदय, आत्मा, शक्ति और मन से परमेश्वर से प्रेम कर; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करो। "

"आह", यीशु ने कहा। "जा और ऐसा ही कर, और तू जीवित रहेगा।"

आदमी को एहसास हुआ कि यह कितना असंभव था।

"अच्छा, ठीक है, वास्तव में मेरा पड़ोसी कौन है?"

यीशु ने कहा...

"एक आदमी यरूशलेम से यरीहो की सड़क पर यात्रा कर रहा था। लुटेरों ने उसे पकड़ लिया और तब तक पीटा जब तक वह लगभग मर नहीं गया। फिर वे उसके पैसे और कपड़े ले गए, और उसे सड़क के किनारे छोड़ दिया।

"आदमी को मदद की सख्त ज़रूरत थी, और जल्द ही एक याजक उसी सड़क से आया। उसने उस आदमी को देखा, लेकिन सड़क के दूसरी तरफ गया और जल्दी जल्दी चला गया। उसके बाद, एक लेवी पास से गुज़रा, लेकिन उसने उस आदमी को नज़रअंदाज़ कर दिया।

"एक तीसरे आदमी ने सड़क पर यात्रा की, लेकिन दुर्भाग्य से वह एक सामरी था, वह वो था जो यहूदियों से नफरत करता था। फिर भी, उसे उस यहूदी आदमी पर दया आ गई। उसने रुककर उसके घावों का इलाज किया। उसने उसे अपने गधे पर रखा और एक सराय में ले गया। वहां उसने उसे रखा और उसके घावों का फिर से इलाज किया।

"अगले दिन, सामरी ने सराय के मालिक को पैसे दिए और कहा कि उस घायल आदमी की देखभाल करे। उसने कहा, यदि इसकी कीमत अधिक है, तो वापस आने पर मैं तुझको वो भी दे दूंगा।

"तो," यीशु ने कहा, "तीन लोगों ने देखा कि आदमी सड़क के किनारे पड़ा था। उसका पड़ोसी कौन था?"

जवाब आसान था, "वह जिसने दया दिखाई।"

यीशु ने कहा, "हाँ, जाओ और उसके उदाहरण का पालन करो।"

इसके बाद, यीशु एक गाँव में गया। उसके मित्र वहाँ रहते थे, और उन्होंने उन्हें और उसके शिष्यों को भोजन के लिए अपने घर में आमंत्रित किया।

जब वे बात कर रहे थे, तो मरियम नाम की एक बहन, प्रभु के चरणों में बैठी , उसकी हर बात सुन रही थी। मार्था, उसकी बहन, अपने मेहमान के लिए भोजन तैयार करने में व्यस्त थी। अपनी हताशा में, वह यीशु के पास गई। "प्रभु, क्या आपने देखा है कि मेरी बहन ने सारा काम मुझे करने के लिए छोड़ दिया है? कृपया, उसे मेरी मदद करने के लिए कह।"

प्रभु ने कहा, "हे मार्था, मार्था। तेरी बहुत अधिक चिंताएँ हैं। तू भूल गई हैं कि केवल एक चीज़ है जो

बिल्कुल आवश्यक है। मरियम ने उस एक चीज़ को चुना है, और यह उससे दूर नहीं की जाएगी।”

208 एक बड़ा भोज

लूका 14

एक प्रमुख फरीसी ने सब्त के दिन यीशु को अपने घर बुलाया। प्रभु ने देखा कि हर कोई उसे ध्यान से देख रहा था; और फिर उसने क्या देखा की उसके सामने एक व्यक्ति खड़ा था जो पीड़ित था क्योंकि उसका शरीर सूजा हुआ था।

यीशु ने धर्मगुरुओं की ओर रुख किया और कहा, “मेरे पास आपके लिए एक प्रश्न है। क्या सब्त के दिन चंगा करना ठीक है?” किसी ने एक शब्द नहीं कहा।

यीशु पीड़ित व्यक्ति की ओर घुमा और उसे चंगा किया। उसे भेजने के बाद, प्रभु ने अपने आस-पास के लोगों से कहा, "यदि तुम्हारा बेटा कुएं में गिर जाए, तो क्या तुम सब्त के बारे में सोचोगे। तुम जल्दी से उसे बाहर निकालोगे। तुम एक जानवर के लिए भी ऐसा ही करोगे।”

लोग उसके विरोध कहने में असमर्थ थे, इसलिए उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।

भोजन के समय, यीशु ने देखा कि लोग अपने लिए मुख्य मुख्य जगहें चुनने के लिए तत्पर थे। उसने कहा, "जब तुमको एक विशेष भोज के लिए आमंत्रित किया जाता है, तो सबसे प्रमुख स्थान पर जल्दी न बैठो। यदि तुम ऐसा करते हो, तो मेज़बान तुमको किसी और के लिए जो अधिक योग्य है, जगह बनाने के लिए हटा सकता है। हर कोई देख रहा होगा, जब वह तुमको एक नीची जगह दे रहा होगा।

“तुम्हारे लिए छोटी जगह का चयन करना कितना बेहतर होगा। तब मेज़बान आकर कह सकता है, । वहाँ मत बैठो। कृपया आगे बढ़ें।’ यह सबके सामने किया जाएगा।

"हमेशा ध्यान रखना ... यदि तुम लगातार खुद को बढ़ावा देते हो, तो तुम अंततः दीन हो जाओगे। लेकिन अगर तुम विनम्रता से रहते हो, तो मेरी बात मानो, तुम दूसरों के द्वारा ऊँचे पद पर रखे जाओगे।”

वह फिर रात के खाने की मेज़बानी करने वालों की ओर मुड़ा, “वही तुम्हारे लिए भी लागू होता है। जब एक विशेष भोजन तैयार करते हों, तो उन लोगों को आमंत्रित न करना जो तुम्हें अच्छे लगते हैं, या जिनके पास तुम्हारे चुकाने की क्षमता है। नहीं, गरीबों, अपंगों और अंधों को आमंत्रित करो। यदि तुम करते हो, तो तुम धन्य हो जाओगे! उन लोगों को आमंत्रित करें जिनके पास तुम्हें वापस करने का कोई तरीका नहीं है। परमेश्वर इसे देखेगा और पुनरुत्थान के समय तुम्हें चुकाएगा।

यीशु ने यह कहानी सुनाई। “एक महान व्यक्ति ने एक बड़े भोज की मेज़बानी करने का फैसला किया। उसने अपनी अतिथि सूची तैयार की और सभी लोग आने के लिए तैयार हो गए। इसलिए एक तारीख तय की गई। उस व्यक्ति और उसके नौकरों ने पूरी तैयारी की। एक बार सब कुछ हो जाने के बाद, जिन लोगों को आमंत्रित किया गया था उनके पास नौकरों को भेजा गया। उन्होंने कहा, ‘आओ! सब कुछ अब तैयार है।'

"बिना किसी आपत्ति के, सभी पुरुषों ने बहाना बनाया कि वे क्यों नहीं आ सकते हैं। एक ने कहा, 'मैंने अभी एक मैदान खरीदा है। इसलिए मुझे इसे देखने जाना होगा।' दूसरे ने कहा, मैंने अभी-अभी बैलों के पांच जोड़े खरीदे हैं, और मैं यह देखने जा रहा हूं कि वे अच्छे हैं या नहीं।' फिर एक अन्य ने कहा, तुमने नहीं सुना है? मैंने अभी-अभी शादी की है। मैं अपनी नई पत्नी के साथ रहने जा रहा हूं।'

यीशु ने कहा, 'भोज का स्वामी नाराज़ हुआ जब उसने ये सारे बहाने सुने थे। उसने अपने नौकरों से कहा, शहर की सड़कों और गली-मोहल्लों में जाओ। गरीब, अपंग और अंधे को लाओ।'

"जब ऐसा किया गया तो घर पूरा भर गया। तो स्वामी ने कहा, गलियों और राजमार्गों के साथ गांव में जाओ। जोर देकर कहो कि वे मेरे भोज में आएं। मुझे मेरा घर पूरा भरा चाहिए। लेकिन सुनिश्चित करना कि पहले बुलाए गए मेहमानों में से किसी को भी अंदर आने की अनुमति नहीं है।"

209 खोई भेड़, सिक्का, और बेटा

मत्ती 18: 12-14, लूका 15

जब वे पापियों को यीशु के चारों ओर देखते तो धार्मिक भीड़ परेशान हो जाती थी। वह कहते, "ये तो चुंगी लेनेवालों और पापियों को अपने आसपास रहने की अनुमति देता है। उनके साथ भोजन भी करता है।"

यीशु ने उन्हें ये तीन कहानियाँ सुनाकर जवाब दिया। उसने कहा...

"एक चरवाहे के पास 100 भेड़ें थीं। शाम की गिनती के दौरान, उसने महसूस किया कि एक भेड़ गायब थी। इसलिए उसने निन्यानवे भेड़ों को छोड़ दिया और एक को खोजना शुरू कर दिया। जब वह मिल गई, तो उसने उसे अपने कंधों पर रखा और घर ले गया। उसने अपने दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाया और कहा, आओ मेरे साथ जशन मनाओ। मुझे वह भेड़ मिल गई जो खो गई थी!'

"स्वर्ग में भी ऐसा ही है। जब कोई पापी पश्चाताप करता है और अपने जीवन को परमेश्वर को दे देता है, तो खुशी होती है।

"एक महिला को अचानक पता चला कि उसकी शादी के दस सिक्कों में से एक सिक्का खो गया था। उसने एक दीपक जलाया और ध्यान से पूरे घर को तब तक झाड़ू लगाया जब तक कि वह मिल नहीं गया। तब उसे इतनी राहत महसूस हुई थी कि उसने अपने दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाया और कहा, आओ और मेरे साथ खुशी मनाओ। मैंने अपना एक सिक्का खो दिया था, लेकिन अब वो मुझे मिल गया है।'

"स्वर्ग में भी ऐसा ही है। जब कोई पापी परमेश्वर के पास वापस जाता है, तो स्वर्गदूतों के बीच आनन्द होता है।

"एक आदमी के दो बेटे थे। छोटा बेटा उस व्यक्ति के पास आया और कहा, मैं अपनी विरासत चाहता हूं, और मैं अभी ही यह चाहता हूं। अपनी संपत्ति का बंटवारा कर और मुझे मेरा हिस्सा दे।' इससे पिता दुखी हो गया, लेकिन उसने अपनी संपत्ति का बंटवारा किया और दोनों बेटों को उनका हिस्सा दिया।

"छोटे बेटे ने घर छोड़ दिया और दूर की यात्रा की। उसने बहुत जश्न मनाए और अपना पैसा स्वतंत्र रूप से तब तक खर्च किया जब तक कि वह सब खत्म न हो जाए। अचानक उस जगह एक भयंकर अकाल आया, और उसके पास रहने के लिए और खाने के लिए कुछ भी नहीं था।

"उसने सूअरों को चराने की नौकरी कर ली। उसकी भूख इतनी बढ़ गई कि वह ईर्ष्या करने लगा कि सूअर क्या खा रहे हैं। वह पूरी तरह से अकेला था, और किसी ने भी उसे कुछ नहीं दिया।

"एक दिन उसने कहा, मैं भूख से मरने वाला हूं, लेकिन फिर भी मेरे पिता के लिए काम करने वालों के पास खाने के लिए पर्याप्त है। मैं वापस जाऊंगा और अपने पिता के सामने खुद को नम्र करूंगा। वह बस मुझे अपने पास एक नौकर के रूप में रख लें, मैं

उससे कहूँगा। मैं कहूगां , पिता, मैंने परमेश्वर के खिलाफ और आपके खिलाफ पाप किया है। मुझे पता है कि मैं फिर से एक परिवार का सदस्य नहीं बन सकता, लेकिन कृपया मुझे एक सेवक के रूप में नियुक्त कर लें।'

"वह घर की ओर चलने लगा। जब वह अभी बहुत दूर ही था, उसके पिता ने उसे आते देखा। खुशी के साथ, वह अपने बेटे की ओर भागा और उसे गले लगाया और उसे चूमा। बेटा पीछे हट गया, सिर झुका लिया और अपनी बातें रखने लगा।

'पिता, मैंने परमेश्वर के खिलाफ और आपके खिलाफ पाप किया है। मुझे पता है कि मैं फिर से एक परिवार का सदस्य नहीं बन सकता...'

"पिता ने अपने नौकरों से कहा, जल्दी, जाओ सबसे अच्छे कपड़े और जूते लाओ, और उन्हें मेरे बेटे को पहनाओ। उसकी उंगली के लिए एक परिवार की अंगूठी लाओ।'

मैदान में जाओ और सबसे अच्छा बछड़ा लाओ। हम आज रात एक दावत करने जा रहे हैं! मेरा बेटा मर गया था, लेकिन अब वह जीवित है। वह खो गया था, लेकिन अब वह मिल गया है। हम जश्न मनाएगे!'

"उसी शाम, बड़े बेटे ने खेत में काम खत्म किया, और घर की ओर चल दिया। उसने अचानक संगीत सुना और लोगों को नाचते देखा।

उसने एक नौकर से पूछा। 'क्या चल रहा है?'

उसने कहा, "आपका भाई घर आया है, इसलिए आपका पिता बछड़े को मारकर जश्न मना रहा है। वह चाहता है कि आप उसमें आए।'

"बड़ा बेटा नाराज़ हो गया और जश्न में नहीं गया। पिता उसके पास गया और कहा, 'बेटा, मेरे साथ आ और आनन्द मना।'

"बेटा गुस्से में था और कहा, मैं इन सभी वर्षों में तेरे लिए वफादार रहा हूं, और तेरे द्वारा कहे गए हर काम को पूरा किया है। एक बार भी तूने मेरी ईमानदारी का सम्मान करने के लिए एक छोटी बकरी भी नहीं दी।'

"लेकिन अब, यह बदमाश पारिवारिक संपत्ति लेता है और इसे वेश्याओं को देता है, और तू उसे एक मोटा बछड़ा मार कर उपहार देता है।'

"पिता ने उसे देखा और कहा," हे मेरे बेटे - तू हमेशा यहाँ रहा है, मेरे करीब। मेरे पास जो कुछ है वह तेरा है। लेकिन तेरा भाई - वह मर गया था। अब वह जीवित है! वह खो गया था। अब वह मिल गया! आ मेरे साथ जशन मना। चल एक साथ आनन्दित हो।''

210 धनी आदमी और लाज़र

मत्ती 13: 44-46, 25: 1-13
लूका 16: 19-31

यीशु ने कहा, "एक धनी आदमी था जिसने शानदार कपड़े पहने थे, शानदार घर में रहता था और सबसे अच्छा खाना खाता था।

"लाजर एक गरीब आदमी था जो फाटक पर बैठा करता था। वह बीमार था और उसके शरीर पर बहुत घाव थे। वह अमीर आदमी की मेज़ से गिरे हुए टुकड़ों को खाने के लिए तरसता था। कुत्ते अक्सर आते और उसके घावों को चाटते थे।

"थोड़े समय बाद, लाज़र मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे अब्राहम के गोद में ले गए। धनी व्यक्ति की भी मृत्यु हो गई और उसने स्वयं को मृतकों के स्थान में पाया, अग्नि और पीड़ा से भरा हुआ स्थान।

"उसने देखा और अब्राहम के बगल में लाज़र को पाया। धनी आदमी चिल्लाया, पिता, कृपया मेरी जीभ को ठंडा करने के लिए लाजर को अपनी उंगली पर पानी की एक बूंद के साथ भेज। मैं बहुत पीड़ा में हूं!'

"अब्राहम ने कहा, बेटा, याद रखना कि तुमने जीवन की सभी अच्छी चीजों का आनंद कैसे लिया, जबकि लाज़र दुख में रहता था? अब वह आराम से है, तुम पीड़ा में हो, इसके अलावा, वहाँ जाना असंभव है। हमारे बीच एक बड़ी खाई है।'

"धनी आदमी ने कहा, ओह, पिता अब्राहम, मैं विनती करता हूं, लाज़र को मेरे भाइयों के पास भेज दें। वह उन्हें इस पीड़ा की जगह के बारे में बता सके। मैं नहीं चाहता हूँ

कि वे यहां आए।'

"बेटे, उन्हें पहले ही चेतावनियां दी जा चुकी हैं। उनके पास मूसा और नबियों के लेखन हैं।'

"आदमी ने कहा, "यह पर्याप्त नहीं है! वे तभी सुनेंगे अगर कोई मृतकों से वापस आता है। तब वे पछताएंगे।'

"अब्राहम ने कहा, नहीं, यह सच नहीं है। यदि वे लेखन को नजरअंदाज करते हैं, तो वे नहीं सुनेंगे, भले ही कोई मृतकों से वापस आ जाए।'

कुछ समय बाद, यीशु ने इस दृष्टांत को बताया। "स्वर्ग का राज्य दस कुंवारियों की तरह है जो शादी से पहले दूल्हे से मिलने गई थीं। उनमें से पाँच बुद्धिमान थी और पाँच मूर्ख थी। दूल्हे के आने में देर हो रही थी, इसलिए दस कुंवारियां सो गईं और उनकी मशालों में तेल खत्म हो गया था। आधी रात में, उन्होंने चिल्लाया, 'दूल्हा आ रहा है!'

"कुंवारियां जाग गईं और अपने मशालें को जलाने की कोशिश की, लेकिन तेल खत्म हो गया था। पांच बुद्धिमान कुंवारियों के पास अतिरिक्त तेल था, लेकिन अन्य पांचों के पास नहीं था। पाँच मूर्ख कुंवारियां ने कहा, 'कृपया, हमें अपने पास से थोड़ा कुछ तेल दे दो।'

"बाकि कुंवारियों ने कहा, नहीं, हमारे पास देने के लिए पर्याप्त नहीं है। जल्दी करो, दौड़ो और थोड़ा

खरीद लाओ।' तो मूर्ख कुंवारियां थोड़ा तेल लेने के लिए दौड़ीं।

"जब वे दूरी ही थे, दूल्हा आया। सभी लोग घर में चले गए और दरवाजे बंद कर दिए गए। जब मूर्ख लड़कियां वापस आईं, तो उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया। 'कृप्या, हमें अंदर आने दें। दरवाजा खोलो।'

"फिर, दरवाज़े के अंदर से उन्होंने सुना, नहीं! मैं तुमको नहीं जानता।'

यीशु ने स्वर्ग के राज्य के बारे में एक और उदाहरण दिया। उन्होंने कहा, "यह एक क्षेत्र से गुजरने वाले व्यक्ति की तरह है। उसने अचानक एक मूल्यवान खजाना देखा! वह जानता था कि वह उसे संपत्ति से दूर नहीं ले जाएगा। इसलिए उसने अपने पास जो कुछ भी था उसे बेच दिया और खेत खरीद लिया।

"यह और एक आदमी की तरह है, जो मूल्यवान मोती के लिए बाजार गया था। उसे अचानक एक ऐसा मोती मिला, जिसकी कीमत उसके मूल्य से कम थी, और मालिक को इसका सही मूल्य नहीं पता था। वे पारस्पर से एक मूल्य पर सहमत हुए, तब उस आदमी ने जाकर वह सब कुछ बेच दिया जो उसके पास था। जब उसने पर्याप्त धन जुटा लिया, तो उन्होंने मोती के लिए भुगतान किया। "

211 लाज़र का जी उठना

यूहन्ना 11

लाज़र और उसकी बहनें मरियम और मार्था, बैतनिय्याह नामक शहर में यरूशलेम से लगभग दो मील दूर रहते थे। लाज़र बेहद बीमार हो गया, इसलिए उसकी बहनों ने यीशु को बुलाया। वह उनके परिवार का दोस्त था। उन्होंने कहा, "परमेश्वर, आपका दोस्त बीमार है।"

यह संदेश मिलने के दो दिन तक यीशु ने प्रतीक्षा की। उसने अपने चेलों से कहा, "हम यहूदिया जा रहे हैं।"

उन्होंने कहा, "परमेश्वर, वहां जाना सुरक्षित नहीं है। यहूदी तुझको ढूंढ रहे हैं ताकि वे तुझको मार सकें।"

उन्होंने कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो रहा है, और मुझे उसे जगाने की ज़रूरत है।"

"परमेश्वर, यह अच्छा है कि वह सो रहा है। यह उसे बेहतर होने में मदद करेगा।"

यीशु ने उन्हें स्पष्ट रूप से कहा, "लाजर मर गया है! और मैं तुम्हारी वजह से पहले नहीं गया था। मैं जो करने वाला हूं, वह तुमको मुझ पर विश्वास करने में मदद करेगा। अब, बैतनिय्याह चलो।"

थोमा ने कहा, "ठीक है, हम साथ ही जा कर उसके साथ मर सकते हैं।"

जब वे वहाँ पहुंचने ही वाले थे, तो उन्हें पता चला कि लाज़र चार दिनों से मृत था।

मार्था ने सुना कि वह आ रहा है, इसलिए वह उससे मिलने गई। "परमेश्वर, आप मेरे भाई को चंगा कर सकते थे। वह आज जीवित होता, यदि आप यहां होते। मुझे पता है कि आपके द्वारा सभी चीजें संभव हैं।"

यीशु ने कहा, "मार्था, तुम्हारा भाई फिर से जी उठेगा।"

उसने कहा, "मुझे पता है, परमेश्वर। वह अंतिम दिन में जी उठेगा।"

यीशु ने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझ पर विश्वास करते हैं वे जीवित रहेंगे, भले ही वे मर जाएं। वे हमेशा ज़िंदा रहेंगे - हमेशा के लिए। मार्था, क्या तू इस पर विश्वास करती हैं?"

"हाँ प्रभु। मेरा मानना है कि आप परमेश्वर के पुत्र मसीहा हैं।

वह फिर अपने घर वापस चली गई और अपनी बहन से धीरे से बोली। "मरियम, गुरू यहाँ है और तुझको बुला रहा है।"

मरियम उठकर यीशु के पास गई, और सब उसके पीछे गए। जब वह उसके पास पहुंची, तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ी। "परमेश्वर, मेरा भाई अभी भी जीवित होता अगर तू जल्दी आ गया होता।" वह फिर रोने लगी।

जब यीशु ने मरियम और शेष लोगों को रोते देखा तो यीशु बहुत हिल गया। उसने कहा, "तुमने उसे

कहां रखा है?" वह उसे वहां ले जाने के लिए उठी। उस के साथ, यीशु रोने लगा।

वे उसे उस स्थान पर ले गए जहां उसका शव रखा था, यह एक गुफा थी जिसके प्रवेश द्वार पर एक पत्थर था। जब यीशु ने देखा, तो उसने कहा, "पत्थर हटाओ।"

मार्था ने कदम आगे बढ़ाया। "परमेश्वर, वह चार दिन पहले मर चुका है। अब तक, वह बहुत बुरा महक रहा होगा।"

यीशु उसकी ओर मुड़ गया और कहा, "याद कर मैंने क्या कहा था? यदि तू मानती हैं, तो तू परमेश्वर की महिमा देखेगी।"

तो, वह वापस चली गई, और पुरुषों ने पत्थर हटा दिया। यीशु ने देखा और प्रार्थना की, "पिता, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आप हमेशा मुझे सुनते हैं। इस चमत्कार को करें और लोगों को यह विश्वास दिलाने में मदद करें कि आपने मुझे भेजा है।"

फिर उसने कब्र के प्रवेश द्वार को देखा और चिल्लाया, "लाज़र, बाहर आ!"

सभी की नजरें कब्र की ओर मुड़ गईं। अचानक मृत व्यक्ति बाहर आया, फिर भी सिर से पांव तक सन के कपड़े से बंधा हुआ था। यीशु ने कहा, "उसे खोल दो, और उसे जाने दो।"

बहुत से यहूदियों ने उस दिन यीशु पर विश्वास किया।

लेकिन जब धार्मिक शासकों ने इसके बारे में सुना, तो उन्होंने एक सभा बुलाई। यह तय किया गया था कि यीशु को मरना होगा, इससे पहले कि हर कोई उस पर विश्वास करने लगें। उन्होंने लाज़र को मारने की योजना भी बनाई, क्योंकि उसका जीवित होना सारे लोगों को यीशु पर विश्वास करने के लिए प्रेरित कर रहा था।

212 महान, अमीर और गरीब

मत्ती 20: 20-28, मरकुस 10: 46-52
लूका 19: 1-10

यरुशलेम की यात्रा पर, यीशु यरीहो से गुज़रा। रास्ते में, याकूब और यूहन्ना की माँ ने उसके सामने घुटने टेके और कहा, "परमेश्वर, मैं चाहती हूं कि मेरे बेटे तेरे बगल में बैठे हों, जब तू अपने राज्य में हों - एक तेरे दाहिनी , और दूसरा बाईं ओर।"

उसने कहा, "तू नहीं जानती कि तू क्या मांग रही है।"

उसने उन पुरुषों की ओर मुड़कर कहा, "क्या तुम पीड़ा सहन करने में सक्षम हो, जैसे मैं हूँ?"

उन्होंने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया। "हाँ प्रभु। हम सहन करने के लिए तैयार हैं।"

यीशु ने एक पल के लिए उन्हें देखा। "यह सच है। तुम मेरे लिए पीड़ित होंगे, लेकिन तुम जो मांग रहे हो वह मेरे नियंत्रण में नहीं है। पिता चुनेगा कि कौन मेरे दाहिनी ओर और बाईं ओर बैठेगा।"

यह वार्तालाप सुनते ही बाकि के दस, उन भाईयों से नाराज़ हो गए। यीशु ने उन्हें एक साथ बुलाया और कहा, "इस दुनिया में, अधिकार के लोग दूसरों पर प्रभु हो जाते हैं। वे प्रशंसा और सेवा की उम्मीद करते हैं। यह तुम्हारे लिए सही नहीं है, यदि तुम महान बनना चाहते हो, तो दूसरों की सेवा करना शुरू करो। यदि तुम सबसे महान बनना चाहते हो, तो सभी की सेवा शुरू करो।"

"मेरे उदाहरण का अनुसरण करो। मैं इसलिए नहीं आया, ताकि दूसरे मेरी सेवा करें। मैं अपना जीवन दे रहा हूँ ताकि दूसरे जीवित रह सकें।"

यरीहो में एक मुख्य चुंगी लेनेवाला रहता था, जिसका नाम ज़क्कई था। वह यीशु को देखना चाहता था क्योंकि वह शहर से गुज़र रहा था, लेकिन वह छोटे कद का व्यक्ति था और भीड़ में नहीं देख सकता था।

इसलिए वह लोगों के आगे रास्ते पर भागा, और एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया। वह जानता था कि जब वह पेड़ के नीचे से गुज़रेगा तो वह यीशु को देख पाएगा।

जब प्रभु उस स्थान पर पहुंचे, तो वे रुक गए!

उसने ऊपर देखा और कहा, "ज़क्कई, उस पेड़ से नीचे आ। मैं आज तेरे घर में रहना चाहता हूँ।

ज़क्कई जल्दी पेड़ से नीचे उतर गया और यीशु का अपने घर में स्वागत किया। लोग बड़बड़ाने लगे, "वह सोच भी कैसे सकता था की उस महान पापी के घर में रहेगा?"

लेकिन ज़क्कई ने प्रभु से कहा, "मैं गरीबों को, जो कुछ भी मेरे पास है, उसका आधा हिस्सा देने जा रहा हूं। और जहां मैंने लोगों को धोखा दिया है, मैं उनसे मिली राशि का चार गुना वापस कर दूंगा।"

यीशु ने कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है। मैं खोए हुए लोगों की तलाश करने और उन्हें बचाने के लिए आया हूँ।"

जैसे ही यीशु यरीहो से निकला, तो वह बरतिमाई नामक एक अंधे व्यक्ति से मिला। वह सड़क के

किनारे भीख मांग रहा था। उसने भीड़ को सुना और कहा, "क्या चल रहा है?"

लोगों ने कहा, "नासरत का यीशु गुज़र रहा है।"

यह सुनकर, वह चिल्लाया, "यीशु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर!"

आसपास के लोगों ने उसे शांत रहने के लिए कहा। लेकिन वह जोर से चिल्लाया, "दाऊद के बेटे, मुझ पर दया कर!"

यीशु रुक गया और उसकी ओर देखा, "जाओ, उसे मेरे पास ले आओ।"

वे बरतिमाई के पास गए और कहा, "यीशु तुझको बुला रहा है। जल्दी कर, उठ और उसके पास जा।"

बरतिमाई उठा, अपने भिखारी के कपड़ा को फेंक दिया, और यीशु के पास गया। प्रभु ने कहा, "मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ?"

"गुरू, मैं देखना चाहता हूँ!"

प्रभु ने कहा, "जा। तेरे विश्वास ने तुझको ठीक किया है।" तुरंत, बरतिमाई देख पा रहा था, और उसने यीशु के पीछे चलना शुरू कर दिया।

213 विजयी प्रवेश

मत्ती 21: 1-11, मरकुस 11: 1-11
लूका 19: 28-44, यूहन्ना 12: 1-19

यीशु और उसके चेलों को भोजन के लिए घर में आमंत्रित किया गया था। लाज़र को भी आमंत्रित किया गया और मार्था ने सेवा करने में मदद की। जब वे खा रहे थे, तब उनकी बहन मरियम ने यीशु के पैरों पर महंगा तेल डाला और उसे अपने बालों से पोंछा। घर सुगंधित तेल की खुशबू से भर गया था।

यहूदा इस्करियोती ने कहा, "परमेश्वर, वह तेल बर्बाद हो गया! इसे बेचा जा सकता था, और पैसा गरीबों को दिया जा सकता था।" वह वास्तव में गरीबों की परवाह नहीं करता था, लेकिन वह चेलों के पैसे का प्रभारी था और वहां से चोरी करता था।

यीशु ने कहा, "उसे अकेला छोड़ दो। तुम हमेशा गरीबों की मदद करने में सक्षम होंगे, लेकिन तुम हमेशा मेरे पास नहीं होंगे। मेरे दफनाए जाने के लिए मरियम ने मेरा अभिषेक किया है। और जैसे-जैसे यह सुसमाचार पूरी दुनिया में फैलता जाएगा, लोग सुनेंगे कि उसने क्या किया है।"

अगले दिन, यीशु जैतून पहाड़ पर गया। उसने अपने दो चेलों से कहा, "गाँव में जाओ, और वहाँ तुम एक गधी और उसका बच्चा बंधा पाओगे। उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ। यदि कोई पूछे कि तुम क्या कर रहे हो, तो उन्हें बताना कि प्रभु को उसकी आवश्यकता है।"

दोनों गाँव में गए और गधी और बच्चे को पाया। दोनों ने उन्हें खोला और जाने लगे। मालिकों ने कहा, "तुम क्या कर रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु को उनकी आवश्यकता है," इसलिए उन्होंने उन्हें जाने की अनुमति दी। तब चेलें गधी और गधी के बच्चे को यीशु के पास लाए। उस दिन से पहले किसी ने भी उस गधी के बच्चे की सवारी नहीं की थी, फिर भी शिष्यों ने उस पर अपने वस्त्र डाल दिए और यीशु को उस पर बैठने में मदद की। जैसे ही वह रास्ते पर सवार हुआ, लोगों ने उसके सामने अपने वस्त्र फैलाए। जब वह जैतून पहाड़ की सड़क पर जा रहा था तो भीड़ बढ़ती जा रही थी। उन्होंने ख़जूर की डालियां लीं और उन्हें उसकी राह में बिछाया।

लोगों ने खुशी से चिल्लाया, और उसके द्वारा देखे गए सभी चमत्कारों के लिए प्रभु की प्रशंसा की। "धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!" "जब यीशु चलता रहा, वे चिल्लाए, "होसन्ना! दाऊद के पुत्र को होसन्ना।"

कुछ फरीसियों ने यीशु से कहा, "क्या तूने सुना है कि तेरे चेलें क्या कह रहे हैं? उन्हें चुप कर!

यीशु ने कहा, "अगर वे चुप हो जाएंगे, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।"

जैसे ही वह शहर में प्रवेश करने वाला था, वह रुक गया और रोने लगा। उसने कहा, "हे यरूशलेम! यरूशलेम! यदि तू जानता! यह तेरे लिए एक विशेष

दिन, एक ऐसा दिन जो तुझको शांति प्रदान करेगा। लेकिन अब तेरी आँखें ढँक जाएँगी जिससे तू देख नहीं पाएंगा। एक शक्तिशाली सेना तुझको नष्ट कर देगी। क्योंकि तूने परमेश्वर के तेरे पास आने के समय को नहीं पहचाना।"

वह और भीड़ यरूशलेम में गए। इस घटना से पूरा शहर हिल गया था। अन्य देशों से आये यात्रिओं ने पूछा, "यह कौन है?" लोगों ने कहा, "यह नासरत के नबी यीशु हैं।"

214 सेवकाई का अंतिम सप्ताह

मत्ती 21: 12-46, मरकुस 11:12 - 12:44
लूका 19:45 - 21: 4

पिछले सप्ताह के दौरान, फसह से पहले, यीशु ने यरूशलेम में एक दिन बिताया, जबकि वह रात में पास के एक शहर में रहा। जैसे ही वह और उसके शिष्य दूसरी सुबह शहर की ओर चले, यीशु ने दूर में एक अंजीर का पेड़ देखा। वह उसके पास गया, लेकिन पेड़ पर कोई फल नहीं था, केवल पत्ते थे। तो उसने पेड़ से कहा, "तू फिर कभी फल नहीं देगा।"

जब वे मंदिर पहुंचे, तो यीशु ने लोगों को बलिदान के लिए जानवरों को बेचते हुए देखा और विदेशी धन का आदान-प्रदान करते हुए देखा। उसने उन्हें फेंक दिया, और उनकी मेजों पर पलट दिया।

इसके बाद वह बैठ गया और लोगों से कहा, "शास्त्र कहता हैं, 'मेरा घर प्रार्थना के घर के रूप में जाना जाएगा।' तुमने इसे चोरों का अड्डा बना दिया है।" इससे धर्मगुरु नाराज़ हो गए। उन्होंने उसे मारने की बात कही क्योंकि वह इतना लोकप्रिय हो रहा था।

अगली सुबह, चेलों ने अंजीर के पेड़ पर ध्यान दिया। “गुरू, देख! पेड़ मुरझा गया है!"

यीशु ने कहा, “परमेश्वर पर विश्वास रखो, और तुम इससे बड़े काम करोगे। तुम पहाड़ से कह सकते हो, 'उखड़ और समुद्र में जा गिर,' और ऐसा हो जाएगा। लेकिन तुम्हें इस पर विश्वास करना होगा, अपने दिल में किसी संदेह के बिना। इसके अलावा, तुम किसी के खिलाफ घृणा नहीं रख सकते।

यीशु ने लोगों को मंदिर में शिक्षा देना जारी रखा। एक दिन उसने कहा, “एक आदमी ने एक दाख की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाड़ लगाई। वह तब एक लंबी यात्रा पर चला गया, लेकिन जाने से पहले, उसने अपनी दाख की बारी की देखभाल के लिए कुछ लोगों को काम पर रखा।

“जब फसल का समय हुआ, तो उसने फल को इकट्ठा करने के लिए एक नौकरों को भेजा। लोगों ने नौकरों को पीटा और उन्हे खाली हाथ वापस भेज दिया। मालिक ने और नौकरों को भेजा, लेकिन उनके साथ भी उस ही तरह से व्यवहार किए गया था। उन्होंने कुछ लोगों की हत्या भी की।

"अंत में मालिक ने कहा, मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को भेजने की आवश्यकता है जिसके पास अधिकार है, ताकि वे उसकी बात सुनें। इसलिए, मैं अपने इकलौते बेटे को भेजूंगा।'

"जब लोगों ने बेटे को देखा, तो उन्होंने कहा, 'अगर हम उसे मारते हैं, तो हमें सबकुछ मिल जाएगा!' तो उन्होंने उसे पकड़ लिया, उसे मार डाला, और उसे दाख की बारी के बाहर फेंक दिया।”

यीशु ने कहा, "तुमको क्या लगता है कि मालिक इन लोगों के साथ क्या करेगा?"

लोगों ने जल्दी जवाब दिया। “वह उन लोगों को मार डालेगा! फिर वह उन लोगों को दाख की बारी देगा, जिन पर वह भरोसा कर सकता है।"

धर्मगुरु जानते थे कि यह कहानी उनके बारे में है। वे सहमत थे कि यीशु को जल्द ही गिरफ्तार किया जाना चाहिए, लेकिन उन्हें पता नहीं था कि कब और कहां। यह सावधानी से किया जाना था क्योंकि वे भीड़ से डरते थे।

बाद में, यीशु ने मंदिर परिसर में खजाने की ओर देखा। उन्होंने भीड़ को दान पेटी में पैसा गिराते हुए देखा, विशेष रूप से अमीर लोग जो बड़ी मात्रा में पैसा डाल रहे थे।

अचानक एक गरीब विधवा दो सिक्कों को लाई जिसकी कीमत बहुत कम थी।

यीशु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और कहा, "मेरी बात सुनो। उस गरीब विधवा ने उन सभी लोगों की तुलना में मंदिर के खजाने में सबसे अधिक दिया है। उसने अपने पास मौजूद सभी चीजों में से थोड़ा सा दिया। लेकिन वो बेहद गरीब है। उसने जो दिया, उसके पास उतना ही था। उसने वह पूरा पैसा दिया, जो उसके पास अपने जीवन यापन के लिए था।"

215 अंतिम भोज

मत्ती 26: 14-30, मरकुस 14: 10-26
लूका 22: 1-30, यूहन्ना 13: 1-30

धार्मिक अगुओं ने मिलकर यह तय किया कि वे यीशु को कैसे मारने जा रहे थे। जब वे बात कर रहे थे, तब यहूदा इस्करियोती ने आकर कहा, "यदि मैं उसे तुम्हारे पास पहुँचाऊँ तो तुम मुझे क्या दोगे?" वे प्रसन्न हुए, और उसे चांदी के तीस टुकड़े देने के लिए सहमत हुए।

उसी समय, यीशु उसके और उसके चेलों के साथ फसह मनाने के लिए योजना बना रहा था। उसने पतरस और यूहन्ना से कहा, "शहर में जाओ और एक आदमी जो पानी का एक बरतन ले जा रहा हो, उसे देखो। जब तक वो एक घर में प्रवेश न करे, उसका पीछा करो। घर के मालिक से कहो, प्रभु कहते हैं कि उनका समय आ गया है। वह तुम्हारे अतिथि कक्ष में फसह का भोजन करेगा। '

वह तुमको अपने ऊपरी कमरे में ले जाएगा। वहीं भोजन तैयार करना। हमारे लिए सब कुछ तैयार हो।"

यीशु ने जो कहा था, उन दोनों लोगों को सब कुछ वैसे ही मिला। इसलिए उन्होंने भोजन तैयार किया। उसी शाम, यीशु और उसके चेलें फसह का त्योहार मनाने के लिए वहाँ मिले।

भोजन के दौरान, यीशु ने उठकर अपनी कमर पर एक तौलिया लपेटा और एक बरतन में पानी डाला। उसने फिर अपने चेलों के पैर धोने शुरू कर दिए।

पतरस हैरान था। उसने कहा, "प्रभु, क्या तू मेरे पैर धोने वाला है?"

"पतरस, तू समझ नहीं पा रहा हैं कि मैं अभी क्या कर रहा हूँ, लेकिन किसी दिन तू समझेगा।"

"नहीं, प्रभु। मैंने तुझे मेरे पैर धोने नहीं दूंगा। मुझे तेरे पैर धोने चाहिए।"

यीशु ने उसकी ओर देखा। "अगर मैं तेरे पैर नहीं धोता, तो मैं जो कर रहा हूँ, तू उसका हिस्सा नहीं हो सकता।"

"ओह गुरू, अगर ऐसा ही है, तो मेरे पैरों, हाथों और सिर को धो लें।"

"नहीं, पतरस। जब कोई व्यक्ति नियमित स्नान करता है, तो केवल उसके पैरों को धोने की ज़रूरत होती है।

जब उसने पैरों को धो लिया, तो वह मेज़ पर वापस बैठ गया और कहा, "तुमने देखा कि मैंने क्या किया। एक नौकर अपने स्वामी से बेहतर नहीं है। अगर मैंने तुम्हारे सामने खुद को विनम्र किया है, तो तुम्हें भी एक दूसरे के सामने खुद को विनम्र करना होगा।"

जल्द ही, यीशु बहुत दुखी हो गया। उसने कहा, "तुम में से एक मुझे धोखा देगा। यह होना ही है - क्योंकि यह अतीत से पहले तय था। फिर भी, यह उस व्यक्ति के लिए बेहतर होगा यदि वह कभी पैदा नहीं हुआ होता।

चेलें चौंक गए और पूछने लगे कि "हे प्रभु, क्या यह मैं हूं? क्या मैं हूँ?

यीशु ने कहा, "इस भोजन के दौरान, मैं रोटी डुबाऊंगा और इसे उस व्यक्ति को दूंगा जो ऐसा करेगा।"

यहूदा झुक गया और धीरे से पूछा, "क्या मैं वह हूँ, प्रभु?"

यीशु ने उसकी ओर देखा और चुपचाप कहा, "तुम्हें पता है कि तुम ही वह हो," और उसे रस में डूबी हुई रोटी दी। जैसे ही यहूदा ने रोटी ली, शैतान उसके दिल में घुस गया और वह खड़ा हो गया।

यीशु ने उसे देखा और कहा, "जा और जल्दी कर।" यहूदा फिर कमरे से बाहर चला गया। दूसरों को लगा कि वह बस कोई काम करने जा रहा है।

जब वे खा रहे थे, यीशु ने रोटी ली और उसे आशीष दी। फिर उसने इसे तोड़ा और कहा, "इसे लो और खाओ। यह मेरा शरीर है, जिसे मैं तुम्हारे लिए देता हूं। जब तुम इससे खाओ, तोह मुझे याद करना।"

भोजन के बाद, उसने कटोरा लिया और आशीष दी। उसने उन्हें दिया और कहा, "तुम सब इसी से पी सकते हो। यह मेरा खून है, जो तुम्हारे पापों की माफी के लिए बहाया जाएगा। जब तक मैं परमेश्वर के राज्य में तुम्हारे साथ नहीं बैठूंगा, मैं दोबारा दाखरस नहीं पीऊंगा।

यीशु ने उनके साथ लंबे समय तक बात की, और फिर उनके लिए प्रार्थना की। बाद में उन्होंने भजन गाए, और जैतून के पहाड़ को चले गए।

216 गतसमनी

मत्ती 26: 31-56, मरकुस 14: 27-52
लूका 22: 39-53, यूहन्ना 18: 1-11

जब यीशु और उसके चेलें यरूशलेम के द्वार से बाहर निकले, तो उसने कहा, '' तुम सभी आज रात मुझे छोड़ दोगे ... लेकिन मैं मृतकों से जी उठने के बाद, तुम्हें गलील में मिलूंगा।

पतरस ने कहा, "प्रभु, मैं तुझको कभी नहीं छोड़ूंगा, भले ही बाकि सब छोड़ दें।"

यीशु ने रुककर उसकी ओर देखा। "ओह पतरस, इसी रात तू मेरा इंकार करेगा, जैसे तू कभी मुझे जानता भी नहीं था - और सिर्फ एक बार नहीं। सुबह मुर्गे के बांग देने से पहले, तू तीन बार लोगों को बताएगा कि तू मुझे नहीं जानता।"

पतरस चौंक गया, "प्रभु! यहां तक कि अगर मौत भी आ जाए, तौभी मैं तेरा इंकार कभी नहीं करूंगा।" बाकी सभी चेलों ने भी यही बात कही।

वे जैतून के पेड़ों के पास आए, जिसे गतसमनी का बाग कहा जाता है। प्रवेश द्वार पर यीशु ने अपने चेलों से कहा, "जब मैं जाऊँ और प्रार्थना करूँ तो यही बैठे रहना।"

वह तब पतरस, याकूब और यूहन्ना को बगीचे में ले गया। जब वे वहाँ पहुंचे, वह तड़पने लगा। उसने कहा, "मैं बहुत दुखी हूं। जागते रहो और मेरे साथ प्रार्थना करते रहो।"

वह फिर थोड़ा दूर चला गया और नीचे गिरा।

"पिता, यह दुख का प्याला - क्या मुझे इसे पीना है? आप कुछ भी कर सकते हैं। इसे मुझसे दूर करें! यदि नहीं, तो मैं अपने लिए आपकी योजना का पालन करूंगा।"

वह तीनों आदमियों के पास गया और उन्हें सोया हुआ पाया। उसने उन्हें जगाया और कहा, "पतरस, जागते रहो और मेरे साथ प्रार्थना करो। आत्मा तैयार है, लेकिन शरीर कमज़ोर है।"

वह वापस चला गया और एक बार फिर उसने गहरी पीड़ा में प्रार्थना की। "हे पिता, मुझसे यह प्याला ले लें! फिर भी, मैं इसे पी लूँगा, अगर यह आपकी इच्छा है तो।"

एक बार फिर उसने देखा कि तीनों आदमी सो रहे थे। उसने कहा, "तुम क्यों सो रहे हो?" उन्होंने उसे देखा और पता नहीं क्या कहना था।

जब उसने तीसरी बार प्रार्थना की, तो उसे पसीना आने लगा, लेकिन यह खून की बूंदों की तरह था जो जमीन पर गिर रहा था। एक दूत प्रकट हुआ और उसे शक्ति दीं।

वह वापस चला गया जहाँ उसके शिष्य एक बार फिर सो रहे थे। उन्हें देखते हुए, उसने कहा, "सो जाओ क्योंकि समय करीब है।"

तब तक, यहूदा बगीचे में सैनिकों का एक समूह लाया। वह जानता था कि यह एक ऐसी जगह है जहाँ यीशु अक्सर अपने चेलों के साथ जाता था। उसने

कहा, “मुझे ध्यान से देखो। यीशु वह है जिसे मैं चुंबन करूंगा।"

वे मशालें, तलवारें और लाठियां लेकर बगीचे में गए। यीशु अपने चेलों की ओर मुड़ा।

"उठ जाओ! मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।”

यहूदा उसके पास गया और कहा, "हे रब्बी।" और फिर उसे एक चुंबन दिया।

यीशु ने कहा, "ओह यहूदा, तू ने एक चुंबन से मुझे पकड़वाया?" वह फिर पहरेदारों की ओर मुड़ा, "तुम किसे खोज रहे हो?"

उन्होंने कहा, "नासरत के यीशु को!"

यीशु ने कहा, "मैं वो हूं!"

तुरंत, वे पीछे हुए और ज़मीन पर गिर गए। जैसे ही वे उठे, यीशु ने फिर कहा, "तुम किसे खोज रहे हो?"

उन्होंने एक दूसरे को देखा और कहा, "नासरत के यीशु को।"

“ठीक है, मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मैं वही हूँ। अब इन लोगों को अपने रास्ते जाने दों।”

पतरस को अचानक एहसास हुआ कि क्या हो रहा है।

उसने अपनी तलवार निकाली और महायाजक के एक सेवक पर हमला किया, जिससे उसका कान कट गया।

यीशु ने उसे रोका और कहा, “अपनी तलवार रख ले। क्या तू नहीं समझा? मैं अभी प्रार्थना कर सकता हूं और मेरे पिता मेरी रक्षा के लिए हजारों स्वर्गदूत भेज सकता है।” फिर उसने मुड़कर नौकर के कान को छुआ और उसे चंगा किया।

उसी के साथ, सभी शिष्य भाग गए। तब पहरेदारों ने यीशु को पकड़ लिया, उसे बांध दिया, और उसे बगीचे से बाहर ले गए।

217 यहूदियों के सामने पेशी

मत्ती 26: 57-75, 27: 1-10
मरकुस 14:53-72, लूका 22: 54-71
यूहन्ना 18:15-27

पहरेदारों ने यीशु को गतसमनी के बगीचे से लिया और उसे महायाजक कैफा के घर ले गए। पतरस कुछ दूरी पर पीछा कर रहा था। एक बार जब वह वहाँ पहुंचा, वह आंगन के बीच में कोयलें की आग के पास बैठ गया। एक नौकर लड़की ने उसे देखा और कहा, "तुम उसके एक शिष्य हो?"

पतरस ने कहा, "नहीं ... नहीं, मैं नहीं हूँ।" वह फिर आंगन के एक अलग हिस्से में चला गया।

पूर्व महायाजक ने यीशु से उसकी शिक्षाओं के बारे में पूछताछ की। यीशु ने कहा, "मैंने सार्वजनिक स्थानों पर शिक्षा दी, और मैंने कुछ भी नहीं छिपाया। यदि तू जानना चाहता हैं कि मैंने क्या पढ़ाया है, तो उन लोगों से पूछ जिन्होंने मुझे सुना है।"

तब एक पहरेदार ने उसे थप्पड़ मारा। "जब तू परमेश्वर के इस दास से बात करता है तो सम्मान दिखा!"

यीशु ने उसकी ओर इशारा किया, "तूने सच बोलने वाले को क्यों मारा?"

वे यीशु को एक छज्जे पर ले गए जो आंगन के ऊपर था ताकि वह महायाजक के सामने खड़ा हो सके। कई लोगों ने उसके खिलाफ गवाही दी, लेकिन वे इस बात से सहमत नहीं थे कि उसने क्या कहा। दूसरों को भ्रम को दूर करने के लिए बुलाया गया था, लेकिन इससे हालात और बदतर हो गए।

अंत में, हताशा में, महायाजक ने कहा, “मुझे स्पष्ट रूप से बता। क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीहा हैं? ”

यीशु ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

महायाजक चौंक गया और अपने कपड़े फाड़ लिए। वह चिल्लाया, "हमें किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है! तुमने सुना। वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है।”

हर कोई चिल्लाया, "उसे मार डालो!" उन्होंने उसे पीटा और उस पर थूका।

आंगन से पतरस यह देख रहा था।

एक आदमी ने उसकी ओर देखा और कहा, "यह उनमें से एक है! वह यीशु के साथ था!”

पतरस ने देखा कि हर कोई उसे देख रहा है। उसने कहा, "नहीं, मैं नहीं जानता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। मैं उसे नहीं जानता।”

लगभग एक घंटे बाद, एक आदमी ने बात की। “मैंने तुझको बगीचे में देखा। तू उनमें से एक हैं। दूसरों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, “उसकी भाषा सुनो। वह गलील से है।”

इसके साथ ही, पतरस शपथ लेने लगा। फिर उसने कहा, “मुझे अकेला छोड़ दो! मैं तुमसे कहता हूं, मैं इस आदमी को नहीं जानता!"

जैसे ही यह शब्द उसके मुंह से निकलें, एक मुर्गे ने बांग दी। पतरस ने देखा कि यीशु उसकी ओर देख रहा है।

उसे उसके शब्द याद आए, "तू सुबह मुर्गे के बांग देने से पहले मेरा तीन बार इंकार करेगा।" वह आँगन से निकल कर फूट-फूट कर रोया।

जब सूरज ऊपर आया, तो यहूदी दरबार लगा और यीशु को मृत्यु की सज़ा दी गई। उसके बाद वे उसकी सज़ा के लिए रोम के लोगों के पास उसे ले गए।

जब यहूदा ने वह सब देखा, जो वह धार्मिक अगुओं के पास गया। "मैंने पाप किया है! मैंने एक निर्दोष व्यक्ति के साथ विश्वासघात किया है।"

वे हँसे, "हम क्यों इसकी परवाह करें। तू ही इससे निपट।"

यहूदा ने फिर चांदी के सिक्कों को फर्श पर फेंक दिया और चला गया। उसने एक पेड़ देखा और फांसी लगा ली।

218 रोमियों के सामने पेशी

मत्ती 27: 11-26, मरकुस 15: 1-15
लूका 23: 1-25, यूहन्ना 18:28 - 19:16

यीशु को रोमी राजपाल पिलातुस के पास ले जाया गया। पिलातुस ने धर्मगुरुओं से पूछा, "यह आदमी किस बात का दोषी है?"

उन्होंने कहा, "वह कहता हैं कि वह एक राजा हैं। उसे मर जाना चाहिए क्योंकि वह कैसर के खिलाफ विद्रोही है। हम ही उसे मार देते, लेकिन हमें ऐसा करने की अनुमति नहीं है। इसलिए हमने उसे तेरे पास लाया है। "

पिलातुस यीशु की ओर मुड़ गया, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

"हां मैं हूं।"

पिलातुस को तब पता चला कि यीशु गलील से था, जो हेरोदेस के शासन में था। हेरोदेस यरूशलेम में था इसलिए पिलातुस ने यीशु को उसके पास भेजा।

हेरोदेस खुश था क्योंकि वह कुछ चमत्कार देखना चाहता था। लेकिन यीशु उससे बात भी नहीं कर रहा था। अंत में, हेरोदेस और उसके पहरेदारों ने यीशु पर राजाओं के कपड़े डालकर और उसे वापस पिलातुस के पास भेजकर उसका मज़ाक उड़ाया।

यहूदी अगुओं ने यीशु पर कई अपराधों का आरोप लगाया, लेकिन वह वहाँ खड़ा रहा और अपना बचाव नहीं किया। पिलातुस ने कहा, "क्या तू नहीं सुनता है कि वे क्या कह रहे हैं? तेरा क्या बचाव है?" फिर भी, यीशु ने कुछ नहीं कहा।

पिलातुस ने निष्कर्ष निकाला कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यीशु मृत्यु के योग्य किसी अपराध के लिए दोषी था। फिर उसने एक ऐसा तरीका सोचा, जिससे वह उसको आज़ाद कर सकें। हर फसह, वह लोगों के लिए एक कैदी रिहा करता था। उसने सोचा कि वह यीशु को पीटकर उसे रिहा कर सकता है।

पिलातुस लोगों के सामने यह पेश करने वाला था, जब उसकी पत्नी ने उसे एक संदेश भेजा। "मुझे उस आदमी के बारे में बुरे सपने आ रहें हैं। उसे कुछ मत कर। वह निर्दोष है।"

लोगों के सामने पिलातुस खड़ा हुआ। और कहा, "मैं किसको रिहा करूं - यीशु, जिसे मसीहा कहा जाता है, या बरअब्बा को, जो एक चोर और एक हत्यारा है?"

धार्मिक नेता जानते थे कि पिलातुस ऐसा कर सकता है, इसलिए उन्होंने लोगों को तैयार किया।

"बरअब्बा! हमें बरअब्बा दो!"

पिलातुस चौंक गया। "मुझे यीशु के साथ क्या करना चाहिए, जिसे मसीह कहा जाता है?"

सबने कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ!"

पिलातुस चला गया क्योंकि वह एक निर्दोष व्यक्ति को मारना नहीं चाहता था। अंत में यहूदी अगुओं ने उसे धमकी दी, "यदि तुम इस आदमी को छोड़ देते

हो, तो हम कैसर को बताएंगे कि तुमने एक ऐसे व्यक्ति की मदद की है जो साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह कर रहा था।"

पिलातुस लोगों के साथ तर्क करने के लिए वापस गया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं आपके राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?"

उन्होंने और जोर से चिल्लाया। "उसे क्रूस पर चढ़ाओ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ! हमारे पास कैसर को छोड़ कोई राजा नहीं है!"

पिलातुस को एहसास हुआ कि लोग दंगे के कगार पर हैं। उसने आखिरकार उनकी इच्छा सुनी, और पानी का एक बरतन लाने के लिए कहा। उसने उनके सामने हाथ धोया और कहा, "तुम इस बात के गवाह हो कि मैं निर्दोष हूं। मेरे हाथों पर इस आदमी का खून नहीं है।

वे चिल्लाए, "उसका खून हम पर और हमारे बच्चों पर हो!"

उसी के साथ, पिलातुस ने यीशु को कोड़े मरवाए, और फिर सूली पर चढ़ाने के लिए उसे सौंप दिया।

219 क्रूस पर चढ़ाना, और दफ़नाया जाना

मत्ती 27: 27-61, मरकुस 15: 16-47
लूका 23: 26-54, यूहन्ना 19: 16-42

यीशु को सूली पर चढ़ाकर मारने की सज़ा दी गई । पिलातुस ने उसे रोमी सैनिकों को दे दिया, जिन्होंने उसके सिर पर कांटों का ताज रखा । वे उस पर हँसे और कहा, "देखो, यहूदियों का राजा।"

उन्होंने उसे पीटा और उस पर थूक दिया।

फिर उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया।

रास्ते में, उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया और उसे सूली पर चढ़ा दिया। एक बड़ी भीड़ ने शोक मनाया और रोने लगी।

वे यीशु और दो अपराधियों को शहर के बाहर "खोपड़ी" नामक स्थान पर ले गए। तीनों को क्रूस पर चढ़ाया गया था, बीच में यीशु थे।

पिलातुस ने यीशु के क्रूस पर एक चिन्ह रखा, जिसमें लिखा था, यहूदियों का राजा। महायाजक ने कहा, "यहूदियों का राजा मत लिखो!" लेकिन पिलातुस ने कहा, "मैंने जो लिखा है, वह लिखा है।"

सूली पर चढ़ाने के बाद, यीशु ने प्रार्थना की, "पिता, उन्हें क्षमा कर! वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" सुबह के नौ बजे रहे थे।

कुछ लोगों ने चिल्लाकर कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र हैं, तो वहाँ से नीचे आ।"

धार्मिक अगुओं ने हंसते हुए कहा, "ओह, वह दूसरों को बचा सकता है, लेकिन वह खुद को नहीं बचा सकता है! उन्होंने कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र थे। परमेश्वर क्यों उसकी मदद नहीं कर रहा है?"

यीशु के बगल में लटके अपराधियों में से एक ने कहा, "यदि तू मसीहा हैं, तो अपने आप को और हमें बचा।"

दूसरे अपराधी ने कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता है? हम क्रूस पर चढ़ाने लायक हैं, लेकिन यह आदमी निर्दोष है!" फिर उसने कहा, "परमेश्वर, जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे याद करना।"

यीशु ने कहा, "आज, तू स्वर्ग में मेरे साथ होगा।"

सैनिकों ने यीशु के कपड़े आपस में बाँट लिए। उनका कपड़ा पूरा था, इसलिए उन्होंने यह देखने के लिए चिट्ठियां फेंकी कि यह किसे मिलेगा।

यीशु ने अपनी माँ को क्रूस के पास और यहूना को पास में खड़ा देखा। उन्होंने कहा, "माँ, यूहन्ना को अपने बेटे की तरह देख। यूहन्ना, मेरी मां का ख्याल रखना।"

दोपहर के करीब, पूरे क्षेत्र में अंधेरा छा गया और तीन घंटे तक रहा।

दोपहर के तीन बजे, यीशु ने पुकारा, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?" फिर उसने कहा, "पूरा हुआ," और अपना सिर झुकाकर मर गया।

उस समय, वहाँ एक भूकंप आया।

विशाल चट्टानें दो में विभाजित हो गए। मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया। क्रूस के पास खड़े सैनिक जब यह सब देख रहे थे तो वह डर गए। उन्होंने यीशु की ओर देखा और कहा, "यह सच है! यह परमेश्वर का पुत्र था! "

दोपहर बाद, अन्य सैनिक क्रूस पर उन लोगों के पैर तोड़ने के लिए आए। उन्होंने मृत्यु जल्दी देने के लिए ऐसा किया। पहले उन्होंने दोनों अपराधियों के पैर तोड़ दिए। जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर चुका है। यह सुनिश्चित करने के लिए, एक सिपाही ने एक भाला उसकी पसली में मारा।

यूसुफ नाम का एक अमीर आदमी पिलातुस के पास गया और उससे यीशु के शव को दफनाने की अनुमति ली। धार्मिक अगुओं ने भी पिलातुस से मुलाकात की और कहा,

"इस धोखेबाज़ ने अपने चेलों से कहा कि उसकी मृत्यु के बाद वह तीसरे दिन मृतकों में से उठेगा। हमें डर है कि वे आ सकते हैं और शरीर को चुरा सकते हैं और फिर सभी को बता सकते हैं कि वह मृतकों में से जी उठा।" पिलातुस पत्थर पर रोम की मुहर लगाने के लिए सहमत हो गया, और उसने कब्र पर पहरा देने के लिए पहरेदारों को बैठा दिया।

यूसुफ और उसके दोस्त निकेदेमुस ने शरीर को क्रूस से नीचे लाने में मदद की। उन्होंने इसे मसालों के मिश्रण के से सन के कपड़े में लपेटा।

तब यूसुफ ने इसे अपनी कब्र में रख दिया और पूरे प्रवेश द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया। पत्थर पर रोमी मुहर लगाई गई थी। तब सैनिक यीशु के शरीर की रक्षा के लिए कब्र के सामने खड़े हो गए।

220 पुनरुत्थान

मत्ती 27:62 - 28:15, मरकुस 16: 1-8
लूका 24: 1-12, यूहन्ना 20: 1-18

रविवार की सुबह तक यीशु की कब्र पर सब शांत था, जब तक अंधेरा था। अचानक एक भूकंप आया और कब्र पर एक दूत दिखाई दिया। उसने उस विशाल पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया! पेहरेदार भयभीत और बेहोश हो गए थे। और फिर ... सब एक बार फिर से शांत हो गया था।

जैसे ही सूरज निकला, मरियम मगदलीनी और कुछ अन्य महिलाएं बगीचे में आईं, ताकि वे यीशु के शरीर पर मसाले डाल सकें। वे सोच रही थी कि वे कैसे किसी से कब्र के पत्थर को लुढ़कवाए।

जब वे कब्र पर आईं, तो उन्हें महसूस हुआ कि सैनिक चले गए हैं और पत्थर लुढ़क गया है।

उन्होंने देखा, और पाया कि कब्र खाली है!

मरियम ने चेलों को खाली कब्र के बारे में बताया। दूसरी महिलाएँ बगीचे में रुकी थीं। अंत में, वे कब्र के अंदर गए। उन्होंने दो स्वर्गदूत देखे। स्वर्गदूतों में से एक ने कहा, "डरो मत! तुम यीशु की तलाश कर रही हों, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह यहां नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है। जाकर उसके शिष्यों और पतरस को बता।" इसलिए महिलाओं ने वही किया जो उन्हें बताया गया था।

इस बीच, मरियम चेलों से मिली और उनसे कहा, "वे यीशु का शरीर ले गए हैं और हमें नहीं पता कि वह कहाँ है!"

जब पतरस और यूहन्ना ने यह सुना, तो वे कब्र की ओर भागे। यूहन्ना पहले वहाँ गया, लेकिन अंदर नहीं गया।

पतरस भागा और यूहन्ना ने पीछा किया। उन्होंने कपड़े की पट्टियाँ देखीं जो यीशु के शरीर पर लिपटी हुई थीं, लेकिन शव गायब था। वह कब्र से निकलकर घर चले गए, जो कुछ हुआ था वह उसके बारे में उलझन में था।

उनके चले जाने के बाद, मरियम मगदलीनी बगीचे में वापस आयीं, जब वह चल रही थी तो रो रही थी।

जब वह कब्र पर गई, तो उसने स्वर्गदूतों को देखा।

उनमें से एक ने कहा, "तू क्यों रो रही हैं?"

उसने कहा, "क्योंकि उन्होंने मेरे परमेश्वर को छीन लिया है और मुझे नहीं पता कि वह कहां है।"

उसने मुड़कर देखा कि एक आदमी उसके पास खड़ा है। उसने महसूस नहीं किया कि वह यीशु था। उसने सोचा कि यह माली था। "महाशय, यदि तू उसे ले गया है, तो कृपया मुझे बता कि वह कहां है ताकि मैं उसे ले जा सकूं।"

यीशु ने कहा, "मरियम!"

तुरन्त, वह जान गई कि यह कौन है! वह गिर गई और उसके पैर पकड़ लिए, "मेरे गुरु!"

उसने कहा, "मुझे मत पकड़ो, लेकिन मेरे चेलों से कहो कि तुमने मुझे देखा है।" तुरंत वह उठी और चेलों को खोजने के लिए दौड़ी। यीशु फिर अन्य महिलाओं को दिखाई दिया क्योंकि वे शहर में वापस जा रहे थे। वे गिर गए और उसकी आराधना की। उन्होंने कहा, "मेरे भाइयों को ढूंढो और उन्हें बताओ कि मैं उनसे गलील में मिलूंगा।"

सभी महिलाओं ने चेलों को पाया और कहा, "यीशु जीवित है! हमने उसे देखा है और उससे बात की है। वह ज़िंदा है!" पुरुष दूर हो गए, और विश्वास नहीं कर पाए कि यह वास्तव में सच था।

जो पेहरेदार कब्र पर थे, वे उस सुबह की घटनाओं से घबरा गए। उन्होंने जाकर धार्मिक अगुओं को बताया कि वास्तव में क्या हुआ था। कुछ चर्चा के बाद, महायाजक ने पेहरेदार को बड़ी रकम दी और कहा, "लोगों को बता कि यीशु के शिष्य आए थे और सोते समय उसके शरीर को चुरा लिया था। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि पिलातुस तुझको परेशान न करें।" पेहरेदारों ने पैसे ले लिए और जैसा कि उन्हें बताया गया था, वैसे ही किया।

221 इम्माऊस की सड़क

लूका 24:13-45

उस दिन की दोपहर में जब यीशु मृतकों मे से जी उठा था, दो शिष्य यरुशलेम से गए और इम्माऊस की ओर चलना शुरू कर दिया। वे पिछले कुछ दिनों की घटनाओं पर चर्चा कर रहे थे। अचानक उन्होंने देखा कि कोई उनके पास चल रहा है। उन्होंने महसूस नहीं किया कि यह यीशु था।

उसने कहा, "तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"

उन्होंने मुड़कर उसकी ओर देखा। "क्या तुम यहाँ एक अजनबी हो? क्या तू पिछले कुछ दिनों में हुई चीज़ो के बारे में नहीं जानता है?"

उसने कहा, "क्या बातें?"

"हम नासरत के यीशु के बारे में बात कर रहे हैं, जो परमेश्वर के वचनों को बोलता हैं। हमारे अगुओं ने उसे तीन दिन पहले सूली पर चढ़ाया था।

"आज सुबह, कुछ महिलाएं कब्र पर गईं। उन्होंने आकर हमें बताया कि शव गायब हो गया है। कुछ पुरुष गए, और निश्चित रूप से, शव गायब था। अब महिलाएं कह रही हैं कि उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा है और वास्तव में परमेश्वर को जीवित देखा है।"

यीशु बोला। "तुम समझने में इतने धीमे क्यों हो? भविष्यवक्ताओं ने स्पष्ट रूप से कहा कि मसीहा को इन चीजों को सहना पड़ेगा।" तब उसने पवित्रशास्त्र की शुरुआत से बताना शुरु किया, और उन्हें उन हिस्सों को समझाया जो उसके बारे में थे।

जब वे इम्माऊस के पास आए, उन्होंने उससे कहा।

"आगे जाने के लिए बहुत अंधेरा हो गया है। कृपया, हमारे साथ रह।" इसलिए, वह उनके साथ घर चला गया।

शाम के भोजन के समय, यीशु ने रोटी ली और उसे आशीष दी। फिर उसने उसे तोड़ा और उन्हें दिया। तुरंत उन्हें पता चल गया कि वह कौन है। और फिर - वह गायब हो गया! वे एक-दूसरे को विस्मय में देखने लगे।

अंत में उनमें से एक ने कहा, "हमारे दिल में आग सी लगी जब उसने हमें पवित्रशास्त्र समझाया था!"

वे जल्दी से यरूशलेम लौट आए। वे एक कमरे में थे जो सुरक्षित रूप से बंद था क्योंकि उन्हें यहूदी अगुओं का डर था।

जब वह दो आदमी आये, तो उन्होंने कहा, "यह सच है! प्रभु जी उठा है। वह पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हुए हमारे साथ चल रहा था। जब तक उसने हमारे साथ रोटी नहीं खाई, हमने उसे नहीं पहचाना। चेलें इस बात पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे।

अचानक प्रभु उनके बीच में खड़े हो गए और कहा, "शांति तुम्हारे साथ हो!" फिर भी, चेलों को विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्होंने जिसे देखा वह

वास्तव में यीशु था। उन्होंने सोचा कि यह एक आत्मा थी।

उन्होंने कहा, "मेरे हाथों और पैरों के निशान को देखो। यहां, उन्हें छूओं। एक आत्मा का मांस और हड्डी ऐसा नहीं होता है।"

वे अभी भी अपनी खुशी के कारण विश्वास नहीं कर पा रहे थे। उसने कहा, "क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?"

उसने उसे कुछ मछली और शहद दिया, और उसने उसे खाया।

तब यीशु ने उनकी बुद्धि को खोला ताकि वे पवित्रशास्त्र को समझ सकें।

222 दो शिष्यों के विश्वास को जीतना

यूहन्ना 20:24 - 21:19

जब यीशु ने उन्हें दर्शन दिया तो थोमा चेलों के साथ नहीं था। तो उन्होंने उसे खोजा और कहा, "थोमा, हमने प्रभु को देखा है! वह ज़िंदा है!"

उसने कहा, "यह असंभव है! यह विश्वास करने के लिए, मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान महसूस करने होंगे, और मैं उसकी पसली को छूना चाहता हूं जहां उसे भाला मारा गया था।

आठ दिन बाद, यीशु अचानक चेलों के पास आया, और थोमा उनके साथ था। प्रभु ने कहा, "तुम्हें शांति मिले!"

वह थोमा की ओर मुड़ा और कहा, "आ और मेरे हाथों पर और मेरे पसली में निशान छू के देख। यह सवाल करना बंद करो कि मैं जीवित हूं या नहीं। "

थोमा अपने घुटनों पर गिरा। "मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर!"

यीशु ने कहा, "थोमा, तू विश्वास करता है क्योंकि तू ने मुझे देखा है। धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे नहीं देखा, फिर भी वे विश्वास करते है।"

कुछ समय बाद, कुछ चेलें गलील सागर में थे। पतरस ने दूसरों से कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूं।" उन्होंने कहा, "हम भी जाएंगे।"

वे एक नाव में बैठकर पूरी रात मछली पकड़ते रहे, लेकिन कुछ पकड़ में नहीं आया। प्रातः काल, एक आदमी किनारे पर खड़ा था और उसने पूछा, "क्या तुमने कोई मछली पकड़ी?"

उन्होंने कहा, "नहीं।"

उसने कहा, "नाव के दाईं ओर अपना जाल डालो।"

उन्होंने वैसे ही किया, और अचानक जाल मछलियों से भर गया।

यूहन्ना ने पतरस से कहा, "यह प्रभु है।"

जब पतरस ने यह सुना, तो उसने अपने कपड़े लपेटकर, पानी में कूद गया और किनारे की ओर तैरने लगा। दूसरे लोग मछली से भरे जाल को खींचते हुए नाव में लाए।

एक बार जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने यीशु को आग पर रोटी और मछली पकाते देखा। उसने मुड़कर कहा, "मुझे कुछ और मछलियाँ लाकर दो।" पतरस ने दूसरों को जाल लाने में मदद की, जिसमें 153 बड़ी मछलियाँ थीं।

सब कुछ तैयार हो जाने के बाद, यीशु ने कहा, "आओ और खाओ।" वे चारों ओर इकट्ठा हो गए और उसने उन्हें रोटी और मछली दी।

जब वे भोजन करते थे, तो यीशु ने कहा, "शमौन, क्या तू मुझे इन सबसे अधिक प्यार करता है?"

पतरस इस सवाल से हैरान था, "हाँ, प्रभु। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"

"फिर मेरे मेमनों को चरा।"

उसने दूसरी बार पूछा, "शमौन, क्या तू मुझसे प्यार करता है?"

"हाँ प्रभु, तुझे पता है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।"

"मेरी भेड़ों की रखवाली कर।"

तीसरी बार यीशु ने सवाल पूछा।

"शमौन, क्या तू मुझसे प्यार करता है?"

इस सवाल से पतरस को दुख हुआ। उसने कहा, "प्रभु आप सभी चीजों को जानते हैं। आप जानते है मैं आपको प्यार करता हूँ।"

"तब तू मेरी भेड़ों को चरा। जब तू छोटा था, तो तू जहाँ जाना चाहता था वहाँ जाता था। लेकिन जब तू बूढ़ा हो जाएगा, तो कोई दूसरा व्यक्ति तुझको जहाँ तू जाना चाहता, ले जाएगा।"इस बात ने वर्णन किया कि कैसे पतरस की मृत्यु परमेश्वर की महिमा लाएगी।

तब यीशु ने कहा, "मेरे पीछे आओ!"

223 प्रभु भोज और उठाया जाना

मत्ती 28: 16-20, लूका 24: 47-53
प्रेरितों के काम 1

चेलें गलील गए, जहाँ यीशु ने पहली बार उन्हें अपने चेलें बनने के लिए चुना था। वह अचानक प्रकट हुआ और उन्होंने उसकी आराधना की। उसने कहा, "मैं तुम्हें प्रचार करने का अधिकार देता हूँ। सभी देशों में जाओ और चेलें बनाओ। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर उन्हें बपतिस्मा दो। मैंने जो तुम्हें सिखाया है, उन्हे सिखाओ। याद रखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं।"

मरे हुओं में से उठने के 40 दिनों के बाद, यीशु ने अपने चेलों के साथ समय बिताया और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बातें सिखाईं। वह कई अन्य लोगों को भी दिखाई दिया, एक बार 500 से अधिक लोगों की भीड़ में भी वह दिखा।

फिर वह अपने चेलों को जैतून पहाड़ पर ले गया। उसने कहा, "जब तक तुम पिता से वह प्राप्त नहीं कर लेते जो उसने वादा किया है, तब तक यरूशलेम को मत छोड़ना। यूहन्ना ने पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन अब मैं तुमको पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दूंगा।"

उसने कहा, "परमेश्वर, अब वह समय है जब आप इस्राएल को फिर से एक राज्य बनाने जा रहे हैं?"

यीशु ने कहा, "केवल पिता ही जानता है कि ऐसा कब होगा। इस बीच, तुमको सुसमाचार फैलाना होगा, ताकि लोग पापों की क्षमा प्राप्त कर सकें।"

"जब तक पवित्र आत्मा तुम पर नहीं आ जाता, तब तक यरूशलेम में रुके रहना। वह तुमको इस सुसमाचार को फैलाने की सामार्थ देगा। यरूशलेम से शुरू करो और फिर इसे पूरे देश में ले जाओ। सामरिया में भी जाओ। अंत में, पूरी दुनिया में जाओ।"

यीशु ने तब उन्हें आशीष दी। जब उसने ऐसा किया, तो वह अचानक ऊपर उठा लिया गया और एक बादल में गायब हो गया। चेलें वहीं खड़े होकर देख रहे थे।

सफ़ेद रंग के कपड़े पहने दो आदमी उनके बगल में दिखाई दिए। उन्होंने कहा, "तुम वहाँ आकाश में क्यों देख रहे हो? तुमने यीशु को ऊपर जाते देखा है। वह उसी तरह वापस भी आएगा।"

इसलिए चेलें यरूशलेम में वापस चले गए। उनके दिल खुशी से भरे थे! वे अन्य विश्वासियों के साथ एक ऊपरी कमरे में मिले, पुरुष और महिलाएं। यीशु की माँ मरियम, साथ ही साथ उसके भाई भी थे। सभी विश्वासी एक मन के थे और इस समय को प्रार्थना में बिताया।

उस समय के दौरान, पतरस ने खड़े होकर समूह से बात की। उसने कहा, "यहूदा ने पवित्रशास्त्र को पूरा किया जब उसने भीड़ को बगीचे में ले जाकर यीशु के साथ विश्वासघात किया। यहूदा हम में से एक था, और उसके पास इस सेवाकाई के सभी

विशेषाधिकार थे। फिर भी उसने यह सब एक मूल्य के लिए बेच दिया। उस पैसे से उसने एक खेत खरीदा, और आज वह लहू का खेत कहलाता है।"

"फिर भी, किसी को हम प्रेरितों के बीच उसकी जगह लेने की आवश्यकता है। हम एक व्यक्ति को चुने, लेकिन हम यह सुनिश्चित करें कि यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा देने के बाद से वह हमारे साथ है। जिस व्यक्ति को हम चुनते हैं, उसने उन सभी चमत्कारों को तब तक देखा हो, जब तक प्रभु हमारे बीच से उठा लिया न गया था। हमारे साथ, वह मसीह के पुनरुत्थान की गवाही देगा।"

दो पुरुषों को अंतिम विचार के लिए चुना गया था।

लोगों ने प्रार्थना की और फिर अंतिम निर्णय लेने के लिए चिट्ठी फेंकी। मत्तिय्याह को चुना गया।

224 पवित्र आत्मा का आना

प्रेरितों के काम 2

पिन्तेकुस के दिन, विश्वासी ऊपरी कमरे में प्रार्थना कर रहे थे। अचानक उन्हें तेज आवाज़ सुनाई दी। यह स्वर्ग से निकलने वाले हिंसक तूफान की तरह लग रहा था। कमरा आवाज़ से भर गया, और उन्होंने देखा यह आग की तरह लग रही थी। अचानक यह अलग हो गया और प्रत्येक विश्वासी पर बैठ गया। तुरंत, वे पवित्र आत्मा से भर गए और विदेशी भाषाओं में बोलने लगे।

शहर के लोगों ने इस बारे में सुना। उनमें कई देशों के यहूदी थे जो अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे। वे देखने गए कि क्या हो रहा है। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने प्रेरितों को विभिन्न भाषाओं में बोलते हुए सुना, जिनमें वे भाषाएँ भी थीं जो भीड़ में सभी बोलते थे।

कुछ लोगों ने कहा, "यह असंभव है! ये लोग हमारी भाषा नहीं बोल सकते। वे गलील से हैं। फिर भी हम उन्हें हमारी जुबान में बोलते सुन रहे हैं।"

दूसरों ने कहा, "ओह, वे नशे में हैं।"

पतरस उनके सामने खड़ा हो गया और कहा, "ये लोग नशे में नहीं हैं। यह वही है जो पुराने भविष्यवक्ताओं ने बात की थी, जब उन्होंने कहा था कि परमेश्वर अपना आत्मा आम लोगों पर उंडेलेंगा।"

"तुमने यीशु के चमत्कारों को देखा। फिर भी, तुमने उसे क्रूस पर चढ़ाया - उसे एक सूली पर चढ़ाया और कब्र में डाल दिया। लेकिन हम इस बात के गवाह हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया है! वह ज़िंदा है। वह पिता के दाहिने हाथ पर बैठता है। अब उसने हम में अपना पवित्र आत्मा भेजा है। यही तुम देख रहे हों।

"मैं जो कह रहा हूँ उसे समझो। तुमने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, लेकिन परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा कर दिया और उसे परमेश्वर और मसीहा बना दिया!"

लोगों ने कहा, "तुम जो कह रहे हैं वह सच है, लेकिन हम क्या कर सकते हैं?"

पतरस ने कहा, "पश्चाताप करो, और हम तुम्हें यीशु के नाम से बपतिस्मा देंगे। एक बार जब तुमको अपने पापों की माफी मिल जाती है, परमेश्वर तुमको पवित्र आत्मा से भर देगा।"

उस दिन, प्रेरितों ने उन लोगों को बपतिस्मा दिया जिन्होंने संदेश स्वीकार किया। विश्वासियों की संख्या 3,000 से अधिक हो गई। वे अक्सर एक साथ मिलते थे ताकि वे एक-दूसरे से और प्रेरितों से सीख सकें।

प्रेरितों ने कई चमत्कार किए, और विश्वासियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई।

इन विश्वासियों ने प्रार्थना करने, एक साथ भोजन साझा करने और एक दूसरे के साथ समय बिताने के लिए खुद को समर्पित किया।

225 एक लंगड़े व्यक्ति की चंगाई

प्रेरितों के काम 3 – 4:31

एक दोपहर, पतरस और यूहन्ना मंदिर गए, प्रार्थना का समय था। वहाँ उन्होंने एक व्यक्ति को देखा जो मंदिर के द्वार पर भीख माँगा करता था, वह जन्म से ही लंगड़ा था। हर दिन लोग उसे "सुंदर" नामक एक फाटक पर ले जाते थे ताकि वह मंदिर में आने जाने वालों से पैसे मांग सके।

पतरस उस आदमी के सामने रुका और कहा, "मुझे देख।"

आदमी ने उसे देखा, वह पतरस से कुछ पैसे पाने की उम्मीद कर रहा था। पतरस ने कहा, "मेरे पास तुझको देने के लिए पैसे नहीं हैं, लेकिन मेरे पास कुछ बेहतर है। नासरत के यीशु के नाम से उठ और चल।"

जब पतरस और यूहन्ना ने आदमी को उठने में मदद की, उसके टांगे और पैर मज़बूत हो गए। वह खुद से खड़ा हो गया और फिर वह चलने लगा। वह परमेश्वर की स्तुति करते हुए खुशी से कूदा।

लोगों ने उस आदमी को चलते देखा, और उसे पहचान लिया कि वह लंगड़ा था और वह फाटक पर बैठकर भीख मांगता था। वे लोग तीनों आदमियों के आसपास इकट्ठा हो गए।

पतरस ने कहा, "यह आदमी यीशु के नाम से चंगा हुआ है, जिसे तुमने पिलातुस को क्रूस पर चढ़ाने के लिए दे दिया था। तुमने यीशु को मार डाला, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जी उठाया। हमने उसे देखा है और तुमको बता सकते हैं - वह जीवित है।

"इस आदमी को देखो। वह यीशु की सामर्थ से खड़ा है। अपने पापों से मुड़ों और यीशु को अपने मसीहा के रूप में स्वीकार करो। परमेश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे।"

यहूदी शासकों को पता चला कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश दे रहे थे, इसलिए उन्होंने दोनों चेलों को जेल में डाल दिया। फिर भी, कई लोग मसीह के अनुयायी बन गए। विश्वासियों की संख्या बढ़कर 5,000 से अधिक हो गई।

अगली सुबह, महायाजक ने दोनों आदमियों को बुलाया ताकि वे सभा के सामने खड़े हो सकें।

धर्मगुरुओं ने पूछा, "तुमको लोगों को उपदेश देने का अधिकार किसने दिया?"

पवित्र आत्मा ने पतरस का मार्गदर्शन किया जब उसने उत्तर दिए।

"यह आदमी नासरत के यीशु मसीह के नाम से चंगा हुआ था - जिसे तुमने एक क्रूस पर मार दिया था। परमेश्वर ने उसे मृतकों से जी उठाया, और वह उद्धार का एकमात्र रास्ता है।"

शासक पतरस और यूहन्ना के विश्वास से चकित थे। क्यूंकि दोनों पुरुषों की औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी, वे जानते थे कि उनकी निर्भीकता यीशु के साथ होने से है।

सभा चमत्कार के बारे में कुछ भी नहीं कह सकती थी क्योंकि लंगड़ा व्यक्ति उनके सामने खड़ा था। वे देख सकते थे कि वह चंगा है।

उन्होंने चेलों को धमकाने का फैसला किया और मांग की कि वे यीशु के बारे में उपदेश देना बंद कर दें।

पतरस और यूहन्ना ने जवाब देने में संकोच नहीं किया। उन्होंने कहा, "तुम हमें परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने के लिए कह रहे हो ताकि हम तुम्हारी बात मान सकें।

यह असंभव है! हम जानते हैं कि हमने क्या देखा और सुना है। "

अगुओं ने अंत मे पतरस और यूहन्ना को रिहा कर दिया। दोनों लोग विश्वासियों की संगति में वापस चले गए और उन्हें बताया कि क्या हुआ था।

सभी ने मिलकर आनन्द मनाया। अचानक इमारत हिलने लगी और वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए। इसी के साथ, उनके पास परमेश्वर के संदेश के बारे में दूसरों को बताने के लिए नया साहस था।

226 हनन्याह और सफीरा

प्रेरितों के काम 4:32 - 5:16

विश्वासियों ने अपनी हर चीज को साझा किया। यदि किसी को कोई आवश्यकता होती, तो अन्य अपनी संपत्ति बेचकर उस आवश्यकता को पूरी करते।

बरनबास नाम के एक धर्मी व्यक्ति के पास कुछ जमीन थी, और उसने इसे दूसरों की ज़रूरतों के लिए बेच दिया। उसने पैसे लाकर प्रेरितों को दिए।

हनन्याह और सफीरा नाम के एक विवाहित जोड़े ने भी कुछ ज़मीनें बेचने और प्रेरितों को पैसे देने का फैसला किया। इसका उपयोग कलीसिया की भलाई के लिए किया जाना था। लेकिन भूमि बिकने के बाद हनन्याह ने अपना इरादा बदल दिया। उसने और उसकी पत्नी ने अपने लिए कुछ पैसे रखने का फैसला किया। उन दोनों ने सहमति व्यक्त की कि वे अभी भी कलीसिया को पैसों का कुछ हिस्सा देंगे, लेकिन कहेंगे कि उन्होंने सब दे दिया है।

हनन्याह सफीरा के बिना, विश्वासियों की सभा में गया। उसने पतरस को अपना उपहार दिया और कहा कि यह पूरी राशि थी जो उन्हें मिली जब उन्होंने जमीन बेची थी। पतरस ने उसकी ओर देखा और कहा, "शैतान ने तेरा हृदय भर दिया है और तू पवित्र आत्मा से झूठ बोल रहा है। तुझको अपनी जमीन नहीं बेचनी चाहिए थी; और एक बार जब बेच दी, तो क्या तुझको कलीसिया को सारा पैसा नहीं देना चाहिए था। तूने इस बारे में झूठ बोलने का फैसला क्यों किया? तूने हमसे झूठ नहीं बोला। तूने परमेश्वर से झूठ बोला है।"

जैसे ही हनन्याह ने यह सुना, वह गिर गया और मर गया। इससे पूरी मंडली में भय फैल गया। कुछ युवा पुरुषों ने उसे उठाया, कपड़े की पट्टियों में लपेटा, उसे बाहर ले गए और उसे दफनाया।

तीन घंटे बाद सफीरा सभा में आई। उसने अपने पति के बारे में नहीं सुना था। पतरस ने उससे कहा, "क्या तूने और तेरे पति ने कलीसिया को जो पैसा दिया थे, उतने की ही ज़मीन बेची थी?"

उसने कहा, "हाँ, यह पूरे पैसे थे।"

पतरस ने उसकी ओर देखा, "तुम दोनों पवित्र आत्मा की परीक्षा करने के लिए क्यों सहमत हुए? बात सुन। क्या तू उन कदमों की आवाज़ को सुन पा रही हैं? वे युवक हैं जिन्होंने अभी-अभी तेरे पति को दफनाया था। अब वे तेरे शव को ले जाएंगे और उसे दफन करेंगे।"

तुरंत, वह नीचे गिर गई और मर गई। युवक आए और उसे ज़मीन पर पड़ा हुआ पाया। उन्होंने उसे उठाया और पति के बगल में दफना दिया।

इस की खबर पूरे क्षेत्र में फैल गई।

इसके कारण, जब वे विश्वासियों के समूह में शामिल होने के बारे में सोचते थे तो लोग अधिक सावधान रहते थे।

फिर भी, उनकी संख्या बहुत बढ़ गई - पुरुष और महिलाएं दोनों की।

यरूशलेम और आसपास के शहरों के लोग बीमार लोगों को लाते और उन्हें सड़क के किनारे रखते थे। जब पतरस चलता और उसकी परछाई उनके ऊपर से गुज़रती, तो वे ठीक हो जाते थे।

227 प्रेरित और सेवक

प्रेरितों के काम 5:17 - 6: 7

यीशु का संदेश पूरे यरूशलेम में फैल गया, जिससे यहूदी नेता नाराज़ हो गए। उन्होंने पहरेदारों को भेजा, जिन्होंने प्रेरितों को गिरफ्तार किया और उन्हें जेल में डाल दिया।

उस रात, एक दूत आया और उन्हें बिना पहरेदारों के देखे बाहर निकाल दिया। दूत ने कहा, "सुबह मंदिर जाओ और लोगों को उपदेश दो।" सूर्योदय के समय, प्रेरित मंदिर गए।

बाद में सुबह, महायाजक ने महासभा को इकट्ठा किया। फिर उसने पहरेदारों के कप्तान को प्रेरितों को जेल से लाने के लिए भेजा।

जब कप्तान वहां गया, तो जेल की कोठरी खाली थी। उसने कहा, "पहरेदार अपने जगह पर हैं और दरवाज़े बंद हैं, लेकिन वे लोग अंदर नहीं हैं!"

उस समय, कोई व्यक्ति अंदर भागा भागा आया और उसने कहा, "जिन पुरुषों को आपने जेल में डाला था, वे अब मंदिर में उपदेश दे रहे हैं!"

पहरेदारों के कप्तान अपने आदमियों को ले कर उस मंदिर में गए जहाँ उन्होंने उन पुरुषों को उपदेश देते हुए पाया । फिर उन्हें एहसास हुआ कि वह उनके खिलाफ बल का इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि वे लोगों से डरते थे। फिर भी, प्रेरित स्वेच्छा से उनके साथ गए।

महायाजक ने कहा, “हमने तुमसे कहा था कि यीशु के नाम पर मत उपदेश दों। फिर भी तुमने यरूशलेम को अपने सिद्धांतों से भर दिया है। तुम यह भी कह रहे हो कि हम यीशु की हत्या के दोषी हैं।

पतरस ने कहा, “हम परमेश्वर की मानेगें, न कि लोगों की। तुमने यीशु को क्रूस पर रखकर मारा, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया। अब वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठता है और पापों का पश्चाताप और क्षमा देता है।"

इससे धर्मगुरु नाराज़ हो गए। उन्होंने प्रेरितों को कमरे से बाहर भेज दिया, और फिर चर्चा की कि वे उन्हें कैसे मारे। सभा के एक सम्मानित सदस्य ने कहा, “सावधान रहें, आप इन पुरुषों के साथ क्या करते हैं। मेरी सलाह है कि उन्हें अकेला छोड़ दो। यदि वे केवल मानवीय भावनाओं का पालन कर रहे हैं, तो कुछ भी नहीं होगा। लेकिन अगर यह परमेश्वर की ओर से है, तो आप इसे रोक नहीं सकते। वास्तव में, आप परमेश्वर के खिलाफ लड़ रहे होंगे।”

कुछ चर्चा के बाद, वे इस सलाह से सहमत हुए। फिर भी, पुरुषों को जाने देने से पहले, उन्होंने प्रेरितों को पीटा और कहा, "फिर कभी यीशु के नाम से मत बोलना।"

प्रेरित सभा से आनन्दित हो कर गए। उन्होंने कहा, "परमेश्वर ने हमें यीशु के नाम के लिए पीड़ित होने की अनुमति दी है!" उन्होंने मसीह का प्रचार करना जारी रखा और विश्वासियों की संख्या और भी बड़ी हो गई।

इस समय एक समस्या विकसित हुई। कलीसिया ने उनमें विधवाओं के लिए प्रावधान किया।

कुछ विधवाएँ इस्राएल से थीं, और कुछ अन्य देशों में यहूदी समुदायों से थीं। इस्राएल की विधवाओं को दूसरों की तुलना में बेहतर प्राप्त होता।

प्रेरितों ने कहा, "हमें परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के प्रचार पर ध्यान देना चाहिए। फिर भी, इस ज़रूरत को पूरा किया जाना चाहिए।

उन्होंने मंडली से सात आदमियों का चयन करने के लिए कहा, जो इस ज़िम्मेदारी को निभाएँगे। उन्होंने कहा, "तुम जिसे भी चुनते हो, उसे अत्यधिक सम्मान और पवित्र आत्मा से भरा होना चाहिए। उन्हें अपनी बुद्धिमानी के लिए जाना जाना चाहिए।" सभी को यह विचार पसंद आया, इसलिए उन्होंने सात पुरुषों को चुना, जो योग्य थे। समूह में स्तिफनुस और फिलेप्पुस शामिल थे।

प्रेरितों ने इन लोगों के लिए प्रार्थना की और उन्हें इस ज़रूरत के लिए ज़िम्मेदारी दी। इससे विश्वासियों की संख्या तेज़ी से बढ़ी। यहां तक कि यहूदी महायाजकों के एक बड़े समूह ने भी मसीह में अपना विश्वास लाया।

228 स्तिफनुस, पहला मसीही शहीद

प्रेरितों के काम 6: 8 - 7:60

स्तिफनुस में परमेश्वर की शक्ति थी। कई यहूदी समूहों ने उसके साथ बहस करने की कोशिश की, लेकिन पाया कि वे उसकी बुद्धि और शक्ति का मेल नहीं कर सके।

उन्होंने उसके बारे में झूठ फैलाने का फैसला किया और कहा कि उसने परमेश्वर की निंदा की है। ये अफवाह पूरे शहर में तब तक फैली जब तक कि पहरेदार उसे महासभा में नहीं ले गए।

पुरुषों ने खड़े होकर उसके बारे में झूठ बोला। उन्होंने कहा, "उसने कहा है कि यीशु इस मंदिर को नष्ट करने और जो मूसा ने हमें दिया था वह सब कुछ बदलने जा रहाहैं।"

उन्होंने मुड़कर स्तिफनुस की ओर देखा, तब अचानक उसका चेहरा एक दूत के चेहरे की तरह हो गया।

महायाजक बोला। "क्या तू इन चीजों के लिए दोषी हैं?"

स्तिफनुस ने जवाब दिया, "परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'अपने देश को छोड़ और उस देश में जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।।"

इस्राएल के बारे में संक्षिप्त इतिहास देकर स्तिफनुस बोलता रहा। उसने बताया कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम को भूमि देने और उसके वंशजों को एक महान राष्ट्र बनाने का वादा किया था। अब्राहम परमेश्वर में विश्वास करता था, भले ही उसके कोई संतान नहीं थी।

आखिरकार उसका इसहाक नाम का एक पुत्र हुआ, जिसका एक पुत्र याकूब था। उससे इस्राएल के बारह गोत्र आए। उसके वंशज मिस्र में गुलाम बनाए गए थे।

स्तिफनुस ने कहा, "परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले जाने के लिए मूसा का उपयोग किया। मूसा ने लोगों से कहा कि एक महान नबी आएगा जो उसके जैसा होगा।

स्तिफनुस ने बताया कि कैसे राजा दाऊद परमेश्वर के लिए एक मंदिर का निर्माण करना चाहता था, लेकिन उसके बेटे सुलैमान ने वास्तव में इसे बनाया था। अंत में उसने कहा, "तुम ठंडे दिलों वालें विद्रोही लोग हों! तुम अपने पूर्वजों की तरह पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। उन्होंने सभी नबियों को सताया, और अब तुम उनके नक्शेकदम पर चल रहे हों। तुमने उस धर्मी को धोखा दिया और उसकी हत्या कर दी। "

सभा में हंगामा मच गया। वे उसके खिलाफ रो पड़े। इस सब के बीच, पवित्र आत्मा ने स्तिफनुस को नियंत्रित किया। अचानक उसने देखा और कहा,

"आकाश खुल रहे हैं और मैं देख रहा हूँ कि यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ में खड़ा है।"

भीड़ ने अपने कानों पर हाथ रखें और जोर से चिल्लाए। वे स्तिफनुस को पकड़कर शहर से बाहर ले गए और उसे फेंक दिया। उन्होंने शाऊल नाम के एक युवक को उसके कपड़ें दिए। फिर वे बड़े बड़े पत्थर लेकर स्तिफनुस पर फेंक लगे।

वह जब पत्थर उसे मार रहे थे, स्तिफनुस ने देखा और कहा, "प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को स्वीकार करना।" फिर उसने प्रार्थना की, "प्रभु, उन्हें इस पाप के लिए क्षमा करना।" उसी के साथ वह पत्थरों के नीचे गिर गया और उसकी मौत हो गई। इससे यरूशलेम में कलीसिया का बहुत उत्पीड़न शुरू कर हो गया। शाऊल ने एक भीड़ का नेतृत्व किया जिसने पुरुषों और महिलाओं को उनके घरों से बाहर निकाला और उन्हें जेल में डाल दिया। इस वजह से, कई विश्वासी यरूशलेम को छोड़कर आसपास के इलाकों में चले गए। फिर भी, प्रेरित यरूशलेम में रहें।

229 फिलेप्पुस की सेवकाई

प्रेरितों के काम 8: 4-40

जब यरूशलेम में उत्पीड़न शुरू हुआ, तो पूरे क्षेत्र में विश्वासी बिखर गए। वे जहां भी गए, उन्होंने लोगों को यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में बताया।

फिलेप्पुस ने सामरिया शहर में जाकर मसीह के बारे में प्रचार किया। पवित्र आत्मा ने उसे लोगों के बीच चमत्कार करने की अनुमति दी। दुष्टआत्माओं को निकाला गया - चिल्लाते हुए। लकवाग्रस्त और लंगड़े भी ठीक हो गए थे। उन्होंने जो कुछ देखा, उसे देखकर शहर के लोग अचंभित थे, इसलिए उन्होंने उसके उपदेश को ध्यान से सुना। उसकी बातों को सुनकर वे आनंद से भर गए।

वहां के लोग शमौन नामक एक व्यक्ति के जादू टोने का अनुसरण करते थे। लेकिन जब उन्होंने मसीह का सुसमाचार सुना, तो उन्होंने इसे खुशी से स्वीकार किया। शमौन ने भी उसे माना और दूसरों के साथ बपतिस्मा लिया था।

प्रेरितों ने सुना कि सामरिया के लोगों ने सुसमाचार को स्वीकार किया है, इसलिए उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास मिलने के लिए भेजा। उनके आने के बाद, उन्होंने विश्वासियों के लिए प्रार्थना की, परमेश्वर से उन्हें पवित्र आत्मा देने के लिए कहा। दोनों ने फिर लोगों पर हाथ रखा, और लोगों ने तुरंत पवित्र आत्मा प्राप्त की।

शमौन इसे विस्मय से देख रहा था। उसने पतरस और यूहन्ना को पैसे की पेशकश की और कहा, "मुझे यह शक्ति दो, ताकि जब मैं लोगों पर हाथ रखूँ, तो वे पवित्र आत्मा से भर जाए।"

पतरस ने कहा, "तू अपने धन के साथ नष्ट हो जा। तू अभी भी अपने पुराने तरीकों पर कायम हैं। बुराई तेरे अंदर रहती है। प्रार्थना कर और परमेश्वर से इससे छुटकारा देने के लिए कह।"

शमौन ने कहा, “कृपया, मेरे लिए प्रार्थना कर। मैं नहीं चाहता कि ये चीजें हों। ”

पतरस और यूहन्ना के यरूशलेम लौटने के बाद, परमेश्वर ने फिलेप्पुस के पास एक दूत भेजा। "यरूशलेम से दक्षिण जाने वाली सड़क पर जा।"

जब फिलेप्पुस वहां पहुंचा तो उसने कूश के एक महत्वपूर्ण अधिकारी को देखा। वे अपनी रानी के कोषाध्यक्ष थे। वह आराधना करने के लिए यरूशलेम गया था।

आत्मा ने फिलेप्पुस को आदमी के रथ के पास पहुंचने के लिए कहा। जब उसने ऐसा किया, तो उसने पाया कि अधिकारी उन भविष्यवक्ता में से एक से पढ़

रहा था, जिन्होंने यीशु के बारे मे कई सौ साल पहले लिखा था।

फिलेप्पुस ने पूछा, "क्या तू जो पढ़ रहा है वह समझता हैं?"

उस आदमी ने कहा, "नहीं, मुझे यह समझाने के लिए किसी की आवश्यकता है। क्या नबी खुद या किसी और के बारे में बात कर रहा है?" फिलेप्पुस रथ में चढ़ा और उसे यीशु और पापों की क्षमा के बारे में बताया।

यात्रा के दौरान, उसने कहा, "वहाँ कुछ पानी है। क्या मैं अभी बपतिस्मा ले सकता हूँ?"

फिलेप्पुस ने कहा, "यदि तू मानता है कि यीशु ही मसीहा है और उसे अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करता है, तो ले सकता है।"

कूशी ने रथ रोक दिया और फिर कहा, "मेरा विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।"

उन्होंने रथ रोका, पानी में गए और फिलेप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। जैसे ही वह आदमी पानी से बाहर आया, उसने देखा कि फिलेप्पुस चला गया था। आत्मा उसे ले गया था।

फिलेप्पुस ने खुद को दूसरी जगह पाया, इसलिए वह एक शहर से दूसरे शहर में जाकर मसीह का प्रचार कर रहा था।

230 शाऊल का परिवर्तन

प्रेरितों के काम 9: 1-31

शाऊल यीशु के पीछे चलने वालों का पता लगाने और उन्हें मारने के अभियान पर था। उसे दमिश्क जाने और विश्वासियों को वापस यरूशलेम लाने के लिए महायाजक से अधिकार दिया गया था।

जैसे ही वह और उसके लोग दमिश्क के पास पहुँचे, अचानक उनके चारों ओर एक तेज़ रोशनी चमक उठी और शाऊल ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने एक आवाज़ सुनी, "शाऊल! शाऊल! तू मेरे खिलाफ क्यों लड़ रहा है?

उसने कहा, "परमेश्वर, आप कौन हैं?"

"मैं यीशु हूं, जिसे तू सता रहा है। तेरे जीवन के लिए मेरी इच्छा के विरुद्ध लड़ना कठिन है।"

जो शाऊल के साथ थे, वे नहीं जानते थे कि क्या चल रहा है। वे बस एक आवाज़ सुन पा रहे थे, लेकिन वे किसी को नहीं देख पा रहे थे।

शाऊल कांप उठा। "परमेश्वर, तू क्या चाहता है कि मैं क्या करूं?"

"शहर में जा और तुझे बताया जाएगा कि क्या करना है।"

जब शाऊल उठा, तो उसे महसूस हुआ कि वह अंधा था। अन्य लोग उसे शहर में ले गए। उसने तीन दिन तक इंतजार किया, और कुछ भी खाने या पीने से इनकार कर दिया।

प्रभु ने एक शिष्य से दमिश्क में बात की। "हनन्याह, सड़क पर एक घर में जा जो सीधी कहलाती है, और शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले। उस पर अपने हाथ रखना, और वह अपनी दृष्टि वापस प्राप्त कर लेगा।

हनन्याह चिंतित था। "परमेश्वर, हर कोई इस हिंसक आदमी के बारे में जानता है। वह यहां हर किसी को, जो आपके नाम से पुकारता है, कैद में कर सकता है।

प्रभु ने कहा, "वह मेरा चुना हुआ सेवक है। वह सुसमाचार को यहूदियों, अन्यजातियों और राजाओं तक फैलाएगा । वह मेरे लिए बहुत तकलीफ उठाएगा।"

हनन्याह ने उसे पाया और कहा, "भाई शाऊल, यीशु तुझको सड़क पर दिखाई दिया, और फिर उसने मुझसे कहा कि मैं तेरे पास आऊँ।" हनन्याह ने शाऊल के सिर पर हाथ रखा। "अपनी दृष्टि प्राप्त कर और पवित्र आत्मा से भर जा!"

तुरंत शाऊल देखने लगा था। आनंद के साथ, उसने बपतिस्मा लिया और फिर कुछ खाना खाया।

शाऊल ने दमिश्क में विश्वासियों के साथ कई दिन बिताए, और फिर यह प्रचार करना शुरू किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। लोग आश्चर्यचकित थे क्योंकि उन्हें पता था कि वह यीशु के अनुयायियों को मारने के लिए वहां आया था।

लेकिन अब उन्होंने उसकी बात सुनी, और पाया कि जब वह यीशु के बारे में बात करता था तो वह बहुत दृढ़ था। उससे कोई बहस नहीं कर सकता था। इसलिए उन्होंने उसे मारने का फैसला किया।

उनकी योजना उसे पकड़ने की थी, जब वह शहर छोड़ने की कोशिश करेगा। विश्वासियों को इस बारे में पता चला, और उसे शहर की दीवार पर ले गए। उन्होंने उसे एक बड़ी टोकरी में डाला और उसे दूसरी तरफ नीचे उतार कर दिया।

वहाँ से, वह यरूशलेम लौट आया।

यरूशलेम के विश्वासी उससे डरते थे। उन्हें लगा कि वह उन्हें फंसाने की कोशिश कर रहा है। इसलिए बरनबास शाऊल को प्रेरितों के पास लाया और बताया की उसके साथ क्या हुआ था। "यहोवा शाऊल को दमिश्क जाने वाले मार्ग पर दिखाई दिया।तब से, वह बड़े साहस के साथ यीशु के नाम से बोल रहा है।"

विश्वासियों ने आखिरकार शाऊल को स्वीकार कर लिया और वह उनके बीच स्वतंत्र रूप से जाता था। वह यरूशलेम में गया और उसने सभी को प्रभु के बारे में बताया। कुछ ने उसके साथ बहस शुरू कर दी, लेकिन फिर से वे उसे मनाने की शक्ति का मुकाबला नहीं कर सके। इसलिए, उन्होंने उसे मारने की साजिश रची।

मसीह के विश्वासियों को उनकी योजना के बारे में पता चला, इसलिए उन्होंने उसे टारस भेज दिया।

इस्राइल में विश्वासियों के लिए शांति का समय शुरू हो गया था। पवित्र आत्मा उनके साथ था। वे अपने विश्वास में बढ़े और संख्या में भी बढ़े।

प्रेरितों के काम 9: 32-43

पतरस ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर, मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया और साथ ही विश्वासियों को प्रोत्साहित किया। एक स्थान पर, उसे एक लकवाग्रस्त व्यक्ति मिला

जो आठ साल से अपने बिस्तर पर पड़ा था।

पतरस ने उससे कहा, "प्रभु यीशु ने तुझे चंगा किया है, इसलिए उठ।" तुरंत वह व्यक्ति ठीक हो गया और उठ गया। उस क्षेत्र के लोगों ने उस आदमी को देखा और सुना कि क्या हुआ, और उनमें से कई ने मसीह में अपना विश्वास रखा।

दोरकास नाम की एक महिला थी जो पास में याफा शहर में रहती थी। यीशु के एक शिष्य के रूप में, वह लोगों से प्यार करती थी और उनके लिए अच्छे काम करती थी। वह बीमार हो गई और मर गई।

उसके दोस्तों ने उसके शरीर को दफनाने के लिए तैयार किया, और उसे ऊपर के कमरे में रख दिया। याफा के शिष्यों ने सुना कि पतरस आस-पास में है, इसलिए उन्होंने दो लोगों को उसके पास भेजा। उन्होंने कहा, "कृपया हमारे साथ तुरंत आ।" पतरस सहमत हो गया और उनके साथ चला गया।

जब वह याफा पहुंचे, तो वे उसे उस घर में ले गए जहाँ उन्होंने दोरकास का शव रखा था। वह ऊपर गया और महिलाओं को उसके लिए रोता हुआ पाया। जब उन्होंने उसे देखा, तो उन्होंने उसे दोरकास के जीवित रहने के दौरान विभिन्न वस्त्र और कपड़े दिखाए।

पतरस ने उन्हें कमरे से बाहर भेज दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की। शरीर की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "दोरकास, उठ!"

इसी के साथ, उसने अपनी आँखें खोलीं और पतरस को देखा। वह उठकर बैठ गई। उसने उसे बिस्तर से उठने में मदद की, और फिर दूसरी महिलाओं को बुलाया। उन्होंने दोरकास को उनके सामने प्रस्तुत किया – वो भी जीवित।

इस की खबर पूरे याफा में फैल गई, और बहुतों ने यीशु पर अपना विश्वास रखा।

कुरनेलियुस रोमी सेना में एक सैन्य अधिकारी था। वह एक अच्छा इंसान था जो परमेश्वर की आराधना करता था।

एक दूत ने उसे दर्शन दिया और कहा, "कुरनेलियुस, परमेश्वर ने तेरी प्रार्थना सुनी है। समुद्र के किनारे रहने वाले शमौन जो चमड़े के काम करता है, उसके घर याफा में लोगों को भेज। वहाँ उन्हें पतरस नाम का एक व्यक्ति मिलेगा और वह तुझको बताएगा कि क्या करना है।" उसी के साथ, स्वर्गदूत गायब हो गया।

कुरनेलियुस ने तुरंत लोगों को याफा भेजा।

वे अगले दिन दोपहर के आसपास पहुंचे। इससे पहले कि वे वहां पहुंचते, पतरस प्रार्थना करने के लिए खुली छत पर चला गया। वह दोपहर के भोजन की प्रतीक्षा कर रहा था।

अचानक वह बेहद भूखा हो गया और बेसुध हो गया। उसने देखा कि आकाश खुला है और एक बड़ी चादर नीचे आ रही है। इसमें सभी प्रकार के जानवर थे जिन्हें यहूदियों को खाने की अनुमति नहीं थी। एक आवाज़ ने कहा, "पतरस, उठ। इनमें से किसी एक जानवर को मारकर खा।"

उसने कहा, "परमेश्वर, आप जानते हैं कि मैंने कभी भी कुछ अशुद्ध नहीं खाया है।"

आवाज़ ने कहा, "जब परमेश्वर ने कुछ साफ किया है, तो इसे कभी भी सामान्य या अशुद्ध मत कह।" यह दूसरी बार हुआ, और तीसरी बार भी। फिर चादर वापस स्वर्ग में चली गई।

पतरस जाग गया लेकिन इस दर्शन का मतलब नहीं समझा था, वह इस बारे में उलझन में था। उस समय, कुरनेलियुस के आदमी फाटक पर पहुंच गए थे। पवित्र आत्मा ने कहा, "मैंने इन लोगों को तेरे पास भेजा है। उनके साथ जाने में संकोच न कर।

पतरस नीचे गया और उन लोगों का अभिवादन किया। उन्होंने उसे कुरनेलियुस के बारे में बताया, और वह उनके साथ जाने को तैयार हो गया। सुबह उन्होंने कई विश्वासियों को लिया और वे अपनी यात्रा पर चल पड़े।

वे अगले दिन पहुंचे, और कुरनेलियुस उनसे मिलने के लिए दौड़ा। वह पतरस के सामने गिर पड़ा और उसकी आराधना करने लगा। पतरस ने कहा, "खड़े हो जा! मैं सिर्फ एक मानव हूं।"

वह कुरनेलियुस के घर में गया और उसने देखा कि उसने दूसरों को वहाँ आने के लिए आमंत्रित किया है ताकि वे परमेश्वर का संदेश सुन सकें। पतरस ने समूह से कहा। "परमेश्वर ने मुझे बताया कि उसने दरवाज़ा खोल दिया है और अब दूसरे देशों के लोगों को अपने पास बुला रहा है। इसलिए, मैं तुम्हें वह संदेश बताता हूं जो इस्राएल को दिया गया था। वह यह है कि यीशु मसीह सभी का परमेश्वर है।"

फिर उसने उन्हें यीशु और उसके चमत्कारों के बारे में बताया। उसने वर्णन किया कि यहूदी अगुओं ने उसे कैसे मारा, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जी उठाया।

पतरस ने कहा, "जो कोई भी यीशु में विश्वास करता है उसे पापों की माफी मिलेगी।" जैसे ही उसने उन शब्दों को कहा, पवित्र आत्मा ने घर के प्रत्येक व्यक्ति को भर दिया। इसने यहूदा के विश्वासियों को चौंका दिया जब उन्होंने देखा कि पवित्र आत्मा का उपहार अन्यजातियों को दिया गया था।

पतरस ने उनकी ओर इशारा किया और कहा, "क्या कोई कारण है कि हमें इन लोगों को बपतिस्मा नहीं देना चाहिए?"

वे सभी सहमत थे, इसलिए नए विश्वासियों को यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया गया था।

इसकी खबर तेजी से पूरे राष्ट्र के विश्वासियों में फैल गई। यरूशलेम में अगुओं ने पतरस से पूछा, "तुम अन्यजातियों के घर में रहे और उनके साथ भोजन भी किया?"

उसने ठीक वही समझाया जो हुआ। उसने उन्हें छत पर दर्शन के बारे में बताया, कुरनेलियुस के घर पर भीड़, और पवित्र आत्मा ने लोगों को कैसे भरा, के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा, "परमेश्वर ने उन्हें वही उपहार दिया जो उसने हमें दिया था जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे थे। मैं परमेश्वर के खिलाफ कैसे लड़ सकता हूं?"

यरूशलेम में विश्वासियों के पास कोई तर्क नहीं था जब उन्होंने यह सुना। उन्होंने कहा, "परमेश्वर ने अन्यजातियों को पापों की क्षमा और अनन्त जीवन दिया है।

233 अन्ताकिया के मसीही

प्रेरितों के काम 11: 19-30

स्तिफनुस की हत्या के बाद बहुत उत्पीड़न शुरू हो गया था। इसलिए, कुछ विश्वासी अन्ताकिया नामक शहर के उत्तर की ओर चले गए। जब वे पहले वहाँ गए, तो उन्होंने केवल यहूदियों को उपदेश दिया, लेकिन अंत में उन्होंने अन्यजातियों के साथ भी मसीह का संदेश साझा किया।

परमेश्वर ने इसे सम्मानित किया और उनके शिक्षण को बहुत सामर्थ दी। कई अन्यजातियों ने यीशु में विश्वास किया।

यरूशलेम में कलीसिया ने सुना कि क्या हुआ और महसूस किया कि उन्हें जांच करने की आवश्यकता है, इसलिए उन्होंने बरनबास को भेजा। जब वह वहां गया, तो उसने देखा कि कलीसिया क्या कर रही है - और पाया कि परमेश्वर उन पर बहुत अनुग्रह कर रहा हैं!

बरनबास बहुत उत्साहित था, इसलिए उसने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया। उसने उनसे कहा कि वे हमेशा यीशु का अनुसरण करें और प्रभु ने जो सिखाया है, उसके प्रति सच्चे रहें। लोगों ने बरनबास के शिक्षण की ओर प्रतिक्रिया दी क्योंकि वे जानते थे कि वह एक अच्छा इंसान था, जो पवित्र आत्मा और विश्वास से भरा हुआ था।

इससे और भी अधिक लोग मसीह में आए - बड़ी संख्या में। बरनबास को जल्द ही लगा कि उसे मदद की ज़रूरत है। इसलिए वह तरसुस गया और शाऊल को पाया। वे दोनों अन्ताकिया लौट आए, और पूरे एक साल तक उन्होंने विश्वासियों के साथ मिलकर काम किया। उन्होंने लोगों की बड़ी भीड़ को सिखाया।

अन्ताकिया में ही चेलों को पहली बार मसीही कहा गया था।

अन्ताकिया में प्रभु ने कलीसिया को बताया कि एक महान अकाल होगा। जब यह आया, तो यह विशेष रूप से यहूदिया में बहुत बुरा था।

अन्ताकिया में मसीही अपने यरूशलेम के मसीही भाईयों के बारे में चिंतित थे।

उन्होंने कुछ पैसे इकट्ठे किए, और हर परिवार ने अपनी क्षमता के अनुसार दिया। तब उन्होंने बरनबास और शाऊल से यरूशलेम में कलीसिया के लिए उनकी भेंट ले जाने के लिए कहा।"

234 जेल से निकलना

प्रेरितों के काम 12

जिस समय राजा हेरोदेस ने मसीहियों को सताने का फैसला किया, तब बरनबास और शाऊल यरूशलेम पहुँचे ही थे। उन्होंने याकूब और यूहन्ना के भाई को गिरफ्तार करके शुरू किया। आखिरकार, हेरोदेस ने याकूब को मार डाला। जब उसने देखा कि इससे यहूदियों को कितनी खुशी हुई, तो उसने पतरस को गिरफ्तार कर लिया और उसे जेल में डाल दिया। सोलह सैनिकों ने उसकी रक्षा की। कलीसिया ने पतरस के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया, और रुकें नहीं।

जिस रात उसे फांसी दी जानी थी, उससे पहले पतरस दो पहरेदारों के बीच सो रहा था। उसके हाथ-पैर जंजीरों में थे। अन्य पहरेदार जेल में विभिन्न दरवाजों के बगल में खड़े थे।

अचानक, एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और जेल की कोठरी रोशनी से भर गई। पतरस नहीं उठा; तो स्वर्गदूत ने उसे ढ़केला। "उठ और तैयार हो जा।"

पतरस ने उठकर दूत को देखा, लेकिन उसे विश्वास नहीं हुआ कि वास्तव में ऐसा हो रहा था। उसने सोचा कि वह एक दर्शन देख रहा है। फिर भी, वह उठा, और उसकी

जंजीरें फर्श पर गिर गई।

दूत ने कहा, "मेरे पीछे आओ।" पतरस ने कई पहरेदारों की चौकियों के बीच से उसका पीछा किया जब तक कि वे लोहे के फाटक तक नहीं आए, जो शहर की ओर निकलता था। पतरस उस की ओर देख रहा था जब वह द्वार अपने आप खुल रहा था।

वे शहर की एक सड़क पर चले गए, तब अचानक दूत गायब हो गया। पतरस रात में अकेला खड़ा था, और आखिरकार उसे एहसास हुआ कि वह सपना नहीं देख रहा है।

वह वहाँ गया जहाँ विश्वासी उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे, और उसने द्वार खटखटाया। एक नौकर लड़की द्वार खोलने आई। द्वार से पतरस की आवाज़ सुनकर वह हैरान रह गई। वह वापस घर में भागी और चिल्लाई, "पतरस द्वार पर खड़ा है।"

उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया, लेकिन वह कहती रही, "मुझे पता है कि मैंने क्या सुना। पतरस द्वार पर है।

उन्होंने कहा, "यह असंभव है! "पतरस जेल में है। तूने शायद उसके दूत को सुना है।”

पतरस द्वार पर दस्तक देता रहा, इसलिए उन्होंने आखिरकार द्वार खोल दिया। जब उन्होंने उसे वहाँ खड़ा देखा तो वे चौंक गए, और वे सभी एक ही समय पर बात करने लगे। पतरस ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या हुआ था।"

उसने फिर उन्हें बताया कि कैसे प्रभु ने उसे निकालने के लिए एक दूत भेजा। उन्होंने जो कुछ किया उसके लिए सभी ने परमेश्वर की स्तुति की।

अगली सुबह, पहरेदार यह जानकर बुरी तरह घबरा गए कि पतरस गायब था! जब हेरोदेस को पता चला, तो उसने सभी सोलह आदमियों को मरवा डाला।

हेरोदेस फिर तट पर एक जगह गया और लोगों के लिए भाषण दिया। उसके हो जाने के बाद वे चिल्लाए, "यह एक ईश्वर की आवाज़ है!" हेरोदेस गर्व से भर गया। अचानक, एक स्वर्गदूत ने उसे कीड़ों से संक्रमित किया और वह मर गया।

परमेश्वर का कार्य निरंतर बढ़ता और फैलता रहा।

बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके, और यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर यरूशलेम से लौटे।

235 पहली मिशनरी यात्रा

प्रेरितों के काम 13

पवित्र आत्मा ने अन्ताकिया की कलीसिया से कहा, "मैंनें बरनबास और शाऊल को एक विशेष कार्य के लिए बुलाया है।" इसलिए नेतृत्व ने उन्हें प्रभु की सेवा के लिए भेजा।

वे यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, को अपने साथ ले गए, और कुप्रुस द्वीप को रवाना हुए। वहाँ उन्होंने यहूदियों के आराधनालय में उपदेश दिया और वे पूरे द्वीप में चलें। शाऊल को पौलुस भी कहा जाता था।

द्वीप के राजपाल को उनकी बुद्धि, और सीखने की उनकी इच्छा के लिए जाना जाता था। उन्होंने बरनबास और पौलुस को परमेश्वर के संदेश को बताने के लिए बुलाया। जब वे बात कर रहे थे, जादू टोना करने वाले एक व्यक्ति ने हस्तक्षेप किया। वह राजपाल को मसीह में विश्वास करने से रोकने की कोशिश कर रहा था।

पौलुस जादूगर की ओर मुड़ा और कहा, "तू परमेश्वर का दुश्मन है। प्रभु के खिलाफ बात करना बंद कर। देख! प्रभु तुझको अंधा बनाने वाला है।" तुरंत ही वह आदमी अंधा हो गया। दूसरों को उसे कमरे से बाहर ले जाना पड़ा।

राजपाल हैरान था, और उसने पौलुस की और भी ध्यान से बात सुनी। जल्द ही उसने अपना विश्वास मसीह में लाया।

इसके बाद, पौलुस और अन्य लोग मुख्य भूमि की ओर रवाना हुए, जहां से यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता यरूशलेम लौट आया। बाकि के लोग आराधनालय में गए क्योंकि उस दिन सब्त था। अगुएने उनसे कहा, "दोस्तों, अगर आपके पास उत्साहजनक संदेश है तो हमें बाताए।"

पौलुस ने खड़े होकर उनसे बात की। उन्होंने इस्राएल की कहानियों को याद दिलाकर शुरुआत की। फिर उसने कहा, "परमेश्वर ने राजा दाऊद के वंश से उद्धारकर्ता लाने का वादा किया था। यीशु ने उस वादे को पूरा किया। यरूशलेम के शासक इन बातों को जानते थे। फिर भी उन्होंने यीशु को सूली पर चढ़ाकर मार डाला। तब उन्होंने एक कब्र में उसे दफन कर दिया, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित कर दिया!"

"हम यहाँ तुमको यह बताना चाहते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और वह उन लोगों के पापों को

क्षमा करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। सावधान रहें कि तुम उन चीजों को प्राप्त कर सकों जो परमेश्वर तुम्हारे लिए कर रहा है।"

कुछ यहूदियों ने पौलुस की बात सुनी और परमेश्वर की दया स्वीकार की। दूसरे चाहते थे कि वह सब्त के दिन वापस आए ताकि वे इसके बारे में कुछ और बात कर सकें।

यहूदी अगले हफ्ते वापस आए और उन्होंने पाया कि लगभग पूरा शहर परमेश्वर के संदेश को सुनने के लिए वहां आया था। वे ईर्ष्या से भर गए, और पौलुस और बरनबास के खिलाफ बोलने लगे।

पौलुस ने कहा, "हमारे लिए यह सही था कि हम परमेश्वर का संदेश पहले तुम्हारे पास लाएं। लेकिन तुमने इसे स्वीकार नहीं किया। तुम अनन्त जीवन के योग्य नहीं हो। अब हम अन्यजातियों की ओर मुड़ेंगे क्योंकि वे सुनेंगे।"

यह सुनकर अन्यजातियों को खुशी हुई, और बहुतों को संदेश मिला। परमेश्वर का वचन पूरे क्षेत्र में फैल गया, जिसने यहूदियों को उग्र बना दिया। उन्होंने आखिरकार शहर के अगुओं को पौलुस और बरनबास को सतानें के लिए मना लिया।

आखिरकार, उन पुरुषों को उस क्षेत्र को छोड़ना पड़ा।

फिर भी, चेलें के शिष्य पवित्र आत्मा से भरे हुए थे, और उनके दिलों में खुशी थी।

236 आराधना से पथराव तक

प्रेरितों के काम 14

पौलुस और बरनबास इकुनियुम नामक एक शहर में गए और यहूदी आराधनालय में मसीह के संदेश का प्रचार किया। प्रतिक्रियाएँ बहुत थीं।

बड़ी संख्या में यहूदियों और अन्यजातियों ने यीशु में अपना विश्वास लाया। लेकिन अन्य लोग नाराज़ थे और अंततः मसीहियों के खिलाफ लोगों में खलबली मच गई। जल्द ही पूरा शहर विद्रोह में आ गया।

शहर के अधिकारियों ने फैसला किया कि समस्या का हल करने का एकमात्र तरीका पौलुस और बरनबास को मारना था। प्रेरितों को इस बारे में पता चला और वे भागने में सफल रहे।

वे लुस्त्रा नामक एक शहर में गए, और पौलुस ने मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया। पास में एक आदमी बैठा था जो जन्म से ही अपंग था। वह जो कुछ कहे जा रहा था, उसे ध्यान से सुन रहा था। पौलुस ने उस आदमी को देखा और महसूस किया कि परमेश्वर ने उसके हृदय में विश्वास दिया है। तो उसने उससे कहा, "खड़े हो जा!" तुरंत वह आदमी उठा और चलने लगा।

लोगों ने यह देखा और चकित रह गए। वे चिल्लाने लगे, "देवता हमसे मिलने आए हैं!"

पुरुषों की तरह दिखने वाले देवताओं को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। जल्द ही एक मूर्ति पूजक पुजारी कुछ जानवर लेकर उनके पास भागा आया। वह सब पौलुस और बरनबास के लिए बलि चढ़ाने लगे।

प्रेरित भयभीत हो गए और लोगों के बीच से भागे और कहा, "तुम क्या कर रहे हो? हम भी तुम्हारी तरह ही मनुष्य हैं। हम यहां तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आए हैं। परमेश्वर चाहता है कि तुम ऐसी मूर्खता छोड़ कर उसकी ओर मुड़ो। उसने सभी चीजों को बनाया है, और वही है जो तुम्हारी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता है।" फिर भी लोग जानवरों की बलि देना चाहते थे।

इस हंगामे के दौरान, यहूदी दूसरे शहरों से वहाँ पहुँचे जहाँ पौलुस और बरनाबस गए थे। भीड़ को गुस्सैल भीड़ बनाने में उन्हें देर नहीं लगी। उन्होंने पौलुस को मारने के लिए बड़े पत्थर उठाए। उसको चारों ओर से घेर कर, उन्होंने पत्थर तब तक फेंके जब तक कि वह नीचे नहीं गिर गया। यह तब तक

जारी रहा जब तक उन्हें लगा कि वह मर चुका है। उनके शरीर को शहर से बाहर ले जाया गया और कूड़े के ढेर पर फेंक दिया गया।

मसीही विश्वासी उसकी मृत्यु का शोक मनाने के लिए पौलुस के शरीर के चारों ओर एकत्र हुए। अचानक वह उठ खड़ा हुआ - और शहर में वापस चला गया!

अगले दिन वह और बरनबास दूसरे शहर गए, जहाँ बहुत से लोगों ने मसीह में अपना विश्वास लाया। अब, उन्होंने उन विभिन्न स्थानों का दौरा किया जहाँ वे पहले गए थे। उन्होंने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया और कलीसियाओं के लिए प्राचीनों को नियुक्त किया।

ये सभी शहर एक क्षेत्र में थे, जिसे गलातिया कहा जाता था।

अंत में जिस कलीसिया ने उन्हें बाहर भेजा था, वे वहां जाने के लिए अन्ताकिया में वापस गए। जब वे पहुंचे, तो लोग उस सब को सुनने के लिए इकट्ठा हुए थे जो उनकी यात्रा पर हुआ था। पौलुस और बरनबास ने बताया कि परमेश्वर ने क्या किया था, और उसने कैसे दरवाजे खोले ताकि अन्यजातियां मसीह में अपना विश्वास ला सकें।

237 यहूदी कानून बनाए रखना

प्रेरितों के काम 15: 1-35

यरूशलेम से यहूदी शिक्षक अन्ताकिया गए। उन्होंने कलीसिया के सदस्यों को यह सिखाना शुरू कर दिया कि एक व्यक्ति को बचाने के लिए यहूदी कानून पालन करना होगा। इस शिक्षण से पौलुस और बरनाबस चौंक गए और इसे ठीक करने की कोशिश की। इस पर विवाद शुरू हो गया।

अंत में, कलीसिया के अगुओं को लगा कि उन्हें प्रेरितों से मार्गदर्शन प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसलिए उन्होंने पौलुस और बरनबास को कई अन्य लोगों के साथ यरूशलेम भेजा।

जब वे यरूशलेम की कलीसिया में पहुँचे, तो दोनों लोगों ने उन्हें बताया कि अन्यजातियों ने यीशु मसीह के सुसमाचार को कितनी उत्सुकता से स्वीकार किया था। उनमें से फरीसी सदस्यों ने यह कहकर जवाब दिया, "यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने मसीह में अपना विश्वास लाया है। लेकिन अब उनका खतना किया जाना चाहिए और उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करना सिखाया जाना चाहिए।"

इससे बहुत वादविवाद हुआ। अंत में, कलीसिया के अगुओं ने महसूस किया कि इस मुद्दे को परमेश्वर के कार्य को समृद्ध करने के लिए हल किया जाना जरूरी है। उन्होंने एक साथ मिलने का फैसला किया, और तब तक वापस ना जाने का फैसला किया जब तक वे इस मामले के बारे में परमेश्वर की इच्छा को नहीं जान जाते हैं।

एक बार, पतरस ने समूह से बात की। उसने कहा, “मैं अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने वाला पहला व्यक्ति था। परमेश्वर ने उनके पापों को माफ कर दिया और उन्हें पवित्र आत्मा दिया। जिस तरह से उसने उनके साथ व्यवहार किया, वह उससे अलग नहीं था जो कि उसने हमारे साथ किया है। मेरा मानना है कि परमेश्वर खुश नहीं होगा अगर हम उन्हें कुछ ऐसा करने को कहते है जो हम यहूदी नहीं कर पाए हैं। मैं जो कहता हूं उसे सुनो। यह केवल प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से है कि हम हमारे पापों से बचाए गए हैं, यहूदी और अन्यजातियों दोनों।”

पौलुस और बरनबास ने तब बताया कि परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच क्या किया था। उन्होंने चमत्कार और उनके बीच किए गए आश्चर्य कार्यों का वर्णन किया।

अंत में, याकूब (यीशु का भाई) ने खड़े होकर उनसे से बात की। उसने कहा, "हमें याद रखना चाहिए कि सालों पहले शास्त्रों ने हमें इस बारे में बताया था। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर अपने नाम से अन्यजातियों को बुलाएगा। मेरी सलाह यह है। हमारे सभी नियमों को अन्यजातियों से मनवाना सही नहीं होगा। इसके बजाय, उन्हें तीन सरल आज्ञाएँ देते हैं:

- वे वह मांस न खाएं जो मूर्तियों को चढ़ाया गया हो।
- व्यभिचार न करें।
- खून या ऐसी किसी भी चीज़ का सेवन न करें जिसका गला घोंटा गया हो। "

कलीसिया इस विचार से सहमत थी। उन्होंने एक पत्र लिखा और पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया भेजा। उन्होंने कुछ आदमियों को भी भेजा ताकि कोई शक न हो कि चिट्ठी उन्हीं की थी। उन में से एक सीलास था।

जब वे अन्ताकिया पहुँचे, तो उन्होंने कलीसिया के अगुओं को पत्र दिया, जिन्होंने इसे मण्डली के सामने पढ़ा। कलिसिया ने खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। जब मसीह में उनकी स्वतंत्रता के बारे में सुना गया तो हर कोई प्रोत्साहित हुआ।

238 सेवा करने की स्वतंत्रता - गलातियों

गलातियों 1 - 6

यरूशलेम के शिक्षक अन्ताकिया की कलीसिया में गए और सिखाया कि अन्यजातियों को अपने पापों से पूरी तरह से क्षमा पाने के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना होगा। अन्ताकिया में मसीहियों द्वारा इस सिद्धांत को खारिज करने के बाद, वही शिक्षक गलातिया गए - उन कलीसियाओं में जो पौलुस और बरनाबस ने अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान शुरू कीं थीं।

पौलुस को पता चला कि गलातिया में मसीही इस शिक्षा को स्वीकार कर रहे थे, इसलिए उसने उन्हें एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने मसीह में उनकी स्वतंत्रता के बारे में समझाया। उसने कहा:

मैं हैरान हूं कि तुम परमेश्वर के अनुग्रह से दूर हो गए। इन झूठे शिक्षकों ने तुमको बताया कि तुमको बचाने के लिए यहूदी कानून को पूरी तरह से मानना होगा - और तुमने उन पर विश्वास किया! तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो कि तुम इस "अन्य सुसमाचार" को स्वीकार करो?

मैंने तुमको मसीह का शुद्ध सुसमाचार दिया। तो भले ही स्वर्ग से कोई दूत आए और तुमको कुछ अलग बताए - वह दूत शापित है! हां, तुमने मुझे ठीक सुना। यह पूरी तरह से स्पष्ट होना चाहिए। जो भी इस गलत शिक्षा का प्रचार करता है, वह शापित है।

मेरा विश्वास करो, मैं समझता हूँ कि वे क्या सिखा रहे हैं। मुझे यहूदी परंपरा से प्यार था - इतना कि मैंने परमेश्वर की कलीसियाओं को नष्ट करने की कोशिश की। लेकिन मसीह ने मुझे बचाया और मुझे अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए बुलाया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मुझे तीन साल तक अरब में रहने के दौरान निर्देश दिए।

अब सुनो। वही झूठे शिक्षक अन्ताकिया आए और हमारे विश्वासियों को गुलाम बनाने की कोशिश की। मैंने इसे एक पल के लिए भी बर्दाश्त नहीं किया - बिल्कुल नहीं! कलीसिया ने आखिरकार इस मुद्दे को प्रेरितों तक पहुंचाने से पहले बरनबास और मुझे यरूशलेम भेजा। उन्होंने देखा कि परमेश्वर ने मुझे अन्यजातियों के पास बुलाया, उसी तरह जिस तरह पतरस को यहूदियों के लिए बुलाया गया था।

लेकिन बाद में, मुझे इस मुद्दे पर पतरस का सामना करना पड़ा। वह अन्ताकिया में आया और अन्यजातियों के साथ स्वतंत्र रूप से खाया। लेकिन तब कुछ यहूदी यरूशलेम से आए थे। वह तुरंत ही अपने अन्यजाति भाइयों से अलग हो गया। अन्य यहूदी इसमें शामिल हुए। यहाँ तक कि बरनबास को भी इस पाखंड में खींच लिया गया। मैंने पतरस को सबके सामने बताया कि यह सही नहीं था!

यहाँ वह सिद्धांत है जिसे वह अनदेखा कर रहा था: मसीह में, कोई यहूदी या अन्यजाति नहीं हैं। कोई गुलाम या स्वतंत्र नहीं हैं, कोई पुरुष या महिला नहीं है। जब हम क्रूस पर चढ़ाए गए तो हम सभी मसीह के साथ थे। हम उसके साथ मरे हुओं में से जी उठे, इसलिए अब मसीह हमारे बीच रहता है। मसीह की मृत्यु से उद्धार आता है, और इसका व्यवस्था को मानने से कोई लेना-देना नहीं है।

क्या तुम इस बात को समझ सकते हो? तुम इतनी आसानी से कैसे धोखा खा सकते हो? क्या तुमने परमेश्वर का आत्मा प्राप्त किया क्योंकि तुमने व्यवस्था का पालन किया? क्या परमेश्वर ने तुम्हारे बीच चमत्कार किए क्योंकि तुम इतने अच्छे थे? बिलकुल नहीं! यह मसीह में तुम्हारे विश्वास के कारण था। इतने मूर्खतापूर्ण मत बनो कि तुमको लगता हो कि व्यवस्था को ध्यान में रखकर तुम एक छोटी बात जोड़ सकते हों, कि परमेश्वर ने क्या किया है!

परमेश्वर ने अब्राहम को धार्मिकता इसलिए नहीं दी क्योंकि उसने व्यवस्था को माना। वह व्यवस्था के लिखे जाने के 430 साल पहले पैदा हुआ था। वह परमेश्वर में विश्वास रखने के कारण धर्मी था। व्यवस्था बाद में यह दिखाने के लिए दी गई कि लोग पापी हैं, और वह निन्दित है। यह मसीह को स्वीकार करने को हमारी आवश्यकता को प्रकट करता है।

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "सभी राष्ट्र तेरे द्वारा धन्य होंगे।" इसके बारे में सोचो। अब्राहम को दिए गए वचन अब मसीह के कारण तुमको दिए गए हैं। क्या तुम उस पर अपनी पीठ फेरने जा रहे हों?

ये झूठे शिक्षक इन आशीषों को छीनना चाहते हैं, और मसीह में तुमको मिली स्वतंत्रता को छीन लेना चाहते हैं। उन्हें ऐसा करने मत दों!

यह स्वतंत्रता तुमको दूसरों की सेवा करने की क्षमता प्रदान करती है। व्यवस्था के बारे में चिंता करने के बजाय, परमेश्वर के आत्मा के नेतृत्व में ध्यान केंद्रित करो। वह तुमको व्यभिचार, झूठे देवताओं के पीछे जाने, आत्ममुग्ध होने, दूसरों का लाभ उठाने और अपनी अच्छी इंद्रियों का नियंत्रण खोने जैसी चीजों से दूर रखेगा।

परमेश्वर का आत्मा तुमको प्यार, खुशी, शांति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वास, सज्जनता और आत्म-नियंत्रण का उपहार देता है। व्यवस्था ऐसा नहीं कर सकती। परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे विचारों और इच्छाओं को नियंत्रित करता है। वह तुम्हें सामर्थ देता है की

• उन लोगों को कोमलता से बहाल कर पाए जिन्होंने गलत किया है

• दूसरों की मदद के लिए तैयार हो सको जब उन्हें तुम्हारी आवश्यकता हो

• परमेश्वर के लिए महान चीजों को पूरा करने के लिए भी

• उन लोगों को देने के लिए, जो तुम में अपना जीवन निवेश करते हैं।

अपने आपको व्यवस्था के अधीन मत करो। इसके बजाय, परमेश्वर के आत्मा को अपने जीवन को नियंत्रित करने की अनुमति दो। सुनो, तुम परमेश्वर को बेवकूफ नहीं बना सकते। तुम जो भी करते हो उसका परिणाम प्राप्त करोगे।

विनाश उन लोगों का इंतजार करता है जो शारीरिक इच्छाओं से नियंत्रित होते हैं। जीवन उन्हें दिया जाता है जो दूसरों की मदद करने के लिए परमेश्वर के आत्मा का उपयोग करते हैं।

परमेश्वर मेरे दिल को जानता है, और वह जानता है कि मैं तुम्हें इसलिए नहीं लिख रहा हूं कि मैं दूसरों के सामने डींग मार सकूं। वही जो झूठे शिक्षक कर रहे हैं। नहीं, मैं यीशु मसीह के क्रूस को छोड़कर किसी भी चीज़ के बारे में अपनी बड़ाई नहीं करता। मुझे उसके साथ सूली पर चढ़ाया गया था, इसलिए यह दुनिया मेरे लिए मर चुकी है। मैं इस मृत्यु के निशान को अपने शरीर पर लिए फिरता हूं।

जो मैं कहता हूं, उस पर ध्यान दो और यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

239 जेल में आराधना

प्रेरितों के काम 15:36 - 16:40

पौलुस ने बरनबास से कहा, "यह समय है की हम गलातिया जाए और देखते हैं कि कलीसिया कैसी हैं।" बरनबास सहमत हो गया, लेकिन वो यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है, को साथ ले जाना चाहते था। पौलुस ने इनकार कर दिया, यह बताते हुए कि मरकुस ने उन्हें पछली यात्रा पर छोड़ दिया। वे इस पर सहमत नहीं हो पाए, इसलिए उन्होंने अलग-अलग दिशाओं में जाने का फैसला किया।

पौलुस ने सीलास को अपने साथ ले जाने के लिए चुना। जब वे गलातिया जा रहे थे, तो उन्हें तीमुथियुस नाम का एक युवक मिला। सभी विश्वासी उसका बहुत सम्मान करते थे, इसलिए पौलुस ने उसे अपनी सेवकाई में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक रात, पौलुस ने सपना देखा कि एक आदमी उससे कह रहा था "आ, समुद्र पार कर और हमारी मदद कर।"

पौलुस जागा और जान लिया कि यह परमेश्वर की ओर से है। एक बार जब वे समुद्र के पार गए, तो वे फिलिप्पी नामक एक शहर में गए। उन्होंने उन महिलाओं के एक समूह से बात की जो प्रार्थना के लिए नदी पर गई थीं।

उनमें से एक लुदिया थी, जो महंगा बैंगनी कपड़ा बेचती थी। उसने पौलुस के उपदेश को सुना, और फिर उसने और उसके परिवार ने मसीह पर भरोसा किया। बपतिस्मा लेने के बाद, उसने पौलुस को अपने घर को सेवकाई के आधार के रूप में उपयोग करने के लिए मना लिया।

उसी शहर में, एक लड़की रहती थी जिसके अंदर दुष्टआत्माएं थी, जो भविष्य की भविष्यवाणी करके अपने मालिकों के लिए पैसे कमाती थी। उसने फिलिप्पी की सड़कों में पौलुस और सीलास का अनुसरण करना शुरू कर दिया। अचानक वह चिल्ला उठी, "ये लोग यहाँ हमें उद्धार के बारे में बताने के लिए हैं।"

उसने कई दिनों तक ऐसा किया। अंत में पौलुस मुड़ा और उसके अंदर की आत्मा से कहा, "उस लड़की को छोड़ दे! यीशु मसीह के नाम से, उसमें से बाहर आ।" तुरंत ही आत्मा ने उसे छोड़ दिया।

उसका मालिक क्रोधित हो गया! वे जानते था कि वह लड़की अब उनके लिए लाभदायक नहीं रही।

इसलिए उन्होंने एक भीड़ इकट्ठा की जो पौलुस और सीलास को शहर के अधिकारियों के पास ले गई। उन्होंने कहा, "ये यहूदी फिलिप्पी आए और रोम के नागरिकों को अपने परनेश्वर के बारे में बता रहे है। यह सही नहीं है!"

शहर के अधिकारी सहमत थे और दोनों व्यक्तियों को सार्वजनिक रूप से पीटा गया। फिर उन्हें जेल मे डाल दिया गया, जहां उन्हें जंजीरों से बांध दिया गया।

आधी रात के बाद, पौलुस और सीलास न प्रार्थना करना, गाने गाना और परमेश्वर की स्तुति करना शुरू कर दिया।

अचानक एक भूकंप आया जिसने जेल की नींव हिला दी। दरवाजे खुल गए और जंजीरें गिर गईं।

दारोगा उठा और देखा कि दरवाजे खुले थे। उसे लगा कि कैदी भाग गए है, इसलिए उसने खुद को मारने के लिए अपनी तलवार निकाली। पौलुस चिल्लाया, "रुक! ऐसा मत कर! हम सब यहाँ ही हैं।

दारोगा ने एक मशाल ली और जेल की कोठरी में भाग गया। वह गिरा और कहा, "साहब, मुझे बचने के लिए क्या करना चाहिए?"

उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, और तू बच जाएगा - तू और तेरा परिवार भी।" दारोगा उन्हें अपने घर ले गया और पौलुस ने मसीह के संदेश को समझाया। पूरे परिवार ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। दारोगा ने तब पुरुषों के घावों को धोया और उन्हें खाना परोसा।

अगली सुबह शहर के अधिकारियों ने पहरेदार को दारोगा के पास भेजा। उन्होंने कहा, "तू उन लोगों को रिहा कर सकता हैं और उन्हें अपने रास्ते जाने दे।"

पौलुस ने शहर के अधिकारियों को एक संदेश वापस भेजा।

"हम नहीं जाएगें! हम रोमी नागरिक हैं, और तुमने हमें बिना किसी मुकदमे के सार्वजनिक रूप से पीटा और जेल में डाल दिया। अब तुम चाहते हो कि हम चुपचाप निकल जाएं। हम नहीं जाएंगे। यदि तुम हमें छोड़ना चाहते हो, तो तुमको आना होगा और हमें व्यक्तिगत रूप से रिहा करना होगा।"

यह सुनकर शहर के अधिकारी हैरान रह गए कि ये लोग रोमी नागरिक थे। वे जेल पहुंचे और जल्दी से माफी मांगी। वे व्यक्तिगत रूप से उन्हें जेल से बाहर लाए और उन्हें शहर छोड़ने के लिए कहा।

पौलुस और सीलास तुरंत नहीं गए। वे लुदिया के घर वापस गए और मसीह में विश्वासियों को प्रोत्साहित किया। फिर वे चले गए।

240 दंगे और हँसी

प्रेरितों के काम 17

पौलुस और सीलास और उनके समूह ने थिस्सलुनीके की यात्रा की। उन्होंने यहूदियों के साथ तर्क करते हुए तीन सप्ताह बिताए, जिसमें बताया गया था कि कैसे मसीहा को आने और पीड़ित होने और फिर मृतकों से जी उठने की आवश्यकता थी।

उन्होंने कहा, "यीशु ही वादा किया हुआ है।" कुछ यहूदियों ने मसीह को स्वीकार किया, साथ ही साथ यूनानियों की एक बड़ी संख्या ने भी। इससे दूसरे यहूदी परेशान हो गए। वे इतने नाराज़ हो गए कि उन्होंने आंदोलन को नष्ट करने का फैसला किया। वे बाज़ार में गए और बदमाशों के एक समूह को एकत्र किया। साथ में उन्होंने मसीहियों के खिलाफ एक भीड़ का आयोजन किया।

जल्द ही पूरे शहर में कोलाहल हो गया! वे पौलुस को नहीं ढूंढ सके, इसलिए उन्होंने कई अन्य विश्वासियों को लिया और उन्हें सड़क पर खींच लाए।

वे उन्हें शहर के अधिकारियों के पास ले गए और कहा; "पुरुषों का एक समूह पूरी दुनिया में परेशानी पैदा कर रहा है। वे कैसर के प्रति वफादार नहीं हैं, लेकिन वे कहते हैं कि उनके पास एक और राजा, यीशु नाम का एक आदमी है। अब ये उपद्रवी हमारे शहर में आ गए हैं, और इन लोगों ने उनका अपने घरों में स्वागत किया है। "

अधिकारी सतर्क हो गए थे और उन्होंने कहा कि वे इस मामले को देखेंगे। उन्होंने विश्वासियों को रिहा करने से पहले जमानत की एक बड़ी राशि भुगतान करवाई। उस रात, मसीहियों ने पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया।

बिरीया के यहूदियों ने मसीह के संदेश का स्वागत किया और यह जानने के लिए कि क्या यह सच है, शास्त्रों में खोज की। इसलिए, कई यहूदियों और यूनानियों ने मसीह को स्वीकार किया। इस की खबर थिस्सलुनीके के लोगों तक वापस पहुंची। इसलिए वहां के यहूदी आंदोलन के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने के लिए बिरीया आ गए। हमले इतने गंभीर हो गए कि मसीहियों ने नाव से पौलुस को एथेंस भेज दिया। योजना यह थी सीलास और तीमुथियुस बिरीया में रहेगें और बाद में उसके पास जाएगें।

पौलुस एथेंस पहुंचा और अपने साथियों का उसके पास आने का इंतजार करने लगा। जब वह शहर से चला, तो वह सभी मूर्तियों को देखकर चौंक गया।

अंत में, वह बाज़ार में गया और लोगों को यीशु के बारे में बताया। वे इस बात से मोहित हो गए कि एक आदमी मृतकों से जी उठा था। इसलिए वे पौलुस को अरियुपगुस नामक स्थान पर ले गए और उसने भीड़ से बात करने दिया।

उसने कहा, "एथेंस के लोगों! मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। यहां तक कि मुझे एक मूर्ति भी मिली जिस पर लिखा था, कि अनजाने ईश्वर के लिये।' मैं तुम्हें उस परमेश्वर के बारे में बताता हूं जिसे तुम नहीं जानते।

"वह स्वर्ग का स्वामी है और उसने पृथ्वी पर सब कुछ बनाया है। वह लोगों द्वारा बनाई गई चीजों में नहीं रहता है। शुरुआत में परमेश्वर ने एक आदमी बनाया, और पृथ्वी के सभी राष्ट्र उसी से आए हैं। तुम्हारे पास जो कुछ है वह परमेश्वर से है। वह तुम्हारे जीने का कारण है।

"परमेश्वर ने अतीत में तुम्हारे साथ धैर्य रखा हैं, लेकिन अब तुमको पश्चाताप करना है। वह तुम्हारा यीशु के द्वारा न्याय करेगा, जो मरे हुओं में से जी उठा है।"

कुछ लोग हँसे, जब उन्होंने सुना कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है। अन्य लोग और समय सुनना चाहते थे। कुछ लोगों ने विश्वास किया और अपना विश्वास मसीह में लाया। फिर पौलुस एथेंस से चला गया और सीलास और तीमुथियुस की प्रतीक्षा करने के लिए कुरिन्थुस चला गया।

241 परीक्षा और सताव - 1थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों 1 - 5

पौलुस ने थिस्सलुनिके में एक कलीसिया शुरू की, लेकिन वहां ज्यादा समय नहीं दे पाया। सताव गंभीर हो गया और मसीहियों ने उसे क्षेत्र से बाहर ले जाने पर जोर दिया। इसलिए उसने इन युवा मसीहियों की मदद करने के लिए सीलास और तीमुथियुस को छोड़ दिया। वह कुरिन्थुस उनका इंतजार करने लगा।

वह इस युवा कलीसिया के लिए चिंतित था क्योंकि उस उत्पीड़न के कारण जो वे अनुभव कर रहे थे। अंत में, सीलास और तीमुथियुस ने इस बात की अद्भुत खबरें दीं कि कैसे लोग मसीह के लिए सच्चे थे, सभी दुखों के बावजूद। पौलुस ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए तुरंत यह पत्र लिखा। उसने कहा:

सीलास, तीमुथियुस, और मैं लगातार तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते है। हम तुम्हारे लिए रात-दिन प्रार्थना करते हैं। हमें याद है कि संघर्ष के तूफान में तुमने मसीह को कैसे स्वीकार किया था। हमने प्रशंसापूर्ण शब्दों के साथ प्रचार नहीं किया, लेकिन तुम जानते थे कि हमने जो कहा वह पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त था। तुमने हमारी योग्यता साबित की और हमारे संदेश को स्वीकार किया। अब हर कोई इस बारे में बात करता है कि तुमने जीवित परमेश्वर की सेवा करने के लिए मूर्तियों को कैसे छोड़ दिया, और तुम किस प्रकार धैर्यपूर्वक मसीह की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हों।

तुमने अनुग्रहपूर्वक हमें वैसे ही स्वीकार किया, जैसे तुमने सुसमाचार को स्वीकार किया। हमने तुम्हारा ध्यान रखा, जैसे एक दूध पिलाने वाली माँ अपने बच्चे की देखभाल करती है। हमने नौकरियां कीं, ताकि हम अपने लिए खुद का खर्च वहन कर सकें, और इससे तुमको आसानी हो। तुम्हारे लिए हमारा प्यार एक समर्पित पिता की तरह था, जिससे तुमको यह सीखने में मदद मिलेगी कि परमेश्वर के साथ कैसे चलना है।

अब सुसमाचार तुम्हारे अंदर काम कर रहा है। लोग तुमसे नफ़रत करते हैं क्योंकि वे सुसमाचार से नफ़रत करते हैं। मैं परीक्षा के इस समय के दौरान वहां रहना चाहता था, लेकिन शैतान मेरे रास्ते में खड़ा था। मैं जो कहता हूं उसे सुनो - तुम मेरी आशा हो; तुम मेरी खुशी हो; तुम परमेश्वर के सामने मेरे घमंड का ताज हो!

जब मुझे महसूस हुआ कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, तो मैंने तीमुथियुस को छोड़ दिया और यहाँ आ गया। मैंने उससे कहा कि इस सताव का सामना करने में वह तुम्हारी मदद करे। लंबे समय से मुझे यह खबर नहीं मिली कि तुम कैसे हो। अंत में, मैं इसे अब और बर्दाश्त नहीं कर सका। मैंने तीमुथियुस को संदेश भेजा और तुम्हारे बारे में पूछा।

वह व्यक्तिगत रूप से आया और मुझे मसीह में तुम्हारे विश्वास और प्रेम की खुशखबरी सुनाई। उसने मुझसे कहा कि तुम मुझे उतना ही देखना चाहते हो जितना मैं तुम्हें देखना चाहता हूं। परमेश्वर की स्तुति हो! तुम अपने विश्वास में दृढ़ हों। ओह, मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं और तुम्हें प्रभु के साथ चलना सिखाता हूं।

अब सुनो। परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीते रहो। व्यभिचार से दूर रहो। उन लोगों की तरह मत बनो जो अनियंत्रित जुनून के सेवक हैं।

यह एक ऐसी जीवन शैली है जो सभी को प्रभावित करती है। यह परमेश्वर के आत्मा को भी प्रभावित करती है जो तुम्हारे अंदर रहता है। मत भूलो, परमेश्वर गंभीर रूप से ऐसे लोगों के साथ न्याय करते हैं जो इस तरह की गंदगी के साथ रहते हैं।

इसके बजाय, अपने प्यार को ईश्वरीय होने दो। लेकिन मैं तुमको यह क्यों बता रहा हूं? परमेश्वर ने तुमको सिखाया है कि एक दूसरे से प्यार कैसे करें। मैं सिर्फ यह कहता हूं कि तुम इसे और भी अधिक करो।

तीमुथियुस ने मुझे बताया कि तुम उन लोगों के बारे में चिंतित हो जो हाल ही में मारे गए हैं। उनकी चिंता मत करो। याद रखो, यीशु भी मर गया, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जी उठाया! वह उन लोगों के साथ भी ऐसा ही करेगा जिन्होंने उन पर भरोसा किया है।

जब यीशु धरती पर वापस आएगा, तो वह सबसे पहले उन लोगों को जी उठाएगा जिनकी मृत्यु हो चुकी है। फिर हममें से बाकी लोग उससे आकाश में मिलेंगे। उन लोगों की तरह निराश न हों, जिनके पास हमारी सी आशा नहीं है। इसके बजाय, इन शब्दों से एक दूसरे को आराम दो।

निश्चित रूप से हमारे पास इसकी कोई सारणी नहीं है कि यह कब होने वाला है। फिर भी, हमें खुद को तैयार करना होगा जैसे यह आज ही होने वाला हो।

जब ऐसा होता है, तो जो लोग पाप में होते हैं, वे पकड़े जाएंगे। वे ऐसे लोग हैं जो रात में अपने दरवाजे बंद कर लेते हैं और सोचते हैं कि वे सुरक्षित हैं। अचानक एक चोर उनके घर में घुस जाता है!

हमारे प्रभु यीशु का आना एक महिला के प्रसव पीड़ा के समान होगा जो जन्म देने वाली है। लोग अचानक खुद को परमेश्वर के सामने खड़ा पाएंगे और न्याय किया जाएगा। लेकिन यीशु मसीह मर गया ताकि हम उसके साथ हमेशा रह सकें। इस सत्य के साथ एक दूसरे को प्रोत्साहित करो।

प्रभु के आने तक कलीसिया की तरह इस प्रकार कार्य करें:

• उन लोगों का सम्मान करो जो तुम्हारी आत्मिक ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

• एक दूसरे के साथ मिला करो।

• आलस्य को प्रोत्साहित न करो।

• जो हतोत्साहित हैं उनके साथ धैर्य रखो।

• कमजोरों की मदद करो।

• जब लोग तुम्हारे साथ गलत करते हैं तो बदला न लो।

• हमेशा वही करो जो अच्छा हो।

यहाँ आध्यात्मिक जीवन जीने के तीन भाग दिए गए हैं:

• सबसे पहले, खुशी मनाओ, प्रार्थना करो और धन्यवाद दो। यह तुम्हारे लिए परमेश्वर की इच्छा है।

• अगला, परमेश्वर की आत्मा को सुनो जब वह दूसरों के माध्यम से तुमसे बात करता है, लेकिन यह सुनिश्चित करो कि यह परमेश्वर से ही है।

• और अंत में, जो अच्छा है उसे पकड़ें और बुराई से दूर रहो।

मेरे प्यारे दोस्तों, हम एक परिवार हैं, इसलिए मेरे लिए प्रार्थना करो और अपनी संगति को मधुर रखो। कलीसिया में सभी के साथ इस पत्र को साझा करो। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ हो।

थिस्सलुनिके के लोगों ने पौलुस के पहले पत्र को बहुत पसंद किया और इसे बार-बार पढ़ा। उन्होंने प्रभु के दिन के बारे में इतनी बात की कि जल्द ही उन्हें लगा कि यह पहले ही शुरू हो चुका है। कुछ इस बारे में चिंतित थे कि इसका क्या मतलब है, जबकि बाकि लोगों ने अपनी नौकरी छोड़ दी क्योंकि उन्हें लगा कि प्रभु अपना राज्य स्थापित कर रहे हैं। जल्द ही, जिन लोगों ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी, उनकी उन लोगों को सहायता करनी पड़ी जिनके पास अभी नौकरी थी। यह संदेश पौलुस को मिला, इसलिए उसने यह दूसरा पत्र लिखा। उसने कहा:

सीलास, तीमुथियुस, और मैं लगातार तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं क्योंकि तुम अपने विश्वास में बढ़ रहे हों और एक दूसरे के प्रति तुम्हारे महान प्रेम के लिए। हम तुम सभी कलीसियाओं के बारे में बात करते हैं।

हम तुम्हारे विश्वास और गंभीर सताव के सामने तुम्हारे असाधारण धैर्य के बारे में ऊँची बातें करते हैं।

परमेश्वर ने तुमको उसके लिए पीड़ित होने के लिए चुनकर तुमको सम्मानित किया है। फिर भी, वह दिन आएगा जब परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेगा जो तुमको इतना दर्द दे रहे हैं। वह तुमको आराम देगा, और वे हमेशा के लिए पीड़ित होंगे। मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ फिर से आएगा, और आग की लपटों के साथ वह उन लोगों से बदला लेगा जो यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति और उनकी महिमा से हमेशा के लिए दंडित और हटा दिया जाएगा।

हम निरंतर प्रार्थना करते हैं कि तुम परमेश्वर की इस बुलाहट के योग्य रहो - ताकि वह तुम्हारे विश्वास के माध्यम से दुनिया को अपनी अच्छाई और शक्ति दिखाता रहे। तब हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम में महिमानवित किया जाएगा।

अब मुझे तुमसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने के बारे में बात करनी है। मैं समझता हूं कि तुम चिंतित हो - यह सोचकर कि प्रभु का दिन शुरू हो चुका है। मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए। यह सच नहीं है, और कोई भी तुमको कुछ अलग ना बताए।

उस दिन शुरू होने से पहले, इन चीजों को पहले होना चाहिए। एक दुष्ट आदमी सत्ता में उठेगा, और वह दुनिया को स्वर्ग के परमेश्वर के विरुद्ध संगठित करेगा। ओह, उसकी सेनाएं पहले से ही दुनिया में

242 प्रभु का दिन - 2 थिस्सलुनीकियों

2 थिस्सलुनीकियों 1 - 3

काम कर रही हैं, लेकिन पवित्र आत्मा उसे रोके हुए हैं।

वह दिन आएगा जब आत्मा पीछे हट जाएगा, और इस आदमी को हर उस चीज़ का विरोध करने देगा जो पवित्र है। वह परमेश्वर के मंदिर में बैठेगा और दावा करेगा कि वह परमेश्वर है। वह सभी प्रकार के चमत्कारों को करेगा और लोगों को कई बुरे कामों से प्रभावित करेगा। वह उन लोगों को धोखा देगा जो सच्चाई पर विश्वास करने से इनकार करते हैं। परमेश्वर सुनिश्चित करेंगे कि वे उस पर विश्वास करें।

उसके बाद, मसीह आ जाएगा और उसे बिना किसी प्रयास के नष्ट कर देगा। याद रखना जब मैं तुम्हारे साथ था तो तुमको यह सब बताया था। लेकिन यह भी याद रखना कि परमेश्वर तुमसे प्यार करता है! उसने तुमको किसी विशेष रूप में अलग किया है,

क्योंकि तुम उसी के हो; और उसने तुम्हें अपनी आत्मा के द्वारा उद्धार दिया है। हम आभारी हैं कि उसने हमें तुमको सुसमाचार प्रस्तुत करने का काम दिया। तुमको जो सिखाया गया है, उसमें दृढ़ रहों।

तो उसके आने का इंतज़ार करते हुए तुमको क्या करना चाहिए? सबसे पहले हमारे लिए दुआ करो। प्रार्थना करो कि हम इस सुसमाचार को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकें। प्रार्थना करो कि हम दुष्ट लोगों के डरें बिना काम कर पाएं। लेकिन निश्चित रूप से, परमेश्वर ने हमेशा हमें परीक्षा के दौरान सामर्थ प्रदान की है, जैसे कि उसने तुम्हारे लिए किया है।

दूसरी बात जो तुमको करनी चाहिए वह यह है कि, ऐसे भाई से दूर रहें जो काम करने से मना करता है। याद रखें कि जब हम तुम्हारे साथ थे तब हमने कितनी मेहनत की थी? हमने अन्य लोगों का भोजन नहीं खाया था।

नहीं, हमने काम किया - और हमने कड़ी मेहनत की - रात और दिन की। हममें से कोई भी तुम पर वित्तीय बोझ नहीं था।

निश्चित रूप से यह ठीक होता अगर हमने तुमसे सहायता स्वीकार की होती। लेकिन हमने ऐसा नहीं किया क्योंकि हम परिश्रम और मेहनत को एक उदाहरण बनना चाहते थे।

हमने तुमको जो नियम सिखाया है, "यदि कोई व्यक्ति काम नहीं करता है, तो उसे खाना नहीं चाहिए!" हमने सुना है कि तुम्हारे बीच ऐसे लोग हैं जो न केवल काम करने से इनकार करते हैं, बल्कि दूसरों के काम में भी हस्तक्षेप करते हैं। अब मेरी बात सुनो, और यह प्रभु की ओर से है। चुपचाप अपना काम करो, अपना खाना खाओ और अच्छा करने से मत थको।

जो भी इस नियम का पालन नहीं करेगा, उससे बचो। खैर, मैं शांति के परमेश्वर से तुम्हारे करीब रहने और तुमको अपनी शांति देने के लिए प्रार्थना करूँगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब के साथ हो।

जब पौलुस कुरिन्थुस पहुंचा, तो वह वहां अक्विला नाम के एक यहूदी व्यक्ति और उसकी पत्नी प्रिस्किल्ला से मिला। वे तम्बू बनाते थे, पौलुस के समान, इसलिए उन्होंने एक साथ काम करने का फैसला किया। हर हफ्ते पौलुस आराधनालय गया और यहूदियों से बात की। उसने उन्हें समझाया कि यीशु ही मसीहा है।

सीलास और तीमुथियुस आखिरकार उसे फिर से मिलें। उनके पहुंचने के तुरंत बाद ही यहूदियों ने पौलुस के संदेश को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने मसीह के नाम को भी गलत ठहराया। इसी के साथ, पौलुस ने कहा, "मेरा विवेक स्पष्ट है। मैंने तुमको खुशखबरी सुनाई कि मसीहा आया था। मैंने समझाया कि कैसे हमने उसके माध्यम से उद्धार प्राप्त किया है। तुमने' इसे अस्वीकार कर दिया है इसलिए, तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पर है। मैं अन्यजातियों को यह संदेश दूंगा। "

कुछ यहूदियों ने मसीह पर विश्वास किया, जिसमें आराधनालय का प्रमुख भी शामिल था। उसी समय, बड़ी संख्या में अन्यजातियों ने यीशु पर अपना विश्वास लाया।

प्रभु ने सपने में पौलुस को प्रोत्साहित किया। उसने कहा, "डर मत। मेरे बारे में बात करते रह। यहां कोई भी तुझको चोट नहीं पहुंचाएगा क्योंकि मेरे पास इस शहर में कई लोग हैं।" पौलुस डेढ़ साल तक कुरिन्थुस में रहा, परमेश्वर के वचन को सिखाता और प्रचार करता रहा।

एक दिन, यहूदियों ने एक नए नेता का चयन किया, जिसने पौलुस के खिलाफ एक हमले का आयोजन किया। भीड़ ने उसे पकड़ लिया और उसे यह कहते हुए न्यायाधीश के पास ले गई, "यह आदमी हमारे लोगों से उन तरीकों से परमेश्वर की आराधना करवा रहा है जो हमारे कानून के विपरीत हैं।"

इससे पहले कि पौलुस खुद का बचाव कर सके, न्यायाधीश यहूदियों पर चिल्लाया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस बात को मेरे पास लाने की। मुझे तुम्हारे कानून की परवाह नहीं है! मैं अपना दिन अपराधियों को दंडित करने में बिताता हूं, शब्दों और नामों पर बहस नहीं करता हूँ। मेरा समय बर्बाद मत करो!

फिर उसने उन्हें अदालत से बाहर निकाल दिया। एक भीड़ ने आराधनालय के नेता को पकड़ा और उसे सबके सामने पीटा। न्यायाधीश ने यह भी नहीं देखा।

243 कुरिन्थुस में भीड़
प्रेरितों के काम 18

जब पौलुस ने सोचा कि कुरिन्थस में उसका काम पूरा हो गया है, तो उसने अन्ताकिया वापस जाने का फैसला किया।

अक्विला और प्रिस्किल्ला उसके साथ इफिसुस गए। पौलुस ने वहाँ आराधनालय पर उपदेश दिया, और लोगों ने उसे लंबे समय तक रहने और उन्हें सिखाने के लिए कहा था। लेकिन उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि, "यदि परमेश्वर की इच्छा है, तो मैं वापस आऊंगा। वह तब यरूशलेम गया और अन्ताकिया गया।

पौलुस के इफिसुस जाने के बाद, अपुल्लोस नाम का एक व्यक्ति आराधनालय में आया। वह एक शक्तिशाली वक्ता था और यीशु के बारे में खुलकर बात करता था। दुर्भाग्य से, वह केवल वही जानता था जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने सिखाया था।

अक्विला और प्रिस्किल्ला उसे अपने घर में ले गए और परमेश्वर की बातों को अधिक सटीक रूप से समझाया। उसके बाद, अपुल्लोस परमेश्वर के लिए एक महान उपदेशक बन गया और पवित्रशास्त्र के बारे में बोलने में सक्षम था और स्पष्ट रूप से दिखाता था कि यीशु ही मसीहा है।

पौलुस अन्ताकिया से इफिसुस गया। जब वह वहां गया, तो उसने बारह विश्वासियों को पाया। उसने उनसे पूछा, "क्या तुमने अभी तक पवित्र आत्मा प्राप्त किया है?"

उन्हें यकीन नहीं था और उन्होंने जवाब दिया, "हमने इस पवित्र आत्मा के बारे में नहीं सुना।"

पौलुस ने कहा, "तुमने बपतिस्मा कहाँ लिया था?" उन्होंने कहा, "हमने यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया था।"

"आह, यूहन्ना यीशु के लिए रास्ता तैयार करने आया था। उसने उन लोगों को बपतिस्मा दिया जो पश्चाताप करने और मसीहा की तलाश में थे। लेकिन अब यीशु आ गया है।"

यह सुनते ही, उन्होंने यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया। बाद में उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया और विभिन्न भाषाओं में परमेश्वर की आराधना करने लगें।

पौलुस कई सालों तक इफिसुस में रहा। सबसे पहले वह आराधनालय में गया और उसने मसीह का प्रचार किया, लेकिन आखिरकार, विश्वासियों को एक अलग मिलने का स्थान ढूंढना पड़ा।

परमेश्वर ने पौलुस के माध्यम से अद्भुत काम किया। उस पूरे क्षेत्र के लोगों ने परमेश्वर के वचन को सुना। बीमार ठीक हो गए और दुष्टआत्माओं को बाहर निकाला गया। लोगों ने पौलुस के कपड़े के टुकड़ों को छुआ और उन्हें बीमार लोगों के पास ले गए, और वे ठीक हो गए।

कुछ युवकों ने देखा कि पौलुस ने एक दुष्ट आत्मा को निकाला है, इसलिए उन्होंने इसे आज़माने का फैसला किया। उन्होंने उस आदमी, जिसके अंदर दुष्ट आत्मा थी, उससे कहा , "यीशु के नाम से उससे बाहर आ - जिसके बारे में पौलुस प्रचार करता है।"

आत्मा ने कहा, "मुझे यीशु के बारे में पता है, और मुझे पौलुस के बारे में पता है, लेकिन तुम कौन हो?" जिसमें दुष्टात्मा थी, उस आदमी ने उन पर हमला किया और उन्हें पीटा।

उसने उनके कपड़े फाड़ दिए, और वे घर की ओर भागे और नग्न हो गए।

इस बारे में सुनकर लोग डर गए। अचानक यीशु के नाम को उच्च सम्मान के साथ माना जाने लगा। बहुतों ने अपने पापों से पश्चाताप किया और प्रभु के नाम को पुकारा। उन्होंने अपनी किताबें एकत्र कीं जो जादू टोना के बारे में थीं, और उन्हें सबके सामने जला दिया।

एक सुनार ने उन लोगों की एक बैठक बुलाई, जिन्होंने अरितमिस नामक मूर्ति के लिए महंगे मंदिर

बनाए थे। उसने कहा, "पौलुस अरितमिस, जिसको सब पसंद करते है, उसकी पूजा से लोगों को दूर कर रहा है। वह कह रहा है कि हाथों से बनाया गया परमेश्वर वास्तव में परमेश्वर नहीं है। यह अरितमिस का अपमान है। इसके अलावा, हमें धन की हानि हो रही है।"

लोग बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया, "इफिसयों की अरितमिस महान है!" गली में यह चिल्लाते हुए वे बाहर भागे। जल्द ही यह पूरे शहर में फैल गया, और हर जगह भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। एक भीड़ ने कुछ मसीहियों को पकड़ लिया और उन्हें नाचघर ले गए। पूरा शहर वहां जाकर देखने लगा कि क्या हो रहा है।

भीड़ चिल्लाती रही। कुछ एक बात कह रहे थे, जबकि कुछ, कुछ अलग कह रहे थे।

वहां स्थिति पूरी तरह से उथल-पुथल हो गई! अधिकांश लोगों को यह भी पता नहीं था कि वे वहां क्यों आए थे? ऐसा दो घंटे तक चला। पौलुस नाचघर में जाना चाहता था और मसीह के उद्देश्य का बचाव करना चाहता था, लेकिन साथी विश्वासियों ने उसे जाने से मना कर दिया। यहां तक कि शहर के अधिकारियों ने उन्हें यह कहते हुए संदेश भेजें, "नाचघर के पास मत जाओ!"

अंत में अधिकारियों में से एक भीड़ के सामने खड़ा हो गया और कहा, "इफिसुस के लोगों! इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि अरितमिस की छवि स्वर्ग से गिरी और यहां उतरी। इसलिए, शांत हो जाओ। जिन पुरुषों को तुम यहां लाए हों, उन्होंने अरितमिस के लिए कुछ भी गलत नहीं किया। उन्होंने उसके मंदिरों को नहीं लूटा या उसके नाम की निंदा नहीं की।

"अगर सुनारों को किसी के साथ कोई समस्या है, तो उन्हें अदालतों में ले जाने दो। अभी के लिए, बिना किसी कारण के दंगा करने का आरोप लगाने से पहले तुम घर जाओ।"

इसी के साथ ही, लोग घर चले गए।

245 कलीसिया के झगड़े - 1 कुरिन्थियों (क)

1 कुरिन्थियों 1 - 7

पौलुस इफिसुस में था जब उसने कुरिन्थुस में कलीसिया की समस्याओं के बारे में सुना। उसने तुरंत यह पत्र लिखा। उसने कहा:

मैं लगातार तुम्हारे लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूं। यह सभी के लिए स्पष्ट है, कि परमेश्वर ने तुमको आत्मिक उपहारों से समृद्ध किया है ताकि तुम मसीह के वापस आने तक उसकी सेवा कर सको।

मुझे सीधे मुद्दे पर आने दो। मुझे पता चला है कि तुम्हारे बीच विभाजन हैं। मैंने सुना है कि कुछ कहते हैं, "मैं पौलुस का अनुसरण करता हूं," या "मैं अपुल्लोस की शिक्षाओं का पालन करता हूं," या "मेरी मसीहीयत पतरस से आती है।" और अन्य कहते हैं, "मैं मसीह को छोड़कर किसी का अनुसरण नहीं करता।"

तुम इस तरह के मनमुटाव में अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो? जब मैं तुम्हारे साथ थी, मैंने तुमको पूरी तरह से सरल सुसमाचार देने पर ध्यान केंद्रित किया है। मैंने अपने आप को मसीह के क्रूस से इधर-उधर नहीं होने दिया। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि दूसरों ने क्रूस के बारे में प्रचार करना हँसने की बात समझी। मुझे पता था कि यह परमेश्वर की सामर्थ है।

यह लड़ाई तुम्हारे घमंड के कारण है। क्या तुमको एहसास नहीं है कि परमेश्वर अपनी बुद्धिमत्ता दिखाने के लिए मूर्खतापूर्ण चीजों का उपयोग करता है? याद रखो मैं कमजोरी में तुम्हारे पास आया था। मैंने अपने आपको तुम्हारे सामने बहते हुए शब्दों वालें एक महान व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित नहीं किया था। नहीं, मैं डर के मारे कांपता हुआ तुम्हारे बीच खड़ा था। मैं पूरी तरह से तुम्हारे जीवन में परमेश्वर के काम के लिए परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर था। और उसने काम किया! तुम्हारा विश्वास उसकी सामर्थ में पैदा हुआ था। यह मानवीय तर्क से नहीं आया था। अपुल्लोस और मैंने तुमको परमेश्वर की बुद्धि नहीं सिखाई। परमेश्वर के आत्मा ने तुमको उन चीजों को सिखाया है।

मैं जानता हूं कि जो लोग प्रभु के साथ चलने में परिपक्व होते हैं, उन्हें परमेश्वर की बुद्धि कैसे सिखाई जाती है।

लेकिन मैंने तुम्हें दूध पिलाया, क्योंकि तुम विश्वास में बच्चे थे। जाहिर है, तुमको अभी भी परिपक्व मसीही

की तरह नहीं खिलाया जा सकता है। तुम आपस में लड़ते हो।

तुम एक दूसरे से ईर्ष्या करते हो जब कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा कहता है, "मैं अपुल्लोस को पसंद करता हूँ," तुम ऐसे कार्य कर रहे हो, जैसे तुम मसीह को जानते ही नहीं हो।

वैसे भी पौलुस और अपुल्लोस कौन हैं? वे मसीह के दास हैं! उन्हें तुम्हारे साथ काम करने के लिए कहा गया था। परमेश्वर ने कहा, "पौलुस, विश्वास के बीज बोओ। अपुल्लोस, पौधों को पानी दो। अब उन्हें अकेला छोड़ दो। मैं उन्हें विकसित करूँगा। हम केवल अपने नियोजित कार्य कर रहे हैं। यह परमेश्वर ही है जिसने इसकी योजना बनाई है। उन लोगों पर एक नज़र डालें जिन्हें प्रेरित कहा जाता है। हम युद्ध के कैदियों की तरह हैं, जब तक वे अंततः मारे नहीं जाते, तब तक सड़कों में जुलूस निकाला जाता है। हम मसीह के लिए मूर्ख और कमज़ोर हैं। हम बेघर हैं, और हमारा निरंतर साथी भूख है। हमें सिर्फ जिंदा रहने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती हैं। हमें उन लोगों को आशीष देना है जो हमें श्राप देते हैं। हमें उन लोगों के साथ धैर्य रखना होता है, जो हमें गाली देते हैं। जब लोग हमारी निंदा करते हैं, तो हमें उनके बारे में अच्छी बातें कहनी होती है। हम दुनिया का "कचरा" हैं! फिर भी, मैं तुम्हारा आत्मिक पिता हूं और तुम मेरी जैसी चाल चलो।

मैं तुम्हारे पास आने की योजना बना रहा हूं। जब मैं आऊं, तो क्या मुझे तुमको बच्चों की तरह सुधारना होगा?

नहीं, मुझे लगता है कि तुम चाहते हो कि मैं नम्रता की भावना से आऊं। इसलिए, मैं तुम्हारे पास तीमुथियुस को मसीह के तरीके याद दिलाने के लिए भेज रहा हूँ।

कुछ मुद्दे हैं जिन पर तुरंत ध्यान दिया जाना चाहिए। पहले, मैंने सुना है कि कलीसिया में एक आदमी है जो अपनी सौतेली माँ के साथ सो रहा है? मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि तुम इस घृणित पाप को अनुमति दे रहे हो। उस आदमी को अपनी संगति से हटा दो — तुरंत! पाप खमीर की तरह है। अगर इसे समय दिया जाए तो यह सारा आटा खमीर कर देता है।

मुझे यह भी बताया गया है कि तुम गैर-मसीही न्यायाधीशों के सामने खड़े होने के लिए एक दूसरे को अदालत में ले जाते हो। क्या कलीसिया में ईश्वरीय लोग नहीं हैं जो इन बातों पर निर्णय ले सकें? सुनो, वह दिन आएगा जब तुम स्वर्गदूतों का न्याय करोगे। तुम इस दुनिया के लोगों का भी न्याय करोगे। निश्चित रूप से तुम भाइयों के बीच इन छोटे मामलों को निपटा सकते हों। यदि तुम्हारे बीच न्याय करने के लिए कलीसिया में कोई नहीं है, तो अन्याय सह लो! धोखा खालो!

व्यभिचार का मुद्दा भी है। साधारण तथ्य यह है। तुम्हारा शरीर यौन अशुद्धता के लिए नहीं बना था। परमेश्वर ने लोगों को खुद के लिए बनाया, और - एक मसीही के रूप में-तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है। जब उसने तुम्हें ख़रीद दिया, तो परमेश्वर के आत्मा ने तुम्हारे शरीर पर अधिकार कर लिया। अब तुम अपने नहीं हो तुम्हें सभी चीजों में परमेश्वर की महिमा करनी है। शादी के भीतर यौन ज़रूरतों को पूरा करना है। परमेश्वर ने मुझे अविवाहित रहने की क्षमता दी है, लेकिन हर किसी के पास यह उपहार नहीं है। इसलिए, उन्हें कामुकता की जलन के साथ जीने के बजाय शादी करनी चाहिए। एक बार एक जोड़े की शादी हो जाने के बाद, उन्हें एक-दूसरे की ज़रूरतों के बारे में पता होना चाहिए।

मुझे पता है कि तुम में से कुछ ने ऐसे लोगों से शादी की हैं जो हमारे परमेश्वर को नहीं जानते हैं। मसीह मे उन्हें जीतने की आशा के साथ उस व्यक्ति के साथ रहो।

यदि वे तुमको छोड़ देते हैं ... ठीक है, तो वहाँ कुछ भी नहीं है कि तुम उस के बारे में कर सकते हो। जीवन में उस स्थिति को स्वीकार करें जो परमेश्वर ने तुमको दी है। बेशक, जब तुम यह कर सकते हो, तो अपने आप को सुधारने का यह सब अधिकार है, लेकिन उस जगह के खिलाफ लड़ने की कोशिश में बोझिल नहीं होना चाहिए जहां परमेश्वर ने तुमको रखा है। तुम्हारी सेवकाई को वहीं उत्तम करेगा, तुम जहां हो।

246 आत्मिक वरदान - 1 कुरिन्थियों (ख)

1 कुरिन्थियों 8 - 16

पौलुस ने इस पत्र की शुरुआत कलिसिया को डांटकर की, क्योंकि उन्होंने खुद को ऐसे समूहों में विभाजित कर लिया था जो दूसरों की आलोचना करते थे। फिर उसने कई पापों से निपटा जो मंडली में आ गए थे। उसने कहा:

तुमने कई चीजों के बारे में पूछा, इसलिए मैं उनमें से प्रत्येक का जवाब दूंगा। पहला मांस खाने के बारे में है जो एक मूर्ति को चढ़ाया गया है। बेशक हम जानते हैं कि एक मूर्ति वास्तव में परमेश्वर नहीं है। यह सिर्फ एक लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा है। फिर भी, इस प्रकार के मांस को खाने से किसी ऐसे व्यक्ति का अपमान हो सकता है जो मूर्तिपूजा से निकला हो। हमें कभी भी एक मसीही के खिलाफ पाप नहीं करना चाहिए। इसलिए, मैंने ऐसा कुछ भी न करने की ठान ली है जिससे भाई अपने विश्वास में डगमगा जाए।

यहाँ एक और नियम है जिसके अनुसार हमें जीना है। मसीह के लिए दूसरों को जीतने के लिए तुमको जो कुछ भी उचित है, वह करना चाहिए। मैंने कई विशेषाधिकार को छोड़ दिआ हैं, और सभी लोगों के लिए सभी चीजें बन गया हूँ, ताकि मैं हर किसी को जीत सकूं। यह एक धावक की तरह है जो एक दौड़ जीतने के लिए सब कुछ करता है। इसके लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता होती है। वह ऐसा कुछ भी नहीं करता जो उसे रोके - और यह सब एक सांसारिक पुरस्कार के लिए! मेरा प्रतिफल अनन्त है। इसलिए, मैं इसे जीतने के लिए जो भी कर सकता हूं, करता हूं।

परमेश्वर यह सुनिश्चित करेंगे कि तुम किसी भी तरह से परीक्षा में ना पड़ो जो तुम्हारी क्षमता से परे हो। यदि तलाश करो, तो तुम हमेशा बच निकलने का एक रास्ता खोज सकते हो।

यह सब मूर्तियों को परोसा गया मांस खाने के बारे में है। दूसरों की मदद करने और अपना विश्वास स्थापित करने पर ध्यान दो। जब कोई तुमको भोजन के लिए आमंत्रित करता है, तो उसे बिना सवाल पूछे खाओ। लेकिन अगर वे कहते हैं कि यह मूर्तियों को चढ़ाया गया था, तो इसे छोड़ दो। तुम जो भी खाते या पीते हों, या जो कुछ भी करते हो, सब परमेश्वर की महिमा के लिए हों - और दूसरों को नाराज़ मत करो।

मैंने कुछ परेशान करने वाली खबर सुनी है। तुम में से कुछ लोग प्रभु भोज का उपयोग अपने स्वयं के खाने के अवसर के रूप में कर रहे हैं। कुछ सदस्य बड़े भोज कर रहे हैं जबकि अन्य वहाँ भूखे बैठे हैं। तुम अपने साथी विश्वासियों को इस तरह से कैसे शर्मिंदा कर सकते हो?

याद रखो, रोटी और प्याला हमारे प्रभु का शरीर और रक्त दर्शाते हैं। इनका दुरुपयोग करने के दोषी मत हो। हमारे प्रभु के शरीर का अनादर ही कारण है कि तुम में से कुछ बीमार हैं, और हाँ, कुछ की तो मृत्यु हो गई है। इसलिए, जब तुम प्रभु भोज के लिए एक साथ आते हो तो स्वयं को जांचो। एक-दूसरे के प्रति आदर और विचारशीलता दिखाओ। तुमने आत्मिक वरदानों के बारे में पूछा। यह याद रखना। परमेश्वर का आत्मा मसीहियों के साथ अलग तरह से पेश आता है। वह हम में से प्रत्येक को दूसरों की सेवा करने के उद्देश्य से वरदान देता है। यह मानव शरीर की तरह है। प्रत्येक भाग पूरे शरीर के भले के लिए काम करता है। मसीह के शरीर के साथ भी ऐसा ही है। एक हिस्सा दूसरे से नहीं कहता, "मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।" नहीं नहीं! हम सभी को एक दूसरे के वरदानों की आवश्यकता है। वरदान अलग हैं, लेकिन वे सभी एक ही आत्मा से आते हैं।

फिर भी, हमारे वरदान प्यार के बिना बेकार हैं। प्यार ही है जो हमारे वरदानों से दूसरों के हित के लिए काम करवाता है। प्यार तुमको धैर्यवान और दयालु बनाता है। अपने आप पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, यह तुमको दूसरों के साथ ठीक से काम करने के लिए प्रेरित करता है और यह तुमको जल्दी गुस्सा करने वाला या स्वार्थी नहीं बनाता है।

प्यार सच्चाई को गले लगाता है, लेकिन यह इस बात पर नज़र नहीं रखता है कि दूसरों ने क्या गलत किया है। यह हमेशा सहायक होता है और दूसरों के बारे में सर्वश्रेष्ठ चाहता है।

याद रखो, हमारे वरदान अद्भुत हैं, लेकिन वे थोड़े समय के उपकरण हैं। पर प्यार कभी दूर नहीं होगा।

इससे पहले कि मैं इस पत्र को समाप्त करूं, मैं तुम्हारे लिए सुसमाचार को स्पष्ट करना चाहता हूं। मसीह हमारे पापों के लिए मारा गया, दफन हो गया, और मृतकों में से जी उठा। प्रेरित और अन्य लोग उसके पुनरुत्थान के साक्षी थे। अंत में, वह मुझे दिखाई दिया, सभी प्रेरितों में से सबसे अधिक अयोग्य को, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया। फिर भी, परमेश्वर का अनुग्रह मुझ में काम करता है।

मसीह का पुनरुत्थान हमारे विश्वास की नींव है। यदि वह जीवित नहीं है, तो मरने वालों का अस्तित्व नहीं है। यदि मसीह मृतकों से नहीं जी उठा, तो दुनिया में कोई आशा नहीं है, और हमारे पास यही जीवन है।

लेकिन अच्छी खबर यह है: मसीह मरे हुओं में से जीवित हो गया। और क्योंकि वो हुआ, हम भी होंगे। मसीह इस संसार पर शासन करेगा और मृत्यु को स्वयं समाप्त कर देगा।

आखिरी तुरही बज जाएगी, और मृतक अपने महिमानवित शरीरों के साथ उठा लिए जाएंगे। फिर जो लोग अभी जीवित हैं उनके शरीर बदल जाएंगे। यह मौत के डंक को दूर करता है, और मृत्यु अब विजयी नहीं है। क्या तुम नहीं देख रहे हो? परमेश्वर हमारे परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से हमें जीत देता है।

मैं तुमको यह याद दिलाकर इस पत्र को समाप्त करूंगा कि यरूशलेम में मसीहियों को अकाल के कारण हमारी आर्थिक मदद की ज़रूरत है। तुम में से प्रत्येक को उनकी मदद करने के लिए कुछ पैसे देने चाहिए।

परमेश्वर ने तुमको जैसे समृद्ध किया है, उसके अनुसार दो। दान इकट्ठा करो, और फिर मैं तुम में से कुछ को इन दानों के साथ यरूशलेम भेजूंगा।

अपने विश्वास पर दृढ़ रहें और मज़बूत बनें। सब कुछ प्यार से करो।

ओह, अक्विला और प्रिस्किल्ला ने मुझसे कहा कि तुम्हें उनका सलाम भेजूँ।

मैं परमेश्वर से तुम्हें हमारे प्रभु यीशु का अनुग्रह देने के लिए प्रार्थना कर रहा हूं। और मेरे दोस्तों, मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि मैं तुमसे प्यार करता हूं।

247 प्रेम की चिंताएँ - 2 कुरिन्थियों (क)

2 कुरिन्थियों 1 - 6

कुरिन्थुस की कलीसिया ने पौलुस के पहले पत्र का अच्छी तरह से जवाब नहीं दिया, इसलिए वह समुद्र के पार गया और उनसे मिला। वह भी ठीक नहीं हुआ। फिर उसने उन्हें एक बहुत कठोर पत्र भेजा - जो कि बाइबल में शामिल नहीं है। तीतुस ने उत्साहजनक खबरें दीं कि कैसे वे उसे अपने दिल में स्वीकार गए और अपने पापों से पश्चाताप किया। पौलुस ने तब यह पत्र भेजा था। उसने कहा:

हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा और शांति तुम्हारे साथ हो। जैसा कि तुम जानते हो, मैंने मकिदुनिया में कलीसियाओं का दौरा करने से पहले तुम्हारे पास आने की योजना बनाई। मैंने अपना मन बदल दिया क्योंकि मैं तुमको एक और दर्दनाक यात्रा से दूर रखना चाहता था। मैंने महसूस किया कि जब मैं आखिरकार आऊं तो मैं चाहता था कि यह खुशी का स्रोत हो, आंसू नहीं। इसलिए आने के बजाय, मैंने वह पिछला पत्र लिखा, तुम्हें चोट पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि तुम्हारे प्रति अपना महान प्रेम दिखाने के लिए।

वह आदमी जो इस मुसीबत का कारण था, उसने तुम्हें और साथ ही मुझे भी चोट पहुँचाई है। मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूं कि उसने पश्चाताप किया। भाइयो, यह उसे अपराधबोध से लदने का समय नहीं है। उचित सजा तय करो, और फिर उसे माफ कर दो। उसे दिखाओ कि तुम उससे प्यार करते हो, और शैतान को इस स्थिति का फायदा नहीं उठाने देना।

उस कठोर पत्र को लिखने के बाद, मुझे यह जानना आवश्यक था कि तुमने कैसे प्रतिक्रिया दी। मैंने तीतुस के साथ पत्र भेजा, और उससे कहा कि वह वापस आकर तुम्हारी प्रतिक्रिया के बारे में बताए। त्रोआस में मिलने की योजना हमारे लिए थी। मैं वहां गया था, लेकिन वह वहां पहुंचा नहीं था।

परमेश्वर ने त्रोआस में सुसमाचार को साझा करने के लिए दरवाज़े खोलें, लेकिन मैं पूरी तरह से तुम पर केंद्रित था। मैं वहाँ से निकलकर मकिदुनिया के लिए जहाज में बैठ गया, वहाँ उससे मिलने की उम्मीद कर रहा था। तुम मेरे विचारों में थे, यह यात्रा अकेली थी और मुझे तुम्हारे लिए चिंता ने घेर लिया। मेरी निराशा में, परमेश्वर ने मेरे सामने कई सत्य प्रकट किए।

सबसे पहले, मैंने महसूस किया कि पृथ्वी पर हमारा जीवन एक रोमन विजय महोत्सव की तरह है। लोग सड़क के किनारे धूप जलाते हैं, और सुगंध उनकी जीत के सैनिकों को याद दिलाता है। लेकिन वही महक बन्धुओं के लिए अप्रिय होती है क्योंकि यह उन्हें उनके प्राणदण्ड की याद दिलाता है, जो रोम पहुँचते ही उन्हें दिया जाएगा।

हम उस सड़क से चल रहे हैं क्योंकि मसीह विजयी होकर चलता है। यह संसार उसके पीछे चलता है। मसीह में विजेताओं के लिए हम विजय की सुगंध हैं। उनके आने वाले फैसले के कारण दुनिया हमें अप्रिय समझती है।

इसके बाद, मैंने इस बारे में सोचा कि इस दुनिया के लोग अपनी सिफारिश के पत्रों पर कितना गर्व करते हैं। मेरा विचार तुम पर था, और मैंने महसूस किया कि तुम मसीह की पत्री, हमारे द्वारा बनाए गए, आत्मा द्वारा लिखित, और सब के पढ़ने के लिए। इस वजह से मुझे आगे चलते रहने का भरोसा है। यह मेरा काम नहीं है, यह परमेश्वर के आत्मा का काम है, जो जीवन लाता है।

इसकी तुलना पत्थर के उन अक्षरों से करो जो मूसा को दिए गए थे। कुछ समय के लिये, उसका चेहरा सूरज की तरह चमका था, इसलिए उसने अपने चेहरे पर पर्दा डाल लिया। उसने ऐसा इस लिए किया था ताकि लोगों का ध्यान उसकी ओर नहीं जाए जब चमक फीकी पड़ने लगी थी। वह पर्दा अभी भी वहीं है! जब कभी व्यवस्था पढ़ी जाती है, तो यह उनके दिलो को ढंक लेता है, ताकि वो इसे समझ न पाए।

जब कोई व्यक्ति मसीह की ओर मुड़ता है, तो यह पर्दा हट जाता है। परमेश्वर का आत्मा स्वतंत्रता लाता है, और हम प्रभु की महिमा को दर्शाते हैं।

जब कि मैंने पर्दा और सुसमाचार के प्रकाश पर सोचा था, मुझे एक तीव्र इच्छा महसूस हुई। परमेश्वर की दया हमारे द्वारा चमकती है! यह महत्वपूर्ण है कि हम चलते रहें। हमें वह सब कुछ अलग करने की ज़रूरत है जो हमें पीछे खींचता है। हमारा संदेश देखने में सादा होना चाहिए।

ओह, लेकिन इस दुनिया के परमेश्वर ने उन लोगों की आंखों पर पर्दा डाल दिया है जो विश्वास नहीं करते हैं। वे हमें अस्वीकार नहीं कर रहे हैं, क्योंकि यीशु दुनिया का प्रकाश है। वे उसे अस्वीकार कर रहे हैं।

जब मैंने मकिदुनिया की यात्रा की, तो ये सभी विचार मेरे दिमाग में घूम रहे थे। मैं कमज़ोर महसूस कर रहा था और कुछ भी पूरा करने में असमर्थ था। लेकिन तब मुझे एहसास हुआ कि यह परमेश्वर है जिसने हमें यह सेवकाई दी है। वह अनन्त कार्यों को पूरा करने के लिए कमजोर लोगों का उपयोग करता है। हमें आसानी से चारों ओर से धकेला जा सकता है और कुचल दिया जा सकता है, लेकिन इससे कोई चीज़ नहीं बदलेगी। जो चीज़ें उसके साथ हुईं, वे हमारे साथ भी होंगीं। जैसा वह उसके साथ था, वैसा ही वह हमारे साथ भी है। हमारी परीक्षा और हमारी मृत्यु दूसरों को जीवन देगी।

मुझे तुम्हारी स्थिति के बारे में पता नहीं था। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि हमारा प्रोत्साहन पृथ्वी पर यहाँ क्या होता है, उससे नहीं आता है। यह परमेश्वर से आता है! उसके कारण, हम हार नहीं मानते!

इसके अलावा, यहाँ हमारे साथ क्या होता है, इसकी तुलना परमेश्वर ने हमारे लिए स्वर्ग में रखी चीज़ों से नहीं की जा सकती।

उसने हमें अपनी आत्मा दिया है, लेकिन वह उन बातों का पूर्व भुगतान है जो होने वाली हैं। जब तक हम इस शरीर में हैं, हम अपने स्वर्गीय घर पर नहीं हैं। एक बार जब हम अपना शरीर छोड़ देते हैं, तो हम प्रभु के साथ होते हैं।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम यहां हैं या नहीं। हमारा उद्देश्य एक ही है। इसलिए, लोगों को उस दिन के लिए तैयार करने के लिए एक साथ काम करो जब वे परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। मसीह हमारे लिए मारा गया, इसलिए उसके लिए जियो।

उस सेवकाई के बारे में सोचों जो हमें दी गई है। हर कोई जो मसीह में आता है वह एक नई रचना बन जाता है। उसका पुराना जीवन चला जाता है और एक नया

जीवन प्रकट होता है। परमेश्वर हमें इसका हिस्सा बनने की अनुमति दे रहा है! हम मसीह के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

यही कारण है कि परमेश्वर चाहता है कि हम ऐसी किसी भी चीज़ से मुक्त हों जो हमें पीछे की ओर खींचता है। इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हम एक गैर-विश्वासी के साथ न बंधें। इसलिए हम खुद को शुद्ध रखते हैं, ताकि हम एक साथ काम कर सकें और उस काम को पूरा कर सकें।

248 देने की खुशी - 2 कुरिन्थियों (ख)

2 कुरिन्थियों 7 - 13

2 कुरिंथियों का यह दूसरा भाग पौलुस के सभी पत्रों में सबसे अधिक व्यक्तिगत है। इसका उद्देश्य उनकी आने वाली यात्रा से पहले उसकी और कलीसिया के बीच संबंधों को बहाल करना है। उसने कहा:

जब मैं मकिदुनिया पहुंचा, तो मैं लगातार तुम्हारे बारे में सोच रहा था। मुझे अभी भी नहीं पता है कि तुमने मेरे पत्र का जवाब कैसे दिया। लेकिन फिर मैंने तीतुस को पाया, और उसने मुझे जो बताया, उससे मेरा दिल खुशी से उछल गया! उसने मुझे बताया कि तुम मुझसे कैसे प्यार करते हो और सब सही करना चाहते हो। उसने कहा कि मेरे पत्र से तुमको दुःख हुआ, ईश्वरीय दुःख हुआ। उसने तुमको पश्चाताप करने और परमेश्वर के साथ उसके मार्ग चलते रहने के लिए प्रेरित किया। मेरा आनन्द पूरा हुआ।

मेरी खुशी का एक और स्रोत यह देखना है कि मकिदुनिया में यहां की कलीसिया उन लोगों की मदद कैसे कर रही हैं जो यरूशलेम में पीड़ित हैं। वे एक साथ आए हैं ताकि वे उस ज़रूरत को पूरा कर सकें, भले ही वे खुद गरीब हों। उन्होंने लोगों को अपने देने की क्षमता के अनुसार दिया है, और हां, उनकी देने की क्षमता से परे भी।

मैंने तीतुस को तुम्हारे साथ इस आवश्यकता को साझा करने के लिए कहा क्योंकि मुझे पता था कि तुम यहां के मसीहियों के उदाहरण का पालन नहीं करना चाहते हो। लेकिन यह उदाहरण भी प्रभु यीशु ने हमें दिया था। उसने स्वर्ग में की अमीरी को गरीब बनने के लिए छोड़ दिया, ताकि हम अमीर बन सकें। तीतुस ने मुझसे बताया कि तुमने तुरंत जवाब दिया और इस ज़रूरत के लिए देना चाहते हों। प्रभु की स्तुति हो!

अब सुनो। देने के सिद्धांत सरल हैं।

सबसे पहले, हर किसान जानता है - यदि तुम बहुत सारे बीज नहीं बोते हो तो ज़्यादा फसल नहीं आती हैं। तुम्हारा देना बीज बोने जैसा है। यदि तुम उदार हो, तो आप एक बड़ी फसल प्राप्त करेंगे।

इसके बाद, प्रत्येक व्यक्ति को यह तय करना चाहिए कि वह क्या देना चाहता है और फिर दे। जब लोग अपने दिल में खुशी के साथ देते हैं तो परमेश्वर को यह पसंद है।

अंत में, जब एक बीज लगाया जाता है, तो यह कई बीज पैदा करता है। यह देने के लिए भी लागू होता है। परमेश्वर तुम्हारे दानों को गुणा करता है। यह इस तरह से गुणा होता है। सबसे पहले, पानेवाला दान के लिए आभारी होता है। दूसरा, तुम देने से धन्य होते हो। इसके बाद, वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं और फिर तुम उनके लिए प्रार्थना करते हो। और अंत में, वे सक्षम होने पर दूसरों के साथ का देने के लिए प्रेरित होते हैं। और यह चलता रहता है।

अब, मेरे पत्रों के विषय में। मुझे पता है कि तुम में से कुछ कह रहे होंगे, "जब वह पत्र लिखता है तो पौलुस साहसी होता है, लेकिन जब वह आमने सामने होता है तो वह कुछ भी नहीं होता है।"

यह विश्वास मत करो। मैं वही व्यक्ति हूं। मैं बाहर से कमज़ोर हो सकता हूं, लेकिन मेरे हथियार परमेश्वर के द्वारा शक्तिशाली हैं। वह मेरे द्वारा काम करता है, ताकि मैं उसके खिलाफ खड़े होने वाले किसी भी चीज़ को फाड़ सकूँ। जब हम एक-दूसरे से मिलते हैं, तो मुझे इस तरह से मत करवाओ। अगर मैं अपने बारे में डींग मारूं तो क्या यह मदद करेगी? तुम जानते हो कि मैं ऐसा नहीं करना चाहता, लेकिन मैं ऐसा करूंगा यदि यह मसीह के प्रति सच्चा होने में तुम्हारी मदद करता है। तुम दूसरों को उनके बारे में डींग मारने देते हो, और वे तुमको प्यार भी नहीं करते हैं। मैंने तुम्हारे लिए खुद को पूरी तरह से दे दिया है, इसलिए हो सकता है कि तुम थोड़ी डींग मारना सहन कर सकों।

मैं हर तरह से अब्राहम का बेटा हूं। मैं किसी से भी ज्यादा उत्साह से मसीह की सेवा करता हूं।

मसीह के साथ चलने के कारण, मेरे शरीर को बहुत अधिक शोषण का सामना करना पड़ा है। परमेश्वर के लिए मेरी यात्रा ने मुझे हर उस आपदा से अवगत कराया जो एक आदमी सहन कर सकता है। खतरा लगातार मेरा साथी रहा है। मैंने मसीह के लिए जीवन के सभी आराम छोड़ दिए हैं। इन सबसे ऊपर, मुझे लगातार सभी कलीसियाओं की भलाई की चिंता रहती हैं।

मैं इसे बरकरार नहीं रख सकता। मुझे इसे इस तरह से कहना चाहिए। मैं एक आदमी को जानता हूं जिसे तीसरे स्वर्ग तक ले जाया गया था। मुझे नहीं पता कि वह मर चुका था या जीवित था। मुझे पता है कि जब वह स्वर्ग में था, उसने उन चीजों को देखा और सुना, जिनके बारे में बात नहीं की जा सकती।

मुझे इस मूर्खता को छोड़ना होगा। मुझे वास्तव में केवल एक चीज़ पर गर्व है। परमेश्वर ने मुझे सभी विशेष प्रकाशनों के कारण, मेरे मांस में कांटा दिया है। मैंने तीन बार प्रार्थना की, उसे हटाने के लिए कहा। अंत में उसने कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी हैं , मेरी सामर्थ तेरी कमज़ोरी में सिद्ध होती है।"

अब वह वो जगह है जहाँ मैं अपनी कमज़ोरी के लिए तैयार हूँ! परमेश्वर ने मुझे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए इसे दिया।

इसलिए जब मैं कमज़ोर होता हूं, तो मैं मज़बूत होता हूं।

खैर, मैं बहुत डींग मारने के लिए मूर्ख हूं। वास्तव में तुम्हें मुझ पर डींग मारनी चाहिए। जबकि अन्य लोग बहस करते हैं कि मैं प्रेरित हूं या नहीं, यह तुम्हारे लिए बहस नहीं होनी चाहिए। ओह, मेरे प्यारे भाइयों। एक डर ने मेरे सारे आनंद पर पानी फेर दिया। मुझे डर है कि मेरे आने पर हम सभी निराश होंगे। मैं इस बात से डरता हूं कि मुझे कुछ भी बदला नहीं मिलेगा। मैं तुमको चेतावनी दे रहा हूं। अगर ऐसा होता है, तो तुम मेरे द्वारा काम कर रही परमेश्वर की सामर्थ को देखोगे, और तुम्हें यह पसंद नहीं आएगीं।

यदि तुम बलवान हो और मैं कमजोर हूं, तो हमारा समय एक साथ बेहतर होगा। इसीलिए मैं अभी तुमको यह लिख रहा हूं।

अंत में भाइयों, उत्साहित रहो और सुनिश्चित करो कि तुम अपना आत्मिक स्वास्थ्य बनाए रखते हो। सभी से मेरे लिए गले मिलो। प्रभु यीशु की कृपा, पिता का प्यार और पवित्र आत्मा की संगति आपके साथ हो।

रोमन 1 - 7

पौलुस ने कुरिन्थुस की यात्रा की और वहाँ तीन महीने बिताए। इस दौरान, उसने रोम में मसीहियों को यह पत्र भेजा। उसने कहा:

मैं हर जगह तुम्हारे विश्वास के बारे में सुनता हूं। मैं हर समय तुम्हारे लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूं। मैं तुम्हारी आत्मिक चलने में आकर निवेश करना चाहता हूं। परमेश्वर ने मुझे हर जगह अन्यजातियों के साथ उसका संदेश साझा करने के लिए बाध्य किया। इसलिए मैं उन लोगों के साथ सुसमाचार को साझा करता हूं जो सभ्य हैं, और जो लोग असभ्य हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे होशियार हैं या भोले भाले हैं।

मुझे सुसमाचार पर गर्व है क्योंकि यह उन लोगों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है जो इसे मानते हैं, चाहे वे कोई भी हों। लोग केवल विश्वास के द्वारा परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। इसके बिना, उन लोगों को उसके फैसले का सामना करना होगा।

तो ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग दुष्ट हैं! परमेश्वर खुद को कई तरीकों से ज़ाहिर करता है। उनके आसपास जो कुछ भी है, परमेश्वर के बारे में बात करता है। लेकिन उन्होंने अपना दिमाग बंद कर लिया है।

इस दुनिया में दो तरह के लोग हैं। एक प्रकार के लोग, परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों की पूजा करते हैं। उन्हें लगता है कि यह उन्हें बुद्धिमान बनाता है, लेकिन वे इस प्रक्रिया में मूर्ख बन जाते हैं। परमेश्वर को छोड़कर, वे नैतिक भ्रष्टता में डूब जाते हैं। उनके पाप उनके मन को नष्ट कर देता हैं। वे अपने साथ हर जगह मृत्यु को ले जाते हैं, जहां भी वे जाते हैं। वे बुराई करने में अच्छे हो जाते हैं, और उन्हें दूसरों में बुराई देखने में मज़ा आता है।

इस दुनिया में दूसरे प्रकार के लोग हैं जो अपनी धार्मिकता का निर्माण करते हैं। वे अपने अच्छे कार्यों के बारे में डींग मारते हैं और सोचते हैं कि वे अच्छे और बुरे के विशेषज्ञ हैं। वे दूसरों की बुराई की आलोचना करते हैं, जबकि वे पर्दे के पीछे उसी प्रकार के पाप करते हैं। उन्हें लगता है कि दूसरों की आलोचना से उन्हें परमेश्वर के फैसले से बचने में मदद मिलेगी।

हम सभी इन दो समूहों में से एक में खुद को पाते हैं, और परमेश्वर का गुस्सा उन दोनों की ओर गर्म है।

दोनों समूह पापी हैं। वे इस बारे में बहस करते हैं कि कौन बेहतर है, लेकिन सच्चाई यह है कि पूरी दुनिया पूरी तरह से पाप में है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो धर्मी हो, एक भी नहीं। हम सभी परमेश्वर के सामने दोषी हैं।

यही कारण है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को भेजा। वह उन लोगों को अपनी अच्छाई प्रदान करता है, जो उस पर अपना विश्वास रखते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, सभी को छुटकारे की आवश्यकता है।

यहूदी इस बारे में सबसे अधिक भ्रमित हैं। उनका दावा है कि अब्राहम उनके पिता है। फिर भी यदि तुम करीब से देखते हो, तो वह वास्तव में विश्वास का पिता है। परमेश्वर के साथ उसका वह रिश्ता उसकी अचछाई पर आधारित है। नहीं, वह बस परमेश्वर पर विश्वास करता था, और परमेश्वर प्रसन्न था।

यहूदी दाऊद को अपना महान राजा मानते हैं। लेकिन वह परमेश्वर की भलाई में प्रसन्न था, न कि स्वयं में। दोनों लोग धर्मी थे क्योंकि वे परमेश्वर पर विश्वास करते थे।

उसी तरह, हम केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके अच्छा बनते है। उसके माध्यम से, हम परमेश्वर के साथ शांति रखते हैं और उसके अनुग्रह तक पहुँचते है।

इस तरह हम अपनी परीक्षाओं में भी खुश रह सकते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर उनका उपयोग हमारी भलाई के लिए कर रहा है।

अब यहाँ मेरा कहना है। मसीह ने हमारे लिए ऐसा सब किया जब हम दुष्ट थे! इससे पता चलता है कि परमेश्वर हमसे कितना प्यार करता है। मसीह हमारे लिए मारा गया जब हम घृणित पापी ही थे। इसे ध्यान में रखते हुए, तो वह हमारे लिए कितना कुछ करेगा कि अब जब हम उसकी दृष्टि में शुद्ध है?

इस पर इसी तरीके से विचार करो। हम सब एक आदमी, आदम से आए थे। हम सभी पापी उसकी वजह से हैं। मौत और न्याय हर किसी के सिर पर है, जो कभी जीवित हो — उसकी वजह से। अब एक और आदमी है — यीशु। उसकी वजह से हमें धर्मी बनाया जाता है। उसकी वजह से, हम अनुग्रह और अनन्त जीवन पा सकते हैं।

मैं किसी को यह कहते हुए सुन सकता हूं, "इसलिए, अगर हमारे अच्छे कामों का परमेश्वर के सामने शुद्ध होने से कोई लेना-देना नहीं है, तो क्या हम जितना चाहें उतना पाप कर सकते हैं।" बिलकुल नहीं!

बपतिस्मा इस सच्चाई की एक तस्वीर है। पानी में नीचे जाने से पता चलता है कि हम कैसे पाप के लिए मरते हैं और दफन हो जाते हैं - ठीक उसी तरह जैसे यीशु हमारे पापों के लिए मरा था और उसे दफनाया गया था। जब वह मरे हुओं में से जी उठा, तो उसने पाप को पीछे छोड़ दिया। हमारा पानी से बाहर आना उसके पुनरुत्थान की तस्वीर है, लेकिन यह पाप को पीछे छोड़ते हुए हमारी भी तस्वीर है। हमें जीवन को एक नए तरीके से जीना होगा।

हम पाप से दूर रहते हैं क्योंकि यह लोगों को गुलाम बनाता है। जब तुम अपने आप को इसमें जाने देते हैं, तो तुम उसके गुलाम बन जाते हो। उसी तरह, जब तुम खुद को परमेश्वर की कृपा के लिए लाते हो, तो तुम उसके दास बन जाते हो।

किसी भी तरह से, तुम जो चाहते हो वह करने के लिए स्वतंत्र नहीं हो। इसलिए तुमको चुनना होगा। तुम किसके अधीन रहोगे? पाप मृत्यु लाता है, लेकिन परमेश्वर तुमको यीशु मसीह हमारे प्रभु के माध्यम से अनन्त जीवन प्रदान करता है।

कोई यह पूछेगा, "क्या परमेश्वर की व्यवस्था हमें धार्मिक बनाने के लिए नहीं दिया गया है?" तुम मज़ाक कर रहे हो! व्यवस्था का पालन करना असंभव है। यह हमारे पापपूर्ण स्वभाव को प्रकट करने के लिए दी गई थी, इसलिए हम जानते हैं कि हमारे लिए कोई आशा नहीं है, और हमें मदद की आवश्यकता है।

जब मैं व्यवस्था को मदद के लिए देखता हूं, तो मुझे अचानक समस्या होती है। मैं अच्छा बनना चाहता हूं लेकिन यह नहीं जानता कि कैसे। मैं बुराई नहीं करना चाहता, लेकिन यह पाया कि मैं यह हर समय करता हूं। मैं एक गुलाम हूँ और मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मैं रोता हूं, "मैं कैसे मुक्त हो सकता हूं?"

प्रभु की स्तुति हो! हम यीशु मसीह के माध्यम से स्वतंत्र हैं जो हमारे लिए मरा गया। इसलिए अब हम पर कोई दंड की आज्ञा नहीं है, और हमारे पास पाप का विरोध करने की सामर्थ है।

पौलुस ने रोम में मसीहियों को अपना पत्र लिखते हुए यह कहा:

मसीह में उद्धार हमें कई लाभ देता है। सबसे पहले, हमने एक नए परिवार को अपना लिया है। परमेश्वर हमारा पिता हैं। उसकी आत्मा हमारे भीतर रहती है, और हमें वह सब कुछ प्राप्त होता है जो यीशु का है।

स्वर्गीय परिवार के एक सदस्य के रूप में, हमारे पास इस जीवन में हमारे साथ क्या होता है, इसके बारे में शांति है। हम यहाँ पीड़ित हो सकते हैं, लेकिन उस महिमा की तुलना में यह कुछ भी नहीं है जो स्वर्ग में हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

दूसरा लाभ यह है कि परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवन में काम कर रहा है। वह हमें स्वर्ग के लिए तैयार कर रहा है। वह हमारी प्रार्थना करने में मदद करता है। वह हमारी विचारधारा को बदल देता है। वह सुनिश्चित करता है कि हमारी सभी परीक्षाएं हमारी भलाई के लिए हो। वह हमें यीशु की तरह बनने के लिए आकार देता है।

तीसरा लाभ यह है कि परमेश्वर अब हमारे पिता हैं! इसका मतलब है कि हम उसके लिए महत्वपूर्ण हैं! वह हमारे साथ ऐसा कुछ भी नहीं होने देगा जो हमारे लिए अच्छा न हो। कुछ भी हमें उसके प्यार से अलग नहीं कर सकता।

इन सभी लाभों के साथ, मुझे अभी भी एक बड़ा दिल का दर्द है। मैं चाहता हूं काश यहूदियों को भी उसमें शामिल किया जाता जो परमेश्वर हमारे साथ कर रहे हैं। वे मेरा सांसारिक परिवार हैं, और मैं उनके लिए कुछ भी दे दूँ ताकि वे उद्धार प्राप्त कर सकें। मैं अपना स्वयं का उद्धार छोड़ दूंगा यदि वे उसको लें सकें।

फिर भी, मैं समझता हूं कि मसीह की उनकी अस्वीकृति अब्राहम के लिए परमेश्वर के वादों को नहीं बदलती है। मुझे हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर के वादे उन लोगों के लिए नहीं हैं जो एक विशेष परिवार में पैदा होते हैं। परमेश्वर ने हमेशा भीड़ के बीच से अपने लिए लोगों का चयन किया है।

यहूदी किसी और को नहीं बल्कि खुद को दोषी ठहरा सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी योजना को सरल बना दिया है। यदि यीशु उनका परमेश्वर है, तो लोग बच जाते हैं, यदि वे मानते हैं कि परमेश्वर ने उसे

मृतकों में से उठाया है। जो भी प्रभु के नाम को पुकारता है, वह बचाया जा सकता है।

क्या तुम नहीं देख रहे हो? यह तथ्य कि इस्राएल उसके मसीहा को अस्वीकार कर रहा है, यह तुम्हारे लिए अवसर है। अब तुमको परमेश्वर के परिवार में लाया जा सकता है! यह एक पेड़ से एक शाखा को काटने और एक जंगली शाखा में साठें जाने की तरह है। इस्राएल को अस्थायी रूप से काट दिया गया है, ताकि अन्यजातियों को परमेश्वर का पता चल सके।

लेकिन बहुत गर्व मत करो! यदि एक प्राकृतिक शाखा को काटा जा सकता है, तो साठीं गई शाखा का कटना कितना आसान होगा। समय आएगा जब अन्यजातियों का दिन समाप्त हो जाएगा। उस समय, परमेश्वर चीजों को बदल देगा, और इस्राएल उद्धार को स्वीकार करेगा।

जब तक परमेश्वर की दया का लाभ उठा सकते हो, उठाओ। अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान के रूप में उसे दे दो। एक को छोड़ दो और उसे खुश करने वाला जीवन जियो। अपने सोचने और कार्य करने के तरीके को बदलो।

अब, यह उन चीजों की एक सूची दी गई है जो धरती पर परमेश्वर के लिए रहते हैं:

• अपने साथी विश्वासियों के साथ एकता में काम करो। हर किसी के पास परमेश्वर से विशेष वरदान है। साथ में तुम एक शरीर बनते हो।

• जीवन स्तर ऊँचा रखे, और इस पर ध्यान केंद्रित करें कि परमेश्वर तुम से क्या करवाना चाहता है।

• नागरिक अधिकारियों के आधीन रहो। सिर्फ इसलिए कि तुम्हारे पास एक स्वर्गीय घर है, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम सांसारिक सरकारी अधिकारियों के प्रति जिम्मेदार नहीं हो। जब तुम उनका विरोध करते हो, तो तुम परमेश्वर का विरोध करते हो।

• तुम लोगों के कर्ज के नीचे मत रहो। इसके बजाय, उन्हें अपना प्यार देते रहो। इसलिए इसे ब्याज सहित दें।

• हमेशा ऐसे जियो जैसे कि आपकी सेवा का समय खत्म हो गया है।

• शारीरिक इच्छाओं और वासना से विचलित न हों। इसके बजाय, यीशु की तरह काम करना शुरू करो।

सुनो, परमेश्वर हम में से प्रत्येक के साथ अलग तरह से पेश आता है। इसलिए, एक-दूसरे के प्रभु के साथ चलने का सम्मान करें। एक व्यक्ति एक विशेष दिन को अलग करके, या कुछ खाद्य पदार्थों को न खाके परमेश्वर का पालन कर रहा है।

कोई और सब कुछ एक ही मानकर परमेश्वर का पालन करता है। तुमको इससे क्या फर्क पड़ता है? प्रत्येक विश्वासी के साथ प्रभु का अलग-अलग संबंध होता है।

यह कहने के बाद, तुमको इस तथ्य के बारे में भी सचेत रहना चाहिए कि कुछ लोग अभी भी परमेश्वर के साथ चलने में कमज़ोर हैं। तुम्हारे पास चीज़ों के बारे में अपने स्वयं के विश्वासों का पालन करने की स्वतंत्रता है, लेकिन तुम्हारे पास एक मसीही को गिराने के लिए स्वतंत्रता नहीं है।

तुम्हारे काम से उन्हें बेहतर बनाना है - उन्हें उन चीजों से न खराब न करें जो तुम करते हैं। जो लोग विश्वास में मज़बूत होते हैं, उनकी ज़िम्मेदारी होती है कि जो कमज़ोर हैं, उन पर नज़र रखें।

खैर, मेरी योजनाएं यह हैं। मैं यरुशलेम जा रहा हूं ताकि जो दान यहां की कलसिया ने इकट्ठा किया था, उसे दे सकूँ। जब मैं ऐसा कर लूं, तो मेरी योजना है कि मैं इसपानिया के रास्ते से रोम में रुकूं। मैं तुमसे बहुत समय से मिलना चाहता हूं!

सुसमाचार में मेरे सभी दोस्तों को नमस्कार। उन्होंने वर्षों तक मेरे साथ ईमानदारी से काम किया है।

ओह, एक बात और। उन लोगों से सावधान रहो जो छोटी चीजों से एक बड़ा सौदा और बात की खाल निकालते है। इनसे बचो। उनकी चिकनी बातें कमज़ोर विश्वासियों को चोट पहुँचा सकती है।

हर जगह जहां मैं जाता हूं, लोग मुझे मसीह की आज्ञाकारिता के बारे में बताते हैं। यहां हर कोई तुम्हें शुभकामनाएं भेजना चाहता है। हमारे प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

पौलुस तीन महीने तक कुरिन्थियुस में रहा। बाद में, वह त्रोआस वापस चला गया, जहाँ उसने यरूशलेम की यात्रा शुरू करने से पहले एक सप्ताह बिताया।

पौलुस के त्रोआस से जाने से एक रात पहले, वह एक घर की तीसरी मंजिल पर कलीसिया में गया था। उसने घंटों तक प्रचार किया - रात में लंबे समय तक। एक युवक एक खिड़की पर बैठा था और जल्द ही उसे बहुत नींद आ गई। आखिरकार, वह सो गया और खिड़की से ज़मीन पर गिर गया! लोग नीचे भागे, लेकिन उसे मृत पाया।

पौलुस ने शरीर को ले लिया और उसे कसकर गले लगाया। फिर उसने ऊपर देखा और कहा, "जवान आदमी जीवित है।"

सभी ने आनन्द लिया और एक साथ सीढ़ियों से वापस चले गए। जब पौलुस यरूशलेम की यात्रा पर निकला, तब तक उसने सुबह तक अपनी संगति जारी रखी।

वे युवक को अपने घर ले गए, वे आनन्दित थे कि वह जीवित था।

पौलुस इफिसुस के पास एक शहर में गया, और इफिसुस की कलीसिया के बुजुर्ग उससे मिलने के लिए वहाँ गए।

उसने उनसे कहा, “मेरा जीवन तुम्हारे लिए एक खुली किताब रहा है। कुछ भी छिपा नहीं है। हमने एक साथ सताव का सामना किया, लेकिन इसी के कारण से मैं इस क्षेत्र में सभी को सुसमाचार समझा पाया था। अब मैं तुम्हें छोड़कर यरूशलेम जा रहा हूँ, और तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे।

"परमेश्वर के आत्मा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मैं यरूशलेम में प्रभु के लिए पीड़ित होऊंगा। मैं इसे स्वीकार करता हूं क्योंकि मैं अपने जीवन भर परमेश्वर की बुलाहट को पूरी करना चाहता हूं।

पौलुस ने उन्हें प्रभु के लिए जीने और उसके प्रति सच्चे होने के लिए प्रोत्साहित किया। बाद में, उन सब ने एक साथ घुटना टेके और प्रार्थना की। पूरा समूह रोया और पौलुस को गले लगा लिया। उन्होंने उसके शब्दों पर शोक व्यक्त किया, "तुम मुझे फिर कभी नहीं देखेंगे।"

जब वह यरूशलेम के लिए अपने रास्ते पर चल पड़ा, तो जहाज़ सोर शहर में रुक गया ताकि वह माल उतार सके। इससे पौलुस को कुछ दिनों के लिए विश्वासियों के एक समूह के साथ रहने का मौका

251 यरुशलेम जाना

प्रेरितों के काम 20 - 21-:17

मिला। उन्होंने उससे कहा, "परमेश्वर के आत्मा ने हमें बताया कि तुम यरूशलेम में बहुत कष्ट सहोगे।"

जब जाने का समय आया, तो पूरी कलीसिया पौलुस के साथ शहर से बाहर और किनारे तक गई। उन्होंने समुद्र तट पर घुटने टेके और प्रार्थना की। वह फिर जहाज़ पर चढ़ गया और चला गया।

यरूशलेम के सबसे नज़दीकी बंदरगाह कैसरिया में जहाज़ डूब गया। पौलुस फिलेप्पुस के घर में रहा, जो मूल सात सेवकों में से एक था। जब वह वहां था, एक नबी ने पौलुस की कमर की पेटी ली और अपने हाथों और पैरों को बांध दिया। उन्होंने कहा, "यरूशलेम में यहूदी उस व्यक्ति को बांधेंगे जो इस कमर की पेटी का मालिक है और उसे अन्यजातियों में दे देंगे।"

हर कोई चिंतित था और उन्होंने पौलुस से यरूशलेम न जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा, “कृपया रुक जाओ। तुम्हारा रोना मुझे रूला रहा है! मैं परमेश्वर के लिए जंजीरों में बंधने के लिए तैयार हूं। मैं उसके लिए मरने के लिए तैयार हूं।

कुछ दिनों के बाद, पौलुस यरूशलेम गया। वहाँ के मसीहियों ने आनन्द के साथ उसका अभिनंदन किया।

पौलुस ने यरूशलेम में कलीसिया के बुज़ुर्गों के साथ मुलाकात की और उन्हें बताया कि कैसे अन्यजाति मसीह में आ रहे हैं। यह सुनकर सभी ने परमेश्वर की महिमा की।

लेकिन तब प्राचीनों ने पौलुस के साथ अपनी चिंताओं को साझा किया। "यहूदी मसीही सोचते हैं कि तू यहूदियों को मूसा के कानून को छोड़ने के लिए सिखा रहा हैं। हमें इन अफवाहों को रोकने की ज़रूरत है। चार आदमियों ने परमेश्वर के सामने वाचा बाँधी है। वे मंदिर में उसकी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहते हैं, लेकिन उनके पास इसके लिए पैसे नहीं हैं। उसकी प्रतिज्ञा में शामिल हो, और उनके शुल्क का भुगतान कर। यह प्रदर्शित करेगा कि तूने परमेश्वर के नियमों को नहीं छोड़ा है।"

पौलुस सहमत हो गया। इसलिए उसने वाचा को लिया और पुरुषों के साथ मंदिर गया। इस संस्कार में सात दिन लगे। आखिरी दिन, इफिसुस के कुछ यहूदियों ने अपने शहर के एक अन्यजाति मसीही के साथ बाज़ार में पौलुस को देखा। बाद में उन्होंने उसे मंदिर में देखा और यह मान लिया कि अन्यजाति उसके साथ है। उन्होंने चिल्लाया, “मदद करो! यह वह आदमी है जिसने पूरी दुनिया को हमारे खिलाफ कर दिया है। अब वह हमारे मंदिर में एक अन्यजाति को ला रहा है!"

जल्द ही, भीड़ में गुस्सा भर आया। वे पौलुस को पकड़कर मंदिर से बाहर ले गए और उसे पीटना शुरू कर दिया। पिटाई को रोकने के लिए रोमी सैनिक भीड़ में भागें। उनके सेनापति ने पौलुस को जंजीरों में जकड़ दिया और अपने आदमियों से कहा कि वे उसे ले जाए।

भीड़ चिल्लाई, "उसे मार डालो!" और सैनिकों की ओर बढ़ने लगी। यह देखकर, सैनिकों ने पौलुस को उठाया और उसे ले गए। जब वे सैनिकों के लिए बने घरों के फाटक पर पहुँचे, तो पौलुस ने सेनापति से कहा, "क्या मैं भीड़ से बात कर सकता हूँ?"

सेनापति आश्चर्यचकित था, लेकिन अंत में उसे बोलने देने के लिए सहमत हो गया।

पौलुस सीढ़ी पर खड़ा हुआ और उसने हाथ उठाया।

सब लोग शांत हो गए। उसने कहा, “मुझे सख्त यहूदी शिक्षा दी गई थी। यीशु के विश्वासियों को सताने से मैंने अपने धर्म के प्रति समर्पण साबित किया। मैंने

252 यरूशलेम में दंगा

प्रेरितों के काम 21:15 - 22:30

पुरुषों और महिलाओं दोनों को जेल में डाला और यहां तक कि उनमें से कुछ को मारवा भी डाला।

"एक दिन मैं और कैदियों को वापस यरूशलेम लाने के लिए दमिश्क गया। अचानक एक तेज़ रोशनी ने मुझे घेर लिया। मैं ज़मीन पर गिरा और एक आवाज़ सुनी, 'शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है?'

"मैंने कहा, तू कौन है परमेश्वर?" आवाज़ ने कहा, मैं नासरत का यीशु हूं - जिसे तू सता रहा हैं। फिर उसने मुझे दमिश्क में जाने के लिए कहा और मुझे बताया कि क्या करना है।

"जब मैं शहर में था, तो मसीह में एक विश्वासी आया, और मैंने प्रभु के नाम को पुकारा और मुझे बपतिस्मा दिया गया।

"मैं यरूशलेम वापस आया और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था। प्रभु ने फिर मुझसे बात की। उसने कहा, मैं तुझको दूर स्थानों पर भेज रहा हूं और वहां तू अन्यजातियों को उपदेश देगा।"

जैसे ही पौलुस ने "अन्यजाति" शब्द कहा, भीड़ एक बार फिर नियंत्रण से बाहर हो गई। वे चिल्लाने लगे और हवा में धूल फेंकने लगे। उन्होंने अपने कपड़े ज़मीन पर फेंक दिए और चिल्लाए, "उसे मार डालो! उसे पृथ्वी पर से हटा दो!

जल्दी से, सेनापति पौलुस को गढ़ में ले गया। उसने सैनिकों को पौलुस को मारने का आदेश दिया जब तक कि उसने उनके सभी सवालों का जवाब नहीं दिया। जैसा ही सैनिक ऐसा करने के लिए तैयार हुए, पौलुस ने उनमें से एक से कहा, "क्या बिना मुकदमा चलाए रोमी नागरिक को पीटना कानूनी है?"

सिपाही ने तुरंत सेनापति को इस बारे में बताया। उसने पौलुस के पास जाकर पूछा। "क्या तू रोमी नागरिक है?"

"हाँ, मैं रोमी नागरिक पैदा हुआ था।"

जो लोग पौलुस को मारने के लिए तैयार हो रहे थे, वे तुरंत उससे दूर चले गए। सेनापति खुद अपने जीवन के लिए चिंतित हो गया, क्योंकि उसने एक रोमी नागरिक को जंजीरों में डाल दिया था - और उसे लगभग मार ही डाला था वो भी बिना किसी निष्पक्ष जाँच के।

अगली कहानी में जारी

253 मारने की साजिश

प्रेरितों के काम 22:30 - 23:35

पिछली कहानी से जारी है

सेनापति ने जानना चाहा कि यरूशलेम में मंदिर के पास दंगे का क्या कारण था। इसलिए वह यहूदी परिषद के समक्ष पौलुस को ले गया। उसने "पौलुस ने कहा, मैं स्पष्ट विवेक के साथ परमेश्वर के सामने खड़ा हूं।" यह सुनकर, महायाजक ने किसी को उसे थप्पड़ मारने का आदेश दिया।

पौलुस उसकी ओर मुड़ा और कहा, "तुम चूना फेरी हुई दीवारें हों! परमेश्वर तुमको थप्पड़ मारेगा। परमेश्वर के नियमों के सीधे उल्लंघन में तुम ने मुझे मारा है।"

पुरुषों में से एक ने कहा, "तेरी परमेश्वर के महायाजक से इस तरह बात करने की हिम्मत कैसे हुई।"

तुरंत पौलुस ने माफी मांगी। "मुझे नहीं पता था कि वह महायाजक था। वचन कहता है, लोगों के शासक के खिलाफ मत बोलो।"

फिर उसने देखा कि परिषद दो विरोधी समूहों से बनी थी। सदूकियों का मानना था कि कोई भी मृतकों से नहीं जी उठ सकता है। वे स्वर्गदूतों या आत्माओं में विश्वास नहीं करते थे। फरीसी इन सब बातों पर विश्वास करते थे।

पौलुस ने कहा, "मैं एक फरीसी हूं और मुझे यहां लाया गया है क्योंकि मैं मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास करता हूं।" तुरंत, दो समूहों में बहस शुरू हो गई, जब तक वे एक दूसरे पर चिल्ला नहीं रहे थे।

एक आदमी ने गुस्से में पौलुस को पकड़ लिया। दूसरों ने उसे खींचने की कोशिश की। सैनिकों को उसे फाड़ने से बचाने के लिए उसे छुड़ाना पड़ा। वे उसे गढ़ में वापस ले गए।

उस रात प्रभु पौलुस के पास खड़ा था। "हतोत्साहित मत हो। यरूशलेम में तू मेरा प्रवक्ता था, और तू मेरे लिए रोम में भी बोलेगा।"

अगली सुबह, 40 लोगों ने एक साथ मुलाकात की और एक प्रतिज्ञा की। उन्होंने कहा, "जब तक हम पौलुस को नहीं मार लेते, तब तक हम खाना या पीना नहीं करेंगे।" उन्होंने तब धर्मगुरुओं से कहा, "उस सेनापति से कहो की तुम फिर से पौलुस की जांच करना चाहते हो। जब वह पास हो, तो हम उसे मार डालेंगे।

पौलुस के भतीजे ने इस योजना के बारे में सुना, इसलिए वह गढ़ में गया और अपने चाचा को बताया। यह सुनने के बाद, पौलुस ने सैनिकों में से एक को बुलाया।

"इस जवान को सेनापति के पास ले जाओ। उसके पास एक संदेश है।"

इसलिए सिपाही पौलुस के भतीजे को सेनापति के पास ले गया और उससे कहा, "कैदी ने कहा है कि इस युवक का क्या कहना है, सुनो।"

सेनापति ने युवक को एक ओर ले लिया, "तू मुझे क्या बताना चाहता है?"

लड़के ने सेनापति को बताया कि उसने क्या सुना है। सेनापति ने कहा, "जाओ, लेकिन इस बारे में किसी और को मत बताना।"

उस रात, उसने पहरेदारों के एक समूह को इकट्ठा किया जिसमें 200 सैनिक, 70 घुड़सवार और 200 पुरुष भाले लिए हुए थे। उसने उसी रात पौलुस को उनके साथ भेज दिया। वे उसे फेलिक्स राजपाल के संरक्षण में रहने के लिए कैसरिया ले गए।

सेनापति ने उसके साथ भेजने के लिए एक पत्र लिखा। "यहूदियों ने इस आदमी को मारने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसे बचाया क्योंकि वह एक रोमी नागरिक है। मैंने उसे अपने शासक परिषद के समक्ष खड़ा किया, लेकिन पाया कि वे कुछ धार्मिक मामलों के कारण उससे परेशान थे - निश्चित रूप से मृत्यु या जेल के लायक कुछ भी नहीं था। अब मुझे बताया गया है कि वह घात लगाने और उसे मारने की साजिश कर रहें है। इसलिए मैं उसे आपके पास भेज रहा हूं मैं उनके आरोपियों को भी भेजूंगा ताकि आप उनका मामला सुन सकें।"

जब पौलुस कैसरिया पहुंचा, तो उसे उसके आरोपियों के आने तक इंतजार करने के लिए हेरोदेस के महल में रख गया।

254 फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा

प्रेरितों के काम 24 - 26

महायाजक कुछ बुजुर्ग और एक वकील के साथ कैसरिया गया। उन्होंने पौलुस के खिलाफ अपना मामला राजपाल फेलिक्स के सामने पेश किया। उन्होंने कहा, "यह आदमी यहूदी लोगों के लिए एक बीमारी है। वह हर जगह दंगों का कारण बनता है। अब वह यहाँ आया है और उसने हमारे मंदिर को अपवित्र कर दिया है।"

पौलुस ने अपना बचाव किया। उसने कहा, ''मेरे साथ जो किया गया है, उसके लायक मैंने कुछ नहीं किया। यह सच है कि मैं नासरत के यीशु का अनुसरण करता हूं, लेकिन मैंने एक भीड़ इकट्ठा करके उन्हें उपदेश नहीं दिया है। मैं बस वाचा पूरी करने के लिए मंदिर में गया था। अचानक - और बिना किसी कारण के - एक भीड़ ने मुझे पकड़ लिया और मुझे मारने की कोशिश की। उन्हें यहां अपने कार्यों के विरुद्ध बचाव करना चाहिए। तुम्हारे सामने खड़े इन लोगों के पास मेरे खिलाफ कुछ नहीं है। वे मूल मुद्दे पर भी मुझसे सहमत हैं - कि परमेश्वर किसी को मृतकों से उठा सकता है।"

फेलिक्स ने दोनों पक्षों को सुना, लेकिन निर्णय नहीं लिया। उसने सोचा कि पौलुस जाने के लिए कुछ भुगतान कर सकता है। फिर भी, राजपाल ने पौलुस को अपने दोस्तों से मिलने का विशेषाधिकार दिया। फेलिक्स ने मसीह में विश्वास के बारे में बात करने के लिए कई बार उससे मुलाकात की। एक बार कांपते हुए उसने कहा, "मैं अभी तैयार नहीं हूँ। अधिक सुविधाजनक होने पर मैं यह निर्णय लूंगा।

दो साल बाद, फेस्तुस फेलिक्स की जगह गवर्नर बन गया। वह यहूदी नेताओं को खुश करना चाहता था, इसलिए उसने पौलुस से कहा, "क्या तू यरूशलेम जाने और वहां मेरे सामने तेरा यह मुकद्दमा तय किया जाए, इसके लिए तैयार है?"

पौलुस ने कहा, "मैं मरने के लिए तैयार हूं, अगर मैं वास्तव में मृत्यु के योग्य हूं। लेकिन तू जानता हैं कि मैं इन आरोपों में निर्दोष हूं। इसलिए, यदि तू मुझे येरुशलम भेजने वाला हैं, तो मैं कैसर की दोहाई देता हूं।"

फेस्तुस ने कहा, "तो, तूने कैसर की दोहाई की है। उस स्थिति में, तू कैसर के पास जाएगा।"

कुछ दिनों बाद, राजा अग्रिप्पा और उसकी बहन ने नए राजपाल से मुलाकात की। फेस्तुस ने उन्हें

पौलुस और मामले के बारे में बताया। अग्रिप्पा ने कहा कि वह उसे सुनना चाहता है। इसलिए अगले दिन, एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई और पौलुस को राजपाल और राजा के सामने लाया गया।

जब पौलुस कमरे में दाखिल हुआ, तो उसने अपना मौका देखा। उसने कहा, "मैं आपके सामने राजा अग्रिप्पा के साथ खड़े होकर प्रसन्न हूं, क्योंकि आप यहूदी रीति-रिवाजों के विशेषज्ञ हैं।

“मैं उन यहूदियों के लिए अजनबी नहीं हूँ जो इस्राएल में रहते हैं। जब से मैं बच्चा था, उन्होंने मुझे जाना। वे जानते हैं कि मैं एक फरीसी हूं और कानून को लेकर बहुत सख्त रहा हूं। एक समय था जब मैंउन लोगों को सताता था जो यीशु नाज़रीन का अनुसरण कर रहे थे।

“मैं दमिश्क के रास्ते में था जब मैं एक उज्ज्वल रोशनी द्वारा ज़मीन पर गिर गया था। मैंने फिर एक आवाज़ सुनी, 'शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है?'

“मैंने कहा, तुम कौन हो, प्रभु?’ आवाज़ ने कहा, मैं यीशु हूं, जिसको तू सता रहा है। उठ जा। अब तू मेरा सेवक है। मैं तुझको यहूदियों के लिए और अन्यजातियों के लिए एक गवाह बनने के लिए भेज रहा हूं।'

"राजा अग्रिप्पा, मैं उस बुलाहट के लिए सच्चा रहा हूँ। मैं जहाँ भी जाता हूँ, मैं यीशु को मसीहा घोषित करता हूँ। मैं लोगों से कहता हूं कि वे पश्चाताप करें और प्रभु की ओर मुड़े।

“तो यहूदी मुझे क्यों मारना चाहते हैं? वे जानते हैं कि हमारे शास्त्र सिखाते हैं कि मसीह पीड़ित होगा, मारा जाएगा, और मृतकों से जी उठेगा। अच्छी खबर यह है कि वह अब अन्यजातियों सहित सभी लोगों प्रकाश में आ रहें हैं।”

फेस्तुस चिल्लाया, "पौलुस, तू मूर्खो की तरह बात कर रहा है। तेरी शिक्षा ने तुझको दीवाना बना दिया है!"

पौलुस ने कहा, "मैं पागल नहीं हूं। मैं सच बोलता हूं, और राजा इन बातों को जानता है। राजा अग्रिप्पा, क्या तू शास्त्रों को मानता है? मैं जनता हूँ, तू -"

राजा ने उसे रोका, "क्या तुझको लगता है कि तू मुझसे कुछ पल बात करेगा और मैं मसीही बन जाऊंगा?"

पौलुस ने कहा, " मैं कर सकता हूँ या नहीं कर सकता, मैं चाहता हूं कि आप सभी जो आज मुझे सुन रहे हैं, आप मेरे जैसे हों, इन जंजीरों को छोड़कर।"

बाद में, राजा अग्रिप्पा और राजपाल ने सहमति व्यक्त की कि पौलुस को जेल में नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, "यदि उसने कैसर की दुहाई नहीं की होती, तो हम उसे मुक्त कर देते। लेकिन उसने कैसर को दुहाई की, इसलिए हम उसे वहां भेजेंगे।"

255 समुद्र में तूफान

प्रेरितों के काम 27

मालवाहक जहाजों में रोम की यात्रा के लिए पौलुस की व्यवस्था की गई थी। उन्हें यूलियुस नाम के एक रोमी अधिकारी की हिरासत में रखा गया था। वह पौलुस के प्रति दयालु था और जब भी वे बंदरगाह पर होते थे, वह उसे उसके दोस्तों को मिलने की अनुमति देता था।

तूफान के कारण यात्रा धीमी थी। कई बार रुकने और नावों को बदलने के बाद, वे अंततः क्रेते द्वीप पर शुभ लंगरबारी पहुंचे। यह सर्दियों के करीब था इसलिए उन्हें रुकना पड़ा।

फिर भी, कप्तान तट से कुछ मील की दूरी पर एक बेहतर बंदरगाह पर जाना चाहता था। मौसम साफ हो गया था और अब हल्की हवा चल रही थी।

पौलुस ने यूलियुस से कहा, "कप्तान से कह कि वह यहीं रहे! यदि वह नहीं रहता है, तो वह जहाज़ और उसका माल खो देगा और कुछ लोग भी मर सकते हैं।" रोमी अधिकारी ने इस बारे में सोचा कि पौलुस ने क्या कहा, लेकिन कप्तान को दूसरे बंदरगाह पर जाने की अनुमति देने का फैसला किया।

वह शुभ लंगरबारी से निकले और तट के साथ-साथ तैरना शुरू कर दिया। अचानक एक भयंकर हवा ने जहाज को गहरे पानी में धकेल दिया। चालक दल हवा से लड़ने के लिए संघर्ष करता था, लेकिन तूफान और अधिक बढ़ गया। अंत में, कप्तान ने हवा से लड़ना बंद कर दिया और उसे जहाज़ को चलाने दिया।

तूफान में कई दिनों तक रहने के बाद, चालक दल ने माल जहाज से फेंक दिया। । अब हर कोई जानता था कि वे मरने वाले थे। उन्होंने कई दिनों तक सूरज या सितारें नहीं देखें और उन्होंने कुछ भी नहीं खाया था।

पौलुस पुरुषों के सामने खड़ा था। उसने कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि बंदरगाह मत छोड़ो। तुमने नहीं सुना, लेकिन अब मेरे पास तुम्हारे लिए खुशखबरी है। एक दूत कल रात प्रभु के एक संदेश के साथ मेरे पास आया। उसने कहा, डर मत! तू कैसर के सामने खड़ा होगा। इस जहाज पर कोई भी नहीं मरेगा।' परमेश्वर जो कहता है वह सत्य है। हम सभी जीवित रहेंगे, लेकिन जहाज नष्ट हो जाएगा।"

वे कुल चौदह दिनों तक तूफान में थे। अंतिम दिन आधी रात के बाद, नाविकों को एहसास हुआ कि वे

भूमि के निकट आ रहे हैं। उन्होंने जल्दी से एक लंगर डाल दिया, ताकि वे चट्टानों से दुर्घटनाग्रस्त न हों।

उनमें से कुछ ने जीवन नौका को नीचे करना शुरू कर दिया ताकि वे जहाज से उतर सकें। पौलुस चिल्लाया, "अगर तुम लोग ये जहाज छोड़ दोगे तो तुम सब मर जाओगे!" तुरंत सैनिकों ने रस्सियाँ को काट दिया और जीवन नौकाओं को पानी में गिरने दिया। सभी ने प्रार्थना की कि सुबह जल्द आए।

पौलुस ने दिन के उजाले से पहले जहाज के चालक दल से बात की। उसने कहा, "तुमने चौदह दिनों तक भोजन नहीं किया। कुछ खाओ क्योंकि आज तुमको किनारे पर जाने के लिए ताकत की आवश्यकता होगी।" फिर उसने कुछ रोटी उठाई, परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और खाना शुरू किया।

जहाज पर सभी ने कुछ खाना खाया। जब यह दिन का प्रकाश था, वे तूफान के बीच से भूमि देख पा रहे थे। कप्तान ने समुद्र तट के साथ एक खाड़ी देखी। उसने जहाज को समुद्र तट की ओर चलाने का फैसला किया, वह जितनी दूर भी जाता। उन्होंने लंगर उठाया और खेवन को फहराया। भयंकर हवा ने उन्हें समुद्र तट की ओर तब तक खींचा जब तक कि जहाज एक रेत पट्टी से नहीं टकराया। यह रेत में जाम हो गया, और फिर लहरों के कारण टूटने लगा।

सैनिक कैदियों को मारना चाहते थे, ताकि वे भागे नहीं। यूलियुस ने उन्हें रोका क्योंकि वह पौलुस की जान बचाना चाहता था। उसने उन लोगों को आदेश दिया जो तैर सकते थे, वे जहाज से कूद गए और किनारे की ओर तैर गए। बाकी सभी ने जहाज से तख्तों को ढूंढने लगे और उनका उपयोग करके तैरते हुए किनारे पर पहुँच गए। जल्द ही हर कोई पानी में था, और वे सभी सुरक्षित रूप से भूमि पर पहुंच गए।

अगली कहानी में जारी

256 जहाज़ का नष्ट होना और रोम

प्रेरितों के काम 28

पिछली कहानी से जारी है

एक भयंकर तूफान में चौदह दिनों के रहने के बाद, पौलुस का जहाज मिलिते द्वीप के पास एक रेत पट्टी से जा लड़ा। हर कोई किनारे पर पहुंच गया और स्थानीय लोग उन्हें बाहर आने में उनकी मदद करने लगे। उन्होंने बारिश और ठंड के कारण आग लगाई।

पौलुस ने लकड़ी इकट्ठा करके मदद की। जब वह आग में कुछ लकड़ी डाल रहा था, एक ज़हरीले सांप ने उसके हाथ पर काट लिया। पौलुस ने लकड़ी गिरा दी लेकिन सांप उसके हाथ से लटका रहा। स्थानीय लोगों ने कहा, “आह, वह एक भयानक हत्यारा है! वह समुद्र में मरने से बच गया, लेकिन अब देवता उसके साथ न्याय कर रहे हैं।”

पौलुस ने सांप को झाड़ कर आग में गिरा दिया, और हर कोई उसके सूजकर मरने का इंतजार करने लगा। कुछ समय बाद, उन्होंने महसूस किया कि वह नहीं मरने वाला है। फिर उन्होंने कहा, "वह एक ईश्वर है!"

द्वीप के राजपाल ने अपने घर को खोला और उन लोगों के लिए प्रावधान किया जो जहाज पर सवार थे। पौलुस को पता चला कि राजपाल के पिता बीमार थे। वह गया और उसके सिर पर हाथ रखा। वह तुरन्त चंगा हो गया। इस बात की खबर पूरे द्वीप में फैल गई और लोग दूसरों को पौलुस के पास लाने लगे ताकि वह उन्हें ठीक कर सकें।

सर्दियों के महीने खत्म होने तक वे मिलिते में रहे। यूलियुस ने उनके लिए एक मालवाहक जहाज पर यात्रा तय की जो रोम जा रहा था। जब वे जाने के लिए तैयार थे, द्वीप के लोगों ने उन्हें यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें लाकर दीं।

जब वे रोम पहुँचे, तो पौलुस को एक घर में ले जाया गया जहाँ वह कैसर के सामने उसकी पेशी तक रूक। उसके बगल में हमेशा एक सैनिक रहता था, लेकिन वह दोस्तों के आने और जाने के लिए स्वतंत्र था। रोम में मसीहियों ने उसे विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया और उसे प्रोत्साहित किया।

उसने शहर में यहूदी अगुओं को एक पत्र भेजा। उसने उन्हें बताया कि यरूशलेम में क्या हुआ था और वह रोम क्यों आया था। उसने उन्हें अपने पास आने का निमंत्रण दिया। वे मिले और परमेश्वर के राज्य और यीशु के बारे में बातें कीं। उनकी चर्चा पूरे दिन

चली, दोपहर देर तक। उनमें से कुछ ने संदेश पर विश्वास किया लेकिन अन्य लोगों ने नहीं किया।

जब वे जा रहे थे, पौलुस ने कहा, "नबी ने सही कहा था, कि तुम सुनोगे, लेकिन समझोगे नहीं, तुम देखोंगे लेकिन देख नहीं पाओगे।" तुम्हारी ज़िद ने तुम्हारे कान बंद कर दिए हैं और तुम्हारी आँखों को ढँक दिया है। तुम इसके बारे में सुनिश्चित रहो - अन्यजातियां देखेंगी और सुनेंगी, और परमेश्वर उनके पापों को क्षमा करेगा।"

पौलुस मुकदमे के इंतजार में दो साल तक घर में रहा। उस दौरान उन्होंने कई मेहमानों को मसीह का उपदेश दिया। किसी ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की।

257 उनेसिमुस - फिलेमोन

फिलेमोन 1

उनेसिमुस एक दास था जो अपने गुरु फिलेमोन के पास से भाग गया था। वह रोम गए और अंततः पौलुस से मिले जो उसे यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत संबंध में लाया। उनेसिमुस प्रेरित के साथ रहा और उसने सेवकाई में उसकी मदद की। अंततः उसे पता था कि इस "भगोड़ा दास" का अपने स्वामी के पास लौटने का समय आ गया था। पौलुस, फिलेमोन का एक निजी दोस्त था, इसलिए उसने दोनों के रिश्ते में सामंजस्य बनाने में मदद करने के लिए एक पत्र लिखा। उसने कहा...

फिलेमोन - मेरे प्रिय मित्र - तुमको, तुम्हारे परिवार और तुम्हारे घर में मिलने वाली कलीसिया के लिए शुभकामनाएँ। मैं तुम्हारे लिए नियमित रूप से प्रार्थना करता हूं। मैं प्रभु यीशु मसीह के लिए और साथी विश्वासियों के लिए तुम्हारे प्यार के लिए प्रभु का धन्यवाद करता हूं। जो तुमसे मिलते हैं, वे विश्वास में प्रोत्साहित होते हैं।

प्रिय भाई, तुम मुझे जानते हो। मैं तुमको यह बताने में आम तौर पर संकोच नहीं करता कि सही और गलत क्या है। मैं आमतौर पर मसीह में तुमको तुम्हारे कर्तव्यों के बारे में याद दिलाने में तत्पर हूं। लेकिन मैं इस बार ऐसा नहीं करने जा रहा हूं, इसके बजाय, मैं तुमसे अनुरोध करने जा रहा हूं।

अपने दिमाग में यह तस्वीर बनाओ। मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ जो यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए जेल में हूँ। मेरी कमज़ोरी में, परमेश्वर ने मेरे लिए एक सहायक, उनेसिमुस भेजा - एक ऐसा व्यक्ति जिसने तुमको दर्द और दुःख दिया। लेकिन परमेश्वर ने उसे मेरे पास भेजा और मैं उसे यीशु से मिलवा सका। उसने अपना जीवन मसीह को दिया और फिर एक सहायक के रूप में मेरे लिए अमूल्य हो गया।

एक तरह से, यह ऐसा था कि तुमने उसे मेरी मदद के लिए यहाँ भेजा क्योंकि तुम स्वयं नहीं आ सकते थे। मुझे नहीं पता कि मैं उसके बिना कैसे काम चला सकता हूं; लेकिन वह और मैं दोनों जानते हैं कि उसे तुम्हारे पास वापस जाना चाहिए। वह तुम्हारी जगह मेरी मदद कर रहा था, लेकिन हमने तुम्हारी अनुमति नहीं ली थी।

सुनो, वह एक बेकार गुलाम था जब वह तुमसे दूर भाग गया। अब वह मसीह में एक मूल्यवान भाई के रूप में वापस आ रहा है, सेवकाई में एक सहकर्मी

और मेरे एक प्रिय मित्र के रूप में वापस आ रहा है। उसे वापस प्यार से स्वीकार करो।

ओह, उन चीजों के बारे में जो उसने तुमसे चुराई हैं - उन्हें मेरे खाते में डाल दो। यह लो, मैं कलम उठाता हूँ और इसे अपनी लिखावट में लिखूंगा। "मैं, पौलुस, इसे चुका दूंगा।" मैं तुमको इस तथ्य की याद नहीं दिलाता कि तुम वास्तव में अपने जीवन के लिए मेरे एहसानमंद हो।

कृपया उसे स्वीकार करो जैसे तुम मुझे स्वीकार कर रहे हो। मुझे खुशियाँ होगी जब मैं यह सुनूँगा कि तुमने उनेसिमुस को अपने जीवन और घर में वापस स्वीकार किया है।

लेकिन मैं किस बारे में बात कर रहा हूं? मुझे पता है कि तुम यह और भी अधिक करोगे।

वैसे, मेरे लिए अपना अतिथि कक्ष तैयार करलो। मुझे पता है कि तुम प्रार्थना कर रहे हो कि मैं आज़ाद हो जाऊं और वापस तुमसे मिलने आऊं। मुझे लगता है कि प्रभु तुम्हारी प्रार्थनाओं का जवाब देने वाला है।

मेरे सभी अच्छे दोस्तों को जो वहां हैं, शुभकामनाएं। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो।

पौलुस

प्रकाशितवाक्य 1 और 4 - 5

यूहन्ना के अनुयायी होने और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए यूहन्ना को पतमुस द्वीप पर भेज दिया गया था। प्रभु के दिन पर वह आत्मा में आराधना कर रहा था। अचानक उसे अपने पीछे एक तेज आवाज़ सुनाई दी। यह एक तुरही की आवाज़ लग रही थी, जिसमें कहा गया था, “तू अद्‌भुत चीज़ें देखने जा रहा हैं। इसे एक किताब में लिख और इसे आसिया की सातों कलीसियाओं को भेज।”

यूहन्ना ने देखा कि कौन बात कर रहा है। वहाँ, उसके ठीक सामने, सोने की सात दीवटें थी जिनके बीच में मनुष्य का पुत्र खड़ा था। उसने पांवों तक वस्त्र पहिने और छाती पर सुनहरा पटुका बान्धा हुआ था। उसके बाल ऊन की तरह सफेद थे - यह बर्फ की तरह सफेद था! उसकी आँखें आग की लपटों की तरह थीं और उसके पैर उत्तम पीतल के समान थे। उसकी आवाज समुद्र की प्रचंड लहरों की तरह गरजती था। उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे, और जब वह बोलता था, तो उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी। उसका चेहरा सूरज की तरह चमक रहा था!

यूहन्ना जमीन पर गिर गया जैसे कि वह मर गया हो। मनुष्य के पुत्र ने यूहन्ना पर हाथ रखा और कहा, "डर मत! मैं प्रथम और अन्तिम हूं। मैं जीवता हूं। हां, मैं मर गया, लेकिन देख ... मैं हमेशा के लिए जीवित हूं! मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां हैं। जो कुछ तूने देखा हैं उसे लिख - अब होने वाली चीज़ों और भविष्य में होने वाली चीज़ों के बारे में लिख।”

यूहन्ना को बताया गया था कि सात कलीसियाओं को क्या लिखना है। और उसके बाद, उसने स्वर्ग में एक दरवाजा देखा, जो खुला हुआ था। अचानक वही आवाज़, एक तुरही की तरह सुनाई दी, यूहन्ना से कहा, "यहाँ आ!" तुरंत, उसकी आत्मा स्वर्ग में थी और उसने एक सिंहासन देखा, और उस पर कोई बैठा था। सिंहासन के चारों ओर एक इंद्रधनुष था। यूहन्ना ने देखा कि सिंहासन के बगल में चौबीस प्राचीन थे, लेकिन उनमें से प्रत्येक अपने सिंहासन पर बैठा था। वे सफेद कपड़े पहने हुए थे और सोने के मुकुट पहने हुए थे।

चार स्वर्गीय प्राणी भी थे और उन्होंने पूरे दिन और पूरी रात परमेश्वर की आराधना करते हुए कहा, "पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिमान परमेश्वर पवित्र है!"

सिंहासन से बिजली की चमक और गड़गड़ाहट की आवाज़ आई। सामने, सात ज्वलंत मशालें थीं, जो परमेश्वर की सात आत्माएं थीं। सिंहासन के सामने भी, यूहन्ना ने कांच का एक चमकदार समुद्र देखा, जो स्फटिक की तरह चमक रहा था।

उसने सिंहासन पर बैठे एक व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया और देखा कि उसके हाथ में एक पुस्तक थी। इसे सात मुहर लगा कर बन्द किया गया था। एक बलवन्त स्वर्गदूत चिल्लाया, "कौन इस पुस्तक पर मुहर को तोड़ने और इसे खोलने के योग्य है?" कोई भी पुस्तक को खोलने और इसे पढ़ने में सक्षम नहीं था - स्वर्ग या पृथ्वी पर कोई भी नहीं।

जब यूहन्ना ने यह देखा, तो वह रोने लगा क्योंकि कोई भी योग्य नहीं था। चौबीस प्राचीनों में से एक ने उनकी ओर रुख किया और कहा, "मत रो! देख, यहूदा के गोत्र का शेर विजयी है। वह दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी है, और वह पुस्तक खोलने के योग्य है।"

तब पुस्तक ने एक मेमने को देखा जो मारा गया था, लेकिन अब प्राचीनों के बीच खड़ा था। मेमने ने एक कदम आगे बढ़ाया और सिंहासन पर बैठे व्यक्ति से पुस्तक ली। जैसे ही उसने ऐसा किया, स्वर्गीय प्राणी और प्राचीन उसके सामने गिर गए और एक नया गीत गाया। फिर लाखों स्वर्गदूत आए और उनके साथ गाने लगे। एक साथ, वे सभी गाने लगे, "वह मेमना योग्य है!

259 नया स्वर्ग और पृथ्वी

प्रकाशितवाक्य 21

जब मेम्ने ने किताब खोली, तो यूहन्ना ने उसमें जो कुछ अजीब चीजें देखीं - वे हमारे भविष्य के बारे में आश्चर्यजनक बातें थीं। उसने उन चीजों के बारे में लिखा, ताकि लोग जान सकें कि उसने क्या देखा था। अंत के पास, यूहन्ना ने कहा ...

मुझे अचानक एहसास हुआ कि सब कुछ नया था। मैंने आकाश में देखा और पुराने स्वर्ग नहीं था। एक नया स्वर्ग था! मैंने चारों ओर देखा और पुरानी पृथ्वी चली गई थी। एक नई पृथ्वी थी, और इसमें महासागर नहीं थे!

मैंने ऊपर देखा और मैंने देखा कि पवित्र शहर परमेश्वर से आ रहा है, स्वर्ग से बाहर। यह नया यरूशलेम था, और यह सुंदर था! यह एक दुल्हन की तरह था जो अपने पति के लिए तैयार थी।

तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। जिसने कहा, "देखो, परमेश्वर लोगों के साथ रहने वाला है! वह उनका परमेश्वर होगा, और वे उसके लोग होंगे। वह उनके दुःख के आँसुओं को मिटा देगा। वह मृत्यु, शोक, दुःख और पीड़ा को दूर करेगा। सब कुछ अलग होगा।"

तब परमेश्वर ने मुझसे कहा। "तू जो देख रहा हैं वह सच है। सब कुछ नया होगा। मैं अल्फा और ओमेगा हूं, शुरुआत और अंत। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते से देता हूं। मैं छुटकारे का पिता हूं, वे मेरे बच्चे हैं, और उन्होंने मेरी जीत पाई है।

"लेकिन जो लोग विश्वास नहीं करते थे वे कायर और कमज़ोर हैं।" वे हत्या, व्यभिचार और झूठ से भरे हुए हैं। वे शैतानों और झूठे देवताओं की आराधना करते हैं। जब यह सब हो जाता है, तो मैं उन्हें आग की झील में भेज दूंगा। यह दूसरी मौत है "

तब एक स्वर्गदूत मेरे पास आया और कहा, "आओ और मैं तुम्हें करीब से दिखाऊंगा।"

वह मेरी आत्मा को एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया, ताकि मैं पवित्र शहर देख सकूं क्योंकि यह स्वर्ग से निकला था।

नए यरुशलेम को परमेश्वर की महिमा में तैयार किया गया था, और वह बहुमूल्य रत्नों की तरह चमक रहा था।

इसकी दीवार पर बारह द्वार थे - चारों तरफ तीन-तीन द्वार थे। फाटकों में इस्राएल के बारह जातियों के नाम थे, और दीवारों की नींव में बारह प्रेरितों के नाम थे। यह सब कीमती पत्थरों से बना था।

दूत ने शहर को मापा। और मुझे पता चला कि यह एक विशाल घन की तरह, प्रत्येक दिशा में 1500 मील था। दीवारें जुड़ाई यशब से बनी थीं, और शहर अपने आप में शुद्ध सोने का था। द्वार मोती के बने थे। मुख्य सड़क शुद्ध, पारदर्शी सोने से बनी थी।

कोई मंदिर नहीं था क्योंकि परमेश्वर और मेमने ही मंदिर थे। शहर के लोगों को सूर्य या चंद्रमा की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि परमेश्वर की महिमा प्रकाश था और मेम्ना दीपक था।

फाटक हमेशा खुले होते थे क्योंकि वहां हमेशा दिन होता था। किसी भी समय आने के लिए सभी राष्ट्रों का स्वागत था। लेकिन घिनौने और अशुद्ध लोगों को अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। केवल वे लोग जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए थे, उनका शहर में स्वागत किया गया ।

अगली कहानी में जारी

पिछली कहानी से जारी है

जब मैं नए यरूशलेम को देख रहा था, स्वर्गदूत ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई। यह शीशे की तरह साफ थी और परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से बाहर निकल रही थी। यह मुख्य सड़क के बीच में बह रही थी।

जीवन का पेड़ सड़क के दोनों ओर था। इसमें बारह प्रकार के फल होते थे और हर महीने उनमें फल लगते थे। सभी देश वृक्ष के पास गए, और इसकी पत्तियों से बहुमूल्य चंगाई पाई। तब मुझे एहसास हुआ कि फिर कभी कुछ भी शापित नहीं होगा।

परमेश्वर के सेवक उसके सिंहासन के पास गए और उसकी आराधना की। उन्हें उसके चेहरे की ओर देखने की अनुमति थी। उनका नाम उनके माथों पर था।

शहर में रात नहीं होती थी। इसलिए लोगों को धूप या दीपक की ज़रूरत नहीं थी। प्रभु परमेश्वर ने उनके लिए प्रकाश प्रदान किया। उन्होंने हमेशा के लिए शासन किया जैसे कि वे राजा थे।

मैं ये सब देख रहा था जब दूत मेरी तरफ मुड़ा। उसने कहा, "तू जो देख रहा हैं वह होगा।" प्रभु ने मुझे तेरे लिए यह संदेश दिया है। उसने कहा, "लोगों को तैयार हो जाना चाहिए! क्योंकि जब ऐसा होता है, तो यह जल्दी से होगा। यदि तूने जो लिखा है, उस पर ध्यान दिया जाए तो वे धन्य हो जाएंगे।" "

उस समय, मैं गिर गया और स्वर्गदूत की आराधना करने लगा। वह चौंक गया। "ऐसा मत कर! मैं तेरे जैसा सेवक हूँ। तुझको परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।"

उसने फिर कहा, "ध्यान से सुन। तूने जो लिखा है वह बेहद महत्वपूर्ण है। सुनिश्चित कर कि लोग इसे पढ़ें। उनकी प्रतिक्रिया के बारे में चिंता मत कर। इसको परमेश्वर पर छोड़ दे।"

अचानक, मैंने यीशु को मुझसे बात करते हुए सुना। उसने कहा, "मैं आ रहा हूं, और जब मैं आऊंगा, तो यह जल्दी होगा!" मैं प्रत्येक व्यक्ति ने जो जो किया है उसके लिए पुरस्कार दूंगा। मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और आखिरी, सब कुछ की शुरुआत - और सभी का अंत हूं।

"मैं उन लोगों को आशीष दूंगा जो मेरे आने के लिए तैयार हैं। मैं उन्हें जीवन के वृक्ष के लिए

आमंत्रित करूंगा। वे शहर के फाटकों से चल सकते हैं और अंदर आ सकते हैं।

"दुष्टों का स्वागत नहीं है। वे बाहर रहेंगे।

"मैंने तेरे पास यह दूत भेजा है। मैंने उससे कहा कि तुझ ये चीज़ें दिखाए। याद रख, मैं दाऊद की जड़ और शाखा हूं। मैं भोर का चमकता हुआ तारा हूं।"

अचानक मैंने सुना, "आत्मा और दुल्हन कहते हैं, 'आ!' फिर एक आवाज़ गूंजी "आ!"

फिर से, मैंने सुना, "अगर तुम प्यासे हो, आओ! आओ और जीवन का पानी पियो।"

ओह, मेरे प्यारे दोस्तों। सावधान रहो कि तुम इस पुस्तक के साथ क्या करते हो। परमेश्वर उसी के अनुसार तुम्हारा न्याय करेगा। इसमें ऐसा कुछ भी मत जोड़ों जो यहां नहीं है। जो तुम विश्वास करना चाहते हो सिर्फ उसी को मत चुनों। यह सब सच है!

जब मैंने यह लिखा है, मैंने अचानक यीशु को यह कहते हुए सुना, "कुछ और भी सच है। मैं वापस आ रहा हूं - और जल्द ही आ रहा हूं।

मैंने कहा, "हाँ, प्रभु। आ!"